

॥ महाभारतदर्पणः ॥

॥ शान्तिपर्वदानधर्मः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमस्कार मारायणहि करि नरोत्तमहि नैमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥
सीताराम सुखामिप्रभु न्यामक अन्तर जामि । सेवक हनुमत सहित हित सन्तत तिन्है नमामि ॥
पारयके स्वारथ भए सारथि परम अनूप । ते सपरथ रथि देहि यह भारत भाषा रूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बन्दे कपिबरधीर राम परम प्रिय पारषद । सङ्गल मूर्ति धीर भारत स्वस्थ ध्वजस्थ वर ॥
मुनिरि उच्छिलनि अच्छ उदधि उलङ्घन समयको । भारत समुद्र प्रतच्छ भाषा करि चाहत तस्यो
दान व्याज प्रभु जौन लै त्रिलोक इन्द्रहि दयो । सो प्रभु महिमाभौन दानधर्म पूरण करो ॥
॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मोक्ष सुधर्म परोक्ष तेहि कर्णि युधिष्ठिर भूप । भीषमसौ बूजत भए दानधर्म को रूप ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ भरे शस्त्रहतसों सब गान । शरशय्यापर परे विभात ॥ विसर
कहत तख सब धर्म । कथा पुरातन सहित समर्भ ॥ ललितो अम साहस अधिकार । बूजत वनत
न किए विचार ॥ लहि तो बचन सुधाकी धार । मन नहि गहत तप्तताचार ॥ ताते बूझन
चाहत और । कहिनहि सकत देखि अम डैर ॥ दुरयोधन को मतिमग लागि । पाप कर्म कीन्हे
भ्रमत्यागि ॥ जाते यह अघ कुकरम जात । कूटै कहो तौन विधि तात ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥
धरम शीघ्र अति पावन आप । नाहक निज यह आपत पाप ॥ सूक्ष्मगति कर मन की होति ।
देश काल विधि कला तनोति ॥ अच कहत पूरव इतिहास । सुनो तौन भूपति मतिरास ॥ रही
नैतमी नामा एक । इह ब्राह्मणी गहे विवेक ॥ जाकी रक्षो पुत्र सुकुमार । डँस्यो ताहि पन्नग विष
गार । मस्यो तौन तब अरजुन नाम । लुब्धक अहिहि पकरि बंधकाम ॥ पाशबद्ध विप्रिणि यह
स्थाय । एहि विधि कहत भयो समुक्ताय ॥ तो सुत हा यह अधम अधान । है बध योग मव न हि
आन ॥ शासन देऊ बधे नै याहि । बधव उचित अपकरमी ताहि ॥ * * * * *

क

॥ * ॥ १०० ॥ * ॥

- १००

यह सुनि बोली गौतमी या कह बधव अयोग । प्राप्त होति भवितव्यता पूर्व कर्मको भोग ॥
दुःखार्थव भधि परि किते बूडत तरत अनेक । किते सहत सुख दुख गही पूरव/कारन विवेक ॥
याको मारव अट्टन नहि सुत जेहि मृतक न होइ। मृतक वरै एहि मृतक गति लहे नरकगति सोइ ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

बधि शत्रुहि मेठत दुखहि सागरथो मतिमान । जैसे अरि कहैं पाइ बस बधवै उचित न आन ॥

॥ * ॥ गौतम्युवाच ॥ * ॥

कही गौतमी एहि बधे मिटिहि न मेरो शोक । बिप्रहि निरदय प्रकृति को कियो चाहिषै रोक ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

लभ्य नही मेंटें मिटत औसि लभ्य को। शत्रुहि शत्रुहि बध किए नहि एकत खर्गकी राइ ॥

॥ * ॥ गौतम्युवाच ॥ * ॥

बधे अहिहि का लाभ अब बधे विना का हानि। मोक्ष सुफल चाहत सु बुधि नित्य धर्म अनुमानि ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

दुःख एकके बधे जाँ रक्षित होइ अनेक । तौ बळतनकों रक्षिषै एकहि मारि सटेक ॥

दुष्ट एकके जिए जाँ मारे परै अनेक । तौ तेहि खलको बध करव शंतथा उचित विवेक ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

व्याधाके ए बचन सुनि बोली उरग विचारि । और काहि उँसि बधत तुम लखे मोहि निरधारि ॥

व्हेकै प्रेरित मृत्युते उँस्यो थाहि हम हेरि । दोष न मन ककु मृत्युको मानो दोष निवेरि ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

कारय कीन्हे सर्प तुम तुम दोषी मन जान । नहि प्रेरक कह गुणन हम तुम ही बध्य न आन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

आयुध सम लागि हम किए कारय कारण सोत । आयुधको ककु दोष नहि बाहक दोषी होत ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

आसि बध्य तू व्याल हा व्यर्थ बनावत वैन । अपकारी अपकारको विसन तोहि अब औन ॥

॥ * ॥ सर्पउवाच ॥ * ॥

व्यामकतें प्रेरित किए कारय ककु न दोष । करत मानौ ताहि मति मोपइ मानौ दोष ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

इतनेने आई तहा मृत्यु महादुखदानि । व्याधसें सुभाषत भई कर्म काल इत दानि ॥

॥ * ॥ शृणुववाच ॥ * ॥

प्रेरितमै ह्यन काष्ठते प्रेरित कीन्हे प्राहि । नहि नम दोष न सर्पके काल वधन सख चाहि ॥
यथा वायु वस नम चरत तथा काष्ठवस व्याध । चरत सर्प हम रोम सब कर्म कराख अवाध ॥
साविक राजस तोमर पूर्ण कर्म अनुसार । करत अन्त अन्तक अमसि इहां न और बिचार ॥
ह्याकर जज्ञन जन जिते कालात्मक ते सर्प । यथा प्रवृत्ति तिमि निवृत्तिहै पाइ कर्मगति पव ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

तदनु व्याधसा कहत भो बन्धन पीडित सर्प । सुने शृणुको वचन नम काठो बन्धन अर्प ॥

॥ * ॥ व्याधउवाच ॥ * ॥

हम नहि जानत एक यह नुब कीन्हे अपराध । दोषी मानत तोहि हम करता पापदवाध ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

इतमेने तह आरके काल कियो सुन व्याध । किन पद्मग अह शृणुको गुणो न कहू अपराध ॥
पूर्वकर्म अनुसारको काल जो बन्द अमन्द । विरधि देत विधि तौन हम प्रापित करत अमन्द ।
हेतु मात्रको कर्महै मरत कर्म अनुसार । दोष न काहको कहू विधिवत किय विचार ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

काल वधज्ञ सुनि गौतमी कहे व्याधसो बैन । दोष न काहको कहू तजु सर्पहि गऊ जैन ॥
पूर्वकर्मकस हच लक्ष्यो दुसह दुःख सुमशोक । यहि वय यहि विधि सुत मस्तो नही कर्मको रोक ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

सुनि विप्रिहि के बैन व्याधा कोछो पद्मचिह । काख गयो निज जैन नई शृणु पद्म गयो ॥

यहि विधि करो विचार दोष न काहको कहू । तजो शेष सखार पापन आनो अपन कहु ।

संलिश्रीमहराजाधिराजश्री उदितनारायणस्याज्ञानुगामिनाश्रीबन्दीजिनकाशीषसिमेकुल
जगन्नाथीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना छतभाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वाणि दानधर्म
प्रकटीक्यामः ॥ * ॥

• ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

महाप्राज्ञ हे पितानह सर्वज्ञान विद दस । तुमहो सुने अनेक विधि उपाखापके कस ॥
धर्मसाधिके को गृही शृणुहि जीत्यो अब । सो अब कहिअै कुल कमल भयो नुरप अस यव ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

अब पूर्व इतिहास हम कहत सुनो सो भूप । शृणुहि जीत्यो जिमि गृही सधि सुधर्म अनूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पूर्व प्रजापति मनु शुभ करमो । तासु सुवन इच्छाकु सुधरमो ॥ अत सुत मे इच्छाकु वृथांतके ।

शांप० रहे दशाच्च दशम अति यतिके ॥ तामु सुवन मदिराच्च सुकानो । तामु सुवत् पुतिमान सुनानो ॥
 दा० सुत पुतिमान मूपको राजा । भयो सुबोर सु सैन समाजा ॥ तामु सुवन दुःख भू भरता । तामुत
 दुर्धीधम मखकरता ॥ रत्न शस्य धन जाके पुनै । बरचे इन्द्र मुदित व्हे उअ ॥ तेहि गर्भदा नदी
 पनि कोन्ही । शुचि सुरूप रनि आनद दीन्ही ॥ शुभ सुदर्भना तनया ताको । उतपति भई अणण
 नृण जाके ॥ तैसी रूपवती अति दीपति । और न प्रगट भई सुमु भूपति ॥ तच्छ रूप अति वाको
 देखी । मोहे अनिनि अपूरव सोखो ॥ मनमै मुखो कोम विधि कीजे । याहि तिथा करि आनद
 लोजे ॥ गहि दिजरूप मागिखै याही । नृपति न देद कहँ का ताहो ॥ इनि मुखि नैल्ल रहत भो
 मनमै । नृप मख करत रहो दिजमणमै ॥ ज्ञान्तरूप तहँ व्हे ते पावक । यथा अग्राण परो करि
 सावक ॥ सो ललि भूप दुखित अति व्हे कै । बोसत भए दिजम वन ज्वै कै ॥ प्रायक सुप्र भयो
 केहि कारण । सो कहि करिखै शोच निवारण ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूमिपालको वचन सुनि अधिहि ध्याये विप्र । तिम कह पावक प्रगट भे उखरूप गहि विप्र ॥
 निप्रणसो पावक कह्यो हम तिय हित नज गौगि । चाहत हैं नृपकन्यकहि कहि दिवाइखै तौनि
 ॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

सो सुनि विप्र मोद नहि राखे । यह बिरतान्त भूप सो भाखे ॥ सुनि नृप कहे औसि मुदलेहै
 निज तनया पावक कहँ देहँ ॥ हम इतनो पावक तैं मानत । मन ठिग रहँ परन हित लागत ॥
 यह तबाहु इनि पावक बोले । सुनि भूपति सुख लहे अतोले ॥ निज तनया कह भूपित कोन्हे । बेद
 बिहित पावक कहँ दीन्हे ॥ तेहि करि ब्रह्मण रमत भे पावक । चाहेपुव सुबुधि-शुचि भावक ॥ कहु
 दिन मै भो सुत सुषरी मै । नाम सुदरसन सुखद थरीमै ॥ कजसो भयो सुवा । जब जाहिर । विद्या
 वा न वेदविद माहिर ॥ हो नृप शोधवान ब्रभ साको । शोधवती तनया होँ ताको ॥ शोधवान
 सो सुता सयानी । दर्द ताहि कधिकै सुदुबानी ॥ शोधवती कह पाइ सुदरसन । नैऋत्य
 करि आनद कदपन ॥ कुरु क्षेत्रमै बधि हवि ह्राण । सञ्जम नियम भुनीति बढाए ॥ सुखुहि
 जीतनके पन करिकै । लगे अतिधि पूजन ब्रतधरिकै ॥ शोधवती कहँ शासन दीन्हे । पूजउ सदः
 अतिधि हित कोन्हे ॥ अतिधि करै अनुशासन जोर्द । बिना विचार किहेउ नुब सोई ॥ अन्न दान
 सो तोपण कीजे । मति सहोच शोचकहु सीजे ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रहे इहां हम गेह कै रहै न काळ काळातुअ अतिधि न तोपेउ सदा जो तोपे जेहि चाहा ॥
 अतिधि पूजिबे ते न कहु अधिक म्हाको धर्म । ताते जानेऊ अतिधिको पूजन महा सु कर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अनुयासन र्भरि धीस चोचपती पतिसौ कहोदेत सु आशार्द्रसो सो व्रत पास्तव सबस्य मे॥

॥ * ॥ रोसाहन्द ॥ * ॥

तहां तिनकहै अतिथि पूजत बजत दिन गो ताता काल आयी तहां बनि कै विप्रवेषविभाता॥
 गए हे वननै सुदर्शन समिध हित तेहि काल । कह्यो ताको तियासौ तब विप्र रूपी काल ॥
 गृहीको शुभ धर्म जाँ तुम होऊ जानत बाल । करो तो सतकार मम हन अतिथि आए हाल ॥
 बचन यह सुनि राजपुत्री नरम आनद पाय । पाय अर्धाचमन दे शुभ ठौरपँह बैठाय ॥ कही आशा
 करऊ सो हन करष करष न देर । कह्यो ब्राह्मण देऊ रति रमि सविधि करि मनमेर ॥ गोचि
 आशा सुभतकी तब राजपुत्री तौनि । रज्जि सज्जित नई गृहमधि सहित द्विज नजगौनि ॥ सैन
 बल तेहि पाद सखि स्त्रीकार लाग्यो रङ्ग । अङ्ग करि सउमङ्ग ठान्यो दरोते रति ठङ्ग ॥ विप्र न
 हि रति कियो ताको गह्यो कर सुख पाय । इतैं भैतेहि भयो डेरत सुपति द्वारे आय ॥ विप्र तब
 कर होचि दीन्हो तज सज्जित-भारी । जानि निज हि उच्छिष्ट बोली नही सुधरम धारि ॥ किरि सु
 दर्शन भयो डेरत विप्र तब कठि आय । अथि सुतसौ कहत भो हन विप्र अतिथि सचाय ॥ भए
 नागत आद हन तुव तियातैं रतिदान । देन उस्तुक भई बह तब किए तुम आन्धान ॥ भाषि
 इनि नहि दंड मुदगर बल्लो नारण ताहि । भए हीन प्रतिज्ञ तुम बधयोग मुदगर बाहि ॥ तासु दर
 शन कह्यो सुरति थबेष्ट कीजे तात । अतिथिपूजन परम धरम गृहस्थको अबदात ॥ प्राण दारा
 सुधन जो मन नेहमध्य अधार । देत सो सब अतिथिकह नहि मोहि और विचार । वायु नहि अख
 मोज मन बुध बुद्धि मन सुर काल ॥ सुकत दुष्कत रहत देखत पुरुषको सबकाल ॥ जान निध्या
 बचन भाषत होचि हन इडनेम । कर सुरक्षण सुमन मन तो दास जानि सप्रेम ॥ भीष्म उवाच ॥
 इतैंमे कभिरा तेहिपर भई सो सुनि खोज । अतिथिपूजक सत्य इडव्रत है सुदरशन एऊ । सुगत
 ही नमभिरा बोसो काल द्विज हरपाया हन परीसा किए इनि तुवधर्मको सुखदाया । सविधि जीने
 पृथुकाहै तुम अतिथि पूजि सनेम । करै गो तुव सरण सो मर लहे गो निति सेना । सहीने यहि देखतैं
 तुम परम उजमन लोक । अहा सुकती बसत जेहि बख शुभं सनातन लोक ॥ तिया तो पतिव्रता
 यह गृहपती बासक धर्म । अर्धतनतैं आद तुव सङ्ग बसिहि पतिनि परम ॥ अर्धतनतैं होइनी इत नदी
 खेहि निज नाम । करिहि नज्जन तासुमधि सो लहि हि सुधरम आम ॥ इतैं मे तहैं आद बासव
 किए पूजित ताहि । अतिथि पूजन सुकत पूरख परम सुधरम चाहि ॥ इनि सुदर्शन गृही जीको
 पृथुकाहै देनात । अतिथिपूजन नैम इडव्रत पासि पावन नात ॥ गृहीको है परम सुधरम अतिथि

दा०ध०

पूजन रूप । गृहीकई महि अतिविने हे चौरदेव अनूप ॥ पाद पाच सु अतिवि पूजत नही सुगृही
जीन । पाप दै लै पुण्य ताको जात सुचतिवि तोन ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उपाख्यान उत्तम महा पावन धन्य यशस्य । पुण्य पुत्र धन धान्यप्रद नरुण मज्जु रहस्य ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रिउदितनारायणस्वाशानुनामिना बन्दीजनकाशीवासि
शोकुलनाथकबीचरारज्जेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणदिान
धर्मे सुदर्शनीपाख्यानोनाम द्वितोयोऽध्यायः ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ सुधिछरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनी विद्यानिच किमिलहे श्रेष्ठ ब्राह्मण्य । सुनी बहत्त है तोन हम कहे पितानह धन्य ॥

॥ * ॥ चौपारद ॥ * ॥

॥ * ॥ शीघ्रउवाच ॥ * ॥ सुनी तात सो तत्व अनूपा । भरतवंश अति पावन रूपा ॥ नृप
अजनीड प्रपठ मे तामे । तासुत जन्तु अनन गुण जाने ॥ तासुत सिन्धुदीप भूसाजी । तासुत बसा
काच जयकामी ॥ तासु तमथ बल्लभ नयनानी । कुशिक तासु सुत अरुपम नामी ॥ तासुत गाधि
भए अति भाके । भयो न पुत्र प्रसव नृप ताके ॥ तब तिव सहित बसे बनमाही ॥ तहां भई तनया
सुत बाही ॥ सत्यवती तैहि भूपति भाखे । पूरित प्रेम पुत्र समराखे ॥ जब वह सुता बालपन त्याग्ये ।
तब षड्बीक मुनि ताकई भाग्ये । नृप तैहि सुता देन सुदपाने । सहस श्याम अति बाजी माने ॥
देहो सहस श्याम अति बाजी । तै हम देव सुता खवि साजी ॥ सुनि षड्बीक मुनि आनद
खदि कै । कहे बरुणतें सुजुगति नहि कै ॥ सहस श्याम अति बाजी नीके । देव हमे अति प्रसन्न
जीके ॥ कहे बरुण अहि बल कहि देऊ । अस्तें तहां कइँ हय कीऊ ॥ सुमुनि कहे कलउज्जको भेरे ।
करो प्रपठ सुरसतिं घोरे ॥ सुनत बरुण अनुकम्पा लीन्हें । सहस श्यामअति प्रपठितुं सोन्हें ॥
तुरन्त भए जई अस्तें बाहिर । अश्वतीर्थ तहें अवंतका जाहिर ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पान अश्वनी बसत जई सुमन सराहत जाहि । निप्र वेदविद् बसत जई उत्तम सुभ बल्ल जाहि ॥
सुमुनि श्यामअति बुरा लै दए नाथिकई जाय । गाधि दर्द मुनिकई सुता सत्यवती सुप्रप्राय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मुनि पतिनी सहि घोषित अचरज खाने करण । सहि सुख सेवा तोषि उपचार सुगको कहे ॥

॥ * ॥ चौपारद ॥ * ॥

सो मुनि सत्यवतीकी माता । कही सुतातें बचन बिख्याता ॥ कहि सुबचन मुनिकई अब
राधो । मोरेऊ पुत्र हाँद सो साथी ॥ सत्यवती निजपति सन भाषी । मोरकानी सुभ सुत अति

साथी ॥ तुव प्रसाद सुत चाचति सार्द । इन हमारि जननी मुन ठार्द ॥ सो सुनि मुनि मुनि
 हिए बसाए । दोष पाचमै सुचर चढाए ॥ कही तियाते तुम दोउ नारी । सहि रिनुदिन चखनान
 सुधारी ॥ भेटि उदुम्बर तरकहँ सुखें । निज निज गृह आवउ मुचि बखतें ॥ निखिउदुम्बर हि
 आनद पार्द । सत्यवती मुनिवर पँहँ आर्द ॥ उभय पाष चर मुनि तेहि दोन्हे । तिनको भेद प्रबठ
 यह कीन्हे ॥ यह चर चार तिया तुम खायउ । यह चर निज जननी हि खवाएउ ॥ छै युव चर नृप
 सुता सधानी । नई जननिपहँ आनद सानी ॥ चर द्वै दर्द भेद कहि सोर्द । चर विमान मुनि भाषे
 और्द ॥ सुनि नृपतिया मुनी मनमाही । विनु करु भेद उभय चर नाही ॥ इमि विचारि ताको चर
 सीन्हे । निजचर निजतनयाकहँ दीन्हे ॥ भोरि बूभाद वचन बउ कहि कै । बदलि लई चर
 हसनिभि कहि कै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि नित्यान्न-उभय चर भोजन करि ते तोष । नहि सुनभं राजित भई सहि प्रोभा कमनीय ॥
 सत्यवतीको करम खलि मुनि-बोखे अनुमानि करी विपर्यय सु चरको मोहि परो यह जानि ॥
 ब्रह्म मर्त्तें एक चर मनि दए हम तोहि । चाचनचतें मनि कै दए ताहि विधि जोहि ॥
 उन सार्द तो चरु बदलि तुम सार्द चर तासु । सची तोसुत होइ मो तासु निप्र तपरासु ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि यह अप्रिय बैन सत्यवती कम्पित भई । पाणि योरि भरि नैन कहत भई अति विनयकरि ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

जोसुत सेसो होइ न सार्द । तपकृत होइ तुम्हारी नार्द ॥ चर प्रभाव तुन निरमे जैसो । मन पउच चर
 प्रपट्टे वैसो ॥ सुनि तयासु बोखे मुनिमान ॥ तासुत भे यमदधि सुज्जानि ॥ भए नाधिकै सुवन सुखारी ॥
 विश्वामित्र परम तपचारी ॥ इमि ब्रह्मन्त्र लहे भूभरता । विश्वामित्र परम तप करता ॥ तप कृत भए
 बल्लत सुन ताके । तेज पुञ्ज अति परम प्रभाके ॥ देवरात मधुच्छन्द कहाए । बधु सुकुन्त अचीण
 बसाए ॥ बून कासपच बाहुलि नामी । याज्ञवल्क्य नाखव तपकामी ॥ जंघ उल्लूक यमदत जामी ॥
 चर-सैभवायन अपि माने ॥ सासहायन बज्र विशारद । कुर्चमुखी सोला सित नारद ॥ बह्यधीव
 मुचि मुदक जूनीया-धकक आहि । सुनो अबनोया ॥ पकक मारतया असायन ॥ बालि वातयोथा
 श्यामायन ॥ सुच नान्ध धावर्गल सुरायन । पौरवतन्त कपिल कपिलानन ॥ सार्द ताउकापन
 नवतन्तु । चरकाकपि-चौपग्रह सन्तु ॥ सूति विभूति अरालि बसाने । नाधिक वकनल अपिन
 सधाने ॥ चारनख्य चाम्पेच विरीचि । उर्जय अशोरुह शुभचपि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सार्दनि अरजानरि मुनि निरदापसो नाम । सुमुनि वासवायनि कहे हिरप्लाह तपधान ॥

शुभं सेवानोपति सुमुनि चर सुमुनि गुरदी चारु । विचानिच कुनीयके पुत्र इते प्रभिरामः ॥

॥ ७५ ॥

एव गुरु संतै चौर चोर पुनिके रूप सेव । अथि ताहु सब चौर देव तुमै सनुभार इन ॥
साकिची कायोर प्रभाररासाभिराजी इति तनासक चका इति विनिगा । बीवन्दी वनकाची वा
चिरपुनका विचाराजनेन प्रोक्तुनायकविना इति वापराजं प्रभारतर्कचे प्रानिचर्क वि दानपने
विचरति चोपनिर्मायवर्गीयोप्यायः ॥ ७६ ॥

॥ ७७ ॥

विना चार्थे कत करत जे प्रर्थाचीस प्रतिपात । ज्ञानज्ञानचे विनाचर कहे ताहु वास्तव ॥

॥ ७८ ॥

एव पूर्व इतिहास इन करत सुवे सुप तीन । वाचपते मुकते सुपिन आई प्रारजा जीवन ॥

॥ ७९ ॥

काशीराज अशीपके परमरते कठि पूर्व । क्यो जाया विविदि अथि ही कथावनको पूर्ण ता
देवि मन्तर सुचि वासो वाच तीचय ताकि । वेवि कृतय थलो तरणे विविदि विचकी वापिनि
सुचि वाचिचसुच सुचक प्रयो ही निजपास । वाच विचरत अथि मोनार चारे इरा वै कथन ॥
एव अरि कथ सुच ताके कहे कोठर भूति । इत्यो गरी वसत मुक प्रो क्यो मुकरी भूति ॥

क्यो चो टरसुच इठ नै चगत प्रैवो त्यानि । इत्ये संव आपनो वन त्यानि चो सुचि वापि ॥
कथ मुकको वन सुचि एव भक्ति प्रदय प्रेमविमि वनिमई आर चावे कथन प्ररिचननेवा ॥
कथा मुक रहि इत्यनधि वधि साम तुमकई कीनापित कथ दस सुच रचवर्चको वाचतजेवत
कोवि कोकई क्यो पुनित कथित तव प्रदे आर्य । मुकै जीवो इउतदिन भो कथक क्यो को कथन ॥

मुकने मुनि वचन मुक अनुमानि शक्त सुपाना गधि विचने जेवि प्रोखे वचन कानुपानन ॥
किं तुम वैचो कथति हो अथिन तुमकई एउ । पाकिचो इव श्रीचो उरकार तव प्रोखे ॥
वचनकीचक धर्मपासक चापु सुचति व्वात । आपिचो एधि मुचको वन वचन गधि वेतन ॥
अथि कोकई वदे एव रहि सुप्रज वाको चाप । कथे सुच अथि वदे कथी कथक कोकई वचन ॥

वरी पायके कथनदा सुच जेको कथनदा वदेन । कोवि वाकई कथ जेको जेव वाकन कीने ॥
की वाके कोठरी प्रीति होत वन प्रपदा । वायदा कथि वाक करत वि गुरु कथनदा ॥
किं मुकने वचन सुचिके जनि भक्ति कथन । कथे मुक वर वापु नद को वेक वचने कथन ॥
कथे मुक प्रपु ज्ञान मोरई कथन रहि को कथन । प्रैवो ही तव प्रीति वचन वचन ॥

वचन वचनते प्रीति तव किय पसक्ति वित आतमीदिन प्रो मुक वचन प्रपु वे मुक कथन विचन ॥
मुक कथुदिने देव तजि सद्यो सर्गको वाचा एधि विधि धर्मी कर्ष गधि प्रकथन वरज सुप्रज ॥



॥ ॥ सुधिहर उवाच ॥ * ॥

चित्तं महान् शुभं कर्म तिमिरे कुरु कुरु चैः सुविधिः। तुम ज्ञाता स्ववर्णं ज्ञानमानं हे पितामह ॥

॥ * ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ * ॥

॥ तुम ब्रह्मणो सर्वं सो ह्यमृतमते कुरुत ॥ सुमेधो नृप धर्मं सरथावर्षं सुजान सुधि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करत जेहि विधि कर्म नर तिमि सहत ताको भोग । करत मानस करन ताकई दोत सभ सँ
योग ॥ करत कारक करन जो शुभ अशुभ जेहि जेहि भंति । त्यागि तब सो करत ताको भोग तेहि
तेहि भंति ॥ कहि अथवा कथ्य यौवन आदि जेहि जो कर्मा करत नर तेहि कर्म भोगत कर्मकृतको
वर्ण ॥ साह इन्द्रिय करत कर्म न कबड ताको भाव । इन्द्रिय कर आतना ए तासु साची पाय ॥
असु सुधितहि देत ताको सेत पुख महान । अविधिपूजन अघोको सुभकार्म भति सुकरान ॥ पाव
पुण्यादिक सु कर्म महान फलदातार । त्यागि सुख सामान मत गहि होत भू नदगप ॥ साक कीजे
इसक जो सौभाग्य पावत भूरि । तजै आनिव पुत्र पुत्रु धन सहन सुखसों पूरि ॥ दहन जेहि अघो
नुषी जे करत हे अंशमेव । एक शार्द सदर ते सब सहत इहित वैन ॥ सुहमे करि सोर पुण्य
सहत अचय लोक । देत विधिवत दान धर्मों भरत ताको शोका ॥ सहत तप कहि भोग आयु अछ
घर्यहि सांगि । वप बख आरोग्यता ऐश्वर्य हिंसा त्यागि ॥ मूढ फल दल प्रथ असत्री सहत दिवने
धान । अपि होचहि साधि खर्ची होत पूरणकाम ॥ सहत दीक्षा तीर्थप्रजडन सुभन इत्यथ वर्ण ।
सहत दिवतें ब्रह्मलोकौ महान जिनि उतकर्म ॥ करत वेदाध्ययन जे ते सहत सर्व साहन्द । पश्चि
मानस धर्म विधिवत सहत खर्ण अमन्द ॥ बख जिनि ब्रह्म गौमे निज जननिहीर्ये जात । नक
पूरव कर्म करतहि होत प्रापित तात ॥ धिता जाना मुव पुरोहित विप्र कर्मिज धर्म । इहहि
पूजत तृप्ति राखत सोई पासक धर्म ॥ नच इया बहि जयें अरु यज्ञ सब विदुरान । नच विगु
को होम ए चयव्यर्ष जानो ग्यान ॥ * * * * *

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्मभूय सुनि भीष्मके चैरे वचन अनूप । केरि प्रश्न जो किए सी सुनु जपनेत्रय भूप ॥
साक्षिभीका श्रीराजमहाराजाधिराज श्रीधर्मनारायण स्यात् ॥ भिष्मनिना श्रीवन्दीजनका श्रीवाधि
रघुनाथकपीश्वरात्मजे ॥ लोकनाथकविना कृतभाषायां चन्द्रप्रदत्तदर्पणे ॥ अस्मिन्महि राजधर्म
वर्धनेनाम अतुर्याध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ सुधिहर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वन्दनीय अरु पूज्यके जगने महिमा भोग । वन्दत पूजत आयु हेहि सावत कविने लोक ॥

॥ * ॥ श्रीशुभवाच ॥ * ॥

कुम्भ चंभ बाह्यस्य सर्वां ब्रह्म परमधनं जाहि । नौकैर्ह्यतिप्रियविप्रमिति ह्यन ध्ययवतर्हं ताहि ॥
वेद नंब तप साध्य जेहि कहत ब्राह्मको पार । सुनो भूष सब जगतको दिज करता उदार ॥
बन्दि पूजि निमि रोर्द अरि करि प्रसन्न नहि श्रीभारत उत पावन मोह जनहिजपदसेद्व नोति ॥

॥ * ॥ शुभिष्ठिर उवाच ॥ * ॥

इमि दिज महिमा जानि सुनि श्रेयसाह दिव्य मूढ । जे नर नहि जानत दिजहि कही तासु गति मूढ ॥
॥ * ॥ श्रीशुभ उवाच ॥ * ॥

जे नहि पूजत दिजहि नहि देत दान अवरधि । ताको आशा अफलमिति सब घर बाढति धार्मि ॥
॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

नसिरी धर्म ब्राह्मके शार्ता । कहत विप्र सब जनकोपाल ॥ सबकैहं कुम्भल विप्र पद सेर ।
विप्रवचन रति मन भेरे ॥ अथ पूर्व इतिहास सुर्मथक । कहत तौन सुनिजे नरनाथक ॥ ऐचन
अधि शृंगारि चर मानरे । ते है धूरकजन्म सहा नर ॥ ते शृंगार मानर मन सहिके । हें विहरत
कुम्भल वन गहिके ॥ अमुक सुतक पारके दिनमे । लागे खान मसान विपिमिने ॥ शो खलि मानर
बोली कैते । पूर्व पाप तुन कोखे कैते ॥ जाते सागुषकोतन साह । कुसित कर्ज कियको
साह ॥ * ॥ श्रीशुभ उवाच ॥ * ॥ इम ब्राह्मणकी महिमा सुनिके । नहि मान्यो पूज्योहित
पुष्टिके ॥ तैहिनै कुसित मन पायो । अहत जेन अमच्छ मनायो ॥ सुनु मानर विप्रहि विनु
पूजि । विना दान दे सुवचन कूजे ॥ विनरत जनम निखत अति चैवी । दिज प्रभादविनु दया
अनीवी ॥ * ॥ श्रीशुभ उवाच ॥ * ॥ यह इतिहास सुने इम पूरव । दिज प्रभाव विधि कहे अपूरव ॥
दिज प्रभाद सब पावन होरे । दिजमहिमा आहिर नहि मोरे ॥ दिजहि दान दीन्हे अति नीको ।
विषय सुखोके सुखद सुमजीको ॥ पूजत देत दिजहि जो आरथ । सिद्धहोत ताको सुभकारथ ॥

॥ * ॥ शुभिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुखद विप्र जो नीच कहें करत नंब उपदेश । होत दोष तेहि को मही कही तौन मत देस ॥
॥ * ॥ श्रीशुभ उवाच ॥ * ॥

जाति हीनकह विप्र नहि कचऊ करे उपदेश । उपाध्यायकहें होतहे दोषभयानक भेष ॥
अथ पूर्व इतिहास इव कहत सुनो भूष तौन । हो दिमवत डिब सुनिजको आचन सुचमा भौन ॥
नेत्रपुत्र शशि सरिव सुनि बसत जहां तप धाम । रहे एक मुनिवर तहां कुक्षपति ताको नाम ॥
तपकीधरदा धारि तहें जायें भूष जतिनाम । कुल पतिने इनि कहत भो बन्दि अरह सुखदान ॥
आनन धार्मिकता हेन सुव प्रसादने नाथ । कर्म व्याप करि धरन नहि पाहत नयो सर्वाथ ॥

श्रांभ्यं
दाभ्यं

॥ * ॥ कुसुमवतिरुवाच ॥ * ॥

सुखं हि उचितं न तपको लोभं नहि तस्यासि । करो सुभूषा दिग्गजा सहि हो सुभति सुवास ॥

॥ * ॥ रौलाहन्द् ॥ * ॥

सुमुनि की सुनि वचन सो बलि दूर तहैं जाय । देवताको सदन खालके किरौ तहैं हरपाय ॥
निराहार जितेन्द्र रहि तहैं लगे पूजन देवा रंतेत सीतारांभ प्रभुको नाम अनुपम भेष ॥ अतिथि
आवेत तहैं तिन कहैं सुफल मूल लनायाकरत पूजन पाष लोटत सुपर सैन कराया ॥ कहत दिन
तप कियो तहैं तब आइ सुमुनि सुजान । लगे पूजन देवतहि अभिवेक करि सुविधान ॥ अभिवेक
खोखि शिलि तौन विधि बह भूद् शुभ दिन जानि । जोरि कर करि विनि भुजिते कष्टी आनद
सांनि ॥ पितृ कारय कियो चाहत सुमुनि हम पर पौंस । कृपा करि करबादही जे परि भेरो
होस ॥ सुमुनि करि लोकार तासैं नए आचन तास । बजि सो फल बरपि दीन्ही मुनिहि
हरत सुफल ॥ ज्ञान बानी कष्टी मुनि बह सुखी सो मन लाय । मोर करि अस्तनाम रखाय कियो
बह बचाय ॥ भत्री बैठत पूर्वमुख तप कियो श्रीछा विप्र । करो उत्तर शीरषा तप तथा कीन्ही
विप्र ॥ आइ तहि करबाद मुनिबर सुफल भोजन पाय । विदाहै मित्र आचनहि जे सुमुनि राम
हि ध्याय ॥ कहु दिन तप साधिकी बह भूद् तहैं तम त्यानि । राज कुसुमि जन्म लीन्ही करनके
मन खाति ॥ देह तजि मुनि भो पुरोहित ताहि नृपको आय । अभिवेक ताहि सुवास श्रीधि
सुकर्न काण्ड कराय ॥ हीन बरहहि किरतें उपदेश सेसो होत । हीन बरहहि कापळ नहि
उपदेश सुबुधि मनोत ॥ महा तप कृत सुमुनि सो पुनि कियो नव निवास । हीन बरहहि किरतें
उपदेश यह फल पास ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नीति बरह कत परलिकी करै विप्र उपदेश । चौथे बरहहि नहि करै मुनि सिद्धान्त नरेश ॥
साक्षित्रीका श्रीराजमहाराजाधिराजभीउहितनारायणसांज्ञानिनामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीपाणि
एवनाबकीवीश्वराज्जेन नोकुसुमावेन कविना कतमापायां महाभारतदर्पणे प्रानिपरीहि दामधर्म
वर्षेनोनाम पद्यमोख्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ सुधिठरउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

कैसे सुपुत्रके नृहे लक्ष्मी वसति खोस । कैसे तौन हैं पितामह अति प्रिय पाकी पोस ॥

॥ * ॥ श्रीछाउवाच ॥ * ॥

भूय पूष विरतान्त एत कहत तौन मुनि खेड । निकट कर्मको बकुनिनी में हम पूजे एड ॥
कैसे सुपुत्रके नृहे वसति जायु बक कृप । रमा रामपतिनी कहे सो विरतांकी प्रभू ॥

श्री०
टी०

भाम ॥ हय बांधो करिके जसमान । तदनु वेडि कोन्हो असमान ॥ तिय वी गयो करत
प्रधानोपदेशो गच्छि दुःख अतिमान्नाभिलषि करिके मार चिन्तन भूरीहय घटि पयो मेह मुषिदूरि

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कह्य कह्य सब तिबनते सुन नभिलषि बाह । इति वेधित निजमृद गवि सति सञ्जित नरनाह ॥
मंही सुत । एत वसु प्रिय सखि बूजेविरताम्लजिनि अन्धकार तिय तन सद्यो तथा कद्यो मृप दान्त
मूर्धनि मज विचार करि पुच्छि करि अभिषेक । अपु विदा वी वन गर्द शीशि सुगीति विवेक ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आरके तो तिया अचन अचिनको तह देखि । नरे करत भिवास तो अरु वरुन वापन लेखि ॥
मंही ही एक विप्र विरही तौन तो कहें पाय । समी मैबुन करत तेहि करि संकष सुख सरसाया ।
बजत दिवनी संक सखि रतिरुको नर रत्न । अरु नहि सुबन साभे रमह दिव सुबन ॥ तिया
ए दर्द दर्द देखे कही करि शिथि कार । संकष दे बहनी ले यह साक हार ॥ अथ कहीदे
त नही कहीत हाही रोस । प्रपट भाहा हिए हाही वकत नाही होसा ॥ सुमिरिकी को हियन रो
की जय यथ वेवहार । रम्यो की बी घोटो की धरी अथे धरि धार ॥ दधि अचरन मस्दि अरु
न करत अचन कोर । चीन मै रति लेत सीमति देत मीपति मोर ॥ करि जसबने उचित अपने
भरत मैबुन धार । करत निरदय मनो जे से बालनी हस वारो । उगर मै धनधान कह जिनि चैठि
वेडि डकीतामिधि समेटत नही नेठत सा लखे अनैता । तया सी तिबणार प्राणल्लोहि की कोअम्ना
मंजम शकी नही थाको कही ताको काम ॥ रम्यो नर अरु अजत तपस दने ताही तप । तहां
शत सुत भए ताकह कडे कबलो अच ॥ तियासी तिन तिथम ले निज पुत्र मृप यह आय । मीनि
धरं सुमादके रनि कही बजत गुआयापुच पनकी पुत्र तुन ए तियापनके सर्व । देह आपोराज्य
इनकह करौ भोग अलक्ष ॥ परम धर्मी पुत्र तिनकह दर्द आधी भूनि । तिया पनने जात्र विखरी
अचिनको तन धूमि । इन्द्र करि अनुमान ताको सुबन जेओ जोगावहत मे रनि विप्रमनि करि प्रास
ताके नेता ॥ असुर सुर सुत कश्यपे को करत राज्यहि चारिदय आपे । राज्य तुन निज वसुभुषिके
काहादिउज्य तो सुत तापसके भोगवत हैं आया करौ भोग सुर राज्य अपने देख तिबने अमय ॥
सुनत शत सुत पूर्व की ते सरेतिमही हाकि । नरे नारे अमलि लीने राज्य अपने आकि ॥ अक
रिजे तन नए तहै जह तिया तापसरीनि । दुली तहें सखि अरु वृकम विषय कतव्य प्रीगिाकही
तो जिनि भर तिय जिनि भए सुत सुख लेखे । राज्य दीन्ही मयो जैसे दुखदपुत्र विरोध ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्र कहीत हमे अकहै तन कोन्हो वज अरु । ताते हमे रिति आरिभिए तो अचरन अरु ॥

शक्र जातिको तापसी करो कन्दना भूरि । तन सुरपति तखैं कजे दया दियने पूरि ॥
पुंरूपनेके पुत्र तुष अर तिषपनके जौन । नरो कुदुकार के जिई तिननेके वड कौन ॥

॥ * ॥ तापसुवाच ॥ * ॥

दयासदन अति नयाकरि कीजे कप सुरेभ । बासापनकेपुत्र कन जीवै पाले देय ॥

॥ * ॥ सोरठ ॥ * ॥

सुरपति सुनि कै एह कहत भए तेहि तखिने । काहे अधिक सनेह बासापनके सुतन सैं ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

काहे इनको जीवक भय । उक्को जीवन रहि अघिलापौ ॥ एह सुनि कै से सुनि
उवाची । सुनो सुरेभ कहत एह वाची ॥ नरभर दुख जनम जनेको । अर सेवाअर रदन
रने को ॥ निभा संरति सुतहित दुख भारी । तनो सेति नया अघिकारी ॥ एहिनिधि कंचे सु
वचन सुनिके । इन्द्र कयाकरि बोले गुणिके ॥ पुत्र मये काहौ हित जाही । तौ बरि देउ पुत्र
पारि तोही ॥ * ॥ सुवाच ॥ * ॥ शक्र सुभक्त कहत निज जीको । अबतौ मोहि युवतिपन
नीको ॥ एह सुनि कहे शक्र प्रभु सोही ॥ कन न पुत्रपन भवन तोही ॥ अधिक कौन मुख पुत्रनीपन
कै । जाते अरति सुवतिपन नमने ॥ एह सुनि युवति सत्यगति धरि कै ॥ बोखत भई जैन मत करिके ॥
तिवचनने पूरक सक्तते । होत अधिक सुख सच अकनते ॥ नर रतिकरि तोषत जन माहीं ।
गारि अयक मनवासत नाही ॥ गारिहि पूरने सुख अधिकी । हम छह उभै कहत हिय
अधिकी ॥ ताते एह अनुभवकन खेर ॥ इति सुवती रहि तखिन सेइव ॥ दर्द दर्द सो मिर भरि
लीन्ही ॥ ताही नै अधिकी गुण धोन्ही ॥ तजिगुण अधिक अत्य गुणगाहै ॥ एह अयानपन किए कहाहै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एह सुनिके सुरपुर नए शक्र सुदिन मनगाह । इखिह अधिको होत सुख सुनो धर्म मरगाह ॥
रखिभीकाशीराजमहाराजाधिराजभीउदिनगारायलसाहाभियागिना ॥ श्रीकन्दीअवकाशीवासि
गकुलनाचकवीचरात्मजेन गोपीनाथेन कविनाविरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि

दानपर्वणेउभोऽध्यायः ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहो तात कखोकहिह उचिककौन व्यापार । त्राज्य कहा अर वास्यको कहे तौन उवाच ॥

॥ * ॥ श्रीसुउवाच ॥ * ॥

तामि करम काइक कहे अर वाचिकहे चारि । तामि कर्म मानस कहे ते मिति त्राज्य विचारि ॥
हिंसा लक्षकरता तथा अर परदारनिहार । त्राज्य तौनि काडक करम उद्योग मिश्रधार ॥
सुगुलपने अर कटुवचन असत असत्य प्रलाप । त्राज्य चारि वाचिक करम परगति करत उवाच ॥

कृपा-सखो मुदभैकै ॥ मखो तौन आपुसमो खरिकै । तव सुरसुधिन भए मुदभरिकै ॥ रहे सहस्र
सुभ्रं सुत तिमकों । विधि कुशदीप दए तव तिमकों ॥ एहिदिधि सुत विभूति मन भाए ।
शिवहि पूजि सहस्रम जन पाए ॥ तुम तौ प्रभु सुजनादम स्वामी । गहि नरदेह भए सुत कामी ॥
शिवहि अराधि महामुद गहिहो । निजसम सुत चाहत सोखहिहो ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ *
अन सुनिशै निरतान्न मम केवच यदकुल चन्द । आन्रपाद निज पिताको हम युग पुत्र यमन्द ॥
जेठो धाता धैम्य मम लज्जरे हम उपमन्यु । बसत विपिनमै पिता मम तपकृत अनघ यमन्यु ॥

॥ * ॥ रोसाकन्द ॥ * ॥

बासुपनमै पिताको सँग मछीके घरजाय । पाय ओदन दूध साथ सु आश्रम नै आय ॥ भोर
रोदन करन लागे माथतें अमलाय । दूध ओदन खाइहैं हम देहि मेरीमाय ॥ माय गहि चतुराद
घाउर पोसि पीठ बनाय । घोरि जलमो मिले ओदन दर्ई मोहि खवाय ॥ बज्रत दिनहम तौन
साथो हिए आनद पूरि । यज्ञ रचि मम पिश्र आन्यो मछी ब्राह्मण भूरि ॥ तहां आगे नन्दिनी
कहँ करसकों सतकार । पिथो तव हम नन्दिनीको दूधखाद अपार ॥ यज्ञवीते नन्दिनी जब नई
तव मो माय । पूर्ववत करि पीठको पय देनलागी स्वाय ॥ कह्यो तव हम दूध मीठो होत यह तौ
वारि । मछी हम यह खाइहैं दे दूध बाकँह टारि । बचन यह सुनि माय दुखभरि मोहि अरु
सगाय । कहीं बममधि मुनिनके घर खीरकह बिनुगाय ॥ बसत बनमै मूल फल दल तोरि खँनिकै
खात । बिना सुरभी गेत्त पाँए दूध डुरसभ तात ॥ कर अराधन शंभु प्रभुको पाइहो मनकाम ।
खीर ओदन बसन भूपर धेनु धन अभिराम ॥ बचन यह सुनि जोरि कर हम भए बूजत ताहि ।
शंभु प्रभुको किनि अराधन कीजिखै कऊ चाहि ॥ अन्न यह सुनि कही शंभु रंशान प्रभु जगदीश
बदखि जा गुण सहत पाए न बिरा सुमन फलीश ॥ आसु अगिनित रूप अरु अस्थान चाह चरित्र ।
कहत मुनिगण कहत जाहि हृदिस्थ परम पविष ॥ जिते देही जगतमै विधिआदि खर्ब अखर्ब ।
सर्वरूप अनूप धरत सर्वतारें सर्व ॥ बसत सबके हृदयमो सब देत सबकहँ काम । महा औढर
बरण भू सब लोक आनो धाम ॥ आदि अन्त न आसु अक्ष अन्नन्त योगी योग । एक दाय सहस्र
लोचन तथा बदन सथोष ॥ तासु भक्ति अडोल गहिकै खाइ मन बुधि चित्त । भजी सेवन करो
निति सुत सोऊ ने कत कस ॥ मातुके सुनि बचन तबनें भए हम शिव भक्त । करत पूजन नाम
कूजन रहत निति अनुरक्त ॥ बरिस कइक हजार धारे ध्यान मन चितलाय । भक्त मुष्टि करि कृपा
मव प्रभु प्रगट भे तई आय ॥ भक्तको गहि रूप सुरगण सहित करि तहँ जौन । कहे हम परसस
दिअवर नागु इच्छित जौन ॥ बचन जैसे सुमत हम तहँ कहे सुरपति पाँहि । बिना शहर औरते
हम कछू नागत माँहि ॥ करै हमहि बिलोकपति जौ बिना शहर और । मछी चाहत तौन हम

शा०प०
दा०ध०

दृढ भक्तिको यह ठौर ॥ इतेमो तहँ प्रगटभे प्रभु शम्भु महिनाभौन । प्रथम देखे तेज अतिसे
सकै लखि जेहि कौन ॥ फेरि देख्यो उग्र प्रभुकेह महा उग्रसरूप । सङ्ग नखसमुदाय अगि
नित दिव्य अनघ अनूप ॥ मदा बाण त्रिशूल धनु अह अस्त्र पशुपति जौन । और अगिनित अस्त्र
शस्त्र प्रह्वन्न प्रगठित तौन ॥ मूर्तिनाम विभात प्रभुसर्ग अखित ज्वलन समान । आदित्य बिन्धे
देव सेवत सिद्ध साध्य महान ॥ करत अक्षुति चन्द्रदिशिते मत एकादश रुद्र । ब्रह्मा कधि वसु
पितर सेवत यत्त रत्न अक्षुद्र ॥ लसत जगज्जत नखउगामी बिष्णु दक्षिण ओर । वामदिशि विधि
हंसगामी सङ्ग मुनिधि अघोर ॥ शक सुर गन्धर्वगणसह लसत आनंद पूरि । कार्तिकेय नखे
राजत भरे परमाभूरि ॥ पाद दरशन शम्भु प्रभुको मुदित हम तेहि काल । किए अक्षुति शंभु प्रभु
की पूजि अपने भाल ॥ करि सु अक्षुति प्रार्थनादै अर्घपाय समे । जोरि कर नै रहे ठाढेपूरि अति
सैप्रेम ॥ ललत शोभा शम्भुकी हम रहे एकटक हेरि । सुमन बरने सुमन तहँ सुखदाय दूदधि भेरि ॥

॥ * ॥ दोहर ॥ * ॥

तव मोपै करि अति कृपा कहे शम्भु मुदभौन । सुत तोपै परसङ्ग हन नामी रक्षित जौन ॥
शङ्कर प्रभुके वचन सुनि नै गदगद हात कान । किए दण्डवत बारबड अति आनंदभरि चित्त ॥
याहि जोरि कै नै खरो रोसांचित भरिनैन । चाव चैन हिय चैन भरि बोले सबिनय बैन ॥
योगिनकहँ दुर्लभ इविधि तुवदरशन हे नाथ । सो इमि दरशन मोहि दे कीन्हे आपु रनाथ ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

मुन जगज्जत जगपालनिहारे । करि विनाश फिरि सिरजगहारे ॥ सर्वन सर्व सर्वजगलामी ।
सर्वभूत भव उद्भव नामी ॥ जौ बर देत मोहि करि आदर । तौ मिज भक्ति देखे दृढसादर ॥
वै कालज्ञ मोहि प्रभु कीजे । निति पय खोदत भोजन दीजे ॥ यह सुनि नाव जु जगपति
शङ्कर । एवमस्तु बोले अभयकर ॥ अजर अमर दुल बरजित होइ । यथी तेजमय अतिप्रिय
मोइ ॥ क्षीरोदन सागर तुव धोरें । पूरण रही बचनमें मोरें ॥ सोकुटुम्ब सह भोजन कीजे ॥ तिन्है
समेत अमरपद लीजे ॥ इमि कहि भए अदृश्य मोसांर । तवतें हम बिलसत एहि ठार ॥ शंभु
कृपानिधि रक्षित दायक । तिन्है भजे विभुवनके नायक ॥ मंत्र देत हम सो जप कीजे । छठह
मास सु दरशन कीजे ॥ इमि कहि विप्र मंत्र मोहि दीन्हो दीक्षित नै हम सांनद लीन्हो ॥ गहि सो
मंत्र तबन तप लागे । शंभु अराधन नै अमुरागे ॥ एकमास फल भोजन करिकै । पांचमास खे
जलव्रत धरिकै ॥ एकचरण धरि महिमधि रहिकै । अर्घवाऊ करि दृढव्रत गहि कै ॥ इमि
बठमास किए आराधन । अनरयके सु अरयको साधन ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव प्रसन्नह्यै शंभुप्रभु भय सु दरशन देत । यथा दए उपमन्युर्कह विधि सुर ऋषिभ सनेत ॥
 सखि श्री शोभा तेज ह्यम रवे चकित ह्यै हेरि । निकट आद्र तव शंभुप्रभु कहे कृपानिधि टेरि ॥
 कृष्ण हनै तुम परम प्रिय मागऊ ईहित जौन । नौनि किए तव शंभुकी अक्षुति महिमाभौन ॥
 मनो विश्रयति विश्रकृत विश्वात्मा भगवान । अमघ अगोचर बेदमय सर्वद सर्व महान ॥
 अक्षुति सुनि सुर शक सब शंभुहि किए प्रणाम । तव हसिकै मोसो कहे शरर महिमाधाम ॥
 केशव मागऊ आठ वर मुनकहँ ईहित जौनासो सुनि सुख लहि हम कहे सुनो तौन क्षितिरोना ॥
 धर्मो दृढता रिणविप्रय यशवल ज्योन महान । अयेसरता तव निकट सुत शतसहस सुजान ॥

॥ * ॥ अथकरीशन्द ॥ * ॥

यह सुनि शरर आनद दानि । कहे तथास्तु परम हित मानि । उमादेवि महिमाकी खानि ।
 तव इनि कही भक्त निज जानि ॥ शंभु नाम सुम परम प्रवीन । वीर विक्रमी दाता पीन ॥ जान्म
 वतीनै ह्यै है बेग । आसु हेत आए एहिदेग ॥ इनि वर दै प्रभु शम्भु महान । होत भए तह अनर
 ध्यान ॥ हम उपमन्यु विप्रपँह जाय । दीन्हे सब बिरतान्त सुनाय ॥ सुनि बोखें ऋषि महिमा भौन ।
 कृष्ण शर्वसम दाता कौन ॥ इनि कहिकै ब्राह्मण तपधाम । कहत भयो नार्त्ता अभिराम ॥ रह्यो
 सत्य युगमै तपधेन । तण्डि नाम ऋषि पूरित धेन ॥ अमृत बरिस सो खाद्र समाधि । पेंछो शम्भु हि
 सविधि अराधि ॥ पढत जाहि सांख्यक मन लाय । चिंतत योगीजन सुख दाय ॥ परम प्रधान पुरुष
 प्रभु जौन । उत्पति पावन कारण तौन ॥ लहि ताकों दरशन सुख साज । अक्षुति कियो तण्डि
 मुनि राज ॥ सुनिह्यै तौन युधिष्ठिर भूप । जग पावन कृत परम अनूप ॥ * * * * *

तद्विदुषाच ॥ पवित्राणां पवित्रस्वर्गतिर्गतिमताम्बर । अत्युपन्तेजसां तेजस्वपसां परमन्तपः ॥
 विश्वावसु हिरण्यासु पुरहृतनमस्कृत ॥ भूरिकल्याणद विभो परं सत्यं नमोस्तु ते । जाती मरण
 भीरुणां यतीनां यततां विभो। निर्वाणद सहस्रांशो नमस्तेस्तु सुखाश्रया ॥ ब्रह्मा शतक्रतुर्विष्णुर्विश्वेदेवा
 नर्हर्षयः। नविदुस्त्रांतु मत्वेव कुतो वेरस्यामहे वथा ॥ तत्त्वः प्रकर्तते सर्वैः स्वयि सर्वं प्रतिष्ठितं । कालाख्यः
 पुरुषाख्यश्च ब्रह्माख्यश्च स्वमेव हि । तनवसो ह्यु गालिखः पुराणज्ञैः सुरर्षिभिः ॥ अधिपौरुष मध्यात्मा
 मधिभूताधिदैवतं । अधिलोकाधिविज्ञानमधिपञ्चस्वमेव हि ॥ यं विदित्वात्मदेहस्थं दुर्बिदं विनुधै
 द्रुधि । विद्वांसो यान्ति निर्मुक्ताः परंभावमनामथ ॥ अनिहतस्तव विभो जग्य हृत्पुरमेकातः । द्वारं त्वं
 स्वर्गमोक्षाणामासेमा त्वं ददासिच ॥ त्वं वै स्वर्गं सप्तोत्सस्य कामः क्रोधस्त्वमेवच । सत्वं रजस्तमश्चैव
 अधश्चोर्ध्वस्त्वमेवहि ॥ ब्रह्मा भवस्य विष्णुश्च सां देन्दौ सविता यमः । बरुषेन्दू मनुर्धाता विधाता त्वं
 धनेश्वरः ॥ भूर्वायुः सलिलाभिश्च खवाराहस्थितिर्भूतिः । कर्म सत्यामृतेषोभे त्वमेवास्तिच नास्तिच ॥
 इन्द्रियास्तीन्द्रियार्थाश्च प्रकृतिभ्यः परं ध्रुव । विश्वाविश्वं परेऽस्मान्निश्चक्यास्त्रिम्यत्वमेवहि ॥ यच्चैत

शा०प०
दा०६०

त्परमं ब्रह्म यच्च तत्परमं पदं । या गतिः सांख्ययोगिणां स भवान्नात्र संशयः ॥ नूनमद्य कृतार्थाःस
मूनं प्राप्ताः सतां गतिं । या गतिं प्रार्थयन्तीह ज्ञाननिर्गन्तुहयः ॥ अष्टौ मूढाःस सुचिरमिदं काल
मचेतसः। अत्र विद्यः परं देवं शान्तं यं विदुर्बुधाः।।तेयमासादितः सासादज्जभिर्जन्मभिर्बुधाः।।भक्तानु
ग्रह कहेभे यं ज्ञात्वाऽतमश्नुते ॥ देवासुरसुनीनां तु यच्चगुह्यं सनातनं । मुहायां निहितं ब्रह्म दुर्ब
ज्ञेयं मुनेरपि ॥ स एष भगवान्देवः सर्वं कृत्वर्बतोमुखः।। सर्वात्मा सबदधीच सर्वगः सर्वं वेदिता ॥ देह
कहे हभृद्देही देहभुग्देहिनां गतिः । प्राण इक्ष्वाणुः।।प्राणः प्राणभूः प्राणिनां गतिः । अध्यात्मगति
निष्ठानां ध्यानिनामात्मवेदिनां । अपुनर्दारकामानां या गतिः सोऽयमोश्चरः ॥ अयं च सर्वभूतानां
शुभाशुभगतिप्रदः।।अयं च जन्ममरणे व्यदधत्सर्वजन्तुषुअयं च सिद्धिकामानां या गतिः योग्यमीश्वरः।।
भूराद्यान्सप्तभुवनान्युत्पाद्य सद्बौकसः।।दधाति देवस्तनुभिरष्टाभिर्योविभर्तिषः।। अतः प्रवर्तते सर्व
मस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितं।।अस्मिंश्च प्रलयं याति सोऽयमेकः सनातनः।।अयं च सत्यकामानां सत्यलोकः परं
सतां।। अपवर्गश्च युक्तानां कैवल्यं चात्मवेदिनां।।अयं ब्रह्मादिभिः सिद्धैर्गुहायां गोपितः प्रभुः।। देवासुर
मनुष्याणामप्रकाशोभवेदिति ॥ नत्वां देवासुरनरास्तत्वेन न विदुर्भवं । मोहिता स्तस्त्वमेवैव हृदि
स्थेनाप्रकाशिता ॥ येचैनं प्रतिपद्यन्ते भक्तियोगेन भारत । तेषामेवात्मनात्मानन्दं श्रवत्येष हृच्छ्वः।।
यं ज्ञात्वा न पुनर्जन्म मरणं चापि विद्यते।। यं विदित्वापरं वेद्यं वेदितव्यं न विद्यते ॥ यं सत्यापरमं लाभं
नाधिकं मन्यते बुधः।।यां कृष्णां परमां प्राप्तिं सबच्छत्यसयावदां ॥ यं सांख्यगुणतत्त्वज्ञाः सांख्यशास्त्र
विशारदाः ।।सूक्ष्मज्ञानरताः सूक्ष्मं ज्ञात्वामुच्यन्ति बन्धनात् ॥ यं च वेदविदो वेद्यं वेदांतेषु प्रतिष्ठितं।
प्राणाद्यामपरानित्यं प्रविशन्ति वरे जनाः।।अर्थाकाररथमारुह्य ते विशन्ति महेश्वराः।।अयं स देवयाना
नामादित्यो द्वारमुच्यते ॥ अयं चपितृयानानां चन्द्रमाद्वारमुच्यते । एषकालगतिस्त्रिंशत्सम्बन्धर युगा
दिच ॥ दिव्यादिद्यपरोलाभास्त्वयमेः इच्छिन्नोत्तरे । एवं प्रजापतिः पूर्वमारारुध्य ब्रह्मभक्तवैः ॥ प्रजार्थ
म्बरयामास नीललोहितसंज्ञितं । ऋषिभिर्यमनु संग्रति तत्वे कर्मणि बहूषु ॥ यजुर्भिर्यत्त्रिधा वेद्यं
जुह्वत्यध्वर्यवोध्वरं।।सामभिर्यच्च नायन्ति सामगाः शुद्धबुद्धयः।।ऋतं सत्यं परं ब्रह्म स्रुवंत्याध्वर्यवः।।द्विजाः।
यज्ञस्य परमा येनिः पतिश्चायं परं ब्रह्म तः।।रायहः शोचनयमः पक्षमांसघ्नोऽसुभुजः।।ऋतुवीर्यं तपोधैर्यं
अथ गुह्योऽप्यदवानाम्मृत्युर्धनोऽकृतासृष्टकासः।।संहारवेवान्कासः।।सस्य मरुता येनिः कालश्चायं सना
तनः।। चन्द्रादित्यौ सनस्रवौ यथास्यसहबापुना । ध्रुवः सप्तर्षयश्चैव भुवन निच सप्तच ॥ प्रधानमह
दव्यक्तं विभोषांतं सर्वैकतां ब्रह्मादिसत्यपर्यन्तं भूतादि सदस्यस्यत ॥ अष्टौ प्रकृतस्यैव वप्रकृतिभ्यश्च
यःपरं । अस्यदेवस्य ब्रह्मं कृत्वां सम्परिवर्तते ॥ एतस्मात्परमानन्दं तदेतत्परमपदं । एवापतिर्विरक्ता
नानेष भावःपरस्वतः ॥ एतत्परममुद्दिप्रमेतद् ज्ञानसनातनं । शास्त्रवेदाङ्गविदुषामेतद्ज्ञान परंपदं ॥
इयं सा परमा काष्ठा इयं सा यदनाकला । इयं सा परमा सिद्धिरियं सापरमा गतिः ॥ इयं
सापरमा शान्तिरियं सा निर्वृतिः परा । यं प्राप्य कृतकृत्याःस इत्यमन्यन्त योगिनः ॥ इयं तुष्टि

रियं सिद्धिरियं कृतिरियं श्रुतिः । अध्यात्मगतिनिष्ठानां विदुषां प्राप्तिरद्यथा ॥ वज्रतां कामवश
नानां मन्त्रैर्बिप्लवदक्षिणैः । यागतियंज्ञश्रीसामां सा कृतिर्व्यम संवसः ॥ समयोगजपैः शान्तिनिघने
दं द्वायवैः । तप्यतां या गतिर्देव परमा सा गतिर्भवाम् ॥ कर्मव्यासकृतामात्र विरक्तानां तत्
शतः । या गतिर्ब्रह्मसदने सा गति क्व सनातनः ॥ अपुनर्दारकाकारां वैदग्ध्ये व्रतीतां च वा । प्रहन्ती
र्वा स्यानां च सा गतिर्क्व सनातनः ॥ अज्ञानविज्ञानयुक्तानां गिरपात्या मिदङ्गम् । क्षेत्रेणा ध्य गति
र्देव परमा सा गतिर्भवाम् ॥ वेदज्ञानपुराणोक्तः प्रज्ञेताकाथः सताः । त्वप्रज्ञाद्वाहिः सभ्यन्ते
मसंभ्यन्ते व्यथा विभो ॥ इति तस्मिन् श्रेयासि सुखदेवागमशाकना । जैः च परमं ब्रह्म यत्पुरा लोक
हज्जै ॥ * ॥ उपमन्यु उवाच ॥ * ॥ यत्र सुखेन वादेः कश्चिन्ना ब्रह्मवादिना । उवाच मनना
न्देव उमया सहितः ॥ ब्रह्म तत्तत्पुनर्निर्मुक्तिर्येदेवामर्षयस्य न विदुषामिति जनासुष्ठः प्रोवा
च तं शिवः ॥ * ॥ श्रीविष्णु उवाच ॥ * ॥ यद्यद्यथा चैव नमिवा दुःखवर्जितः । यमस्य तेजसा युक्तो
दिव्यज्ञानसम्पन्नितः ॥ अतीत्यामनिभ्यश्च सुखकीर्तिसुतयाव । साप्रसादादिजमेड भविव्यक्तिः क
संभवः ॥ कथा कामं ददाथ्ये च मूर्ध्नि परमं कां चरे । प्राज्ञसिः च सवाचेदं तपि नक्तिर्हन्तासु मे ॥
उपमन्यु उवाचाप्यतान्द्रत्वा वरान्देवोऽवधमानः सुरर्षिभिः । सुयनात्मश्च त्रिबुधैश्च चैवान्तरधीयत ॥
अन्तर्हिते भगवति सानुने याददेवर ॥ अतिराज्यमनात्मैः सति च प्रोक्तवानिह ॥ यानि च प्रकिता
न्यादौ तस्मिन् श्रेयासि सुखदेवागमशाकना निगमवेड तस्मिन् ह्यसु सिद्धये ॥ दग्धनामसहस्राणि वेदे
न्याद फिनात्तः । सर्वेषु शास्त्रेषु मथा दग्धनामसनापि वै ॥ कुण्डलीनामि नामानि तस्मिन्मन्त्रतो
च्युत । देवप्रसादादेः केषु पुरा षोडशेऽक्षरे ॥ इति दामधर्मे मेघवाहनपर्यन्ति वासुदेववरप्राप्ति
र्नाम चयोर्दशोऽध्यायः प्रसुदे उवाच ॥ * ॥ तदा च प्रज्जिभूता नम तात युधिष्ठिर । प्राज्ञसिः
प्राह विप्रर्षिर्नामसंशयनादितः ॥ * ॥ उपमन्यु उवाच ॥ * ॥ ब्रह्मयेतैर्लम्बिप्रोक्तैर्वेदेवदात्र
सम्भवेः । सर्वश्रेष्ठेषु शिक्षितेषु यथोच्यन्ति नामानि । तद्वह्निर्बिहितैः सत्यैः सिद्धैः सर्वार्थ
साधकैः । अद्विष्टा तस्मिन्नाः भागाः कर्त्तव्ये दत्तात्मना । अयोक्तैः साधुभिः श्रुतैर्गुणिसिद्धात्
दक्षिणैः । प्रमदं प्रममं सार्वैः सर्वभूतार्थिभ्यः सुभ ॥ श्रुतिः सर्वत्र जगति ब्रह्मसोकाप्रतारिते । यत्तद्ब्रह्
श्चन्दरमं ब्रह्म प्रोक्तं सनातनं ॥ सद्ये यदुक्तं श्रेष्ठं तृप्तुष्वपहितोमत । परमोऽयं भवन्देवमात्मकोऽप्यदं
मेश्वर ॥ तेन ते आवृत्तियन्तानि यत्तद्ब्रह्म सनातनं । नमश्च विद्याराज्यमत्तं ब्रह्म सर्वस्य केशिभिः ॥
कुक्तेनापि विभूतोऽयमसि सर्वशरीरणि । यज्ञादिर्भयनमाह सुरैरपि न भयते ॥ कथं च त्वं ब्रह्म प्रोक्तं तदु
बुलान्कार्त्तं न नाधदेः किन्तु देवस्य नमस्तः संक्षिप्तार्थपराशरमे ॥ प्रकृत्यश्चित्तैर्देवैः प्रसादात्तस्य
धीमतः । अप्राप्येदं ततोऽनुष्ठानं ब्रह्मसोमुनीश्वरं ॥ यदा तेनाम्बुजान् श्रुतो वै च तदा मवा ।
अनादिनिभनस्यैह कुरुतेऽन्तःशरणा ॥ नाम्नाः कश्चित्तनुद्रेयं यथाप्यथैकयोगिनः । वरदकः

आप्यं
राधं

बरेष्यस्य विन्धरूपस्य धीमतः ॥ शृणु मास्त्राच्च यं कृत्स्नं यदुक्तं पद्मयोगिना । दशनामरुहस्त्राणि
यान्याह प्रपितामहः ॥ तानि निर्णय्य समसा दभ्रोर्धृतमिबोद्धृतं । गिरेः सारं यथा हेम पुष्प
सारं यथा मधु ॥ घृतासारं यथा दध्नस्तथैतस्मिन्नमृद्धृतं । सर्वपापापहनिदं चतुर्वेदसमन्वितं
प्रलये नाभिमन्तव्यं धार्म्यं प्रयतात्मना । आङ्गस्यं पीष्टिकं चैव रचोन्नं पावनं महत् । इदं भक्ताय
दातव्यं अह्मभानास्तिकाय च । नास्यदधानरूपाय नास्तिकायाजितात्मने ॥ यस्याभ्यन्तूयते देवं
कारणात्मानधीश्वरं । स कृत्स्नं नरकं गच्छति सहपूर्वैः सहापरैः ॥ इदं ध्याननिदं योगनिदं
धेयसमुत्तमं । इदं जप्यामिदं ज्ञानं रहस्यनिदसुत्तमं ॥ अज्ज्ञात्वा चन्तकालेपि गच्छेत् परमां
पतिं । पवित्रं नरकस्य मेध्यं कस्याहनिदसुत्तमं ॥ इदं ब्रह्मा पुराकृत्वा सर्वलोकपितामहः ।
सर्वसत्त्वानां राजस्ये दिव्यानां समकल्पयत् ॥ तदा प्रभृति वैवायवीश्वरस्य सहात्मनः । स्वराज
इतिस्थितो जगत्परमपूजितः ॥ ब्रह्मलोकैकादशं स्तम्भं स्वराजोवतारितः । पतङ्गविः पुराग्राह तेन
संदिह्यतो भवत् ॥ स्तम्भैश्चाथ भूर्लोकं तद्विष्णुः सप्ततारितः । सर्वनरकमाङ्गस्य सर्वपापप्रणा
श्रमं ॥ निगदिष्ये महाबाहो सत्त्वानामुत्तमं तव । ब्रह्मणामपि यद्ब्रह्म पराणामपि चत्परं ॥
तेजसामपि यन्तेजस्यसामपियत्तमः ॥ शान्तानामपि यः शान्तो सुतीनामपि यो युतिः ॥ दान्तानाम
पि शोदान्तो धीमतामपि याच धीः । देशानामपि यो देवः स्वर्गीयानपि यो स्वर्गः ॥ अज्ञानामपि यो
यज्ञः शिवानामपि यः शिवः । ब्रह्मणापि यो ब्रह्मः प्रभुः प्रभवतामपि ॥ योगिनामपि योग्यो
कारणानाञ्च कारणमथतोऽलोकाः सन्भवन्ति न भवन्ति यतः पुनः ॥ सर्वभूतसमभूतस्य हरस्यामित
तेजसः । अष्टोत्तरसहस्रन्तु नाम्नां सर्वस्य मे शृणु । यच्छ्रुत्वा मनुजयात्र सर्वान्कामान्नाप्स्यसि ॥ * ॥
श्रीं स्त्रियः स्यात्तुः प्रभुर्भीमः प्रवरो वरदो वरः सर्वोऽप्य सर्वविद्यातः सर्वः सर्वकरो भवः ॥ अट्टी चर्मी
त्रिहंती च सर्वानः सर्वभावतः । हरश्च हरिश्चास्य सर्वभूतहरः प्रभुः ॥ प्रद्युम्नश्च निवृत्तिश्च नियतः
शान्तो ध्रुवः । अश्वत्थामासौ भववान् स्वपरो गोपरोऽर्धनः ॥ अग्निवायोमहाकर्मा मप्यसौ भूत
भावतमज्जगत्सर्वेशः प्रहृष्टः सर्वलोकप्रजापतिः ॥ महाहृषोमहाकाशोऽप्युषरूपो मश्रायशः । महात्मा
सर्वभूतात्मा विन्धरूपो महाहनुः ॥ लोकपालोऽन्तर्हितारम्भ प्रसादोऽहमर्धभः । प्रविचक्ष्य सदांश्चैव
नियतो नियमाश्रितः ॥ सर्वकर्मा स्वयभूतः आदिरादिकरोनिधिः । सहस्राक्षोऽविद्यासासः
सोमोऽस्रसाधकः ॥ चन्द्रः सूर्यः अग्निः क्रौर्धुर्दोऽप्यहपतिर्वरः । अचिरस्था नमस्कर्ता मृग
शास्त्रार्थज्ञोऽनघः ॥ महातपा धीरतपा अदीनो दीनसाधकः । संमत्परकारे मङ्गः प्रमाणं परमं तपः
योगी योग्योऽमहावीजो महारोता महाबलः । सुवर्षरेताः सर्वज्ञः सुवीजो श्रीजवाहनः ॥ इह
बाहुकनिशिष्ये मीलकण्ड उनापतिः । विन्धरूपः स्वयं मेष्टो बलवीरोऽज्ञोऽनघः ॥ गणकर्ता गण
पतिः १०० दिव्यासाः कासप्रवच । अग्निविस्रक्तोऽग्निः सर्वज्ञश्चक्रोऽहरः ॥ कसप्रह्लुधरो धन्वी
बाणहस्तः कपाशवान् । अश्वनी सती मत्तश्रीच र्द्विष्टी आशुनी महान् ॥ सुमहत्तः सुहृदस्य तेज

स्तोत्रकरो निधिः । उष्णीषीष सुवक्रश्च उदयोविनतस्तथा ॥ दीर्घश्च हरिकेशश्च सुतीर्थः कृष्ण
 श्ववच । शृगालरूपः सिद्धार्थो मुंडः सर्व शुभहरः ॥ वज्रश्च वज्ररूपश्च बन्धधारी कपर्द्यपि । जर्हरेता
 जर्हलिङ्गजर्हशायी मभस्थलः ॥ विजटी चीरवासाश्च वज्रः सेनापतिर्विभुः । अहस्त्रोमकक्षरत्रि
 ग्धमन्युः सुवर्चसः ॥ वज्रहा दैत्यहा कासो लोकधाता गुणाकरः सिंह शार्दूलरूपश्च चार्द्रचर्मीत्ररा
 वृतः ॥ कालयोगी महानादः सर्वकामक्षतुष्यकः ॥ निशाचरः प्रेतचारी भूतचारी महेश्वरः ॥ वज्र
 भूतोवज्रधरः स्वभानुरमितो गतिः । मृत्युप्रियो नित्यमर्त्तमर्त्तकः सर्वसाक्षसः ॥ घोरो महातपाः पाशो
 नित्यो निरिहो नभः । सहस्रहंसी विजयो व्यवसायोद्यनिन्दितः ॥ अधर्षयो धर्षयात्मा वज्रहा
 कामनायकः । दक्षयज्ञावहारी च सुसहोमध्यमक्षया ॥ तेजोपहारी वलहा मुदितोर्वाजितो
 वरः । नवीरधीषो नवीरो नवीरवक्षसवहनः ॥ न्यथोपहृषो २०० न्यथोपोहृषकक्षस्थिति
 विभुः । सुतीक्ष्णदन्तश्चैव महाकाशो महानमः ॥ विष्णुसेनो हरिर्धनुः संयुगापीडवाहनः । तीक्षा
 तापश्च चर्मश्च सहस्रधर्मज्ञासवित् ॥ विष्णुप्रसूदितो यज्ञः समुद्रो वडवानुसः । अतामनसहायश्च
 प्रमान्ताता अतामनः । संयतेजो वहातेजा जन्मो विजयकालवित् । अयोतिषामयम सिद्धिः सर्व
 विद्यहरवच ॥ मिथी मुष्ठी अटी ज्वाली मूर्त्तजो मूर्धनोवशी । वैश्वी पण्वी तांली खली काशक
 डडडः ॥ मत्स्यविद्यहन्तिर्गुणवृद्धिर्लयोगमः । प्रजापतिर्विचवाञ्ज विभागः सर्वगोमुखः ॥ विमोचनः
 सुमरसो हिरण्यक्षयोद्भवः । नेत्रजो वलचारी च नडीचारी क्षुतस्तथा ॥ सर्वतूर्यगिणादीच सर्वतोद्य
 परिग्रहः । व्यासकृपो महावासी मुहो नासी तरङ्गवित् ॥ विदग्धस्त्रिकालधुक्कर्मः सर्वबन्धविमोचनः ।
 बन्धनकसुरेन्द्रासी युधिष्ठनुविनायकः ॥ सौख्यप्रसादो दुर्वासाः सर्वसामुनिर्बेवितः । प्रकन्दनो विभा
 गज्ञः अतुल्यो यज्ञमोचवित् ॥ सर्ववासः सर्वचारी दुर्वासा वासयोमरः । हेनोद्देनकरो यज्ञः सर्वधारी
 धरोत्तमः । लोहिताशोमशोचश्च विजयसो । विभारदः । संयहो निग्रहः कर्त्ता सर्वधीरनिवासिनः ॥
 मुखोर्भुक्श्च हेतुश्च काशिकः सर्वकामदः । सर्वकालप्रसादश्च सुबलो वज्ररूपधृक् । २०० । सर्व
 कामहरश्चैव सर्वदः सर्वतोमुखः । चाकाशनिर्विहृपश्च निपाती क्ष्वभ्रः सकारौद्ररूपो मुरादित्यो वज्र
 रश्मिः सुपर्कसी । सुर्वे वै महाबेधो मनोबेगो निशाचरः । सर्ववासी श्रियावासी उपदेयकरो करः । मुनि
 रात्मनिर्बल्लोका सप्तयश्च महेश्वरः ॥ पत्नीष पञ्चरूपश्च अतिदोसो विद्याप्यतिः । उन्मादो मन्दनः का
 मोद्ध्यन्वापोर्बकरो यज्ञः । वामदेवश्च वामश्च प्राग्दक्षिणश्च वामनः । सिद्धयोगी महर्षिश्च सिद्धार्थः
 सिद्धसाधकः ॥ निरुद्ध निरुद्धयश्च विपद्गोष्ठरथ्ययः । महासेनो विद्याश्च पञ्चभात्रोत्पत्तिः ॥
 वज्रहस्तश्च विश्वामी । अज्ञास्यमन इतश्च वृता वृत्तकरः । सासो मूर्धुर्नधुकलोचनः । पापस्यत्यो वाजसतो
 नित्यमायनपूजितः । ब्रह्मचारी लोकाचारी सर्वचारी विचारवित् ॥ ईशान ईश्वरः कालो निशाचारी
 पिनाकधृक् । निमित्तस्थो निमित्तश्च मुद्दिर्गन्दि करो हरिः ॥ नन्दीश्वरश्च नन्दीच नन्दनो नन्दि
 वर्धनः । भगवतरो निहन्ता च कासो ब्रह्मा पितामहः ॥ चतुर्भुजो महाशिरश्चाश्लिङ्गसकैव च

प्रा० प०
दा० व०

लिङ्गार्थः सुराध्यक्षो योमाध्यक्षो युगावहः ॥ बीजाध्यक्षो बीजकर्ता अध्यात्मानुगतो वलः । इति
 हासः सकलस्य गौतमो ५०० च निष्कारः ॥ इन्धो ह्यदम्भो वैदम्भो बश्यो बश्करः कलिः । लोक
 कर्ता पशुपतिर्नृणां कर्ता शूलो बधः ॥ अक्षयं परमं ब्रह्म बलवच्छक्रेव च । गीतिर्ह्यनीतिः
 शुद्धात्मा शुद्धो नान्योन्यतागतः ॥ ब्रह्मप्रसादः सुलभो दर्पणे च त्वनिवजित् । वेदकारो मंत्रकारो
 विद्वान्मनस्वर्दनः ॥ महानेर्षनिवासी च महावीरो बशीकरः । अभिज्वालोनहाज्वालो अति
 भूषोऽजतो हृदि ॥ वृषणः शङ्खरो नित्यमर्षली भूतकोतलः । नीलस्रवांगलुब्धश्च शोभनो
 निरवग्रहः ॥ सखिदः सखिभावश्च भागो भागकरो लघुः । उरुप्रश्न महाप्रश्न महागर्भ
 परावहः ॥ कश्यपः सुवर्षश्च इन्द्रिध सर्वदेहिना । महापादो महाहसो महाकायो महा
 यशः ॥ महामूर्धा महामाघो महानेत्रो गिप्रोक्षणः । महानासो महाशोणो महाहोत्रश्च महाहनुः ॥
 महानासो महाकर्णो महापीयोपमान्मासः । महारथो महारथो महाभरतश्च महासस्यः ॥ सन्धो
 अश्विनोश्च महात्मा ययोनिसिधिः । महादन्तो महादन्तो महाजिह्वो महाजुहः ॥ महानसो
 महाद्वेजा महाकोशो महाजडः प्रसन्नश्च प्रसादश्च प्रथमो विरिहपनः ॥ खेदनो खेदनश्च अधि
 मश्च महाजुभिः । वृषाकारो वृषकतुरमन्त्रो वायुवाहनः ॥ अश्वतो ५०० नैवमानाश्च देवाधिपति
 देवश्च । सर्वशरीर्यः सानास्य सकलस्रखानितेश्वरः । अशुपादभुञ्जो नुष्ठा प्रकाशो जम्भनक्षपा । अने
 शार्कः प्रसादश्च अमिन्यः सुदर्शनः ॥ उपकारः प्रियः सर्वः कनकः शोचनश्चिः शान्तिर्वैन्द्रिकरो भावः
 पुष्करः स्वपतिः स्त्रियः ॥ हादः स्त्रासनश्चोषोषश्च जगद्दितः । भक्तः कश्चिश्च काशश्च नकरः काश
 पूजितः ॥ सगद्योपकारश्च भूतवाहनसारथिः । भस्मायुधो भस्मायुधो भस्मामन्त्रो भस्मो ॥ लोक
 पाशकथा लोकानुहात्मा सर्वभूतिः । अक्षयिभुक्ता अक्षयः सुविभक्तो भूतिभक्तः ॥ चापनस्यः क्रिया
 यक्षो विष्णुकर्ता मतिर्नरः । विष्णुस्य शश्वतोसोऽनुष्ठाया सुनिकषः ॥ कपिलः कपिलः मुक्तः
 चायुश्चैव परोपरः । अर्धवैष्णवित्साधकः सुविश्वेयः सुभारदः ॥ अश्वतोभुभेदेवः अंशुकारी
 सुवाच्यः । तुम्बवीचो महाभोषो अर्द्धरेतः जलोत्थः ॥ अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । सुवहारिः
 सन्मानारिर्नृणां महायुधः ॥ कञ्जः शिन्दितः सर्वः प्रहरः प्रहरित्यनः । अश्वतो ५०० महा
 देवो विचदेवः सुवहारिश्च ॥ अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः
 विष्णुपुरजितः विष्णुः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः
 भूतोपरः ॥ प्रनाकश्चोभोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः
 विष्णुर्वैष्णवित्साधकः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः
 पञ्चानस्य पुराणः पुण्ड्रपुत्रो । कुरुकर्मा कुरुकर्मा कुरुभूतो कुरुभूतः ॥ सर्वम्योदर्भचारी
 सर्वेशः प्राणिनाम्पतिः ॥ देवदेवः सुखासकः सर्वशरीर्यः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः । अश्वतोभुभेदेवः सुभारदः

रिसंश्रयः ॥ कुलहारी कुलकर्ता बज्रविद्योबज्रप्रदः । वणिजोवर्द्धकीवृक्षोवकुलसन्दनश्रद्धः ॥ सार
 धोवोमहाजन्तुरजोसस्य महौषधः । सिद्धार्थकारी सिद्धार्थश्रद्धेयाकरणोत्तरः ॥ सिंहनादः
 सिंहदंष्ट्रः सिंहगः सिंहबाहनः । प्रभावात्मा जगत्कालस्थानोलोकहितक्षरः ॥ सारङ्गो नवचक्राङ्गः
 केतुमाखी सभावन्नः । भूतलघोभूतपतिरहोरात्रमनिन्दितः ॥ बाहिता सर्वभूतानां निलयश्च
 विभुर्भवः । अमोघसंयतोद्यमोभोजनः प्राणधारणः ॥ धृतिमान्मतिमान् ७०० दत्तः सत्कृतश्च युगा
 धिपः । गोपालिर्गोपतिर्ग्रामोचर्मवसनोहरिः ॥ हिरण्यवाङ्मथ तथा गुहापालः प्रवेशिनां ।
 प्रहृष्टारिर्महाहर्षो जितकामे । जितेन्द्रियः ॥ गान्धारश्च सुवासश्च तपःशक्तोरतिर्नरः । महागीतो
 महानृत्योद्यमसुरोणसेवितः ॥ मद्यकेतुर्महाधातुर्नैकसानुचरश्चलः । आवेदनीय आदेशः सर्वगन्ध
 सुखावहः ॥ तोरणक्षारणो वातः परिधीपतिखेचरः । संयोगोवर्धनेष्टद्वः अतिष्टद्वोगुणाधिकः ॥ नित्य
 मात्मसहायश्च देवासुरपतिः पतिः । युक्तश्च युक्तावाङ्मथ देवोदिविसुपर्वणः ॥ आषाढश्च सुषाढश्च ध्रुवो
 यय हरिखोहरः ॥ वपुरावर्त्तमानेभ्योवसुश्रेष्ठो महापथः । शिरोहारी विमर्षश्च सर्वलक्षणलक्षितः ॥
 अक्षश्च रथयोगीश्च सर्वयोगी महाबलः । समान्नायोसमान्नायस्तीर्थदेवो महारथः ॥ निर्जीवो जीव
 नोमंत्रः शुभाद्योवज्रकर्कशः । रत्नप्रभूतो रत्नाङ्गो महार्थवनिपानवित् ॥ मूलं विशालो ह्यृतेो व्यक्ता
 व्यक्तसपोनिधिः । आरोहणो धिरो ह्यश्च शीलधारी महायथाः ॥ सेनाकल्पो महाकल्पो योगो युग
 करोहरिः । युंरूपो महारूपो महानागहनो वधः ॥ न्यायनिर्बणः पादः पण्डितो ह्यचलोपमः ।
 बज्रमालो महामालः शशीहरसुलोचनः ॥ विस्तारो लवणः कूपस्त्रियुगः सफलोदयः । त्रिनेत्रश्च विषा
 णांगो मणिविहो जटाधरः ॥ विन्दुर्विसर्गः सुमुखः ८०० शरः सर्वायुधः सहः ॥ निवेदनः सुखायातः सुग
 व्दारो महाधनुः । गन्धपालोच भगवानुत्थानः सर्वकर्माणां ॥ मन्यामोवज्रलोबायुः सकलः सर्वलोच
 नः । तल्लालः करस्थाली ऊर्ध्वसंहननो महान् ॥ ह्यत्रं सुहृत्रो विख्यातो लोकः सर्वश्रयः क्रमः । मुण्डो
 विरूपो विकृतो दण्डी कुण्डी विकुर्बणः ॥ ह्यर्थतः ककुभोज्ञी शतजिह्वः सहस्रपात् । सहस्रमूर्धा
 देवेन्द्रः सर्वदेवमयोगुरुः ॥ सहस्रबाहुः सर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत । पवित्रं त्रिःककुम्भं त्रिःकनिष्ठः
 कृष्णपिङ्गलः ॥ ब्रह्मादण्डविनिर्माता शतग्री पाशशक्तिमान् । पद्मगर्भा महागर्भा ब्रह्मगर्भा जलोद्भवः
 गभस्त्रिर्ब्रह्महृद्ब्रह्मा ब्रह्मविद्ब्राह्मणो गतिः । अनन्तरूपो नैकात्मा तिम्रजेजाः स्वयम्भुवः ॥ ऊर्ध्वगा
 त्मा पशुपतिर्वतर्हो मनोजंब । चन्दनी पद्मनालायः सुरभ्युत्तरणो नरः ॥ कर्णिकारो महास्रग्वी मोक्ष
 षोक्तिः पिनाकधृक् । उमापतिरुमाकान्तः । जाम्हबीधृगुमाधवः । बरो बराहो बरदो बरेण्यः सुमहास्वनः ।
 महाप्रसादोदमनः शत्रुहाश्चेतपिङ्गलः ॥ पीतात्मा परमात्मा च प्रयतात्मा प्रधानधृक् । सर्वपार्श्वं मुख
 क्तो घर्मासाधारणो वरः ॥ धराचरात्मा सूक्ष्मात्मा अमृतो गोवृक्षेश्वरः । साध्यर्षिर्वसुरादित्यो विव
 स्तान् सविताष्टतः ॥ व्यासः सगः सुसंज्ञो विसरः पर्ययो नरः । षट्पत्तः सन्वत्सरो मासः पक्षः ९०० संख्या

शा०प०
दा०ध०

समापनः ॥ कला काष्ठा पलोमात्रा मुहूर्त्ताहः क्षपाः क्षणः । विश्वेदेवेप्रजाबीजो लिङ्गमाद्यस्तु
निर्गमः ॥ सदसद्यत्कमथक्तंपिता माता पितामहः । स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिपिष्टपं ॥
निर्वाणं ह्यदगश्चैव ब्रह्मलोकः परागतिः । देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायणः ॥ देवासुर
गुरुदेवो देवासुरममस्कृतः । देवासुरमहासाधो देवासुरगणाग्रथः ॥ देवासुरगणाध्यक्षो देवासुर
गणग्रणीः देवातिदेवो देवर्षिर्देवासुरवरप्रदः ॥ देवासुरेश्वरो विश्वेदेवासुरमहेश्वरः । सर्वदेव
मयोचिन्तो देवतात्मात्मसम्भवः ॥ उद्भिन्निविक्रमो वैद्यो विरजोमीरजोत्तरः । ईडो ह्यक्षीश्वरो
द्याघ्रो देवसिंहो नरर्षभः ॥ विबुधो ग्रवरः सूक्तः सर्वदेवस्तपोमयः । सुयुक्तः शोभनो वशी प्रा
सानां प्रभवो व्यथः ॥ गृहः कान्तो निजः सर्गः पवित्रः सर्वपावनः । गृहो गृहप्रियो बधूराजराजो निरा
मयः ॥ अग्निरामः सुरगणो विरासः सर्वसाधनः । ललाटाक्षो विश्वेदेवो हरिश्चो ब्रह्मवर्धनः ॥ स्याव
राणां पतिश्चैव नियमेन्द्रियवर्द्धनः । सिद्धार्थः सिद्धभूतार्थो चिन्त्यः सत्यव्रतः शुचिः ॥ प्रताधिपः परं
ब्रह्म भक्तानां परमा वतिः । विमुक्तो मुक्ततेजाश्च श्रीमान् श्रीवर्द्धनो जगत् १००० ॥ यथा प्रधानमभवत्
निति भक्त्या स्तुतो मया । यच्च ब्रह्मादयो देवा विदुस्तत्त्वैर्महर्षयः ॥ स्तोत्रमर्थं वन्द्यश्च कस्तोष्यति
जयत्यति । भक्त्या त्वेवं पुरस्कृत्य मया यज्ञपतिर्बभूवुः ॥ ततोभ्यनुज्ञा संप्राप्य स्तुतोर्नातिमताम्बरः ।
शिवमेभिस्तुवन्दे वन्नामभिः पुष्टिवर्द्धनैः ॥ नित्ययुक्तः शुचिर्भक्तप्राप्तो त्यात्मानमात्मना । एतद्दि
पसं ब्रह्म परं ब्रह्माधिगच्छति । ऋषयश्चैव देवाश्च स्तुवन्त्येनन्तु तत्परं ॥ स्तुयमानो महादेवः स्तुभ्यते
नियतात्मभिः । भक्तानुक्म्पी भगवानात्मसंस्थाकरो विभुः । तथैव च मनुष्येषु ये मनुष्याः प्रधा
नतः । आस्तिकाः श्रद्धधानाश्च बहुभिर्जन्मभिः स्तुतैः ॥ भक्त्या ह्यनन्द्यमीशानम्यरन्देवं समात्मनः ।
कर्मणा मनसा वाचा भावेनामिततेजसः ॥ शयानाजायमानाश्च इजमुपविशंस्तथा । उन्मि
षन्निमिषंश्चैव चिन्तयन्तः पुनः पुनः ॥ शृण्वन्तः श्रावयन्तश्च कथयन्तश्च ते भवं । स्तुवन्तस्त्वयमाना
श्च स्तुयन्ति च रसन्ति च ॥ जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु । जन्तोर्बिगतपापस्य भवे भक्तिः
प्रजायते ॥ उत्पन्ना च भवे भक्तिरनन्या सर्वभावतः । भाविनः कारणे चास्य सर्वयुक्तस्य सर्वथा ॥
एतद्देवेषु दुःश्राप्यं मनुष्येषु न लभ्यते । निर्विघ्ना निखला हरे भक्तिरव्यभिचारिणी ॥ तस्यैव च
प्रसादेन भक्तिरुत्पद्यते नृणां । यथा यान्ति परां सिद्धिं तद्भावगतचेतसाः ॥ ये सर्वभावानुगताः प्रप
द्यन्ते महेश्वरं । प्रपन्नबन्धुलो देवः संसारान्जान् समुद्धरेत् ॥ एवमन्ये विकुर्वन्ति देवाः संसारमोचन ।
मनुष्याणां मृते देवं मान्याश्चिन्तयन्तः ॥ इति तेनेन्द्रकल्पेन भगवान् सदसत्यनिः । कश्चिन्वासा
स्ततः द्रष्टव्यपिण्डना शुभवुद्धिना ॥ स्तवमेतं भगवतो ब्रह्मास्वयमधारयत् । गीयते च सुवर्द्धेन
ब्रह्मा शङ्करसन्निधौ ॥ इदं पुण्यं पवित्रं सर्वदा पापनाशनं । योगदं मोक्षदश्चैव स्वर्गदं तोषद
न्तथा ॥ एवमेतत्पठन्त्येव एकभक्त्या गुणहरे । या गतिः सांख्ययोगानां प्रजन्ते ताङ्गन्ति सदा ॥ स्तव
मेतत्प्रयत्नेन सदा ह्यस्य सन्निधौ । अन्धमेकं वरेद्भक्तः प्राप्नुयादीशितं फलं ॥ एतद्देवस्य परमं

ब्रह्मणो हृदि संस्थितं । ब्रह्मा प्रोवाच शक्राय शक्रः प्रोवाच सृष्ट्यवे ॥ सृष्ट्युः प्रोवाच रुद्राणां
 रुद्रेभ्यस्ताण्डरुत्स्वान् । महता तपसा प्राप्तस्तृष्टिना ब्रह्मासृजानि ॥ तृष्टिः प्रोवाच शुक्राय गौत
 माय च भार्गवः । वैवस्वताय मनवे गौतमः प्राह माधव ॥ नारायणाय साध्याय समाधिष्ठाय
 धीमते । यमाय प्राह भगवान् साध्या नारायणोऽभ्युतः ॥ नाचिकेताय भगवान् प्राह वैश्वनो यमः ॥
 मार्कण्डेयाय बार्हस्पत्ये नाचिकेतोभ्यभाषत । मार्कण्डेयान्मया प्राप्तो निचसेन जनार्दन । तवाप्यह
 ममित्रश्च स्वबन्ध्याद्यनिश्चुतं ॥ स्वर्गमारोग्यमायुष्यं धन्यं दैवेन सम्मितां नास्त्यबिभ्रुं विकुर्बन्ति दानवा
 यक्षराक्षसाः ॥ पिशाचायातुषानाश्च गुह्यका भुजगास्तथा । यः पठेत्तु शुचिभूत्वा ब्रह्मचारी जितेन्द्र
 यः ॥ अभययोगेन वर्षन्तु सोऽश्मभेक्षकं लभेत् ॥ इति महाभारतान्तर्गते दानधर्म्मोत्तरे महादेवसहस्र
 नामं समाप्तं ॥ * ❦ * ॥ वैश्वन्यायन उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ❦ * ❦ * ❦ * ❦ * ❦ * ❦ * ❦ *
 कहत भए इति व्यास मुनि सुनो युधिष्ठिर तात । शिवस्तोत्र यह तुम पढा आनदकर अवदात ॥
 तुमपै होऊ प्रसन्न अति शङ्कर आनददाति । परम प्रज्ञ धरमज्ञ अति कीरति करण महानि ॥

॥ * ॥ रामगीता छन्द ॥ * ॥

पुत्रकाजै नेरुधिरपै सुती यह अवदात । पढत भे हम लाय मनको सुनि युधिष्ठिर तात ॥
 भयो इच्छत फल सु हमको प्राप्त यहि तें लक्ष्मीतिनिहि नै हो प्राप्त तुम सब कामनाको दत्त ॥ कह्यो
 इति पुनि कपिल मुनिवर हम सु जन्म अनेक । शिव अराधन कियो चितको लाय सांहत बिवेक ॥
 शम्भु होय कृपाल हमको भए देत सु ज्ञान । हरण भवको दुःख अरु वर करण मोद महाव ॥
 तिह अनन्तर धर्म्मशील सु चारु शीर्ष सुजान । सखा है सुरनाथको से ज्ञानमय मतिमान ॥ परम
 दायवान अरु आलम्बनो वज्र जौन । कहत भो इति पंडुसुतसों परम प्रज्ञाभौन ॥ जाय कै गोकर्ण
 तीरधर्माहि हम शत वर्ष ॥ शिव अराधन कियो चितको लाय धरि वर हर्ष ॥ शम्भु होय कृपाल हमको
 दिए सुत शतदत्तालक्ष वर्षसु आयु जिनकी इन्द्रजित अतिखत्ता ॥ योनिते नहिं भए ते उत्पन्न अति
 धरमज्ञ ॥ तेअवान महान सुन्दर अजर दुखदर प्रज्ञा ॥ कह्यो इति पुनि पंडुसुतसों बालमीक ऋषीश
 होऊ तुम वर विप्रघातक कह्यो मोहि मुनीश ॥ मुनिनके यह बचन सुनिकै गए शङ्कर शरण ॥ सफल
 दरशन तासुको अरु परम दुखको दरण ॥ गए शरणे शम्भुके हम कुटे अघते भूरि ॥ परम याते उन्है
 जाने करण क्लेश हि दूरि ॥ कह्यो जैसे शंभु मोसों सुयंत्र तब अतिखत्ता ॥ होयभो भूमाहि मेरे बचनसे
 हे दत्ता कहत भे सुनि पंडुसुतसों परशुराम सुजान ॥ ऋषिन्ह माहँ भानु जैसे तेजमान महान ॥ वशु
 धधसों भए प्रापत क्लेशको हम उद्ध । लयो तब हम शरण शिवको न्यायकै नै शुद्धा ॥ करी अस्तुति
 शम्भुकी हम सहस नाम हि आपि । उक्ति वर सैं गाय कै शुचि भक्ति हियने थापि ॥ शम्भु होय
 कृपाल मोपै दयो यह वरदौन । रहित होऊ महान अघसों अजय होऊ सुजान ॥ अजर होऊ
 न होऊ कबऊ सृष्टु तव ऋषिराज । किए हमको सर्व प्रापत कृपा तासु दराज ॥ पुनि सु विश्वामित्र

शाःप०
दा०ध०
ऐसे कहत भे बरवैन । रहँ पूरव हम सु तबी जोध अतिके अन ॥ हाहिँ हम बर विप्र जीमे कै
बिचार सु एह । हम अराधन कियो शिवको परम आनदगेह ॥ भई तिनकी कृपाते मोहि प्राप्त
द्विजता जान । अतिहि दुखसभ तौन है बर महा आनद भौन ॥ कहत भे पुनि पंडुसुत सों अशित
देवल दत्त। अन्यथा हम कियो कबहूँ धर्मने अति स्वत्ता। पाकसासन कोपते भो प्राप्त हमकों आप
भो हमारो नष्ट तिहित परम धरम कलाप ॥ करी अस्तुति आय कै तब शम्भुकी हम भूप । प्रार्थना
भो अवण करिके परम आनद रूप । आपु यज्ञ अरु धर्म मोकों दए परम अखर्व । हरत दुखके
करण सुखके महा दाँनो सर्व ॥ गृत्समद ऋषि पुरन्दरके सखा परम महान । नृहस्यति सम प्रभा
जिनकी धर्मवाम सुजान। कहत भेते पण्डुसुतसों गृत्समद ऋषि दत्तारच्यो बत्सर सहसको मघवाम
यज्ञ सुखत्त। सुनऊ नृप ता यज्ञ भाही सामवेद अनूप । भो उचारण मान हमसों अन्यथा हे भूप ॥

॥ * ॥ अरिलहन्द ॥ * ॥

मनुके सुत वरिष्ठ से सुनि करि । कहत भए इनि हमसों सुनि करि ॥ पयो आपु नहि
नीके साम हि । घात गहि सुबुद्धि बर मामहि ॥ करऊ विचार आपु पुनि हिय मँहा यह कहि कै
वरिष्ठ न्है क्रुध सह ॥ दियो आपु हमको तब यह तिन । होऊ विप्र तुम धर्म बुद्धि बिन ॥ * ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

पानामो लै नही जिही माहीं । भारत कबहूँ लानै माहीं ॥ मिलै और मृग नाही जिहिमे ।
होय सिंहको डर अति तिहिमे ॥ जैसे देशमाहि दुख सौ कै । कुसित अतिहि कूर मृग न्है कै ॥
रहो जाय तजि कै सब हर्षन । ग्यारह सहस आठगत बर्षन ॥ सुनतहि आपु मृगा हम भए ।
तासु अनन्तर शिवपै गए ॥ क्लेशित देखि मोहि शिव दानो । कहत भए कै कृपा महानी ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अजर अनर तुम होऊ अरु होऊ दुखसों दूरि । सुनऊँ गृत्समद ऋषि सहत लहो अनन्दहि भूरि ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

रहो नित्य समभाव तुम्हरो अरु मघवानको । सुनऊँ परम ऋषिराव ब्रह्मो योग्य आनन्द कर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इनि सु अनुग्रह करतहँ गङ्गर श्रीमन्वाम । सुनऊँ युधिष्ठिर भूप बर प्रज्ञावाँन सहान ॥

महा मोदके कंदरुह हरण दुःखको दाप । औ डर डरण महान हैं हरण तौनऊँ तापा ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

नित्य अमोचर स्वत्त मनसा वाचा करमसों । उनसो औरण दत्त देव सुनऊँ धरणी शरण ॥

बोझे फेरि सुजान नासुदेव आनन्द कर । जगके हेतु सहान जासुनाम अति दुख दरण ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शिवको किए प्रसन्न हम को तप पर्मा महान । कहत भए जैसे हमै तब शङ्कर भगवान् ।

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

लगत सबको आत्मा निज परमप्यारो चारु । होऊ गे तिहि तुल्य प्यारे सबै आप उदारु ।
युद्धमाहीं होयगी तब पराजय कबहुँ न । अपि जैसे होयगो तब तेज दिन दिन दून ॥ दए
इमि बरदान मोको बज्रत और अनेक । सुनऊ पाण्डव धर्मधर बर धरै परम बिबेक ॥ * ॥

॥ * ॥ अरिलकन्द ॥ * ॥

सुनऊ प्रथम अवतारमाहि बर । परम सु मणि मन्थाचल जपर ॥ लाखन वर्ष शिवहि पूजे
हम । और न देव परम तिनकी सम ॥ है कपाल तब बोले पशुपति । मागऊ बर अब बेर करऊ
मति ॥ मन बांझित तुम्हरे जो होय सु । देहैं कृष्ण तुम्हें अब सोई सु ॥ नाथ माथ बोले हम
इमि तब । शङ्कर तुम दानी है बर सवा । दयाकरि जाँ आपु सु हम पर । नित्य निरन्तर देऊ भक्ति
बर ॥ एवमस्तु कहि शङ्कर तिहिङ्गल । अन्तरध्यान भए ताही पल ॥ * ॥ जैगेषव्यउवाच ॥ * ॥
सुनऊ युधिष्ठिर नृपति धर्म धर । काशीमाहि सु पूजे हम हर ॥ है कपाल मो जपर पशुपति ।
दियो मोहि ऐश्वर्य परम अति ॥ * ॥ गर्गउवाच ॥ * ॥ नदी सरस्वतीके तट बर पर । ध्यान
मानसिकसो मोपर हर ॥ होय कपाल पर्मा सुनि भूपति । कला ज्ञान दीहैं मोको अति ॥
अरु सहस्र दीन्हें मोको सुत । ते सब मो सम बर मेधायुत ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥
आयु दर्द दशलक्ष वर्षकी सुत सह मोको सर्व । सुनऊ पाण्डुसुत पर्मा बर मेधावान् अखर्ब ॥

॥ * ॥ पराशरउवाच ॥ * ॥ आभीरकन्द ॥ * ॥

शिवको विधिसे पूजि । कै प्रसन्न अति कूजि ॥ मनमे चिन्तन एह । कीन्हें हम बुधिगेह ॥
जोगी परम महान् । सुयशी प्रज्ञावान् ॥ दयावान् श्रीवान् । बर बेदज्ञ सुजान ॥ * ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

शम्भू कृपाते होय हमारे जैसे सुवन अनूप । शम्भू वृजि मे मनको मत यह बोले आनद रूप ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

सुनऊ विप्र चिन्तनते एह । है हे तेरे सुत बुधिगेह ॥ कृष्ण नामं यशवान् महान । परम
तेजसी प्रज्ञावान् ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
सावर्णिक मनुके समय सात ऋषिणमे जौन । मिलि है अरु बेदज्ञ बर है हे सुनि द्विजताँना ॥

॥ * ॥ तोसरकन्द ॥ * ॥

कुबंशको करतासु । बर धर्मको धरतासु ॥ इतिहास कर्ता सत् । दित सर्वजगको दत्त ॥

शा०प० अह इन्द्रको प्रिय पस्य । बर वीर्य बान अमर्ष ॥ अह योनवान महान । अघमान शुद्ध सुजान ।
दा०ध० ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सैसो क्यैहे सुवन तुव पराभर सुखधोय । यह बर दै मोकों भए अन्तरध्यान गिरोय ॥

॥ * ॥ पभक्तलीहन्द ॥ * ॥

माण्डवउवाच ॥ * ॥ हम चोर हे म पै चोरसाच । समसों नहि हमकों भूमिनाच ॥ विन जान
दिए सूरी पढाय । सूरीपर शिवको ध्यान लाय ॥ हम करत भए अस्तुति महान । तव श्री कृपास
शिव सुनि सुजान ॥ इनि कहत भए मोसों अनूप । अति दयावान आनद रूप ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सूरीजें तुम कूटि हो अब मांडव बर विप्र । कहि हो सोद महान तुम मेरे वरतें क्षिप्र ॥
आधि व्याधिसों रहित जै जीही अवेद वर्ष । सब तीरथमे न्हान तुम करिहो होय सहर्ष ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अस्य स्वर्ग महान देहैं तुमकों विप्र हम । यह कहिके ईश्वर अन्तरध्यान भए सुने ॥

॥ * ॥ रामगिती हन्द ॥ * ॥

नालवउवाच ॥ * ॥ लेय विन्धामिचको आशाहि हम हे भूप । पितादरशन काज आए गेह
माहि अनूप ॥ रुदन करती मात मोसों कछो सैरें बैन । श्रीलमान महान सुनि सुत बुद्धिके बर
अन ॥ भए तरुण सुजान भूपित वेदसों सुखदान । लेय आशा गाधिसुतकी विनै के सु महान ॥
पिता दरशन काज आए भरे प्रेम अनूप । हाथ पै नहि लखत है तव पिता तुम्हरो रूप ॥ बचन
सुनिए पिता दरशनमाहि होय निरास । गए शरणे शम्भुके हम परम आनदरास ॥ कृपा कै
अति शम्भु मोपै कहत भे इनि बैन । सुनऊँ नालव विप्र प्रज्ञावान अतिके सैन ॥ श्रुतिसों तुम
रहित होगे मात पित सह विप्र । पिता दरशन पाय हो तुम आजु मट्टमे क्षिप्र ॥ पाय जैसे शम्भु
आशा गेहमे हम जाय । परम मोदद पिताकों हम भए लखत संचाय ॥ पिता मेरे यज्ञ करि कै
रहे बैठे पस्य । नीरसों भरि लिए लीचन मोहि देखि सधर्म ॥ लग्यो करण प्रणाम मे तव सुनि
युधिष्ठिर भूप । अन्त लकरो कुशा तजिके भरे प्रेम अनूप ॥ बूमि मुख मो मिलि सु मोसों कृपा दै
अति उद्ध । भए कहत सु मोहि सैरें बचन प्यारे शुद्ध ॥ * ॥ * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * ॥ * ॥
आयो मेरे पास विषाकों पठि कै सुवन । लखो तुम्हें मुदरास भलो भयो हमकों हरप ॥

॥ * ॥ रामगीतिहन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ मुनिन करिके कछो जौ है कर्म शिवको स्वच । करत विस्मय भयो
सुनिके नृप युधिष्ठिर दक्ष ॥ कहत भे तव कृष्ण असें पण्डसुतसों पस्य । कहत जैसे विष्णु निज
रनायसों विन भर्म ॥ * ॥ वासुदेवउवाच ॥ * ॥ भानु जैसे तेज सब उपमन्यु षटपि अतिदक्ष ॥
होय सोहैं बचन मोसों कहे जैसे स्वच ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

भए पापसों जोग मलिन तमगुण रजगुणी । लहत कबजुँ नहि तान जन शरणो ईशानको ॥
द्विज सतोगुणी जौन लहत शम्भुको शरण ते । सुनि हे आनदभौन जग कारण बसुदेव सुत ॥

॥ ॐ*ॐ ॥ महाशरीरुन्द ॥ ॐ*ॐ ॥

ब्रह्मपद अरु विष्णुपद सुरराज पद शिव देत हैं । सुनजुँ हे श्रीकृष्ण शिव सब मोददानी
हेत हैं । भए ते परसन्न देत सु राजपद तिऊलोकको । और माहो देव औसो हरण सबहो शोकको ।

॥ * । जयकरीरुन्द ॥ * ॥

मनसाहुँसों होत सु जौन शरणे शङ्करके जन तौन ॥ रहित सर्व पापनसों होय । सुरके साथ
बसैं मुदभोग ॥ भे दै धाम तडाग महान । सब जगको जो हिंसावान ॥ औसो जन अघतैं कुटि
जात । शङ्करके शरणे अब दात ॥ ॐ*ॐ*ॐ ॥ रामगीतीरुन्द ॥ ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ

कोट पक्षि पतङ्ग सर्पादिक सु जीव जितेक । लहैं शरण शम्भुको ते लहत भय नहि एक ॥
जान जन हैं शरणे ईशानके जन तौन । लहत नहि संसारको भय सुनजुँ आनदभौन ॥ हे
हमारी बुद्धि मे निश्चय सु यह अति पम्प । सुनजुँ श्रीबसुदेव मन्दन करण भूरि सधर्म ॥ पुनह
बोल कृष्ण पण्डू मन्दसों इमि बैन । भक्तपालक दुष्टघालक महा आनद औन ॥ * ॥ विष्णु
हवाच ॥ * ॥ भानुचन्द्र सु भूमि अप अरु अनल अनिल अकाश । शक विश्वेदेव ब्रह्मा वेद ज्ञान
प्रकाश ॥ सत्य यज्ञ सु दक्षिणा अरु वेद पाठक पम्प । सोम बली यज्ञकारक ह्य अरु बर धर्म ॥
वज्र रक्षा विप्र बौषट काल चक्र सु जौन । सुयश स्वाहा सञ्जन सु अरु अग्रम शुभ सब तौन ॥
सप्त मुनि अरु सूक्ष्म बुद्धि सु कर्म कीजो सिद्धि । देवतागण उखपा अरु सोमपा सु प्रसिद्धि ॥
दृष्टिपा अरु गन्धपा आभासुरा सुर चारु । देवता सभकरजुँ पूरण यज्ञ इह सुविचारु । दरशपा अरु
परम असना आज्यपा हैं जौन । और जे सब देवता हैं सुनि युधिष्ठिर तौन ॥ * । पम्पुलीरुन्द ॥

मन्वर्व यक्ष पद्मग सुपर्ण । दानव पिशाच माया सुधर्ण ॥ चारण सुदुष्य अरु सुख महान ।
अरु सांख्ययोग सुनि नृप सुजान ॥ ए सर्व सर्वतैं भए जानि । सब देवकी पांति सु महानि ॥
सुखदा सब जगकी जानि भूप । आनद स्वरूप अरु अति अनूप ॥ आनन्द रूप शिवतैं अनूप ।
अब देव भए उतपन्न भूप ॥ आकाश आदि हैं भूत जौन । तिनके करता हैं सुमति भौन ॥ सब
भुवननके रक्षक महान ॥ सुनि पण्डु सुवन बर ज्ञानवान ॥ *ॐ* ॥ चरणादोहा ॥ *ॐ* ॥
शुद्ध तत्वकी इच्छा जिनको औसे हैं जन जान । सेवा करिवे योग्य हैं तिन सों सुर सुख भौन ॥

॥ ॐ*ॐ ॥ रामगीतीरुन्द ॥ ॐ*ॐ ॥

धरणि मांहीं पैठि कै ते देव सुनिहे भूप । शम्भुकी प्राचीन जो यह सृष्टि पम्प अनूप ॥ करैं
रक्षा तासुकी निमि सहित प्रीति महान । होत जैसे बीजतैं उतपन्न बीज सुजान ॥ निमि अनादि
सुसृष्टिके परवाह मांहि अनूप । परम आनद रूप पूरव ईशतैं सुनि भूप ॥ और और सु होत हे

शा०प० उतपन्न ईश अनिन्द । सुनु युधिष्ठिर धर्म धर वर धर्म नन्द नरिन्द ॥ वीर्यकीं शुचि शक्ति जे सें
दा०ध० भूमिमाही युद्ध । करति वृत्त सु मृत्तिकाको कहत हैं बुध उद्ध ॥ * * * ॥ दोहा ॥ * * * ॥
ईश्वरकी जो शक्ति सो तैसें हो भूपाल । करता है चिनमात्रको विश्वाकार विशाल ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

ईश्वरको सु विराट स्वरूप । लखत ध्यानसौं सुजम अनूप ॥ मनसा बाचासो है जौन । तव
अगोचर सुनि बुधिभौन ॥ हैं हम ताके शरणें सत्त । सुनि हे भूप युधिष्ठिर दत्त ॥ देहि हमै
षांक्षित वरदान । सोई सदा परम भगवान ॥ थिरि करि कै इन्द्रिनिकों सर्व । धरि कै प्रेमहिं परम
अखर्व ॥ शिव सोत्रको पढै सु जौन । मास एक गहि नेम हि तौन ॥ अश्वमेधके फलहि महान ।
प्रापत होत सुनऊँ मतिमान ॥ जौ द्विज पढै होय सह धर्म । सब वेदज्ञ होय तौ परम ॥ जौ
क्षत्रिय सु पढै मतिमान । लहै राज्य अरु कीर्ति महान ॥ पढै वैश्य जौ करि असनाना व्यापारक
तौ होय महान ॥ पढै शूद्र जौ गहिके नेम । तौ निति रहै परम सह क्षेम ॥ मरें सुगतिकों प्रापत
होत । सुनऊँ युधिष्ठिर प्रज्ञा पोत ॥ शङ्करमे जो ध्यान लगाव । पढै सोत्रहि परम सचाय ॥
तिहिके हैहि सर्व अघ दूरि । बढै पुण्य अरु आनद भूरि ॥ जिनमें रोम देहके बीच । तितनें वर्ष
हजार निभीच ॥ रहै स्वर्गमे सुनिहे भूप । धर्मवान वर परम अनूप ॥ * * * * *

स्वस्ति श्रीमहाराजाधिराजकाशेराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना बन्दोजनकाशी
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथस्य शिष्येणमणिरैधेन कविना विरचिते भाषामहाभारत
दर्पणे दानधर्म अष्टादशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

योग्य जानिबे जौन ईश्वर अति आनन्द कर। सुनऊँ तात बुधिभौन जान्यो तुम सो तौन हम।

॥ * ॥ * ॥ मधुभारछन्द ॥ * ॥ * ॥

संशय महान । एक भो सुजान ॥ सो करऊ दूरि अब आप भूरि ॥ * * * * *

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

करै धर्म हिं सहित पत्नी शास्त्रमाही एह । कह्यो है वर बुद्ध जन सुनि पितामह बुधि गेह ॥
पूर्वही कर यहणके सह भाव तियको जौन । है कहा यहि माहिं संशय होत है बुधिभौन। कह्यो
जो है अधिन्ह पूर्व धर्म तिय सह जौन ॥ कहा है यह तौन नोसों कहे प्रज्ञाभौन । प्रकाशिन
यह कियो श्रुतिको मंत्रसौं मुनिराज । कियो है को प्रजापति यह धर्म सन्तति काज ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इन्द्रिहिके सुखहेत है की यह तिय सह धर्म । संशय होत महान है मेरे हियमे परम ॥
यहीलोकमे लखत है तिय सह जो यह धर्म । लखत नही परलोकमे सुनऊँ पितामह परम ॥

पूख् एके मरतहैं जीवतरहैं सु एक । कहीं रहत सह भावहैं सुनऊ तात सविवेक ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

करत पिय तिय कर्म सगैं पै सुनऊ तात सु जान । होत निज निज वासनासैं धर्म भेद महान ॥
बहुत विधिके धर्मफलसैं युक्त बऊ जन पर्न । कर्मकी बऊवासनासैं युक्त बऊत अभर्म ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

साहस कपट अह मूर्खता इच्छिणके ए धर्म । धर्मप्रवक्ता कहतहैं सुनिए तात अधर्म ॥
ऐसे होत सुभावहैं इच्छिणके जाँ तात । तौ सहधर्म सु कहत किनि ज्ञानवान अवदात ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

महोहै सहधर्म है सह धर्मको उपचार । सुनि फितामह धर्मधर बर ज्ञानवान सुठार ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिनु अन्तर चिन्तन करत मोको जो यह बात । भासतिहै नभीर अति सुनिए भीषम तात ॥
दूरिदोय जिहि हेतसैं यहसंदेह महान । तौन हेत हमसैं कहो तुम हो परम सुजान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यहि परसऊ मोहि सुनि भूपाकहत एक इतिहास अनूप ॥ उत्तरदिशा साथ अतिखत्त।अष्टा
बक्र ऋषीको दत्त ॥ तामेहै समाद अनूप । सुनिए तौन युधिष्ठिरभूप ॥ * * * * *

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

मह आश्रमकी इच्छा करिकै । अष्टाबक्र ऋषी मुदभरिकै ॥ ऋषि वदान्यसा मागी कन्या ॥
नाम सुप्रभा जेहिको धन्या ॥ महा सुन्दरी परम अनूपा । लज्जे चन्द जिहिको लखि रूपा ॥
शील सुभाव गुणनसैं मोहै । औसी सुन्दरनैनी कोहै ॥ अष्टाबक्र ऋषीके मनकैं । मोहो जिहि
दिखायकैं तनकैं ॥ आतु बसन्तके माहीं नोके । फूलो फरे वृत्त अतसीके ॥ जैसे तरितहि मनकैं
मेरहत।मोहि खियो तिमि ऋषिको जोहत ॥ ऋषि वदान्य तब बोसत भए।तपके परम तेजसोहए ॥

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

कन्या तुमकैं देहैं पर एक सुनो हमारी बात । अष्टाबक्र ऋषी तपवर ज्ञानवान अवदात ॥ .

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥

पुण्यमई उत्तरदिशि जाउ । लखिहो तहां सुनऊ ऋषिराउ ॥ अष्टाबक्रउवाच ॥ उहाँ जाय
का लखिहैं तौन । कहो मोहि रिषि प्रज्ञा भौन ॥ जैसे कहिहो हमकैं आप । तैसे करिहैं
पुण्यकलाप ॥ वदान्यउवाच ॥ कुबेर अगार हिमाचल पर्न । उहाँविं इन्हें तुम जाऊ अभर्म ॥
अगार तहाँ त्रिषको अतिखत्त । अमन्द बिलन्द अनूपमदत्त ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सेवित जो धारणनसैं अह सिद्धनसैं पर्न । रहत जहाँ बऊ पारषद बऊमुखको सहधर्म ॥

बैन । सब तुम जाय धनदके अम ॥ कहे धनदसौ इमि दर बात । अष्टावक्र आय अवदात ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

तेरास सब बोलात भए । मणिभद्र आदिक मुद छए ॥ आपुहि आवत पास तुम्हारे । भूप धनद
महिमासौ भारे ॥ तुम्हरो आवम कारय जाना । धनदराय अश्वर्षीम महाना ॥ देखो इमको
तुम ऋषिराजा । तेजवांन नतिवांन दराजा ॥ यक्षराज इतमेने आए । ऋषिसौ बूजि कुशल मुद
झाय ॥ पुनि ऋषिसौ इमि बोलात भए । यक्षराज अति रतिसौ रए ॥ आए सुखसौ तुम ऋषि
राजा । कहे आपु आवनको काजा ॥ जो तुम कहिहौ सो हम करिहैं । औरन भाव हियेने
अरिहैं ॥ करो हमारे भौन प्रवेशा । असें कहत भयो यक्षेशा ॥ इत कारय सतकारित कहेके । आपु
जाइयो मुदसौ कहेके ॥ असें कहि रिषिकों, सँग लए । अपने गृहको आवत भए ॥ स्थाय गेहमे
आसन दीन्हो । विधिसौ ऋषिको पूजन कीन्हो ॥ बैठे मोद भरे अति दोऊ । जिनकी समताको
कहि कोऊ ॥ मणिभद्र आदिक गण आए । बैठत भए मोदसों छाय ॥ और यक्ष किन्नर गन्धर्वा ।
बैठत भए आयके सर्वा ॥ बैठे आय सबै तब नीके । बोले वचन यक्षपति सीके ॥ औ सुठोय आशा
तव नोकी । नाचैं तौ सु अमरा साकी ॥ * ॥ चरणा देहा ॥ * ॥ * * * * *
सुश्रूषा तव कोबो चाही अष्टावक्र ऋषीश । दक्ष यक्षपति असें बोले पाण्डव सुनऊ महोश ॥
अष्टावक्र ऋषीश तव बोले इमि सुनि बैन । होय मृत्यु सुनि यक्षपति महा बुद्धिके अैन ॥

॥ रामगीतो इन्द ॥ * ॥

उर्वरा रम्भा सुकेयी उर्वसी रति चार । घृताची चिन्नाङ्गदा सुमुखी सु परम सुदार ॥ * * * * *
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अलम्बुषा अरु यमहरा चिन्ना परम अनूप । प्रशमी दान्ता विद्युता हासनि प्रभा सुरूप ॥
विद्योता रुधि अमरा इतनी नचति सभाष । और किती नचती भई सुंदरि परम सचाय ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

भए बजावत बज्ज प्रकारके बाजा बर गन्धर्वानाच देखि अरु बाजा सुनि ऋषि सोदित भए अखर्व ॥
प्रवृत्ति भए गन्धर्वरायकी अतिछो दिश्य अनूपारान नाचैं अति लीनहोय ऋषि बसे तहँ मुदरूप ॥
बसत ऊपर बिते किते दिन नाचखलत ऋषिराय यक्षराज तब असें ऋषिसौ कह्यो मोदसौछाया ॥
अहजो विषय मनोहर अतिहै गंधर्व थाकोनाम । जेसें कहे आपु यह तैसें प्रवृत्त रहै बुधिधाम ॥
पूजनीयहो अतिबहो है तुम्हरो गृह एह । जौन करो आशा तुम हम सो करै तौन बुधिगेह ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

तब ऋषि असें बोलात भए । यक्षराजसौ मुदसौ रए ॥ तुमसौ हम अति आनद पायो ।
एहो धाम तब मुदसौ छायो ॥ अथा योग्य हम पूजित भए । तुमसौ यक्षराज बुधिछए ॥ सुनऊ

शा०प० यत्तपति जैहैं अब हम । तुन्हें योग्यहै कियो जान तुम ॥ *~* ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *~*
 दा०ध० यत्तराज तुमपै भए हम प्रसन्नहैं परम । बुद्धिमान सब योग्यहो वरधशवान संधर्म ॥
 ॥ * ॥ रामगोती छन्द ॥ * ॥

आपुके परसादतें सुनि यत्तराज सुजान । औ वदान्धरिषीयकी आशा सु त मतिमान ॥
 जायेंगेहम होऊ तुम वर रिद्धिमान महान । देयकै आशीस श्रीदहि महाऋषि तपवान ॥
 चले उत्तरदिशाकौ आनन्दसौ हिय छाया । परम विरिकैलाग्र मन्दिर हैम नाधि सचाय ॥
 भयो वपुष किरातको अहैं महादेव अनूप । भए पञ्चत तहां अष्टावक्र ऋषि तपरूप ॥ सुनि
 युधिष्ठिर नम्रहै ऋषि प्रेम महिकै परम । धानकी परदक्षिणा को कै प्रणाम सधर्म ॥ उत्तरिकै
 भूमाहिं परसन होतभे रिषिराय । तीन बेर प्रदक्षिणाकै अचलकी ऋषि राय ॥ परम सम भू
 माहि उत्तर चलेसु ऋषि सु जान । जाय आगें भए देखत परम सुन्दर धान ॥ तौम चल रमणीय
 बनसौ परम भूषित स्वत्त । सर्वऋतुमे फूल फलसौ युक्तजो सुनि दत्त ॥ युक्त अरु पक्षीणसौ कल
 शब्दवारे जान । तहां एक अति स्वत्त आश्रम भए देखत तौम ॥ लखे विविधाकारके गिरि
 हेमको अति चार । लखैं जिनके रतन भूषित शिखर उद्ग सुढार ॥ लखीपुनि मणि भूमि माही
 परम बापी स्वत्त । और चल रमणीय लखिकै सुनऊ भूपति दत्त ॥ रमितभो मत्र अतिहि अष्टा
 वक्र ऋषिको परम । तहां देख्यो एक कंचन सौध सु रिषि अभर्म ॥ सर्व मणिसौ जडित अरुवर
 धनद गृहसौ चार । लसत चारो और जिहिके हेम अचल सुढार ॥ अति हि रम्य विषाम जेहां
 रतन रम्य अनेक । लखत मोदित भए अष्टावक्र ऋषि सबिवेक ॥ लसत मणि तहैं परम परमा मर्द
 भूरि सुढार । आपनीहीं प्रभासा जे प्रकाशित हैं चार ॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥ * ॥ * ॥
 हीरनसौ भूषितहै तहैं कीभूमिअमन्दअनूप । धर्मवान यशवान वर सुनऊ युधिष्ठिर भूप ॥
 हीरनके तारणसौ भूषित सोभा भरे अमन्द । चारो और सौधहैं जाके जैसे परम बिलन्द ॥
 लागी मोतिनकोहै भालारि जिनमे परम सुढार । जैसे चार चादनी जिनसौ सोहत त आमार ॥
 ॥ * ॥ मोतीदाम छन्द ॥ * ॥

रिषीमसौ स्वत्त विभूषित जान । मनोहर परम लख्योथल तौम ॥ तपसुनिको सु कहा वरवास ।
 भयो यह संग्रयको परकार ॥ चहँदिगि देखि रिषीय सु जान । भयो इमि बेलात बैन सुठान ॥
 ॥ * ॥ अयकरोछन्द ॥ * ॥

अतिय इहां हम आए यह । जानै जान होय इहि गेह ॥ यह सुनि सप्त सु कन्या चार ।
 निकसीं गृहतें परम सुढार ॥ सबहि मनोहरि परम सुजानि । महामनोहर जे वरखानि ॥ जिहि
 जिहिका देखत ऋषि राय । तेते मनकों हरति सचाय ॥ *~* ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *~*
 जैसे मनत्रिनमं लग्यो लखिकै निमको रूप । वारण करिव योग्य नहि भए ऋषीय अनूप ॥

भए धरत जब धीरता अष्टावक्र ऋषाय। तव कथा बोलाति भई सुनिचै वर धरणीय ॥

शा०प०
दा०थ०

॥ * ॥ पञ्चमस्कन्ध ॥ * ॥

करिए प्रवेश गृहमाहि आप । सुनिचै ऋषीय वर तप कलाप ॥ कौतुक समेत ऋषि नेह बीव ।
कीन्हो प्रवेश सुनि नृप निभीष ॥ पैंन्हें सुवसन वर अतिहि चारु । अरु सर्व परम भूषण सुदारु ॥
बैठो सु पँलँगै अतिहि स्वच्छ । दृष्टा सुदार देखी सु दक्ष ॥ आशीरवाद दीन्हो सु ताहि । कधि
राय मोद्द सह ताहि चाहि ॥ इमि कहत भई उठि दार बैन । ऋषिराय बैठिए तेज अँन ॥ अष्टा
वक्र उवाच ॥ * ॥ जो शान्त ज्ञानवन्ती सु होय । तुम सर्वमाहि ये कहऊ सोय ॥ अरु और नाम
निज निज सु अँन । सब जाऊ हमारे सुनि सुअँन ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ
सुनि यह बैन ऋषीयकी कार प्रदक्षिणा सर्व । अपने अपने गृह गर्द बृद्धा रही अखर्व ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

करऊ सँन ऋषिराय यह अति सुन्दर शेषपर । बृद्धा कह्यो सचाय अँसे अष्टावक्रमों ॥
सुनि बृद्धाके वँन अँसे ऋषि मपनिधि कह्यो । तुमहँ करिए सँन बीती है रजनी बद्धत ॥

॥ * ॥ अन्न गुरुतोमरकन्द ॥ * ॥

सुनि वँन ऋषि रायके । अति स्वच्छ सुन्दर भायके ॥ * ॐ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ *
बैठो हँजो शेषपर बृद्धा परम सुजानि । सुखदा शोभासँ भई वर रमणीय महाँनि ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

कहूक पीछें काँपती अति दार बृद्धा अँन । मोहि लागो शीत है कहि वँन अँसे तौन ॥ जाय
बैठो शेषपर ऋषीकी अति स्वच्छ । आउ बैठो कह्यो उठि कै ऋषी सादर दक्ष ॥ भुजा भरि कै
ऋषीजूँकों लए उरसों लाय । भो बिकारित नाहि ऋषिको चित्त लखि तिय भाय ॥ ऋषी अष्टा
वक्रजूँकों काष्ठवत लखि बाल । भई कहती ऋषीसों इमि होय कै बेहाल ॥ कामसों हम भई
मोहित सुमऊँ हे ऋषिराय । चाहती हैं तुहँ हमकों चहौ तुमऊँ सचाय ॥ होय कामी करऊ
मेरे साधमाहि विचार । कामसों हम दुखित न्हे कै कहति बुद्धि अगार ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ

॥ * ॥ अरिलकन्द ॥ * ॥

तुममे कामारत हैं हम अति । कर आलिङ्गन हमसों गहि रति ॥ यह तव तपको है
उक्तमपञ्च । सुमऊँ ऋषी वर धर्मवँन कख ॥ * ॐ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ
धन आलय अरु और बखु जे देखत हो ऋषि आपातिमके हो प्रभु आपुही सुनिए धर्म कलाप ॥
अरु मेरेहु आपु ही हो प्रभु हे मतिवान । यहमे नहि संदेह है धर्मवँन धर्मवान ॥

आ०प०
दा०ध०

॥ * ॥ पञ्चभूतलोक ॥ * ॥

यह जो अनूप वर बन सुठार । तिहिमाहि करो मो सभे बिहार ॥ सब कामदानि है निपिनि
एह । सुनि सुखसि महा तप बुधिनेह ॥ हम कामसिद्धि करिहैं तुम्हार । सब सुगऊँ ऋषोवर बुद्धि
अगार ॥ ॐ ॐ ॐ * ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ * ॥ सुन्दरीचन्द ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ * ॐ ॐ
मो सभे करिहैं सु बिहारहि । मै बस हैं ऋषिराज तुम्हार हि ॥ देवनको अब मानुषको सब ।
भोग महा मिलिहैं तुमको अब ॥ ॐ ॥ * ॥ रामगीतीचन्द ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ * ॐ ॐ

पुरुष सङ्ग बिहार जो सो तियनको सुख पर्य । और सुख न समान इहिकी सुगऊँ सुख
वि सधर्म ॥ भई प्रेरित कामसो जे बाम है ऋषिराज । चलति इहा आपनी सौ बाम ते सह
घाय ॥ भई प्रेरित कामसो ते तप्त बाहु माहि । चलतिहैं ये उन्हे तातो जानि जाती नाहि ॥
अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥ करत नहि परदारको हम साथ माहि बिहार । धर्मशास्त्र सु माहि दू
खित है सु यह हे दार ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ * ॐ ॐ
मह आश्रमको बीच इहा भई प्रवेशकी । सो मनमाहि निभैव बुद्धि धाम वर बाम सुनि ॥
है हम अबहि अज्ञान विषयमाहि हे दार सुनि । सन्तति चहत सुज्ञान काज धर्म सुखसाजको ॥

॥ * ॥ रामगीती ॥ * ॥

धर्म जनित सु पुत्र सो शुभ लोकको हम पर्य । प्राप्त है सुगऊँ वृद्धा दार अतिहैं अभर्म । होऊ
निवृत्तिहै प्राप्त तू हे जानिके वरधर्म ॥ अष्टावक्र ॥ अधि मारुत वायु आदिक देवताहैं जौना तियनको
नहि लगत प्यारे सुगऊँ प्रजाभौन ॥ खने प्यारो बामको है परम केवल कामाबामकी रति रहति
रतिहोमाहि हे बुद्धिधाम ॥ होति रतिमे निपुण एकै बाम सहस्रनबीच । पतिव्रता एक होति
सत्तणमाहि सुगऊँ निभीच ॥ दार नहि पित मात जानि सौ न देवर आतापतिहि जानै नाहि सौ
नहि पुत्रको अबदात ॥ जानतीहैं एक केवल कामकोलि सघाय । सरित जैसे आपने वर बूल देति
गिराय ॥ हनति इमिही कुलाहि अपने दार ते ऋषि राय । प्रजापति सब देव लखिके कहे ए
तिय भाय ॥ भीष्म उवाच ॥ सुनि बुधिष्ठिर ऋषी अष्टावक्र सुनिके एह । दारदोष बिचारते इनि
कहत भे बुधिनेह ॥ होय चुप के चिन्त बिरतामाहि बैठे दार । जानीहो आप मन्मथ कोलिको
अवहार ॥ काति इहा हो इमारी हेत यहि ते चार । हम न जाने कामकोलिहै सुगऊँ वृद्धा
दार ॥ करत इहा माहि याने आपकी हम पर्य । कहत भे इमिदारसो ऋषि सुगऊँ भूप सधर्म
जौन है करतव्य तुमको कहे हमको तौन । वेन ए सुनि भई बोखति दार बुधिकी भौन ॥
सभे पाय सु जानिहो तुम पर्यको सुख पर्य । सुगऊँ अष्टावक्र ऋषि तप तेजवाम सधर्म ॥ जौन है
करतव्य तुमको तौन है सिद्धि । कछू दिन यह आनमाही बसो हे तपनिहि ॥ ऋषी अष्टावक्र
सुनि के दारके ए वैन । कछो सभे दारसो हम रहैगे यहि सैन ॥ राखिहो अबसो रहैगे हम सु

यहि थल माहि । कहत मै हौं सत्य तुमसों भानि संशय नाहि ॥ देखि दृढा दारकों ऋषिपर्म
चिन्ता नाहि । भए प्रापित मगहि वाके भावकों अबगाहि ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ * ॥ * ॥
जौन जौन अंग लखत दारको तौन तौन अंग माहि लखत नहीं हैं चित्त ऋषीको वृद्धापन अबगाहि ॥

भा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

देवता यहि धानकी है दार कै यह खौर । देखि वाकौं कियो यह सन्देह ऋषि सिरमौर ॥ जानि
बेके योग्य है यहहेत नीको जौन । चिप्र जान्यो चाहिए बर बुद्धिसों अब तौन ॥ यहीं चिन्ता
माहिं बोयो ऋषीको दिन सब । भई कहती बैन इमि तब दार पर्न अखर्व ॥ सत्तो परमा भानुकी
ऋषिराय सुबुधि सधर्म । अथ सायंकालको सो ललित भो है पर्म ॥ कहा तुमकों चाहिए सो
कहो हमकों आप । बैन सुनिके दारको ऋषि पर्न बुद्धि कलाप ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ * ॥
स्याउ जलहि अस्नान काजकों इमि बोले ऋषि चारु तौन होयकै संधोपासन करि है हम अब दार ।
स्वस्ति श्री काशीराज महाराजाधिराज श्री उदित नारायण स्थाज्ञा भिगानिना श्री वन्दीजन काशीवासि
रघुनाथ कबीर अरात्मजेन नोकुल गण्डस्थशिश्येण मण्डिदेवेन कविना विरचिते महाभारतदर्पणेदानध
र्म अष्टावक्र उत्तरदिगम्बादे एकोनविंशोऽध्यायः ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ भोष्ण उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि ऋषीके बैन ए बोली बृद्धादार । स्यावति हौं अस्नानकों अबहीं नीर सु डार ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह कहि ऋषिसों बृद्धादार । सुनऊ युधिष्ठिर बुद्धि अंगार ॥ स्यावति भई फुलेल अनूप । बसन
पैन्हवें काज सुरूप ॥ तिय ऋषीशकी आज्ञा पाय । अंगमें लावति भई सचाय ॥ पुनि सनान
शालाके बीच । लेगई बृद्धा ऋषिहि निभीच ॥ स्याई आसन चिचित चार । ऋषिहि न्हायवें
काज सुदार ॥ आसन चाहि नवीन अनूप । बैठत भए ऋषी तप रूप ॥ कोमल करसों स्नान
कराय । लावति भई सुगन्ध सचाय ॥ पुनि ऋषि संधोपासन कीन । सुनऊ युधिष्ठिर परम
प्रवीन ॥ सुखसों बोति नई निधि सर्व । जानी नाहीं सुखसि अखर्व ॥ उठिकै पूरव भानुहि देखि ।
बिस्मित भए हिए अबरेषि ॥ अष्टावक्र सु करि असनान । संधोपासन कियो सुजान ॥ पुनि
तिहि बृद्धसों इमि बैन । बोसत भए ऋषी तपसैन ॥ अब हम कहा करै हे दार । सुनि तिय बैन
ऋषीके चार ॥ अष्टत बरोवरि मोढ़े सत्त । स्याई भोजन ऋषिकों दत्त ॥ भोजन करत भए ऋषि
राय । अतिहीं नीष्ट लगे सुखदाय ॥ नाही नाहि कछो ऋषि पर्म । सुनऊ युधिष्ठिर तात सधर्मा ॥
दिन बीतै संध्या पुनि कीन । अष्टावक्र ऋषीश प्रवीन ॥ * ॥ गन्धानकछन्द ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥
पाखि परस सुखसों बीतो सब निशान जानी जैसे भोजन रससों बीति कयो दिन जानि गयो नहि तैसे ॥
अष्टावक्र ऋषीश उठे अब संधोपासन करिकै । बोली जैसे बृद्धादारा प्रेने माहि मन धरिकै ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ तोमरहृन्द ॥ * ॥

वरश्रेयसे ऋषिराय । अब आप सुतेऊ जाय ॥ जब सोयने ऋषिराय । निज श्रेयसे तब जाय ॥ तिथ श्रेयसी सुनि भूप । मणिवान पर्न अनूप ॥ जब अर्ध बीती रैन । तब छोडिके निज रैन ॥ ऋषि श्रेय उपर जाय । तिथ बैठिगी सह चाय ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ सुनु दार वृद्धा पर्मा । हम कहत तोहि सधर्म ॥ परदारमे ममघेत । कबहुँ न कतर सुहेत ॥ सुनु दारहे मतिमान । तब होउ निति कस्याम ॥ * * * * * ॥ * ॥ बरवैहृन्द ॥ * ॥ * * * * *

आपुहि जाऊ यहते वृद्धादार । ऋषि इमि कस्यो तिपासो सुमति अमार ॥

॥ * ॥ रोला हृन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ ह्युवाच ॥ * ॥ अष्टावक्र ऋषीश सुनऊ बर । ज्ञानवान तपवान सुमति धर ॥ हम खतवहेँ याते दोष न । लगिहै तुहेँ करऊ अपसोस न ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * ॥ हमहि दियो जब आपनो तन तुमको ऋषिराज । तब किमि लगिहै आपको पर तिय दोष दराज ॥

॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥

इस्ती कहाँ खतवहेँ सुनु हे वृद्धा वाम । पराधीन निति रहतिहै दबी धाममें नाम ॥

॥ * ॥ रामगीती हृन्द ॥ * ॥

सरिकर्मे करत रक्षा पिता सुनु हे दार । तबएरमे करत रक्षा नित्यही भरत^{था} ॥ पूत रक्षा करत वृद्धापनेने अनुमानि । प्रजापतिके बँन ए हे सुनऊ तिय नतिमानि ॥ * ॥ ह्युवाच ॥ * ॥ देत हमको काम दुख अति सुनऊ हे ऋषिराज । करऊ यहिको शान्ति मेरी भक्ति देखि दराज ॥ जो मनोरथ सिद्धि जो गहि कराने ऋषि आपु । तौ अधर्महि प्राप्तहो हो सुनऊ तेज कचापु ॥ ॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥ जोई आवत चिन्तमे जन करत सोई जौन । काम जे^{था} आदिक नसो अति लहत दुखको मौन ॥ धीरतासो रहत है हम युक्त निति हे दार । जाऊ अपनी श्रेयसे ममश्रेय छोडि सुढार ॥ * ॥ ह्युवाच ॥ * ॥ सुनऊ हे ऋषिराय तुमको करति हम परबाम । माय मत्तक चरण माही भक्ति गहिके मान ॥ रावरी हम शरणमे है करऊ दाया पर्न कहत पुनि पुनि जोरि कर हम सुनऊ सुष्टि सधर्म ॥ दोष परतियमाहि जानो तौ मुनो ऋषिराय । पाषि ग्रहण करावतीहै तुहेँ हमहि सचाय ॥ करो तुम कर ग्रहण जासो लगे माही दोष । सत्य तुमसो कहति हो मिटि आवनो अपसोय ॥ हम हमारे दानमे स्वाधीन हे ऋषिराय । कहति याम्रो आपुसो हम बेर बेर सचाय ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

पाषियहण कौधर्मजो सोज मेरो होत । मुनिसे अष्टावक्र ऋषि तप तेजसके पोत ॥

सुनो रहतहै चिन्तमम तुमने हे ऋषिराय । ग्रहण हमारे कौबिसे याते आपु सचाय ॥

॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥

कैसे तुम स्वाधीन हो सुनो सुबुद्धा वाम । बूझत हैं हम आपसों याको कारण नाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कहँ नही स्वाधीन तीन ऋषोक्तमाहि तिय । अष्टावक्र प्रवीन जैसे कह्यो सु वामसों ॥

॥ * ॥ रामगीतीन्द्र ॥ * ॥

कुमारीको करत रक्षा पिता हे सुमि दार । परम योगनमाहि रक्ष्या करत है भरतार ॥ करत
रक्ष्या पुत्र वृद्धापनेने हे वाम । कहां है स्वाधीन मारी कहत नतिसों नाम ॥ * ॥ स्तुवाच ॥
अरिकरिसों गहँ हैं हम ब्रह्मचार्य धर्म । सुनो अघि कन्याहि हैं हम हेततें यहँ पर्न ॥ करऊ
पत्नी मोहि मोपै कौ हया तुम भूरि । कहत ने कर जोरि त्रिन मम करऊ अह्ना दूरि ॥ * * ॥

॥ * ॥ अरिलन्द्र ॥ * ॥

॥ * ॥ अष्टावक्र उवाच ॥ * ॥ जानत कामातुरि तोको हम । जैसे ही जानो हमको तुम ॥
ते अति अधर्म जानि हिय नहिं । तिसों करत सुकाम कोलि नहिं ॥ कन्यारूप देखि अघि दारहि
करत भए मनमाहिं विचारहि ॥ * * * ॥ अरण दोहा ॥ * ॥ * * * * * ॥
अघि वदन्तु मम करण परिसा भेजो है यह वामाकी यह कोरं विप्र महा है होत अचिरज नाम ॥
कौ तों बुद्धो वामही यह शिषलांनो पर्न । कौ तो यह कन्या भई अति सुन्दरी सधर्म ॥
किमि नै है कल्याण हमारो यह स्थानको बीच । इमि मनमे गुणते भए अष्टावक्र निभीच ॥

॥ * ॥ रामगीतीन्द्र ॥ * ॥

अति हे जीरण रही बृद्धा पुर्व यह जो दार । भई है किहिभांति कन्या अबहि पर्न सुठार ॥
करै ने हम माहि यह शुचि दारको स्वीकार । छोडि हैं नहि धर्मको अरु धीरता हि सुठार ॥

स्वर्कि श्रीमहाराजाधिराजकाश्रीराजश्रीउदितनारायणस्याह्वानुगामिना श्रीबन्दोजव काशी
वरसिनोकुलनाचात्मजेन गोपीनांथेन कविना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे दानधर्मे अष्टा
वक्रादिगसञ्जादे विशोऽध्यायः ॥ * ॥ अथकरीन्द्र ॥ * ॥ * * * * * ॥

कौ नहि उरो आपसों वाम । अरु फिरि आए किमि अघि नाम ॥ सुनऊँ पितामह सबुधि
सधर्म । कहे हेत हमसों यह पर्न ॥ भीष्म उवाच ॥ सुनऊँ युधिष्ठिर बुद्धि अगर । कहत हेत तुमसों
अह चार । अष्टावक्र अवीय सधर्म । बूझत भए दारसों पर्न ॥ और और किहिभाति सुरूप
धरती हो तुम परम अनूप ॥ याहि जानिवेकी हे तीय । है अभिलास हमारे डीय ॥ हमसों कहे
सत्य नहि भूरि । करऊँ हमारो संशय दूरि ॥ स्तुवाच ॥ फिरि नै के अघि सुनऊँ सधर्म । यह
बृहन्नान्न कहति हा पर्न ॥ तियको प्रेम पुरुषको बीच । पुरुषऊको तियमाहि निभीच ॥ रहत सर्व

शा०६० लोकात्मने नेह । सुनु हे सुष्टुषि बुद्धिके नेह ॥ एक मोक्षही है निहकाम । और सर्व है लोक
दा०६० सकाम ॥ इन्ही सहित धर्म यह जौन । है सकाम पूरूपनकों तौन ॥ जे निहकाम पूरुष है धर्म ।
तिनकों नाही है यह धर्म ॥ *ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*

तव धरता कीधेके काजहि । हम ए चेष्टा करो दराजहि ॥ यह सुधीरता सेों से ऋषिबर ।
जीते सर्वलोक तुम तपधर ॥ सुनऊ सुलखि हम हैं उत्तरदिशि । तुमकों भाव दिखाये तिय
मिसि ॥ देखे भाव तियनके तुम अब । भाव दिखाए तुमकों हम सब ॥ *ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनु हे ऋषि तपभौन वृद्धा ह मारीनकों । मैघुनको ज्वर जौन निति संतावत रहत है ॥ * ॥
अष्टवक्र ऋषिराय है तुममे यह धीरता । तवै देव समुदाय हैं तुम पै परसन्न अति ॥
आए तुम जिहिकाज भेजे सुष्टुषि बदान्यके । तौन काज ऋषिराज सिद्धि किए हम आपके ॥

॥ * ॥ जधकरो छन्द ॥ * ॥

तोय सुभाव दिखावन काज। अरु कामेच्छा परम दराज ॥ तुमकों भेजे हैं हम पास। सुष्टुषि
बदान्य सुमतिके रास । ताको कियो तुम्है उपदेश ॥ हम हे अष्टवक्र बुधेश । जावो अब घर
मुदसें आप ॥ लहि हौ नही परिश्रम दाप । मिलि है तुमकों कन्या तौन ॥ जिहि कारण आए
बुधिभौब । पुत्रऊ ताके व्हे है धर्म । सुनिए अष्टवक्र सधर्म ॥ *ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*

॥ * ॥ अरिल छन्द ॥ * ॥

जिमि सकाम बूभो हमकों तुम । तिमि सकाम दीन्हो उत्तर हम ॥ जावो ऋषि अब अपने
धामहिाकरि कौ तुम करतथ्य सु कामहि। कहा सुननकी इच्छा है अब। बूभो जौन कहैं तुमसें सवा।

॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

ऋषि बदान्य हमपास पठाए । तुमकों सुनऊ सुष्टुषि बुधि छाए ॥ उनकों सनमाने के काजै ।
कीन्हों यह उपदेश दराजै ॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥ *ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*

सुनऊ युधिष्ठिर भूप अष्टवक्र ऋषीश घर । सुनिए बैन अनूप उत्तरदिशि तियरूपके ॥

दोउ हाथनकों जोरि बैठे सेंचे दारके । फेरि सु माथ निहोरि आजा लहि निज गृह गए ॥

॥ * ॥ महिषरी छन्द ॥ * ॥

आय अपने सदनमे ऋषिराय अति मुदसें हए । कछुकदिन रहि बूजि अपने हितुमकों रति
सोरए ॥ चले सुष्टुषि बदान्यके गृहकों सुधाव महानसें । पञ्चि गृहमे बात करतेभए सुष्टुषि
बदान्यसें ॥ *ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*

ऋषि बदान्य तब बोखत भए । अष्टवक्रसे मुदसें हए । हम पठए हे तुमको जहां अष्टवक्र
गएहे तहां ॥ वह अज्ञान जाय कौ देख्यो । अति रमणीय प्रभासे भेख्यो ॥ ऋषि बदान्यकी सुनि

यह बानी । बेले अष्टावक्र ऋषि ज्ञानो ॥ सुनऊ ऋषीश बदान्य सुमतिधर । आज्ञा पाय तुन्हारी
 शति वर ॥ * * * * * ॥ * ॥ रामगोतीहृन्द ॥ * * * * *
 गन्धमादन पर्वत हि हम वर पर्य सचाया जाहि देखें कौनको हिष हर्षसें नहि छाय ॥ जासु उत्तर
 लख्यो हम आरण्य सघन बिसुन्द । तासुमाही लख्यो एक वर धाम माम अमन्द ॥ लखी तिहि
 आगारमाही एक वृद्धा दार । करत बार्तेभय तासो सुनऊ बुद्धि अगार ॥ मोदसें तिहि दार
 मेरो कियो आदर पर्य । कहत भी पुनि इमि सु मोसो दरतौन अभर्म ॥ पाय सुऋषि बदान्यकी
 आज्ञाहि तुम ऋषि माम । कृपा करिके आप आए है हमारे धाम ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * *
 तिहिकी आज्ञा पाय आए अपने बदनने । फिरि बदान्य ऋषिराय आए हम तव सदनने ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ चरणाकुलकहृन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बदाम्यउवाच ॥ * ॥ कन्यापाणि गृहण अव करिए । महा मोदसें हीकों भरिए ॥
 पर्य सुपात्र पाय कै तुमको । भयो अनन्द महा है हम को ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सुनऊ
 युधिष्ठिर वर धरमीश । यह सुनि अष्टावक्र ऋषीश ॥ पाण्यग्रहण कीन्हें कन्याको । जिहि को
 सम जगमे धन्या को ॥ * ॥ * * * * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * * *
 ऋषि कन्यकों पाय अतिहीं मोदित होय कै । निज आश्रममे आय बसत एभ मार्या सहित ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगाभिना श्रीवन्द्येजनकाशी
 वासिरघुरायकवीश्वरात्मजेन भोकुलनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचितेभाषायां महा
 भारतदर्पणे दानधर्मे अष्टावक्र दिवसम्वाद समाप्तिर्नामैक विशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ जयकरीहृन्द ॥ * ॥

कारण गृहआश्रमको काम । जान्यो सो तुमसें बुधिधाम ॥ सुऋषि सनातन पर्य अमन्द ॥
 जिनको महिमा महा बिसुन्द ॥ दान पात्र ते कहत सुकाहि । कहो तात अब यह अवगाहि ॥
 * ॥ * ॥ रामभीतिहृन्द ॥ * ॥

ब्रह्मचारि हि कहत हैं की धनीकों अवदात । दण्डवान हि कहत हैं की विप्रको हे तात ॥ * ॥
 भीष्मउवाच ॥ जीव काकों उचित वृत्ति हि करत हैं जन जैन । तौन ही है दानपात्र सु कहत
 प्रज्ञामौन ॥ तौन ही है तपस्वी सुनि धर्मावान सुतात । ब्रह्मचारो होऊ वा दिज दण्डवत अब
 दरत ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ सुनि पितामह जैन जन अपवित्र होय महान । तौन जन सुर पितर
 काजै देय विप्रहि दान ॥ होत तिहिकों दोष का अपविचताको पर्य । कहो हमको आपु भोषम
 ज्ञानवान अभर्म ॥ भीष्मउवाच । जैन जन हैं देत अह्ना सहित दान महान । तौन होत पवित्र
 अह्ना सोहि हे मतिमान ॥ * * * * * ॥ * ॥ तोनरहृन्द ॥ * ॥

वर सर्वविधियों शुद्ध । तुम हो युधिष्ठिर बुद्ध ॥ वर धर्मावान अमन्द । तुमसे न और नरेन्द्र ॥

॥ महाभारतदर्पणः ॥

हरत यग्रहि सुनि नृपति कलुष दर ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

यज्ञादिक जे कर्म तिन्है नाहि कवञ्च । तिनके कर्म रोष प्रति दहि कहत हे ॥

॥ * ॥ मातृपुत्र उपाच ॥ * ॥

अश्वमेध वर यज्ञको फल अरु सदा सुखान । तासो रज रोजमको चरुको मतिनाम ॥

अर्थ भयो नहि सत्यके अश्वमेध कर्मको । सुमनस सुधिधर धर्मधर पशु सुवन सुधिनाम ॥

॥ * ॥ शिष्यउपाच ॥ * ॥ राजनीतीहन्द ॥ * ॥

भूमि काश्यप गोपिको सुधिधर उपाच । नर कोहि कोहि कृषिके सुनु सुधिधर उपाच ॥

सुधिधर उपाच ॥ आइने भोजनभारत मती जिहिपी पर्म । अथ भोजन तात ताको अरु अथ

सुधर्म ॥ कर्म उपाच ॥ अथ दूषित धाम के को भादि । वृक्षको ही आपुसो नै चित्तने अपभादि ॥

भोजनको ॥ अथ आश्रम प्रायश्चित्त उपाच ॥ धरो जिहिं जन उपाचारप उपाच तात

सधर्म ॥ अथ ताको धर्म भोजनधर आइ सु साधिताइ दूषित होतहे नहि कहत ही अपभादि ॥

॥ * ॥ सुधिधरउपाच ॥ तोनरहन्द ॥ * ॥

बहु अरु हे वर धर्म । बहु पक्षाकार अर्थ ॥ निश्चित धर्म सु कौन । इनको कहे तुम

नैन ॥ भीष्मभारत ॥ अति अतिशय अर्थ चित्तको धिति रोष ॥ अथुताइ सुनु नृपाच ॥

अथरताइ विद्या ॥ निश्चित धर्म सु नै । तिन्हिके सुखसह सह ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ राजनीतीहन्द ॥ * ॥

अथ अथुताइ अरु जे अथुताइ अथुताइ । अथ धर्मके भादि अथुताइ अथुताइ निगीच ॥

अथुताइ जे अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥ अथ

विद्यः अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥ अथ

चर्मकापादिनको धर्म । सुनु सुधिधर धर्मधर अरु कहत रज अनुमान ॥ अथुताइ अथुताइ

जे हेत भोजन नाहि । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥ सुधिधरउपाच ॥ अथुताइ

अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥

अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥

अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥

अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥

॥ * ॥ अथुताइ ॥ * ॥

अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥

अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥

अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ । अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ अथुताइ ॥

हरत यथादि सुनि नृपति कलुषं दर ॥ * ॥ * ॥

यज्ञादिकं जे कर्म तिनै नाहि कवचं ॥
॥ * ॥

अन्वलेष वर यज्ञको फल यत्न यज्ञोपाय ॥
अर्थ भवो नहि सत्यको अन्वलेष ॥
॥ * ॥

भूमि कायपुत्र प्रजापति ॥
युधिष्ठिर ॥ सुभिक्ष ॥ सुपर्ण ॥
भोजन ॥ सुपर्ण ॥
सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥

सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥
सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥
सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥

सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥
सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥
सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥

सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥
सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥
सुपर्ण ॥ सुपर्ण ॥

स्तुति श्री काशीराजसद्वाराजाधिराजश्रीउदितनरिंथस्यस्यानुगामिनाश्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथ कवीश्वरात्मजेन गोकुलगायस्यशिष्येण मन्दिदेवेन कविना विरचितेभाषायां महाभारत
दर्पणे दानधर्मोदाविशोऽध्यायः ॥ * ॐ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॐ * ॥ ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ देवशरष है कारज जौन । कौन कालमे कीजै तौन ॥ पितरकार्य
सो कौने काल । करिए कहे सुबुद्धि विद्याल ॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ महिषरीछन्द ॥ * ॥

सुनऊ पूरव काल माही देवकारज कोजिए । पितरकारज जौन सो परकालमे करि लीजिए ॥
दान सादर मनुजको मध्याह्नमाही दीजिए। सुनि युधिष्ठिर कहत हैं मनिमान मतिसो गुंरि जिए।

॥ * ॥ मल्लिकाछन्द ॥ * ॥

कालहीन दाम जौन । जातुधान भाग तौन ॥ जे सुबुद्धि है महान । ते कहैं सुने सुजान ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

अरु सन्निव है बसु सु जान । कसैह पूरवक कीन्हो तौन ॥ रजरूलाको दीन्हो दान । राक्षस भाग
तौन हू जान ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
परो होय जिहि माहि वार बाहु यो आनको होयाराक्षस भाग जानिए औसो भोज्य कहत बुधसोया।

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

घोरको उच्छिष्ट जो अरु दुष्ट कीन्हो जौन । देव बालक बृह विन जो कियो भोजन तान ॥ औ
कियो विन आतिथ औसो जौन भोजन भूप । जानि राक्षस भाग औसैं कहत बुद्ध अनूप ॥ कौणपनको
भाग प्रापित कह्यो तुमसो तौन । दान पावनकी परिचा सुने अब बुधि तौन ॥ जाति बाहिर भए
जे द्विज पाप कीन्हें परम । खेतकुष्टी औ नपुंसक महामूर्ख सभर्म ॥ परम कुष्टी महा रोगी अपसमारी
जौन । बेष औ देवस पुजेह अन्ध दम्भी तौन ॥ वाद्यकर अरु नृत्यकर अरु गानकर जे परम । वृषा
लापो मल्ल जे अरु सुनऊ भूप सधर्म ॥ मल्लकरावैं शूद्रको जे औपढावैं जौन । सेवकार शूद्रको जे
करत दुर्मनिभौन ॥ निमंचलको योग्य नाही निप्र औसे तात । शास्त्रमतसो कहतहैं वरबुद्धि जे
आवदरत ॥ देह धन जे षडनहैं धन सो पढावैं जौन । आहके महि योग्य दोज सुनऊ वरबुधि तौन ॥
सर्व त्रियावांगहू औ दासिकापति होय । तौनजें द्विज नाहि निवत योग्य कह बुधलाय ॥ घोर
अरु शुकिकर्मसो जे रहित सुनु भूषल । पतिव अरु जे हतकको अति दान लेत बिद्याला ॥ ध्याज
काजै देय जो धन अरु सुता सुत जौना आहके महि योग्य एज सुनऊ वरबुधि तौन ॥ लेय सहता
अन्नको द्विज जौन महगा देत । रहत भेष्या बधुन मेरत जौन कुबुधि निकेत ॥ घोर जो निज दारके
निति रहै बसके आहि ॥ सुनऊ नृप औ करत संधोपासनाको माहि ॥ निमंचलके योग्य नाही
विप्र औसे जौन । कहतहैं अर्थाहिके वर बुद्धिके जे भौन ॥ जे निमंचल योग्य नाहो आहमलके

श्री०प०
दा०ध०

बोधो ज्ञानमज्ञं गुण पापं ते दिज योग्यं चैत निभीष ॥ कहत मै हों तुम्है सो अब सुनो तात सधर्म ॥
व्रतहि पूर्य कियो जे अब युद्ध गुण सो परी ॥ परम कीयावान गायत्री हि जानै जौनाकरै तीनऊ
काल संध्या आगतो नै भौन ॥ जनीकारवा होय चैत विप्रजौ हे तात । हे निमंत्रण योग्य वर
बुध कहत है अबहता ॥ * * * * * ॥ भास्वकार ॥ * * * * *

जौन विप्रनाहि पुह । ब्रह्मकी नहे संभूह ॥ उक्त जौ बुधान तौन । हे सुनो सु बुद्धि भौन ॥ परम
विद्यताहि जानि । योग्य पूजिबे सुप्रानि ॥ याम वासवान जौन । अग्निहोत्रवांन तौन ॥ होय
जौ सुनो सु भय । योग्य पूजिबे धन्य ॥ जानिए कहे सुबुह । जौन ज्ञानवान उह ॥ तीनऊ सुकाल
धीन जायची जये निभीषे ॥ भोह युतिवान जौन । विप्र बुद्धि को सु प्रानि ॥ वाग्दे सु धीग्य परने ।
ताहि जानि हे सधर्म ॥ प्रातकाळ द्रव्य पाय । द्रव्यवान भौ संधाय ॥ धीर भो करिह नूहि । द्रव्यसो
अब सु दूरि ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ चोरठा ॥ * * * * *

चैरिह प्रातकाल बिना द्रव्य पाए परम । रहतै दरिद्र शिष्याक सुनऊ पुधिउर अति कर ॥
शिरि ब्रह्मदे सु बोध विप्र द्रव्यको पाय के । नै धनवान निभीष परम जोरसो फिरत है ॥
॥ * * * * * ॥ चरबादोहा ॥ * * * * *

रहित होय विदुवादि कनु धरौ चैरि जे दिज तौन सोहि धरिहक तो निवतै नै योग्य जात विधिभौन ॥
॥ * * * * * ॥ रमिगीती हन्द ॥ * * * * *

दमसो जे रहित है अब योग्य निषा खेताने निमंत्रण योग्य दिज है सुनऊ भूप सधर्म ॥ रहित
व्रतसो बहिक कर्महि करत जे दिज भूप । फिरकी फिरि सोनवसो तौन विप्रसो ॥ निमंत्रण
योग्य है सुन धर्मवान सुजाने । कवी धादिक कर्म करिहै शारि द्रव्य नैधान ॥ जौन आवे अतिध
सोको देव भोजन परने । सो निमंत्रण योग्य दिज है सुनऊ तात सधर्म ॥ वेद वरको वेप्रवेसो जुरो
धन है जौन । सो बटोरि करको जो द्रव्य है बुधिभौन ॥ विप्रसो कहि दीधीर सो पितर आह
सुनिष । सुनु पुनिउर कहत है वर बुद्धिताम निभीष ॥ सधा असुन कर्तव्य जौ दिज आह चन्त
सुजानि । अन्त नैको प्रियको अब ताहि कहत मरान ॥ अमावसा माघ वृषको दश्या बुद्धि दिज
परने । निमंत्रण ही आह समया जानि तात सधर्म ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

विप्र आह कर्तव्य आह वार इति वेन । कोही आह करवै ताहि कर्मको सुधिभौन ॥
असुनया जे विप्रसो आह करवै जौन नह कहत अहोत फिरिहे सुनऊ पुनिउर सुधर्म ॥
कोही आह अन्त नैको प्रियको करिहै विन । शोक मरणाह पितर वर सुनऊ पुनिउर सुधर्म ॥
वेद वादक धर्मो विप्र इत्येता आप । अथवा आह सु होइ इति कौनो सुनु सरराय ॥
शूर आहको अन्त नैको करिहै विन परने । फिरजको प्रियको नैको प्रियको जौन सधर्म ॥

॥ * ॥ अरिलच्छन्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०६

द्विजके यज्ञ माहि सुनि भुवपति । यज्ञ कार इनि कहै सु गहि रति ॥ कऊ पुन्याह सर्व तुम
द्विजवर । सुनि यह बैन सर्व द्विज मतिधर ॥ * ॐ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ * ॐ *
जो पुन्याह कहै सुनो यज्ञ आदिमे परम । यह विधिहै द्विज यज्ञकी कहत सुबुद्ध अमर्ष ॥
ओं कहै न सुनि नृपति क्षत्री मखके बोचा कहिए याही शब्दकों कहत सुबुद्ध निभीच ॥
होऊ प्रसन्न देव इनि कहि द्विज वैश्य यज्ञके बीच । फेरि कहै पुन्याह सुनि पाण्डुव नृपति निभीचा ॥
जन्मादिककी जो किया करत हैं सुबुध अबदात । अब हम तिहिकों कहत हैं सुनऊ युधिष्ठिर तात ॥

॥ * ॥ मत्तिकाछन्द ॥ * ॥

जाति कर्म आदि जैन । कर्मते सुबुद्धि भौन ॥ तीनऊ सुवर्ण बीच । मंत्रसों करी निभीच ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

द्विजहि मूँकी मेखला चाही सुनि हे तात । क्षत्री हि चाही भौरवी कहत सुबुध अबदात ॥
आह्य बाल्यजी मेखला वैश्यहि सुनि भूपाल । तीनऊ बरणके करम कर्मसों कहे विशाल ॥
अधर्म दानपात्रको जो है अरु दाताको धर्म । अब तुमसों मै कहत हैं सुनि तौन अमर्ष ॥

॥ * ॥ रामगीतोछन्द ॥ * ॥

पणकी काज बिप्र सु अनेत बोलत जैन । लगत तिहिनैं पाप जितनो द्विजहि सुनि बुधिभान ॥
लगत तिहिनैं चतुर्गुण है अधिक क्षत्र हि पाप । एक पणकों अनृत बोलैं सुनऊ धर्म कलाप ॥
क्षत्रिहिनैं अठगुणो अय अधिक वैश्यहि होत । शास्त्र मतसो कहत हैं बर परम प्रज्ञापोत ॥ एक
द्विजके द्वैनिमंत्रण भए हैंहि सुजाम । दुऊ निमंत्रणमाहि पहिलो छोडि तस्मा बान ॥ दूसरेके
जाय गृहमे करै भोजन जैन । जवीयान कहाव तो है तौन सुनि बुधिभान ॥ होय पहिलो
निमंत्रण जौ बिप्रको हे तात । ताहि तजिके सुनऊ जो द्विज दूसरेके जात ॥ बृथा पशुहिंसा किए
को पूर्ण पातिक ताहि । होत है बुध कहत हैं बर बुद्धिसो अवगाहि ॥ प्रथम निबतो क्षत्रिकोजो
होय हे सुनिभूप । वैश्यको वा होय तौ बर कहत बुद्ध अनूप ॥ ताहि तजिके दूसरेके करै भोजन
जैन । बृथा पशु हिंसा किए को अर्धपापी तौन ॥ देव कारजमाहि अथवा पितरकारज बीच ।
किँ बिनुहैं समान जो द्विज करत भोज्य निभीच ॥ अनृत गो की संपथको है लगत पातिकताहि
सुनि युधिष्ठिर शास्त्रमतसों कहत बुध अवगाहि ॥ जैन बिप्र अशौच द्विजकी पाति माहि धाय
लोभतें जो करै भोजन सुनि युधिष्ठिर राय ॥ अनृत गोकी शपथको अघ तौनहूँको होत ।
शास्त्रमतसों कहत हैं बर परम प्रज्ञापोत । तीर्थ यात्राके बहानें जैन द्विज धन सेत ॥ यही पातिक
होत तिहिकों प्राप्त भूप सचेत ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ देव कारज बीच अथवा पितरकारज बीच ।

रा०प०
रा०ध०

महाफल किहि दिए होत सु कहो यात निभीष ॥ भीष्मउवाच ॥ पतीको उच्छिष्ट भोजन तके
जिहिकी नाम । निधन जैसे द्विजहि दीन्हें होत है फल माम ॥ भोज्यहीकों सेत जे धन करत
संग्रह नाहें । महाफल तिहि दिए होत सु कहत हैं अवगाहें ॥ मत्करणकी भोतियों अति रहत
पीडित जौन । भोज्य हीको अर्थ जिहिके सुनऊँ नृप बुधिभौन ॥ दिए जैसे निप्रवरकों होत है
फल माम । सुद्धियों अवगाहिके इमि कहत बुध अभिराम ॥ रहित जो अभिमानसे अरु दरिदसों
दुखवान । देखि ताको पाणिमाहीं अब सुनि मतिमान ॥ शिष्य अरु सुत घेरि ताको कहैं जैसे
बैन । देऊँ हमकों देऊँ हमकों अहो पित सुखदैन ॥ दिए जैसे द्विजहि भोजन महाफल है होत ।
सुनि युधिष्ठिर धर्मधर वर परम प्रज्ञापोत ॥ भो उपद्रव होय जिहिके देगगाहि महान । होय
हरिगो जौन द्विजको द्रव्य तिय सुखदान ॥ ताहि दीन्हें होत है फल महत कहत सुजान । और
जे द्विज नेम व्रतको गहैं हैं सुखदान ॥ तौन जौ व्रत पूर्ण कीबें द्रव्य मायें आय । दीजिए तौ ताहि
धन सुनि युधिष्ठिर नरराय ॥ ताहि दीन्हें होत है फल महा कहत सुप्रज्ञ । औ सुनो पापखपथसों
दूरि जे धरसज्ञा ॥ करत संग्रह ताहि धनको विप्र जैसे जौन । तिन्हें दीन्हें होत फल है महा सुनि
बुधि भौन ॥ रहि सर्वाह दोषसों अरु तजे जिन धनसर्व । उदर पालन करैं ये भगवान परम सुख
रहत जिनके चित्तमे यह विप्र जैसे जौन । तिन्हें दीन्हें होत है फल महामुनि बुधिभौन ॥ सुनि
भिक्षा तपस्विन्हकों देत भोजन जौन । तिन्हें दीन्हें होत है फल महामुनि बुधिभौन ॥ महा
फल विधि दानका हम कही तुमसों तात । नरक स्वर्गहि जानकी विधि सुनऊँ अब अवदात ॥
भूठ जो है कोनहँको प्राण रक्षा काज । ओ गुरुके काज जो है भूठ सुनि नराज ॥ छोडि
इनको और भूठहि सुनऊँ बालन जौन । कुपथ व्हेँके महत दुहकों जान नरक हि तौन ॥ चरत
जो परदारकों जो रमत परतियसाथ । जो भिक्षाजै परतिया परपुरुषसों नरनाथ ॥ भिक्षता करि
विश्वास पुनि भेद करतहें जौन । जात ते जन नरककों हैं कहत प्रज्ञाभौन ॥ चरत जो परद्रव्यकों
जो करत परधन नष्ट । कहत जे परदोष तेज सदन दरगत कष्ट ॥ पौसराकों संभाषो जो करत
भेदन तात । औ अगारहि जौन भेदत तौन नरकै जात ॥ * * * ॥ मोतिदामकन्द ॥ * * *

अनाथहि दार हलैं जन जौन । सु नारकमाहि परैं जन तौन ॥ सुन अरु जो जन बेदत दार ।
सुमित्र सुआश सुवृत्ति अगार ॥ इन्हें सु जो जन बेदत भूप । सहै जन नारक तौन अनूप ॥
महीपतियों चुगली हिं महान । करैं जन जौन सुनो मतिमान ॥ सुजातनकी भ्रयादाहि भूरि ।
करै तिहिकों जन जौन सु दूरि ॥ सुमित्रके उपकार हि जौन । सहि समुझै कबहूत न तौन ॥ महा
बलसो परवृत्ति छूडाय । करै निजवृत्ति सुनो नरराय ॥ परै जन जौन सु नारकमाहि । महान
सुजान कहैं अवगाहि ॥ * * * ॥ ॥ तोटककन्द ॥ * * *

अरु जे जन निन्दक वेदनके । अरु निन्दक साधुनके गणके ॥ सुनि भूपति ते नरकै हि सहै ।
सुमती मतिसें अवगाहि कहैं ॥ * * * ॥

॥ * ॥ रामगीतहृन्द ॥ * ॥

भा०प०
दा०ध०

जन विरोधी होय जिहिकी वृत्ति अरु व्यवहार । परत सो है नरकमाहीं सुनऊ बुद्धि
अगार ॥ दूतर्दसों करत जे व्यवहार हैं भूपाल । प्रवृत्त निशिदिन रहत जे हिंसाहि माहि बिशाला ॥
सहत जे हैं नरकको दुख सहत कहत सुजान ॥ औ सुनो जन जौन कहि यह देहिमे हम दान ।
देत फेरि न ते परै हैं नरकमाहि महान ॥ आश काऊहि देयकै पुनि करत ताहि निराग्य । तौन
अजन करत है सुनि नरकमाही बाध्य ॥ अग्नि अतिथ सुभृत्य दारहि दिए बिन जन जौन । करत
भोजन परत हैं जन नरकमाहीं तौन ॥ देवयज्ञहि पितरयज्ञहि करत जे जन नाहि । बेदवेचक
बेददूषक परत नारकमाहि ॥ रहिन चारौ आश्रमिणसों रहित श्रुतिमों जौन । आपकों जे वृत्ति
दूषित महा गहि कै तौन ॥ करत जे हैं जीविका ते परत नारक बीच । सुनि युधिष्ठिर धर्मधर बर
बुद्धिमान निभीच ॥ केशकों अरु दूषको अरु विषहि बेचत जेसु । परत तेहें नरकमाही कहें परम
गुथेसु ॥ द्विज गऊ अरु कन्यकाके काय माही जौन । करत बाधा परतहे जन नरक माही तौन ॥

.. ॥ * ॥ अरिलहृन्द ॥ * ॥

अस्य शस्त्रको जौन बनावत । अरु वेचें ते दुरगति पावत ॥ काटनि सो जो मगको रोकत ।
नारकमाहि होतु जन सोगत ॥ बिन अपराध गुरूको त्यागत । ते जन जाय नरकमे पागत ॥ तजत
भृत्यको बिन अपराधहि । तौनऊ नारक लहत अगाधहि ॥ पशुके अण्डकोसको मरदन । करत
जौन जन राखत दरदन ॥ अरु जे ह्दत पशुके नाकहि । तौन नरकमे रहत सशोकहि ॥

॥ * ॥ तामरहृन्द ॥ * ॥

जे प्रजासो करलेत । रक्षान करत सचेत ॥ अरु हैं समर्थ महान । परदेत नाही दान ॥ अबनीप्र
जसे जौन । सुनु लहत नारक तौन ॥ * ॐ * ॐ * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ * ॐ *
समावाग मतिवान रहत सङ्ग बङ्ग दिमनसो । जैसे जनहि अजान त्यागत जो नरकै लहत ॥

बाल बृद्ध बिन जौन भोजन करत महीप सुनु । जाय नरकमे तौन दुखको सहत अपारहै ॥
नरक योग्य जन जौन ते तुमसो हम सब कहे । स्वर्ग योग्य बुधिमान जनहैं तिनको कहत अच ॥
सब कारजकोमाहि जौन सुधश घर विप्रको । करत उलङ्घन ताहि तौन स्वर्गको लहतहै ॥

जौन करत हैं दान सत्य बोलि करि कै सुनप । करत सुधर्म महान तौन स्वर्गको लहतहैं ॥
विद्या पढिनौ जौन कोदा प्रतियह खेनकी । रक्षा करत न तौन स्वर्गलोकको लहत हैं ॥

॥ * ॥ मल्लिकाहृन्द ॥ * ॥

व्याधियस्त जीव जौन । ताहि मोद देत तौन ॥ स्वर्गलोक माहि परम । सेव श्रेयहैं अभर्म ॥ पाप परम
भीति कष्ट । जीवके करै सुनष्ट ॥ तौन स्वर्गलोकबीच । मोदसो रहैं निभीच ॥ परम धीर समावान ।
धर्मको करै महान ॥ औ अचार युक्त जौन । परम मोद चेत तौन ॥ मद्यमांस जो न हाता तौन स्वर्गमे

शा०प० विभात ॥ और दारजे रमै न । लोभ मोहको धरै न ॥ तौन स्वर्गलोक परम । ताहि लेत हैं अभर्म ॥
दा०ध० ॥ * ॥ चामरछन्द ॥ * ॥

देग ग्राम औ कुटम्बको सहाय जे करै । तौन स्वर्गलोकमाहि भूरि मोदसो भरै ॥ औ सु
आश्रमीनकी सहाय जे गहे रहै । तौनह सुलोकमाहि भूरि मोदको लहै ॥ बख भोज्य नीर
जान देत हैं दयाल हैं । तौन लेत स्वर्गलोक तेजमै विशाल हैं ॥ आनके बिबाहको कराय जैन
देत हैं । तौन स्वर्गलोकमाहि भूरि मोद लेत हैं ॥ * * * * ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ * * * *
सब हिंसासो दूरि सबके आय्य भूतजे । तौन लेत मुद भूरि स्वर्गलोकमे प्राप्त हैं ॥

॥ * ॥ चरणादोष्टा ॥ * ॥

माताकी अरु पितरकी सु अति करत सु श्रूषा जैन । बन्धुसों राखत जे प्रेमहि लहत स्वर्गको तौन ॥
॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

धनवान अरु बलवान । अति रूपमान सुजान ॥ बर पाय्य यौवन परम । जन जैन रहत
सुधर्म ॥ सुनि तौन स्वर्गहि जात । बुध कहत हैं अबदात ॥ ॥ जयकरीबन्द ॥ ॥

अपराधज कोन्हे जन जैन । राखत परम प्रीति बुधिभौन ॥ अति हां कोमल जासु सुभाव ।
तौन स्वर्गको जात सचाव ॥ जो सेवा करिके सुख देत । औरहि तौन स्वर्गको लेत ॥ जैन देत सह
सनको दान । सहसनको भोजन सुखदान ॥ जे सहसनकी करै सहाय । ते सुख लेत स्वर्गमे जाय ॥
अरु सुवरणको जो दातार । गऊ देत जो परम सुठार ॥ बर जे बाहन देत सुठान । अरु सादर जे
देत बिमान ॥ ते जनजात स्वर्गको परम सुनक युधिष्ठिर नृपति सुधर्म ॥ कन्या व्याहमाहि जन जैन ।
दासी दास द्रव्य देतौन । स्वर्गहि जात तात सुनि स्वस्त । शास्त्र मनेसो कहत सु दत्त ॥ बाग लगावत
जैन सुठार । औ बनवै बनमाहि अगर ॥ औ सु खनावै बनमे कूप । घाट बनावे परम अनूप ॥ अरु
सु पौसरालावै चारु । तौन लहतहै स्वर्ग सुठार ॥ शुद्ध समूनि देत जे ग्राम । वास बनाय देत अभि
राम ॥ जैन बलु मार्गें जन आय । तौन हि देत सुनो नरराय ॥ परम सुधर्म सुजन हैं जैन । पावत
तौन स्वर्ग सुखभौन ॥ करि उतपन्न धान्य रस परम । देत जैन दिव लहत अभर्म ॥ जन्महोय कौन
ऊँ कुलबीच । शतवत्सर जीवै सुनु भीच ॥ जिहिके बज्रत हौहि सुत स्वस्त । आप सुदयावान अति
दत्त ॥ जीतैं क्रोधहि होय महाँन । तौन स्वर्गको जात सुजान ॥ पूरव ऋषिन्ह कहे जो परम ।
पर लोकार्थ सुदान सुधर्म ॥ तुमसों कहे तौन हम सर्व । सुनऊँ धर्मधर नृपति अखर्व ॥ * * * *

स्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
बासिरघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषार्यामहाभारतदर्पणे दानधर्मे
त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ * * * * ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रामगीतोच्छन्द ॥ * ॥

बिन हनें ब्रह्महत्या होति है किहि भांत । कहे हमकों कृपा करि के भूमिपति अबद्रात ॥

भीष्मउवाच ॥ आसको बलवाय पूर्व हम सुबभो जौन । सुनो मनको आसके कस कसत सो बुधि
 भौन ॥ हम सु बभो आस सेां रनि सुनऊ है अविदाय । विनहने है ब्रह्महत्या होति है किहि
 भाषा ॥ वैम मेरे अबण करि कै धर्मवान सुजौन । कहत भे रनि आस मोसो सुनऊ न्यु मतिमान ॥
 आपुही बलवाय भिक्षा काज द्विजकों पाहि । करे नासो जोरि साने ब्रह्महत्यापाहि ॥ होय जो
 मध्यस्थ ब्राह्मण कहे कहु नहिं वैम । हरे ताकी मृत्तिको जो मना दुर्मति सुन ॥ सुनु बुधिछिद्र
 होतहै सो ब्रह्महत्यावान । कहेहै अबगाहि मोसो आस पर मतिमान ॥ परम प्यकी कस कस
 रि ते जल पास । जो न पीकम देत है जल महा दुर्मतिरास ॥ ब्रह्महत्यावान सो जन होत है भू
 पाल । और सुनो जो दूखतोहै वेद सुतिहि विद्याल ॥ विना जामे होतहै सो ब्रह्महत्यावान ।
 महती होय कथा रूपवन्ति महान ॥ सोजिके वरपोस्य कथ्य जो न करत विवाह । ब्रह्महत्या
 वान सो जन होतहै मरनाहा । देत द्विजकों शोच खेसो अथनी है जौन । ब्रह्महत्यावान सुनु रूप होत
 है जन तौन ॥ अन्धको अब पङ्कजको हरतहै धन जौन । ब्रह्महत्यावाकसो जन होत सुनु बुधि
 भौन ॥ ग्रामने अब विधिनके जो अपि लावत अङ्ग ॥ ब्रह्महत्यावान सो जन होत सुनु नृपप्रह ॥
 खलित्थीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्यपुत्राभिरुनिवा श्रीपन्दीप्रपत्ताश्रीवा
 सिरघुनाथकवीचरात्मजेन मेकुलनाथस्यशिष्येण महिदेवेन कश्चिन्ना विरचिते भाषणं महाभार
 तदर्पणे ध्यातिपर्वेच्छिदानपर्वे ब्रह्महत्यावर्षेनोनाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ बुधिछिद्रउवाच ॥ * ॥ अरिसहन्द ॥ *

भिनतीकेको दखन अति बर । है कल्याणक परम सुमति भर ॥ और तिनको जो अब
 सजानसु । है कल्याणक परम महानसु ॥ * ॥ अरबादोहा ॥ * ॥ *~*~*~*~*

पुण्य तीर्थ जैसे जे भूमे तिगहदि सुमनकी तात । इहा भई हमारे हीने कहे आपु अरदात ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामकीतीहन्द ॥ * ॥

कहे नौगनअभिहि तीरथ अरिसह मुनि पर्व सुनऊ सो गुप्तसुमनकी ही भोग्य सुवन सखी ॥
 सुते प्रपन्न धर्म तुमको प्राप्तकही तात । नपोवन गत महानुभिर अरिसह अरदात ॥ भय सुजने
 निकी भौगन सुनो रनि व्रत बाण । अरिसह मुनि सुनऊ सर्वहि तीर्थ नाहि सर्धान ॥ होम संवत्
 धर्मको है सुखकी सोसुनि । भई सो मन नाहि इच्छा कहे सुनि अखर ॥ सोतहै अथ कहां
 तीरथ नाहि कीये जान । अन्त काल सु भय ते फल कदा होत सुजान ॥ महा भौगन सखीके र
 वैम सुनिके पर्ये भय कथत है अरिसह मुनि ज्ञानधन अर्भ ॥ नृतिनाशिति परमोना गितपाके
 बीच । एक कसर निराकार सु करे ज्ञान निभीष ॥ * ॥ तौसरहन्द ॥ * ॥ *~*~*~*~*

महिनी सु जो गति परी । जन ताहि छेत अखर ॥

आ०प०
२०५

॥ * ॥ शेरठा ॥ * ॥

काशनीरकी जौन नदी बिन्दुने निरतिहैं। सर्ग लहतहै तौन तिनमे जो जन आतहै ॥

॥ * ॥ जयकरीखन्द ॥ * ॥

मैनिषार पुखार सु प्रभास । इन्द्रमार्ग बर धर्म सुरास ॥ अर देविका नदी अति चार । सख बिन्दु
शुचि तीर्थ सुठार ॥ इनमे जो जन करत सनाम । सो बिमानपर चढि सुखदान ॥ जाय सर्गमे
आनद रूप । लहत अक्षरा परम अनूप ॥ कीरति करति अक्षरा सख । तिहिकी सुनु भूपति अति
दक्ष ॥ तीर्थ छिरण बिन्दुके बीच ॥ करै जौन जन ज्ञान निभीच ॥ अर बर तीर्थ कुशेयप जान ।
तिहिने करै ज्ञान बुधिमान ॥ कल्प दूरि होत है सर्व । लहत धर्म है परम अक्षर ॥ * * * ॥

॥ * ॥ रामगीतीखन्द ॥ * ॥

इन्द्रतोष्या नदी है बर गम्भमादन पास । सदानीरा औ कुरङ्ग सुतीर्थ आनदरास ॥ ज्ञान तिनमे
किएते अर तीन रजनी बास । विगत कल्प पुण्यजनसो करतदिवसबास ॥ अथमेध सु यज्ञको
फलहोत जनको परम । सुनु बुधिछर भूपवर बुध ज्ञानवांन अमर्ष ॥ हरिहार सु नीलखर्वत औ सुक
नखल सख । कुशावर्तक औ सुनखक तीर्थ जेहें दक्ष ॥ किएते सुनु ज्ञान तिनमे तीन रजनी बास ।
सर्ग प्राप्त सु होतहै बर परम आनद रास ॥ ब्रह्मचारी जोषजित अर सत्यमान सु जौन । अपां ऋद
वर तीर्थ माहीं ज्ञान कोन्हें तौन ॥ अथमेध सु यज्ञके बर फलहि प्राप्त होत । सुनऊ शुचि
व्रतवांन भूपति परम प्रज्ञा पोत ॥ गरु उत्तरवाहनी जइ भई होहि सुजान । मास एका व्रत करै
तामें जौन करिके ज्ञान ॥ सिद्धिको सो होत प्राप्त मासहीमे परम । सुनऊ पाखण भूपति अर
ज्ञानवांन सधर्म ॥ महा ऋदमे किएते सुनि ज्ञान त्रयनिधि बास । गयत द्विजदत्तादि परतक
लहत आनद रास ॥ ज्ञान कोन्हें सख बखकोतीर्थमाहीं परम । औ सु कन्याकूप माहीं किए
ज्ञान सधर्म ॥ होति कीरति देवतनमे चन्द्रिकासो चार । परम निर्मल सुयय सो अति कल्प बुधि
अगाह ॥ किए ज्ञान सु देविकावर सरितमे मतिमान । तथा सु बरिहर्दमाही किए ज्ञान सुजान ॥
लहत जन परलाक माहा तेज रूप सुठार । देवतनमे रहतहैं अहि सर्ग जाहि अगार ॥ महा
यज्ञमाहिं कृतिकाकार्क माहीं परम । करै व्रत एक पक्ष करिके ज्ञान सुनऊ सधर्म ॥ प्राण निर्मल
देह पावे सर्ग आनद धाम । सूर्यको सो तेज पावे रूप अति अभिराम ॥ वैश्वानर तीर्थ माही
ज्ञान करिके परम । किङ्कणीकाशमे जाय सु करै ज्ञान सधर्म ॥ सुनऊ सोजन सर्वमे अक्षर
सुठार । हर्ष सो अति शाय करिके करै परम बिहार ॥ प्राप्त अके काशिकाके धाम माही जौन
विपासामे ज्ञान करिके बसै त्रयनिधि तौन ॥ लहत गहि संसारको जो जोहै अति उदासतहै
सुरसोक्कमे शुचि लहि शरीरहि ब्रह्म ॥ प्राप्त कृतिकाशानमे जे ज्ञान करि नै ज्ञान । करै ज्ञान
अक्षुको तौ सहे सर्गहि दक्ष ॥ महा पुरमे न्हाय जे जन करत त्रयनिधि बास । लहत अक्षर नहि घरा

चरको तौन सुनु बुधिरास। देवदारु सु विपिन नाही खागके नै पम्प ॥ सप्तनिशि जे बसेतैं जन लखे
सर्ग सभर्मा ॥ * * * * * ॥ ॥ चरषादोहा ॥ * * * * * ॥
सरसाम्ब अर कुमसाम्ब शुचि द्रौणसर्म पदवीचाजे जन करत सनाम सर्ग ते सहि करि रहत निभोषा ॥

॥ * ॥ चामरहन्द ॥ * ॥

जनस्थान विचकूटमाहि जौन न्हातहैं । खस देह पात तौन खर्गने विभातहैं ॥ देविष्यामिका सु
याग बीच जौन जायकै । एक पक्ष व्रत जेमसों करे सचायकै ॥ * ॥ मधुभारहन्द ॥ * * ॥

॥ गन्धर्व भोग । ते सहत लोग ॥ सुनु नृप महान । बर सुमतिवान ॥ * ॥ चामरहन्द ॥ * ॥

कौशिक्या मदी सु बीच जौन न्हात जायकै । शान्त भाव खेय लोलभावको विहायकै ॥ एक
विश रात्रिवास को सु व्रतको करे । तौन सर्गश्लोक माहि भूरि मोदसों भरे ॥ औ मतङ्ग बापिका
सुमार्हैं जौन न्हातहैं । एक राति माहि तौन सिद्धि ले विभातहैं ॥ खर्ग तीर्थनैनिषारमाहि एक
मास ते । वासको करै सनाम छेडिकै दिलास ते ॥ * ॥ तोमरहन्द ॥ * * * * *

नरमेधको फल लेव । सुनु भूप पर्मा सचेत ॥ * ॥ अरिसहन्द ॥ * ॥

गङ्गा हृद उत्पला बन बर । तिनमे जे जन न्हात सुमति धर ॥ एक मास व्रत करिके पूरण ।
सहस्र अन्नस फल ते तूरण ॥ गङ्गा यमुना कालञ्जर गिरि । इनमे एकमास न्हे कै धरि ॥ करत
सनाम शांत माहि जे जन । दश हयसस फल सहस्र सु ते जन ॥ न्हाएँ षष्टि हृदमे निम्बलि । अन्न
दानते होत अधिक फल ॥ सुनऊ युधिष्ठिर नृपति सुमति धर । तीरथ परम प्रयाग माहि बर ॥
तीमकोटि तीरथहैं आवत । अर दश सहस्र सुफलसों भावत ॥ * ॥ सेरठा ॥ * * * * *
जैसे जो अबदात तीरथ पर्मा प्रयागहैं । माघ मासजे न्हात तिहि मे ते खर्ग सहत ॥ * ॥

॥ * ॥ जयकरीहन्द ॥ * ॥

बैबलत तीरथके बीच । अर पितराश्रम माहि निभीच ॥ करत जौन जनजाय सनाम । तौन
होत शुचि पर्मा सुआन ॥ तिमिही किए मरुद्गण माहि । होत पवित्र कहौ अबगाहि ॥ ब्रह्म सरो
वर भीहीं न्हाय । पुनि बर सुरसरि तामे जाय ॥ करिके ज्ञान होय अति खस । मास एक व्रत
कोहैं दश ॥ अन्न लोकको प्रापत हात । सुनऊ युधिष्ठिर प्रज्ञापोत ॥ अष्टावक तीर्थमे न्हाय ।
पुनि उत्पातक माही जाय ॥ करि सनाम द्वादश दिन पर्मा । बसिके कीन्हें व्रतहि सभर्मा ॥ नरसस
को फल प्रापत होत । सुनऊ युधिष्ठिर प्रज्ञापोत ॥ * ॥ रामगोतीहन्द ॥ * * * * *

पश्चात्तीर्थ माहि उत्तम श्रेत शिखर परमा । ब्रह्म हत्या कूटतीहै एक तात सधन ॥ ब्रह्महत्या
शितिक कूटति श्रेत पर्वत बीच । विष्णुपदमे हतिय कूटति खस होत निभीषा ॥ अग्नि पुरमे वासकी
है होत उज्जल पर्मा । तदा १२ करबीरपुरमे होत खस सधर्म ॥ देव ऋद सुविशालमे अज्ञान
कोहोतात । होतहै जन ब्रह्मपदको प्राप्त अति अबदात ॥ महा मन्दा तीर्थ अर आवर्त मन्दा

शा०प०
दा०ध०

जौन । इन्हें सेवत न्हे अहिंसक तौन सुनु बुधिभौन ॥ लहत सर्गहि अक्षरमने करतहैं सु बिहार ।
लहत तिहिको सुयय सुमनसमाहि लस सुडार ॥ पूर्णमासी कार्निकी ने उर्कौने न्हाय ।
करें पुनि लोहित्य तीरथ माहि खान सचाय ॥ होतहै फलपुंडरीक सु यज्ञको हे तात । राम
इर्द सु विपासाने किए खान विभात ॥ होतकल्मष दूरि अरु वर लहत मखपाल पर्न । महा
ऊदको माहि करि कै खान होय अभर्न ॥ नास एक व्रत करैं करिकै चित्तको अति मुद ।
लहे द्विज यमदण्डिकी मति सुमऊ मृप बुध उद ॥ न्हे अहिंसक किए तंतप विधि गिरि पर पर्न ।
लहत एकहि मासने जन सिद्ध तात सधर्म ॥ नर्मदा अरु सूर प्रारक अहि कीन्हें जान । राज
श्रीकों लहत हैं अरु पर्न तेज महान ॥ जम्बु नारमतीर्थ मार्गी खान कै न्हे लह । मास तीन सुवन
से ते जन लहत सिद्धि सुदह ॥ * * * * * ॥ * ॥ अयकरीचन्द ॥ * ॥ * * * * *

कोकामुख तीरथने न्हाय । पुनि अञ्जलिकासनने जाय ॥ न्हाय तहाँ अति उज्जस होय । बसे
कहुक दिन मुदसैं भोय ॥ फेरि कुमारी तीरथ बीच । जाय करै सुनु खान निभीष ॥ बास करै
करि शाक अहार । पे न्हे चौर बलकलहि चार ॥ जैसे जे जनहैं सुनु भूप । तौन सर्ग कौ लहत
अनूप ॥ * * * * * ॥ * ॥ मधुभारचन्द ॥ * ॥ * * * * * ॥ * * * * *
सेष सु प्रभास । वर धर्म रास ॥ तिहि माहिलस । लहि अमां दह ॥ जन जौन न्हात । अहि न्हे
बिभात ॥ उज्जान पर्न । तीरथ सधर्म ॥ तिहिमाहि जौन । जनन्हात तौन ॥ वर धर्म धाम । सेवत सु सु
जान ॥ कल्मष प्रखर्ब । मिष्टि जात सर्व ॥ कुल्या सनात । करि संह विधान ॥ कीन्हें सु जाय । सुनि
बुधि कलाप ॥ हयमख सुडार । फल तासु चार ॥ हो मि जन भूप । मोदद अनूप ॥ * * * * *
॥ * ॥ पद्मभ्रुलीचन्द ॥ * ॥

पिण्डारक तीरथ परम लह । तिहि माहि खान करि कै सुदह ॥ एक निशा बास कीन्हें अनूप ।
अग्नीसटोम मखको सुभूप ॥ फल मिलत सर्व अयकूटि जात । अवदात सुयय जगने विभात ॥ इहि
भौनि ब्रह्मसर माहि जाय । कीन्हें सनात सुनु भूमिदाय ॥ मख पुण्डरीक को फल महान । सो
मिलत खानि अति मोद दान ॥ मैनाक अचल पर जाय न्हाय । संध्या सु करै चित्त कै सजाय ॥
कुष काम जीति एक सासु वास । कीन्हें महीप सुनु सुमतिरास ॥ फल सर्व अयकूटो मिलत
पर्न । वर कान्ति ज्योति शुचि मति अभर्न ॥ काखोदक तीरथ नन्दि कुष । तिनके सनात ते ययप
मण्ड ॥ मिष्टि जात होत निर्मल शरीर । सुनि सुवन धर्मधर पर्न धीर ॥ मन्दीवर दरमने ते
महान । अरु सर्गमार्गने किए खान ॥ मिष्टि जात तात कल्मष विलंदा । जन सर्ग जात न्हे कै अर्न ॥
बिख्यात अचल दिनवान भूप । सब रत्न न्हेको बाकर अनूप ॥ सेवत सुजाधि तप गिरि विद ।
रमणीय पर्न पावन प्रसिद्ध ॥ तहें पूर्ब प्रीति सों देव पूजि । अति न्हे प्रसन्न वज भौति सुजि ॥ करि

के निज आदि विधि धर्म । जीवन अनित्य जाने सु अभर्ष ॥ जे तजत देह सुनु सुमति शोक ॥

ते लहत समाप्त ब्रह्म शोक ॥ * * * * * ॥ ॥ चक्षुशाहन्द ॥ * * * * *

काम शोभ शोभ मोह जीतिके मनुष्य जैन । तोर्य वासको करै सुनो सु तात बुद्धि भोग ॥ सब
ताहि होत प्राप्त पाप पर्न छूटि जात । पुखवान होय तेजवान भान सौं विभात ॥ * * * * *

॥ * ॥ बदणाकुलकहन्द ॥ * ॥

ओर अनन्य तीर्थहैं जेते । साय ध्यानसे तीरथ तेते ॥ ज्ञान करि करै तिनकी पूजा । तिहि सौ
पुखवान नहि दूजा ॥ तीरथ सेवन करुण्य हारी । यज्ञ फलद अतिहो सुखकारी ॥ उत्तम परम

स्वरगको दांजी । महिमा तासु न जाति बखानी ॥ * * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * * *

यह अतिको सिद्धान्त कस्यो तोहि हन तातजो । जे जन साधु नितान्त तिनसों कहिवे चोप्यहै ॥

शिव्य निज शुधि धर्म धर्म सहित जो होय तो । सुनुहे तात अभर्ष ताहू कोंऊ सुमारए ॥

सुखधि अग्निरा दान्त ज्ञानवान, व्रतवान बर । यह जो अति सिद्धान्त बूझे नैतनसों कस्यो ॥

॥ * ॥ मधुभारहन्द ॥ * ॥

पापम महान । यह है सुजान ॥ जे भजत याहि । विधि सहित याहि ॥ ते स्वर्ग लोक । आनन्द

शोक ॥ पावत अमूप । निज जानि भूप ॥ यह सुमत जैन । यहकों सु तौन ॥ उत्तम अमूप । कुल

नाहि भूप ॥ जे जन्म लस । सुख लेत दस ॥ * * * * * ॥ * * * * *

सावित्रीका श्रीराजपहाराजाधिराज श्रीउद्दितारायणस्य ज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीवासि

रघुनाथकवीश्वरात्मजेन नोकुलनाथस्य शिष्येण महिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारत

दर्पणे दानधर्मे पञ्चविंशोऽध्यायः ॥ * * * * * ॥ रामगीतीहन्द ॥ * * * * *

॥ * ॥ वैश्यायनउवाच ॥ * ॥ पराक्रमने भक्त जैसे बली वीर महान । क्षामाहा विधाता से

तेजने जिन भान ॥ निरे अजुन बाह करिके खेतमाही परं । महा वीरखमाहि जे अति श्रेष्ठ

स्वसे सधन ॥ सहित कभुन्ह नृप सुधिछिद वास तिनके आय । सेवते हैं परम जैसे शीघ्र सुभटक

राय ॥ देखिबेकों तिन्हहि आए महाशक्ति तपवान । तेज पुञ्ज सु अघि जैसे ज्ञानवान महान ॥

अधि धनु सु पुखख्य नैतन पुखर कतु स्वर्त । अग्निरस यह सुमति जे अतिजसों अघहर्त ॥ शिरो

स्थूल बगिष्ठ गोलब अथन काश्यप व्यास प्रमति विन्वा निज दम यह शुक्र तेजधराय ॥ रैभ्यचित

अरु जवजीत सुभरदाज सुजाना सुधन्वा परवत सु नारद तेजवान महान ॥ वितभूकर्म धैर्य एकत

वादिहै अघिरायामए अघत देखि बेकों भीषमहि सहचाय ॥ * * * ॥ मोतीदानहन्द ॥ * * * *

सर्वत्र सुधिछिद भूप सुजान । अंधीन्हकों पूजन भौ तपवान ॥ अघिबर पूजित बैठ सचाय ।

कथा सुधि भीषमको सुखदाया । सब करतें सुभए अतिसर । सुनो जनमेजय भूपति दत्त ॥ कथा

श्री० प०
दी० व०

सुनि सोनसु भीषमवीर । भरे अति पावत जाद गंभीर ॥ सु सोपेहि कौनको चरपल्य । तदनर
भीषको सु चमल्य ॥ सु सोमर ध्यान नरे तिहि कोन । तवे जग दीस रहे जगतवासी ॥ * * *

॥ * ॥ चरणाकलकहन्द ॥ * ॥

अन्तरध्यान सबे कधि भए । तऊ अधिष्ठिर सुदसो एए ॥ पुनि पुनि करत प्रसथा भीकी ।
कारि के प्रगट प्रीति सुधि होकी ॥ नरे प्रसन्न भोवमके पासि । बँडतभे पाण्डव सऊसासि ॥ दोसि कधि
महको तपस प्रभाषी । पाण्डवके हिय विषमय होवा ॥ तिन कधिहोको भाग्य चमूपा । विन्तत
बन्धु सहित बर भूपा ॥ भीषम सह पाण्डव बर शानी । कथा कधिहोकी ग्रमम मरानी ॥ कहत
भए अतिही मुद पाने । तिनके ध्यानमाहि अनुराने ॥ * ॥ वेगन्यावन उवाच ॥ * ॥ कथा
अन्तमे पाण्डव भवपति । भरे हर्षसो धरे परम रति ॥ भीषमके चरलने अतिबर । जाय जायको
परम सुमति धर ॥ बूझत भए सुप्रन्न धर्मको । पर्य मनोहर धाम धर्मको ॥ * ॥ सुधिष्ठिर उवाच ॥
कौन देय है श्रेष्ठ महाना । कौन अचल यह कौन सुवाना ॥ कौन अष्ट सरिता है जगने । जगत
कलुष अति तिनके मगने ॥ कही पितामह हमको गुणिके । जासो सुमुद होऊ नै सुमिके ॥
॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥ यहि सुप्रन्नने सुनिदर भूपा । कहत एक रतिदास चमूपा ॥ * * *

॥ * ॥ रामगीतो हन्द ॥ * ॥

श्रीलवृत्ति द्विज अर सिद्धको तिहि माहि है सखाद । सुनि सुधिष्ठिर नय सो नतिदास
होहि प्रजाद ॥ भूमिकी परदक्षिणा की पुनह पुन एक तिहि । नैहने शिलवृत्ति द्विजके प्रात भो
तपनिहि ॥ सिद्धकी शिलवृत्ति द्विजवर करी पूजा पर्या होय हरपित बसत नो मिथिमाहि सिद्ध
सधर्म ॥ प्रात उठि शिलवृत्ति द्विजवर प्रातकृत करि पर्य । सिद्धके भो निकट चापत सुमऊ
मात सधर्म ॥ सिद्ध अर शिलवृत्ति द्विज मिलि बैठि सुख सह उह । कथा कहते भए अतिमत
महे सुन्दर गृह ॥ अन्तमाहो कथाके शिलवृत्ति विप्र सुजान । धर्मसो करि साजुह पर सिद्धको
मतिमान ॥ तुम सुधिष्ठिर भूप बूझो प्रन्न हमसो जान । तौन प्रन्नहि करत भो द्विज प्रातकृत कर
मौन ॥ * ॥ शिलवृत्ति उवाच ॥ * ॥ कौन एहे श्रेष्ठ आथम देय पर्यत पर्य । कही हमका
कथा करि के सिद्ध स्वधर्म ॥ * * * ॥ चरणाकलकहन्द ॥ * * * ॥ * * * ॥

सिद्ध उवाच ॥ * ॥ श्रेष्ठ देय गिरि आथम सोर । शिष्टने महा प्रीति होरि भो को प्रक सुर
सरि पूजन कोन्ह । सो न मिलत है दामऊ दोन्ह ॥ ब्रह्मपत्नीसो को कलुषापी न विगत सुप्र
कहा अवगाही ॥ कोन्ह तप अर यज्ञ महाना । मिलत नही फल तौन सुजाना ॥ शिष्टने
आ जन परसे । तौन स्वने मेरुत सहरसे ॥ नित स्वनेत कवच नाही । द्विजवर अर कोनि
बनमाहो ॥ होत गरजसो सब कोजा मिज भेनुजमको सुधि सुधराजा ॥ भूमि होहि विष्णु बह
भागे । बसत स्वर्गमे मुदसो पागे ॥ जे जन पूरव बयने भारी । कोन्ह पाप कधि दुषकारी ॥ नै पुनि

भा०
दा०

जौ गङ्गाको प्राणै तिनको जलन नतिका पावै ॥ अरु जल-किए कल जेवों । अत यज्ञनसों
विद्यत-व-तैवें ॥ अरु अरुयने जिनि तन इदि कै । सोयत भावमान सुति करिके ॥ तिन हीं
जे गङ्गाने ग्हावै । दूरि पापको करिके भावै ॥ अतते ब्रह्मस्युद्धि मनुजनके । रहत सोम अर
अखि सुनतके ॥ तिनने सहस्र वर्ष दिवसाहीं । मूजित रहत सुरनके माहीं ॥ तऊ बिन कुसुम
ससक नहि जेवें । दिव अर देव अर त्रिभु तैवें ॥ प्राय बिन स्यति न रजनी जिनि है । देव दिशा
गङ्गा बिन तिन हे ॥ * * * * * ॥ तोमरहन्द ॥ * * * * *

वरनर्थ आसन पर्मा । जिनि सोयत न बिन धर्मा ॥ अरु सोम बिन जिनि यज्ञ । नहि ससत है
सुनि प्रज्ञ ॥ तिमि सोयत न जन सर्वा । बिन गङ्गा भूप अखर्व ॥ जिनि अर्क बिन आकाश । नहि
ससत सुनि सुविदास ॥ तिमि गेक भूमि सदान । नहि ज्यो सखें मतिमान ॥ सुर तिघना बिन
देव । जिनि सोम ससत सुनेम ॥ * * * ॥ अरु दोहा ॥ * * * ॥ * * * * *
सर्वतां जे ब्रह्मस्युद्धे नैन सोकके बीच । पार्थ ब्रह्मिकों प्राप्त होत तेसुनि वर नृपति निभीष ॥
* * * ॥ अथ करिहन्द ॥ * * ॥

रजिसें तन अन्वयक जौन । ताहि पियत जो जन बुधिभौन ॥ तिहिकों जावक ब्रतते पर्मा ।
अधिक होत पाप सुनऊ सधर्मा ॥ * * * * * ॥ * * ॥ अरिहन्द ॥ * * ॥ * * * * *
जौन करत अत है ब्रह्मचरन । अरु जो गंगा सान सचायन ॥ ते दोऊ सम हैं धौहै नाहिं । होत
अरु सन्देह हियमाहिं ॥ * * * * * ॥ * * ॥ दोहा ॥ * * ॥ * * * * *
अरो रहत जुगससत जो एक पावसा पर्मा । सो सुरसरिने न्हात जो एक नास सह धर्म ॥
* * * ॥ अथ करीहन्द ॥ * * ॥

ते दोऊ सम हैं की नाहिं । है सन्देह महा हियमाहिं ॥ * * * * * ॥ * * ॥ दोहा ॥ * * ॥ * * * * *
जिनिभोवो के मन अपुत जूलत है अम जौन । तिहिते अधिकी अ छ है गंगाथित है तौन ॥
अभिप्रायि प्रापत भयें अवन होत जिनि तूल । तिमि गङ्गाथित जननको पाप होत निरमूल ॥
* * * ॥ अरिहन्द ॥ * * ॥

अपुत उपायका सहित शाय । हेरत सहाय सहि ज्ञान भाय ॥ जैसे सुजीव तिनको सुजान
अपुत न उपाय गंगा प्रमान ॥ * * * * * ॥ * * ॥ रामगीतीहन्द ॥ * * ॥ * * * * *
अपुत जिनि अरुके वर सप भिषिप होत । तिमिहि गंगा दरशते मिटि जात अघ बांधयेता ॥
जिनि अतिपापको अरु अतिदुष्ट नहि जौना होत सुरसरि सरणते हैं प्रतिदुष्ट जन तौन ॥ परत जो
अपुत अतिपापको किये ककल भुरि । सुरसरोके ध्यानते ते होत अघते दूरि ॥ सुरसरोके सामुहें
अपुत अतिपापते हैं पर्व । सुरसरोके सुरसरोकाको ककल सस सधर्म ॥ बिनय अर आधारते जे हीन

शा०प० अनु अचरुप । सुरसरीके बदरुने ते होत सत्र अनूप ॥ वृत्ति कारण सुरसरीके ज्यो अनृत रे सुख
दा०प० राज । करनको तिमि सुरसरीको सविश है मतिमान ॥ ॐ * ॥ * ॥ गोतीरुमावन् ॥ * ॥ ॐ

शुभा करि भारत वाचक होत । उपासत तावहि ज्यो सुख भोग ॥ सुने तिमि शेष मनोरथ
काज । उपासत सहहि जीव सुखज ॥ सपैहि सत्तान्मने जिनि पर्व । स्वयम्बुष बान सु मेटसपर्व ॥
नदीमणिने तिमि श्रेष्ठ अनूप । सु जगहि जनि महा मुदरुप ॥ सुरादिकको जिनि जीवन मूल
धरा अरु भेनु समोद अनूप ॥ सर्वे तिमि जीवनको मतिमानि । सुजीवन नूखतु नवहि जनि ॥
पीयूषहि ज्यो । सुर पीवत प्रब । महा मुदरो जनि विप्र सधर्म ॥ सु ननु सुभा सुखको तिमि चाहि ।
सबै जन पीवत हैं सबचाहि ॥ * ॐ * ॐ * ॥ * ॥ प्ररसा रोसा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
देवधुनीकी सिकता तासो खपटे हैं जन जौन । रिच वासीचे आपुहि मानत ते अन सुनि शुभिभोग ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातहन् ॥ * ॥

सुने आन्धी तीरकी जलिकाको । धरै ते धरै भानुकोसी प्रभाको । ज्यो पाप भारी उरै प्रवृत्तिने ।
सबै स्वर्गने कीर्तिको के महीने ॥ पिशोताहि जो पर्यै के वासु पावै । नष्ट पापका योग
नाथे विशाले ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॥ * ॥ मधुभारहन् ॥ * ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
दुर्विसन पर्व । अरुचति अर्ध ॥ तिमचाहि जौन । रत कुमति भौन ॥ दुर्विसन तासु । अर
कसुष रासु ॥ हरि खेति ताहि । सुरसरित चाहि ॥ सुरसरित तीर । मुदने वधीर ॥ जे करत रासु ।
पसी सचाव ॥ नन्दर्वे जौन । तिम सम न तौन ॥ हंसदि खस । पसी मुदस ॥ मुषि बोधि वेख ।
करि करि किलोख ॥ जिहि नाहि पर्व । नाचें सधर्म ॥ सुरसरित कूष । शैवो अनूप ॥ सुषको
सुभान । अतिही सखान ॥ तहें सुमुनि वर्ग । ने भूषि सर्ग ॥ * ॐ * ॥ * ॥ रामभोतीहन् ॥ * ॥ *
होत जो मुद सुरसरीके पुखिनचाहि सदांन । होत हो नाहि स्वर्गमाही प्राप्त सुनि मतिमान ॥
वचन मन अरु कर्मासो जो अनित पाप विसन् । यसत तिहिसो जौन अन है सुनऊ विप्र आन्न्द ॥
तौन अन खलि सुरसरीको होत पावन पर्व । हे न रहिने तोन संग्रथ सुमऊ विप्र सधर्म ॥ दारुण
अरु परबर्ते अरु पिणने जस खस । करति पावन पर्व जगको सुरसरी सुनि रस ॥ सुरसरीको
कीर्ति बरको सुगत हैं जन जौन । मात पितके कुसाहि तारत तोन सुनि शुभिभान ॥ सुरसरीको
खसत जो नहि जासु सुनि मतिमान । तौन अन है सतक अरु जस पर्व अथ समान ॥ तहाअवि अर
देव तिहिको भजाय निख सप्रेम । सुमऊ शैवो सुरसरीको सब जौन सुने ॥ महाप्रादी तिह
प्रख सु यती अरु अह वाग । रहत गङ्गा अरु ने है निख सुनि मतिमान ॥ अरु ताको अरु
नहि जौन शैवो अथ । खसत जाको होत हैं जन देवसम सगि प्राप्त ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
॥ * ॐ * ॐ * ॥ वचसाहन् ॥ * ॐ * ॐ * ॥

चन्तकासु नाहि जौन नवकी भजे सुमान । रस ताहि पर्व सवे प्राप्त होत हैं सुषान ॥ ज्यो

सुखन्त काखलौ भजे सप्रेम जौन । व्याघ्र आदि जीवकी सुभीतिकां लहै न तौन ॥ पाप होत नष्ट
सर्व परम कष्ट छूटि जात । तेजमै अखण्ड होय भारतखण्डलौ विभात ॥ माघ मे धरीसु जाहि शंभु
मोदसों अखर्व । पूजते सप्रेम हैं समेस ताहि देव सर्व ॥ गंगके विद्योर्गे जया सु होत हैं कलेशसात
तात पुत्र दारके विद्योर्गे बुधेश ॥ होत है तथा कलेश नाहिं विप्र सत्य नामि । लोतहैं मुनीश मोद
तासु कूल वास ठामि ॥ तीनपथ चालि तीन्ह सु लोक कै अमन्द । तीनहू सुलोक बीच कीर्तिकां
करो बिलन्द ॥ होत ज्यों प्रसन्न दृष्टि पूर्णचन्द्रकां सु देखि । होति त्यों मनुष्यकी सुदृष्टि जान्हवी
हि देखि ॥ नगकां बिलोक चित्त होत ज्यों प्रसन्न परम । कौन हू पदार्थ पाय त्यों होत है सधर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतोच्छन्द ॥ * ॥

सुरसमाहि सुरेश जैसे नरसमाहि नरेश । नखतमे नखतेश जैसे श्रेष्ठ है सुबुधेश ॥ तिमिहि
सरितनमाहि अष्टा सुरसरो है परम । जाहि परशे होत जन छत छत्य हैं बिनभर्म ॥ सुरसरीकां भक्ति
नहि कै अपत हैं जन जौनासुरसरोको लगत प्रिय हैं तौन सुनि बुधिभौना । राजती है लोक तीन ऊ
माहि खीरति जासु । सेय जाकों होतहैं छतछत्य जन बुधिरासु ॥ भूमिवासी श्योमवासी स्वर्ग
वासी सर्व । करत नगाखानहैं अति नहे मोद अखर्व ॥ प्राप्त कीन्हे सगर नृपके सुवन जिहि दिव
माहि । जाय जिहि के निकडमे जन के नही हर्षाहि ॥ सुरसरीकी लहरिसो निर्दोष भे जन जैन ।
तौम राजत प्रभासेहै भागलौ बुधिभौन ॥ देह छोडत जौन जनहैं सुरसरीमे जाय । देवसम ते
होयके निति रहत सुदसे शाय ॥ अथ जड धनहीनहूकी करति इच्छा सिद्धि । मोददा सुरसरीके
सम और नहि बुधिनिहि ॥ लहत जे जन सुरसरोको शरहैं अबदात । मोद पागे जायके ते
स्वर्ग माहि विभात ॥ करत दरशन सुरसरीको जौन बसिके कूल । ताहि आनद देतहैं सुर भरे
प्रेम अतूल ॥ प्राप्त आर्द्र भूमिमे है जान्हवी सुखदान । होतहै अति पुण्यघाते प्रात कीन्हे खान ॥
लोक तीनों सुरसरीसे होत भूषित परम । होत पावन सर्व इनतें सुनऊ विप्र सधर्म ॥ सुरसरीके शर
लमाहीं मनऊ सों जे होत । ब्रह्मपदकां होत प्राप्त तौन सुनु बुधिपोत ॥ होति है परसन्न जैसे
जननि सुनकां देखि । होति त्यों परसन्न नगा सर्वलोकान्ह देखि ॥ चित्तकां बश किए जे जन ज्ञान
वान महान । सुरसरीकां सेवतेहैं ते सबै मतिमान ॥ मोक्षकी बर कामनाकां करत जे जन परम ।
प्रेमसों ते सेवतेहै सुरसरीहि सधर्म ॥ शंभु आदिक देवतनकां कै प्रसन्न सुजान । उग्र तपसों भगीर
धनृष ज्ञानवान महान ॥ * * * * * ॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥ * * * * * ॥
ल्याए भूके माहि जान्हवीहि अति मोददा । यावत तिहिके पांछि अमरनकी गतिकां सु नर ॥

॥ * ॥ रामगीतोच्छन्द ॥ * ॥

ताहि परसैं भोति दोऊ लोककी निटि जाति । बढत तेजय सुरनकां सो लक्ष्मति सरमाति ॥

शा०प०
दा०ध०

सुरसरीके गुणनको हम कह्यो यह एक देश । बुद्धिसें अबनाहि करिके सुनऊ विप्र बुधेश ॥
सर्व गुणको कहनको है शक्ति हमने नाहि । सकत नहि अबनाहि जौ वर अमरऊ अबनाहि ॥ मेरु
गिरिके उपलको अरु सिन्धुजलकी पर्न । होति संख्या पै न मरुता गुहनको सह धर्म ॥ सुनऊ तात
जानि मरुता गुणनको मतिमान । भक्ति मन बच कर्मसो नहि होय अद्वावान । मोददा अति सुर
सरो वर कृपा करिके उह । धर्मयुत करि करै तव मन मनीषाको गुह ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ मोटकहन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ शुचि जन्हुसुता वरको करि कै । बुधिसो अबनाहि दिए पहि कै ॥
द्विसो बुध सिद्ध विदा सहि कै । सु नयो दिव मारनको नहि कै ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ अन्तगुरुतोमरकन्द ॥ * ॥

सुनि सिद्धिके वर बैन को । शिख वृत्ति द्विज सुख लैन को ॥ सुर निम्ननाकड पूजि कै । धरि
प्रेमको हिय कूजि कै ॥ शुचि सिद्धि दुर्लभ पाय कै । रवि रूप मोक्ष विशाय कै ॥ तिहि भांतिही
तुम पूजियै । सुर निम्ननाको कूजियै ॥ नहिके सुभक्ति महान को । धरि दिएने वर ज्ञान को ॥

॥ * ॥ मधुभारकन्द ॥ * ॥

उत्तम सु सिद्धि । तुम बुद्धि निद्धि ॥ सहि हो महान । अति मोद दान ॥ सुर सरिहि सेय । को
मुद न लेय ॥ मरुता समान । सुखदान आन ॥ याते सुपूजि । बड भांति कूजि ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुरसरिलव सहित इतिहास । बुद्धि प्रकाशक आनदरास ॥ बन्धु
सहित युधिष्ठिर भूप । सुनि कै हर्षित भयो अनूप ॥ * ॥ दोहा ॥ *~*~*~*~*

एहि इतिहासहि जैन जन पढे मने सह प्रेम । सर्व कल्प ताके मिटै नितिही रहै सक्षेम ॥

स्वस्तिओमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना आबन्दोजनकाशीवासिरघुनाथ
कबीश्वरात्मजस्य गोकुलनाथस्य शिष्येण मण्डितेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे
शान्तिपर्वणि दानधर्मे ब्रह्मासाहासे बद्धि शेरध्यायः ॥

॥ *~*~*~*~* ॥ रामभीतीकन्द ॥ *~*~*~*~* ॥

॥ यांधिष्ठरउवाच ॥ सर्वगुणसो युक्त हो तुम सुनऊ भीषम तात । वेदधर्महि धरे हो अर भीलको
अवदात ॥ महा प्रह्लावान हो ब्रतवान अर ब्रह्मवान । धर्मधरे जे मनुज तिमने सेठ आपु मरुताम ॥
धर्म बूझत आपुसो यह हेतुने हम धर्म । धर्मवक्ता आपुसो नहि और कोइ धर्म ॥

॥ *~*~*~*~* ॥ पद्मभक्तिकन्द ॥ *~*~*~*~* ॥

स्वयंसु वैश्य अर शूद्र जैन । द्विज ताहि सहत किहि भांति नैन ॥ तप किए सहतकी किए
कर्म । अति अबण किएकी सह धर्म ॥ हमको सु आपु कहिए मरेशानुम कहन योग्यहो वर बुधेश ॥

॥ भाष्यउवाच ॥ * ॥ रामगीतीन्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

स्त्रियादिक वर्धे जे हे तीन सुनु भूपाल । लहत है ब्राह्मणको अतिदुःखसोसु विशाल ॥ वज्रत
योनिन माहि पुनि पुनि जन्म खेत सुजान । जन्म आहत माहि कवळं होतद्विज मतिमान ॥
परम यहि परसंगमे एक कहत हैं इतिहास । सुनऊं सो मन लायकै तुम भूपवर बुधिरास ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अपि मतङ्ग अह गर्दभीकी तिहिमे सम्बाद । अब तोह कहत बुजाइ कै जहि सुनि मिटत विषाद ॥

॥ * ॥ इन्द ॥ * ॥

रहो एक बर विप्र कोई वेदवान सुजान । संस्कारित भयो ताके सुवन एक सुलदान ॥
सर्व सुखसो युक्त जो हो नाम तासु मतङ्ग । सिन्धुसो गम्भीर हो बर भरो बुद्धि तरङ्ग ॥
विप्र मख सामान काजै ताहि भेग्यो तात । चपल बालक गर्दभनसो युक्त रथ अबदात ॥
चढो तापै चढो स्थायन यज्ञको सामान । जगो मारण गर्दभनको सो सुनो मतिमान ॥
प्रेम पूरी ही तहां उन गर्दभनकी माय । देखि पण्डित सुतन्हको तिहँ कह्यो इमि अकुलाय ॥
करऊ थोचन पुत्र मेरे धरऊ हीमे भीर । है महा चण्डाल यह पर कहा जानै पीर ॥
मित्र सबको होत है द्विज होत निर्दय माहि । खेत शिखा आय कै जम सर्व तिनके पाँहि ॥
करत बालक दयाको नहिँ देत यह बळ मार । है नही यह विप्र जानो याहि अघ आगार ॥
गहँ अपनी जातिको यह भाव है सुनु तात । इनत याने धरत है नहि दयाको अबदात ॥
होत है जब आयहोमे प्रवृत्त जाति सुभाव । रहत नहिँ तब हिय माहो मनोषाको आव ॥
गर्दभीको वचन सुनिके ए मतङ्ग सुजान । गर्दभीको पास आयो छोडि रथ सुखदाँम ॥
कहत भो इमि बैन तासो अपि मतङ्ग अभर्म । मोहि किमि चण्डाल जान्यो कहऊ गर्दभि परम ॥
नष्टकै सँ भई मेरो विप्रता अभिराम । कष्टो विधिसो सर्व मोसो बुद्धिबन्ती नाम ॥

॥ * ॥ गर्दभीउवाच ॥ * ॥

है तुम्हरो गूढ पितु अह ब्राह्मणीहै मात । नष्ट याने भई है तब विप्रता अबदात ॥
बैन सुनि ए गर्दभीके अपि मतङ्ग अनूप । भयो आवत धाम माँही दुर्बु युधिष्ठिर भूप ॥
देखि ताको पिता जैसे कह्यो तात सुजान । गहो को नहि स्थायवेको यज्ञको सामान ॥
मेहमे फिरि आवनेको कौन कारण तात । कुशल है की माहि मोसो कष्टो सुत अबदात ॥

॥ * ॥ मतङ्गउवाच ॥ * ॥

खेत जे हैं जन्म कुलित जातिमै सुनु तात । कुशल सौ ते रहै ने किहि लोकमे अबदात ॥
गर्दभीइमि कह्योमोसो सुनऊं पितु अबदातापिता मेरो गूढ है अह ब्राह्मणी तब माता ॥
सुनऊ ताँने करै हम महत तपवन बीचापितासो कहि बैन जैसे अपि मतङ्ग निभीचा ॥

भा०प०
दा०ध०

करी ऐसी तपस्या बर विपिन माही जाय । भए तासा तृप्त सुरकी इन्द्र सह सुरराय ।
भयो तपसों विप्रताकों प्राप्त बर ऋषिराय । महत तपसों युक्त लखिके शक्त तपिं आय ॥
कहत भो इति महत तपकों करत हो किहि काज । मनुज वारेकोतिके सबभोग वारे साज ॥
आन रचित होय तुमकों देऊँ सो बर दौन । कहऊँ मोसों करऊँ देर न सुनो बरतपधौन ॥

॥ * ॥ मतङ्गउवाच ॥ * ॥

सहे हम यहि विपिन माहो विप्रताकों पर्य । हे हमारे कामना यह सुनो शक्त अभर्म ॥

॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

ऋषिके वैम पुरन्दर सुनिको । श्रेते कह्यो हिएनै मुनिको ॥ द्विजता अति दुर्लभ है जानो । यह
न मागिबेकों अनुमानो ॥ तुमकों प्रापति श्रे है नाही ॥ धरऊ न मन यह इच्छा माही ॥ देव दनुज मनु
जम ने कुरी । पर्य पवित्र विप्रता पूरी ॥ भे चंडाल जोनिके माही । याते द्विजता लहिहो माही ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याम्नाभिमानिना श्रीवन्दीजमकाशीवा
सिरघुनाथकबीश्वरात्मजेन गोकुलनाथसुतबोपीनाथस्य शिष्येण मलिदेवेन कविना विरचेते भाषा
यां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे मतङ्गशकसम्पादेसप्तविंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ मधुभारहन्द ॥ * ॥

चंडाल जान । कबहुँ न तौन । द्विजताहि लेत । मुनि हे सचेत ॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥
मुनिके यह मघवांकी बानी । बर ब्रतवांन मतङ्ग सुजानी ॥ कीन्हो तप एक पदसों ठाढे ॥
शतवत्सरलौ नहि मन गाढे ॥ तदनन्तर बोले मघवापुनि । ऋषि मतङ्गको तप होने मुनि ॥ द्विज
ता अतिहो दुर्लभ जानो । लहिहो तुम न सत्य अनुमानो ॥ मति कह साहस ही के माही ॥ तुम्हरो
धर्म मार्ग यह नाही ॥ द्विजताकों तुम नहिँ लहि शक्ति हो । बऊ दिनलौं तप करि करि बकि हो ॥
बार बार तुमको हम बरजे मानत नाहि हिए हट बरजे ॥ यह निश्चय मानो मन माही । मिलिहो
तुन्हें विप्रता नाही ॥ द्विजता लीवे जौ छट करिहो ॥ घेरे काल माहिँ तौ मरिहो ॥ तिर्यग जोनि माहिँ
गत जे है । सहत मनुज ताकों अब ते हैं ॥ तब चंडाल योनिके माही । लेत जन्म हैं सुनु मन पाही ॥

॥ * ॥ रामगोतीहन्द ॥ * ॥

धमतहैं बऊकाललौं तिहिँ योनि माही तौन । सहत ते पुनि शूद्रताकों सुनो बर बुद्धिभौन ॥
सहत जितने वर्ष हैं चंडालजोनि सु माहिँ । सुमऊँ तात सुजान तुमसों कहतहैं अपवाहि ॥
शूद्रतामे धमत तात अधिक दग्गुण तौन । सहत ते पुनि वैश्यताकों सुनो प्रज्ञाभौन ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ जयकरीहन्द ॥ * ॥

शूद्रयोनिमे जितने वर्ष । धमत जीव सुनु तात सहर्ष ॥ बिंघन गुण आधिक तिहिँ तेसु । वैश्य
योनिके माहिँ धमेसु ॥ तौन जीव पुनि सुनु बुधिपोत । ऋषि योनिमे प्रापति होत ॥ जितने वर्ष

शा०प०
दा०ब०

वेद्यता की। अज्ञानता सुनु तात निभीष ॥ सुविद्योगिने निहितं तौम । बडगुण अधिक धने बुधि
 भौम ॥ ब्रह्मचर्यतामे पुनि होत । तौम सुनो बरं ब्रह्मचर्यत ॥ बज्रतकाल धनि तामे औम । कष्ट
 प्रकृता संकल सु तौम ॥ वेद्याकी राखत हिज जोर । काष्ठरुष्ट हिजमहने सोर । बज्रत काल धनि
 ताके माहि । अमता सखत कहीं चवमाहि ॥ नायपी हि जये हिज औम । जयता ताहि कहीं बुधिभौना ॥
 बज्रतकाल धनि ताकोनीच । वेदवांन पुनि होत निभीष ॥ वेदवांन कुलमाहि सु पर्न । वीरें कहु
 दिन सुनो अभर्म ॥ शोक हर्ष चरु बांके महाना हेच बाद चरु अति अभिमान ॥ ए सब तिमिका
 भेरतं चाय । करत चापने बगने छाया ॥ जीति खेच जन इनको सर्व । तब मुचिदिजता सहे चरुबी ॥
 हम तुमसो बह कछो विचारि । ततिं तजो पाहि निर्धारि ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

अति दुर्लभ ब्राह्मण है तजो कामना एह । और कामनाको करौ सुनि मतङ्ग बुधिनेह ॥

स्वधर्ममोक्षोपदेशादिब्रह्मकाशीराजसोडशितनारायणस्वाज्ञानुगामिना काशीवासिरघुनाथकपी
 नारायणजीसुखनाथपुत्रनौपोनाथस्थायिभ्योष मधिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतद
 र्पणे श्रुतिपरिधि दानधर्मे मतङ्गकसम्वादे अष्टाविशोऽध्यायः ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * *

॥ * * * * * ॥ अन्तगुदतोमरहन्द् ॥ * * * * *

॥ * * * * * ॥ भीष्मउवाच ॥ * * * * * ॥ सुरनाथके सुनि बैनको । दिजताहि दुर्लभ लैनको ॥ पुनि एकपदसो
 ठाठ नै । समरत्य बर उकाठ नै ॥ करि चित्तधोर्य महानमे । मन साय के विर ध्यानमे ॥ तप
 कीरु बरैचजरसो । तन सुखि भो ह्यम दाखसो ॥ पुनि शक्त तापहँ चाय के । अवरैखि तप मन
 साय के ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * *

कहे तौम ही बैन सुरपति कोर मतङ्गसो । सुनऊ तात बुधिबैन औम बचन परिसें कहे ॥

॥ * * * * * ॥ रामनीती हन्द् ॥ * * * * *

॥ * * * * * ॥ अन्तगुदतोमरहन्द् ॥ * * * * * ॥ ब्रह्म चारधर्मसो हम युक्त नै के पर्न । सहस बखर एकपदसो
 सरी होय अभनी । सुनऊ है सुरराज हम तप कियो पर्न महान को न नै है प्राप्त हमको विप्रता सु
 लकोन ॥ अन्तगुदतोमरहन्द् ॥ अयो तुम्हरो जन्म है चण्डालयोगिसु माहि । लहो मे यहि हेतुते तुम विप्र
 ताका माहि ॥ बैन सुनि के ब्रह्मके ए गयामाहो जाय । बरष गतसो अगुँ असी सरो नै मनसाय ॥
 करत भो तप महा तासो भई ह्यम सब देह । निरते भो तब साय नचवा नह्यो सहित समेह ॥
 ॥ अन्तगुदतोमरहन्द् ॥ सुनि मतङ्ग सु विप्रता है तुम्है दुर्लभ पर्न । भूलि अब जिनकरो हठको कहत तोहि
 चमकीन चरुत सुखको भवत दिजको पूजते है औम । जे न पूजत महादुखको सहत है जन तौन ॥
 विप्रताके कहे सुनि विप्रता सु होत । अष्ट सभते विप्रता है कहत प्रज्ञापोत ॥ सर्वभूतन
 माहि है उताठ विप्र चमन्द् । औमि ह्यो साय सोर करत है निरदन्द् ॥ बज्रत योगिनगाहि

पुनि पुनि जन्म खेत सु जीव । साहज है द्विजवेलिकों कवच सु चानदवीव ॥ पर्यो दुर्लभ विप्रता है
 त्यागि यानें चाहि । करो खैरे कामनाकी कहत ही अवगाहि ॥ * ॥ मतङ्गउवाच ॥ * ॥ नारते
 है नीहि कौ तुम दृढक हो मै आप । दया धरिए धियनाहि अबो बुद्धिकलाप ॥ कहत पुनि
 पुनि बात हीं उहि होय जासों यीर । दया धरत न हो धियमे हे पुरन्दर धीर ॥ समा जे जन नहत
 नाहीं करत हिंसा पर्यो । करत नहि इन्दीनको बध करै भूखि चपयो ॥ तिनैं दुर्लभ विप्रता है प्रक
 सुनि धरनञ्ज । प्राप्त द्विजता भएँ तौ नहि शकत राखि न शक्य ॥ * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *
 जानत नहिँ करि जौन द्विजताकी रक्षा परन । सुनऊँ शक्य जन तौन वापिजतें पापी अधिक ॥
 ॥ * ॥ अथकरीचन्द्र ॥ * ॥

दुखत द्विजता प्रापति होत । प्रापति भएँ सुनो बुधिपोत ॥ ताकी रक्षा दुर्लभ पर्यो । है नहि
 नैरे धाने भर्षा ॥ रक्षा करत न द्विजता पारै । ते जन अज्ञ महा सुरदारै ॥ नै सुकरत संघटकों
 नाहिँ । कवच न जात कोपके पाँहिँ ॥ हिंस्रदिककों कव हीं करौ न । अब कुमारीतें प्राप प्रदो
 न ॥ साहिँ हीं क्यों बहिँ द्विजता पर्यो । सुनऊँ शक्य यशवान सधर्म ॥ पूरव करन महा प्रसन्नान ।
 होत सुनो मघवान सुजान ॥ नै धरनञ्ज प्रज्ञ अति होय । नासों लखी दया यह जीव ॥ पूरवा
 रषतों पूरव कर्म । मिटत नहीं है कहत अभर्षा ॥ द्विजता काजे यत्न महान । कोन्हें पै नहिँ
 साहत सुजान ॥ कृपा योग्य हम हींहि सुरेश । तौ करि कृपा देऊ वर वेश ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥
 सुनि मतङ्गके बँन सुवेश । अबहिँ नौनु वर कछो सुरेश ॥ मघवाकी आज्ञाको प्राप । नागो वर
 सु मतङ्ग सचाय ॥ जौ हम इच्छा करै दराज । होय सिद्धि सो सुनि सुरराज ॥ अब हम पूजित
 हींहि अगूपा । वडै सुयश मन शशिके रूप ॥ देऊँ हमे तुम यह वरदानाहे मघवान महा यशवान ॥
 ॥ * ॥ शक्यउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजित है हो परन तुम तिनऊँ लोकन्हनाहिँ । कीरति अतुला होयगी मानो संशय नाहिँ ॥
 यह वर देय मतङ्गको सुरपति नो मित्र धाम । होइ मतङ्गक प्राण नति सोन्हीं उमन मान ॥
 खैसी होति सु विप्रता दुर्लभ परन विशाल । मघवाके इन वचनसैं जाओ तुम नृपास ॥

शक्तिश्रीकाशीराजसुहाराजाधिराजश्री उदितनारायणस्य आश्रितानामिना श्रीवत्सीरामकौशली
 वासिष्ठनाथकवीश्वरत्नजनेकुलनाथस्य शिष्येण महिदेवेन कविना विरचिते भाषासंग्रहनाम
 दर्पणे शान्तिपत्रेण दानधर्मो मतङ्गकसम्बन्धादसनात्त्रिगैत्रिकोत्पत्तिश्चायः ॥ * * * * *
 ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
 प्रापति दुखसैं होति है जनको द्विजता पर्यो । तौन सुनो हम आपकों भीख सोरठे कर्षो ॥
 ॥ * ॥ अरवादेशा ॥ * ॥
 विशानिष लखी द्विजता यह वैश्य पर भूपास । तौन सुनकी धिय परमो कवच उर्यो विप्रस ॥

सायं
दायं

कौन कर्मोत्प कौनसों दिजता सही अनूप । नैस्य कथा करिके कहेय वनकों भीषन भूप ॥

॥ * ॥ भीषणवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि पायें सु महीप जिहँ विधियों दिजता सही । हे हय वर अनूप सो किय मुमसौ कहत हो ॥

॥ * ॥ अरिच हन्द ॥ * ॥

हेत भयो मनुभूषतिके सुत । नाम तासु सर्जाति धर्म युत ॥ तिष्ठिके कुलने बलमहीपति ।
 भयो तासुको यम भूने अति ॥ ताके सुवन भए है नतिबर । तालजङ्ग अब हैहय अग्रधर ॥ हे
 हयके दशरानिन्दके सुत । दश-दश भए महा मेधयुत ॥ पर्य सूर अर भूरिकीर्तिकार । तुष्य
 रूप बलवान धनुर्धर ॥ पठे वेद जिन नीके यम करि । धर्म यजु जीने जिन लरि लरि ॥ काश्रिदेशने
 भो एक भूषति । नाम तासु हर्ष्यन् महामति ॥ हैहयनूपके सुत बलवान सु । गङ्गा यमुना मध्य
 महामत्स्य ॥ रवि शोचुद्र भूप हर्ष्यन् हि । सेना रुहित मारि डाल्यो महँ ॥ मारि ताहि अवनपीप हि
 कथापर । हैहयके सुत के अपने घर ॥ तब हर्ष्यन् महीपतिको सुत । काश्रिराज भो महा सु यम
 युत ॥ नाम सुदेव देवसन सोहत्त । कल्पत दुधनज वै बहको हत ॥ सो साक्षात धर्मसो सागत ।
 जीको रूप शरें अब भावत ॥ साक्षात भो भूकों सो भूपति । लोन्हे राज नीतिकी धूर्णति ॥ ताङ्गको
 हैहयकी सुत सुनि । मास्यो उद्द युद्द रवि अरिगुणि ॥ दिवोदास तब काश्रिदेशपति । भो कौन्हे
 तिहँ जगने सख-अति ॥ सो विचारि हैहय सुतको बल । शासन पाय शक्रको अतिकल्प ॥ गङ्गाके
 उत्तर दूखहि पर । वाराणशी बसार्द मुचिबर ॥ चारिउ बर्ष बसत है जामहिँ । अमरावतिलौ
 सोहति भा सहि ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * *
 पुनि हैहयसुत आय के वाराणशी हि घेरि । दिवोदास अब को न निकरि क्यो क्यो इमि डेरि ॥
 सुनि के हैहयसुतके वैम होय सह क्रुद्द । सारदूखलौ गरजि के निकसि भटन रुह उद्द ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातहन्द ॥ * ॥

दिवोदास संघाम घोरै बिराथ्यो । तहां लोउ चौ मेदको कीच माच्यो ॥ दुर्जचोरसों सूर
 बाके हकारे । सबै बांध चौ ग्रेस खड्ग कठारें ॥ परें मुख भूने करै सख युद्द । चहँ जीतकौ ते
 भरे जोफ उद्द ॥ सते सजसों सूरके सख सैं ॥ अग्रगण्य भे सांजके नेच जैं ॥ उरे लोउकी भारमे
 सूरपारे । चहँ सख चौ मुख सैं सुठारें । परे भारतीने बहो रूप धारें ॥ मनो राज औ केतु
 कोसमिहारें ॥ अग्री हुँ चोरके सूर बाके । हटै बाहि कोरु बली न्हे ससांके ॥ तहां शास के
 सहेकाशी बिसरै । महा मोहसों भे चङ्गभा नि हारै ॥ सरी लोउको धारने भाति सैं ॥ घटा
 सते सजसों सूरके सख सैं ॥ सते सजसों काश्रिका इन्द्रपारे । महासूरके मुख भारे सुठारें ॥ सते
 मोल सैं तिहीको प्रभासों । पठे भानु नानों घटा भेर बासां ॥ * * * * * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * * * * *
 सते सजसों सूरके सख सैं । चिन्ता बाढी उद्द अब ताहन मारे नए ॥

३१०५
३१०५

तव सुशीलता भाषि दिवोदास भूपासु बहः । प्राण चापनी राशि भरतस्य कथि ॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥ परशामुखासुहृन् ॥ ३१ ॥

येषां तव नृपतेः क्षिप्रराजा । कथो वासु-चापमयो काजा ॥ कश्चिद्वै मेो दोरं वनप्रदिहं ।
दोर विचारश्चिद्वै परिहं ॥ ३१ ॥ राजोवाच ॥ ३१ ॥ वैश्यनृपके सुतव प्रजापते । मेरे सुवचने
वनमारे ॥ वैश्वी बभूवो दीनतासो गहि । चाप्ये तव मरुते चप नै चहि ॥ विश्वचापुषो योयौ
चरितौ । तेषो करी श्चमे हो जित्तौ ॥ दिवोदास नृपकी बह वान्यो । सुनि वौ बोधे सुवचि
सुझाम ॥ मति उह मति उह हे भूपासा । सहस्र हीने धरो विवासा ॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥ जयकरी हन् ॥ ३१ ॥

गुहरे सुत प्रवेके काज । करि हौं बह सुनो नरराज ॥ सुवन वशी वैश्यके रकी । कश्चिद्वै सो
रश्चि सुहृत् चर्च ॥ कश्चि नृपतेः कश्चि चेतं वैन । नक्षत्रो रचना करी सुपेना ॥ सुतः सो नृपको वीर्ये
बह ॥ तासु प्रतर्दन नाम सु प्रह ॥ बहव भवो सो जन्महि सेत । प्रोत्रहि धनुषर भवो वीर्य ॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥ दोरा ॥ ३१ ॥

शेष तेज सबयोफको भरहाज अथिराय । दिवोदासके तमयके तमने वसो सुचाव ॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥ तोटकहन् ॥ ३१ ॥

अतिशय किषो वज्रभाति वशी । तिष्ठिको चासि कांपत मे सु ह्यो ॥ धनु चादिक प्रस
सुयो गहिने । अरि वजन वैन सग्यो कहिये ॥ यय गावन आसु सने सुनुषी । वज्रभैति चराचर
है सुनुगो ॥ जिनि प्रात सने रवि साजत होतिनि ही सु प्रतर्दन साजत हे ॥ रचये पटि के सब प्रस
सिहं धनुषो सु विरावत बर्ष किर ॥ चउंभासु सग्यो पिरिने जवसे ॥ मुदसो भदि भू रहे तवसे ॥

॥ ३१ ॥ सेरठा ॥ ३१ ॥

वायो नमने एह ससिके सुवन परजगी । वसि हौं गहिं अरि वेह वधि हौं गहिं संजामने ॥ ३१ ॥

॥ ३१ ॥ राजनीतीहन् ॥ ३१ ॥

दिवोदास मदीय ससिके सुवनको परताप । राजये वेटाप के चति मयो मेदिनि वास ॥ सो
जननार भूप वैश्यसुतहके वष काज । प्रतर्दनको भेजतो मेो भरो हर्षे दराज ॥ उतदि के दस
सहित गहस मीन हो वचपाम । आय वैश्यसुतहको पर शिषी वेरि नशाम ॥ वचने करि वे
मन्द् रचको उह वैश्यमन्द् । रचने पटि प्रस वीर्ये करे कीये विचन्द् ॥ विचरि मुदसो प्र
दंगवो रचो पुह बहाज । वृष्टि करि वे मन्दी वज्र हते सु सुजाज ॥ वचने यो विचरिने
अपर परम बर्षत नीरातिनिहि बर्षत वाच है वच प्रतर्दनवे कोरा वषी आवन प्रस वैश्यसुतहके
जे कौं । प्रतर्दन निज चचवो ते वरि वेत प्रजने ॥ वचन पर चादि ॥ मीन विह भूत नरि क
रहे विचने मन्द् वैश्यभूपके वरराय ॥ नरे यो विचि परे वेतं उतवाशतिनि । वते विचुप ह

शान्ति
दर्पण

जसेः कथा सुनिःपुत्रिः भाग ॥ मरेतें सब सुवनहे ह्य भगिनिजि पर पर्म । आय मृगुके वरण
माही रक्षो भूप सधर्म ॥ अतिहि व्याकुल देखि हेह्य भूपको अविराय । कियो निर्भय वचन
कहिके वदन सुदसें शाय ॥ कहुक नीते प्रतर्दनमृः आय आथम बीष । देखिके वज्रवार सेते
मयो कहत निभीच ॥ कौनहे एहि वाग माही शिष्य भृगुके पर्म । कही हमको आत्रको हे कही
सुमुनि अखर्म ॥ भई तिनको देखिके कामना मो माहिं । देऊ मेरो हवरिको तुम आय मृगुके
माहिं ॥ जानि नृपको आनते कडि सुमुनि बाहिर आयासविधि पूजत भए नृपको हर्ष हियन शाय ॥
पूजिके इमि भए वृक्षत कहौते कहुआप । कही निज आगमनको नृप हेतु तेजकहाप ॥
॥ * ॥ राजोवाच ॥ * ॥ दीजिए करि बिदा हेह्य भृपतिकों मुनि आप । हन्यो मेरो वंश याके
सुवन पाप कहाप ॥ करी अत्रर बाधिका मो पुरी यह भूपाप्त । हे हमारो महा अरि यह सुनऊ
सुमुनि विवाच ॥ हमे आते सुवन याके सर्व मै मुनिराज । याहि हनिहो अविहि मै हो मरो शोध
दराज ॥ याहि हनिहो तबे नैहो अरि पितुसों पर्म । करऊ याते बिदा याको सुनऊ सुमुनि
सधर्म ॥ * ॥ मृगुवाच ॥ * ॥ त्रै हमारे वाग माहो सर्व द्विज नहि और । वैन सुनि ए सुमुनि
भृगुके महा मृषि मौर ॥ परसि मुनिके घरए मुद सह कहे जैसे वैन । दर्ई जाति कुहाय हे
ह्य भूपकी हम अैन ॥ भयो कतकृत्य याते सह्यो मोद महान । प्रतर्दन इमि कहि सुमुनिसों
गए आपके वाग ॥ सुमुनि भृगु के वचन सों शुचि भूप हेह्य पर्म । भयो प्रापित विप्रताको सुनऊ तात
सुधर्म ॥ तिहि अनन्तर भयो हेह्य कथीके सुत स्वदा कहत ताकों शकहैं सबदनुज परम हि दसं ॥

॥ * ॥ वरवै ह्यन्द ॥ * ॥

नाम अस्मद ताको सुनि मतिमान । पूजत भे द्विज ताको अति श्रीमान ॥ रिचा जासुकी अतिने
सोहति स्वत । भो सुधेन सुत ताके अतिहो दत्त ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
वर्षभ भयो सुधेतको अतिही प्रज्ञावान । वर्षसके सु विहय्य भो अतिने परम सुजान ॥

॥ * ॥ शेरठा ॥ * ॥

सुमुनृप भयो पितव्य सुमती विप्र विहय्यके । भो वितव्यके सत्य सन्त भयो सुत सत्यक ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अपरा भयो सुत सत्यके भयो अवाके तात । नाम तासु तम तौन भो विप्रवने अचदात ॥
तमको अयो प्रजाप सुत तौनके द्विज सो पर्म । भो वागिन्द्र प्रकाशके सो अति माहिं अमर्म ॥
अयो अविधि वागिन्द्रके सो मतिमान महान । तेजवान् अशवान् अर धर्मवान् सुतिमान ॥

॥ * ॥ वरणादोहा ॥ * ॥

जाके मरी प्रजापि माही सुका माह वचनान । प्रमदराने सुवन मो वरके सो बुधिधान ॥

शां०
दा०

सुनक नाम ताको महा तेजवान श्रीमान । शैलक भो ताके सुवन पर्व पूज्य मतिमान ॥
 कृपा पाय धृम सुमुनिको हैहय भूपति पर्व । सीतें द्विजताको लही पाखव सुनऊ सधर्म ॥
 हैहय केषिको बंध बर बरणि कक्षो अबदात । अब आगें काबूजिहो सुनऊ धरमधर तात ॥
 सक्षिमीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना, श्रीबन्दीजनकाशी
 वासिरघुनाथकवीश्वरात्मज गोकुलनाथपुत्र गोपीनाथस्यत्रिभ्यो मण्डितेवेन कविना विरचिते भा
 वायां महाभारतदर्पणे श्रान्तिपर्वाणि दानधर्मो त्रिंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौन मनुज यह लोकमे पूज्य मान हैं पर्व । तीन बतावऊ कोहि तुम भोछ सुनऊ सहधर्म ॥
 ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनऊ युधिष्ठिर भूप यहँ प्रसङ्गमे कहत हस । एक इतिहास अनूप सुमें तीन सत्रय टरत ॥
 ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

वासुदेव अह नारद मुनिको तानेहे सम्बाद । उत्तम विप्रणको पूजत है नारद कोहि प्रमाद ॥
 ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कोश्रु तिनको देखि इनि बूजन भए सप्रेम । सुनऊ सुमुनि नारद परम प्रज्ञावान सचेम ॥
 पूजत है सनमान करि जिन मनुजनको पर्व । इच्छा तिनको सुमनकी मै हों करत सधर्म ॥
 जानो सुनिबें योग्य जा मोकों नारद आपु । तौ नीकें हमको कहौ एहो धर्म कलापु ॥

॥ * ॥ नारदउवाच सोरठा ॥ * ॥

तुमसो को है और सुनिबे योग्य त्रिलोकने । सुनि यादवशिरभौर जन रञ्जन भङ्गन दुवन ॥
 ॥ * ॥ पद्मभूलोचन्द ॥ * ॥

सुरनाथ वायु अह भानु चन्द्र । अह शम्भु स्वामकार्तिक सु इन्द्र ॥ त्रिभि विष्णु बृहस्पति भूमिदार ।
 अम्बादि और देवत उदार ॥ जन जौन इन्हें पूजत सप्रेम । हम पूजतहैं तिनको सनेम ॥ अह
 वेदवान जन जौन पर्व । अति पूज्य लोकमे जे सधर्म ॥ तिनको सदाहिँ पूजत सप्रेमानहिँकेँ सुभक्ति
 तिनको सनेम ॥ * * * * *

भोज्य किए बिन जौन जन पूजतहै देवको । सुनिए आनदभौन पूजतहौं तिन जननको ॥

॥ * ॥ मोतीदामळन्द ॥ * ॥

समायुत जे जनहैं जगसाहिँ । कबौ नहिँ जात सु जे अघपाहिँ । रहैं निति तुष्टित जे जन पर्व । तिहैं
 हस पूजत नित्य अर्भ ॥ सुनौ अह जे जन बोसत तथ्य । कबौ नहिँ बोसत भूषि अतथ्य ॥ रहैं रत
 धर्महिँ माहिँ नहौन । करै विधिसौ मल जौन सुजांन ॥ अतीसहिँ पूजतहैं गहि नेम । तिहैं हस
 पूजत है सहप्रेम ॥ कृपा साहि नित्य रहैं जन जौन । करै नहिँ सखयको सुख भौन ॥ वसैं वनसहि

भले, फलमूल। अतीथिहि जे मुद देत अतूल ॥ सु वेदहि प्रापित होय अनूप। कहें निति वैन सुगोल
खरूप ॥ पढें निति वेद रहें निरदन्द। तिन्हें हम पूजत आनद कन्द ॥ सुदेवहि पूजि सुभोग लगाय।
करै जन भोजन जौन सचाय ॥ गहें व्रत सुन्दर जे जन खल। समोद सु भृत्यहि राखत दच ॥ गुरुहि
प्रसन्न सु राखत जौन। तिन्हें हम पूजतहैं सुख भौन ॥ सुनो अरु राखत जौन महान। दया सब
जीवनकी सुखदांन ॥ गुरुकुल माहिं तजें अभिमान। पढें जन जौन महा मतिमान ॥ बधै कबहूँ
नहिं जाँवहि जौन। तिन्हें हम पूजतहैं मुदभौन ॥ करै निति धर्महि धर्महि त्यागि। तिन्हें हम
पूजतहैं मुदपायि ॥ समै लहि धर्म सु अर्थ सु काम। करै जन जौन सुनो सुखधाम ॥ महा सुकृती
जनकी गहि नीति। ससैं जन जौन गहें सुप्रतांति ॥ करै अति मान नही जन जौन। तिन्हें हम पूजतहैं
सुखभौन ॥ करै जन जौन सु व्रत अनेक। अचञ्चल ताहि गहें सबिवेक ॥ तिन्हें हम पूजतहैं मुद
कन्द। गहें तिनकी शुचि भक्ति बिलन्द ॥ सुनो कंमलापति मै गहि धर्म। इते जनको निति पूजत परम ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जैसे विप्र सुजान सुखदायकहैं जगतमे। तैसे जन नहिं आन बासुदेव आनन्द कर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजा तुमहूँ द्विजनको योग्य पूजिबे जौन। देहै तुमको मोद अति विप्र सुमतिके भौन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

राखत जौन अतिथको भाव। गऊ द्विजनमे सुनि वजराव ॥ अरु जे जन हैं बोलत सत्य।
चलतसु मारग माही नित्य ॥ औ अनशूय कहैं जन जौन। लहत पारहैं दुखको तौन ॥ औ जे अहा
वान सधर्म। पढत वेदको नित्य अभर्म ॥ पूजत सर्व देव सह प्रीति। अघको पार लहत ते जीति ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

जन जौन है व्रत भौन। अरु देत जौन सुदांन। द्विजको सुरपूजि सप्रेमासनमान करत सनेम ॥
दुख पार होत सु तौन। सुनु कृष्ण आनद भौन। तपको सु कै अति परम। जिन कीन्ह चित्त अभर्म ॥
दुख पार ते जन जात। सुखसो भरे सु विभात ॥ अरु देव पूजत जौन। दुख पार जात सु तौन ॥
विधिसो सु यापि कथान। मख करत जे सुखदांन। अथाइ करत सु जौन। दुख पार जात सु तौन ॥

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

मातापिता गुरुके पाँही जिनि जे जन न रहत सप्रेम। यादवराय आपुहूँ रहिए जैसे नित्य सनेम ॥

॥ * ॥ सोर ठा ॥ * ॥

जैसे कहिके कृष्णसो नुप न्हे रहे ऋषीश। सुनऊँ धर्मधर सुयशकर पांडव वर धरणीश ॥

तुमहूँ पूजत सुर पितर विप्र अतिथिको परम ॥ ताते लहिहो खच मति पांडव सुनऊँ सधर्म ॥

श्रीः प०
दोः प०

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजमकाश्री
वाग्विरघुनाथकवीश्वरात्मजेन भोक्कुलनाथ सुमनोपीनाथस्वग्रिथ्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भा
षायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे नारद इच्छा समादे एकत्रिशोडश्यायः ॥ * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कहौ मोहि अब धर्म शाल बिभारद प्राज्ञवर । जासौ हौऊ अभर्म सुनऊँ पितामह धर्मधर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो जन आवत शरणमे ताकी कियँ सहाय । होत कहा फल तौन तुम हमै कहौ नरराय ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीश्वर ॥ * ॥

कहत यह परसङ्गमे इतिहास सुनु भूपाल । महा प्राज्ञ सु धर्मधर वर सुवशर्वान विभाल ॥
बाजके उरसौ कपोत सु भाञ्जि दुखसौं छाया । शरणमे वृषदर्भनृपके गयो सुनु नरराय ॥ देखि
कौ वृषदर्भ तिहिको कहे जैसें बैन । हे कपोत सुउरऊँ जिन अब रहऊँ परम सर्वेन ॥ कहौ कौनि
स्थान माही का कियो है कर्मभाञ्जि जासौं यहाँ आयो भरो भीति समर्न ॥ उरऊँ जिन अब धरऊँ
हीमे महा मोद कपोत । कह्यो इनि वृषदर्भ तासौं सुनो नृप मतिपोत ॥ काशिराज्य सु कोडि दै
हौ अबहि मै तव अर्थ । तिमि हँ जीवहि कोडि दैहौ कहत बैन न अर्थ ॥ करऊँ ज्रिस्ता दूरि अब
तुन धरऊँ हीमे धीर । सोई करिहौ होयगा जिहि सौं न तोको धीर ॥ * ॥ बाजउवाच ॥ सुनऊँ
भूप कपोत है यह भव मेरो परम । नित्य अण्डज खातहँ हम कहत तुमको धर्म ॥ करऊँ तुम रच्छा
न याकी है न तुमको योग्य । किए ते अति यत्न हमको मिल्यो है यह भोग्य ॥ हमै प्रिय है परम
थाके रुधिरशामिष मेद । प्राप्त हमको होयने तव दरि नै है खेद ॥ करऊँ बाधा आप मति मो
भलमे भूपाल । देत जारे हिएको मो चुधा परम विभाल ॥ रुधिर याको पोचवेको बडी तृष्णा
परम । तजऊँ याते वेनि याको सुनो नृप सधर्म ॥ नारि मखसों करो थाकी अतिहिं बिहल देह ।
रह्यो है कहु आसवाको सुनो नृप बुधिमेह ॥ मृनक जैसें नै रह्यो है है न रक्षा योग्य कृपा करि
कौ कोडि दीजे है हमारे भोग्य ॥ हो कपोतहि को कहा प्रभु आपु है भूपाल । हो हमारे नाहि
का प्रभु तेजमान विभाल ॥ करत रक्षा आयु थाकी करत मेरी नाहिं । सुनो भूति महापातिक
होयने यँह नाहिं ॥ भीष्मउवाच ॥ बैन सुनि ए बाजके वृषदर्भ भूप सुजान । बाजको इनि कहत
श्रीः सुनु पाण्डु सुन वशर्वान ॥ राजोवाच ॥ महिष दृगकी नास तुमको देत हँ नमँषाय । करऊँ
जान्त सु चुधा तासो सुनो ह्येन सषाय ॥ जौन आवत शरणमे मो तजत हँ नहि ताहि ।
है हमारे नित्य व्रत यह कहतहँ अबनाहि ॥ नाहि मो तम तजत अण्डज भरो उरसौ भूरि । खसो
पातिक होच हमको कियँ थाके दूदि ॥ ह्ये नरवाच ॥ महिष दृगकी नासको हम सौं हँ नहि
भूप । जौ न दूजे विहगकी मुचि परम नास अनूप ॥ है कपोतहि भव मेरो सुनऊँ भूति परम । बाज

और विद्वान्को नहिँ खात कहत अभर्म ॥ अतिहिँ प्यारो होय जो यह तुम्ह विद्वान् सुख्यो यावरो
 बरि देखे तौ तुम मांस अपनी भूप ॥ * ॥ राजोबाच ॥ * ॥ अति अनग्रह करो हमपै सुनऊ
 श्येन सुजांन । बैन तेरे सुनें मेरे भयो मोद महान ॥ जौन हमसों कहै ते तुम करै ते हम तोंन ।
 बैन जैसे श्येनसो कहि भूप धर्मक भौन ॥ काटि काटि सु मांस अपनी देखको भूपाल । लग्यो
 धरखें तुला ऊपर भरो मोद किशाल ॥ सर्वराणी भूपकीं सुनि करति हाहाकार । भूरि दुखसों
 भरी निक्कसीं छोडिकै आगार ॥ भृत्यज सुनि भरे दुखसों अतिहिँ विवहल होय । आय भूपति
 पास कीन्हों रुदन अतिहीं जोय ॥ जलदको सो भयो तिनको रुदनको रव पर्म्म । छाथ आय
 मेघ चङ्गदिशि सुनऊ तात सधर्म ॥ भई चलती मची ताके कर्मसों अवदात । छाथ नभमे
 लगे देखन देवता हे तात ॥ काटि अपने अङ्गको टप दियो मांस चढाय । तज नाहिँ कपोतके सम
 भयो सुनि नरराय ॥ अस्थि रहिमे शेष भो निरमांस सर्व शरीर । धर्मकों अब गाहि कै तब चढो
 आपुहि धीर ॥ देखि के सुरराज ताको धर्म आयो पास । फूल वर्षन लगे देवत भरे भूरि ऊलास
 बजन सारो दुन्दभी अरु भेरि नभमे पर्म्म । गान बर गन्धर्व लागे कारण होय अभर्म ॥ नचन लागे
 अश्वरा सब भरीं मोद महान । स्नान कीन्हों भूप बर वृषदर्भ पर्म्म सुजांन ॥ भई सुन्दर देख सब
 वृषदर्भकी सुनि तात । हेमके सुविमान ऊपर बैठि कै अवदात ॥ गयो अक्षय स्वर्गकों सो स्वत्त
 कीन्हें कर्म ॥ सुनि युधिष्ठिर धर्मधर बर ज्ञानवान अभर्म ॥ जौन आवै जोव तेर । शरणम हे
 तात । करो ताकी तुमऊ रक्षा धर्मगहि अवदात ॥ जौन आश्रित जीव नितकी किए रक्षा पर्म्म ।
 होत अति परलोकम सुख कहत तोहि अभर्म ॥ रहित क्यै कै कपटसों जे कर्त कर्नहि स्वत्त ।
 होत तिनकों प्राप्त का नहिँ सुनऊ भूपति दत्त ॥ कियतें शुचि कर्म बर वृषदर्भ भूप सुजांन ।
 ख्यात भो तिऊ लोकमाहीं सुनऊ सुत मतिमान ॥ * ॥ सोरठा ॥ * * * * *
 शरणगत जो जीव इनि ताकी रक्षा किए । सुनऊ तात बुधिसीव उत्तमगतिकों लहत जन ॥
 यह जो व्रत अति स्वत्त भूपति बर वृषदर्भको । ताहि सुनें नृपदत्त जन पावन अति होत हैं ॥
 स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्द्यजनका श्री
 वासिरघुनाथकबोश्वरात्मजो कुलनाथ पुत्रजोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भा
 ष्यायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ चरणदोहा ॥ * ॥

कोन कर्म है श्रेष्ठ नृपणको कर्मनमे अवदात । दुहँलोकमे मोद लहत हैं कोन कर्मते तात ॥

॥ * ॥ भोग्युवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्रनको जो पूजियो सुनो युधिष्ठिर भूप । भूपनको यह कर्म है अतिहीं श्रेष्ठ अनूप ॥

॥ महाभारतदर्पणः ॥

शा०प०
दा०ध०

पालै ज्यों निजु आतमा तिमिहीं सुसतै प्रेम । तिमिहीं पालै दिजनको भूपति गहि कौ नेम ॥
पूज्यमान जे अतिहि हैं विप्रने अवदात । तिनको विधिसौ पूजिए गहि कौ भक्ति सुतात ॥
पूजि तिन्हें हर्षित किए बढत राज्य है परम । तेज बढत अह थय बढत पाण्डव सुनऊँ सधर्म ॥

॥ पतङ्गमहन्द ॥ ॥

ज्यों पितरनको पूजिए सुअतिप्रीतिसौ । विप्रनहको पूजिए सु तिहि रीतिसौ ॥ जिन मनुजन
प कोपित होत सु विप्र हैं । जिन मनुजनको नष्ट करते विप्र हैं ॥ होत विप्र अति उग्र सु थय
तिनको बिभात है । नाश कारण हि तिनको कहँ दिखात है ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
उग्र अपिसं लगत हैं करत विप्र अब क्रुद्ध । मूर्खजु जिनसो डरत हैं कबऊँ न करत विरुद्ध ॥

॥ * ॥ राजगीतोहन्द ॥ * ॥

रहत कोते गुप्त द्विज हैं सुनऊँ भूपति परम । प्रगठ कोते रहत हैं द्विज परम स्वत्त सधर्म ॥ विप्र
दुबासादि कोते परम हैं हठकारा किते कोमल विप्र अति हैं गौतमादि उदार ॥ करत रक्ष्या गौनकी
उपमन्यु आदिक परम । करत भिक्ष्या किते दत्तात्रेय आदि सधर्म ॥ बालभीक हि आदि
है द्विज किते चौर अनूप । कलह कर हैं नारदादिक किते द्विज सुगि भूप ॥ किते नर्तक विप्र हैं
भरतादि अतिहीं दत्त । सर्व कर्मक किते द्विज हैं सुनऊँ भूपति स्वत्त ॥ प्रसंगा जतु करत तिनकी
धरत प्रीति महान । देव राक्षस पितर मनुजनमाहि सुनि बुधिमान ॥ पूर्वहीसो श्रेष्ठ हैं द्विज
कहत श्रेष्ठ बुधेश । शकत जीति न तिन्हें सुर गन्धर्व असुर नरेभ ॥ पितर चौ न पिशच राक्षस
शकत तिनको जीति । लहत काहकी न शक्य रहत नित्य निभीति ॥ करत सुरको असुर ह
अह असुरको सुर परम । करत दृष्टा होय जिहिको भूप भूप सधर्म ॥ जौन जन अज्ञान द्विजको
करत हैं अपमान । नष्ट ते जन होत हैं हम कहत सत्य सुजान ॥ होत निन्दा प्रसंगामे कुशल
अतिहीं विप्र । लहत जासो दुःख तापै होत कोपित विप्र ॥ करत जाकी प्रसंगा द्विज बढत ह
जन जौन । हीनताको लहत जाकी क त निन्दा तौन ॥ * ॥ सेरठा ॥ * ॥ * * * * *

करत अनुग्रह नाहिं जिहि तत्रापै विप्र वर । मूर्खयोनि के माहिं तिनको होत हँ जन्म है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्रनते जो भाजिबो सो है अति कल्याण । विप्रनको जो जीतिबो सो कारण दुखदान ॥

॥ * ॥ आभीर छन्द ॥ * ॥

द्विज हत्या है जौन । महा दोष है तौन ॥ द्विज हत्या सम अन्य । है न सुनो गृप थन्य ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

परिवाद द्विजको जान । कबहँ न सुनिए तौन ॥ जनकते कौन ऊँ होय । सुनि बैठिए मुख मोय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

अरुण खगै जौ भूरि कौनऊँ निन्दा विप्रकी । तो चप खै उठि दूरि जाय बैठिए सुनि नृपति ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जा विरोध करि विप्रसों सुखकों खेय महान । जैसे भयो न होय गो भूमे सुनऊँ सुजान ॥

॥ * ॥ मधुभारहृन्द ॥ * ॥

जिमि मुठि नाहिँ । आवत सु नाहिँ ॥ मारत अमन्द । सुनि धर्म नन्द ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अरु जैसे नहिँ लेत परम पाणिसों चन्दको । तिमिहीं सुनऊँ सचेत लहत न जय विप्रसों ॥

स्वस्तिश्रीमहासजाधिराजकाहीराजशाउदितनारायणस्याज्ञानुगादिना कार्यावासिरघुनाद्य
कवीश्वरात्मजगोपीनाथस्वधियोण गण्डिदेवन काबना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्ति
पर्वणि दानधर्मं ब्राह्मण प्रसंग्यायां नवविंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अतिहि निरन्तर पूजिए विप्रुंकों अबदात । कारण हैं सुख दुखनको विप्रहिँ आने तात ॥

॥ * ॥ रामगीतीहृन्द ॥ * ॥

पूजिके योग्य हैं बड़ भातिसों द्विज धर्म ॥ तप्त जिमि नृप करै पितर हिँ द्विजहिँ त्वाँहि सधर्म ॥
लहत हैं परयेत्यंत सुख सर्व जैसे भूत। सुनऊँ सुत तिमि द्विजनत सुख लहत राज्य अकृत ॥ परम
घातों राखिए द्विज राज्यमाहिँ सुजाँ होत अरि को नाश कोन्हें द्विजनको सनमान ॥ राखि रहमे
अती सुकतो द्विजनकों अबदात। करै पूजा नित्य घो समधर्म और न तात ॥ दियो जो है द्विजनकों
अति श्रेष्ठ अन्न अनूपाकरन ताकों गृहण हैं सुर पितर सुनि बरभूषा ॥ भानु औसित भानु मारुत मूमि
जल दिशि सर्व । विप्र द्वारा होय कै ए करत भोज्य अलर्ब ॥ करत जिहिके नाहिँ भोजन विप्रवर
अब दात । होत नाही तप्त ताके पितर सुर हे तात ॥ हनत पाप कलापकों द्विज दापवान अनूप ।
है न थाने तमक संग्रह जानि निश्चय भूप ॥ दान दावें द्विजनकों जो करत संचय धर्म । रहत नित्य
समोद ते हैं सुनऊँ तात सधर्म ॥ होत तिनके पुण्यको परलोकमे नहिँ नाश। लहत उत्तम गतिहिँ
मे निति भरे रहत ऊलास ॥ होत जिहिँ जिहिँ अन्नसों हैं तप्त द्विज अबदाता पितर देवत होत तिँहिँ
तिहिसों सु तप्त सुतात ॥ * * * * *

होत द्विजनतें यज्ञ बढ़ति प्रजा है यज्ञते । सुनु भूपति बरप्रज्ञ थाते द्विजकों पूजिए ॥

॥ * ॥ अरिस्तहृन्द ॥ * ॥

विप्रहिँ खर्ब नर्कके कारण । विप्रहिँ दुखको करन निवारण ॥ जौन विप्रके बचन सुमानत ।
तौन अरिणको भय नहिँ आनत ॥ स्विय तेजमान बलवान सु । तिनको बल अरु तेज महान सु ॥
होत शान्त विप्रनेसे सुनु सुत । विप्र होत हैं सर्व हिँ गुणघत ॥ * * * * *

॥ महाभारतदर्पणः ॥

शा०५०
दा०५०

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

भृगुऋषि तालजघकों जीते । डारे करि भट तासों रीते ॥ जीते है हयके सुतगणकों । भरद्वाज
क्रुधमे धरि मनकों ॥ * * * * * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * * * ॥
मंत्रादिकहैं जौन सर्व द्विजनतें होत हैं । सुनऊ तात बुधिभौन पापऊकों विप्रहि हरत ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे कहत बुध एक इतिहास अनूपा सो तुमसों मै कहत हौं सुनऊ बुधिछिर भूपा।
तामाही सम्वाद है आनन्द अतिपर्भ । बासुदेव अए भूमिको हरता अतिशय भर्म ॥

॥ * ॥ बासुदेव उवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

वूभूत हौं संदेह तोसों धरणी एक हन कहिए । सच्चित सनेह माता त्राता जगतकी ॥
गृहोजननको पाप अति दुखकर आनन्द छर । कौन कर्मको दाप तान पपको हरत है ॥

॥ * ॥ भूम्युवाच ॥ * ॥

ब्राह्मण सेवन जौन अति पावन उत्तम परम । सुनऊ कृष्ण मुदभौन सुखदायक सबलोकके ॥

॥ * ॥ ताटकहन्द ॥ * ॥

जन पूजत जे द्विजके गणको । यह प्रेम सदा धरकै मनको ॥ तिनके अघते नगि जात सबै । जगमे
शुचि कीरति भूरि फरै ॥ बुधि उज्जल होति सु है तिनको । समता नहि और लहे जिनको ॥
सु कह्यो हमको यह नारद है । अतिही ऋषि तौन बिसारद है ॥ द्विजसो सब भूत लहे सिधि है ।
गृहमाहि महान भरै रिधिहैं ॥ द्विजको जन जे दुखदेत सुहैं । कबहू नहि ते सुखसेत सुहैं ॥
सुकलंक लग्यो शशिके उरमे । द्विजके क्रुधतें सु कहौं धुरमे ॥ द्विजके क्रुधतें सरिता पतिसो ।
सुनिए हरि पार भयो अति सो ॥ द्विजके क्रुधतें मघवातनमे । भग भे सु हजार कहौं पणमे ॥
फिरि विप्रनकी सु कृपा लहि कै । सहस्राक्ष भयो मुदको गहि कै ॥ महिमा द्विजकी नहि जाय
कही । हरिको यहि भाँति कह्यो सुनहो ॥ शुचि कीरतिको जन जौन चहैं । अर जौन बिभूति
सुको उमहैं ॥ जन ते द्विजकों अति पूजत हैं । तिनकी शुचि कीरति कूजत हैं ॥ * * * * *

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनिए महिके बँन कृष्ण होय मोदित अतिहि । पूजा पर्भ सचैन नीको धरणीको करी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह उपमा सुनि द्विजनकी पूजा करो सचाय । तुमहँ बिधिसे श्रेयको लहि हौं सुनि नरराय ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दिनारायणस्याज्ञाभिगामिना काशीवासिरघुनाथ
कबीश्वरात्मजगोकुलनाथात्मजगोपीनाथस्यसिष्येण मण्डितेन कविना विरचिते भाषायां महा
भाग्यदर्पणे शान्तिपर्वाणि दानधर्मं भूमिकृष्णसंवादे ब्राह्मण प्रबंधायां चतुस्त्रिंशो अध्यायः ॥

॥ * ॥ भोष्णउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

श्रा०प०
दा०ध०

जन्महिंसों द्विज होतहैं योग्य पूजिबे परम । करत अर्थ सब सिद्धिहैं सुनिए नृपति सधम ॥
जे जन पूजत द्विजनका सहित प्रीति अभिराम । बाणी कहत समझला तिनका विप्र ललाम ॥
जे जन पूजत नाहिहैं विप्रणको नृप शुद्ध । तिनको कहत अमझला बाणी होय सकुह ॥
यह प्रसङ्गमे कहतहैं बुध गाथा प्राचीन । सो गाथा हम कहतहैं तुमको नृपति प्रवीन ॥

॥ * ॥ सुग्धविलासकण्ड ॥ * ॥

रधि द्विजनको अवदात । अति स्वस्थ होय सुतात ॥ मनमाहि चिन्तन एह । विधि कीन्ह सुनु
बुधिगेह ॥ ❀*❀*❀*❀*❀ ॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥ *❀*❀*❀*❀*❀*❀

जान परम करतयह तान कियो हम सर्व । कीबेको अब और नाहैं कारज स्वत्त असर्व ॥
रक्षा जो है द्विजनको सो अति उत्तम कर्म । ताते अति आनंद मिलत सुनु अवीनप सधर्म ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

किएँ रुहाय द्विजनकी राजा । मिलति द्विजनकी प्रभा दराजा ॥ मिलति बुद्धि अरु तेज महाना ।
अरु अश्वर्थ्य मिलत हैं नाना ॥ अद्वा सह जे द्विजको पूजें । द्विजकी परम प्रसंशा कूजें ॥ द्विजपै करें
क्रोध नहि कबहूँ । परुषऊ बात कहैं द्विज तबहूँ ॥ होत काम तिनके सब सिधिहैं । सर्व लोकमे
होत प्रसिधिहैं ॥ सर्व पदारथ सिद्धि करतहैं । विप्र महा तपनेम धरतहैं ॥ ❀❀❀❀❀❀❀

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

यह द्विज गीता जौन रक्षा कीबे द्विजनको । सुनऊ सुमतिके भ्रम बुद्धिवान जनहै कही ॥
यथा तपस्वी भूप होत महा बलवान हैं । तिमिहो विप्र अनूप होत महाबलवान हैं ॥

॥ * ॥ रामगीतीकण्ड ॥ * ॥

धरें कोते विप्रवर हैं सिद्धको सु सुभाव । धरें व्याघ्र सुभावको हैं किते द्विज नरराव ॥ धरें नीर सु
भाव कोते विप्र हैं अवदात । धरें रहत सुभाव कोते सर्पको हे तात ॥ किते कोपित भए द्विजवर
जनहि मारत हाकि । सुनऊ भूपति किते कोपित भए मारत ताकि ॥ होत विविध प्रकारके हैं
द्विजनके सु सुभाव । कहत प्रज्ञावान जन हैं सुनऊ बर नरराव ॥ वसे असुर पतालमाहीं किएँ
द्विज अपमान । स्वर्गमाहीं वसे सुरवर किएँ द्विज सनमान ॥ है अशक्य डुलायबो हिमबानको
जिमि तात । अरु अशक्य सु परश जैसें थोमको अवदात ॥ द्विजनको हैं जीतिबो निमिहीं अशक्य
महान । सुनऊ भूपति धर्म धर बर धर्म सुत मतिमान ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀

॥ * ॥ मोतीदामकण्ड ॥ * ॥

विरोध करैं द्विजसों नृप जौन । न पाछि शकैं महिकों नृप तौन ॥ सुनो द्विज हैं सुरके सुर परममहान

३३
दा०ध०

उत्तम पाए सख्यय ॥ प्रान्तार पूज्य जान सु भूप । सु भोगत हैं नहि तौन अनूप ॥ बढे तिनकी
अति कीरति खल । कहौ अबगाहि तुहें नृप दत्त ॥ प्रतिग्रह जे द्विज लेत महान । रहें तिनमे नहि
नेज सुजान ॥ ॐॐॐॐॐॐॐॐ ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥ ॐॐॐॐॐॐॐॐॐॐ

जौन प्रतिग्रह लेत नहिँ विप्र पर्मे अबदात । रहो सदां तिनसों सभय सुनऊँ धर्मधर तात ॥
स्तुति श्रीकाशीराज महाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकबोश्वरात्मजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्यशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानपर्णे ब्राह्मणप्रसंगायाम्यर्चामो रध्यायः ॥ *ॐ*ॐ*ॐ*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे कहत हम और एक इतिहास । सुनऊँ तौन तुम धर्म सुत परम बुद्धिके रास ॥

॥ * ॥ जयकरोइन्द ॥ * ॥

ता माहीं सम्राट अनूप । मघवा सम्वरको सुनु भूप ॥ जौ होय निजरूप कृपाय । शक दनुज
सम्बरपै जाय ॥ ब्रूत भए प्रष्ण अबदात । तासों सुनऊँ धर्मधर तात ॥ * ॥ शकउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ मग्धविन्नासइन्द ॥ * ॥

किहि कर्मसों अबदात । तुन अष्ट होय विभात ॥ हमकों कहे तुम एह । सुनु दैत्य बुद्धि सु नेह ॥

॥ ॐ ॥ सम्वरउवाच ॥ ॐ ॥ सोरठा ॥ ॐ ॥

करत असूया नाहिँ हम कवहौँह विप्रको । जाय विप्रके पांहीं पूजा करत सप्रेम हौं ॥

देहिँ मोहिँ जौ आप कोपित शैकौ विप्रवर । तबऊँ न क्रोध प्रताप ही ते बाहिर करत हौं ॥

॥ * ॥ तोटकइन्द ॥ * ॥

सुनि थाप अनादर नाहिँ करौं । करिवो अपराध न होय धरौं ॥ गहिके द्विजके पद पूज्य हौं ।

तिनकी सुचि कीरति कूजत हौं ॥ जब सोवत विप्र सुहें सुखसों । तब जागत हौं मुदकी सुखसों ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पालति जैसे मत्तिका चौद्रहि परम सनेम । जैसे पालत विप्र हें मोहिँ जोहिँ सहप्रेम ॥

जो द्विज हमकों कहतहं करत ग्रहण हम ताहि । राखत हें द्विज भक्तिकों नश्य होत हौं चाहि ॥

याने अपनी जातिमे अष्ट सु हें हम पर्मे जिमि नक्षत्रपति अष्ट है नखतनमांहीं अभर्म ॥

विप्रणको जो मानिवो सो अति उत्तम काजाऐसो और न काजहै भूमे सुनु सुरराज ॥

यह कारणकों जानि अह देवासुर लखि युद्ध । मो पित हरषित होयकै विसमथ कीहो उद्ध ॥

लखिकै महिँ पा द्विजनकी मो पित मोदिन होय । ब्रूत भए निशेधसों परम प्रेमसों भोय ॥

विप्र सिद्ध किमिहोत हं मदिता भरे महान । सुनऊँ निशाकर मोहिँ तुम कहिए यह सुनिदान ॥

॥ * ॥ सोमउवाच ॥ * ॥ पद्मलोक्न्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

सब विप्र लहत तप किँँ सिद्धि । जगमाहि होत भूषित प्रसिद्धि ॥ पित गेह माहि श्रुति पढत
जौन । निन्दा महाँन द्विज लेत तौन ॥ * * * ॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥ * * * ॥

अल्पमधावाँनको श्रिय हनत है अभिमान । हनत त्यों सु कपोतकी श्रिय बाज सुनु मति
सान ॥ होति दूषित कन्यकाहै गर्भसौं जिमि पर्म । होत दूषित विप्र तिमि गृहवास माहि सधर्म ॥
वैन सुनि कै चन्द्रमाके मो पिता मतिमान । पूजतो भो द्विजनों अति गहि सु भक्ति महाँन ॥ रहे
पूजतपिता नो जिमि द्विजनों अभिराम । तिमि हि पूजत द्विजनों मै भक्ति गहिकै माम ॥ भीष्म
उवाच ॥ दानवेंद्रके बचन सुनि अति सप्रेम न्है इन्द्र । पूजा कीन्ही द्विजनों ताते भया महेन्द्र ॥ *

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना काशिसिरघुनाथ
कवीश्वरः कुलनाथताम्रज गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वाणि दानधर्मे षडंत्रिमोख्यायः ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥ यधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

अभ्यागत जे अरु अपूर्व जे अरु जे वसत सुपास । इन तीनजँ मे पात्र कौन है कहै मुमतिके रास ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोटा ॥ * ॥ * ॥

इन तीनजँमे जौन क्रोधादिकसों रहित हैं । सुनऊँ तात बुधिभौन तौनहि पात्र प्रधान हैं ॥

॥ * ॥ मल्लिकाकन्द ॥ * ॥

वेदको प्रमाण जौन । पर्म मोदको सु भौन ॥ ताहि मानते सु जे न । पात्रता लहै सु ते न ॥ *

॥ * ॥ मुग्धबिलासकन्द ॥ * ॥

वर वेद निन्दक पर्म । अभिमान कार सभर्म ॥ कटु वाकवाँन महाँन । अरु पर्मा दुर्मति वाँन ॥
एहि भौतिके द्विजजौन । सुनु श्रानको सम तान ॥ * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * ॥

श्रेष्ठनको आचारतामे जे द्विज प्रहत है । सुनु नृप बुद्धिआगार ते द्विज जीवत बर्ष वज्र ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

यज्ञ करिके सुरनको रिण दे कुटाय मुजानावेद पढिके षड्विन्हको रिण दे कुटाय महाँना ।
पितरको रिण पुत्र कौ उमन्न देय कुटाय । विप्रको रिण दान दैके सुनऊँ हे नरराय ॥ अति
धिके रिणको कुटायै देय भोजन पर्म । भर्म तजिके कर्म शुचि कै धरि सु हामे धर्म ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
जौन गृही एहि भौतिसों करे कर्म अददात । ताके धर्म न भगत हैं निश्चय जानो तात ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशो
वासिरघुनाथकवीश्वरः कुलनाथताम्रजगोपीनाथस्याश्रमण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वाणि दानधर्मे षडंत्रिमोख्यायः ॥ * * * * * ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ मल्लिकाञ्जन्द ॥ * ॥

दारके सुभाव जान । कै छपा कहोसु तौन ॥ दार होति मोहमूल । दोषसों भरी अनूख ॥ भीष्म
उवाच ॥ यह प्रसङ्गने कहत बुध एक इतिहास अनूप । सो तुमसों मै कहतहैं सुनऊ बुधिसिरभूप ॥

॥ * ॥ रामगीतोञ्जन्द ॥ * ॥

पञ्चचूडा अक्षरा अरु सुकृषि नारद पर्मे । दुजनको सम्वाद तामे कहत तेहि अमर्मे ॥ अमल
लोकनमाहि नारद वर विशारद दत्त । पञ्चचूडा अक्षराकों भए देखत स्वत्त ॥ अक्षराकों देखि
बूझत भए नारद ताहि । भयो संशय मो छिएँ कहु कहो सो अषगाहि ॥ भीष्मउवाच ॥ पञ्च
चूडा अक्षरा वर सुकृषिके सुनि बैनाभई कहती बचन जैसे सुनऊँ नृप बुधिअँन ॥ बूझिबेके योग्य
भोको होय जो है विप्र । समर्था जो मोहि जानत बूझिए तौ छिप्र ॥ नारदउवाच ॥ बूझिबेके
योग्य छै है बूझि हे हम जौना जो न बूझै योग्य छै है बूझि हँ नहिँ तौन ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो सुभाव हैं दारके कहो मोहि ते सर्व । तिय सुभाव को सुननकी इच्छा भई अखर्व ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥

सुनि नारदको बैन जैसे बोली अक्षरा । सुनऊँ भूप बुधिअँन धर्मवान यशवान वर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दारन निन्दा करतिहै दारनकी मुनिराव । यातें मै कैसें कहैं दारनके सु सुभाव ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जैसे दार सुभाव तैसे तुमहो जानतै । सुनु नारद मुनिराव यातें बूझऊँ मोहि जिनि ॥

॥ * ॥ तोटकञ्जन्द ॥ * ॥

सुनि बैन ऋषी एहि भाति कही । सुनु हे तिय तूंकऊँ मोहि सही ॥ अति होत सु दोष असत्य
कहें । नहिँ दोष सु होत सु सत्य गहें ॥ सुनि कै मुनिबैन सु मोद पगी । तियभावहितो कहिबे
सु लगी ॥ * * * * * ॥ * ॥ मुजंगप्रयातञ्जन्द ॥ * ॥ * * * * * ॥ * ॥

पञ्चचूडोवाच ॥ * ॥ कुलीना सनाथा मरूपा अपारा । महाशीलवन्तो सुधाकी अगारा ॥
रहे चारु मर्यादमे तेउ नाही ॥ सुनो दोष एतो वडो दारमाही ॥ नहीं दारसे और कोइ सु पापी ॥
कह्यो सत्य तोसों सुनो हे प्रतापी ॥ सबै दोषको मूल हैं दार जानो । नही अन्यथा मै कही सत्य
मानो ॥ * * * * * ॥ * ॥ मग्धविलासञ्जन्द ॥ * ॥ * * * * * ॥ * ॥ * * * * * ॥ * ॥
गुणवान औ श्रियमाना अतिरूपमान सुजान ॥ दिनराति जो वशमाहि । सगं कवऊँ छोडत नाहिँ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तिय कहु अन्तर पाय जैसे पतिकों छेडिके । और पुरुषपै जाय करति बिहार अपारहैं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

असतकर्म नारोनके एहैं सुनु ऋषिपर्मे । और पुरुषकों भजतिहै तजिके तज्जा धर्म ॥

॥ * ॥ अरिलहन्द ॥ * ॥

श्री०

दा०

ओ जन तियसैं मोठें बोलत । कहू संमें रहि हिय प्रीतिहि खोलत ॥ करति तासु संमेंको
इच्छा तिय । अधरम नाहिं बिचारत हैं हिय ॥ तिय नहिं योग्य अयोग्य बिचारति । मन आवत
ता संम विहारति ॥ मिलत सु अन्य पुरुष नहिं जब हैं । घरके माहिं रहति तिय तब हैं ॥ भयकों
खेहि देखि धनकों अति । नाहिं तजतहैं पर नरसैं रति ॥ पुरुष मात्र नारिनकों चाहिय । रूप
कुरूप बिचारति ना हिय ॥ जे जन बज्जत प्रीतिसैं राखत । कबज्जं न परतियकों अभिस्लाषत ॥
कारण पाय ताहि तजिकै तिय । और पुरुषके आय नगति हिय ॥ कुज अशुभ जड नाहि बिचा
रति । औ न पंगु बाधन निरधारति ॥ है अयोग्य दारणकों कहु नहि । रमण लैगें कुलित पुरुषे
सहि ॥ पुरुष मिलत नारिनकों नहि जब । लिंग बनाय बसनको तिय तब ॥ करति विहार
परसपर सुनि सुनि । आसन रचति अनेकनि गुण गुनि ॥ * ॐ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ *
प्राज्ञ पुरुषके बचनको मिलत नाहि जिमि भावतिमि सुभाव नहि तियनको जानिपरत षड्विराव ॥

॥ * ॥ रामगीतोहन्द ॥ * ॥

दृप्त जसैं होत नाही काष्ठसों सु कथान । नदिनसों जिमि होत नाही दृप्त उदधि महान ॥
तिमिहि पुरुषनसों न हेतों दृप्त नारों पर्य । कहे तुमसों गुप्तनारिनको सुभाव सधर्म ॥ सुरतिसों
जिमि होति नारों अतिहिं मोदित सर्व । तिमि न मोरिति होति कौनज्जं पाय बसु अखर्ब ॥
सुनऊ जसैं नाश कारक बलि सर्पक काल । तिमिहि जानो तियनकों तुम सुच्छवि बुद्ध विशाल ॥
रची नारि सुठारि जबसों विधाता सुनिराज । रचे तिनके दोष सङ्गहि कहत प्रज्ञ समाज ॥ ॐ
शक्तिश्रीकाशोरजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याग्लाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मज गोकुलनाथतस्यात्मजस्य गोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वाण दानधर्मे अष्टत्रिंशदध्यायः ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नारिन मांही रहतहैं नर आशक्त नितान्त । नरनमाहिं नारी रहत कहत सत्य वचनान्त ॥
धामे संशय होतहै सौ मन माहिं महान । सुनऊ पितामह प्राज्ञवर धर्मवान यशवान ॥

॥ * ॥ रामगीतोहन्द ॥ * ॥

करति अहोकारहै किमिं तियनकों नर पर्य । रमति किनमे विगत किनत होति नारि
सधर्म ॥ करति रक्षा तियनकी किमि पुरुषहैं मतिमान । योग्य कहिब आपु दान कहे तात
सुजान ॥ रहति बधमे नारि नाहीं पुरुषके अवदात । परत जो नर नारि करमे सो न कूटत
नात ॥ गाय नव नव तूणनको जिमि करति यहण अमन्द । तिमिहिं नव नव नरनको तिय

रा०५०
रा०५०

करति ग्रहण गरिन्द ॥ जौन अप्रिय पुरुष ताकों समय लहिके तीया बोलिक प्रिय बाक्य कोमल
लाय लेति सुहीय ॥ जौन माया नमुचिको अरु दैत्य सम्बर तास । जानतीहैं नारि ते सब सुनऊ
बर बुधिरास ॥ रुदन करतो देखि नरकां करति रुदन महान । हसत लखिके हसन लामें तियऊ
सुन मतिमान ॥ जौन हलमय शास्त्र बिरचे शुक्र अरु गुरु पर्म । तिनऊतें तिय अधिक हलमय
कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ सुनतहैं हम धर्म रूपा तियनकां अभिराम । परत देखि अधर्मरूपा सुनऊ
बर बुधिधाम ॥ सकतहैं करि कौन रक्षा तियनकी मतिमान । मथे नो हिय नाहि संशय सुनऊ
भूप महान ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
कहि विधिसें रसाकरै तियको सुनऊ सुजान । कोनेकी किहि भांतिसों सो विधि कहे महान ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगमिनाश्रीबन्दीजनकाश्री
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथनाथात्मजगोपानाथस्यशिश्येण मण्डिदेवेन कश्चिना वरचिने
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिदर्षणि दानधर्म श्रीस्वभाववर्षजौनामैकोणचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

॥ * * * * * ॥ भीष्मउवाच ॥ * * * * * ॥

जैसे कहे सुभाव नारिनके तुम हीय गुनि । सुनऊ प्रज्ञ नरराव तैसे होत असत्य नहि ॥
॥ * * * * * ॥

यह प्रसङ्गमे कहतहाँ एक इतिहास अनूप । सुनऊ धरमधर परम बर अधरमकर दर भूप ॥
॥ * * * * * ॥ चरणाकलकहन्द ॥ * * * * * ॥

जिहि काजै विधि बिरची नारी । अतिहैं मनोहरि परम सुबारी ॥ कहिहैं सो तुमकां हम
भूपति । पाप कारिणी होति तिया अति ॥ अति प्रज्वलित अग्निहै जैसी । जानऊ नारिनकां तुम
तैसी ॥ सर्प बन्दि विष अरु असिधारा । एक ओर एक ओर सु दारा ॥ तिय देवत्वहि प्रापित
भई । आपुहि सुनऊ नृपति यह नई ॥ तब सब सुर ब्रह्मापै गए । भय अरु संशयसों अति राए ॥
विधिकों सब वृत्तान्त सुनैकै । सर्व भए बैठत चुपचकै ॥ तिनको मनकी जानि विधाता । जगकर
जगधर जगवर ताता । नर मोहनकां बिरची नारी । अतिहीं चञ्चलतासों भारी ॥ पूर्व सृष्टि
में रही सुग्रीला । कहैं सुरनके रची कुग्रीला ॥ तिन नारिन जो इच्छा कीनी । सो ब्रह्मा पूरण
करि दीन्ही ॥ मथति सदा तेनरकां नारी । काम कलोलनि भरो सुबारी ॥ * * * * *

॥ * * * * * ॥ मल्लिकाहन्द ॥ * * * * * ॥

कामकी सहाय काज । क्रोधकां कियो दराज ॥ कामक्रोध नाहि जौन । प्राप्तहैं सुनौ सु तौन
होय रक्त नारि मांहि । नित्यहाँ रहैं सुपाहि ॥ नारि शास्त्रसों विहीन । होतिहैं कहैं प्रवीन ॥
पूर्वमै सुन्यो सु एह । हे सुनो सुबुद्धि गेह ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

रक्षाकी गुरु नारिकी विपुल सुकृति मतिमान । सुनऊ युधिष्ठिर भूप बर धर्मवान् यशवान् ॥

॥ * ॥ मृगधविलासकन्द ॥ * ॥

शा०प०

दा०ध०

एकहा सुश्रुषि अभिराम । तिहि देवशर्मा नाम ॥ तिय तासु सुन्दरि पर्भ । अतिही सुजानि
अभर्भ ॥ रुचि नाम तासु महीप । तिहिही न कौनऊ दीप ॥ जित जाति वह तित आय । चित
व चकोर सचाय ॥ तिहिको सुरूप अनूप । लखि देवदानव भूप ॥ निति रहत मोहित तात ।
अति जानिके अवदात ॥ सुरराज तो लखि जाहि । मुदवान होय सराहि ॥ अतिही सुमोहित
होत । सुनु धर्मधर बुधिपोत ॥ श्रुषि देवशर्मा पर्भ । बर ज्ञानवान अभर्भ ॥ तियको सुभावहि जानि
हिय माहि सो अनुमानि ॥ पुनि काम चारी पर्भ । मघवादि जानि अभर्भ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भार्याकी रक्षा करण लागे श्रुषि नतिमान । अप्रमत्त व्हेके परम भूपति सुनऊ सुजान ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

कास कौनऊ हिमा श्रुषिवर कियो यज्ञ बिचार । सुनु युधिष्ठिर धर्मधर बर पर्भ बुद्धि
श्रुगार ॥ होय रक्षा नारिकी किनिं करि सुचिन्ता माम । लयो शिष्य बुलाय रुपनो विपुल ताको
नाम ॥ कह्यो श्रुषि इमि शिष्यसो सुनु विपुल बर बुधिगेह । करो रुचि की तुम सु रक्षा महा
सहित सनेह ॥ देखिके सुरराज याको रूप मोहित होय । नैन करिके अैन रसको जातहै निति जोय ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

अप्रमत्त अति होय रुचि की रक्षा करऊ तुम । ताते मुदसो भोय मखकी रचनाकों करा ॥

॥ * ॥ मधुभारकन्द ॥ * ॥








बहु धरत रूप । मघवा अनूप ॥ सुनु विपुल दत्त । बुधिधर सु स्वत्त ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥
सुनि विपुल बैन । श्रुषिके सचैत ॥ इमि कही बात । मुनिकों विभात ॥ * ॥ विपुल उवाच ॥ * ॥
मघवा सु आय । मायाहि छाया ॥ वपु धरत कौन । कहि ए सु तौन ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ आभीरकन्द ॥



सुनि करिके श्रुषिराय । अैसे कह्यो सचाय ॥ माया महा महान । सुरपतिकी मतिमान ॥










॥ * ॥ तोमरकन्द ॥ * ॥

बहु धरत भेष महान । सुरनाथ सुनु मतिमान ॥ कबहू सु होत सुखूल । कबहूक कशकी तूला ॥
कबहूँका होत सुश्याम । कबहूँक गौर ललाम ॥ कबहूँक होत सुरूप । कबहूँक होत कुरूप ॥
कबहूँक छद्म सुजान । कबहूँक तरुण सुठान ॥ कबहूँक द्विज मति पोत । कबहूँक क्षत्रिय होता ॥
कबहूँक वैश्य प्रतप्त । कबहूँक शूद्र सुदत्त ॥ कबहूँ सु कोकिल रूप । कबहूँ सु हंस अनूप ॥
कबहूँ सु वायस होता । कबहूँ सु शुक श्रुषिपोता । कबहूँ सु मैगल धारा । कबहूँ सु सिंह उदार ॥








शा०प० कबह्नु सुनृप अवदात । सुनु धर्मधर वर तात ॥ कबह्नु सु वायु स्वरूप । सुरनाह होत अनूप ॥
दा०ध० इमि धरत रूप अनेके । सुनु तात हे सबिवेक ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥       
सुनऊ विपुल मतिमान अप्रमत्तश्चैकै परम । तजिकै भरम महान रुचिकी रत्ता कीजियो ॥
जैसैं कहिकै बैन महाधर्मधर विपुलसैं । ज्हेकै परम सचैन चलत भधा मल करणको ॥

॥ * ॥ मधुभारवृन्द ॥ * ॥

सुनि विपुल बैन । गुरूको सचैन ॥ यह किय संदेह । सुनु सुमति गेह ॥ गुरूकी सुनारि ।
अतिही सुठारि ॥ को ताहि जोय । गोहित न होय ॥ *  * ॥ * ॥ वरवैवृन्द ॥ * ॥ *  *

किहि विधि ताकी रत्ता होय महान । है बज्र रूपी मघवा अति बलवान ॥ * कवित ॥ * ॥
सदनकों ठापि राखैं गुरु पतनीकों जै । तो बांयु बपु धैकरि परसकरै आयकै । राखा पुरुषारथसो
होय तो अरथ बल समथ इन्द्रहै कहत बुध गायकै ॥ अरु माहि पैठिकै सुठरुसैं जौ रत्ता करौ
देय गुरु आपतो सु क्रोध दाय छायाकै ॥ मतिको अगार ऋषि विपुल उदार इमि करत विचार
भयो संगैशर सायकै *  *  *  *  * ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ *  *  *  *  *  *
ऋषिवर विपुल समर्थ ताको करत विचारभे । रत्ता माहि समर्थ जानि पखो बल योगको ॥

॥ * ॥ वरवैवृन्द ॥ * ॥

रुचिकी रत्ता यासैं करिहैं पर्म । कहत भयो तब जैसे विपुल सधर्म ॥ कारय जौ यह
करिहैं उत्तम नाम । ज्हेहै तो यश भुवने मम अभिराम ॥ * ॥ रामगीतीवृन्द ॥ * ॥ *  *
योग बलसैं बपुष धरिकै अल्प या तन बीच । बसैं गे हम करण रत्ता परम होय निभीच ॥
कमलके दल माहि जैसे रहत नीर अशक्त । तिमिहि याकी देहभे हम रहैगे सु अरक्त ॥ मोहि
यह शुचि हेतुने अपराधज्हेहै नाहि । यह विचार सु कियो ऋषिवर विपुल हियके माहि ॥ योग
बलसैं कोठिकै निजदेह ऋषि मतिमान । गुरू तियकी देह माहों कै प्रवेश सुजान ॥ नेवन माहि
मिलाय नेवन किए बधमे पर्न । अवल माहि मिलाय अवरुहि सुनऊ तात सधर्म ॥ ध्यान
रन्ध्रिय सर्व जैसे करी बधके मा ह । विपुल ऋषिवर धर्म धर वर सुनऊ हे मरनाह ॥ नारितन प
रहित चेष्टा होय बैठे आव । तिय अचेष्टित भई ताते सुनऊ धर्म कलाप ॥ गुरूपतनी अरु
माहो कियो विपुल प्रवेशतिया कौतुक माहि जान्यो विपुलको सुमरेश ॥ आयहै जब सैं न मो
गुरु यज्ञ करिकै पर्म । नित्य रुचिकी करौगे रत्ता सु होय अभर्म ॥ *  * ॥ दोहा ॥ *  *
यह कोन्हो संकल्पवर विपुल सु ऋषि मतिमान । सुनऊ धर्मधर सुयशधर बुधिधर परम सुजान ॥
स्वस्ति श्रीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुनामिना काशीवासिरघुनाथकवी
श्ररत्नजगोकुलनाथतस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महा
भारतदर्पणे शान्तिपर्णस्य दानधर्म विपुलोपाख्याने चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ *  *  *  *  *

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ काल कानञ्जमाहि सुरपति दिव्य धरि कै रूप । यज्ञ करिवें गयो ऋषिकों
जानि परम अनूप ॥ जाय आश्रममाहि ऋषिके भयो मोदित परम । महालोलुप काममदसों
भरो भूरि अभर्म ॥ चित्र औसी रहित चेष्टा विपुलकी लखि देह । लखी पुनि ऋषिनारि सुरपति
महा सहित सनेह ॥ केश चारु सुवेष ताके गोल गोल कपोल । महासुषमा सदन जाके बदन
लोचनलोल ॥ कम्बुसो गर परमहृविधर चेतहर वर बैन । पीनकुच कटिचीन जाकी दबलिका
हृदिकी ॥ लसति जंघा राम कदली कमल औसे पाय । भयो चकित रूप ताको देखि निर्जर
राय ॥ देखि कै सुरनाथको सो भई हर्षित दार । होय बिलित भई मोहित जानि परम सुठार ॥
कोमहो यह बूझिकेकी करी इच्छा परम । उठन लागी सकी उडि नहि विपुलसों सह धर्म ॥
आपुही तब कहन लागो नारिसों इमि बैन । नारि हम तवकाज आए चारु हृदिकी ॥
काम तब सहन्यभव अति देत मोकों पार । करऊ ताको दूरि हेतिय आय मेरे तीर ॥ काख
बीठ्यो जात है अब बेर करू जिन नारि । होय कै बेहाल मेरो रह्यो है हिय हारि ॥ * ॥

॥ * ॥ अन्तगुरुतोमरकन्द ॥ * ॥

सुनि बैन ए मघवानके । अति हं सुदुर्मतवानके ॥ ब्रह्ममाहि इन्द्रियों करी । तियकी
सु मन्मथसों भरी ॥ तिहनें सु बोलि सकी नही । इहि भांतिसों विपुलै गही ॥ गुरुनारिको मन
जानि कै । मघवाहि दुर्मति मानि कै ॥ अति यत्न रक्षाको कियो । गुरुनारिको ब्रह्म कै हियो ॥
मघवा सु रुविकां दखिक । अति निर्बकारिणि लेखिके ॥ इमि बोलतो भो प्रीतिसों । बर लोलु
पैकी रीतिसों ॥ तिय आउ ह मन पासमे । सुख लेऊ काम विलासमे ॥ सुनि बैन ए सुररायके ।
तिय जानि कै अति चायकं । मनमाहि मोदित होय कै । मसकायकै तिय जोय कै ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बोलनकी इच्छा करी सुरपतिसों तिय परम । भरी सदनमदसों महा द्युतिकी सदन अभम ॥
बोलन लागी नारि तब दिए फेरि सुनि बैन । बोली इमि कहु सुनु नृपति परम धर्मके अन ॥

॥ * ॥ भुजङ्ग प्रयात कन्द ॥ * ॥

सुनो कौन काजै इहां आपु आए । कहौ शक सोसों महा मोद जाए ॥
इते बैन पीके गयो बोलि नाहीं । भयो शकके भूरि संगै हि नाहीं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दिव्य ने तसों देखतो भो तत्र श्रीसुरराय । देख्यो जब ऋषि विपुल तब कम्पित भयो सकाय ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

होडि कै गुरुनारिका ऋषि विपुल तेजप्रभाम । कियो आपु प्रवेश अपनी देहमे अभिराम ॥

॥ * ॥ यजुलीकन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ भौष्मउवाच ॥ * ॥ तप कोन्ह विपुल ऋषिवर महान् । अति तेजवान् भो सो सुजान् ॥ गुण
जासु लगे गावन सुविप्र । जिहिको सुदर्श अघ दरत त्विप्र ॥ * * * * * * * * *

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

जानतो भो आपुकों श्रीविपुल वर तपवान् । सुनु युधिष्ठिर धर्मधर वर ज्ञानवान महान् ॥ काल
तौर्नाहिं माहि रुचिकी-भगिनी काके चारु भयो उत्सव उद्गहे सुनु भूप उद्ग उदार ॥ * * * *

॥ * ॥ अरिलकन्द ॥ * ॥

तीनहि समयमाहिं सुनु भूपति । एक अरुना रूपमर्द अति ॥ जाति उती नभमारगकों गहि ।
तासु देहते पुष्य गिरे महि ॥ निकारि गेहते ते चुनिके रुचि । धारण किए समुद शिरमे शुचि ॥

॥ * ॥ दौहा ॥ * ॥

रुचिकी भगिनी जे सटा तासु प्रभावति नाम । अरुदेशपति चिचरथ तासु वाम अभिराम ॥

॥ * ॥ चरणकलकन्द ॥ * ॥

रुचिके नेह निमंत्रक आयो । ताके गेहते मुदसों दायो ॥ तत्र रुचि आनदमें अतिरर्द । अरुदेश
पति गेहमे गर्द ॥ रुचिकी भगिनी सुमना हँ देखे ॥ अतिहि अनूप महोमे लेखे ॥ भगिनी सुमन कहां ए
पाए । अतिहिं सुगन्ध चारुसों छाए ॥ प्रभावतो इमि कहती भर्द । सुमन लेनकी रतिसों रर्द ॥
भगिनीको सुवैम सुनि कौ रुचि । कह्यो जाय अपने पतिसों शुचि ॥ सुनि वतान्त तौन रुचि को पति ।

खलि मुसकाय भयो मोदित अति ॥ * ॥ मधुभारकन्द ॥ * ॥ * * * * *

विपुलहि बुलाय । ऋषि चोप छाय ॥ इमि कहे बँन । सुनु सुमति अँन ॥ जैसे सुफूल । मोदद
अतूल ॥ तुम जाऊ लैन । अति व्हे सचन ॥ सुनि वचन चारु । गुरुके उदार ॥ विपुल सु पयान ।
कोन्हों सुजान ॥ * * * * * * * * * ॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥ * * * * *

नारितर्जनी गिरे हँ जिहिके माही फूल । गए तौनेदेशमाहीं भरे मोद अतूल ॥ गिरेहँ वज्रदिन
नकोप भए फूल न मन्द । देखि कै मुनि विपुल तिनकों लहो अति आनन्द ॥ लेय फूलनि चल्दो

तूरण विपुल मुनि अवदात । धरें हीमे मोदकों अति धर्मधर सुनु तात ॥ महा निर्जन बिपिनमाहीं
नारि नर अभिराम । पाणिसों गहि पाणि घूमत रहे दोज नाम ॥ सुनऊँ तिन दोजनमाहीं चलत

एक उताल । चलत एक उताल नाहीं सुनऊँ भूप विशाल ॥ भयो कह्यो नारिसों तव पुरुष
ऐसे पर्य । शीघ्र तूहै चलत तजिके मानको वर धर्माबँन सुनि सो भर्द कहती चलतितूरण नाहि ।

मान गहिके चलतिहँ हम मानु सत्यहिमाहि ॥ देखि दोज विपुलकों इमि करी शपथ सुजान ।
कहत जौ हम होहिं मिथ्या हिए राखि महान् ॥ जौन गति परलोकमाहीं विपुल ऋषिकी पर्य ।
प्राप्तसो परलोकमाही हमै होय अभर्ष ॥ मलिन भो मुख विपुल ऋषिको दुऊनके मुनि वन ।

भा०प०
दा०प०

गठ मम तप भयो असेक होय अचैन ॥ कौनधो हम कियो इन दोऊनको अघ नाम ।
कहत जाते मोहि ऐसे बैन ए बुधिधाम ॥ विपुल ऋषि यह चिन्तनाकै होय अति दुखवान । भो
विचारत आपने अघ सुनऊँ भूप सुजाँन ॥ तेहि अनन्तर पुरुष षट अभिराम बर बुधिधाम । रहे
खेलत दूतकों ते भरे मुदसों माम ॥ अथ उनदोउन कीन्ही तौन ही इन कीनाविकल औरउ भयो
सो सुनि विपुल सु मुनि प्रबो न ॥ कहत भेते विपुल मुनिकों देखि ऐसे बैन । सुनु युधिष्ठिर धर्म
धर बर परभवधिके अँन ॥ करत हैंहि अरोति जो हम लोभको गहि षोक । प्राप्त हमकों होय
तौ गति विपुलकी परलोक ॥ बैन सुनि ए विपुल मुनि बर होय क्लेशित पर्म । धर्मको विभचार
अपने भयो लखत अभर्म ॥ चिन्तना बज्रदिननलौ ऋषि करो होय उदाश । लखि पयो तब हेतु
अघको सुनऊँ नृप बुधिराश ॥ कहत भो अवगाहिकै सो विपुल मुनि अवदात । करो
रत्ना गुस्त्रियको सब अरु निसाय । कह्यो भै यह हेतु नहिं गुह देवसों सुखदाय ॥ मान
तौ भो आपने यह पाप ऋषि मतिमान । सुनि युधिष्ठिर धर्मधर बर ज्ञानवान महान ॥ जाय
चम्पापुरीमे मुनि बन्दि गुरुके पाय ॥ सुमन देतो भयो गुरुकों प्रभामै सुखदाय ॥

सन्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराज ओउहितनरायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजन काशो
वासिरघुनाथकत्रीश्वरात्मजगेकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेन कविना धिरचिते भाषा
यां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मं द्विच वारिशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ भोय्यउवाच ॥ * ॥ रामगोतीकन्द ॥ * ॥

देवशर्मा शिष्यकौ लखि कहत भो जो बैन । सुनऊँ सो तुम नृप युधिष्ठिर महत मनिके अँन ॥
देवशर्मावाच ॥ लख्यो तुम कछु विपिनमाही सुनऊँ सुत बुधिधाम । जानते हैं तुन्हें तिनकों लखे
तुमते आम ॥ विपुलउवाच ॥ कौन हे तिय पुरुष दोउ भरे परमा माम । सुनऊँ गुरु अरु कौन
हे षटपुरुष बर अभिराम ॥ देवशर्मावाच ॥ लखे जे हे विपिनमे तुम पुरुष नारि अनूप । दिवस
निशिते रहे दोऊ धरें नर तियरूप ॥ रहे जे हे पुरुष बनमे तौन हे ऋतुपर्म । विपुल मुनि सुनु
धर्मधर बर ज्ञानवान अभर्म ॥ पापकों अरु धर्मकों जे करत हैं जन तात । लखत रितु दिन रैनि
तिनकों धर्मधर अवदात ॥ करो तुम मम नारिकी जिहि भाँति रत्ना पर्म । कह्यो हमकों नाहिँ
सो तुम सुनऊँ तात अभर्म ॥ हेतु याते लोक जो पापीनको हैं पर्म । तुन्है प्रापति होय भो सो
मानुसत्य अभर्म ॥ विपुल मुनि सुनि देवशर्मा सुऋषिके बर बैन । सुनु युधिष्ठिर धर्मधर बर भयो
पर्म अचैन ॥ देखि क्लेशित विपुलको मुनि देवशर्मा भूप । कहत भो मुसकाय जैसे व्हे दयाल
अनूप ॥ करो रचिकी पर्म रत्ना धर्म गहि अवदात । सुनऊँ परम प्रसन्न याते हैं सु तुमपर तात ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अधरम जो हम देखते तब हिय माहिँ सुजाँन । करते और विचार नहिँ दते शाप मद्याँन ॥

रक्षात्री मम नारिकी तुम सचेत है परम । यानें रहिहो मोदनब लहि हो स्वर्ग सपरम ॥

शा०प०
दा०प०

॥ * ॥ त्रिभङ्गीछन्द ॥ * ॥

मुनि देवशर्मा परम अभर्मा स्वत्त सधर्मा सुमतिमयो । विपुलै इमि कहि को सक्रति लहि को
मोद सु गहिके स्वर्ग गया ॥ सुनु तात यशस्वी एक तपस्वी हो बरचस्वी धेय हयो । गङ्गाको तटमे
भीर निकटमं श्रुति आघटमे ज्ञान रयो ॥ * ॐ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
फह्यो मोहि आख्यानियह तिन करि कृपा महान । सुनऊँ युधिष्ठिर भूप बर धर्मवान यशवान ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पतिव्रता तिय होति कीती कीती कुलटा परम । होतिहैं हूँ भौतिकी तिय सुनऊँ तात सधर्म ॥
पतिव्रता जगमोहिँ जेती नारि हैं अवदात । लोक माता कहत तिनको सर्व जन हे तात ॥ रहति
मोदित भूमि तिनके धर्म करिके परम कीर्त्तितिनकी होति भूमे सुनऊँ तात सधर्म ॥ जौन कुलटा
नारि तिनको करत निन्दा स्वर्ष । धरति होमे धर्म केऊँ न करति पाप अखर्व ॥ योग बलसें
होति रक्षा तियनको अभिरामाञ्चौर भौति न होति रक्षा कहत मतिसें माम ॥ रहत जो नर नारि
रुगमे करत काम बलाग ॥ लगत सोई परम प्यारो तियनको बुधिराग ॥ प्राण याही देवता हैं
नारि निश्चय जानि । रहत तिनमें यज्ञ दूरिहि परम दुखदा मानि ॥ एक विपुलै करी रक्षा नारि
की अपदान । अन्य अमलों नाहिँ कीन्होँ गानु निश्चय तात ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
खस्तिथीकाशराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दोजनकाशीवासि
रघुनाथ कवाञ्चरामंज गोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महारतदर्पणे शान्तिर्षर्षणि दानधर्मे चित्तवारिगोस्थायः ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पितर देव सुन अर सुकत इमको जो है मूल । कहऊँ तात अब तौन तुम सहिमा भरे अनूल ॥
कैसे धरको कन्यका दीजै यह सुविचार । है अति उत्तम सुनु नृपति मतिके चार अगार ॥

॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ छन्द ॥

बरको सुजाणि जौन । शुधि कर्म करत कुलवान ॥ बुधताहि कन्यादेत । सुनु तात परम सचेत ॥
बह विप्र व्याह अनूप । बुध कहत बुद्धि स्वरूप ॥ बर योग्य जानि बलायं । अतिहर्ष हियमें क्षाय ॥
सुनु देय कन्या ताहि । बुध कहत हैं अबगाहि ॥ यह साचव्याह सुढार । सुनु भूप उइ उदार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कन्या जिहि बरको यह कन्याको बर जौन । तिहिको दीजै कन्यका सुनऊँ तात बुधिमान ॥
यह गार्ध्व विबाह है भरो उद्याह महान । कहत वेदविद विप्र हैं जिनकी सुमति महान ॥

शा०प०
दा०ध०

दौ धन कन्या लेयके जो जन करत विवाह । आसुर तौन विवाह है कहत सुबुध मरनाह ॥
जगहति कन्या लेय जे बरबस करत विवाह । राक्षस तौन विवाह है कहत सुबुध मरनाह ॥

॥ * ॥ जयकरीइन्द ॥ * ॥

पक्ष विवाहनमाहि सु भूप । ब्राह्म्य ज्ञात्र गान्धर्व अनूप ॥ हैं विवाह ए उत्तम पर्न । कहत
सुबुध जन तात सधर्म ॥ राक्षसव्याह अरु असुर विवाहाए नहिँ उत्तम हैं नरनाह ॥ कीजै ए विवाह
कबहूँ ना । इनतें धर्म होत है जैन ॥ * * ॥ दोहा ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥

ब्राह्म्य ज्ञात्र गान्धर्व अरु ए विवाह सुखदांन । मिले होहि बां प्रवकी कीबे योग्य सुजान ॥
तीनवर्षकी कन्यका ग्रहण करत द्विज पर्न । द्वे बरखनकी मधि सब करत ग्रहण सह धर्म ॥
कन्या अपनिहँ जातिकी वैश्य लहत सुभूप । कहत परम अबनाहि कै प्रज्ञावान अनूप ॥
शूद्राका कीजै ग्रहण रतिकीबे अभिराम । किते कहत बुध कहत हैं कोतेनाहि लालाम ॥
शूद्रामे जो होत है पुत्र सुनऊँ मतिमान । सो न प्रसंगा लहत है साधुनमाँठि महान ॥
जौन करत उत्पन्न है शूद्रामे सुन पर्न । होत तौन द्विज पातकी बुधवर कहत अभर्म ॥
कन्या जो दशवर्षकी ताको बर अभिराम । तीसवर्षको योग्य है कहत सुबुध बुधिधाम ॥
सप्त वर्षकी कन्यका ताको बर अबदात । योग्य वर्ष एकविंशको निश्चय जानऊ तात ॥
जिहि कन्याके होय नहि पित अरु भ्राता पर्न । सो विवाहिबे योग्य नहि बुधवर कहत अभर्म ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

रजोधर्म पश्चात तीन वर्षलौ कन्यका । सुनऊँ भूप अबदात पतिको संगठ नहि करै ॥
वर्षचतुर्थेमाहिँ काम क्रियामे छै निपुण । जाय पतीके पाँठि लखै मदनको मोदको ॥
जाकी सन्तति पर्न कबहूँ हीन न होति है । सुनु अबनोप सधर्म अरु रति रति नाही टरै ॥

॥ * ॥ मधुभारइन्द ॥ * ॥

एहिँ कामहि त्यागि । रति माहिँ पाणि ॥ तिय चलति जौन । दुख लहत तौन ॥ निन्दा
महान । तिनकी सुजान ॥ जगमाहि होत । सुनु बुद्धिपोत ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * ॥
अताको अरु पितरको गोत्र वचाय सुजान । व्याह कीजिए कहत बुध जिनकी सुमति महान ॥
॥ * ॥ र्घाष्टरउवाच ॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

काहूँ दोन्हों होय देत होय काउ मोलको ॥ कोज हठसों भोय कहत होय हम देहि ना ॥
कोज दिखावत होय मोल कन्यका को परम । कोज सुखसों भोय कियो होय करको ग्रहण ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कन्या दन पाँचानमे किहिकी भार्या होय। कहे आप अबनाहि कै ज्ञान नैनसों जोय ॥

॥ महाभारतदर्पणः ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

सुनऊ युधिष्ठिर भूप इम पाँचऊ मे नारि बहातिहिकी होय अनूप कियो होय जिहिँ करयहण ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

काहँ लीन्ही होय मोल देइ कै कन्यका कोज तिहिका जोय लेइ जाय निज वीर्यसा ॥
दोष हात की नाहि ताको कन्याहरणको । कहौ आपु अबगाहि सुनऊ पितामह प्राज्ञ वर ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मोल लेनेमे होत है भार्य्याको नहि भाव । यामें कन्याहरणको दोष नहो नरराव ॥
मोल न निश्चैकार है भार्य्याको सुनु भूप । यामे कहत प्रसङ्ग एक सो सुनु परम अनूप ॥
काशीपतिको जीति कै ताको कन्यातीन । स्थाए हम निज वीर्यसें सुनु अबनीप प्रवीन ॥
स्त्रिके तिन कन्यागको मो पित धाता पम । मोको जैसेँ कहत भे परम सधर्म अभर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतोच्छन्द ॥ * ॥

अम्बिका अम्बालिका ए दोय कन्या ज्ञान । करऊ इनको ब्याह भोषन सुनऊँ वर बुधि
भौन ॥ छोडिबेके योग्य अम्बा है सु तात सुजान ॥ छोडि अम्बाहिँ देऊ यातें कर न बेर महान ॥ भयो
नहिँ कर यहण यातें दोष व्हे हे नाहिँ । दरहम तब दुखो कन्या चित्ररथको ब्याहिँ ॥ कही
जैसेँ मोहि मोपित धात अति अबदात । और लोक प्रसिद्धि है एक बात सो सुनु तात ॥ कहत
कन्या दान हँ सब कोइ जगकेमाहिँ । जीतिबो अर मोलि लीबो कहत कोई नाहिँ ॥ मोल दैकै
लेत जे जे मोल लै कै देत । सुनऊ ते जन धर्मवान न कहंत प्रज्ञ सचेत ॥ मोलि लीन्हें होत है
नहिँ भार्य्याको भाव । होत करके यहण हीतें सुनऊँ वर नरराव ॥ करत जैसेँ कर्मको जन
धर्मच्युतह जौन । भर्मसो हँ भरे ते अति परमदुर्मति भौन ॥ मोल लीन्ही कन्यकाने होत दासी
भाव । भार्य्याको भाव कबहँ होत नहिँ नरराव ॥ * * * ॥ दोहा ॥ * * *

कन्याके करको यहण विधिवत करै सु जौन । ताकी भार्य्या होति है कहत सुबुध बुधिभौन ॥
स्त्रिकीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिश्येण मण्डिदेवन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपूर्वणि दानधर्मे चतुस्त्रत्वारिंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ रामगीतोच्छन्द ॥ * ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ मोल दै कै कन्यकाको कोर जाय विदेश । करै ब्याह न कोय
ताकी भौतितें सुनु टेश ॥ कन्यकाको पिता गुण तब करै कौन उपाय । कहौ यह सन्देह कहिँ
योग्य है नरराय ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ कन्यकाका मोल दैकै जौन जाय विदेश ।
सुनऊ ताके कुटुम्बारे लोग जेहँ बेश ॥ कन्यकाको पिता तिनको देइ फोर न मोल । सकैतौ

शा०प०
दा०ध०

करि व्याह अनत न मानु सति मो बोल ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ होष जिहिके पुष नाही
द्रव्य तिहिको जौन । लेय के किहिभांतिसे सो कहउ प्रज्ञाभौन ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥
जैसो आत्मा होत तैसोई सुत होत है । सुनऊ नृपति बुधिपोत होति सुता है सुत सहय ॥

॥ * ॥ रामगोती कन्द ॥ * ॥

पिताको धन लेय कन्या मात जां नहि होय । लहे कोई और माहीं कहत वर बुध लोय ॥
सुनु युधिष्ठिर मातको जो पृथक धन है परम । सुताहीका भाग सो है कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ होय
जाके सुवन नाही तासु आइ सुजान । सुताको सुत करै सोई लेय द्रव्य महान । पुत्रमे अरु पुत्रि
काके पुत्रमे नहि भेद । कहत सुबुध महान हैं जिन पढो नीके वेद ॥ प्रथम सुतवत कन्यकाकों
मानि लीं ही हे य । होय फेरि सुपुत्र तौ सुनु कहत हैं बुध लोय ॥ पाच भाग सुद्रव्यके तिन मांहि ले
सुत तीनाभाग है ले कन्यका सुनु भूप परम प्रबौन ॥ सुता तनुजा होय अरु सुत मोल लीन्हो होय ।
करत ताको न्याय है यह धर्म शास्त्रो लोय ॥ तीन भाग सु लेय कन्या भाग ले सुत दोय । सदाचार
सुपरम है यह कहत है सबकोय ॥ बेचि दोन्हो कन्य ताका सुवन जो अभिराम । लहे धनमे भाग
नाहीं तौन सुनु बुधिधाम ॥ मोलि लीन्हो पुत्र सोई लेय धनको सर्वा कहत हैं अवगाहि कै गुध धर्म ॥ स
अखर्व ॥ बेचि दोन्हो कन्य ताको सुवन जा है भूप । होत धर्म विरोधकी है कहत प्रज्ञ अनूप ॥ *

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

निन्दा असुर विवाहकी ताके माहि महान । एकगाथा यमकी कही सो हम कहत सुजान ॥

॥ * ॥ चञ्चलाकन्द ॥ * ॥

द्रव्य लोभमाहि पाणि त्यागि लाजको सु भौन । पुत्र और कन्यकाहि बेचिदेत हैं सु तौन ॥
कासू मूत्र नर्कमाहि मूत्र औ पुरीष खात । नित्यहीं रहैं सपीर खेद पाय कै सु तात ॥ * * *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कन्या पिता सु जौन एक सुरभि एक वृषभ लौ । करत व्याह है तौन आर्य कहावत सुनु नृपति ॥
किते कहत बुध परम दाष न आर्य विवाहमे । किते कहत अभर्म आर्यजमाहीं दोष है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

केचित आर्य विवाहको करत सुनऊ वर भूप । पै न समातन धर्म यह मतिधर कहत अनूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कारी कन्या जौन तासो बरवसरति करै । अथ नर्कको तौन परि दुख लखत अनेक है ॥

स्त्रिशीकाशीराजमहाराजाधिराजथीउहितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाश्री
वाशिरघुनाथकवीश्वरात्मजनेकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्यशिशुष्येण मण्डिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि दानधर्मे पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ रामगीतीहृन्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

दसके ए वचन ह बुध कहत हैं अबदात । व्याहृकाजै शियो ओ धन मोल सो नहि तात ॥ देख
जो सब कन्यकाको तनिक राखै नाहि । शेष मोल सुद्रव्य राखें चापने न्हमाहि ॥ जौन जन
कस्याए चाहे आपनो सु महानाँतौन राखत मोदसौं हैं तियनको भतिमानाकरै कामुक पुरुषको
नहि धाम करिकै भाव । बढै सन्तति नाहि तौ हे सुनु बुधिछर राव ॥ रमत देवत तब हैं तिय
रहति पूजित जव । जहां पूजित रहति नाहीं भिया विफला तब ॥ जौन कुलमे करति नारी
शोध हैं अति मान । निघ सो कुल परम है सुनि भूप वर बुधिधाम ॥ जौन न्हमे जाति नाहीं
कटवबारी नारि । लहत नाहीं तौन है न्ह प्रभा परम सुदारि ॥ योग्य हैं सनमानको तिय सुनऊँ
भूप सुजान । कियेँ अपमान दुखको लहत पुरुष महीन ॥ जनति पुत्रहि नारि हैं अरु करति
पालन पर्म । योग्य धातें मानके हैं सुनऊँ भूप सधर्म ॥ सर्व कारज होत जिनके सिद्धि हैं अबदात।
करत तियको नित्य जे सनमान जन सुनु तात ॥ कहति माया जानकी तियधर्मने यह पर्म ।
सुनऊँ सो हम कहत तुमको भूप पर्म सधर्म ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नारिनको उत्तम धर्म पतिकी सेवा पर्म । पति सेवामें स्वर्गको जीतति नारि अभर्म ॥

इच्छा जो अर्थकी करत तौन शतकार । नारिनको हैं लक्ष्मी नारी सुनो धर्म अगार ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथतपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मण्डितेन कविना विरचिते महाभा
रतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तुमसो क्रोड न और संग्रहहर अरु धर्मधरा सुनु कुरुकुल शिरमौर सर्वशास्त्रविद नीतिविद ॥

भो एक संग्रह मूरि सुनऊँ पितामह प्राज्ञ वर । सो अब करिए दूरि धर्मधाम बुधि मान धर ॥

॥ * * * ॥ रामगीतीहृन्द ॥ * * * ॥

विप्रके हैं विहित नारी चारि सुनु बुधिधाम । ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या और शूद्रा वाम ॥ होत तिन
पारौनके सुत सुनऊँ बुधिधर तात । कौनके तो लोच वर धन पिताको अबदात ॥ भीष्मउवाच
विप्र क्षत्रिय वैश्य तोनउँ बर्ण हैं द्विज भूप । विप्रको जो धर्म तोनऊँ नाहि पर्म अनूप ॥ मदनको
जो कौलि ताके लोभ करि कै पर्म । शूद्रिकाकों करत नारी विप्र तात अभर्म ॥ जौन ब्राह्मण
सोधते हैं नारिशूद्रा साथ । होत हैं ते नीचनतिकों प्राप्त सुनु नरनाथ ॥ लोच नैनल वृषभ अरु हथ
ब्राह्मणीको तात । पिताको जो द्रव्य तामे सुनऊँ नृप अबदात ॥ करै भाग सनमान दम धनशेष

अभर्त ॥ सविद्याको पुत्र नामे नाम सोच सु तीन ।
यभावी होत नाही मूद्रिकाकी माता कहत हे
विप्र मूद्रापुत्रको अवदान । वाक्ये की निमुन
पारम्य ॥ देय वज्रत न मारिकों जो इत्य सोच महान । करि जगते देय तो भग सोच नूप सु
जाना ॥ पिताको जो दियो माता पास हे भग तातापुत्र हो नहि सोच वर वर कहत पुत्र अवदान ॥

॥ * ॥ सुविष्टरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्राह्मणते जो पुत्र भो मूद्राकीं हैं अनूप । सो धनभागी होत नहि कही आपु यह भूप ॥
एक वर वर कहत पुनि कौन हेतुते परं । संशय होत नहीं हैं धामे सुमजें सधर्म ॥
होत ब्राह्मणीकीं जो ब्राह्मण संशय नाहिं । ब्राह्मण ताजको कहत जौन सविद्याभाहिं ॥
वैश्यामे जो होत सुत ब्राह्मणते अवदान । तौनज ब्राह्मण होत है कही आपु यह तात ॥
ये नहि कहत सर्वान व तीनज भाव सुजान । सो कार्हेते होत है संशय कहा नहीं ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

कन्या तीनज वर्षकी पहिले करि निज मारि । केरि ब्राह्मणीका करे भार्या परम सुदारि ॥
तवज्जे उच्छेदा ब्राह्मणी सोच न अन्या कोष । सर्वहि उल्लन कार्यमे सज्ज रहति है सोष ॥
भवत नामा भातिके अब भोजन अभिराम । दोजे विप्रा मारिकों अधिक सोरमे प्राय ॥
देखो जनुके माखने यह सु सनातन धर्म । करत जौन है अम्यवा सो बख्खाय अभर्त ॥
होत सु माताके सहस्र पुत्र जानि निज तात । याते धनमे कहत हैं भाव सज्जन अवदान ॥
भार्या विप्रा सविद्या वैश्या मूद्रा जौन । तिन्ने छेष्ट ब्राह्मणी होते सुमजें सुधिभाय ॥
याते विप्राको सुवन भाग खेत है छेष्ट । विप्राके सब सुतवने अधिक खेत है छेष्ट ॥

॥ * ॥ रामजीती इन्द्र ॥ * ॥

ब्राह्मणीके सहस्र नाही सविद्या है शंभ । जौन वैश्या सविद्याको सहस्र सुनु सुधिभाय ॥ वैश्या
काके सहस्र नाही मूद्रिका जो दार । शास्त्र मतते कहत हैं वर ज्ञानवीन उदार ॥ देवमनो है वला
हैं विप्र वर अवदान । सविधि पूजा किंच तिन्को कहत जन मुद तात ॥ होत हैं जीमान सविध
तेजमान विद्यास । करत राज्य सु मूनीको हैं दरत करिसे जाय ॥ करत रघा वरवीकी हैं धर्म
सविध भूप । देत दांन महान हैं सनमान के सु अनूप ॥ करत मारिके वर्षकी रघा सु सविध
धर्म । छपि मारिज वेदसा है वैश्याके व धर्म ॥ छेष्ट वैश्यापुत्रे हैं सविद्याको ताता अधिक भाते
कहत धामे सुमजें सुत अवदान ॥ * * * ॥ सोरवा ॥ * * * ॥

कही सर्वज्ञान्त तुम विप्रनको हे भूप । और वर्षकी अब कहा करि कौ हापा अनूप ॥

॥ * ॥ श्रीकृष्णाय ॥ * ॥

श्रीकृष्ण
दर्पण

सचिपयज्ञको होति है ईभार्या अभिराम । कृतीया गूडा होति पै शास्त्री न मतिधान ॥
विषमको जो जान कही सचिपयज्ञको रोदा शास्त्रनकी अवनहि कै कहत सु वर बुधरखीर ॥
सचिपयज्ञको होत है अष्ट भाग सुनु भूप । तिनमे खीसी रीतिलो जानै कहत अनूप ॥
कृतीयाको सुवन सो चारि अंश से चार । चार अष्टादिक गल्ल सब सोई सोय उदार ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

वैश्याको सुत जौन तीमनाम से ब्रह्मणे । एकभाग बुधिभौम खेय शूद्रिकाको सुवन ॥
गारि होति वैश्याके एकहि सुनु बुधिधान । द्वितिया शूद्रा होति पै शास्त्रते न अभिराम ॥
वैश्याब्रह्मकी होम है पंचभाग जतिमान । चारि भाग तिनचाहि से वैश्यापुत्र सुजान ॥
शूद्राको जो सुवन सो एकअंश से तात । दिऐं पिताके कहत बुध शास्त्र देखि अवदात ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

होति शूद्रके दार एकहि अपने बर्षको । सुनु नृप बुद्धिखार अन्ववर्षकी होति नहि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

जेते होहि शूद्रके तात । सब समभाव होहि अवदात ॥ ब्राह्मण आदि बर्षे जे तीन । तिनमे हे
पक्षरीति प्रवीण ॥ होत जेठ सुत जेठ सचेत । ताते अंग अधिक एक सेत ॥ मध्यम सुत जो मध्यम
भाग । सोय सुनऊँ भूपति बडभाग ॥ सद्यु छि भाग पाबै सद्यु तात । कहत सुबुध मतिवर अवदात ॥
स्वसिमीनक्षरामाधिराजकाधिराजकी उदितनारायणस्याज्ञाननामिना बन्देजिनकाशीवाशिश्च
नाचकवीचराजजो कुसुमापतस्थाजजोपीनाचस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतादर्पणे ज्ञानिपर्वणि दानधर्मो धनविभाववर्षेनोदान सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ * * *

॥ * ॥ पुंभिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

श्रीवर्षं तु पुत्रपके संन रमति जो है दार । बरषसङ्कर होत ताते सुनऊँ बुद्धिखार ॥ धर्म
तिमको कौन है अथ कर्म तिमको कौन । कही नाम सु कृपा करि कै परम बुधिके भौन ॥ कर्म
परिदुःख बर्षके अथ बर्षे परिदुःख बर्षे । अज्ञकाजे प्रथम विरचे विधात संधर्षे ॥ विप्रकेहैं होति
नारी आदि अति अभिराम । ब्राह्मणी सचिया वैश्या खीर शूद्राजान ॥ सुनऊ तिनमे ब्राह्मणी
अथ सचिपयज्ञ के दार । होत दोउमकांदि-विप्रहि परम बुद्धिखार ॥ औ सुवैश्या शूद्रिकान
रोदा से सुतकीय । विप्रके अथ होत नाहीं कहत प्रह्व प्रवीण ॥ विप्रत जो होय वैश्याकेहैं पुत्र सु
भूप । कहेत हैं अंबड ताको परम प्रह्व अनूप ॥ होत शूद्राभाहि जो सुत विप्रते अवदात । कहत
ताको पारख्य बुध सुबुध बुधिभर ताता । करत सेवा परम दोऊ द्विजकी अभिरामा दानकारक
सेत दोऊ मल्ल भीषायाच ॥ होत सचिपते सु सचिप दोषकारिन माह । हीन पुत्र सु होत

आ०प०
दा०ध०

शूद्राणां हि सुनु मरनाह ॥ उग्र ताको नाम हे बह उग्र अतिही होत । याचकां अवगाहि करिके कहत प्रज्ञापोत ॥ वैश्यका अह गृहिका ए वैश्यके ही दार । होत वैश्यहि दुऊनमाही कहत बुद्धि अगार ॥ होत एकाहि मारि शूद्रा शूद्रको हे तात । होत ताने सुधन शूद्रहि कहत बुध अवदात ॥ कछो सब वृत्तान्त चारिऊ वर्णको सु अनूप । वर्णबाहिर जैन तिनको कहत अब हम भूप ॥ होत त्रिविधते सु जो सुत ब्राह्मणीने पर्म । वर्णबाहिर तैन ताको सुत नाम अभर्म ॥ होत विप्रा मारिने हे वैश्यते सुत जैन । नाम हे वैदेह ताको सुनऊ वर बुधिभोजन ॥ नृपनके रणवाशको सो करत काज अनूप । सुनु बुधिधिर धर्मधर वर ज्ञाननाम अनूप ॥ ब्राह्मणीने शूद्रत सुत होत हे चण्डाला इमत चौरादिकनकां सो कहत अबु भूपाल ॥ ब्राह्मणीने होत एते वर्ण सहर पर्म । कछो हम अवगाहि तुमसां सुनऊ भूप सधर्म ॥ वैश्यते सुत होत जो हे ब्राह्मणीने चार । नाम माध तासुको सुनु भूप बुद्धि अगार ॥ क्षत्रियाने शूद्रते उतपन्न जो हे पूत । नाम तासु निषाद जो हे इमत मत्स्य अकूत ॥ वैश्यकाने होत जो हे शूद्रते सुत पर्म । नाम अयोगव सु ताको कहत प्रज्ञ अभर्मा । करत रचना काष्ठकी सो सुनऊ तात अजान । कहत बढई नाम ताको जयतमाहि महान ॥ सुनऊ नृप अन्वड पार्सव उग्रसूत विदेह । चण्डाल मागध औ निषाद सु अयोगव नव एहायोगि अपनीमाहि ए सुत करत आपु समान । नीच योगीमाहि इनते और होत सुजान ॥ * * * * * भए चारिऊ वर्णते जिनि बाह्य ए नव आस । बाह्यतर हे होत इनते और सुनु बुधिधाम ॥

॥ * * * * * सोरठा ॥ * * * * *

होत हीनते हीनवर्ण पञ्चदश और नृप । बुधवर कहत प्रवीन शास्त्रनका अवगाहि कै ॥

॥ * * * * * रामगीतीकन्द ॥ * * * * *

मानधीने अयोगवते होत जो हे तात । नाम हे सैरंध्र ताको सुनऊ नृप अवदात ॥ * * * * *

॥ * * * * * चरणाकुलकन्द ॥ * * * * *

भूषण भूपनको पहि रावै । वसुमनकी रचना सु बनवै ॥ सैरंध्रनके कारज ए है । कहत माल ललि कारज जेहै ॥ * * * * * रामगीतीकन्द ॥ * * * * * मानधीने होत हे वैदेहते सुत जैन । नाम मैदेयक सु ताको करत मदिरा जैन । होत जैन निषाद त सुत मानधीने पर्म । नाम मद्रुर तासु जीवन नावते सु अभर्म ॥ मानधीन होत जो चण्डालते सुत भूप । नाम तासु लपाक हे बुध कहत पर्म अनूप ॥ * * * * * दोहा ॥ * * * * * अयोगवीने होत हे वैदेहकेते जैन । शूर नाम ताको करत कपट महा हे तैन ॥

॥ * * * * * प्रज्ञसाकन्द ॥ * * * * *

जैन होत हे निषादते अयोगवीसु बीच । मद्रजान नाम तासु प्रज्ञते कहै गिभीच ॥ होत जो चण्डालते अयोगवी सु माहि पूत । खत हे सुनो सु तैन अशनांसका अकूत ॥ * * * * *

॥ * ॥ कन्ताहृन्द ॥ * ॥

पुत्र सुमान । निरिहको आन ॥ जगके नाह । सुनु नरनाह ॥ * ॥ आभीरहृन्द ॥ * ॥

अयोग्यी के बीच । तीन बर्ष ए नीच ॥ होत कहत बुध मान । निरिहि ब्राह्म आभिराम ॥

॥ ॐ ॥ सोरठा ॥ ॐ ॥

अयोग्यी के नाह होत जैन वैदेहते । तासु नाम नरनाह सुद्र कहत अवगाहि बुध ॥

॥ ॐ ॥ रामगीतीहृन्द ॥ ॐ ॥

अतिक्रमते मातके अर पिताको सुनु भूप । होत एते बर्षसद्धर कहत प्रश्न अनूप ॥ ब्राह्म उक्ति सुजैन निरिहो बर्ष चारिहमाहि । बर्षसद्धरने नहीं हैं कहत बुध अवगाहि ॥ सोरठा ॥
षट् अनुलोमज होत चारिह बर्षनते प्रगठ । सुनऊ नृपति नतिपोत और बिलोमज होत षट् ॥
अनुलोमज हैं जैन तौन सु क्रमते होतहैं । हैं सु बिलोमज तौन होत अतिक्रमते सु जे ॥

॥ * ॥ अयकरीहृन्द ॥ * ॥

इनहादय ते हाहटि होत । अनुलोमज सुनु नृप बुधिपोत ॥ औ सु बिलोमज हाहटि आन । होत कहत वर बुधिधर नाम ॥ इनते बद्धत होत हैं और । ऐसे हीं सुनु नृप शिरमौर ॥ तिनने किते अचल पै वास । किते करत अस्त्रसाज पास ॥ सत्य बचन अर सना महान । इनके नित्य धर्म मन्निषान ॥ गोग्राह्याकी फिर सहाय । एउ सिद्धि सहत नरराय ॥ याने संग्रह नाहिं सुजान । सत्य बचन मन मानु महान ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ * ॥ रामगीतीहृन्द ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

धर्मपत्नीमाहि बुधवर बीर्यको आधान । करत है सदि समयको सुनु भूप परम सुमान ॥ बीर्यको आपान कीन्हें और मारी नाहें । होत है उतपन्न सुत दुखकार सुनु नरनाहें ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आमकोध नय जैनजम तिनका मारी पर । प्राप्त करतिहैं कुपथको भूपति सुनऊ सधर्म ॥

॥ * ॥ अन्तनुस्तोमरहृन्द ॥ * ॥

निष राव भाव दिखाय कै । बध मांदि कै सु रिजायकै ॥ नरकां सु दूषित करतिहैं । जनने अकीरति भ्रमिहैं ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ *
बुधजम धार्ते करत नाहिं बद्धा तियको साथ । इहे हेतु अवगाहिकै सुनु सधर्म नरनाह ॥

॥ * ॥ बुधिधरउवाच ॥ * ॥

बेध सहर बर्षने उतपन्न जे हे तान । बेध कैसे रूप ताको होय अति अवदात ॥ कहे ताकी जाति सो सिद्धि भानि आनीजाय ॥ भीष्मउवाच ॥ बर्षसद्धर योनिने उल्लस जे नरराय ॥
बेध कैसे रूप ताको डोच हकिने धर्म । किश् बेध जात जायथो तान तान सधर्म ॥

दा०५०

बर्षसहर जानिए तो कहत वर बुधसोय ॥
बेठको जे कर्म तामे होहि औ अवदात। युद्ध बर्ष सु जानिए तो नाहि सुनु वे तामे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बनाचार अब दुकिया और कूरता जौन। रक्ते नामे जात हे सहर धोमिज नौन ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

बर्षसहर जौन ते नाहिं तजत जालि सुभाष । आस नतते कहत हैं बुध सुनऊ हे नरराव ॥ कर्म
करि कै बर्षसहर आपु जादिर होत । नुम नाही रहत हैं ते सुनऊ वर बुधिपोत ॥

सखिषीकाशीराजनहाराजाधिरामभीउरितनाराथसस्तज्ञाभिनाविना श्रीवन्दीजनकाशी
बाविरघुनाथकवीश्वरात्मजनेकुसुमाचपुत्रनोपोनाचस्यथिष्येह मलिदेवेन कविना विरचिते भा
षार्क संहाभारतदर्पणे शान्तिवर्षेहि दानधर्मे अष्टयत्वारिंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

सुत विवाद हे बज्रत सुजान । तामाहीं संदेह नहान ॥ होत तौन नृप करिए दूरि । नेठत मुमची
संशय भूरि ॥ कौसी नारीमाही तात । कौसो होत कहे अवदात ॥ नुम हो प्रज्ञापान नहान ।
संशय हर मुमसो नहि खान ॥ * ॥ नीछाउवाच ॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥ * * * * *

आपुमें जो होत सखिया नारिमाही तात । कहत औरसपुत्र ताको परम बुध अवदात ॥
कहेनें निज नारिमें पर बोधने जो हेत । नाम सेवज कहत ताको परम प्रज्ञायोत ॥ कहें विन
निज नारि औरै पुरुषसाथ बिहार । करति ताते होत जो उत्पन्न पुत्र सुदार ॥ प्रसूत नही नाथ
ताको सुनऊ भूप सुजान । कहतहे निरधारि श्रुति कह ज्ञानवान यमान ॥ होय कौनऊ हेतों
जो ननुज कुलमें होन ॥ होत ताते पुत्र चौथौ तौन भूप प्रवीन । दियो काकहि होय काह पुत्र
अभिभिराम ॥ तौन पद्मन नाम ताको दत्त सुनु बुधिमान । कौत ताको नाम जौ सुन जोस
लीखों होय ॥ शासकों अवगाहिके नृप कहत हैं बुधसोय ॥ * * * * *

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

कर्मवतीकी होय विवाह । ताको जो सुत हे नरनाह ॥ तामु नाम अष्टूड अपु । ही सतम
सुत हे सुनु नृप ॥ * * * * * ॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥ * * * * *

अपध्वंशज होत हैं षट् पुत्र भूप सुजान । होत सुत कागीन सतम कहत वर मतिमान ॥ होय
कारी कन्यकामे पुत्र जो हे तात । कहत हैं कागीन ताको नाम बुध अवदात ॥ धनुर्विदे और
अपसद पुत्र षट् अभिराम । तौन आगे कहेने हन सुनेऊ नृप बुधिमान ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥
अपध्वंशज कौन षट् अर कौन अपसद तात । कहे मुम अपगाहि हनको पितामह अवदात ॥
॥ * ॥ नीछाउवाच ॥ * ॥ सखिया अर वैश्यका अर भूदिको जे वार । होत दत्तने पुत्र दिग्ग
अपध्वंशज चार ॥ होत सखियकेसु वैश्या शूद्रिकामे जौन । शूद्रिकामे वैश्यके जो होत सुत बुधि

भौम ॥ अपसद प्रज ए सुपठ हैं कहत बुध अवदाता और अपसद पुत्रपट ते सुमऊ बुधिधर ताता ॥
शूद्रको जो होत विप्रानाहि सुत चण्डाला होत हे सुत वधियाने ब्राह्म सो भूषण ॥ वैश्यकाने होत
जो सुत शूद्रको हे तात । वैय ताको नाम हे बुध कहते हैं अवदात ॥ होत नामध ब्राह्मणीने वैश्य
को सुत पर्त । वधियाने होत वामक सुमऊ भूप सधर्म ॥ होत हे सुत सुत विप्रानाहि वधिय के सु ।
होत अपसद पुत्र एते सुमऊ प्रज्ञ नरे सु ॥ * ॥ बुधिधर उवाच ॥ * ॥ * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

पतिकी आज्ञा पाय बुध चर्च जो कानिनी । और पुत्रपति जाय भोग करति हे समुद्र ॥

ताके जो सुत होत सो दोषने कौनको । कहो तात बुधियोत धर्मवान यशवान कर ॥

॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥

जाको वीरय होय सो सुतको चाहै न जौ । कहत सु वर बुधलोय लेष पतिहि को होयतौ ॥

पुत्रहि चाहै वीर्यप्रद तौ ताहीको होय । कहत सुबुध अवगाहिके धर्म शास्त्रको जेय ॥

॥ * ॥ दाहा ॥ * ॥

सुमऊ पुत्र अथूढको यह वृत्तान्त सुजान । बार्थप्रदद जो छोडि देखै कौ लज्जावान ॥

लेषपतीको होय तौ सुवन सुमऊ महिपाल । जौनहि छोडै पुत्रको तजिके लाज विशाल ॥

वीर्यप्रदको होय तौ पुत्र तौन मतिमान । कहत शास्त्र अवगाहिके मतिसो प्रज्ञ सुजान ॥

॥ * ॥ आभीरकन्द ॥ * ॥

इतक पुत्र कऊ होत । सुमऊ नृपति बुधियोत ॥ * ॥ बुधिधरउवाच ॥ * ॥ कैसो होत सु

तौन । इतक पुत्र हे जौन ॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥ * * * * * * * * * * *

आहि माता पिता पधमे जरि दीन्हो होय । पाय ताकों स्थाय रहने महा मुदसो भेय ॥ कहे

ताको पुत्र सो हे इतक सुत अरिमान । आहि जानें माहिं ताके पिता माता जान ॥ बुधिधर

उवाच ॥ * * * * * * * * * * * ॥ * ॥ चण्डालकन्द ॥ * ॥ * * * * * * * * * * *

संस्कार तासु कौन भातिसो सु होय भूप । कथका सु होय तौ सु काहि दीजिए अनूप ॥ होत हे

संदेह तात को जपा कठो नरान । हैं न दस आपुसें संदेह दूरिकार जान ॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

परो धर्मने मिलै जाको सुवन सुनु मतिमान । करै सो निज वर्षको सो संस्कार सुजान ॥ जो सु

एवबे मारनेते भेय ताको जौना होत सुतने कहत हैं अवगाहि प्रज्ञा भोग ॥ कथका जौ मिले तौ

निजवर्षमाही पर्त । दीय विधिसो चार वरको सुमऊ भूप सधर्म ॥ जो सुनो कानीक और अथूढ

सुत अरिमान और लेषज अपस दोषए चारि पुत्र सलाम ॥ सुमऊ को निजवर्षको सो संस्कार

अनूप । कीजिए बुध कहत है अवगाहि शास्त्रहि भूप ॥ * * * * * * * * * * *

शा०प०
दा०ध०

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

दोहो उत्तर तासु हम जो बूझे तुम धर्म । कहा सुगनकी रक्षा है अब भूपति सुगज अभर्म ॥
स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाशानुगामिनाश्रीवन्दीजनकाश्रीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजेन नोकुलनाथस्वात्मजोप्रीनाथस्वशिश्वेण सखिदेवेन कविना विरचिते भा
षायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि विवाहधर्मोत्तमैकोनपञ्चादध्यायः ॥ * ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परकी पीडा देखि अरु बधिकै परके साथ । कैसे करै समोहको अरु यह कऊ नरनाथ ॥
अरु सहिमा सुर भीमको कही समोदित आपु । सुगज पितामह सुषमधर युधिधर धर्म कलापु ॥
॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीशब्द ॥ * ॥

कहत हैं इतिहासु याने सुगज छोडि प्रमाद । अवनश्रुति अरु नऊपको तिहिमाहि है
सन्नाद ॥ अवनश्रुति मतिमान मनमे करी रक्षा एह । करै बारहवर्षको अलवास सुनु बुधि
नेह ॥ मान क्रोधहि छोडि करिके सुरसको परखान । मध्य यमुना सुरसरीके सुश्रुति तेजस धाम ॥
भए करत प्रवेग अलमे होय मोदित पर्न । बेन यमुना सुरसरीको सुगज भूप सधर्म ॥ भए धारण
करत शिरपै अवनश्रुति मतिमान । दुऊनि रक्षा करी श्रुतिके दया करि सु महान ॥ दर्ह पीरा
माहि श्रुतिके तनिकरु हे तात । पाप हारणि सुरसरो अरु कारिंदो अचदात ॥ * ॐ ॐ ॐ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रहत भए श्रुति काष्ठसौ अलके माहिं सुजान । करत भए अल जीव सब तिनमे प्रेम सहान ॥
॥ * ॥ मुनधबिलासशब्द ॥ * ॥

बऊ काल अलमे वास । श्रुति करत भे तपरास ॥ एक समय माहि मसाह । बऊ आय सुनु
नरनाह ॥ अलमाहिं डारि सु जास । बिसतारिके सु बियास ॥ सब भए सँचत पर्न । निजजातिको
माहि धर्म ॥ बऊ फदे अलके अन्तु । तिहिमाहिं सुनु माहि कन्तु ॥ तिहि जास माहिं नदान । श्रुति
रायकर मतिमान ॥ बन्नि मे सु अन्तुम साथ । सुनु ब्रह्म हे नरनाथ ॥ श्रुतिरायको श्रुति सर्व ।
मयवान मे सु अशुर्व ॥ महरोनको श्रुतिराय । सखिके सपीर अवाथ ॥ अति प्रेय मनने कीना
सुनु भूप परम प्रवीन ॥ निषादाउचू ॥ विनजान भो यह पाप । समिए सु सो श्रुति आप ॥ प्रिय
होय तुमकों जौन । कहिए सु अब तुम तौन ॥ अब जो कहीने तौन । हम करैने युधिमान ॥
श्रुतिराय ए सुनि बैन । इनि भए कहत सँचै ॥ * ॐ * ॐ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ *

सबसौं सुगज मसाह तुम यह मेरे प्रिय पर्न । अल अन्तुको साथ माहिं तजिपै कहत सपर्न ॥
परि हैं तौ इन साथने विकि है तौ इन सङ्ग । बऊदिनसौं हम मुदितनै इनके बसे प्रसङ्ग ॥
श्रुतिके सुनि कै बैन ए तजि मत्स्यनकी आस । अहित सर्व मसाह नै गए नऊपके पास ॥

स्त्रिशीकाशाराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दिननारायणस्याज्ञानमामिना श्रीवन्दीजन काशीवासि
रघुनाथकवीश्रीराजजगोकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्यशिश्येण नशिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपूर्वणि दानधर्मे पञ्चाशदध्यायः ॥ * * * * *

भा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ तौमरहन्द् ॥ * ॥

मुनि अवनको दृष्टान्त । मुनि नऊष शोघ्र नितान्त ॥ उठि गए सहित समाज । जहँ हो सु
अपि स्थिरताजं ॥ अतिकों प्रथाम सुकीन । सखि भूप परम प्रधीन ॥ * ॥ नऊषउवाच ॥ * ॥ अति
राय सुनु भौ बैनातपवान परम सचैन ॥ प्रिय होय तुमको जान । कहिए सु हमको तौन ॥ * ॥

॥ * ॥ वनउवाच ॥ * ॥ ॥ दोहा ॥ * ॥

कियो मलाहन परम अम थारौं सुनु वर भूप । महरिनको अरु मोल मम दीजै इन्हं अनूप ॥

॥ * ॥ पभ्भलीहन्द् ॥ * ॥

धीवरहि देऊ मुद्रा हजार । सुनु हे सु विप्रवर बुधिसगर ॥ * ॥ अवनउवाच ॥ * ॥
मुद्रा हजार मम योग्य नाहिँ । अवनहि देऊ नृप चिन्तनाहिँ ॥ मम सदृश मोल धीवरहि देऊ ।
सुनु नऊष भूमिपति सुमति गेहु ॥ * ॥ नऊषउवाच ॥ * ॥ अतिके सु बैन ए सुनि अनूप । पुनि
कह्यो विप्रसौं नऊष भूप ॥ धीवरहि देऊ मुद्रा सु लक्ष । अतिराय अवनको मोल दक्ष ॥ अवन
उवाच ॥ सुनु नऊष भूप तुम देत जान । मम सदृश मोल है नाहिँ तौन ॥ * ॥ नऊषउवाच ॥ * ॥
मुद्रा सु कोटि धीवरहि देऊ । सुनु हे सुविप्रवर बुद्धिगेह ॥ * ॥ अवनउवाच ॥ * ॥ मुद्रा सु
कोटि मम मम न मोल । सुनु नऊष भूप मतिके अजोला ॥ द्विज सहित आप करिके विचार । धीवरहि
मोल दीजै हमार ॥ * ॥ नऊषउवाच ॥ * ॥ धीवरहि देऊ मम सर्व राज । सुनु विप्र अबहि नहिँ
विलखँ काज ॥ * ॥ अवनउवाच ॥ * ॥ मम मोल सदृश नहिँ राज सर्व । सुनु नऊष भूप बुधि
धर अहर्ष ॥ मम सदृश मोल जो होय भूप । द्विज सगँ विचारि दीजै अनूप ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥
नृप नऊष अवन अतिके सु बैन । सुनिके सु होय अतिहीँ अचैन ॥ मतिमान द्विजनको साथ होय ।
करते विचार भे शोच भोय ॥ * * * * ॥ रामगीतीहन्द् ॥ * * * * *

समय तौनाहिँ माहिँ एक अति विपिनतँ अबदात । निकसिके नृप पास आए सुनऊ बुधिधर
तात ॥ गऊतँ भौ जन्म ताको महा तेजस धाम ॥ परम प्रज्ञावान सो मन तासु अति अभिराम ॥
कहत भौ सो बैन असेँ नऊष नृपसौं परम । करौंगे परसन्न हम अतिअवनको सह धर्म ॥ सब्य तुमसौं
कहत है मरनाह हे प्रज्ञावान । कहँ तुमसौं जान सो तुम करो भूप सुजान ॥ * ॥ नऊषउवाच ॥ * ॥
सुनऊ हे अतिराय प्रज्ञावान तेजसधाम । कह्यो हमका अवन अतिके सदृश मोल लक्षाम ॥

दरमचीरें वज्रको चर कोरें पूजा दान । होतरे कस्याच अतिरी कडात राम प्रदान । सुर्वेने
॥ * ॥ श्रीगणेशाय ॥ * ॥ मयके सुर्वेने सुनिचे सुजाय । इति करत भजे अपि मेवधान ।
व शीव चर मऊव भूप । अहिरीने कोरें अतिरी अमूर ॥ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥

चर सत चकोरें वा सुच चर्वनमाह । इतिरी कथा अतोचरी सुरभी हे नरनाह ॥
घातें इनको मोक्ष गुण कळ करी हे भूप । यच सुनिचे नृप मऊव अति बावी मोर चनूप ॥
॥ * ॥ तोरडा ॥ * ॥

जाच अचरकपि वाच मऊव भूप इति करत ये । उठऊ अचरक तपरच कळ हेक तम मोक्ष दान ॥
॥ * ॥ अचरकउवाच ॥ * ॥

सुनऊ मऊव मतिमान कियो मोक्ष मन सहच गुण । घातें मुदित महान हें तुमचे परचर दान ॥
॥ * ॥ रामगीतीशब्द ॥ * ॥

दरमचीरें वज्रको चर कोरें पूजा दान । होतरे कस्याच अतिरी कडात राम प्रदान । सुर्वेने
मो पूज्यहें चर चरकी सोपान । करत हें सच काननाको विधि सुनु सुनिमान ॥ * ॥ * ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरभीचे वन चौर नहिं सोड सुनऊ चर भूप । नारं तिचकी अति नहिं अदिवा परच चनूप ॥
॥ विवादाउक ॥ चले जाके चरुने परसम हे अचिराचाहेति ताचो विचता हेतासु प्रीतिदि शाय ॥
आपु इनको दिचो दरमन चो सु भोखे वैन । करत घातें जया चयने सुर्वेने मोक्ष दान ॥
अपि चैते आपु हो सच नरमने अचिराच । सोड सुरभी आपु इनको दया करि सु दरम ॥
अचरकउवाच ॥ घेनुको । इन कोरें हे तुम होळ अचरें इति होउ तुमने सुरचकीची प्रभा विनया भूति ॥
कोरें चरुदि नीर जनुज सहित शीवर चर । होउ मज आशीरने तुळ सेवपांत चर ॥
॥ * ॥ श्रीगणेशाय ॥ * ॥

सुर्वेने मोक्ष दानको आशीर अतिरी भूप । अच चरुच चरुको अचरक सुर्वेने मोक्ष दान ॥
मऊव तिचकी देडिचे वनमाहि विचरच कोर । तत अचरक सुर्वेने मोक्ष दानको अचरक ॥
मऊव नृपेको अचरक अचि जामु अच नरदान । घातें तच भय अच नर ननुच नुच अचरक ॥
अचरके विनि रवे सेरी गिद्यचे अचरक । भूषिकी अचि अचि अचरक सुर्वेने मोक्ष दान ॥
सुर्वेने मोक्ष दानको अचरके अचरक । दुहुनको अचि अचरके अचरक सुर्वेने मोक्ष दान ॥
अचरक अचि अच भय परच नर अचरके अचरक । अचरक अचरके अचरके अचरक ॥
पाचकी वरदान भूषिकी मऊव सुर्वेने मोक्ष दान । होच अचरके अचरके अचरके अचरक ॥

शां०
दा०

कर्म... ॥३॥

के मुक्त... ॥३॥

के मन्त्री... ॥३॥

सुदमादि... ॥३॥

तव... ॥३॥

योग... ॥३॥

रहो... ॥३॥

विहित... ॥३॥

होत है... ॥३॥

शिव... ॥३॥

नृप... ॥३॥

हम... ॥३॥

संभव... ॥३॥

दा०ध०

राखी जो तामारा जसहारा जाधिरा जश्री उदितनारायणस्या ज्ञानुगामिना श्रीवन्दीशुनकाशी
वासिरघुनाथकबीश्वरसिद्धो कुलनाथस्यात्मजो गोमाथस्यशिश्वेण नहि देवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दामधर्मे अष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बहु प्रकारके दान ह तिनमे अछ सु कौन । कहौ हमै अबगाहि कै अहो तात बुधिभोज ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

औ जो दीन्हों दान तौन मिलत परलोकमे । यामे सुनऊँ सुजान संशय होत महान ह ॥

॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥ चरणकुशकण्ठ ॥ * ॥

अभय सर्व भूतनकों दीबो । दुखमे परम अनुग्रह कीबो ॥ दृषित जौन मागनको आवै ।
ताहि देय सुदसों अति छावै ॥ दिए दानकों दियो न मानै । बुध तिहँ दानहि अछ बखानै ॥
दियो दान परलोकमाहीं । मिलत अबश्यहि संशय नाहीं ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूमि हेमको दानसो अति पवित्र है तात । दान कसुप तनकी प्रभा करत परम अवदात ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

साधुनकों ए दान दीजै नित्यहिं प्रीति सह । करि सनमान महान कहि कै कोमल बचन भर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे अन्नयुद्धलकों चहत ते हियमे करि प्रेम । लोकनाहिं प्रिय वस्तु जे दिजकों देत समेन ॥
प्रियवस्तुनकों देत जे प्रियवस्तुहि ते लेत । रहत समुद परलोकमे बुध जन कहत सचेत ॥

जे जन मागैं आय कै सदुख दरिदसों भूर । यथा शक्ति जे देत नहिं तिनकों ते हैं क्रूर ॥

अनुऊँ रहि कै दीनता आवै शरणे माहि । ताको जे रक्षा करत करत द्रोहको नाहि ॥

ते अति उत्तम पुरुष हैं परम प्रसंशावांन । तिनके दरनमें मिटत है अघको अघ महान ॥

बियाबाँन सु विप्र जे लीख चुधासों परम । तिनको जे सु चुधा हरैं ते हैं स्वयं सधर्म ॥

॥ * ॥ अरिसुखण्ड ॥ * ॥

देव मनुजसों ज नहि मागत । औ नहिं कबऊँ क्रोधमे पागत ॥ जोई अन्न होत तिहसो
अति । महत मोषहि रहत समुद मिति ॥ राखऊँ जैसे विप्रनको डर । भाषऊँ तिनसों नित्य सख
वर । तिनकों करि बहु विधि सनमान सु । करिऊँ निमबन सुनऊँ सुजान सु ॥ सब धर्मनमें यह
अति उत्तम । सुन्यो महानतिमाननसों हम ॥ रहो दान तुम देत सर्वदिन । प्रसन्न
अरुचि करऊँ जिन ॥ नारी पति आधीन रहति जनि । हम द्विजके आधीन रहत निधि ॥
लागत सबतें तुम हमकों प्रिय । तुमऊँतें प्रिय विप्र लगत जिय । सेरे पिता गए जिहँसोमाहि ।
यऊँ सुधर्मतें होय अशोकहि ॥ जे हैं हमऊँ सुनऊँ हे नृपवर । हे जैसे नहि सोर धर्मकर ॥

सक्तिशीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजभोक्तुलनाथस्यात्मजोपीनाथस्यशिश्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे उत्तमानु शासने एकोऽष्टषष्ठितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ रामगीतोच्छन्द ॥ * ॥

बुधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ याचमान अयाच मानहिं दियो जो हे दाना दुऊनिमाहिं कौन सो हे
श्रेष्ठ सुनु मतिमान ॥ भीष्मउवाच ॥ दियो जौन अयाचमानाहिं श्रेष्ठ सो हे दान ॥ परम उत्तम
हे अयाची विप्र हे मतिमान ॥ * * * * *

जे अत्रिय रक्षा करत नहे धोरता पर्य ॥ ते अति उत्तम हे सुनऊ कहत सुबहु अर्भ ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

जे अयाचमानां हि विप्र भीर्यताको नहत ॥ तिनको सम हे नाहिं याचमान जे विप्र हे ॥

॥ * ॥ मल्लिकाच्छन्द ॥ * ॥

धीर्यमान विप्र जौन ॥ श्रेष्ठ हे सुजान तौन ॥ देवता हि तृप्त पर्य ॥ ते करे सुने सधर्म ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विविधि भातिके दुःख सहि अरु दुख दे दाताहिं जौन याचना करत द्विज तौन श्रेष्ठ हे नाहिं ॥
माते जे द्विज याचना करण न आबत तात ॥ तिनको कै सममान तुम देऊ दान अवदात ॥

दीपो जैसे द्विजनों सो उत्तम है यज्ञ ॥ प्रवृत्त रहै यामे सदा सुनऊ भूपवर प्रज्ञ ॥

सक्तिशीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना बन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजभोक्तुलनाथपुत्रजोपीनाथस्यशिश्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे षष्ठितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ बुधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौन कालने कौत्रिय यज्ञ क्रिया अभिराम ॥ कैसे द्विजको दोजिए दान कहऊ बुधिधाम ॥

॥ * ॥ भोष्मउवाच ॥ * ॥

कर्म भयानक सर्वे हे अत्रियको हे तात ॥ पावन कर्म सु दान एक कहत सुबुध अवदात ॥
सुनऊ भूष यद्य जगतने जे नृप है अघकार ॥ ग्रहण कछू नाहिं करत हे तिनको साधु उदार ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

यामि कौत्रिय यज्ञ दान दीदिए द्विजनों ॥ सुनऊ नृपति वरप्रज्ञ सु बुधनको सिद्धान्त यह ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जाके धनको करत हे ग्रहण न विप्र अनूप ॥ ताको साधन होत नहिं कौनऊ सिद्धि सु भूप ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

विप्र कुटुम्बी जौन तिनहे देऊ द्रव्य तुम ॥ या सस सुनु बुधिजौन परम प्रसादि तीरही ॥

५३

॥ ... ॥
 ॥ ... ॥
 ॥ ... ॥
 ॥ ... ॥
 ॥ ... ॥
 ॥ ... ॥

नशाभूतमगाहिं चौर न भूमि सुव है अक्ष । ... ॥
 वसुधै कुर्वत मातृभूमिं ॥ ... ॥
 वृत्रहृदिभ्यो भृशं वृत्रहं कथं च सुभूय ॥ ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥

॥ * ॥ लोकाणि ॥ * ॥

शांभु
दांभु

देव प्रभिराणाहि जे सुरभी बल समेता ते दिवसाही सहत हे परकीभयो निकेत ॥
 आर्द्राने जे देत हैं अक्षरतिथानयो पर्न । दुर्गमाकेही होत ते पार समीह सधर्म ॥
 पुनर्वसुने देत जे पूष द्विजनों भूष । होत महाधनवान हो कीरति सहत अमूष ॥
 माघक जे जम देत हे पुष्यमसतके वीष । सधं प्रकाशक लोकने ग्रहिलौ सहत निभीष ॥
 अश्लेषाने देत जे द्विजहि रजतको दान । झूठत ताको सर्व भय सहत लोक सुखवान ॥
 तिससो पूष्य शकजे देत मघाकेभाहि । सी सुत सुन्दर सहत हे सहत दुखको नाहि ॥

॥ * ॥ परणादोहा ॥ * ॥

पूर्वा पाशुण्डीने जे जम भारस देत अनन्दातीन सहत सौभाग्य महत हैं सहत कबळ नहिदन्द ॥
 उषाने जे आडी सोढम दुग्ध सु घृतसो देत । अमरलोकने सहत तौन हे परमा मयो निकेत ॥
 ज्येष्ठो दान देत हे अनसपाशाणीने पर्न । होत महाफल तिनतिनको हे नै हो कहत अभर्म ॥
 अश्लेषाने देत जे द्विजको इच्छी दान । परम लोकने प्राप्त नै पावत मोद महान ॥
 जे जम विद्यामस्तने वृषभ सुगन्ध छि देत । तौन अक्षरन संग बनमन्दको सुख लेत ॥
 आतीमही देत हे अतिप्रिय भनको जौन । पावत हैं दुःख लोकने यत्र अरु सुखको तौन ॥
 सुरभी देती दुग्ध अरु वृषभ चारु जे देत । महत विद्याखानाहि ते कबळ न दुखको लेत ॥
 कार्त्तिक देवत अरु फिन्द हस्त रहत हैं पर्न । स्वर्गलोकने सहत सो सुखको भूरि अभर्म ॥
 जे जम व्रत करि देत हैं अन्न बसन अचदात । अनुराधाने कीर्ति अति तिनको चारु विभात ॥
 अश्लेषाने ते रहते हैं स्वर्गलोकने अच । सुरजिनको चाहत रहत कहत सुबुध हैं दक्ष ॥
 जेष्ठाने जे देत हैं काश्याक अभिराम । बांशित गतिका होत सो प्राप्त कहत बुध मान ॥
 पूष्यमस्तने देत जे द्विजको कस अरु मूल । वास पाय सो स्वर्गने सुखको सहत अतूल ॥
 जे जम पूर्वाषाढने रविसे भरो अमन्द । पाच देत हैं द्विजनों ते न सहत हैं दन्द ॥
 दुग्धवती बळ होहि जिहिकुलने सुरभी चारु । होत तौन कुल माहि सो सहत अनन्द अपार ॥
 अतरोषाढनसर्गने हस्तु सुघृत दे जौन । सर्व कामना सहत हे सुनळ देवकी तौन ॥
 मधु घृत दुग्ध सु देत जे अभिजितने अभिराम । स्वर्गलोककी होत सो प्राप्त कहत बुधिधान ॥
 कात्याज जे जम देत हे अश्लेषमस्तकोभाहि । ते विभात पै बैठि की जात सुरनके पाहि ॥
 अश्लेष देत जे देत हैं अश्लेषने होवोष । नरहान्तरने बिलत हैं तिनका राज्य निभीष ॥
 अश्लेषने जे देत हैं अतरोषिके अभिराम । विद्वरत ते अक्षरन संग सहत गन्ध सौखाम ॥
 अश्लेषदेवताहि जे राजमान भुषि देत । स्वर्गनाहि ते प्राप्त नै सर्व सुखनेकी लेत ॥

श्रावण
दास

उत्तरभाद्रपदमाहिं जे नशि देत अशिराभि नमुत तेने ताकी पितर वायु रहत सुख जाई ॥ १ ॥
अशितरेवतीमाहिं वर जे जग सुखी देत । सर्वक सुख ताकी अजग सुखरीरि दान करी ॥ २ ॥
सर्व कामना सहित ही सुखी अति अशिराभि प्रात होत आतार को सुखद कष्ट असा ॥ ३ ॥
नखत अशनीमाहिं जे अश सहित दान देत ॥ हाची दान सुखपास ते जगांतरने होत ॥ ४ ॥
द्विजहि दान तिजसे जे अशनीमाहिं उदार । वर सुखी माकी भिक्षा सह वर सुख असा ॥ ५ ॥
॥ * ॥ गोप्य उवाच ॥ * ॥

नखत योषिने दानको जो पास होत अणू । कष्टो देखीसो सर्व माखरुणि देखू ॥ ६ ॥
कष्टो देखी घट सुखस पुत्र वधुसो सर्व । धर्म धाम अशिराभि वर भूपति सुख असा ॥ ७ ॥
सखिभीकाशोराजमहाराजाशिराजची उदितगार । अशसा अशानुवाचिना । काशरी अशनीमाहिं पाशि
रघुनाथकाशीचाराजजो कुलनाथसात्मजोपीनाथस्यधिकीर । माहि देखे कविना । अशिक्षे काशपा
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म अनुचिंतनोप्याच ॥ * * * * * ॥ ८ ॥
॥ * ॥ गोप्य उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रह्मोकी सुत अशिमनि कही बात यह भूषा जे जग कायम देत ते सुखी करत अणू ॥ ९ ॥
सर्व कामना देनको पास जे हे अनिराभ । हे नदको सी होत हे जात सुख अशिराभि ॥ १० ॥
॥ * ॥ नक्षिकाहन् ॥ * ॥
हेनदान देत जेन । मोदकी महान तेन ॥ प्रात होत हे सुजाग । अशिराभि सहि महान ॥ ११ ॥
होत हे यविन परी । अशनी सहि सधर्म ॥ आयुको सहि विशद । न सहि अशिराभि ॥ * * * * * ॥ १२ ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पितर रहत परसत्र हे हेनदको भूपास । कष्टो यह सु अशमाहिं ही शरदक नूपास ॥ १३ ॥
मौक्तिकादान किए घृतदान सुखे मतिमान । वृहस्पति होत प्रसन्न अशिराभि ॥ १४ ॥
सुखे अश अशिराभि प्रसन्न सु होत । अशिराभि महानति पोत ॥ १५ ॥
॥ * ॥ शेरठा ॥ * ॥

जो अशनी कुमार भारतख घृतदानको । होत प्रसन्न उदार करत अशिराभि ॥ १६ ॥
॥ * ॥ रामगीतीहन् ॥ * ॥

अष्ट हे सवरसमने घृत कहत पुत्र अशिराभि । होत वर यह सुख ताकी अशिराभि ॥ १७ ॥
कारमे जे हेत घृतकी दान द्विजको नूष । अशिराभि दान ताकी अशिराभि परने अशिराभि ॥ १८ ॥
भोजन देत घृतयुत द्विजको जग जेना प्रित ताकी अशिराभि अशिराभि करत न जाण ॥ देत हे जग जे
करीदा पात्रको अशिराभि । अशिराभि अशिराभि अशिराभि अशिराभि अशिराभि ॥ १९ ॥

शा०प०
दा०प०

काच सोऽहमेतः। सर्वं तापं होत करिष्ये विधिं कुर्वन्प्रवृत्तः॥ रक्षत मास्मिन्न चरिष्ये सो नित्यदी
वसन्ति॥ विधिं सोऽहो भूमिं तापं सुखं पापं मन्त्रं ॥ देवताके समानसंज्ञे निधाता सो साय ।
कस्तृषी भूमिं तापं सो सुखं पापं मन्त्रं ॥ सर्वं सुर विधिं कस्तृषी निधियो अयं के इति प्रश
देउ सुन्दर देवभूने करे तहँ हन कष्ट ॥ ३ ॥ देवाउचू ॥ ३ ॥ भूमिके अह सर्गके प्रभु आपु हो
लोपीर । आपुके अह अह सोऽहो कश्चिन्त सुरेभ ॥ देव माग्ने भूमिमाही यज्ञ कीजे पुर्ण ।
देउ यति तपा करि कै र्है यज्ञ यर्षी ॥ दई सुखमीमाहि हे यज्ञ यज्ञको फल होत। परापर के
गाय हो तुम्हकरेय सोऽह अदेत ॥ योग्य चाज्ञा देनके हो आपु पाते माय । देउ चाज्ञा कर
जासो यज्ञ संभ सुरसाय ॥ ३ ॥ विधिं यवाय ॥ ३ ॥ देत है अह तुहँ कीये यज्ञ भूमि यमन्द ।
करौ तेहा जाम के तुम्ह यज्ञ हे सुरपुत्र ॥ ३ ॥ देवाउचू ॥ ३ ॥ सुखं मीने काम आप
आपुके अह मीउ । अस्मिन्तव विधि जो सौ परय आपनरहास ॥ दधी जो कुरुसेम इनको देय यह
अधिरास । असा है विधिमाहि वज्र अवि पुषको हे भान ॥ यज्ञ पाही देयने हन करै सो
लोकेय । कहि सु खैसे विधातायो अमर सह यमदेय ॥ करय मल कुरुसेमाही भय आवत
सर्व । कम्प अवि अणिके अह अवि पुत्रकपि सु अरुर्ष । अस्मिन् देवल आदि अवि तव तहां आए
दव । अस्मिन् अहो मे अह करौ यज्ञ संभ सुर लया । कियो पूरय यज्ञ विधिं यत अस्मिन् अह सुर
वृन्द । तंत यमनार यज्ञ भूयो अयं यज्ञ यमन्द ॥ देय कै संव यमनर आनंद भरे भूरि अर्षय । गय
अपने सोऽहो ही अस्मिन्तव यमनर ॥ सुखं पाते महत जनकी खेय चाज्ञा तात । यज्ञ कीजे
प्रशंसो अह सुखं है अररान ॥

॥ ३ ॥ देवा ॥ ३ ॥

अस्मिन्तव देवत है अह यमनर ययुष । सोऽह सर्गको जात है सुखं सुभिष्ठिद भूप ॥
अयमि यमनर अस्मिन्तव सुखं अहो मे सुखं देत । अहो अहो कने प्राप्त नै तौम महत सुख सेत ॥

॥ ३ ॥ अथ ॥ ३ ॥

हर्षो अतन्महे सुखं द्याम जनौम यमयमं । सुरभिन्दकाजे तौम पाय अति मोदहि भावत ॥
कीरति भूमिं कुरु अह सुभिष्ठिद ययुषी । तास्तु ॥ यमयति अहत महान् दम्भ दीनकको डारत ॥ शुभ
सोचभूमिको देत अते अचि मीमा अहत सैमहि अहत सुख वज्र अहत सुख अहत पुण्य बुध कहतह ॥

॥ ३ ॥ तोमरदम्भ ॥ ३ ॥

महिरानकी यमसौम । हिनको सु देत है यमन ॥ सुखकीउ उहि सुमाना सहि कै र्है सुदमान ॥

॥ ३ ॥ सुन्दरीदम्भ ॥ ३ ॥

अह सुभिष्ठिद निष्ठा हीमिन्त । सोऽहो अहि यमनर कीमिष ॥ सुन्दर भूमि है देत सु अे जन
भूमि यमयम पायत ते जन ॥ ३ ॥

॥ * ॥ चक्रवाक्यन्द ॥ * ॥

औरकासु भूमिनाहि आदको किए सुजान । आद होत अर्थ बुद्धिमान ने कहे मजान ॥
भूमि मोलि लोप पिण्डदानको करै सुजान । हे सुनो महीप यह पुण्यको सचै सुजान ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौनऊ बिघनन होत है सस्य पितर अति होत । बढत बंध त्रिदिपुण्यते सुनऊ नृपति बुधिपोत ॥
पर्वतको अरु विपिनको तार्थकूलको पर्य । हे पुऊनी अस्वामिका बुधवर कहत अर्भ ॥

॥ * ॥ सेरठा ॥ * ॥

बुधवर कहत समर्थ धार्ते इन फलमीनमे । होत आद नहि अर्थ मही लोख दीन्हेऊ बिना ॥

॥ * ॥ रामगीतीशन्द ॥ * ॥

करति हैं सबअङ्गसों उपकार सुरभी पर्य । होति सैसी पुण्यधाना सुनऊ भूप सधर्म ॥ करति
रक्षा सर्वकीहैं सुरभिका अभिराम । कहत है अतिमान वर द्विज महा मेधाभाव ॥ निर्ये जे जन
देत विप्रहि बोलि सादर भूप । होत है परसस्य ताके पितर देव अनूप ॥ मूरका अरु नागतीकहि
दोगिए नहि गाय । औ न दीजे बधनकाजे सुनऊ हे नरराय ॥ देत जे जन अहत्त ते जन नर्कनाही
वास । कबऊ निकरें नर तरें नहि कहत हैं बुधिरास ॥ बस बिनकी गाय दीजे द्विजक्यों नहि
भूप । अङ्गहीना दुर्वला सौ कहत प्रसन्न अनूप ॥ औन बंध्या दजयुता नो दीजिए सुति दस ।
कहत हैं अवगाहि कै बुध बुद्धि जिनकी लख ॥ * * * ॥ * ॥ चरषादोहा ॥ * * * ॥ * * *

भूमिदान अरु अन्नदान अरुनउदान तिसदानादनको कछो महातिम तुमसों सर्वसुनऊनतिपदन ॥
खलिथीकाशीराजमहाराजाधिराजचीउदितनारायसस्याङ्गानुगामिना औबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकबोअराजअनोकुलनापस्याङ्गअनोपीनापस्यभिषेय नषिदेनेन कविना विदितो भाषाशं
महाभारतदर्पसे श्रान्तिपर्वणि दानधर्मे पञ्चषडितमोउध्याय ॥ * * * ॥ * * * ॥ * * *

॥ * ॥ बुधिद्विरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुन्यो । सर्व इन आपुसों दाननको फल लख । तिनमें पासीदान फल कछो अधिक किमि दस ॥
इच्छा अरु यह सुननकी मो मनमे है तात । कहे आपु अरुगाहि कै नरपुभिभर अन्नदात ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ मधुभारशन्द ॥ * ॥

पासीदान । ताने सुजान ॥ फल अधिक ज्ञान । इन कहत तौन ॥

॥ * ॥ पञ्चमोहाशन्द ॥ * ॥

जलतंसु अन्न उत्पन्न होत । अन्न जिन अ होत कहु सुप्रति प्रोता ॥ मो नीर तेहि अन्न फलौ नैरुधि
अनेक तरुता वृन्द ॥ सबहोत नीरधीतें सुजान । हे सर्व जीमते कबलि ज्ञान ॥ अन्न दातों
सु जलदानमाह । याते आधिक फल भूमिनाह ॥ * * * ॥ * * * ॥ * * *

॥ अथ महादेवः ॥

सायं
दधि

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

यह प्रवृत्तनाहि कहत हम एक विचरि अमृत ॥ यमको अह दिजवरको नामे हे संवाद सुभूप ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

... ॥ अथ महादेवः ॥
... ॥ अथ महादेवः ॥

॥ श्री कृष्ण ॥

आह्वानार्थं तिस्रहानकी परम प्रसादात् । यतो तिस्र दीजि द्विजहि सुगज विम मुनिता ॥
पूर्णिमा वैशाखकी याने जे तिस्रहोके । साँकोकने जाँ नै तौन चहत सुख सेत ॥

॥ श्री कृष्ण ॥

जैन असायको धर्मपावन । तौन स्वर्गने भक्ति सुख पावतु । ऐश्वर्य उत्तम घरको पक्ष पर ।
जल से देह धाँते त्रिभि मुनिपर ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ श्री कृष्णै धर्म सुप होय रहे जब ।
सेव्य भव्यो मन्मथ द्विजहि तव ॥ विग्रहि पञ्चपायो महवाहि सु । कामे येरि प्रसन्नो पाँरि तु ॥
बाह्या सेरि धर्मको साँ करि । दूत जाय धर्मको गहि करि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
सेव्य भव्यो सा श्रीवर्ही धर्मरायको नाम । धर्मराय ताँको सँ सुदिन भव्यो सुविराम ॥

॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

यम स्वर्गको पूजा करि कै । कियो नच कहू नोइसो मरि कै ॥ सायन जो पाँ द्विज धर्मको ।
कीन्हो सार्व द्विज धर्मको ॥ फिर सादर पठय निजबेहे । सप्रदूत करि सखि कहे ॥ भाष
केहनहि द्विजवर धर्म । कीन्हो जैन कश्यो धम धर्म ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ जो मन
करत दीपको दाने । सो जन पुखहि सखत महाने ॥ तौन पुखसँ जिनहि नारे । श्री कृष्ण उवाच
नहीने भारे ॥ दीपदानते सब सुख लीजे । यतौ दीपदानको कीजे ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
रते दिई कस जैन होत तौन हम कहत चप । सुगज तात बुधि तौन धर्म सुखर कीर्तिवरे ॥

॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

रजदान देत जैन । पुखको महान तौन ॥ प्रात होत है सुजान । कीर्तिके सँ करेनत साँहि
दीजिह सुरत । जैन धेपिके सुखला । यज्ञको करे चणू । शीत होति कै सुगुण ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

जम कस देत सु जैन है । मुधि कीर्ति सेत सु तौन है । रात ते रहे मिज दारने त्रिभि मुनि नारै सु
ठारने ॥ मुधि नेत्र मिमकी सेत है । नहु कर्त पुख उदोत है ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दान धर्मको भूय । अति उत्तम है कहत मुप । यतौ यम 'चणू' दीजे सुखेकीकरी ॥
सखिबीकासीरजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायण स्वामिनि ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥
रघुनाथको श्रीरामजो सुखनाथसाँजो पीनाथसाँ । त्रिबेस । सखिबीकासीरजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायण स्वामिनि ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

साँहि कहे विधि दण्डते भक्ति सुख है जैन । यतौ दण्ड है हम मा करे सुखे तौन पुखीकरी ॥
॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ ॥

॥ * ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ * ॥

शांभु
दा०ध०

भारतीयो यो भवति ए तीमजं अभिराम । देति तुभ्यं फलं ह्ये कश्चि सुभुव सुमजं विप्रियाम ॥

॥ * ॥ रामभीतीहृद् ॥ * ॥

भारतीयो जे देत शिष्यहि प्रेमसो अज ज्ञान । फल भूको दानको फल सहत ह्ये जम ताम ॥ तिमि
 हि जे अज देत सुरभी प्रेमसो अभिराम ॥ भारती भूदानको फल सहत ते ह्ये नाम ॥ उपजती
 सुधि भूमिकाको देत ह्ये अज ज्ञान । सहत सुरभी भारतीको दानको फल ताम ॥ सर्वभूतमकी सु
 नामा सुरभिका ह्ये भूय । करम तिमकी जे प्रदक्षिण सहत वृद्धि अनूप ॥ फल नखलनाहि वीर्य
 अर्द्ध नहि प्राप्त । परशिए फल ह्ये न बदसो नजको अचदात ॥ पूजिवेके योग्य सुरभी निव्य ह्ये
 भूपाय ॥ नहि नखल देति ह्ये वज हरति प्राप विनाश ॥ कष्ट प्रापति होष ओहिबलनाहि वीर्य
 नोको पर्य । जारिं नहि होष तिहिबलनाहि कहत सधर्म ॥ लेष जात सु ज्ञान सुरभी वज
 नसकीकहि न होष सोपे जहा सुरभी सहै जे अज नाहि ॥ होष तो जम तामको अच प्राप्त
 अतिहि कष्टम । प्रकृतताको हनति सुरभी कहत ह्ये नतिनाम ॥ होत जासु पुरीषमे ह्ये परम
 पावन नाम ॥ ह्येवह्ये अच बितरवृद्ध भुष कहत ह्ये अचदात ॥ सुमजं यामे यैर सुरभी वज
 पतिम न सोप ॥ सोपे विप्रको अचदाती रज को न वाचन होष ॥ देत परकी नजको जे सर्वसोपर
 घास । सर्वे वेदवकी न फल ह्ये हिरवाहो आस ॥ सर्व कामद घास व्रतको सहत ह्ये फल ताम ।
 विप्रको सुभुव अच सुभुव सुधिको भैतम ॥ मिठत सर्व अरिष्ठ ह्ये अच निवृत्ति सप्रति पर्य ।
 सहत होष सुभुवको नहि कहत प्रज्ञ अमर्ष ॥ * ॥ पुधिछिरउवाच ॥ * ॥ कौन लक्षणी सु
 सुरभी विप्रको ह्ये नाम । कहे कसे विप्रको नो दीजिए अचदात ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ विप्र
 सोभी अमर्षको ह्ये नाम । देपकारज पितरकारज करे जेन सचाप ॥ नाहिज नहि
 दीजिए को सुमजं ह्ये नरराय । होष विप्र कुलीन ताके ह्येहि सुत वज भूप । पितर कारज देव
 कारज करे निवृत्त ॥ नाहि साहर गोत्र दीजे सुरभिका अभिराम । दिए जैसे विप्रको नो
 अच दिवने वजम । ह्ये होके अमर्षो ह्ये करत प्रज्ञ सधर्म । सहत वजम अच दाता तासु
 पतिम नो ॥ सोपे जे अमर्ष अच दे अमर्षको ज्ञान । भीतमे जे करम रसा ताम सुभुवुधि
 भीष्म उवाच ह्ये नाम । अमर्ष अच होक सुमान । किए आशा भङ्ग रमकी होत होष अज्ञान ॥
 कहे सर्वसो अमर्ष अच अचकारी अच । अमर्षे रज होष अच सुनिवृत्त अतिभी ह्ये ॥ सुभुवु
 वेदो अमर्षो ह्ये नाम । अमर्ष अच होक सुमान । किए आशा भङ्ग रमकी होत होष अज्ञान ॥
 अमर्षो अच अचकारी अच । अमर्षे रज होष अच सुनिवृत्त अतिभी ह्ये ॥ सुभुवु
 वेदो अमर्षो ह्ये नाम । अमर्ष अच होक सुमान । किए आशा भङ्ग रमकी होत होष अज्ञान ॥
 अमर्षो अच अचकारी अच । अमर्षे रज होष अच सुनिवृत्त अतिभी ह्ये ॥ सुभुवु
 वेदो अमर्षो ह्ये नाम । अमर्ष अच होक सुमान । किए आशा भङ्ग रमकी होत होष अज्ञान ॥

॥१०००
॥१०००

हरे कृपञ्ज न भूप । चौ न दार । खलै कवर्त्त निप्रकी सु अनूप ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ विप्रको
 धन हरणनाहीं प्रह्वजन अवदात । कहत हैं आख्यान मृगको सुनहु सो तुम तात ॥ विप्रको धन
 हरणने मृग सहो दुःख विप्रास । सुनऊ पाते विप्रको धन छीजिए न नृपाल ॥ दारिद्र्यको मोहि
 हो एक कृप अति मसीर । ठपो सै हण तदस्सि सी सुनऊ अपति धीर ॥ सगे कौतुक नाहिं
 यादव गए ताको प्रास । मोरि तह हण देरि कीन्हें सबूते प्रति प्यास ॥ परो हो ककशास एक ता
 कृपने सुन भूप । मन्ना दीरघ देह ताको घोर रूप अनूप ॥ करत भे कञ्ज मज ताको काठियेको पर्न ।
 काहि पै तर्हिं सके यादव बके सर्व सधर्म ॥ पास यादवरायको गए यादव सर्व । कहत भे कक
 शासकी वृत्तान्त हरिषों सर्व ॥ यादवा ऊचू ॥ सुनहु यादवरायञ्ज अतिदीर्घ एक ककशास । घोर
 रूप अनूप कीन्हें कृपने हैं बास ॥ सर्व कृपहि रोकि राख्यो कदन काठें नाशिबेन काने ए कञ्ज आवत
 भए ताके पाहिं ॥ किथो खलि उहार ताको कण्ठ पाष कुवाय । ताहिबेन भए चेटे कण्ठ विभूतन
 राया ॥ कहे तुम अबनाहि अपनो पूर्वको वृत्तान्तबेन सुनि ए कण्ठके मृग भरो मोर गिताम्ना ॥ कह
 न लागो पूर्वको वृत्तान्त नृप नृप पर्न ॥ नृपउवाच ॥ सुनऊ हरि हत क्रिय हे मज प्रह्वजन सुभर्न ॥
 कस्यो इति तव कण्ठ सुनि ए बेन मृगको भूप ॥ सुनऊ नृप शुभ कर्मकर हो यर्माधर सु अनूप ॥ कहे
 तुम किमि कही असो दया दुखदा मान । दर्द कोटिन्ह द्विजम्हको तुम ये समस्य कथान ॥ सुन
 भो मत कहाँ सो तव महत हे मृगदच । कहत भो तव कण्ठजूसो नृप सु भूप प्रतच ॥ अधि होपी
 विप्र हो एक महातेजसधाम । निखी ताकी कूटि नो मज नोमने अभिराम ॥ तौनचरित किथो
 हो सहस्य हम बदुराय । सहस सुरभी देनको अति हर्म हियजे हाथ ॥ सहस सुरभियेनाहिं
 तौनऊ सुरभिकाको ज्ञास । सेय आथो पास मेरे सुनऊ कण्ठ कपास ॥ इहे कही द्विजको
 त सर्व सहित सनेह । मज से से समुद्र द्विज सब नए अपने नेह ॥ अधिहोपी कस्यो कथिहे नाहिं
 कूडत नाथ । दर्द हो जिहि विप्रको हम नाथ तापे आय ॥ कहत भो इति नाथ तौ मज हे हनारी
 विप्र । करत दोऊ भए आवत पास मेरे द्विप्र ॥ कहत भे मे बेन सेवे मोहि हे मृगदच । देत
 तुमहो भजकी धारि सेत तुमहीं भूप ॥ दर्द हो जिहि विप्रको हम नाथ हे बदुराय । कस्यो
 तौन विप्रों हम जोरि कर बधि पाय ॥ सेऊ तुम यहे मज बदले सहस दूध मज नाथ । बेन
 मेरे सहस करि के कस्यो द्विज रहिं नाथ ॥ जाययो गहि दर्द गोसां नाथ कथे अभिराम । कथि
 नेको परन प्यारी देनि दुग्ध खखानी ॥ जात भो निज धामको द्विज मोहि इति कथि पुन । कस्यो
 हम तव अधिहोपीविप्रों मृग बेन ॥ सेऊ तुम यह मज बदले सहस दूध मज नाथ । कथत हे
 कर जोरि सुनहीं सुनऊ बुद्धि अगाव ॥ कहत भो तव विप्र मोहीं बेन सेवे परे ॥ यादवउवाच ॥
 सेत हम नाहिं मज मृगकी सुनऊ भूप अघर्म ॥ जात भो निज धामको सो मोहि बधि इति
 बेन । काख तौनहिं नाहिं हे श्रीकण्ठ आनन्दबेन ॥ सुनको मज होय के हम गए यन्त्रो

पास ॥ कहत भेयन मोहि अंत पूजि सहित ऊलास ॥ है न संख्या पुण्यकी तब सुनऊँ नृग नहि शां०
पास । क्रियो तुम है पाप सोऊ विना जाव विनास ॥ * * * * * दा०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि हरिचा द्विजनों कहि इनि तुम नाहिँ कीन । और ब्राह्मणकी धम हस्यो मुम नृपमृपति प्रथीन ॥
॥ * ॥ पम्भक्तसीहन्द ॥ * ॥

तुम पाप कीन्ह ए हो विनास । अब ब्रजत पुण्य कीन्हें नृपाल ॥ करि हो सुभोग तिनको सु
जाव । यह नाहिँ आपु समभो त आन ॥ * * * * * दोहा ॥ * ॥ * * * * *
बाहे परब भोगिए पुण्यहि सुखद अनूप । बाहू भोगो पापदो हे नृग सुनऊ सु भूप ॥
॥ * ॥ तोमरहन्द ॥ * ॥

यमको सु ए सुनि बैनाहन कष्य आनद अनाइनि कस्यो यमसो पर्न । पहिले सु भोगि अधर्म ॥
हम भोगि हैं सुखदाय । फिरि पुण्यको सह चाय ॥ सुनि बैन ए यमराज । इनि कस्यो हे महाराज ।
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जाऊ भोगिए पापको प्रबनहि हे नृप भूष । फेरि भोगियो पुण्यको सुखद महान अनूप ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

फेरि कस्यो इनि मोहि भूने जब मै गिरत भो ॥ कष्य तारि हैं तोहि जगदाधार सु मोदमय ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वर्षसहस्रमे शेष भो अब तब पातक चीन । पुण्य लोकको प्राप्त तब अहे हो नृपति प्रवीन ॥
तबसो मै ककालानु अहे परो रस्यो यहकूप । श्रुति रही वैहँ जन्मकी मोंको सर्व अनूप ॥
परब पाय तब करणको भो मेरो उदार । स्वर्गलोकको जात हा मै अब मोद अगार ॥
परबि पाय सदुराजको पाय मोदको पर्न । अडि विमान वै जात भो दिवको सुनृग सधर्म ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तिहो समयकेनाहि कहत भए इनि बैन हरिधन विप्रनको नाहिँ कवळ न हरिए सुनु नृपति ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दान दिए जैसी सुकल होत सुनऊँ महिपाल । द्रोह किए द्विजसो कुकल तैसो होत विनास ॥
सखीयो कायो राजनहार । अभिराज श्री उदित नारायण स्यात्प्राप्तुनामिना बन्दीजनका श्रीवाधि
रघुनाथकी शरात्मजो कुलनाथ स्यात्प्राप्तुनामोपोना प्रस्यसिन्धेण मयि देवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे दानधर्मे कष्यनृपोपाख्याने अष्टपद्यितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

११००
११००

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
सुस्वी दीन्हें जिहें कलहि होत प्राप्त जन परम । कही ताहि निष्कारि के मनसो तात प्रथम ॥
कही सुरभीके दानको कही आपु बज बर । इति वै क नै अबहि नो सुनऊ सुनि ॥
॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

एक इतिहास कहत हम याने सुन सो छोडि प्रमाद । उहालक श्री नाचिकेतको तामे है समाद ॥
॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

नाचिकेतसो सौं बानी । कहत भए उहालक ज्ञानी ॥ करऊ सु सेवा तात हमारी । करि है
हम बस रचना भारी ॥ कहि इनि महारचमाने लागे । उहालक ऋषि मुखो पायो पूरब कै मल
रचना भीकी । कीन्ही सिद्धि कामना हीकी ॥ ऋषिवर जाय औरबल माहीं । हाहि कै नाचिके
तका पाहीं ॥ कही बचन इनि हे सुनु राजन । काष्ट दर्भ अर सुमन सुभाजन ॥ नदिका तीर
भूलि हम आए । ख्याबी जाय शीघ्रता जाए ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
नाचिकेत ए बचन सुनि गए नदीके कूल । तहां नही देखो कबू समय भरे अतूल ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

नाचिकेत अति अनसो जाए । पास उहालक ऋषिके आए ॥ कहत भए इनि बचन पितासे ॥
हाय रहे अतिहैं भै भासों ॥ बहि ने सबे नदीके माहीं । काष्ठादिक देखे हम नाहीं ॥
नाचिकेतको सुनि यह बानी । के चिन्ता मनमाहिं महीनी ॥ इनि करि जोष कही ऋषिरार्द्र ।
यमकों अबहिं लखो तुम जाई ॥ नाचिकेत यह बानी सुनिके । कही जोरि कर शीघ्रहि पुनिके ॥
होऊ प्रसन्न करऊ कुंभ नाहीं । कहतहि यह सु गिरो माहिनाहीं ॥ सुतकों कृतक देखि हा कहि कै
उहालक शुक थिलिसों दहिके ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गिर गिर भूमे कहत इनि हाय कहाँ हम कीन । जिनि जिनि सुतकों लखत हैं शैत दुख अति पीन ॥
पुत्र शोककेमाहिं ऋषि भो बिह्वल अति भूप । बोति गयां दिन कष्टदा आई निग्रम चतुर्भू ॥
॥ * ॥ अरिलकण्ड ॥ * ॥

रोवत हाय हाय ऋषि कहि कहि । नाचिकेत तन हियने गहि गहि ॥ तिहींसमय जो
जीवत ऋषि सुत । सोवत जग्ये मनऊं छेछायुत ॥ जीवत सुत शुक जात नको इनि । आमु उद
यते जात तिमिर जिनि ॥ नाचिकेतको हियने ऋषि बरे । साथ कही तुम ही सुपर्ष बर ॥ * ॥
जीते तुम शुभ कर्मसों शुभ लोकनकों तात । ताते तुमसो और नहि तुमसे तुमहि विभात ॥
॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

नाचिकेत इनि कहते भए । जोरि पांए अति आनंद चए ॥ तात सुखाशा पाय तुम्हारी ।
हम अन्तकको पुरी निहारो ॥ अजिन सहस्र प्रमाण सु जाको । काऊ हि बिलत चाह नहि ताको ॥

प्रा०
प्रा०

विप्रहि सहित आदर नाम । बलसह सह कांस्य दोहनि सुरधिका अनिराम ॥ तीनदिनका
 देत एक एक प्रेवसो जग जोग । महा बुद्धि हैत से जग प्रज्ञा ह बुद्धिमान ॥ कछो भोग्यादि
 जोगी होत साहि सुजान । रहत तेने सर्व नेहै सर्वभरहि बखान ॥ निजिहि वृषी देत केहै कछो
 परजमान । धनु प्रदके लोकको ते जात होत सुजान ॥ नाधिको उवाच ॥ कछो पर बखानाये
 ए वैत सुनि दनितात । कछोविन मोदान ए किनि सहै लोक विनात ॥ बचन मेरे अबय करि के
 कहत मे बखरायो कछो जग मोदान विगडै लोक ए सुखदाया ॥ कछोविन जे देत धृतको सब पाव
 बनाय कछो जे जग बन्दी धृतको रहत निख सचाया ॥ वृत विना जे देत है निख भेनुको अनिराम
 सीर सतिता फयके ते रहत सुदसौ नाम ॥ देत जे जल भेनुको निख विना फय फर्म । कानदा ते
 लहत भदिना सुगुण तात सधर्म ॥ धर्मके ए बचन सुनि ने जयो मोहित जाम ॥ सुगुण तबसौ जान
 तेहौ दान यह बखदात ॥ * * * * * ॥ * ॥ देहा ॥ * ॥ * * * * *

जोग प्राय हमको दयो तुम हीने करि कहु । तौत अनुग्रहसो भयो बज सुखदायक उह ॥
 ॥ * ॥ अन्नसुखाहन्द ॥ * ॥

प्राय जोग देत मोहि आपुके सुखुदे । तौन मै विलोकता सु सुखलोक छडे ॥
 ॥ * ॥ अन्नसुखाहन्द ॥ * ॥

पौर जेरि । हेरि हेरि ॥ धर्मरायने सचाय ॥ कछो एह । कै सनेह ॥ गजदान । जेसमान ॥
 दान सख । हेन पख ॥ * * * * * ॥ * ॥ चाभीरहन्द ॥ * ॥ * * * * *
 मात हेतुन माता मज देख अबदात ॥ बहद्वारकों त्यागि परस प्रेमवै पगि ॥ सुरभी देत सु जोग
 लहत लोक पुन मोग ॥ * * * * * ॥ * ॥ सुन्दरीहन्द ॥ * ॥ * * * * *
 गोरबसे रस खौर नही बर । ताहि दिय सुगुहे सुभधीधर ॥ पावतहे जग लोक सुपावन ।
 मावतहे लहिके अति आवन ॥ * * * * * ॥ * ॥ देहा ॥ * ॥ * * * * *
 हमको लोक दिखाय सब धर्मदाय नतिमान । कछो सर्व मोदानको यह फल तात सुजान ॥
 सुनिने हम मोदान कस लहि सुगलोक निहावाकरि प्रहाम वमको सु हम प्राय पिरि नपपाव ॥
 कछिबीबाहीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्यै शान्तिनामिना श्रीवन्द्यजितकायै
 वासि दधुनाथका श्रीचरात्मजो कुरुनाथस्यात्मजो योगायस्य विवेक सधिहेनेन कनिना भिदधिते
 भाषार्या नदमभारतदर्पणे शान्तिर्वैश्व दामधर्म एकोन सप्ततितमोऽध्याय ॥ * * * * *
 ॥ * ॥ रामगीतीहन्द ॥ * ॥

पुधिहर उवाच ॥ * ॥ कछो फल मोदानको जब भवति तब अनिराम । विना जाने एक
 मोके हरएत नतिमान ॥ कछो दुख कछिपास नृप परि कूपनाहि गंभीर । ताहि ताथो हारिकाने
 कस्य कदि कछोवीर ॥ सर्व हम सो सुखी हे नतिमान तात सुजान जात है सुरभीद भिने लोकनादि

सुतान ॥ कहे तौने लोकको वृत्तान्त हमसों सर्व ॥ भोज्यउवाच ॥ सुनऊ यह पर सप्तमे इतिहास
एक प्रसंग ॥ प्रसन्न वृत्त भए रनि लोकप्रसो हे भूप । सर्वव सो जैन जन हैं भरे तेज अनूप ॥
एवै हम गोखोकपासी तिन्हें प्रीति सु जात । भूरि अपने नेत्रसों ते भरे मोद विभात ॥ * * *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कैसे हैं गोखोक तिन्हे हे वर कौन गुण । सुनऊ इहिस मुदखोक जन तिनको किमि साहसै ।
करत जैन जोदाज ते तिनने कवसों रहत । मो मन मांहि महान दृष्टा हे यह सुनत को ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

दोहे बज सुरभी अभिराम । कऊ फल कैसो होत खलाम ॥ अरु दान सुरभिनको जैजा
ताको फल कैसो बुधिमान ॥ * ॥ * ॥ चरणकुलकछन्द ॥ * ॥ * * * * *

बज दाता लघु दाता होऊ । लघु दाता बज दाता सोऊ ॥ किहि विधि होत समान बहानो ।
भो मो हिय बंदेह महानो ॥ औ सुरभी किहि विधिसों दीजै । कौन विशेष दक्षिणा कीजै ॥ * *

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पितामहउवाच ॥ * ॥ सुनऊ हे सुरराज यह तुम प्रश्न पूछो जैन । याहि पूछे योग्य तुमही
हो सु हे बुधिमान ॥ बजत विधिके सोकहैं गहि लखत तिनको आप । लखतहैं हम तिन्हें हे
सुनु प्रक बुदिकसाप ॥ लखतिहैं औ कामिनी जे पतिव्रता अभिराम । लखत तिनको विप्रह
बज किए कर्म खलाम ॥ अरु औ सनाप अन्तक रने तिनने नाहि । रहत नित्य समोद हैं जे बसत
तिनके नाहि ॥ व्याधिको अब पापको गहि तहाँ नेकऊ लेय । करति दृष्टा वज जे सो सिद्धि
होति सुरेशा ॥ सर्व सुन्दर बजु हैं गोखोकने सुरराज । और औसो लोकहै गहि भरो मोद दर्राज ॥
शान्त जिनकी प्रकतिहै अब दयावान महान । रहत रत गुहभक्तिने जे परम प्रज्ञावान ॥ अब
हारहि होतिके वर करत हैं निति धर्म । करत सेवा मातुकी औ पिताकी जे परम ॥ करत निन्दा
दिजनकी गहि किएह अपराध । करत पूजन गऊ को जे भरे प्रीति अवाध ॥ कहैं कोमल वचन
जे अब सब मोक्षत हैं । देव पूजन करत जे निति देत दीगहि चैन ॥ जात ते गोखोकको हैं भरे
आनंद भूति । रगत जे परनारिकों ते रहत हैं निति दूरि ॥ निबद्रोही छली औ गुहभक्त हैं
गहि जान । धर्मद्रोही प्रज्ञावातो महा अपकर्मौ ॥ लखत हैं गोखोकको ते कवज ॥ गहि अम
रेष । सुनऊ अब हम कहत हैं गोदाजको फल वेद्य ॥ किषो जो उत्पन्न धन है कर्म करि शुभ
उद्द । तौन धनसों औ सुरभी प्रीति करिके उद्द ॥ बेसि सादर विप्रको जे देत हैं सुरराज । लखत
है गोखोकने वसि तौन मोद दर्राज ॥ धामने धन प्रीतिके जे लेष सुरभी देत । अघुत बखर तौन
जन गोखोकको सुख होत ॥ परम जो द्विज औरसों गो देत कतसों यह । रहत सो गोखोकने हे

सदा सुरसौ उह ॥ सदा जे जम सब बोखत चित्त रहत अणके । विप्रसौ सुरको करे जे सदा देत
 धर्म ॥ सहत वीरजो नोद वरि भोखो कने अधिराम । नमजो सौ जे करत को सौ देवको अधि
 नाम ॥ देत जे सुरभीजको है चास कोमल सख । धर्मने सब कथनाही रहत तन पर दखि
 को को दानको केल मिलत ताहि सख । होहि सभियमाहि जौ र सुमुख सतिही पयो ॥ विप्रसौ है
 सहत तौ कल कहै लख अनन्द । वैश्यने जौ होहि नो कल कहै अर्थ सुन्द ॥ पूजवाही होहि
 जौ र सुमुख सख सुरेश । जानु निखव सहै तौ वह भाव अनुभव ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरभीको सौखि मुदित नै जे जम करत प्रथाम । छत्र किए को फल निखन विनको सखि अधिराम

* ॥ सोरठा ॥ * ॥

मक्ष परम बखवाम वृषभ देत जे द्विजको । तिनको मिलत सुजान कल सख सुरभीदानको ॥

॥ * ॥ कान्ताहन्द ॥ * ॥

बनके माहँ । हे सुरमाहँ ॥ वर बुधिभैरव । नो की जौन ॥ रक्षा करतानुदसो भरत ॥ द्रष्टा सर्व ।
 तासु अखर्व ॥ सिद्धि सु होत । हे बुधिपोत ॥ * * * * *
 सखि श्रीकाशीराजमहाराजधिराजश्रीउदितनारायणसखाज्ञानुगामिना मन्दीजमकाशीवासिरघु
 नायकवीश्वरामप्रभोकुलनायकाजगोपीनायकस शिष्येण सखिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
 महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानपर्वे गोलोकप्रभे पितामहयकसम्बदे सप्तमित्तमोष्माधिमा ॥

॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ अथलमुखाहन्द ॥ * ॥

जानिकौ सुहर्त गाय वेधते सु जे हैं । सुमज हुदिल कौन ममिहि अंग होतने हैं ॥

॥ * ॥ मल्लिकाहन्द ॥ * ॥ पितामहउवाच ॥ * ॥

मक्ष काज हरत जौन । नर्कमाहि परत तौन ॥ रोम नायको जितेस । होहि सर्व को जितेस ॥
 होत है उधार माहि । मानुसत्य चित्तमाहि ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

वेधनको अह दानको हरत जौन जन बांध । तिनहँ की एही दया होतिसुमज सुरेश ॥

सम्पत जे जम देत हैं गल वधनको परम । सब जे कथन हनत हैं पापी सभिहि विषय ॥

रोम होहि नो अङ्गने तितने बरि हजार । नरक माहि परिबद्ध ने कल नहा अखर ॥

॥ * ॥ बाजीरहन्द ॥ * ॥

हरि कै सुरभी जौन । देत विप्रको जौन । परम नरकको नोहँ । भिदो नै सुमज ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो प्रदानने दर्शयो दीजे सुपरब सख । सुपरब है पावक परमनिषय अनुभव ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ रामगीतीन्द्र ॥ * ॥

सायं
राध

कृष्णो विधि सुरमात्र से यह धर्म प्रति अवदात् । कृष्णो श्रीसुरमात्र नृप-पुत्रराज से हे तात् ॥
कृष्णो विधि सुरमात्र से यह धर्म प्रति अभिराम । राम करि कै कथा साधन से कृष्णो तुमि
सुन ॥ कृष्णो विधि सुरमात्र से यह धर्म प्रति अवदात् । भय धारण करत साके सुनधि ते
सर्व धर्म ॥ कृष्णो विधि सुरमात्र से यह धर्म प्रति अवदात् । मोहि मन नुद कृष्णो करि कै कथा
परव चणूय ॥ कृष्णो विधि सुरमात्र से यह धर्म प्रति अवदात् । प्रदत्त अक्षय खनको सो खहत हे बुधिधाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

महाका से प्रज्ञा कृष्णो यह सुधर्म अवदात् । जे अहिने रत रहत ते अहिसे सब विभात ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिपराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञानुमानिना श्रीवन्दीजनका श्री
वासिष्ठमहाप्रकशीशराजजेन मोकुलनामस्यात्मजोपीमात्रस्य शिष्येण मधिदेवेन विरचिते
भाषार्था महाभारतदर्पणे शान्तिपूर्वकं दानधर्मो पितामहसम्पत्सम्पादे एकसप्ततितमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनऊं तात बुधिभाज धर्मअवका हो तुमहि । संशय है एक काम दूर करऊ सो कै कथा ॥

॥ * ॥ रामगीतीन्द्र ॥ * ॥

होत का फल किये प्रत अह नेन कीन्हें पर्य । कहा फल अध्वयन कीन्हें होत तात सधर्म ॥
सर्व इन्द्रो जीतिनेको कहा फल है सब । वेदधारण किये तें फल होत कौन प्रतत् ॥ कौन विद्या
दान कीन्हें होत फल अवदात् । जे अतिप्रद होत नहि ते खहत का फल तात ॥ कहा फल अति
दानने अह सुनतने कौन । कहा फल है अथ ताहीं सुनऊं वर बुधिधाम ॥ ब्रह्मचारण
नाहि का फल होत है अभिराम । किये सेवा पिताकी अह मामकी सुखसाम ॥ होत का फल
गुदसेवा किये सध प्रेम । दया कीन्हें होत का फल सुनऊं ताम सधेम ॥ किये पर दुख दूर
का अह भोग है हे तात । कहा तुम अबमाहि हमसों सर्व फल अवदात् ॥ भीष्मउवाच ॥ करत
विधिगत जैन व्रत ते अह न-उत्तम लोक । नेनको फल सिखात है परतप्रही बुधिबोक ॥ कियेने
अध्वयने विद्या विधि होत सु धर्म । निराल है अरलोकमाहीं मोद भूरि संमर्थ ॥ सर्व इन्द्रो जी
तिनेते होत है फल जैन ॥ सुनऊं सो विचार करिके कहत अह बुधिधाम ॥ जैन जीते सर्व
इन्द्रो खहत सुख सरवच । जाय केको होत अह अह है ते तव ॥ होति तिनकी कामना हैं सर्व
विधि सुभात । फल से कीन्हें अह अह न-उत्तम लोक ॥ जीतिने इन्द्रोणको जो कहत है दम
ताहि । दाम तें सो अह है अति कष्टत कृप अहमाहि ॥ देत दामहि करत दानो कबऊं मनने
जुह । करत कबऊं अह अह है अह अह न-उत्तम लोक ॥ सुनऊं याते अह है दम दाम ते अवदात् ।
खहत है दमवांन दम ते लोक उत्तम तात ॥ ब्रह्म लोक होत प्रापत जैन विद्या देत । प्रसंशा जो

शा०प० करत गुरुकी लहत खर्ष सचेत ॥ करत जे अध्ययन चषिय देत दान महान । युद्ध माहीं करत
दा०घ० रक्षा औरकी मतिमान ॥ प्राप्तहै ते खर्ष माहीं लहत मोद विखन् । रक्षत रत मित्रकर्मने जे
वैश्य सुनऊ नरिन् । देतहैं अर दान विधिमें लहत तं दिवलोके । मुद्रङ्ग और रते गिज
धर्मने बुधि ओके ॥ लहे तौ सुरलोक माहीं परम पावन धाम । गुरु बज्रपरकार की है सुनऊ गृप
अभिराम ॥ यज्ञने हैं गुरुकोते युद्धने हैं पर्ष । सत्यने हैं गुरुकोते दान मांहि सधर्म ॥ किते इन्द्री
जीनिबेने गुरुहैं अबदात । योगने हैं गुरुकोते सांख्यने हैं तात ॥ किते अडबी वास माहीं गुरुहैं
अभिराम । शान्तने हैं गुरुकोते सुनऊ गृप बुधिधाम ॥ क्षमामें हैं गुरुकोते वास गृहके मांहि ।
किते क्रोमल बचन माहीं गुरु हे नर मांहि ॥ वेदके अध्ययनने हैं गुरु कोते पर्ष । गुरुसेवा मांहि के
ते गुरुतात सधर्म ॥ किते सेवा पिताकीने गुरुहैं महिपाल । किते माताकी सु सेवा मांहि गुरु
विशाल ॥ अतिधि पूजन मांहि कोते गुरुहैं अबदात । किते विद्या दानने हैं गुरु हे सुनु तात ॥
लहत ए सब गुरुहैं गृप महत उत्तम लोक । होति इनकी कीर्ति जगने रहत नित्य अघोक ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जन फल उत्तम लहत हैं सत्य बचन ते पर्ष । और धर्म नहि सत्य सन भूपति सुनऊ अभर्म ॥
वेद धरख तीरथ कारण हैं नहि सत्य समान । सत्य धर्म सो सत्यहै जानऊ सत्य सुजान ॥
अश्वमेध सहसन नहीं सत्य बचनसम तात । सत्य कहत जे जन भूपति ते जन अतिहि विभारत ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रघातहृन्द् ॥ * ॥

तपे सत्यसो भानु शोभा प्रकाशे । बहे सत्यसो वायु औ अपि भासै ॥ मही सर्व संसारकी
भार धारै । फली सत्य सो भूरि भूको संहारै ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ** * * * * *
फितर होत परसन्न अर निर्जर सर्व सुजान । तिनिहीं होत प्रसन्न हैं विप्र सु विद्यामान ॥
रहत निरत निरति सत्यने सर्व सु मुनि अबदात । ताते तिनने होतहैं महत पराक्रम तात ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सत्यवान जन जौन तौन लहत मुद खर्षने । ताते हे बुधिमान सत्य कबळ नहिं त्यगिय ॥

॥ * ॥ नखिकाहृन्द् ॥ * ॥

नीति खान भूप जौन । खर्ष लोक मांहि तौन ॥ प्राप्त होतहैं सुजान । मोदको सहे महान ॥

॥ * ॥ उकशाहृन्द् ॥ * ॥

ब्रह्म चार्थको जौन । फलसो सुनु बुधिमान ॥

॥ * ॥ अरिशाहृन्द् ॥ * ॥

ब्रह्मचार्थको जौन निवाहत । ताको सब बड भांति सराहत ॥ ताहि अत्राप्ति कहु नहिं
जानऊ । ब्रह्म लोकको लहत सु मानऊ ॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अज्ञानस्य पुनः पापकों दूरि करतहे भूप । तेज बढावत अज्ञाने परमा करत अनूप ॥
सुरभी काकोराजनहाराजाधिराजभी उदितनारायणसांज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी
वसिष्ठमुनापकवीश्वरात्मजमोक्षनाथस्यात्मजस्य गोपीनाथस्य शिष्येण मखिदेवन कविना विर
चिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मो द्विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ * * * * *
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शां०प०
दा०ध०

जो विधि सुरभी दानकी अति उत्तम है भूप । मो मन ताकों सुननको रच्छा भई अनूप ॥
जिहिकों कीन्ह चाहतहे जन अति उत्तम लोक । कहो आपु अबगाहिके ताहि सुनऊ बुधिसोक ॥
॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

सुनऊ तात गोदानमें उत्तम और न धर्म । विधिवत जे गो देत ते कुलकों तारत पर्म ॥
विधि वर सुरभी दान की मान्याता भूपाल । वृक्षत मे बागीशसों करि सममान विद्याल ॥
॥ * ॥ अथकरीहृन्द ॥ * ॥

मान्याताके सुनिके बैन । कहत भए बागीश सचै ॥ विप्रणको करिके सतकार । देय निम
ण बुद्धि अनार ॥ आपु गो शालाजे जाय । पढे मंत्र यह शुभ सुखदाय ॥ सुरभी मो माता
आभराम । पितु वृषभ सुददायक नाम ॥ देखिं हमै सुरलोक अनन्द । औ यहि लोक मांदि
सुखवृन्द ॥ जपि यह मंत्र करे तहँ बास । मौन होयके भरो ऊलास ॥ जिहि विधि रहै भूमिने
गाथ । तिमिहीं आपुऊ रहे सथाय ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

दूजे दिन गोदानके समय माहिं है भूप । बोलै कोमलताभरे वचन समोद अनूप ॥
गजदानमें प्रथम दिन को हेवत यह भूप । पाकों करिके प्रातहीं दीजे गज अनूप ॥
॥ * ॥ रामगीतीहृन्द ॥ * ॥

करि सुरभी की प्रसंशा करै सैसी रीति । देति तिहिकों खर्गहै जो करत तुमने प्रीति ॥
पन्न की सै तुमहि साधन पाप हरखीं पर्म । सुरभि तुमकों पूजिके जनको न होत सधर्म ॥ देति ।
ऐस्य तुमहीं परेन अनन्द उह । करति बखल चित्तकी कषणामको तुम शुद्ध ॥ करऊ माताला
हमारी मित्य रक्षा पर्म । हरऊ मेरे पापकोविह करऊ मोह सधर्म ॥ धेनुकों ओ लेय सो द्विज कह
सैसै बैन । सुरभि हे तुम नोहि सौ दाताहि करऊ सचै ॥ सर्व पूरण कामना तुम कीजिए
अभिराम । भरऊ दाताके सुमहमे आपु आनंद नाम ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

मोख देत जे धेनुकों सांहर द्विजहि बुझाय । धेनु दानको फल चाहत तेज जन मरराय ॥
नख धेनु जे देत यह हेम धेनु अभिरामतीमळ जन गोदानको फलकों चाहत खलास ॥

दा०
दा०

॥ * ॥ अरिसहन्द ॥ * ॥

विधिसों देत एक ओ सुरभिय । होति जानना सब सिधि तिहिं किच ॥ विधिवा
देके जन । तिनको कहहि सकैं कहि के जन ॥ * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
जे जन व्रतकों करत नहिं चौ दुर बुद्धी जैन । परम मुन यह धरि जो कहिए तिन्हें कवीरन ॥

॥ * ॥ महादीपकहन्द ॥ * ॥

सब ठौर यह सुधरम कहिय कबहुँ नाहीं । पाप जानहुँ समुप्य बहुत लोक नाहीं ॥
धेनु दान सुनें तिन्हें लागत ना नीको । जानत है चाहि भूरि कौशकार हीको ॥

॥ * ॥ रामगीतीहन्द ॥ * ॥

बृहस्पतिके बचन सुनि ए प्रेम युत न्हे परम । देय सुरभीदांन विधिसों न्हे सुखक बधर्म ॥
पुण्य लोकन्हकों सुजे जे नए नृप मतिमान । कहत तिनको जानहुँ हम सुनऊ तात सुजान ॥
उसीनर चौ विश्वगन्ध सुभूप नृप धरमज्ञ । भगारय ओ यौवनाश्रक नाश्रमा प्रज्ञ ॥ भूरिपुत्र
पुहुरवा मुचुकुन्द सोमक भूप । चक्रवर्ती भरत ओ नृप रामचन्द्र अनूप ॥ चौ दिखीप तशीप
वर धरमज्ञ प्रज्ञ महान । नए सब दिव लोककों ए सविधिक गोदान ॥ सुनऊ ताते नृप युधि
ष्ठिर तुमऊँ करिके हेम । बृहस्पतिके बचन धररण करि सु सविधि समेन ॥ बोलि सादर द्विज
न्हकों मुन करहु सुरभी दान ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ वैन सुनि ए पितासहके युधिष्ठिर
मतिमान ॥ करत भो गोदान विधिसों नेम नहिंके परम । महा कीरति भई ताते भए आपु अमर्मा

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुनामिना श्रीवन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकनोश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मपोनाथस्य शिष्येण सविदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बण दानधर्मे विसप्ततितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ चरणकुसकहन्द ॥ * ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ भूप युधिष्ठिर जानद पाने । वैदि पितासहके जाने ॥ अरि
पाणि बिनती बज करिके । कहत भए पुनि हमि रति धरिके ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धेनु दानको सब मुख कहो आपु पुनि ताभा । चबहिं तृप्त हम ना भए सुनऊ बीर अबदान ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नृपति युधिष्ठिरके बचन सुनि ए भीषन भूप । कहत भए गोदानके पसकों परम अनूप ॥

॥ * ॥ हन्द * भीष्मउवाच ॥ * ॥

श्रीकृष्णती तवणी गुण पूरी । अरु वर दुग्धवती अति करी ॥ सब दोषगते रहित दयाया ॥

वती बलावती विद्याला ॥ दीन्हें ऐसी सुरभी विप्रहि । पाकसर्व कठिजात सु लिप्रहि ॥ सब सरित
नये उद्ये सुवदरिमा । अति उत्तम पापनकी हस्तिना ॥ तिमि कपिला सब सुरभि नारी । भूप
सुयो सब सुभजन पाही ॥ * ॥ बुधिछर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
सब सुरभिनको दानते कपिलाको जो दान । सो किमि उत्तम है कही करिके जवानदान ॥
॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे पूर्व इन सुयो बुधनसो जान । सो तुमसो हम कहतहैं सुनऊ तात बुधिमान ॥

॥ * ॥ रामगीतीशब्द ॥ * ॥

दक्षको इनि कस्यो ब्रह्मा सख्ख बोलि सुवैन । प्रजाको उत्पन्न करिए सुनऊ दक्ष सचन ॥ बैन
सुनि लोकेशको ए दक्ष करि सु विचार । वृत्ति पूर्वाहँ प्रजाकाजै भयो करत सुठार ॥ अमृत आ
श्रित रहत जैसे देवता से तात । रहतिहै तिमि वृत्ति आश्रित प्रजा सब अबदात ॥ वृत्ति प्रथमाहँ
विरजि कै वर प्रजापति अभिराम । फेरि विरची प्रजाको बहु भरे आनद माम ॥ प्रजा इच्छां
वृत्तिकी करि दिये माहँ महाना दक्षको आन्धानकोन्हो सुनऊ भूप सुजान ॥ प्रजाको तब भयो
प्रापित भीप्रजापति आय । प्रजा सखिके प्रजापतिको भई परम सचाय ॥ वृत्ति दीवे प्रजाको
वर प्रजापति मतिमान । भए पोवत अमृतको सुनु तात परम सुजान ॥ तप्त भे आत अमृत पीके
प्रजापति धर्मज्ञ । अमृतको शुधि सुराभ लागी कठन मुखते प्रज्ञ ॥ सुराभके संग कढो मुखते
एक सुरभी पर्यी । दक्ष तासका भए दक्षत भर हर्ष सधर्म ॥ करी तिहँ उत्पन्न कपिला किती
धेनु सखाम । सखा बर्यन दुग्धको तें सर्व आति अभिराम ॥ बहन लागो दुग्ध ताते भए फेन अनूप ।
होति जैसे नदिनमाहा सहरि परम सुभूप ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
बत्सनको मुखते गिरा दुग्ध फेन अभिराम । परो शंभुके शीशपै तौम सुनहु बुधिधाम ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

करिके क्रोध महान तब ललाटके नेत्र सो । देखत भे ईशान सह बत्सन कपिलानको ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिहँ लोचनके तेजसो कपिलानको रंग पर्यी । विदर्शताको प्राप्त भो भूपति सुनऊ सधर्म ॥

शरण भई तब सोमको सुरभी कपिला सर्व । ताते सब कपिलानको भो निज वर्ण अखर्व ॥

॥ * ॥ जयकरीशब्द ॥ * ॥

यह वृत्तान्त जानिके दक्ष । कदि विचार मनमाही लक्ष ॥ शीघ्र जाय शहरके पास । कहत
भए इनि सहित ऊलासा ॥ दुग्ध होत उच्छिष्ट कही नो बत्सनको पीएँ मुदभौना ॥ ताते क्रोध न करऊ
बलन । कही दया कपिलानके सर्व ॥ कपिला अपनी सन्तति पाव । भरिहँ लोफन्दमाहि सुठार ॥
ताते लोकन माहि अनन्द । बढि है महा सुनऊ निदंदा ॥ इनको जो ऐश्वर्य महान । चाहेंगे सो सब

आप्य
द्वेष

ईमान ॥ यह कहि वृषभ दयो अनिरुद्ध ॥ इय दयता करिको नाम ॥ भए प्रसन्न पात्र तो सर्व ॥
 विष्णु कपिल लोकोत्तम बल शक्त ॥ १४० ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 भारत कीन्हो वृषभको ध्यानार्ति हे भवदत्त ॥ को बाहन चपनो कियो गहर हे सुनुत ॥
 पति वृषभध्वज वैष्णवपति भयो भुञ्जते नम ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥

प्रथम भर्त उतपन्न हे कपिला धरि विधि तत ॥ धामे उतमर्त भव भेनुको भवदात ॥
 यही हेतुते सेठ हे स्वकीं दान सुजात ॥ सर्वकामना देतिये करिष्ये भेनु भोजित ॥
 भेनुहकी उतपत्तिको यह विधान जो पत्न ॥ पठत सुगत युधि घोष मे तिनके कडम वपन ॥
 स्वयति स्वयति मिलतिहे रवत निरोगित नाम ॥ वी आदर्श वदति हे परम कल्याणित ॥
 ॥ * ॥ वैष्णव्याचन उवाच ॥ * ॥ रामबोलीहन् ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

विद्वानहके वचन सुनिके युधिष्ठिर महिपाल ॥ स्वयम को कपिलारकी भे दामसेन विवाह ॥
 दर्शुदरनी चौरकोती र्वसहित महान ॥ यषे चित्त देदशिष्या केरि शिष्यको सुकर्मभ ॥ * ॥ * ॥
 लक्ष्मी श्रीका श्रीराजमहाराज आभिराज श्री उचितना सायणस्या शानुमानिना श्री वन्दोजनकी श्री वरि
 दर्शुना वरुणी चरतमजेनको तुना वेगकविना विरचिते आयायो महाभारतदर्पणे अनिरुद्धे
 इत्यर्थमे भोदान प्रसन्न बर्थने चतुःसप्ततितामोऽध्यायः ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥
 ॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥ आभीरहन् ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

सुनु सुभर्त नरनाह ॥ हक संवचके माह ॥ वदन्पति होदाह ॥ यथिपी परे जडाह ॥ ॥ ॥
 यथिष्ठसे पत्न ॥ पूजन भए सभर्त ॥ * ॥ वैदासप्रभाह ॥ * ॥ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥
 भीमज सुखोक नाहि सेठ हे कदा ॥ चमू ॥ तत्रियोमूषे किय सुपुत्र ॥ पोष ॥ * ॥ * ॥
 कै हाय कहे सु चाप नोहि हे वकिष्ठरव ॥ वृषिभ सु योग्य वीर चाप से नही प्रताह ॥ * ॥ * ॥
 ॥ * ॥ मधुभारहन् ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

सुविक्रम यह ॥ यवि बुद्धिमेह ॥ गोमम सु ब्रह्म ॥ भेष्मक रवक नम म
 ॥ * ॥ रामबोलीहन् ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

सवभीको भुक्ते नो महानरुह भान ॥ यय चाधम देहत सुकर्म तोरकर रिक काह ॥ पाप
 दामर पार वरकीं मेकुहे कभिराज ॥ परे तिनके परफली इत्येवमि ॥ कर्माह ॥ वेददीर्घप
 इत्याहा नच परत यमन् ॥ भेगुहीसे कवसे सुब्रह्म ॥ वेदोपिब्रह्म ॥ वेदमने वेदम कर्माह
 कोम यमप ॥ देतिहे दो कानमने विवि इरामुका सकम् ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सहस्रसौ धेनुको गुणको है नहि जान । आनें को सजताकरै धेनुको चितवन् ॥

॥ * ॥ पञ्जलीहृन्द ॥ * ॥

जिहिके सुहोहि दशधेनु भूप । रिजको सुदेव सो एक अनूप ॥ जिहिके सुहोहि शतधेनु पम ।
दशदेव रिजको सो आर्जुन ॥ जिहिके सुहोहि एक सहस्र नाय । शत एक तौन देवो सचाय ॥
यह पर्न धर्महै हे नरोर । अवनहि कहत नरबुध सुभेश ॥ * ॥ रामगीताहृन्द ॥ * ॥

अग्निहोम सुकरै जाके होहि शत गो पर्न । होहि जाके सहस्रगो सो करै यज्ञ अर्भ ॥ करै
जौ नहि होहि नै नर पूजनीय न भूप । कहतहैं अवनहि कौ बुध शास्त्र देखि अनूप ॥ * ॥

॥ * ॥ तोसरहृन्द ॥ * ॥

करि धेनुको चित ध्यान । अपिके सुनाम सुजान ॥ करिए सुसैन सुसैन । सुनु भूप नहि सुसैन ॥
यह प्रातहैं उठिपर्न । अपि धेनुनाम सुधर्म ॥ धरिए सु भूमह पाय । बरधर्म यह नरराय ॥ निति
प्रातःसार्धकास । करिए प्रणाम त्रिशास्त्र ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गोको सूच पुरीषको करिय उलंघन नाहि । पावनहैकै आरए गोशालाके नाहि ॥

॥ * ॥ अरिसहृन्द ॥ * ॥

विप्रणको घृतदीजे पवन । सो अनिए शिलि नाहि सचावन ॥ भूपति सुनऊ धर्म यह भावन ।
याहि किए अपुहोम सुधावन ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
गोकपिलाके दानको देत सबिधिहैं जौन । सबदानको फल सहत रहत समुदहैं तौन ॥

अग्निश्रीकाशोराजमृधाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुमानिना काशीवास्तिरघुनायकवी
चरात्मजगोकुलनामस्यात्मजगोपीनायस्य शिष्येण मण्डितेन कविना विरचिते भाषायां महाभारत
दर्शने आदिपर्नहि दानधर्मो पञ्चसप्ततितमोऽध्यायः ॥ * ॥

॥ * ॥ तोसरहृन्द ॥ * ॥

सत सहस्र वर्ष महान । हमकोहू तप धरि ज्ञान ॥ तवहू विली नहि नाम । श्रुवि श्रेष्ठता
अभिराम ॥ सुरभीनते सो पर्न । हमको भिखी सु सुधर्म ॥ यहते सु उत्तम जानि । अतिप्रोति दियने
आनि ॥ निति धेनुकी अधिराम । इन करन सेवा नाम ॥ * ॥ रामगीताहृन्द ॥ * ॥

कहत है इहि अति सुदनी सुनऊ गुण बुधिभौन । दक्षिणा जे सर्व तिमने हेहमास्ती जौन ॥
परत उत्तम दक्षिणा है करत जे जन जाहि । परत परमा सहत ते जन देत सब वन दाहि ॥ किए
काम पुरीषको मन होय जग सुप्रथिम । भूमिमे इमि कसत जेतैं ध्यान भाहिं सविच ॥ करत
ननु सु पुरीषको है ज्ञान अकल यमरी । देखात करं ननुज जेते सुवतिनाम अर्जुन ॥ देत हमके

॥ १०० ॥ जौन जौनमः कहत उचन लोक ॥ महान् कामन्द पाचकारिके रहत गित्य जसोवन्तः भिन्न भिन्न
के भिन्न सुरभिन्द् कदाचन अभिराम । प्रातः भे तन जिन्हें ब्रह्मा यन्त तनके मान ॥ १०१ ॥
सुरभीन्द् से भिन्न जौन रचित जेणः । मयिह बदेयान् तुनको देऊ गो मै सोय ॥ वैत सुनि को
यके ए सुरभिका मुद पाव । भई यह बरदान मायति भई परम कथाय ॥ १०२ ॥
अह लोकको उद्धार । देहु यह बरदान इनको सुनहु दुहित उद्धार ॥ वैत स सुरभीन्द्
दुहित दर्वितहेत्य । कथो जैसे दयो यह बरदान तुनको जेय ॥ परम पावन लोक कदि तुन
करोगी उद्धार । जेय यह बरदान सुरभी उठी मुदित अपार ॥ दुहितके बरदानते प्रति भई
पावन घेन । श्रेष्ठ सबही कहत तिन्को तिन्हें पूजत कोन ॥ प्रात उठि जे काम को सोय करत
प्रदान । पुष्टिको ते होत प्रापित कडत रोम महान ॥ महान् दूधो दुग्धवन्ती वल सहिता पाव ।
तुल्यवत्सा भेनु कथिला देत जौन सु ठार ॥ ब्रह्मलोकै नाहि ते जन पूज्य होय विभातः । होतै
अवदात मोभा तौन मिति सरदात ॥ तुल्यवत्सा अदण बरसा दुग्धवन्ती पर्व । शीलवन्ती
वल सहिता देत जौन सवर्ण ॥ भासकारको लोकसे ते होत पूज्य सुवर्ण । होत तिन्को चर
नाही परम तेज महान ॥ तुल्यवत्सा शीलवन्ती वलवन्ती सख । कर्पुरा मुचि भेनुको जे देतहैं
सुगु देख ॥ पाव ते जन चन्द्रमाके लोकको अभिराम । होतहैं प्रति पूज्य वेरसा कहत परम
कथाम ॥ तुल्यवत्सा जेतवर्षी दुग्धवन्ती मान ॥ शीलवन्ती वल सहिता दिहैं गो हविधान ॥
होय सुरवतिलोकमाही पूजनीय अनन्द । प्रसथा सुर करत आकी प्रभा सहत विशन्द ॥
तुल्यवत्सा दुग्धवतिका शीलवतिका पर्ण । वल सहिता भेनु कथिला देत जौन सवर्ण । होत परमके
लोक माही प्रातहैं जन तौन । देखि मासहि कहतहैं दुध सुमज नृप सुविशेष ॥ भेनु कथके
जेण जैसे अंत प्रति अभिराम । शीलवतिका दुग्धवतिका वल सहिता मान ॥ तुल्यवत्सा भेनु
को सह करिय दोहन चार । देत जेते बरणलोकदि प्रात होत सुदर ॥ मातुषी के जेणहैं सख
वर्ष ताके होय । तुल्यवत्सा हर्ष हीने होय ताको मोष ॥ वल चार उढायके तिहि भेनुको अभि
राम । देत जे जन सहत मासलोकमे हैं धाम ॥ सेनवर्षी तुल्यवत्सा शीलवत्सा पर्ण ॥ वल
चार उढायके तिहि भेनुको सु सवर्ण ॥ देत जे जन सहत ते जन बरणलोक सुमान ॥ वल
कीवी अन्नमाही होत भव महान ॥ होय सुन्दरवर्षी जेणो जे प्रति अभिराम । होत
जाके नैनपीरे चार सुवर्ण पाव ॥ तुल्यवत्सा शीलवत्सा दुग्धवतिका पर्ण । वल चार उढायके
तिहि भेनुको सु सवर्ण ॥ मासलोकदि वल सहिता चार । शीलको जे देत । होय प्रति भेनुको जे
परम मोददि होत ॥ मासलोक जे भुजनेके वर्ष आकी होत । शीलवत्सा चार । जे जे जे जे जे
गुण होय ॥ वल चत तिहि भेनुको कदि दोहैं जन जेण । होय माही पितरके अनहोत प्रापित
तौन ॥ होय कानस चार मासलोकदि जेणो जेण ॥ तुल्यवत्सा दुग्धवतिका शीलवत्सा पर्ण ॥

जन्तुन चांशुदोहकसहित येसी गाय ३ दिहें किसेहियेसो शुचि सखत लोक सवीय ॥ नैद प्राण्य
 कर्षा दुग्धप्रमिका भीरुमुक्ता सख । तुल्यकवचवाकि करिकी कसलुक्ता सख ॥ देत जे जन चांशु दा
 दोहने सहित अति अमिराम । प्रसन्नै कमुलीककी ते सहनहैं सुद नाव ॥ चाण्डु कम्बल की सु
 चाण्डु वीर्य जाके माहिं । तुल्यकवच होय जाने मेकळ कृप माहि ॥ इमिनि येसी धेनु दीगें
 विप्रको अवदात । साय सुखे लोकाकी ते प्राप्त होय विभात ॥ पोछि जाकी होय उठ अर
 होहि अथं सब मुह । होय कजेसु अर जाको मोखमच कस उह ॥ अरि सुभूषित रत्नसो । तिहि
 वृषभको अमिराम । देत जे ते तपतलोकहि सखतहैं वुधिधान्य ॥ होय भारी चक्र जाको चार
 बैस मनीन । सखत अन नमोर्वलोकहि दिहें ताहि प्रवीन ॥ होय जिहिं अर वृषभको अति चार
 कम्बल सख । रत्नसो करि ताहि भूषित देत जे जन दस ॥ प्रजापतिके लोकने ते प्राप्त होत सुजान
 विगतके शोकसो ते सहन मोह महान ॥ रहनहैं मोदानने रत जौन अन अवदात । भानुसे
 सुविमानये चडि खनकी ते जात ॥ करति ताहि प्रसन्नहैं निति देवतनकी दार ॥ चाहि खोचन
 कोरसो हसि करै भाष अंपार ॥ धेनुके अणं माहिं अते होहि रोम सुबेय । खनसांही रहत
 नेत बर्ष सुजळ नरेय ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

दिवने अत अव होतहैं भूमि माहिं तब चाय । विप्र बर्षने जन्मसो निशि दिन रहत सचाय ॥
 किए धेनुके दानको जन येसी फल खेत । धेनु दानसो और नहि नूषति सुजळ सचेत ॥
 सखि श्रीकामोरीजनहाराजाधिराजधीउहितनारायणस्याह्वानुमानिवा श्रीषष्ठीजनकामोरीवासि
 रकुमांभकवीअरत्नजपोकसनावस्याह्वानुमानिवा शिष्यस मण्डदेवेनकविना विरचिते भाषायां
 महाभारतदर्पणे प्रान्तिर्षलि दानधर्मे षट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ अगिष्ठउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरभी येसी कारिकी कथा रहो धाम जन माहिं । नै निशि दिन सुरभीनको रहो चावसो पाधिं ॥
 ॥ * ॥ अरिसहस्य ॥ * ॥

सुरभी येसी कारिकी कथा रहो धाम जन माहिं । नै निशि दिन सुरभीनको रहो चावसो पाधिं ॥
 प्रात उठि होय सतबहि ॥ निशि दिन माहिं किए जे अच अति । ते सब छुटिजात जागे सति ॥
 एक सहस्र देत भीजा जन । अति सुह सहन खनमे सो जन ॥ * ॥ तोनरहस्य ॥ * ॥ * * *

एक लख सुरभी जौन । अति होतहैं वुषिमान ॥ दिअ बेसिक सादर मर्म । विधि सखि होय
 कर्म ॥ अर होतहैं सखि चडि लोक । नुह होय रहत अजीक ॥ दस मुक्ति तारि उ लोकने मुनिकत
 दिवको जौन ॥ यह होतहैं सखि भी अति और दान सधर्म ॥ * * * * *

सुरभी येसी सुरभीनो बर्षे जनकोहैं विभात । अउ जयो नहि होय भी सुरभी वन अवदात ॥

शा०प०
दा०ध०

माता है सब जगतकी सबसे उत्तम परम । कोन्हें तिमको बन्दना जनण होत समर्थ ॥
भेनुदानफल को कछो तुमसो हम एक देय । श्रेष्ठ और गोदान सम है नहि सुनऊ तरेय ॥
॥ * ॥ नृपुभारहृन्द ॥ * ॥

॥ भोष्णउवाच ॥ अधिके सु बँन । नृप सुनति अम ॥ सुनि श्रे सचाय । दिजवर बुलाय ॥ सुरभी
सुठार । नृपको अगार ॥ भो सविधि देत । श्रे कै सचेत ॥ * * * * * * * * * * * * *

स्वस्तिकोकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याह्नाभिगामिना शीवन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजनेकुलनाथस्यात्मजनेपीनाथस्य शिष्येण मण्डिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वाणि दानधर्म्ये मे प्रसंशायां सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

श्रेष्ठकौनहै जनतमे अरु अति पावन कौन । कहै मोहि अथनाहिकै सुनऊ तात बुधिमान ॥

॥ * ॥ भोष्णउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तिऊ लोकनके नाहिँ सुरभी पावन परम है । सुरभीकी सम नाहिँ और कोय तिऊलोकने ॥

॥ * ॥ राभगीतीहृन्द ॥ * ॥

मऊव भूष यजाति अरु वर माआता भूष । निरन्तर गोदानकारिके सहित प्रेम अनूप ॥
सुरगृहकों परम दुर्लभ जैन लोक सुठान ॥ प्राप्त भे तिहिँलोककों ते भरें मोद महान ॥ धेनु
दान प्रसङ्गमे हम और एक इतिहास । कहतहैं सो सुनऊँ नृप तुम स्याय मन बुधिरास ॥ भए
बूझत पितासों शुक सुमतिमान महान । कौन सो है श्रेष्ठ मख सब मखननाहिँ सुजान ॥ औ
कहौ किहिँ कर्मसों जन लहत उत्तम यान । स्वर्गको किहिँ कर्मसों सुर करत भोग सुठान ॥
कहां पति है यज्ञकी कऊ मोहिँ तात प्रतप्त । कहा उत्तम देवतनकी बसुहे अति लक्ष ॥ अति
पवित्र सु कहाहै सो कहौ हमकों तात । कास सुनि ए बचन सुतके कहत भे इधीत ॥ * ॥ व्यास
उवाच ॥ * ॥ रक्षों पूरव षट्कविन भो सुनऊँ सुत मतिमान । कामनाते शुककी करि हिए
नाहिँ महान ॥ * * * * * * * * * * * ॥ * ॥ षट्शकुलकहृन्द ॥ * ॥ * * * * * * * * * * * * *

करति भई आराधन विधिको । शुकिके नेम कामना सिधिको ॥ तब प्रसन्न है ब्रह्मा आए ।
शुक दिए तिनकों मन भाए ॥ सुरभी शुक पायके नीके । मुदित भई अति मारी हीके ॥ विधिसों
वर सहिँ होव सृष्टृका । भई पवित्रा अति शुभचक्रा ॥ विधिवत तिन्हें देतहैं जे जन । परम होत
हैं सुकतो ते जन ॥ * * * * * * * * * * * * * ॥ * ॥ मोसरहृन्द ॥ * ॥ * * * * * * * * * * * * *

जई भूमि मखिमय बाद । बत बान परी सुठार ॥ वर जसाप्रय अभिराम । मणिकी सिनी सु
सखाम ॥ तिननाहिँ कऊ सुठान । कुधि रई मूखि सुजान । बडु करपाए अरुदात । अति मलि
कसि सुविभात ॥ निरि हेमके सु अमन्द । मखिशुकवान विचन्द ॥ सरिता अनप समक ॥ कड

शां०
दा०

वदति अहं सविनेक ॥ यह भांतिके जे लोक । तिननाहि होय अशोक ॥ सुरभीदे जन अबदात ।
मिति दमत है सुनु तात ॥ * * * * * ॥ ॥ चहोरहन्द ॥ * * * * * ॥
सुरभीको जन जौन । सेवत है बुधिमान ॥ तिनपे होय दयाल । सुखदा भेनुकराण ॥ दुर्लभ
वर अभिराम । देती है बुधिधाम ॥ मनइसा गो नाहि । करिष दोहको नाहि ॥ * * * * *
॥ * * * * * ॥ रामगीतीहन्द ॥ * * * * *

पौत्रे चयदिन सुरभिकाको उष्य मूच सुदार । उष्य पयको पित्रे चयदिन सुनऊ नौह
खगार ॥ उष्यघृतका पित्रे चयदिन औ सु चयदिन वायु । परम व्रत यह कहत है अबगाहि की
बुधदाया ॥ किये यह व्रत भोगते हैं स्वर्गको सुरसर्वा परम पावन है सुव्रत यह सुखद खच्छ अखर्वा ॥
कहत नामयमाहि जे यह तासु भाज्य बनाय । खात जे जन सर्व तिनके महत अब मगिजाय ॥
सुहैं दानववृन्दसो सबदेव चारि महान । कियो यहव्रत नेम गहि के सुनऊ तात सुजान ॥
खर तिहिते दनुजगणसो फेरि प्रीति बिलन्द । दिवओको भए प्रापत छए मूरि अमन्द ॥ * * * * *
॥ * * * * * ॥ जयकरीहन्द ॥ * * * * *

करि सुखाचमन निर्मल होय । परम हर्षका हीमे भोय ॥ गज वृन्दकी नाहि सुजान । जपे
नेमती मंत्र सुठान ॥ ब्राह्मण प्रज्ञावान अमन्द । नैके निर्मल परम अदन्द ॥ भेनुनाहि अर
पावक पाहि । अर वर विप्र सभाके नाहि ॥ नल सम मंत्र गोमती खरा । शिष्यणको सु पठावेइसा ॥
तीगराच व्रत करि के पने । जपे नेमती मंत्र सधर्म ॥ लहे अपुचीपुषहि चारा औ भनकी निर्धनी
अपाव ॥ नारी पाय चारि भरतार । तिनही लहे अनन्द सुठार ॥ मानव लहे काधना सर्व । करे
जान विषनाहि अखर्व ॥ सेवतें तुष्टित नै गाय । देति कामना सर्व सचाव ॥ यह तुम निखय
जानके मात । नसुन अष्ट न चौर बिभाता ॥ सुनि शुक्र ए सुपिताके वेन । सुरभीपूजन कने सर्वेन ॥
खधियाका भिराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाशानुगाभिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रुचिनाके श्रीरुद्राजनाके लनाके श्रीजगदीशनाके लनाके श्रीविष्णुनाके लनाके श्रीब्रह्मनाके लनाके श्रीशिवनाके लनाके श्री
भाषायो महाभारतदर्पण शान्तिपर्वणि दानधर्मे अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * * * * * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * * * * * ॥ रामगीतीहन्द ॥ * * * * *

किसे भेनुपौत्रके लखी सुवेदन पने । सुनत यह हम सुनु पितानह सुमतिमान
जपे ॥ हात है यह जीहै सैवक करऊ सो तुम चौर । आपुको गहि चौर कोहैं हरण सभय
भरि ॥ * * * * * ॥ भोयउवाच ॥ * * * * * ॥ कहत है इतिजसु एक को सुनऊ होउ प्रभात । सुनो अर
पुत्रो नासाहि है उवादापाव रूप धे देना अभिमानाहि कोह प्रवेक । भरि सुरभी चकित ताको
जपे सुवैभ ॥ नारवाच ॥ किये यह देवि चारै कहतें नुनाहि । मे उमारे छिष्ट अधिरज

॥ * ॥ नमो भगवते ॥ * ॥

सुगु सुरभि स्वर्गादिपति बभूव ॥ रक्षा समारं कौशु ह्वरि ॥

॥ * ॥ नमो भगवते ॥ * ॥

साप्य
रा०ध०

कव्याय रूप सुगु सुगो चर्व ॥ अरु भोद कारि लो हो अरुव ॥ तुमसो सु नित्य जीवि मान ।
दृष्ट्या सु वरति बभूव नदीम ॥ * ॥ * ॥ चरवो क लो कन्द ॥ * ॥

वसिष्ठ वचनमोद सुहृदो ॥ जोनि दृष्ट्या भई हमार ॥ तुम्हरे सब अज्ञनिके नाही । एव क
कुलित आज्ञो भोही ॥ आज्ञा देख जिहिसु अजनाही । वसिष्ठकी हम नसे तहांपो ॥ कमलाकी
यव कीसो सुमिकी ॥ रवी सुमो हीने मुमिकी ॥ कहति भई इति सोसा वागी । अतिही कव्या
रससो वागी ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

करि होइ इति नित्य तर्ष जित् करि हिय नाहि । पावन मुख पुरीष समारो याने संभव नाहि ॥
* ॥ * ॥ नमो भगवते ॥ * ॥

तिरि मोहि न सु प्रथम । करि हो सुदेवि सुवेय ॥ श्रीरबाच ॥ तुम्हरी कथा सुधि पाय । इन
मद वरे न संचाय ॥ इतसो कहां तुम जान । करि हो सु अचहितेन ॥ सुरभीनसा इति वन ।
कहि हो रान भुव बन ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

सब भुरोभिनी देखे ने कमला अन्तरधान । भई तहां ही सुगु कृप प्रज्ञावान महान ॥
कहां महातिस बधि कै गोपुरीषको जान । घोरि महातिस कहत हे सुरभिनी सुन ताम ॥
सविभक्तो धीराजनादिराजोउहितनारायणस्याज्ञानगामिना श्रीवन्दीजनकश्रीवाशि
रपुत्रसंभवाचकवशात्कुलासुपुत्रनोपीनास्य शिष्येण मण्डितेन कविना विराचिते भाषायां
महाभारतस्य साहित्यवैचि हामधर्म एकोणासीतितमीवध्यायः ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मजवाय ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमो भगवते इति हो सोदर विप्र कलाच । तिनको नित्यहि यज्ञ हे सुगु प्रज्ञ नरराय ॥
* ॥ * ॥ अचकीरुन्द ॥ * ॥

इति महाभारतस्य साहित्यवैचि हामधर्म एकोणासीतितमीवध्यायः ॥
सुरभि स्वर्गादिपति बभूव ॥ सुगु पधिहर भूपति प्रज्ञ ॥ याने यज्ञ वृत्त तं ज्ञानि ।
सुरभि स्वर्गादिपति बभूव ॥ सुगु पधिहर भूपति प्रज्ञ ॥ याने यज्ञ वृत्त तं ज्ञानि ।
विनाहि हीनति कामिराने । संप्र प्रणास्य र भाषाय ॥ सुई सोकळ परसोकळ प्राधि । जेठ
एज वल कोक वादि ॥ वरपु मज हे तिनी पद । सुगु भूप ज्ञानत वर वृद्ध ॥
* ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वचनमोद सुहृदो ॥ जोनि दृष्ट्या भई हमार ॥ तुम्हरे सब अज्ञनिके नाही । एव क
कुलित आज्ञो भोही ॥ आज्ञा देख जिहिसु अजनाही । वसिष्ठकी हम नसे तहांपो ॥ कमलाकी
यव कीसो सुमिकी ॥ रवी सुमो हीने मुमिकी ॥ कहति भई इति सोसा वागी । अतिही कव्या
रससो वागी ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

धा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

पराजयमे दैत्यगणकी शक्त अरु सुर सर्व । उरग औ गन्धर्व किन्नर असुर तिमिहिं अखर ॥
गहड नारद और ऋषि वर प्रजा मुदिता पर्मा । काल कौनऊमाहि ए सब सुनऊ तात अभर्मा ॥
रहे पूजत पितामहकों भरे हर्ष अपार । रहे गावत राग हाहा औ सु झरु चार ॥ करत हो तर्ह
प्राप्त भारत फूल परम अनूप । अतुन्ह चार सुगन्धकों बगराय राख्यो भूप ॥ चतुर्विधि जँह रहे
बाजा बजत अति अभिराम । रही नाचति अक्षरा रम्भादि गाय ललाम ॥ तिहि समै भए बभूत
दुहिणकों सुरराय ॥ सुरराजउवाच ॥ हे पितामह ह्यो कौन हेतसो सुखदाय ॥ देवतनके लोक
पै गोलोक है अभिराम । जानिब यह भई मेरे हियँ इच्छा माम ॥ ब्रह्म चर्य सु कियो की इन
कियो है तप भूरि । सुरन ऊपर बास करि कै रही सुखसो पूरि ॥ * * * * *

॥ * ॥ अन्तगुहोत्तरकन्द ॥ * ॥

सुनि बैन ए सुररायके । अतिहीँ सुसंशय भायके ॥ वहि भांति विधि कहते भए । सुर
राजका मतिसें रए ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
नित्य अनादर तुम कियो सुरभिनको सुरराय । याते इनको महातिम जान्यो नाहीं जांय ॥
सुरभिनको परभाव अरु परम महातिम जौन । सो मै तुमसें कहत हौं सुनऊँ लाय मन तौन ॥
॥ * * * ॥ जयकरीकन्द ॥ * * * ॥

गोक पुचनसें अभिराम । कृपी करत हैं जगजन माम ॥ ताँनें विविधि बीज उतपन्न । होत
औ सु जगमे बज्र अन्न ॥ तिहिनें प्रजा रहति मुद छाया । निश्चय जानऊँ हे सुरराय ॥ नितिहिं
मुनिनको करति निवाह । तिमिहि प्रजाको हे सुरनाह ॥ याँनें बसिके धेनु विभात । स्वर्गलोक
ऊपर अबदात ॥ अमरन पर बसिके जौन । सुरभिनको कारण है तौन ॥ बनि कियो तुमको
हम सर्व । हे सुरपति सुखमान अखरब ॥ जौन अर्थको गो भूमाहँ । आइ तौन सुनऊँ सुरगाहँ ॥
पूर्व भयो वृत्तान्त सु एक ॥ कहत तुम्है सो हम सविवेक ॥ * * * * *

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

करत हो सुरराय रक्षा लाककी अभिराम । आय कै बलि दैत्यपति तर्ह युद्ध रधि कै माम ॥
जीति रणमे अमरपतिको छीनि लीने राज । अदितिके हियमाहिं तासो भयो दुःख दराज ॥
लसी कश्यपकों सु अँसें कहन सो दुख छाया । हाय मोसो सुतन्हको दुख सयो नाहीं जाय ॥ अदि
तिके सुनि बचन कश्यप कहे अँसें बैन । कह अराधन विष्णु प्रभुको चित्त लाय सँवैन ॥ बचन
कश्यपके सुन ए अदिति मुदसो छाया । करण लागी महत तपको चित्त थिरिके लाय ॥ अदिति
की वर तपस्यानें छै प्रसन्न अनूप । विष्णु आए गन्धमाही अदितिके मुद रूप ॥ अदितिके तप
देखि सुरभी हर्ष हियसे छाया । करण लागी महत तपको चित्त थिरिके लाय ॥ शिखर पै

कौलास गिरिको आय करिके पर्भ । एक पदसों होथ टाडी करि शुबिन्न अभर्म ॥ सहस ग्यारह बष
कीन्हें महत तप अभिराम । तेजसों बज्ज रयो ताको भयो तन अतिहाम ॥ सुनऊ ताके महत
तपसों देषष्टवि अरु दर्प । गए ताके पास सैरे साध होथ अदर्प ॥ देखि ताकों होथ मोदित
कियो पूजन तास । ता अमन्तर तोहि पूकत भए हम सऊलास ॥ सुरभि कऊ किहिं अर्थ यह
तप कियो घोर महान । देखि तब तप भए हम परसन्न अतिहि सुठान ॥ मागु तू वर अवहिं
बाँहिनसुरभिं सुनु तप धाम ॥ * ॥ सुरभीउवाच ॥ * ॥ कृपा जो हे रावरी सो परम वर अभि
राम ॥ जानती नहिं तव कृपा सम और हम बरदान ॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ * ॥ कछो हम इनि
सुरभिका के वैन सुनि मतिमान ॥ कामनासों रहित तेरी तपस्यासों पर्भ । भए अतिहि प्रसन्नह
हम कहत तोहि अभर्म ॥ देखिगे अमरत्व तामें तोहि वर अभिराम । बसोगी तुम लोक तीनऊ
उपरि सुरभि ललाम ॥ परम धन्या तव सुकन्या बसैंगो भूमाहि । नसैंगे सब पाप जनके गए
तिनके पाँहि ॥ सुरनके अरु देवतनके भोग जे हैं रुब । प्राप्तोकों होहिंगे ते सुनऊ देवि अखर्ब ॥
सुनऊ हे सुरराज सुरभी लोक अति अभिराम । जातिहे कबहूँ न तेहां मृत्यु वर बलधाम ॥ जरा
औ सन्नाप तेहां कइ माहि दिखान । तासु महिमा सर्व लोकन माँहि हे विख्यात ॥ परम दिव्य
अरण्यहैं अहं अशुभको नहि लेश । प्रसंशा नहि जाति ताको कहीं सुनऊ सुरेश ॥ ब्रह्मचर्य सु
ब्रह्मसेः अरु सत्यसों अभिराम । महत तपसों दानसों अरु पुण्यसों सु ललाम ॥ तीर्थ सेवन कियते
अरु चारु कीन्हें कर्म । होतहै गेलोक प्रापित सुनऊ शक सशर्म ॥ अनादर सुरभीनको कबहूँ
न कह सुरराय । करऊ आदर सर्वदा हैं गज अति सुखदाय ॥ तौमरुन्द ॥ * * * * *
हमसों सु पूछो जौन । सब कछो तमसों तौन ॥ भीष्मउवाच ॥ सुनि वैन विधिके पर्भ । सुर
राय होथ अभर्म ॥ सुरभीनको सममान । करिके सु नित्य महान ॥ विधि सहित पूजन कीन ।
सुन पण्डु नन्द प्रवीन ॥ सुरभीनको अवदात । तहें महातिम सुनु तात ॥ सब पाप मोचन पर्भ ।
अतिहै पवित्र सधर्म ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
तजि प्रमाद यहको पढत आइ माहिं जन जौन । दस रहत ताके पितर नित्य सुनऊ बुधि भौन ॥
जे जे इच्छा करतहैं गेके भक्त सुजान । सिद्धि छोट ते हैं सुनऊ हे भूपति मतिमान ॥
गे सेवाने लहतहैं सुत अर्थी सुत स्वत । कन्या अर्थी लहतहैं कन्या हे नृप दत्त ॥
धन अर्थी धन लहतहैं धर्म सु अर्थी धर्म । विद्या अर्थी लहतहैं विद्या उत्तम पर्भ ॥
आनद अर्थी लहतहैं आनदको अवदात । दुर्लभ गेके भक्तको कइ नही है नात ॥
सखि श्रीकाशीराजमहाराजधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजनेपांनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषाया महाभारतदर्पणे प्रान्तिपर्वणि दानधर्मे असीतितमोरध्यायः ॥ * * * * *

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ रामगीतीशब्द ॥ * ॥

कह्यो विधि गोदान करिको नृपमको सु विशेष । सुन्यो तुमसो तौन हम सब सबिधि सुनऊ
नरेणो नृपमको नहि होनि बड्डा प्राप्त सुभगति धर्महित-पावन भूमि गोको किए दान सधर्म ॥
सत्यहै सो कह्यो दमिही भूप नृग अबदात । औ कह्योहै परम ऋषिबर नाचिकेत सु तात ॥

॥ * ॥ जयकरीशब्द ॥ * ॥

सब यज्ञनको माहीतात । भूमि हेन सुरभी अबदात ॥ होत दक्षिणा कहत सुजान । तिनके
माहि सुमऊ मतिमान ॥ सुनत सु हेन दक्षिणा श्रेष्ठ । सो किनि कहिए आपु यथेष्ट ॥ कौन बस
हे सुवरण भूषाभो किहिबिधि उत्पन्न अनूषा । कौन देवता कोहै ताताकिएदान ताको अबदाता ।
मिथत कहाफलाहै अभिराम । अरु किनि उत्तमहै यह मान ॥ हेमदानकी अतिहैं महामा करत
प्रसन्नहैं मतिमान ॥ गो भूतें यह पावन धर्म । कौन हेतुसो भयो सधर्म ॥ मखके माहि दक्षिणा
तासु । किनि प्रशस्तहै कऊ बुधिरासु ॥ भीष्मउवाच ॥ अतिहै जानिको जोहेतु । है विचारित
महीय सचेत ॥ सुवरणकी उत्पतिहै जौन । अरु मोको भो अनुभव तौना ॥ तुहै कहत है मै नरराया
सुनऊ चित्त धर करिके लाय ॥ * * * * ॥ अरिलशब्द ॥ * * * * ॥

पिता ह्मारे शान्त भए जव । गो हरद्वार आइकीबैतव ॥ तहाँजाय कीन्हो आरम्भहि ।
आइ कर्मको तजिके दमहि ॥ तब सुरसरिता मात ह्मरिय । करती भरै सहाय सुठारिय ॥
तदनन्तर हम हर्षित छै करि । अतिहै शान्तिना हियरेभै धरि ॥ आदर करिके बड्डत सु ऋषिबर ।
आइमाहि बलवाय सुमतिधर ॥ जलदानादि कार्य जो है बर । कियो तास आरम्भ सुमति
धर ॥ करि समाप्त हम पूरवकर्महि । हिरे धारि आइके धर्महि ॥ लागे पिण्डदान दीबै अब ।
तहाँ एक आसुर्ध भयोतव ॥ भूषणसो भूषित अति सुन्दर । सुन नृप पिता ह्मारेको कर ॥ निक
सत भयो सुदर्भ भेदि करि । ताहि देखि हम बिसयको धरि ॥ छै अनमेष जानिके अङ्गत ।
बड्डत बेरको चाहि रहे सुत ॥ तदनन्तर हमकरिके चिन्तन । संज्ञा सहित कियो अपमोमर्न ॥
दोजे पिण्ड सु पितरहस्त माहि । यहविधि है बरवेद विहित नहि ॥ पिण्डदान दोजे कुग्र उपर ।
वेद विहित यह शुचि विधिहै बर ॥ * * * * ॥ * ॥ चरणकुलकशब्द ॥ * ॥ * * * * ॥

यह विचारको हीने धरिके । पित करको सु अनादर करिके ॥ पिण्डदेत भो कुग्रवे माहि ।
पितुकर देखि पक्षी तब माहि ॥ * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * ॥

तदनन्तर मोहि लगने मो पितु परे सु देखि । कहत भए जैसे वचन धर्म सु करे ॥

सुनहु तात तव ज्ञानिना मै प्रसन्न भो धर्म । शास्त्र प्रमाणहि मानिको तौन अहै धर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतीशब्द ॥ * ॥

धर्मको अरु वेदको अरु शास्त्रको अभिराम । पितामह अरु गृहस्थतिको दणको सु असाध

पितरको अरु ऋषिन्हको परमान राख्यो तात । सुनहु यातें मोहि एमे प्रेम तव सरसात ॥ रह्यो
 खैसो ज्ञान तरे हिए माहि सराहि । किया लाखकौ भाइकी सुखभयो मो प्रिय माहि ॥ देतहैं
 उपदेश तेकों एक मै हे तात । मिलैयो उपदेशसों तिहि होहि फल अवदात ॥ दानसाहीं नजको
 अरु भूमिके अभिराम । देहु सुवरण सुनहु सुत तुम महत मेधाधाम ॥ प्रेमसों गहि नेम कीन्है
 हेमको बुधिदान । सर्व पावन होहिये मम पितामह मतिमान ॥ * * * * *

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ तोमरहृन्द ॥ * ॥

जन जौन सुवरण देत । विधिसों सु होय सचेत ॥ दय पुंछि तारत तौन । सुनु तात वर बुधिमान ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तदनन्तरमे जानिके विहित होय सु जान । सुवरण दानहि करत भो मतिसों सबिधि महान ॥
 यह प्रसङ्गमे कहतहैं और एक इतिहास । अति पावन प्राचीन है सुनऊ तौन बुधिरास ॥

॥ * ॥ पभक्तलीहृन्द ॥ * ॥

ऋषि परस एकदस प्रार । कीन्हो निचानिया भू अपार ॥ बलसों अखर्व सब भूमि जीति ॥ हय
 मोष कीन्ह गहिके सुरीति ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

अश्वमेधके सुफलसों रहित पापसों पर्भ । होत भयो यमदग्नि सुत भूमिप सुनो सधर्म ॥
 तदनन्तर वर ऋषिन्हकों अरु देवनकों माम । पकृत भो यमदग्नि सुत यहि विधिसों बुधिधाम ॥

उय कर्म जे नरनके तिनमे पावन कौन । कहौ मोहि अबगाहिके सर्व आपु बुधिमान ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

परशुरामके वैन सुनिके सर्व महान ऋषि ॥ सुनऊ तात बुधिअँन कहत भय खैसँ वचन ॥

॥ * ॥ आभीरहृन्द ॥ * ॥

विप्रणको सतकार । कर्मनमाहि सुठार ॥ है अति पावन कर्म । निश्चय जानु अभर्भ ॥
 कर्म न माही नाम । कर्म जौन अभिराम ॥ ते पुनि पूछोराम । विप्रणसों बुधिधाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परशुराम ए ऋषिन्हके सुनिके वचन सुठार । ऋषि अगस्त्य सु बसिष्ठ अरु काश्यपकों सु उदार ॥
 पकृत भो खैसँ वचन को मूल कहिके पर्भ । जन पावन किमि होतहै कहिए आपु अभर्भ ॥

करो अनुग्रह आपुजो मोपे परम महान । तौ कहिए किमि होऊँ गो मै पावन मतिमान ॥

॥ * ॥ ऋषयउचुः ॥ * ॥

भूमि नऊ अरु विन्तकों दीके दान खलाम । पापी पावन होतहैं सुनतेहैं हन राम ॥
 औरऊ पावन होनको सुनत परम हन हेतु । सौ वचसो हन कहतहै सुनिए होय सचेत ॥

॥ * ॥ रामप्रीतीहन्द ॥ * ॥

भा०
दा०

दिय बहुत रूप सबक सुवन अति अभिराम । लोकने निव्यात ताको मनु सुख रूप प्राप्त ॥
विधिकीं गुन प्राप्त हो हो किहँ ताको दान । और सबके ज्ञान सब नहिं दान है नतिमान ॥ अघि
ने उतपन्न सुखरूप भयो है हे राव । जहा जाते तेजसे यह देखते अभिराम ॥ देवता सब मनुज
राजस उरग चौ गन्धर्व ॥ मुह नैके चाहि भारत चौ विजाय सबर्ष ॥ पहि भूषण विविधि विधि
के सबके उपदात । देवतादिक सर्व निज निज लोक साहि विभात ॥ देवतादिक सर्व यखे धरत
भिरपर पर्य । हेन जातेहे पविचन ते पविच सभर्ष ॥ येक चाहो हेतु हो है भूमि गो ते हेन । है
प्रयत्न सुदक्षिणा मे देत जन नहि नेम ॥ सविधि जे जन देत सुवदण प्रेज ताहि के मासासर्वदानहिं
क्रियेको सब कहत ते जन राम ॥ महात्मि पुनि कहतहो मै येकको अभिराम । सुनऊँ सो तुम
राम धिपदा भाम परम सत्ताम ॥ सुतो हम सु पुराणने यह क सुमान सुमान । भूतिपद धिम
वान पर शिव शिवाको सुखदान ॥ याहके पछात जव भो सुमान सब प्रीति । भय जावत
देव सब तव शंभु पास सभोति ॥ देखि बैठे दुइजको सब देवगोस नवाय । बैठिके इनि भय कहते
शम्भुको सुखदाय ॥ तपस्वी हो आपु तैसा तपस्वीन्या नोरि । तेज तुम देवगो साहि कहत हम
कर जोरि ॥ होयबो बखवान तुम्हरे पुन परम महेज । तौन इनिहै लोक तीन ऊँ राखिहै नहि
शेष ॥ सुनऊँ जाते अपत्यारथ तेज जे है परम । रहो रोके ताहि करिके कृपा आपु सभर्ष ॥
अपत्यारथ तेज ताको रोकिहो औ नाहि । होयबो सन्ताप तौ अति लोक बीनख नाहि ॥ करै
गो सुर पराजयको आपुको सु अपत्य । कहत हम अबनाहिके धुव मानिप न असत्य ॥ धारि
सकत न तेज तव भू औ न सर्व अकाय । सुनऊँ ताते तेजको प्रभाव तव सुदराय ॥ अदि डारिहि
सर्व जगतहि महत है भूतेश । तेज ताते रोकि ए निज परम चण्ड शिरो ॥ प्रोय देवी माहि मिहि
ते पुन तुम्हरे नाहि । कहे देवन्ह वैम जैसे बैठि शिवको पाहि ॥ बखन सुनि ए शम्भु तीर्थनि शिवो
ऊर्ध्व चढाव । उर्ध्वेता भय तबसो शम्भु जन सुखदाय ॥ करि सु विरिजा कोप सन्ततिहो भए
उच्छेद । देवतगुहो कहे निष्ठुर वचन होय सखेद ॥ कियो मम सु अपत्यको उच्छेद तुम सुर
वृन्द । सुनऊँ ताते तुमऊँ विगरे लहोने नहि मन्द ॥ दियो गिरिजा प्राप्त यह कर सुरसको अनि
मान । ऊँतौ तौने कालने नहि तहां पावक राम ॥ आपते गिरिसुताको सब देवता अभिराम ।
रहित सन्ततिहो भय सुनु राम मेधाभान ॥ ऊर्ध्व धारण कत भेजव तेजसो शिव सख ।
निकसिके कहु तेज तव शिव अहते है दसा ॥ भूमिकामे सुधि माहो गिरत भो हो परम । तेज माहो
युक्त नैके तेज तौन सभर्ष ॥ जन्म कारक ताहि प्रापित भयो होत जज्ञान । सखयताहो नाहि
सब शशादि सुर अभिराम ॥ भय पीडितबीर तारक देवसो बखनि । रघुव नहि कोउ सकत
ताके अयने सु महान ॥ अग्निनी सुत हद माहत भानु औ वसु बह । परमान ते देवके इन

काह्यो सबहित कछ ॥ शीनि लीन्हें देवतनके पांग जो सु विनांग । तिमिहिं आयन होनि लीन्हें
 अधिपति के बसवर्षण ॥ इन्द्र आदिक देवता यह सबी जे हे सर्व । भए आपन विपत्ता से होय दीन
 आसर्व ॥ मोनि करि कै विधाताको कहत भे इति बैन । बली तारकद्वैत इनकों किए परम अर्षण ॥
 करक रसा हमारी तुम नारि करि कै ताहि । करक हाथा हमारी तुम हीमताको आहि ॥
 ॥ ब्रह्मोवाच ॥ सुनऊँ मै तो जानतो हैं सर्व भूत समान । होयको तामें व सीतो यह सु वाप
 नहान ॥ करो तादकद्वैतको बध तुमहि भिक्षि कै सर्व । होऊ प्रहित नेकु नति तुम हो अबध
 अखर्व ॥ देवाजसु ॥ देव चौद अदेव राक्षस वर्णसाम जितेक । सबे कबहूँ नाहि मोको नारि
 सर्व तितेक ॥ देवतारक आपुसो नाग्यो सु यह बरदाम । दयो करि कै छपा तव तुम ताहि
 सुखद नहान ॥ सुनऊँ तामें तार कहि इन जीति सकि हैं नाहिं । कहत हैं हम आपुको बरदान
 गुणि हिसनाहिं ॥ पूर्व हमको प्रजाको उद्वेद कीन्होपनी । दयो गिरजा प्राप करि कै कोप सुनऊँ सगर्भ ॥
 होति सम्मति नाहि तामें हमारे लोकेष । ब्रह्मोवाच । दयो गिरजा प्राप तुमकों करि सु शोध
 अघेष ॥ हुतो तैने काखने नहि तहां पावक पर्न । करै मो उतपन्न तामें बली पुत्र सभर्न ॥ अधिक
 सबते होय मो सो मुखनसों अभिराज । सुरसके जे प्रभु तिनकों नारि हे सो नाम ॥ उई धारत
 तेज शिवकी कहु पावक नाहि । गिख्यो हो सो लियो पावक चाहि करि कै ताहि ॥ अपि तैने
 तेजसों सुरशरीनाहि अमन्द । भरो तेजस भानुसो उत्पन्न करि हे नन्द ॥ अपिकों नहि भयो
 प्रापत प्राप हैं सुरवृन्द । देवभयहर होयको तिहिते सु ताके नन्द ॥ अखहु सुरसव ज्वलन हे
 कहें करहु तासु तखसु । जाय ताके पास तुम यह कहे कारण आसु ॥ दैत्यतारक बधनकी
 बर हे उपाय सु जान । कही इन अबनाहि करि कै सर्व तुमकों तौन ॥ कही जौ यह सर्व तुम हे
 अपिहू तौ देव । प्राप गिरजाको न लाग्यो चाहि क्यों कहु भेव ॥ सुनहु तौ नै कहत ही यह
 हेतकों अभिराज । प्राप तेजस्वीनको जो शोधसों अतिमान ॥ लगत तेजस्वीनमे नहि जानु निश्चय
 पर्न । नेकु संग्रह है न याने कहत होय अर्भर्न ॥ अपिको सु तलास शीघ्रहि करो तुम सुर सर्व ।
 कामनाकों सिद्धि करि हैं तुम्हारी सु अखर्व ॥ सर्व देवत विधाताके परम सुनि ए बैन ।
 शोभिवेकों उताग्रनकों बली होय सचैन ॥ तत अमन्तर सुरन सह अपि सर्व लोकन्हनाह ।
 भए किरते अपिकामै भरे अतिहिं उहाह ॥ आपुहो मे प्राप्त जोहै अपि ताकों नाहि । सबे
 जानि सु फिरे हैं उत सर्व लोकन्हनाहि ॥ तपिन पावक तेजसों मछडूक एक अखर्व । अपि
 हरमन खाससासो सुख सुर अपि सर्व ॥ देखि सो मछडूक तिनकों कहत भो इति बैन । बसत
 हे पातासने शिखि किए अकने बैन ॥ तपित ताको तेजसों हम होय कै सु विनास । भागि
 आए भूमि ऊपर होडि कै पातास ॥ नाहि देखो चहत हो तौ जाऊ सब तुम तत्र । जात हैं

भाष्य
 दाभ

दा०प० एतं अग्निभयत रहै मे नहिं अथ ॥ कश्चि सु मण्डुक वचन य सुर अग्निहो अग्निदान । त्वरित
दा०प० ही अग्निहोय करतो भयो अलमे मान ॥ जानि कै मण्डुककी चुनखीहि पावक उद्ग । देत भो यह
आप भेकहि महत करि कै शुद्ध ॥ जानि है जिन्हा न मेरी रसमकी अबरात ॥ आपसों करि पुन
भेकहि भयो त्वरितहि जात ॥ आपुकों सु ह्याअनेकों किधो अग्निहि वास । तत अगन्तर सुमऊ
हे अमदभिमुत बुधिरास ॥ आप मण्डुक सुरन पै यह कहत भे वृत्तान्त । सुरन सुनि इमिकह्यो
भेकहि आपा करि सु नितान्त ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ * ॥ दोहा ॥ * ॐ ॐ ॐ ॐ * ॐ ॐ * ॐ ॐ * ॐ ॐ *
रहित भई रस ज्ञानसों तव जिन्हा अग्निराम । उद्ग ऊद्ग सह अग्निहो लई आप अतिमान ॥

॥ * ॥ अरिहाण्ड ॥ * ॥

तवऊ बज्रविधा बाणी कों वर । मोखै गी जिन्हा तव ददुर ॥ सब सुर अग्नि कश्चिकै इनि
भेकहि । भोजन खाने पुनि सविवेकहि ॥ कछू दूरि जब ने अग्नि अथ सुरा निस्थो हिरद एक तासु
महत उर ॥ शैरावत हूतैं अति सुन्दर । अकित भयो लखि ताहि पुरन्दर ॥ कहत भयो शैरै
सो मदधर । चल दसमाहिँ रहत है शिखि वर ॥ * ॥ दोहा चरंशा ॥ * ॐ * ॐ * * * * *
हिरदहूकों तव आप दियो यह अग्नि क्रोध करि उद्ग होय जायगो उखीवी जिन्हा सब हिरदनकी शुद्ध
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आप देख यह हिरदकों गयो समीके माहि । तदनन्तर पुनि सो हिरद गयो सुरणके पाहि ॥

॥ * ॥ जयकरीण्ड ॥ * ॥

कह्यो आपको सब वृत्तान्त । दोन शैय कै हिरद नितान्त ॥ सो सुनि कै अग्नि देवत सर्व ।
तासु समुक्ति उपकार अखर्व ॥ देत भए जो वर वरदानं । सुमऊ तौन तुम राम सुजानं ॥ * ॥
देवाजपुः ॥ * ॥ उलटो जिन्हाहूसों चाह । करि हो नैगल सर्व अहार ॥ अण्ड सोयगो तव
अतिउद्ग । यह वर है निर्जर अग्नि शुद्ध ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
सगे अग्निके खोजने नए कछू जब दूरि । मिलत भयो तव एक शुक्र परम मुद्रिको भूरि ॥

॥ * ॥ भोक्तिकदानण्ड ॥ * ॥

शुक्रउवाच ॥ * ॥ लख्ये हम बन्धिँ समी इममाहि । लखौ अबहीं अग्नि कै तिहिँ पाहि ॥ कह्यो
अग्नि देवनों शुक्र परमं । सुभे सब देव भए सह अर्भ ॥ गयो शुक्र यों कश्चि कै कछू दूरि । निस्थो
तहँ अग्नि मरो क्रुध भूरि ॥ दयो शुक्रकों यह आप महान्त । तुँ होऊ सु नाकत्रिहीन अजानं ॥
सु पानकको लखि कै यह आप । मलीन सु होल भरो दुख दाप ॥ गयो तदनन्तर देवन पास ।
हो सुखी सब आप प्रकार ॥ दद्यापुत अथै तव देवन सर्व । दयो वरदान सु यह अखर्व ॥ सुनो
क तो वर नाक सुठान । न होय हि मष्ट नितान्त सुजान ॥ सबै पणजाहिँ सु तो वर वैन । ननो
हि है कल अद्भुत अँन ॥ सु दै वरदान शुक्रें यह सर्व । समी नहि देखत भे सु अखर्व ॥ पसो

कहि अग्नि समीतरनाहि । लखें अग्नि औ सुररुन्दहि पांहि ॥ भयो अति पीडित पावक पर्मे ।
सुनो अग्नि राय महान अभर्न ॥ कश्यो तदगन्तर सो सु कथान । कही तुम आपन हेतु महान ॥
सुने यह पावकके वर बैन । सबै सुर सो अग्नि होय सधैन ॥ भए कहते इनि बैन सुठान । सुनो
अग्निराघ महान सुजान ॥ * * * * * ॥ चोरठा ॥ * * * * *
करिनेकी एक काज कश्यो कहत तुमको सु हम । कारज तौन दराज तुम ही करिने योग्य हो ॥
कीन्हें कारज तौन तुमको गुण होय गो । अग्नि अरु सुर बुधिभौन कहत भए इनि अग्निसे ॥
॥ अग्निवाच ॥ दोहा ॥

ग्रा०
दा०

कहिहौ कारज जौन तुम करि हैं सो हम सर्व । कही कृपा करि शीघ्रहीं करज न देर अरु ॥
॥ * * * * * ॥ देहाजबुः ॥ * * * * * ॥ तौमरुन्द ॥ * * * * *

एक दैव अति बलधामातिहिको सुतारक नामा ॥ अति पराक्रम तिहिनाहि सत तास कोज नाहि ॥
॥ * * * * * ॥ आभीरुन्द ॥ * * * * *

ताहि बधन काज । तेजस भरो दराज ॥ परमवीर बलवान । महा बाऊ मतिमान ॥
॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

करज पुत्र उत्पन्न तुम औसो होय कृपाल । तासों अग्नि अरु सुररुको साधस निटै विशाल ॥
देवता अरु अग्निहके सुनि बैन पावक पर्मे । जाय सुरशरिमाहि निच्छि सो सुनऊँ राम
सगर्भ ॥ तेज धरतो भयो शिवको परम उद्य अमन्द । गर्भ सो भो सुरशरीमे सुनऊँ अग्नि निर
दन्द ॥ बढन भे सो गर्भ अतिहौ परम उद्य अनूप । सही संकी नधि तेज ताको सुरशरी मुदरुपा ॥
विन्दहलौ अति होय सुरशरि कश्यो औसैं बैन । स्वस्थ भरो चिन्त है नहिँ सुनऊँ तेजसधैन ॥
प्राप्त भो यह गर्भसौ अति दुखः मोको मान । तजति हौ नै अवाहिँ घातें याहि पावक आम ॥ बैन
सुनि ए सुरशरीके कश्यो इनि सुकथान । करज धारण तजऊँ मति तुम गर्भको गुणवान ॥ रह्यो
पावक वरज ते सुरशरी नाम्यो नाहि । डारि दीन्हें गर्भको वर मेरुगिरिके नाहि ॥ भयो पूहत
सुरशरीको तब कथान अनूपागर्भको है बर्ष कैसो औ सु कैसो रूपा ॥ तेज है तिहिनाहि कैसो कही
यह सब जेहि । सुरशरी तब कहन लागी अग्नि सोहैं जोहि ॥ * * * * * ॥ गंगोवाच ॥ * * * * *
है ससत तनसो बर्ष सुन्दर तास । विमल ताको रूप है अति भरो परम प्रकाश ॥ कदम्बनके
फूलकीसी गन्ध जाने पर्मे । सुरशरी इनि कश्यो शिखिसौ सुनऊँ राम सगर्भ ॥ परो जिन जिन
पदारथ पर तासु तेज अखरु । परम कथन भए तेने पदारथ वर सर्व ॥ लोक तीनऊँनाहि पैख्यो
तासु तेज विखन्द । रूप औसो है तुम्हारे मन्दको सु अमन्द ॥ सुरशरी इनि अग्निसे कहि भई
अन्तरधामा भयो अग्निज देवतनको करि सु काज महाना ॥ कर्म यहि से भयो शिखिको हेम रता
मान । भई पुञ्जनी वसुमती सुनु राम अग्नि अभिराम ॥ * * * * *

आ०प०
दा०ब०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कर्मे सुरशरीरों तजित शरके बनने परने । बहत भयो बहुत सुनऊ ऋषिवर राम अभर्ने ॥

॥ * ॥ पञ्जलखोहन्द ॥ * ॥

कान्तिका मन्त्र तिहिको सु देखि । कीन्हो उठाय अति बाध कोषि ॥ निज सु सनको बर
पय पिचाय । पोषति सु भर्दने के सचाय ॥ भो कार्तिकेय तबसो सु तौन । सुनु परशुराम ऋषि
सुनतिमान ॥ उतपन्न भयो यहिविधि हिरन्य । तिहिनाहि जाम्बुनद सो न अम्य ॥ हैं तासु देव
शिव औ कृष्णा तिहिनेसु हेन महिमा महान ॥ * ॥ बसिष्ठउवाच ॥ इतिहास और इन कहत
परने । सुबर्ष प्रसङ्गने सुनु अभर्ने ॥ आचरण दुहिणको जो ज्ञान । वृत्तान्त तासु तिहि नाहि
मान ॥ एकसमयमाहि शङ्कर सगर्भ । वपु धरौ बरहको सुनु अभर्भ ॥ तिहि समयमाहि
मुनि महत सर्व । अर दुहिण आदि देवत अखर्व ॥ सब शुभद भए शिव पास जात । सुनु सुमति
मान समदभि तात ॥ चारौ सुवेद बर मुर्त्तिमान । अर अङ्ग सर्वमलके सुजान ॥ ओंकार मंत्र
अर बषटकार । कै मुर्त्तिमान सुषमा अगार ॥ ए शम्भु पास भे जात सर्व । इन सवनको सु
आदर अखर्व ॥ कीन्हो गिरीश भगवान परने । सुनु परशुराम ऋषिवर अभर्भ ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिरथो तौन हि समयने यज्ञ शंभु भगवान । शिव प्रभावसो यज्ञ सो शोभित भयो महान ॥

॥ * ॥ रामगीतीहन्द ॥ * ॥

आवते तेहि यज्ञने भे दिशा औ दिगंपाल । देवनाता देवकन्या औ बरा सुरवाच ॥ महत
मुदसा भरौ आवति भर्द मलके माहि । शम्भुको करि दरश सबही भर्द बैठति पाहि ॥ रजोगुण
उतपन्न भो हियमाहि विधिके परने । देखि कै तिनसवमको सुनु रामसु ऋषि सधर्भ ॥ गिरण लामो
वीर्य ताते दुहिणको सुपधानागिरो जेतो भूमिमाही वीर्य परम खलाम ॥ दयो पूषा होनि ताको
सहित धूरि उठाय । अधिकी बर कुण्डमाही सुनऊ सुष्टपि सचाय ॥ भए ताते ऊपमज औ जरा
पुज अभिराम । तिमिहि खेदज अष्टजौ भे होत परम खलाम ॥ तत अनन्तर गिरो बज्रतहि
वीर्य विधिको परने । नाहि गिरत हिँ लथो सुर वानाहि दुहिण सगर्भ ॥ होसि दोहो ताहि वृत्तवत
मंत्र पठि कै परने । तमोगुण भे होत ताके तेजने सु सधर्भ ॥ सत्वगुण भी तिमिहि ताते भरो तेज
महानासने गुणने होत भी आकाश महतसुजान । होतभे आकाशने सब वायु आदिक भूत । ताम
ही सब तमोगुणने भए परम अकूत ॥ भए होमत अभिने जब वीर्यको लोकेष । तीन पुरुष सु
होत भे तब सुनऊ सुष्टपि सुवैश ॥ ज्यालने भो होत भृगुवर भरो तेजस परने । अग्निरा अकारत
भो होत खल अभर्भ ॥ अल्प ज्यालाके अंगारेने भयो कवि खल । भो मरीच सु मरीचीने अग्निकी
सुनु दहा । भयो ताके सुषन कश्यप भुवनने बिआत । भए कुस समुदायते सब बाणखिल विभात ॥

भए अविज्ज दर्भके समुदायते अभिराम । भए भस्स समूहते वरवाणप्रस्थ ललाम ॥ भए शिखिके अश्रुतहे दुओदस सुवेश । सवणने उतपन्न भे वर प्रजा पति जे सेश ॥ खेदतें भो वेद अरु भे रोमतें ऋषि पर्मा । भयो वल्लतें होत मन सुनु परशुराम सधर्मा ॥ भयो लोहित वर्णतें उत्पन्न सुवरण तात । तास महिमा सर्वलोकनमाहि है विख्यात ॥ ता अनन्तर बरुण वपुधरि शम्भु आनन्द येन । सुदित ऋग्वै देवगणकों कहत भे इमि बैन ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

यह दिव्य यज्ञ हमार । अरु तीन पुत्र सुठार ॥ सुनि अग्नि ए वर बैन । इमि भयो कहत स चैन ॥ मम अङ्गते अभिराम । उत्पन्न भे सुत आम ॥ अरु मम हिँ आश्रय कर्त । नाहिँ अन्य आश्रय धर्ता ॥ यहिते सु हिँ मम मन्द ॥ शिव कहत भूठ बिलन्द ॥ इहिँके अनन्तर पर्मा इमि कह्यो इ हिण सशर्मा ॥

॥ * ॥ अरिसुखन्द ॥ * ॥

हमहीं हैं सु यज्ञके कारक । सुमज्ज देव सब आनन्दधारक ॥ हमहीं है अरु शुक्र होम कर ॥ यातें मेरे हैं ए सुत वर ॥ शुक्रहि है सन्तिको कारण । तुम्है कहत हैं करि निरधारण ॥ जासु होय बोरज फल सो दया । लहै न और दूसरो कोदय ॥ सर्व देव विधिकी बाणी सुनि कहत भए विधिकी इहि विधि गुनि ॥ जग सब महत चराचर मय धरा अरु हम हैं आपुहि के मुदधर ॥ तातें कह्यो हमारो मानक ॥ आपु नेकहू हठ मति ठानऊ ॥ बरुण रूप शङ्कर अरु पावक । तिन्हें देऊ ए सुत तुम पावक ॥ ~~~~~ ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

सुनि देवतन्हके बैन । विधि परम आनन्द येन ॥ इमि कह्यो तिनकों जोय । कहिहो सु करि हिँ सोय ॥ तव बरुण वपुधर शर्ब । सुनु राम सु ऋषि अखर्ब ॥ विधिकी सु शासन पाय । अति हर्ष हियमे छाया ॥ सुत ज्येष्ठ भृगुवर ताहि । शुचि भए खेत सु जाहि ॥ अरु आंगिरसकों खल । शिखि भयो खेत प्रतप्ता ॥ कविकी लिये सह प्रेम ॥ विधिलोक नाथ सत्तेम ॥ शिव बरुण वपुधर पर्मा । भृगुको सु लीन्ह सशर्मा ॥ तिहि ते सु बारुण नाम । भृगुको भयो बुधिधाम ॥ ~~~~~

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अपि अङ्गिरसको लयो आश्रय भेसु नाम । भयो अङ्गिरसको सुनऊ परशुराम ऋषिमा ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

ब्रह्मा कविकी लीन । सुनु ऋषि परम प्रवीन ॥ तातें ब्राह्म सुनाम । कविकी भयो ललाम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए तोनो हैं प्रजापति सर्व शृष्टिके हेतु । इनतें जौन अपत्य भे ते अब सुनऊ सचेत ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ अरिखण्ड ॥ * ॥

ब्रह्म शीर्ष अरु अघन और्व शुचि । शुक्र वरेण्य सवन विभु वर रुचि ॥ भृगुके भए सप्त ए सुत
वर । भृगुहि समान परम सब गुणधर ॥ घोर बिरूप उतप्य दृहस्यति । शान्ति पयस्य सुवन्वा वर
मात ॥ अरु समर्त महत तेजस युत । भए अग्निरसके ए वसु सुकः ॥ विरजा काव्य उय उसना
कविकाशी धृष्णु सुभृगु अरु वर छवि ॥ अष्ट भए कविके ए सुत वर । कविहि समान अमन्द सुमतिधर ॥

॥ * ॥ रोलाखण्ड ॥ * ॥

तदनन्तर इमि कहत भए सुर बिधिके सनमुख । सुनऊँ लोकपति पाय द्रुपा तव को न लहत
सुख ॥ तव प्रसादतेँ प्रजापति सुतारैँ ने लोकहि । न्हैँ करता धंशके सु छनि हैँ जग शोकहि ॥ ल
हि हैँ तपस अहां नितिहि वर ब्रह्मचर्य ब्रत । रहि हैँ विदुष महान होय निति बेद मांदि रत ॥
तुमहीं करता देवनके अरु विप्रणके सब । होत महत आनन्द अनुग्रह आपु करत जब ॥
॥ वरबैखण्ड ॥ यहि विधि विधिकेँ कहिकेँ देवत सर्व । जात भए निज लोकहि समुद अखर्ब ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वरुण रूपधर शम्भुके यज्ञ मांदि अग्निराम । यहवृत्तान्त भयो सुन्यो पूरब हम बुधिधाम ॥
निश्चैँ अग्निहिको सुवन हैँ सुवरण अभिराम । यामे संशय हैँ नहीं सुनऊँ सुखधि बुधिधाम ॥

॥ * ॥ रामणीतीखण्ड ॥ * ॥

द्रुहिएको सुत अग्नि हैँ अरु अग्निको सुत हेम । सुनऊँ ताते अछैँ अति हेम दान सक्षेम ॥
सहित आदर अिजनकेँ जे सबिधि सुवरण देन । रहित तमसो लोक तामे महत मुदकोँ लेत ॥
सबिधि रविके उदयमे जे देत सुवरण खत । होत तिनकोँ दोष नहि दुःखमकोँ सुनु दस्त ॥
हेमकोँ मध्यान्ह मांहीं देत हैँ जन जौन । प्राप्त कवजुँ होत हैँ नहि पापकोँ जन तौन ॥ देत साथ
कालमे जे हेमकोँ अघदात । महत विधि अरु अग्नि विधुके लोकमे ते जात ॥ लहत हैँ अति
प्रतिष्ठाकोँ सर्व लोकन्ह बीच । पायकेँ यह लोकमे यश रहत नित्य निभोध ॥ नित्य रविके उदय
मांहीं परम गहिके नेम । अग्निकोँ प्रज्वलित साक्षी मूत करि गहि प्रेम ॥ विप्र वरकोँ सहित आदर
देत सुवरण जौन । कामना सब लहत हैँ जन तौन वर बुधिधौन ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कार्तिकेय अरु हेमकी उत्पति जो अभिराम । तुनहैँ कही सो सबिधि हम सुनऊँ सुखधि बुधिधाम ॥
कार्तिकेय बऊँ दिननमे भयो महत बलवान । सेनापति तव देवतन कीन्हौँ ताहि सुजान ॥
आज्ञा लहि सुररायको कार्तिकेय करि कुह । माखो तारक दैत्यकोँ निरचि युद्ध अति उह ॥
सुवरणमे हैँ महत गुण ते हम कहे बखानि । विप्रणकोँ तुम देऊँ अति निखय सीमे आनि ॥

॥ * ॥ भोष्णउवाच ॥ * ॥

शा०५०
दा०५०

परशुराम ए वचन सुनि ष्टषि वशिष्टके पर्भ । हेम देत भो द्विजनकों तातें बूटो अधर्म ॥
देऊ तुमऊ वर द्विजनकों हेम दान अबदात । सब पापनतें छूटिहो निश्चय जानऊ तात ॥
स्त्रियाकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दोजनकाशीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्थात्मजगोपीनाथस्थशिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि दानधर्मे सुवर्णात्पञ्चै एकाश्रीतितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गुण सुवरणके दानको कह्यो बिस्तरित आपु । अरु ताको उत्पत्तिको कह्यो हेतु स प्रतापु ॥
देवनसों नहि बध्यहो तारक देव्य महान । ताको बध कैसें भयो कह्यो मोहि बुधिमान ॥
तारक नामा दनुजको मरण भएतें भूरि । संशय मो हिय मांहिं भो सो तुम कीजै दूर ॥

॥ * ॥ भोष्णउवाच ॥ * ॥ अरिलहन्द ॥ * ॥

गङ्गा गर्भहि डारि दियो जव । ष्टषि अरु सुर सब विकल भए तव ॥ भरे भीति अरु शोच
महासों । कहत भए जैसें कृतिकासों ॥ * * * * * दोहा ॥ * ॥ * * * * *
सब देवनमे देव कोउ जैसें नाहिं दिखात । धारण शिखिके गर्भकों करै जौन अबदात ॥
धारण कीपें योग्य हो तुमहि समर्था पर्भ । यातें शिखिके गर्भको पोषण करो सशर्म ॥
देवनको अरु ष्टपिनके कृतिका सुनि ए बैन । धारण शिखिके गर्भको करतीं भई सचैन ॥
धारण कीन्हें गर्भको भयो प्रसन्न कथान । अरु देवता ष्टषिवर सरव मोदित भए महान ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

बढो गर्भ जब कृतिका सर्वा । तास तेजसों परम अखर्बा ॥ अतिहीं आकुलतासों काई । बनमे
जरत शृंगीकीं नारै ॥ कृतिका काल बितीत भयो जव । गर्भ भई जन्मावति सम तव ॥ तौन सुमर्भ
एकट्टा खैकै । शोभित भयो प्रभासों खैकै ॥ तिहिं बालकको सर्व सहा । धारण कियो मोदसों
महा ॥ प्राप्त होय सो सरके बनमे । बढत भयो अति धोरे दिनमें ॥ ताहि देखि कृतिका मुद
पागी । होय सप्रेम पोषिबें ज्ञागी ॥ * * * * * दोहा ॥ * ॥ * * * * *
तदनन्तर ताको लखन ब्रह्मां विष्णु महेश । आवत भए सहर्ष अरु अमरन सह अमरेश ॥
हाहा हूह आदिदै रचे जिते गन्धर्व । मंजु सब आवत भए आनद भरे अखर्व ॥
आप वायु नभ चन्द रवि अरु नक्षत्रके हन्द । कार्तिकेयको देखिबें आवत मे सानन्द ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

षट् आनन भुज हादश नीके । मारतखको कर से सीके ॥ हादश नैन अँन दरभाक । लसत कण
लौ तेज महाके ॥ जैसें वपु अग्निजको देखें । सिद्धि कामकी हीमे लेखें ॥ परम हर्ष सो हीको

दर्पणः ॥

शा०प०
दा०ध०

सान्यो । तारकको बध निश्चय जान्यो ॥ तदनन्तर सब आनन्द पागे । ताहि खिलौना दीबें लागे ॥
दद्यो गरुड अपनो सुत नोको । तामु मयूर नाम अति सीको ॥ बरण दियो कुकूट अति सुन्दर ।
दियो सिंह बर बली पुरन्दर ॥ औ दीन्हो एक उन्नत छाधी । सुन्दर ऐरावतको साथी ॥ मारतण्ड
दीन्हो भा नोकी । सुरभी दोत भई गो श्रीकी ॥ दद्यो चन्द्रमा मेघ सु अद्भुत । अघि देत भो छाग
प्रभा युत ॥ दिए सुधन्वा सकउ अनोखे । औ दीन्हें बज्ज रथ अति घोखे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तदनन्तर तहँ आयकै तारक दत्य महान । कार्तिकेयको जानिकै महत भयो बलवान ॥

॥ * ॥ पञ्जलीछन्द ॥ * ॥

बज्ज बधन काज कीन्ही उपायापै बधि सक्यो न बर दैत्य राया ॥ तदनन्तर ऋषि अरु अमर सर्वाहिया
माहि शोच करिकै अखर्ब ॥ अग्निजहि सेनपहि करि सुजान ॥ तारक सुदैत्य तिहिको महान ॥ कहि
दीन्ह पूर्व वृत्तान्त सर्व । सुनि तौन बोर बङ्गज अखर्ब ॥ चडि सज्जि गज्जि करि क्रुद्ध उद्ध । चल्थो
बीर कीबें सु युद्ध ॥ इमिलसत बोररससों महान ॥ अतिभरो तेज मनु है ठगान ॥ उतते भूपट्टि तारक
सुभट्ट । लीन्हें प्रचण्ड दानव सघट्ट ॥ आयो करत्त अति घोर शब्द । गज्जत सचल्ल मनु उद्ध अब्द ॥
बलवान बोर दोउ सुजान ॥ संग्राम घोर बिरच्यो महान ॥ हट्टत न कोय दे । जन बीचाकट्टत अनेक
भट्टै निभीचा ॥ बर रुंड मण्ड विचि परिय खग्गा ॥ इमिलसति तास उपमा अदग्गा ॥ मिश्रो चहत्त मनु
राज कोत । रवि किरण तिन्हाह नहि मिलन देत ॥ विन हस्त रुधिर मय रुंड दक्ष ॥ मनु जरे अग्नि
सो तार वृत्त ॥ लखि कार्तिकेयको रण अतूल । हरपत सुदेव बरपत सु फूल ॥ बढि कार्तिकेय
गहि शक्ति उद्ध । तारकहि हन्यो अति व्हे सकुद्ध ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
तारकको बध देखिकै ऋषि अरु सुर सानन्द । व्हे समीप इमि कहत भे धन्य धन्य त्रिखिनन्द ॥
किर्तिकेय पुनि इन्द्रको राज्य माहि बैठाथ । हनिकै भयकर निकरको कीन्हो परम सचाथ ॥

॥ * ॥ जयकरोछन्द ॥ * ॥

तबसो सुर सेनापति नाम । कार्तिकेयको भो वृधिधाम ॥ भयो सदाशिवको प्रिय परम । सुनऊ
भूप मतिमान सधर्म ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * ॥ * * * * *
कार्तिकेय औसो बली भो सुवर्ण तिहि साथ । ताते उत्तम परम है सुनु सधर्म मरनाथ ॥ * * *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

परशुराम ए बैन सुनि ऋषि परम बशिष्ठको । व्हे कै परम सधर्म सुवरण दानहि देत भो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सर्व पापसों कृटिकै दीन्हें सुवरण दान । स्वर्गलोकको प्राप्त भो परशुराम मतिमान ॥

शक्तिश्रीकाशीराजमहाराजाभिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानगामिना श्रीवन्दीजनकाश्रीवासि
दधुनायकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपोनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे दानधर्मे सुवर्णदान प्रसंगानामद्यथीतमोष्ठ्याथः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पतुर्धर्मको जिनि कह्यो आपु धर्म अबदात । कहो तिनि हिँ अब आइकी सम्पूर्ण विधि तात ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥

भूप युधिष्ठिरके बचन सुनि सुरशरितानन्द । सम्पूर्ण विधि आइकी कहत भए सानन्द ॥

॥ * ॥ श्रीशुभउवाच ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥

सुन आइकी विधि जौन । अति मोद दायक तौन ॥ सुत दायका अभिराम । शुभकारिणी
युधिधाम ॥ सुर असुर अरु गन्धर्व । अहि औ पिशाच अखर्व ॥ नर किन्नरो सह प्रीति । सब कर्त
आइ सनीति ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

माते आइ करै सदा स्वच होय मनलाय । आइ किँ यत्र मिलत अरु बढत वंश सुखदाय ॥

पितर रहत परसन्न है किँ आइ नितिपर्माताते आइ करै सदा भूमिप सुनऊँ सधर्म ॥

तिथि नक्षत्र अरु पर्वमे किँ आइ अभिरामाजो पाल जनको मिलत सो कहत भूप ह्रमआन ॥

॥ * ॥ रामगोतीछन्द ॥ * ॥

प्रतिपदाने आइ विधिसों करत है जन जौन । नारि सुन्दरि लहत हैं अरु लहत सुत बहु
तौना आइ दितियामाहिं कीन्हें सुता होति अनूप आइतृतिथामे किँ बज्र मिलत अश्व सु रूप ॥
चतुर्धामे आइ कीन्हें मिलत तप सु बहु धर्म । मिलत बहु सुत पञ्चमीमे हिँए आइ सधर्म ॥ किँ
षष्ठोमाहिं आइ हिँ मिलति दीप्ति सुढार । सप्तमीमे किँ आइ हिँ कृषी होति अपार ॥ आइ
कोन्हें अष्टमीमे सहित विधि अभिराम । होत है बाणिज्यमाहिं लाभ अतिहोँ नाम ॥ आइ
नामीमाहिं कीन्हें मिलत हय बज्र धर्म । किँ दशमीमाहिं सुरभी मिलति बज्रत सधर्म ॥
सविधि एकादशीमाहिं किँ आइ अनूप । मिलत हैं बज्ररत्न निश्चय जानु हे वरभूप ॥ परम
तेजस्वी सु जाके होहिं सुत अभिराम । द्वादशीमे आइ कीन्हें सुनऊँ नृप युधिधाम ॥ मिलत है
बज्र रजत अरु बज्र मिलत सुवरण धर्म । मिलत है अरु और धन बज्र सुनऊँ भूप सधर्म ॥ ब्रह्मा
दशिकामाहिं जे जन करत आइ सुजान । ज्ञातिमे ते होत छेष्ट सु कहत हैं मतिमान ॥ मरै ताके
गेहवारे तरुण हीं नर चार । है न हियमे नेक संशय सुनऊँ बुद्धिअगार ॥ आइ जे जन करत हैं
तिथि चतुर्दशिकामाहिं । युद्धमे ते मरत हैं हन सुन्यो बुधजन पाहिं ॥ अमावस्यामाहिं जे जन
करत आइ सुजान । आमावा सब होति तिनीकी सिद्धि सुन बुधिमान ॥ * * * * *

शा०प०

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

दा०प०

कल्याणकी दशमी आदिका पञ्चतिथिके नाहि । हे प्रसन्न सब आइकर्ममें चतुर्दशी है नाहि ॥

॥ * ॥ आइसे पूर्वान्हें है अपरान्ह विषय ॥

स्वस्ति श्रीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाध्यानुमानिना श्रीवन्दीजनकाश्रीबासि
रघुनाथकवीश्ररत्नजगोकुलनाथस्वात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मण्डीदेवेन कविना विरचिते भाषायाम्
महाभारतदर्पणे शान्तिपूर्वणि दानधर्मे आइकल्पेयश्रीतितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दीन्हें कौन पदार्थको पिण्ड परम अभिराम । पितर लहत अक्षय तृप्ति कहे मोहि बुधिधाम ॥
श्री कऊ कोन पदार्थको दिए पिण्ड हे तात । महत तृप्तिको पाय कै बऊदिन पितर विभात ॥
किहि पदार्थके आइसों दिनअनन्तलौ परम । पितर तृप्तिको लहत हैं कहिए तात सधर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतोहन्द ॥ * ।

भीष्मउवाच ॥ * ॥ तिलनसों अह ब्रीहि चबसों मूल फलसों परम । नांससों अह नीरसों
बर किए आइ सधर्म ॥ पितर तृप्त सु रहत हैं एकमासलौ हे तात । शास्त्रमतसों कहत हैं अह
नाहि बुध अवदात ॥ बऊततिलसों आइ कीन्हें सहित प्रीति विशाल । लहत अक्षय तृप्तिकों हैं
पितर सुनु भूपाल ॥ मत्स्य आनिषसों कियें आइ सबिधि सुजान । पितर तृप्ति सुर लहत हैं
द्विमासलौ मतिमान ॥ सबिधि कीन्हें आइ ग्रहके मांससों अभिराम । पितर तृप्त सु रहत हैं वय
मांसलौ बुधिधाम ॥ आइ कीन्हें सबिधि अजके मांससों सह प्रेम । तृप्ति लहि कै रहत पितर
सु पञ्चमास सत्तम ॥ आइ मांस बराहकेसों कियें सुनु भूप । मांस षठलौ रहत मोदित तृप्ति
पाय अनूप ॥ आइ कीन्हें बिहगके बरमांससों अभिराम । सप्त महिना रहत तृप्त सु पितर सुनु
बुधिधाम ॥ आइ कीन्हें चिचमृगके मांससों सह प्रेम । अष्टमास सु तृप्ति लहिकै रहत पितर
सत्तम ॥ आइ कीन्हें रोजके बर मांससों सुनु भूप । रहत मोदित मांसदशलौ तृप्ति पाय अनूप ॥
आइ कीन्हें महिषके बर मांससों महिपाल । लहत एकादश महिना पितर तृप्ति विशाल ॥
आइ कीन्हें गऊके बर मांससों अभिराम । पितर मोदित रहत बत्तर तृप्ति लहि कै नाम ॥
लहत जैसे एक बत्तर गव्यसों हे तात । तिमिहि घृतयुत खोरसों अति तृप्ति पाय विभात ॥ आइ
कीन्हें लकके बरमांससों सह प्रेम । पाय तृप्ति अनन्तबासर रहत पितर सत्तम ॥ पिण्ड दीन्हें
फूलको कचमारिके अभिराम । तिमिहि दोन्हे चूबको सह प्रेम पिण्ड लक्षाम ॥ पाय तृप्ति
अनन्तबासर रहत पितर सत्तम । सुमज तातें भूप करिए आइ गहि कै भेज ॥ कहे पितरनकी
कथा भूधाम सनकुमार । पुरुमेको कही ही से सुमज भूप उदार ॥ * * * * *

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

होय हमारे कुलमे जैसे कौज बर मतिमान । जौन सप्रेमजलसी हीने करि विप्रमको सममान ॥
झारकषकी चयोदशीमे मघा नखतको पाय । हमको घृतघृत पायसताके पिछ्छा देय सचाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जैसे कहत सुपितर सब दूहा करि कै परम । सुनऊ भूप कुन्तीतमघ प्रज्ञावान सभर्म ॥
आइ करै अजमांससो मघानखतके मांछि । विधि सह बर सह प्रेम अति चल दल तबकी हांछि ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

मघातीर्थमे अत्य बटतर कीन्हें आइ सप्रेम । दिन अनन्तलौ तृप्ति पाय कै पितर सु रहत सक्षेम ॥
सधुमिलायफलमूलद्वजल दिए पितरतिथिमांछादिनअनन्तलौ तृप्तरहत है पितर सुनऊ नरनाह ॥
स्वस्तिथीकाशीराजमहाराजाधिराजथीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजमकाशीवासि
रघुनाथकवाश्वरात्मजोकुलनाथस्यात्मजोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचित
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानपर्वे आइकल्पे चतुरशीतितमोऽध्यायः ॥ * * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मखतनमे जो मिलत फल किऐं आइ अभिराम । कहत भयो शशबिन्दु को धर्मराज सो आम ॥
तौन तुन्हें हम कहत है प्रथक प्रथक नरराय । तजि प्रसादता सुनहु तुम थिरि कै चिन्त लगाय ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

आइ करत कृतिकामे जौन । रजतें विगत होत है तौन ॥ कीन्हें आइ रोहणी बीच । अनुपम
स्त्रिजत अपत्य निभीच ॥ नखत घृगशिरा मांछि सप्रेम । कीन्हें आइ सविधि गाँह नेम ॥ प्रापत
होत सु तेज सहान । सुनऊ युधिष्ठिर भूप सुजान ॥ क्रूर जगतमे है जन जौन । आइ किऐं आइमे
तौन ॥ कौमल होत परम मतिमान । छूटत क्रूरखभाव महान ॥ कीन्हें आइ पुनर्बसुमाहि ।
होषी होति बज्र सुनु नरनाहि ॥ कीन्हें आइ पृथमे परम । पृष्टि पायतन होत सभर्म ॥ अश्लेषामे
किऐं सनेम । आइ मिलैं सुत धीर सक्षेम ॥ कीन्हें आइ मघाके बीच । होत ज्ञातिमे श्रेष्ठ
निभीच ॥ किऐं आइ फलनुबिभे परम । प्राप्त होत अश्वर्य्य सभर्म ॥ कीन्हें आइ उत्तरामाह ।
मिलत अपत्य सुनऊ नरनाह ॥ किए हस्तमे आइ अनूप । इच्छा होति सिद्धि सब भूप ॥ आइ
किए चित्रामे चारु । प्राप्त होत सुत परम सुदार ॥ आइ किए आतीमे भूप । प्राप्ति वणिजमे
होति अनूप ॥ सह विधि नखत विशालामाह । किए आइ सुनु हे नरनाह ॥ प्राप्त होत बज्र पुत्र
सुदार । सुह प्रभाके बुद्धि अकार ॥ किए आइ अनुराधामाहि । रहै सदां राजाके पाँहि ॥
नियह कै इन्द्रिनिको सर्व । अज्ञा करि हिय मांछि अखर्व ॥ आइ किए ज्येष्ठामे परम । आधिपत्य
छहि होत सभर्म ॥ कीन्हें आइ मूखाकेमाहि । कौनऊं व्याधि होति है नाहि ॥ पूर्वाषाढमाहि

शा०प०
दा०ध०

आ०प० सुनु दत्त । कोन्हे आइ मिले यय स्वच ॥ सबिधि उत्तराषाढामाह । कोन्हे आइ सुनऊ नरनाह ॥
 दा०ध० विगत शोकसें अहे कै पर्मे । रहत महीके माहि सधर्म ॥ किए आइ अभिजितने चार । विद्या
 प्राप्त सु होत सुदार ॥ आइ अवणमे कोन्हे तात । नर मरि कै सद्गतिकों जात ॥ नखत धनेछा
 माहि सप्रेम । कोन्हे आइ सबिधि गहि नेम ॥ होत राज्यभागी नर पर्मे । निस्वय जानऊ भूप
 सधर्म ॥ किए आइ शतभिषमे तात । होत सुवैद्य परम अवदात ॥ पूर्वभाद्र पदसे जन जौन ।
 सह विधि करै आधकों तौन ॥ अज अर आविक लहत अनेक । निस्वय जानऊ नृप सविबेक ॥
 कोन्हे आइ रेवती वीच । मिलत रत्न बऊ नरहि निभीच ॥ किए आइ अश्वनिसे पर्मे । अश्व मिलत
 वर सुनऊ सधर्म ॥ आइ किए भरणीके माह । आयु बढति है सुनु नरनाह ॥ सुने आइकी विधि
 यह चार । भूपति वर शशबिन्दु उदार ॥ आइ करत भो सबिधि सप्रेम । सुनऊ युधिष्ठिर भूप सखे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आइ किएके पुण्यसें जीतत भो भू सर्व । भई प्रभा अति अङ्गमे बाढो तेज अखर्व ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्री उदितनारायणस्याम्नाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
 वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
 भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वाणि दानधर्मे आइकरूपेपञ्चाशोतीतमो अध्यायः ॥ * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

आइमाहि अभिराम कैसे विप्र बुलादए । कहो तात दुधिधाम तुमही कहिबे योग्य हो ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

कुलवानं होय सुजान । अरु शीलवान महान ॥ बध होय जासु नवीन । अरु पिता जास
 प्रवीन ॥ वर रूप होय अमन्द । तन शुद्ध होय नरेन्द ॥ वर विप्र अैसे ताहि । बुलवादए नृप चाहि ॥

॥ * ॥ रामगोतीछन्द ॥ * ॥

द्विजनमाही जिते काणा अन्ध है सुनु भूप । निमंत्रणके योग्य ते महि आइमाहि अमूप ॥
 दूत खेलत जौन द्विज अरु जौन हैं रजवाना गर्भघातो जौन द्विज अरु करत जो द्विज गांन ॥ ग्रामके
 जे भृत्य हैं अरु मूर्ख जे द्विजपर्मे । जौन जात गेहकों हैं विप्र सुनऊ सधर्म ॥ गरल जे द्विज देत हैं
 अरु राजभृत्य सु जान । पिताकों जो देत उत्तर महा दुर्मतिभौन ॥ जौन बेचत सोमबल्ली धरत
 जो बहुरूप । सर्व बस्तुहि जान बेचत विप्र ह सुनु भूप ॥ दूत पणसें द्रव्यलीबे हिएमे ललचाय ।
 अन्यकी तिथ अन्य पै द्विज देत जे पञ्चाय ॥ रमत जो परदार सँग अरु तै ल बेचत जौन । कपठ
 को जो करतहे द्विज परम दुर्मतिभौन ॥ करत चूगली निबसें जो द्रोह राखत विप्र । हलयाही
 जान अरु जे बचन छोडत क्षिप्र ॥ धारि शस्त्रहि जीवि काजे करत द्विज महिपाल । जात जे गुरु
 मारि पै धरि हिए पाप विशाल ॥ आनगणकों राखि मृगया करत है द्विज जौन । क्रोध जो बऊ

करत है द्विज परम दुर्मतिमान् ॥ जीविका जो करत है द्विज चित्र लिखि अभिराम। करत चोरी हेम की है जौन द्विज अघधामा ॥ करत जो द्विज जीविका तिथिपत्रकों निति बाधि। शोडिके निज कर्मा जो द्विज लेत है धन नाचि ॥ जौन है द्विज शूद्रको ज पुरोहित भूपाला देवताको चढो जो द्विज द्रव्य लेत विशाल ॥ श्वान कूटे हेतय जौने विप्रको मरनाथ । रमति जाको होय नारी और पतिके साथ ॥ पढि समुद्रिक जीविकाको करत है द्विज जौन । पांति बाहिर रते द्विज है सुनऊ मृप बुधिमान् ॥ जौन द्विजको बन्धु लघुको भयो होय विबाह । होय अपना नाहि भा द्विज तौनज मरनाह ॥ जाति बाहिरहे कहै बुध परम प्रज्ञावान् । वेदमे जे रहत है रत धर्मवान् महान् ॥ कहत है इहि भांति ते द्विज पांति बाहिर जौन । निमंत्रणके योग्य नाहो आह माहो तौन ॥ करै भोजन विप्र जो ए आह माहो तात । राक्षसनको होय तौ फल आहको अवदात ॥ पढै जौ द्विज आहमे करि भोज्य सुनु बुधिराज । बसै विष्टा माहि ताको पितर तौ एकमात्र ॥ आहमे कार भोज्य जौ द्विज जाय शूद्रो पास । पितर तौ यजमानके सब निरयसं एक मास ॥ बसै विष्टा माहि तौने विप्रको निज जानि । शास्त्रको अवलोकिके बुध कहत है अनुमानि ॥ जौन बेचत सोमवस्त्रो तौन द्विज बुलवाय । आहमे जे देत भोजन ताहि सुनु नरराय ॥ होति विष्टा प्राप्त ताके पितरको हे तात । वैद्यको ते देत भोजन आहमे अवदात ॥ होत ताके पितरको है प्राप्त श्रणित पीप । सुनऊ ताते वैद्यको बुलवाइए न महोप ॥ व्याजको जे लेत है द्विज लोभके आगार । आहमे बुलवाइए नहि तिन्हें भूय उदार ॥ आहमाहो तिन्हें भोजन दिए ते अभिराम । पितरको नहि होत प्रापित आहफल बुधिधाम ॥ करत जो बाण्ड्यको द्विज जीविकाको काज । आहमे बुलवाइए नहि ताहि हे नरराज ॥ तिन्हें भोजन दिए तें नहि मिलत कहु फल भूप । दुहूँ लोकन्ह माहि मित्रुके कहत प्रज्ञ अनूप ॥ धर्मसो जो रहित है द्विज आह माहो ताहि । दियो जो है भोज्य ताते मिलत कहु फल नाहि ॥ जानि एते द्विजनको जो अत्य बुद्धी परम । देत भोजन आह माहो सुनऊ भूप सधर्म ॥ खात ताके पितर विष्टा कहत बुध अवदात । है नही सन्देह यामे जानु निश्चय तात ॥ संत्र जे द्विज अल्पबुद्धी शूद्र जनको देत । आहके नहि ध्याय तेज सुनऊ भूप सचेत ॥ दिए भोजन आहमे एकाक्ष द्विजको तात । साठि द्विजको भोज्यको फल मिलत नहि अवदात ॥ दिए भोजन आह माहो सज्ज द्विजको भूप । एकमत द्विज भोज्यको फल मिलत नाहि अनूप ॥ पांति माहो विप्र कुष्टो लखै विप्र जितेक । तितेकनके भोज्यको फल मिलत नहि सबिके ॥ किए भोजन राखि शिरपै वस्त्रको हे नन्द । औ अवाची और मुलके किए भोज्य अमन्द ॥ अशुभगणको होत प्रापित भोज्यको फल परम । कहत है अवगाहिके बुध सुनऊ भूप सधर्म ॥ रहित आह आह माहो दियो भोजन जौन । प्राप्त सो सब दनुजपतिको हेत है बुधि

शांभ
दांभ

मौन ॥ असूया करि दियो भोजन द्विजनको जो भूप । तौनऊँ सब दनुजपतिको प्राप्त होत अनूप ॥
 कहत हैं यहि भाँति बुधवर आहुबिधिके माहिँ । आन औ काणादि द्विजको लखन दीजै नाहिँ ॥
 रहित तिलसो आहु कोन्हें औं किएँ सकोध । भूत राक्षस लूटि ताको लेत कहत सुबोध ॥
 पंक्ति बाहिर जिते द्विजहैं कहे तुमको तौन । सुनऊँ अब हम कहतहैं नृप पंक्ति पावन तौन ॥
 अपिहोची विप्र औं इतवाँन विद्यावाँन । वेदमे निति रहत ततपर धर्मशील सुजाँन ॥ रिलुषती
 जब होय मारी जाय तब तिहि पाय । कबऊँ नहि परनारि देखै करै ज्ञान प्रकाश ॥ वेदके घट अङ्ग
 तिनको पढै जो द्विज पर्म । पढावै जो वेदगावै सामवेद अथर्भ ॥ पिताको अरु मातुको जो भक्त
 घर बुधिधाम । ब्रह्मघारो जौन द्विज अरु सत्यवादी माम ॥ रहै सुकरम माहिँ जो रत परम प्रज्ञा
 भौन । दियो अम जिहिँ होय करिके तीर्थ यात्रा नौन ॥ होहिँ इन्द्रो आसु बस अरु रहित कुधसो
 जौन । होय श्रोत्रिय जौन द्विज दशपुत्रिसो बुधिभौन ॥ चपलतासो रहित जो अरु क्षमा युत
 जे पर्म । पंक्ति पावन इते द्विजहैं कहत प्रज्ञ अथर्भ ॥ दीजिएँ इनको निमंत्रण आहु माँहीँ तात ।
 दिएँ इनको पितर अक्षय द्रुमि पाय विभात ॥ औरजहैं पंक्ति पावन विप्र हे नरराय । तौन तुमसो
 कहतहैं हम सुनऊँ चित्त लगाय ॥ करत सेवा गुरुन्हको जो भरे हर्ष महान । मोक्ष धर्महिँ जान
 तेहैं विप्र जे मतिमान ॥ रहत जे व्याकरणमे रत नित्य आलस त्यागि । पढत जौन पुराणहैं द्विज
 ज्ञान वरसो पागि ॥ धर्मशास्त्रहिँ जौनिके जे करत विधियत काज । वेद माँहीँ श्रेष्ठ जे वर विहैं
 नरराज ॥ जहालौं ए विप्र देखैं पंक्तिको अभिराम । करत पावन तहालौं हैं सुनऊँ नृप
 बुधिधाम ॥ करत पावन पंक्तिकोहैं विप्र ए मतिमान । पंक्तिपावन कहत याते इन्हें मनुज
 सुजाँन ॥ पढावत जे वेदहैं द्विज सुवन तिनके पर्म ॥ दूरिहूँसो सुनेँ पावन करत पंक्ति सधर्म ॥
 रहित जो द्विज होय तिनमो दोष जेहैं सर्व । पतित होय न परम निर्मल होय कहत अखर्व ॥
 सुनऊँ भूमिप विप्र औसो पढें अल्पऊँ वेद । पंक्तिपावन द्विजहूँसो सो रहत होय अभेद ॥
 पंक्ति बाहिर जितेहैं अरु जिते पावन पर्म । कहे तुमसो तिते हम सब विप्र सुनऊँ सधर्म ॥
 परोक्षा बिन किएँ द्विजकी जे निमंत्रण देत । पितर ताके लहत दुख अति कहत बुद्धिनिकेत ॥
 देत भोजन मित्रको जे आहुमे बुलवाय । पितर ताके होत द्रुम न जानु निजु नरराय ॥ मित्रताको
 भाव करिके आहुमे जन जौन । देत जे अग्योन्य भोजन लहत स्वर्ग न तौन ॥ जाँय कौनऊँ पुण्यसो
 जो स्वर्गमे अभिराम । होय तौच्युत शीघ्रहीँ वह कहत वर बुधिधाम ॥ सुनऊँ तातेँ मित्रको बुलवाइ
 ए नहिँ तात । आहु माँहीँ आहु बिधिबिद कहतहैं अबदात ॥ शत्रु होय न मित्र औसो विप्र जो
 नरनाह । ताहिँ भोजन दीजिऔँ वर आहुमे करि चाह ॥ आहु माँहीँ दिएँ भोजन मूर्ख द्विजका
 चारु । होत कहु फल नाहिँ दोऊ लोक माँहिँ सुढाहा ॥ होत नहिँ उत्पन्न जेसेँ बीज जसर माँहिँ ॥
 तिमिहिँ दीन्हें मूर्ख द्विजको होतहै कल नाहिँ ॥ आहु माँहीँ परस्पर वर दक्षिणा जे देत । होत

प्राप्त न पितरकों सो कहत बुद्धिनिकेत ॥ धमति याही लोकमे सो दक्षिणा नरराय । अने शाला मांछि जैसे नष्ट ब्रथा गाय ॥ जौन नर्तक विप्रहैं अरु गान कारक जौन । आइ माहीं तिन्हें दीन्दी दक्षिणा है तौन ॥ देत जो है तास पितरहि देति दिवने छारि । है नही सन्देह यामे तुन्है कहत बिचारि ॥ देत जो अरु लेत जो है करति तिनको नास । जगतमाहीं करति तिनको वंशको उप हास ॥ ऋषिन्हको आचार जे निति करतहैं सुनु भूप ॥ औ सु जानत सर्व धर्माहिं भर्म रहित अनूप ॥ देवता वर तिन्हें जानत विप्र अन्याहिं नाहिं । बढत तिनसों मोदहै सब सुरन्हके हिय मांछि ॥ पठ नमे रत रहत जे अरु ज्ञानमे रत जौन । कर्माने रत औ सुतपमे जौन रत बुधिभौन ॥ चारि विधि के विप्र ए तिन मांछि सुनु वर भूप । ज्ञानमे रत जौन सोहै श्रेष्ठ परम अनूप ॥ ताहि भोजन दीजिए वर आइमे बुलवाया तासु आदर कीजिए अति बचन कहि सुखदाय ॥ करत निन्दा जौन द्विज ह द्विजनकी सुनु तात । ताहि भोजन दीजिए नहिं आइमे अवदात ॥ करै जो द्विज कबअँ निंदा द्विजनकी मांछि भूप । ताहि भोजन दीजिए वर आइ मांछि अनूप ॥ वेदपारग विप्र तिनकी परीक्षा क्लितिकन्त । दूरहीमें कीजिए इति बुद्धिमान भएन्त ॥ आइ भोजन योग्य नृप अनर्हत्तुज्ज जौ द्विज होय । आइमे बुलवाइए तौ परम सादर सोय ॥ दिए भोजन लक्ष मूरख द्विजनकों फल जौन । एक बुधकों दिए भोजन मिलतहै फल तौन ॥

शा०प०
दा०ध०

स्तिश्रीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउद्धितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दोजनकाशी वासिरघुनायकबोधरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपोनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे आइकल्पे षष्ठासीतितकोस्थायः ॥ * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * दोहा ॥ * ॥

कौन समयने किहँ कियो प्रथम आइ अभिराम । कहौ आइको रूपहै कै सो सुनै बुधिधाम ॥
कौन अन्न अरु कौन फल कौन मूल अरु कर्मा आइ मांछि नहिं ग्रहण हैं कहिअै तात सधर्म ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

प्रभृति भर्द जिनि आइको जौन समयके मांछि । कीन्हों जिहँ अरु रूपहै जैसे सुनु ममपांछि ॥

॥ * ॥ अरिलहन्द ॥ * ॥

अबि सु ऋषि वर ब्रह्माके सुत । परम प्रतापवान मेधा युत ॥ तिनके वंशमांछि शुचि बुधि धर । दत्तात्रेय भए सुनु नृपवर ॥ होत भए तिनके नंदन निमि । कश्यपके तेजस्वी रवि जिमि ॥ राम होत भो ऋषि निर्मिकै सुत । परम प्रतापवान शोभायुत ॥ करिकैं सो तप सहस बर्ष वर ॥ भयो मृत्युको प्राप्त सुमतिधर ॥ तब ऋषिवर निमि शौच सविधि करि । बिकल भयो अति शोक मांछि परि ॥ चतुर्दशी तिथिमे तदमन्तर । करिकै सज्यादांन सविधि वर ॥ मन बढेरि तजि शोक

निमि सुद्धि मशमति सुधिधि आइकी

दा०५०

बर उत्तम अति ॥ तत्रि प्रमाद भो ताहि विचारत । अरु ताको भोजन निरधारत ॥ अन्नमूल
अरु फल ताके बर । सब विचारि हिय नाँहि सुगतिधर ॥ सुतिधि अभावस्यामे उत्तम । विप्र
बुधाय प्राज्ञ गुरुकी सम ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

करिके रहिनी ओर अग्रभाग बर दर्भके । शुचि विष्टरकी ठौरविप्रणके पदतर धरे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दक्षिण दिशि कुश अथ करि तिन ऊपर बुधिधमामोचनान उच्चारिके दीन्हें पिण्ड लक्षाम ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

करि आइ निमि बुधिधाम । करि शोध हियमे नाम ॥ इमि भयो करत विचार । सुनु भूप
बुद्धि अगर ॥ सुनिबृन्द परम प्रवीन । नहिं आइ पूरव कीन ॥ तिही सु ब्राह्मण कोहि ॥ नहिं
जारीडॉरं मोहि ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥

करिके हियमे शोधयह क्रियो अधिको ध्यान । ध्यान करतहीं आद्यगे ऋषिबर अत्रि सुजान ॥

पुत्र शोकसें दोखके निमिकों कसित पर्म । समभावत भो ज्ञानके कहिके बचन अभर्म ॥
विधिको बिरच्यो धर्म यह कीन्होहै तुम जौन । विना स्वयंभू आइको बिरचि सकै विधि कौन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

विधिकी कही आइविधि जौन । तुमको कहत तात हम तौन ॥ प्रथम स्थापि अधिकों पूजा
मोहें तास मंचकों कूजि ॥ तदनन्तर पावक अरु सोम । बरुण निमित्त करे बर होम । करि
बज्र भौति स्तुति बुधिधाम ॥ पाणि जोरिके करे प्रणाम ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * ॥

पुनि करि बिन्देदेवको पितरन सह आम्हान । द्विज बुधाय तिनके निमित्त पूजा करे सुजान ॥

तदनन्तर द्वे द्विजनों भोजन परम लक्षाम । पिण्डदाने पितरको अस्तुति करे बुधिधाम ॥

करे विसर्जन आइको तदनन्तर हे तात । निर्मल नै बैठोरहे करि शुभाव अवरदात ॥

निजु बर्जितहैं आइने अन्न मूल फल जौन । ते तुमको अब कहतहैं सुगउ तात बुधि भौन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

कहू धाध्य घृत तण्डुल जौन । आइ नाँहि बर्जितहैं तौन ॥ हिन्दु प्याज अरु स्यामल लौन ।
साहसुन ओ मरुन्नन बुधिभौन ॥ कूपनाण्ड धित जीरा श्याम । बर्जित आइ नाँहि बुधि
धाम ॥ विषको मसल समें पसु जान । मरत तासु आनिपहैं तौन ॥ आइ नाँहि बर्जित है तात ॥

प्रज्ञावान कहत अबदाता। रहत बराह ग्रामने तास। आभिष बर्जित है बुधिरास ॥ औ अरुको
शाक सु जान । औ अलावु जम्बूफल तौन ॥ आइ माँहि ए बर्जित सर्व । सुनऊ तात मतिमान
अखर्व ॥ कोविदारफल औ बिठ नौन । आइ माँहि बर्जित बुधिभौन ॥ सिंघाहा अरु रुदम सुजांन।
बर्जितहे षषि भएत महान ॥ औ ए सर्व आइके माँहि । होहि पितर तौ मोदित माँहि ॥ आइ
माँहि बर्जित है जौन । कहे अन्न आदिक हम तौन ॥ * * * ॥ रामगीतीइन्द ॥ * * *

शां०प०
दा०ध०

विप्रको जे हनत हैं अरु करत मदिरा पान । करत चोरी हेमकी हैं जौन शिज अज्ञान ॥ पाप
सों गुरुनारि पे द्विज जौन कुमती जात । करै इन चारौनसों जो मित्रता हे तात ॥ पाँच ए हैं पतित
प्रज्ञावान कहत महान । इन्हें दीजै होन निकट न आइके मतिमान ॥ विप्र कुधी वरणहर
ब्रह्मघाती जौन । अपच औ चाण्डाल तिभिहीं सुनऊ बर बुधिभौन ॥ आइके आगरके नहि
निकट दोजै छौन । अचि कहि इहिभांति निमिकों गए विधिके भौन ॥ * * * * *
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगेकुलनाथपुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपूर्वाण दानधर्म आइकरूपेसमासीतितमोख्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ तोमरइन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सुनि पितामहके वैन । निमि सुच्छषि प्रज्ञाअँन ॥ वर आइकी विधि
बोच । भो प्रवृत होत निर्भीव ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
प्रवृत भएते आइकी विधिने निमिकों पर्व । पितर यज्ञ करते भए छपिबर सर्व सधर्म ॥

॥ * ॥ रामगीतीइन्द ॥ * ॥

ता अनन्तर वरणघारिऊ भरे अतिहि उच्छाह । आइ कीवें लगे विधिसों सुनऊ हे नरनाह
पितरके अरु सुरनके तब भो अजीरण पर्भ । देत भो दोजनकों सो दुःख सुनऊ सधर्म । ता अनन्तर
अतिहि पीडित पितर सह सुरवृन्द । सोमके गे पास सबही सुनऊ कुन्तोनन्द ॥ प्राप्त व्हे कै
सोमकों इमि भए कहते सर्व । आइके बऊ अन्नसों हम लखो दुःख अखर्व ॥ आपु करिके कृपा
अतिहीं करि अजीरण दूरि । जानि हमकों अरण्ये तुम देऊ आनंद भूरि ॥ पितर सहित सुदेव
तनके सोम सुनि ए वैन । कह्यो इमि तुम जाऊ विधिके पास आनंद अँन ॥ तिहारो दुख हरै गे
सब करैने कल्याण । जाऊ तामें शीघ्रही तुम दुष्टिण पै मुदमाना । बचन सुनि ए पितर सह सुर गए
विधिके पास । देखि तिनको मेखगिरिके शूक्यै सऊलास ॥ पितर सह सुर बचन औसँ
कहे हे भूपाल । आइकों बऊ अन्न हमकों व्यथा देत विशाल ॥ सो व्यथा हरि कृपा
करिके देऊ हमकों धैन । दयासागर सुनऊ हे लोकेअ आनदअँन ॥ वैन सुनि ए कह्यो

आ०प० विधि इमि कृपा करि कै भूरि । अग्नि देहे मोद तुमकों व्यथा करि कै दूरि ॥ ता अनन्तर कछो अर्थे
दा०ध० अग्नि हे नरनाथ । आइ अब जब होयगो तब सर्व हम तुम साथ ॥ तास भोजन करैगे सुन पितर
सह सुर सर्व । जायगी मम सङ्ग मे मिटि व्यथा परम अखर्ब ॥ अजीरणकी व्यथा तुमकों फेरि कै है
नाहिं । बचन सुनि ए अग्निके बर विधाताके पाहि ॥ पितर सह सुर भए मोदित परम हे नरराया
अजीरण जो ऊतो सो सब गयो मिटि दुखदाय ॥ आइमे यहि छेतुनें जन परम प्रज्ञावान । भाग
पूर्वहि देत शिखिकों सुनऊँ भूप सुजान ॥ दिँएँ पूर्वहि भाग शिखिकों पितर कारजमाहिं । ब्रह्मा
राक्षस आय करिके करत बाधा नाहिं ॥ और राक्षस जिते तेते सकत पास न आया अग्नि जैसे
देतहै फल भाग पूरब पाय ॥ सुनऊँ तातें भाग पूर्वहि देय शिखिकों परम । पिण्ड दीजै पिताकों
सह प्रीति तात सधर्म ॥ ता अनन्तर पितामहकों देत पिण्ड सुठान । पितामहको पितकों पुनि
दीजिए मतिमान ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

मनसो गायत्री जपै पिण्ड पिण्डके माहिं । रजसलाकों आइमे आवन दीजै नाहिं ॥

भङ्ग होहिं जिहिं नारिके दोऊ कान सुजान । सेऊ आवन दीजिए आइमे न मतिमान ॥

॥ * ॥ सुधाछन्द ॥ * ॥

अल्प नीर पार लेय पितरको सुनाम । नदी पार होय करै तर्पण बुधिधाम ॥ तर्पणके प्रथम
पितर अपनेको चार । जेरि पाणिके प्रणाम ध्यानके सुठार ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * *

सम्बन्धके पितरको तदनन्तर हे भूप । तर्पण करै सु विधि सहित मतिमत कहत अनूप ॥

लगे शकटमें द्वै वृषभ चित्रवर्ण अभिराम । तिन्हें पाय उतरत नदी सुनऊँ तात बुधिधाम ॥

कोन्ह तिनकी पुच्छपर तर्पण सह विधि परम । पितर मोद अति लहतहैं भूपति सुनऊँ सधर्म ॥

आयु बढति बंरज बढत सम्यति बढति महान । पितर भक्तिनें सुनऊँ नृप पखु सुवन मतिमान ॥

अत पिण्ड सम्बन्धतें होत पितरहै भूप । छूटतहै प्रेतत्वतें बुधवर कहत अनूप ॥

भई आइ उत्पत्ति जिमि कही तुन्है तिमि तातादान विधिहि अब कहत हम सुनऊँ तौन अवदाता ॥

स्वलिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दोजनकाशीवासि

रघुनाथकबीश्वरात्मजेन भक्तकुलनाथेन कविना विरचित भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि

दानधर्मे आइकल्पे अष्टाशतितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ बुधधिरउवाच ॥ * ॥

सुनऊँ पितामह कहत तुम आइमाहिं अभिराम । ब्रती विप्र बुल्लषाय कै दोऊ भोज्य ललाम ॥

भोजन कोन्हें आइमे ब्रती द्विजनको चार । रहै ब्रत किहि भातिसों कहिए बुद्धिचकार ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यज्ञको सु ब्रत जौन भोजन कोन्हें आइमे । तौनहि सुनु बुधिमान नष्ट होत नहिं अन्य ब्रत ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीन दानकों देत अरु जान दानकों लेत । तिनमें को जन श्रेष्ठ हैं कहिए बुद्धिनिकेत ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

दान लिएँ गुणवानसों अल्प दोषहै होत । निगुणीतें लीन्हें महा दोष होत बुधिपोत ॥

तिमिहैं दिए गुणवानकों होत सु पुण्य महान । निगुणीकों दीन्हें अल्प होत पुण्य मतिमान ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

ताते दोउनमाहिं जे गुणवत ते श्रेष्ठहै । यामे संशय नाहिं निश्चय करि कै कहत हो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह प्रसंगमे कहत हैं एक इतिहास अवाद । वृषादर्भ अरु सप्त ऋषि तिनकों है सम्वाद ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

अत्रि कश्यप भरद्वाज सु औ बशिष्ठ सदार । सु ऋषि विश्वामित्र औ यमदग्नि पुण्य अगार ॥

अरु सु गौतम सुऋषि ए वर सप्त अति अभिराम । ऊता दासीं एक तिनकी तास गण्डा नाम ।

ऊतो भर्ता तास पशुसख शूद्र सुनु नरनाहैं कामनाकै ब्रह्मलोक हि प्राप्तकी ही माहैं । तपस्याकों

करत ते सब फिरत हैं भू बीच । भानुकीसी प्रभा तिनको सुनउँ तात निभीच ॥ कछू दिनमे

भई होतीं अनावृष्टि महान । अतिहिं पीडित भयो तातें लोक यह मतिमान ॥ समय तौन हिं

माहिं एक वर विप्र मेधाधाम । कामना करि यज्ञकी बर सहित आदर माम ॥ बोलि सप्तज

ऋषिन्हकों विधि सहित करिके यज्ञ । दक्षिणामे ऋषिनकों सो देत भो सुत प्रज्ञ ॥ काल तौनहिं

माहिं सो बस कालके भो होत । चुधासों सन्तप्तने ऋषि सर्व प्रज्ञा पोत ॥ भए ठाढे होत तिचिकेों

चहँदिशिचोंघेरि । परस्पर ते लगे देखन सृत्क ताकों हेरि ॥ ता अनन्तर खण्डिताके अज्ञ

ऋषिवर सर्व । भए चरवत चुधासों अति पाथ दुःख अखर्व । वृषादर्भ महीप तिनकों देखि कै मग

माहिं । भयो कहतो वैन जैसें जाय तिनके पाहिं ॥ वृषादर्भरुवाच ॥ पुष्टिकाजै लेऊ धन तुम

करऊ यह मति कर्म । याच्यमान सु विप्र मेको लगत है प्रिय पर्भ ॥ तुन्हें दँहौ वृषभ वर दश

सहस अति बलवान । परम सूधे अत रगके खल सुषमावान । धेनु बज्र अरु रत्न दैहौ और बज्र

धन चार । करऊ भक्षण आपु मति यह है अभक्त उदार ॥ * ॥ * * * * *

॥ * ॥ ऋषयउचुः ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लेत प्रतिग्रह नृपनको लागत है प्रिय पर्भ । पै दुखकर फल कार है भूपति सुनहुँ सधर्म ॥

जीन प्रतिग्रह लेत नहि ते निर्मल वर विप्र । तर्पणे करत प्रसन्नहैं आदित्यनको क्षिप्र ॥

विप्रणके तपको महत दहत प्रतिग्रह भूप । नहीं प्रतिग्रह लेतहैं तातें प्रज्ञ अनूप ॥

दीजै अर्थां द्विजनका भूप प्रतिग्रह आप । कदिके इमि वृषदर्भिको ऋषिवर धर्मकलाप ॥

शा०प०
दा०प०

करत भए प्रज्वलित अति पावकको हे तात । पै न पक्क भो भांस तव भए विपिनको जात ॥

॥ * ॥ अरिलहन्द ॥ * ॥

दृषादर्भिके मंत्री मतिवर । शासन पाय सर्व कारजकर ॥ बनमे जाय उदुम्बर चुनि करि ।
तिनको माहिँ हेमकों गुण भरि ॥ दए अघिन्हके आमें धरि जब । जानि गरू इमि अत्रि कह्यो
तव ॥ उदुम्बरनमे सुवरण भरि तुम । ल्याए सो छल जानि लियो हम ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जौ ए फल हन लेहि अति दृष्टा करि हिय माहि । पावैं तौ परलोकमे उत्तम फलकों माहि ॥
इच्छा जे परलोकमे सुखकी करत महानाते न प्रतियह लेत हैं निजु कै कहत सुजान ॥

॥ * ॥ अरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बशिष्ठ उवाच ॥ * ॥ जिमि जिमि इव्य मिलत अभिमानी । तिमि तिमि दृष्टा होति
महानी ॥ तिहितें जन दुर्गतिके माहीं । निश्चय परत अनिश्चय नाहीं ॥ * ॥ कश्यप उवाच ॥ * ॥
भूके माहिँ बस्तुहै जेती । लोभ न दृढत लहेहैं तेती ॥ तातें सुजु गहै संतोषै । दृष्टाकों कबहूँ नहि
बोषै ॥ * ॥ भरद्वाज उवाच ॥ * ॥ है प्रमाण दृष्टाको नाहों । तातें तजैं रहै सुखमाहीं ॥

॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ऐसी कोज बस्तु नहि लोकमाहि अगिराम । तौन बस्तुकों पाय कै होय न दृष्टा माम ॥
दृष्टा जनको सिन्धु सम कवळ भरति है नाहि । तातें सन्तोषै गहैं होत मोद हियमाहि ॥

॥ * ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ * ॥

पूर्ण भए एक कामना द्वितीय कामना हेतियातिहिय होय जो द्वितीय तौ तिसरो करति उदोति ॥
तातें सुवरण लेनकी करि हें दृष्टा नाहि । यह दृष्टातें हेऽि बज्र दृष्टा होके माहि ॥

॥ * ॥ यमदग्निरुवाच ॥ * ॥

ते बुध तप धारण करत जे न प्रतियह लेत । धारण ते नहि करि सकत जे द्विज लेत अचेत ॥
प्राप्त होत है विप्रकों दानमाहि धन जौन । हन निश्चय करि कहत हैं रहत नही है तौन ॥

॥ * ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ * ॥

धनको संचय धर्मकों कौनै कहत सु कोय । तपको संचय समन पै धनको संचय होय ॥
धन संचयतें श्रेष्ठ है तपको संचय धर्म । तपको संचयकों किए को नहि होत सधर्म ॥

॥ * ॥ गण्डोवाच ॥ * ॥

डरत प्रतियहतें बली ए अघि निबल समान । तातें अतिही डर भयो मोहियमाहि कहाँन ॥

॥ * ॥ पशुसख उवाच ॥ * ॥

बने लोभमे मिलत नहि उत्तम पद अगिराम । तातें ब्राह्मण कहत हैं लोभ त्याग धन माम ॥

शिसारथ इन ऋषिन्हके लगे रहत मै पास । यथा योग्यनै करतहैं सेवा सहित ऊलास ॥

॥ * ॥ ऋषयजपः ॥ * ॥

रुछे कुशलसों दान सह वृषादर्भि मृषिपाल । जाके शासनसों कियो तुम ह्य इतो विशाल ॥

॥ * ॥ मधुभारहन्द ॥ * ॥

इमि कहि सुवैन । ऋषि सुमति सैन ॥ फल त्यागितौन । सुनु सुमति भौन ॥ बनमाहि अन्य ।
गे सर्व धन्य ॥ वृषादर्भि भूप । तिहिके अनूप ॥ मंत्री अपार । हलके अगार ॥ वृषादर्भि पासु ।
ते जाय आसु ॥ इमि कहेवैन । नतके सु नैन ॥ मन्त्रियो क्रुचु । अथादि सर्व । ऋषिवर अखर्व ॥
हलकों सु जानिहल भीति मानि ॥ फल तौन त्यागितइतेसु भागि ॥ बनमाहि अन्य । ते गए धन्य ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मन्त्रिके ए वचन सुनि वृषादर्भि मृषिपाल । जातभयो निजधामकों करिकै कोप विमाल ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

महने होमहि करतो भयो । वृषादर्भि भूपति क्रुधरयो ॥ कढी अग्निने एक कराला । लोक
भयकरी नारि विशाला ॥ ताहि देखि भूपति दरधानो । जान्यो कार्य भयो मन मानो ॥ नाम
जातुधानी तिहि केरो । राख्यो मृप मुद पाय घनेरो ॥ अतिहि कराल काल रजनीसी । ठाढो
होय कृत्य सजनीसी ॥ मृपकों कहति भई इमि बाणी । सोहैं आय जोरि दोउ पाणी ॥ करौ कौन
कारज नै कहिए । कहत आपु संदेह न गहिए ॥ वृषादर्भि यह बाणी सुनिकै । कहत भए ताकों
इमि गुणिकै ॥ वृषादर्भिरवाच ॥ सह अरुन्धती सप्त ऋषिनके । दासो अरु दासीपति तिनके ॥
नाम अर्थकों गुणि द्विय माहीं । जाय बिपिनिमे तिनके पाहीं ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॐ ॐ *
मारि सकै जौ तिन्हहि नूतौ तिनको करनाथ । मन आवै तँह जाईयो करि मन मोद प्रकाश ॥
सुनि भूपतिके वचन ए करिकै शोध अखर्व । तिहि बनकों जाती भई ऊते जहां ऋषि सर्व ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ श्रीकृष्णवाच ॥ * ॥ सह अरुन्धती सप्त ऋषो वर । विचरत हे जिहि बनने बुधधर ॥
वासव बनि सन्यासी आयो । तहां पीनपरमासों छायो ॥ सङ्ग स्थूल आनकों लीन्हें । आनद
भरो मन्द गति कीन्हें ॥ देखि अरुन्धति सती महानी । कही ऋषिन्हकों जैसे बानी ॥ जैसे पीन
अङ्ग सन्यासी । अतिही भरो प्रभासों लासी ॥ तैसे तुम व्हेहो की नाही । कही मोहि गुणिकै
द्विय माहीं ॥ * ॥ श्रीकृष्णवाच ॥ * ॥ नित्य कर्म कीबे की भारी । चिन्ताइने होति हे मारी ॥
सो चिन्ता थाकेहे नाही । कहत तोहि ह्य गुणि द्विय माहीं ॥ तातें आन सहित सन्यासी । धरें
पीनता परमा लासी ॥ ॐ ॥ अजिहवाच ॥ ॐ ॥ भयो सुधासों नष्ट बोज मम । ताते वेदहि

...ता थाके है माहीं ॥ तार्ते आन सहित
 सन्यासी। धरें पीनता परमा खासी ॥ ॐ ॥ बिन्नामिउवाच ॥ ॐ ॥ धर्म हमारे खोल भयोहै ।
 तार्ते अति द्विय श्रेष्ठ छयोहै ॥ तौन श्रेष्ठ थाके है माहीं । निखत भोज्य अहैं करत तहाँही ॥
 आलस युत अरु मूर्ख महाहै । तहँही जात अहाँ मम चाहै ॥ तार्ते आन सहित सन्यासी । धरें
 पीनता परमा खासी ॥ ॐ ॥ यमदधिउवाच ॥ ॐ ॥ रम्य अरु सुश्रम संश्रमकी । चिन्ता निति
 अति दुखदा ननकी ॥ इनको प्राप्ति रहतिहै असी । याको प्राप्ति नहींहै तैसी ॥ तार्ते आन सहित
 सन्यासी । धरें पीनता परमा खासी ॥ ॐ ॥ कश्यपउवाच ॥ ॐ ॥ जिनि कुटुम्बके लोग हमारे ।
 केहू नही टरतहैं टारे ॥ देऊ भोज्य यह भौति पुकारै । तार्ते हम अति चिन्ता धरें ॥ सो चिन्ता
 थाके है माहीं । कहत तोहि हम गुणि द्विय माहीं ॥ तार्ते आन सहित सन्यासी । धरें पीनता
 परमा खासी ॥ * ॥ भरद्वाजउवाच ॥ * ॥ नारीको निन्द्रा हम सुनिकै । सो कहि प्राप्ति होत
 शिर धुनिकै ॥ तौन श्रेष्ठ थाके है माहीं । कहत तोहि हम गुणि द्विय माहीं ॥ तार्ते आन सहित
 सन्यासी । धरें पीनता परमा खासी ॥ ॐ ॥ गौतमउवाच ॥ ॐ ॥ मृगकी एक चर्मकी राखें ।
 तीन वर्षलौ बीचिन नाखें ॥ तास कछ हमको है जैसे । याको कछ प्राप्ति नहि तैसी ॥ तार्ते आन
 सहित सन्यासी । धरें पीनता परमा खासी ॥ ॐ ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ ॐ ॥ ॐ ॐ
 आन सहित सुरराय तिन षष्ठीमको देखिकै । तिनके निकटे आय घरह छुपत जो पाधिसे ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

तदनन्तर फल मूलन काजै । वनमे गे षष्ठि सह परिव्राजै ॥ वनके माहि चौखि चऊधरै । लगे
 सबे फल मूल बठोरै ॥ तहाँ एक सरोवरि देखी । चार घने वृक्षबसो मेली ॥ एकहि घाट बन्धो
 जिहि माहीं । बिहस बिहार करै तिहि पाही ॥ स्वस नीर नीरज बल फूले । तिनपै मुझत मधुप
 अतूखे ॥ वृषादर्भ छलकर अहिपाशा । तास प्रेरिता परम करासा ॥ नाम जातुषानी तिहँकेरो ।
 करिके सो तिहि पास बसेरो ॥ तौन सरोवरिकी दिन राती । रक्षा करति कहँ नहिँ जातो ॥
 तामे नीरज बिषके काजै । अरु सुषुप्ति सब सह परिव्राजै ॥ मँदा देखि जातुषानीकी । कहत
 भए असी बाणीकी ॥ को तू है तव नाम कहाहै । पैठी तू किहि काम रहाँहै ॥ सुनिकै जातु
 षानि यह बाणी । जोसी असेँ कूर नहींनी ॥ * ॐ * ॥ जातुषानुवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॐ
 जो नै हँ सो हँ केश बूझत हो तुम मोहि । सरोवरकी रक्षका नै हँ परत न जीहि ॥

॥ * ॥ षष्ठ्युवाच ॥ * ॥

हैन हमारे पास कहु हैं हम सुधित निराल । जो वृषाज्ञा दे रही तो हम मोहि नृषासा ।

॥ * ॥ जातुषानुवाच ॥ * ॥

तुम सब निज निज नामको मोको अर्थ बताथ । जोऊ नृषाज्ञको परम सरोवरीमे अथ ॥

॥ * ॥ तौमरहन्द ॥ * ॥

तिहिं चातुधानिहि जानि । इनि कह्यो अवि बखानि ॥ ॐ ॐ ॥ अविबदाच ॥ ॐ ॐ ॥
अदृष्टुको अभिधान । हरि लेत सबके प्राण ॐ ॐ ॐ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ

॥ * ॥ आतुधान्युवाच ॥ * ॥

भारथ करिने बोख्य नाहिं मन जतिसों तवनाम । आज्ञ सरोवरि नाहि तुम विषलीबिं अभिराम ॥

॥ * ॥ बविष्ठउवाच ॥ * ॥

मै वसुमान महान अरु सब नेरे बस नाहिं । घातें नाम बविष्ठहै मै काहू बख नाहिं ॥

॥ * ॥ आतुधान्युवाच ॥ * ॥

मौ सुनाम अत्युत्तमिकों धारि सकत मे नाहिं । तातें तुमहूँ लेम विष आज्ञ सरोवरि नाहिं ॥

॥ ॐ ॥ रामगीतीहन्द ॥ ॐ ॥

कश्यपउवाच ॥ * ॥ कश्यपान शरीरको छे ताहि पालत जौन । ताहि कश्यप कहतहैं अरु
नाहिबै बुधमौन ॥ हे हमारे नामकी अत्युत्तम यह अभिराम । हे हमारे नाम यहितें ख्यात
कश्यप नाम ॥ * ॥ आतुधान्युवाच ॥ * ॥ कठिन अति तव नामकी अत्युत्तम जो है परम ॥
समुक्ति हो नाहिं परम मौकों सुगऊँ सुखवि सधर्म ॥ कमल लांबिं आज्ञ श्रीप्रहि सरोवरिके
नाहिंनेकु ठाठे होऊ मति तुम सुखवि मेरे पाहि ॥ भरद्वाजउवाच ॥ करत पोषण सुतनको अरु
शिव्यनको प्रतीतिनिहि पोषण नाचिको करि करत नित्य सधर्म ॥ सुरनहूँ को करत पोषण नित्य
शेष अर्थ ॥ औरतें मै भयो औरहि कियो पालन परम ॥ नामहै विख्यात घातें भरद्वाज हमार ।
नामकी अत्युत्तम सुनिके जातुधानि सुदार ॥ कह्यो इनि तवनामकी अत्युत्तम समुजि न जाय
सरोवरिने आयके तुमलेऊ विषसुखदाय ॥ गौतमउवाच ॥ कहत बुधवर भूमिको अरु स्वर्गको
जो नाम । इमज इतिनों करत तातें मन सु कैदम नाम ॥ गौतमहिकों कहत गौतम जातुधानि
सुजानि । हे हमारे नामकी अत्युत्तम यह तू जानि ॥ * ॥ आतुधान्युवाच ॥ * ॥ कठिनहै तव
नामकी अत्युत्तम समुक्ति व अद्यासरोवरिने आयके तुम लेऊ विष सुखदाय ॥ विश्वामित्रउवाच ॥
नित्य विषेदेपको हो परम ततें ख्यात । भाव विश्वामित्र मेरो भयोहै अरुदात ॥ * ॥ आतुधान्यु
वाच ॥ कठिनहै तव नामकी अत्युत्तम समुक्ति न जाय ॥ सरोवरिने आयके तुम लेऊ विष सुखदाय
अथदधिउवाच ॥ पाज दधिको मांगहै अरु अविहि भक्त जौन । जमत तिगको नामहै हें देवते
सुदमौन ॥ अथि जाहीं अनी प्रवटत जातु धनि सुजानिनिभिहि प्रगटत अघिमे हम सत्य मनके
जानि ॥ नाम मेरो अत्युत्तमहै अथदधि घातें खरु । अघिकीषी प्रभा मेरी खसति देखु प्रतत्त ॥ आतु
धान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी अत्युत्तम समुक्ति न जाय । सरोवरिने आयके तुम लेऊ विष

शा०प०
दा०प०



सुखदाय ॥ अरुन्धत्युवाच ॥ * ॥ करतिहैं अनुरोध पतिके चित्तको अवदात । है हमारो नाम
याते अरुन्धति बिल्यात ॥ जातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नाम की व्युत्पत्ति समुजिन जाय । सरो
वरिमे जाय कै शुभ लेऊ बिष सुखदाय ॥ गण्डोवाच ॥ है हमारे बदमके एक देश माहीं गण्ड ।
ल्यातहै गण्डा हमारो नाम याते चण्ड ॥ जातुधान्युवाच ॥ कठिनहै तव नामकी व्युत्पत्ति समुजि
न जाय । सरोवरिमे जायकै तुम लेऊ बिषसुखदाय ॥ पशुसखउवाच ॥ करत रत्ता पशुनकी
खलि पशुनको अभिराम । पशुनको हैं सखा याते मम सु पशुसख नाम ॥ जातुधान्युवाचा ॥ कठिन
है तव नामकी व्युत्पत्ति समुजि न जाय । सरोवरिमे जाय कै तुम लेऊ बिष सुखदाय ॥ शुनःसख
उवाच ॥ कही अपने नामकी व्युत्पत्ति इन जिहि भाति । नामकी व्युत्पत्ति मोसों कही तिनि नहि
जाति ॥ नामहै शुन धर्मको मुनिसखा ताके आम । मुनिको मै सखा याते शुनःसख मम नाम
॥ जातुधान्युवाच ॥ कही अपने नामकी व्युत्पत्तिकों तुम फेरि । बचन सुनि ए शुनःसख इमि कह्यो
ताको हेरि ॥ कही अपने नामकी व्युत्पत्ति मै एक बार । ग्रहण ते नहि करी ताते मारिहैं तोहि
दार ॥ शुनःसख इमि बचन कहिके दण्डसों करि कुह । जातुधानिहैं मारिउारी भूमिमे नृपबुद्ध ॥
मारि ताकों शुनःसख बर डोक भू मे दण्ड । खरे होते भए बनने धरे तेजस चण्ड ॥ ता अनन्तर
सर्व मुनिवर लेयकै बिष पर्न । सरोवरिके कूलपै धरि स्नान करि सह धर्म ॥ सबिधि तर्पण करि सु
आए कूल ऊपर सर्व । तहां बिषदेखे न ताते भयो दुःख अखर्ब ॥ सुधारत हमखने बिष बज्र महत
अमसों चार । कूलपते अवहिते सब लए किहि अधकारू ॥ बचन ते इहि भांति कहिके होय
शङ्कामान । लने पूहन परसपर तब सर्व मुनि मतिमान ॥ दूरि कीबे शङ्क कीबे लगे सपथ सु जान ।
सुधासों अति भए पीडित धरे धोर महान ॥ * ॥ अत्रिरुवाच ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकच्छन्द ॥ * ॥

परस करैं सुरभीको पदसों । तअं वेद दुर्गतिके मदसों ॥ मूत्रपुरीष किए रवि सोरै । अनध्याय
मे पढें ससोरै ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसे । होय कमलके चोरहि तैसे ॥ नशिष्ठ उवाच ॥ होय
शरणमे ताकों मारें । सन्यासी खै नारि निहारें ॥ अरु धन अधिक प्रजासों खोन्हें । राखिसनान गण
सृगया कीन्हें ॥ अन्तकालमे प्राणोकेरो लिए लोभसों द्रव्य घनेरे ॥ होत प्राप्त पातकहै जैसे । होय
कमलके चोरहि तैसे ॥ कश्यप उवाचा ॥ धरी अन्यकी बस्तु छपाए । दिनमेरति कीन्हें मद छाय ॥
बृषा मांसको भोजन कीन्हें ॥ अरु कुषाचको दानहि दीन्हें ॥ होत प्राप्त पातक है जैसे होय कमलके
चोरहि तैसे ॥ भरद्वाज उवाच ॥ नारी ज्ञाति अरु सुरभी साँची । दाया करै जौंन जन नाही ॥
अरु जो ब्राह्मणको संघारै । हियमे अधरम को न बिचारै ॥ ताहि होतहै पातक जैसे ॥ होय
कमलके चोरहि तैसे ॥ गुहके नामहि नीचे करिके । पढै वेदगर्व बज्र धरिके ॥ ताहि होत
पातकहै जैसे । होय कमलके चोरहि तैसे ॥ * ॥ यमदभिर्वाच ॥ * ॥ किए पुरीष सुनीर कि

मार। करिके द्रोह गजकों मारे ॥ होत प्राप्त पातक है जैसे। होय कमलके चोर हि जैसे ॥ करो
तास पोषण निति नारी। सबसों होऊ द्वेषता भारी ॥ ज्ञाति माहि तें आय निकारो। लघो होय
जिहि कमल तिहारो ॥ गौतमउवाच ॥ वेचें सदा सोमलतिकाको। अरु छोडे बर बेद पढाको ॥
होत प्राप्त पातक है जैसे। होय कमलके चोर हि जैसे ॥ तास भृत्य सह सब गृहवारे। रहो सदा
हो परस्र दुखारे ॥ तिनकों पालै जन कोउ औरै। जो तव कमल कन्दको चोरै ॥ * ॥ दोहा ॥ *
पडे अशुद्ध सुबेदको होत प्राप है जौन। जो चोरी तव कमलकी करै लहै सो तौन ॥

॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

॥ अरुन्धत्युवाच ॥ पतिकों तौन प्रसन्न नराखो। निति हि कुबैन शासुकों भाखो ॥ रहो जन्म
भरि परम दुखारी। लघो होय विष जाने नारी ॥ गण्डोवाच ॥ मोल लेय कन्याको दोन्हे। पतिसों
परम विरोध हि कीन्हे ॥ होत प्राप्त पातक है जैसे। होय कमलके चोर हि जैसे ॥ पशुसख उवाच ॥
पुत्र जन्मको मुद मतिपावो। निधनी रहो दुःखसो छावो ॥ लहो दासताके अप मानै। करो
होय भित्त चोरी जाने ॥ * ॥ शुनःसखउवाच ॥ * ॥ धर्ममार्गने नितिही चालो। राजा होय
प्रजाकों पालो ॥ निति रत रहो बेदके माही। धरो कुमारगमे पद नाही ॥ वेद वान द्विजकीं
निज कन्या। विधिवत देऊ सुरूपा धन्या ॥ पावो जीति तौन दशदिशिकी। करो होय जिहि
चोरी विषकी ॥ षडयजुषः ॥ जो तुम करी शपथ सो नीकी। हे शुद्धि जनको दायक श्रीकी ॥
याते हमको जानि पखो है। चोर कर्म यह तुमहि कखो है ॥ शुनःसख उवाच ॥ सत्य कही
वाणी जो तुम है। विषकी चोरी कीन्ही हष है ॥ कोन्हे विष हम गुप्त तिहारै। ते सब देखऊ पास
हमारे ॥ कीबे हम सु तुम्हार परी जा। विषकी चोरी करी अनिच्छा ॥ जानऊ मोकों मघवा हौं मै
नारी जातुधानिकाको मै ॥ जो मै याको हनतौ नाही। हनतो तुम्है सरोवर माही ॥ मै तुम्हार
रक्षारथ आयो। मारि जातुधानि हि सुख पायो ॥ तुम अलोभतें अत्यय लोकाहि। रहि ही प्राप्त
हाथ अशोकहि ॥  ॥ दोहा ॥  *
उठिके तुम अथ क्षिप्र विष अपने अपने लेऊ। सप्त षडभिन्डको कहत भे मघवा सहित सनेऊ ॥

॥ * ॥ श्रीशुभउवाच ॥ * ॥ चरणा कुलकछन्द ॥ * ॥

मनिपर सुनि मघवाकी वानी। लै विष भे प्रसन्न शुचि ज्ञानी ॥ तदमन्तर आमदसो रण।
मघवा सह मुनि दिवको गण ॥ जामि षडभिन्डको अति गुणधामा। वृषादिभि महिपाल सुजाना ॥
महत पुख्य इनको दीन्हें ते ॥ न्हे हे धरु बिचार कीन्हे ते ॥ पथमे सखि धनदीबे लाग्यो। सादर परम
मदसो पाग्यो ॥ सप्त षडभिन्ड अब धन नहि लीन्हो। धन दीबे तव नृप हल कोन्हो ॥ ताते दान
शुल्लिको दीजिहि अरु नृपविद्वान्त परीजे ॥ यह आख्यान पढी जो कोर्दा। ताके अर्थविहि सब शोर्दा

ब्रा०प० स्वप्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दोजमकाशीवाचि
दा०ध० रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजभोपीनाथस्य शिष्येण सण्णिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे एकोऽणवतितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

यहि प्रसङ्गमे कहत हौं एक इतिहास अनूप । तामे हे वृत्तान्त शपथको सुमज्जं युधिष्ठिर भूप ॥

॥ * ॥ अरिलकण्ड ॥ * ॥

पश्चिम दिशामाहि नर नायक । तीर्थ प्रभास परम अघ घायक ॥ तामधि आय सुकृषि मिलि
मतिवर । करत भए यह मंत्र सु मुदकर ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

पुण्य मई यह भूमि जो दायक मोद अखर्व । तीरथ जाचकों चलै तामे मिलि कै सर्व ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

भृगु बशिष्ठ गौतमं हरषानिं । भरे तेजसों परम महाभिं ॥ शुक्र अङ्गिरा पर्वत नारद । वरत तेजसों
रविकी भारद ॥ कवि करयप गालव मतिमाना । भरद्वाज अष्ट ऋ मुदवाना ॥ वाल्मिलिस्थ आनद
सों पागे । विश्वामित्र तिमहि अनुरागे ॥ तिमिहि दिलीप तक्षष शिविराजा । पुन्धमार पुरु समुद
दराजा ॥ नृप यथाति अह अम्बरोष वर । अधर्मदर निनि परज धर्मपर ॥ ए रव इन्द्रहि करि कै
आगे । तीरथ करण चलै मुद पागे ॥ तीरथ करत करत भमाहो । आए नदी कौशिकी पाहो ॥
सबिधि स्नान तामाहो करि कै । गए ब्रह्म सरकों मुद धरि कै ॥ करि सनान तामे बड भागे ।
कमल कण्डकों खोदन लागे ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
खोदि खोदिकै कण्ड तव धरत भए तटमाहि । तहँ अगस्त्य अपनो खन्यो कण्ड लखत भे नाहि ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

तव अगस्त्य चिन्तासों छाए । ऋषि गणकों इमि बैन सुनाए ॥ कमलकण्ड मेरो किहि लीन्हो ।
सबमे यह अधर्म किहि कीन्हो ॥ चोरीकरण योग्य तुम नाहो । सय कहत हों ऋषिगण माहो ॥
ताते कण्ड हमारो दीजै । अधर्म गुण कै लोभ न कोजै ॥ कुसित काल धर्मको नाशै । कलमपको
सो करत प्रकारै ॥ सुनत रहे सोई अब आयो । याने दुःख मम होमे छाये ॥ नै हे अब अधर्म
भूनाहो । लखि हैं भूपति धमहि नाहो ॥ विप्र लोभ होमे बज्ज धरि कै । ग्राममाहि जचै श्वर
करि कै ॥ बड सुनावै गे शूद्रनको । धर्ममे नही धरि हैं मनको ॥ करि हैं सब सबके अपमानै । धरि
हँ कल हियमाहि महानै ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

बखो निर्वल हि लूटि है दया करै गे नाहि । ताते अब हम जाय गे तुर परलोके नाहि ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

बचन सुकृषि अगस्त्यके सुनि कै । कहत भए सब ऋषि गिर धुनि कै ॥ चोखो हम नहि कमल

तिहारो । आप न यह हियमाहिं विचारो ॥ कहि अंगल्यसौ जैसे बानी । छिए शपथकी दृष्टा शान्प
आनी ॥ पुत्र पौत्रनसह दुख पाये । शपथ करण ऋषि अरु नृप लाये ॥ ॐ ॥ भृगुरुवाच ॥ ॐ ॥ दाभ
जिहिं तव पुकर लीन्हो ऋहै । सो अपमान दुःख सो भै है ॥ वृषादिकनको सो पल लैहै । तेज
तास तनमे नहिं रहै ॥ ॐ ॥ बशिष्ठउवाच ॥ ॐ ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो । होऊ
महा सो दुर्मतिवारो ॥ होय नगरमे सो सन्यायो । घर घर फिरि कै लहऊ उदायो ॥ ॐ * ॐ

॥ * ॥ कश्यपउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लयो होय जिहि कलम तव यह तीरथके कूल । बेचो सो सब बस्तुको धरि कै लोभ अतूल ॥
धरी अन्यको बस्तु जो करो लोभ तिहिंमाहिं । भूटो साक्षी होऊ अरु करो धर्मको नाहिं ॥

॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ चरणकुलकहन्द ॥ * ॥

कामक्रोधमाही रत रहो । द्विज ऋषी कर्मको गहो ॥ होऊ मत्सरी दुर्मति धारो । लयो होय
जिहि कलम तिहारो ॥ ॐ ॥ अङ्गिरउवाच ॥ ॐ ॥ वेदमाहिं भूटहि निति भाखो । पास
सदा स्वामनको राखो ॥ रहो अपावन द्विजको मारो । लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥
॥ धूम्रमारउवाच ॥ शूद्रमाहिं पुत्र उपजावो । हितु उपकारण मनमे लावो ॥ आपुहि भोजन करै
विरावो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहायो ॥ पुरुहवाच ॥ करो भोज्य नारीको ल्यायो ॥ रहो
आपु आलससो छाये । होऊ बैय सो दुर्मति बायो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहायो । दिल्लीप
उवाच ॥ एकहि कूप होय जानाहीं । होय न सरिता ताके पाहीं ॥ असो ग्राम बसै द्विज तामे ।
नितिहि विहार करै शूद्रामे ॥ तिहिको गतिको सो पद धारो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥
शुकउवाच ॥ भोजन करो वृषापल करो ॥ होऊ भूमिनाथको चरो । रति कीवो दिनमाहिं विधा
रो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ यमदग्निरुवाच ॥ पढो अनध्ययनके माही । कहेसर्वदा
बैन वृथाही ॥ शूद्र आहमे भोजन करो । अधर्मसो कबहूँ मति उरो ॥ कहेंहूँ न सुमगे पग धारो ॥
लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ ॐ * ॐ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ शिविरुवाच ॥ * ॥ ॐ * ॐ *
करो अन्यके यज्ञमे विद्य होय कै अज्ञ । लयो होय जिहि चोरि तव कमल, सुनऊँ ऋषिप्रज्ञ ॥

॥ * ॥ ययातिरुवाच ॥ * ॥

किए अनारद वेदको होत प्राप्त अध जौन । करी होय जिहिं कमलकी चोर । लहै सु तौगा ॥

॥ * ॥ चरणकुलकहन्द ॥ * ॥

सौ धन जो विद्या हि पढावै । अतिथि होय पुनि गृहमे आवै ॥ नाहि होत है पातक जोई । होय
कमलके चोर हि सोई ॥ अम्बरीषउवाच ॥ नारि ज्ञानि अरु गोक माहीं । दया करै जान जन
माहीं ॥ अरु जो ब्राह्मणको संधारै । दिश्यमे अधर्मको न विचारै ॥ ताहि होत है पातक जैसे ।
होय कर्मको चोरहि तैसो ॥ नारदउवाच ॥ अश्रमकी निन्दाको कीन्है । अरु निर्बलको धन हरि

शीतल ॥ होत प्राप्त है पातक जैसी । होय कमलको चारहि तैसी ॥ * ॥ अङ्कुराउवाच ॥ * ॥
 सुहाडि कहत रठे दिन राती । भूरि नक्षेत्री करि गति जाती ॥ साधु जननसों करै विरोधै । कब
 सुमारगको नहि सोधै ॥ देख कान्यकाको लै भोज्य । करत रहै निति पाप अतो लै ॥ तिहिकां
 प्राप्त होति गति जैसी । होय कमलको चारहि तैसी ॥ कविहंशाचारवि दिशि विद्या मुचहि कीन्है ।
 अथ अतिथि हि भोज्य नही ॥ जोकोउ होय प्रणके नाहो ॥ कीन्है ताकी रक्षा नाहें ॥ ताउ
 बर बलाय सुरभीको ॥ बडत लोभमे जीको ॥ प्राप्त होने जनको गति जैसी । होय कमल
 के चारहि तैसी ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ शत्रुनके मखकी करवाए । तिनको दियो बडत धन पाए ॥
 प्राप्त होति जनको गति जैसि । होय कमलके चारहि तैसि ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥ * ॥
 होय पुरोहित मृषकको कनक लखे जिहि होय । लखे अनादर सखदा रही दुखसों भोज ॥
 ॥ * ॥ पर्वतउवाच ॥ इन्द्र ॥ * ॥ राखो आज औचिकी काजे । भाखो नित्य अस्त्य दरजे ॥ फिरो
 चहँचा खर पै चढिकी । फिरो अति मरसों भाँसिकी ॥ सेवाधिय होऊ पध दारो ॥ लखे होय जिहि
 कनक तिहारो ॥ भरद्वज उवाच ॥ भूठ होचि सख पाप बटारं । सख सुमारगके नहि धोरै ॥ अर जो
 नहि कूरताभार ॥ कमल चार खड नहि सौरी ॥ अङ्कुराउवाच ॥ होऊ सदा सो परतिय गागी ।
 होऊ मुख अर अघतत नाभी ॥ लखे न सुमने पण धारो ॥ लखा होय जो कमलतिहारो ॥ बालक
 उवाच ॥ दिऐ दानको नित्य वलनि । देख कार्यमे चित्त मति अनि ॥ होऊ पाप छत अघर
 पसारो ॥ लख जा कमल तिहारो ॥ अरभयवाच ॥ करो सासुकी नित्य अवज्ञा । पति प्यारी मति
 होऊ अप्रज्ञा ॥ प्रियको भोजन विना दिऐ ही ॥ भोजन करो अपु पचिखे ही ॥ रहा जनम अरि दुखसों
 भारो ॥ लीखो होय कमल जिहि नारो ॥ बालकियवाच ॥ काज जीवकाके दुख भारे । सहि
 करि कै सु यामके द्वारो ॥ रही एक पदसों निति उछि । धरु होडि अधरमे बाढो ॥ कूर भावको
 निभ पसारो ॥ लखो होय जो कमल तिहारो ॥ मुनिसख उवाच ॥ न्है सम्यासी राखऊ नारी ।
 जन निस्व्यात होऊ अघकारी ॥ प्राप्त अभिमान हि नहि सोवो । निशि दिन दयाअयनमे सोवो ॥
 धरु गति हि कचरू न विचारो ॥ लखो होय जो कमल तिहारो ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

धरौ अविणकी अप्य सुनि न्है सखी सरराच ॥ अर अन्धकी देखि कै कोपित कछो कषायो ॥
 ॥ * ॥ अङ्कुराउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥

अचि न्है पढो सदाही बेदै । होऊ धरुकर रहऊ अखेदै ॥ सोल मान से होऊ नभारी । देऊ
 सुता बर दिज हि सुजानै ॥ समुद सु ब्रह्मासीसको जाँझा । बड प्रकारके खानर पावो ॥ बखऊ
 सुमारग सुयश पसारो ॥ लखो होय जिहि कमल तिहारो ॥ अरभयवाच ॥ जो तुन अप्य करी सुर
 रायासो मो आभीषाद दरजो ॥ देव अयन प्रात पूरु करि सखाँसो सगल कर्माओ ॥ देऊ

कमल अबहीं तुम मेरो । चीन्हें तुम्है कहा शशि हेरो ॥ इन्द्रउवाच ॥ सुनिवे धर्म कमल हम ली शा०प०
 न्हों । लोभ नेक हीमै नहि कीन्हो ॥ ताते क्रोध न मनमे कीजे । कमल आपनो यह तुम लीजे ॥ दा०ध०
 सुनि मै धर्म महत सुख पाये । शपथ व्याज ऋषिगणको गाये ॥ करज लमा अपराध हमारो ।
 लागत डर है मोहि तिहारो ॥ सुनि अगस्त्य मघवाकी बानी । अति प्रसन्नता होमे आनी ॥ लोभ
 भए नीरज ऋषि अपने । ताते मिटो क्रोधको तपनो ॥ तदनन्तर ते ऋषि बडभागे । अन्य तीर्थको
 ने मुदपीये ॥ विधिवत पर्व पर्वको माहीं । तीर्थमाहिँ वा देवत पाहीं ॥ यह आख्यान पढै जो कोई ।
 ताके मूरख सुत नहि होई ॥ कौनजुँ आपत पास न आवै । जरा अवस्था नहिँ नगिचावै ॥ नष्ट
 होति कलुषता भारो । सम्पति गृहमें टरति न टारो ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

अन्तकाल जब होय तब जाय स्वर्गके माहिँ । भरो भूरि आनन्दसों रहै सुरणके पाहिँ ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानगामिना श्रीवन्दीजनकाशी
 वासिरघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिब्रुवा विरचिते
 भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मं शपथविधौ नवतितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ यधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आइकर्मने करत जन उपानहनको दान । तिमिहि ऋचको करत है अद्वा सहित महान ॥

तीरथ औ व्रतहनमे देत सविधिहै पर्म । ताते पूकृत हैं तुम्हें कहिए मोहि सधर्म ॥

ऊपानह औ ऋचकी प्रवृति की है कौन । औ किहिविधि उत्पन्न भे कहे तात बुधिमान ॥

आइ तीर्थ अरु व्रतनमे इन्हें देत किहि अर्थ । कहे मोहि बिस्वार कै सुनिए तात समर्थ ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जिहिविधिसौ उतपन्न भे ऊपानह औ ऋच । अरु जिहिविधिसौ प्रवृत्त भे भे प्रसिद्ध सरवच ॥

सो किधि तुमसों कहत हैं मै बिस्वारित महान । तजि प्रसादताकों सुनजुँ पंडुसुवन मतिमान ॥

यह प्रसङ्गमे कहत हैं एक इतिहास अवाद । दिनकर औ यमदण्डिको तामे है समाद ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

ऋषि यमदधि मोदसों पागे । धनु गहि कीडा करणें लागे ॥ शर ऋषिवर सु चलावत ज्यों ज्यों ।

दौरि रेणुका ल्यावति त्यों त्यों ॥ जब मध्यान्ह भयो तब भारो । तपति भई ताते सो नारी ॥ भई

बिकल न्है ठाढी तरुतर । तिहितें भए अबेर महत डर ॥ भयो रेणुकाके हियमाहो । आई

कौपति ऋषिके पाही ॥ तब ऋषि क्लेश्यो ताहि कुप्रसेतो । लार्द बार ऊहते एती ॥ रेणुकोवाचा ॥

सुनु ऋषिराय क्रोध जिन कीजे । कारण देरीको सुनि लीजे ॥ तत्र भए शिर अरु पद मेरे । परम

तेजसे दिनकर बेरे ॥ ताते गई बृहतर भागे । भूरि बिकलताईसों पागी ॥ जबलौ गई बिकलता

शा०प० नाहीं । तबलौं आय सकि न तब पाहीं ॥ यह कारण हं देरीकोरो । है अपराध कहु नहि मेरो ॥
दा०ध० सुनि कै यह नारीको बानो । रिसि करिकै ऋषिराय महाजी ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥ ॐ ॐ ॐ
कहत भए इमि नारिसों गहि निषङ्ग कोदण्ड । मै गिराय दैं हौं रविहि बर शरणसों चण्ड ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

कहि इमि सुऋषि चढाय सु भौंहे । बैठत भए भानुके सोहे ॥ अधि सरिस यमदग्निहिं
देखे । ऋषिको क्रोधदाय हिय लेखे ॥ मारतण्ड द्विजको बपु धरि कै । आय कह्यो इमि विनती
करि कै ॥ मारतण्ड तब कहा बिगास्यो । तातैं इतो क्रोध तुम धास्यो ॥ भानु किरणसों जलकों
करवै । ताहि फेरि बर्षामे बरवै ॥ अन्न होत है भूमे तातैं । रहत समुद मनुजादिक जातैं ॥ होत
धर्म बज्र विधि सुमहीमे । पढत शास्त्र श्रुति द्विज सुखहीमे ॥ होति विन्न सञ्चयता भारी । बज्र
विधि दान करत नर नारी ॥ तिहितैं भानु पै न तुम रोषो । मेरो कहैं रोषकों मोषो ॥ ॐ ॐ ॐ

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कोन्द चहत प्रसन्न हम तुन्हें सुनऊँ ऋषि पर्म । मिलि है भानु निपाततैं तुमकों कहा सधर्म ॥

॥ ॐ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ॐ ॥

भासमानके सुनि वचन ऋषि यमदग्नि सुजान । कहा करत भे सो हमै कहिए तात सुजान ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ ॐ ॥ भासमानकी सुनि कै बानो । ऋषि न शान्त ताहीमे आनी ॥ तब रवि
नैमि जोरि कै पाणी । कहत भए इमि ऋषिकों बाणी ॥ चलत रहत है भानु सदाही । कौसैं
अचल जानि हो ताही ॥ अचल बिना जाने तुम एजू । करि हो किमि निपात रविकेजू ॥ यम
दग्निउवाच ॥ सुनऊँ भानु धिरताकों मेरी । देखति ज्ञान आखि हैं मेरी ॥ अर्धमेषमधि दिनके
माही । तब धिरता है होति सदाही ॥ सूर्यउवाच ॥ निश्चय तुम जानो गे मोही । योंतैं कहत
ऋषे हम तोही ॥ जानऊँ मोहि आपु अपकारो । करऊँ कृपा हौं शरण तिहारी ॥ भीष्मउवाच ॥
तब यमदग्नि कह्यो इमि हसि कै । होऊँ त्रिकल जिनडरमे फसिकी ॥ नम्रताहि अब देख तुम्हारी ॥
मिठी रोषता सर्व हमारी ॥ तब किरणसों युत पथमाही । दुःख होय जीवनकों नाही ॥ अंसों
कहु विचार विचारो । मिटै रोष तब सर्व हमारो ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॐ * ॥

कौसैं कहि चुप ऋषे रहे ऋषि यमदग्नि सुजानु । ह्वे उपानह देत भे तब ऋषिबरकों भानु ॥

ह्वे उपानह देय कै ऋषि यमदग्निहिं पर्म । मारतण्ड इमि कहत भे भूपति सुनऊँ सधर्म ॥

शिरकी रक्षा ह्वेसों ह्वे है हे ऋषिराय । उपानहनसों होयगी चरणनकी सुखदाय ॥

धवसों ह्वे है लोकमे इनको ऋषे प्रचार । ह्वे है इनको दान फल अक्षय सुमति अगार ॥

॥ भीष्मउवाच ॥

इत्र उपानहकी प्रवृत्ति कीन्ही रवि इमि तात । उत्तम इनके दानको पुण्य लोक बिल्यात ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

उपानह अरु इत्रको तुम करऊ तातें दान । धर्म अत्य प्राप्त तुमको होय गो मतिमान ॥
इत्र ये जन देत द्विजको शुभ्र सुषमा अँन । प्राप्त ताको होत है परलोकमे बऊ चँन ॥ बसत सुर
पति लोकमाहीं देवतनकोसाथ । है न यामे नेक संशय सुनऊँ हे नरनाथ ॥ देत द्विजको तपनि
माहीं उपानह जन अँन । लहत तँनऊँ देवतनको लोक आनदभँन ॥ बास बऊँदिन स्वर्गमे
करि ता अनन्तर परम । जात सो गोलोकमाहीं सुनऊँ तात सधर्म ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥ *
इत्र उपानह दानको फल जो है अभिराम । सो संपूरण हम कह्यो तुमको नृपबुधियाम ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरंउवाच ॥ * ॥

इत्र उपानह दानको सुन्यो सर्व फल तात । अब म्दहस्य धर्महि कहे हमको तुम अबदात ॥
कहा किएसो मनुजके होय ऋद्धि बऊँ परम । सोऊँ तुम हमको कहे करिके उपा सधर्म ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यह प्रसङ्गमे कहतहैं एक वृत्तान्त महान । वासुदेव अरु भूमिको है सम्बाद सुजान ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

हमसो पूछे जँन सुनहुँ धर्मधर प्रज्ञ तुम । वासुदेव मुदभँन पूछत भे सो भूमिसो ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकन्द ॥ * ॥

वासुदेवकी सुनिकै बानी । कहति भई इमि धरणि सुजानी ॥ करिकै यज्ञ नेम गहि अतिहीं ।
करै प्रसन्न सुरन्हको नितिहीं ॥ आदर करि सुप्रीति हियमाहीं । अतिथहि करै प्रसन्न सदार्हीं ॥
करिकै श्रद्धासेविधि सह प्रेमै । पितर प्रसन्न करै गहि नेमै ॥ ऋषिवर होहि प्रसन्न सु जैसे । ति
नको करै सुमतिसे तैसे ॥ वासुदेव यह धर्म म्दहीको । आनँददायक है आत नीको ॥ ऋद्धि
मिलित बऊँ कोन्हे याको । म्दही लहतहै परम प्रभाको ॥ धरणीकी यह बाणी सुनि कै । कृष्ण
प्रतापवान बर गुणि कै ॥ धरणि कह्यो यहिँ धर्महि जैसे । करत भए बर विधिसो तैसे ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

किँ धर्म यह मनुज बर पाय सुयश यहिँलोक । स्वर्गलोकमे प्राप्त है निशिदिन रहत अथक ॥

स्वस्तिश्रीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकधीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मण्डितेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्षणि दानधर्मे एकनवतितमोऽध्यायः ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

भा०प०

॥ * ॥ बुधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दा०ध०

गन्ध धूप अरु दीपको किए दान अभिराम । होत कहा फल मनुजको कहऊ तात बुधिधाम ॥

॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥

यहि प्रसङ्गमे कहत है एक इतिहास सुभूप । मनु औ सुवरण निप्रको है सम्वाद अनूप ॥
हो सम सुवरणवर्णके ताको वर्ष विभात । ताते सुवरण नाम भो तिहिँ द्विजको विख्यात ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

समय कौनऊमाहिँ सो द्विज गयो मनुके पास । बृजि के अन्योन्य दोऊ कुमल सहित
ऊलास ॥ मेरु पर्वतमाहिँ सुन्दर शिलापर ते पर्न । भए बैठत मए मुदसों सुनऊ तात सधर्म ॥
ब्रह्माग्नि अरु देवदैत्यनकी कथा अभिराम । करत दोऊ भए तिहिँ बर शिलापर अभिराम ॥
ता अनन्तर कह्यो मनुको वाक्य सुवर्ण एह । मनुजके हित अर्थ कहिए धर्म हे बुधिनेह ॥ धूप
दीप सुगन्धसों बर मनुज पूजत देव । होत तिनकों कहा फल है कहऊ याको भव ॥ * ॥ मनु
उवाच ॥ कहत अहिँ परसङ्गमे इतिहास एक सधर्म । शुक्र अरु बलिदैत्यको सम्वाद तामे पर्न ॥
सुनऊँ द्विजवर शुक्र आवतभए बलिके पास । देखि तिनकों दमजपति बलि उद्यो सहित
ऊलास ॥ सहित आदर पूजि आसन चारु पै बैठाथ । आपु बैठत भयो सोहिँ शुक्रके सुख पाय ॥
ता अनन्तर कथा पूछी आपु हमसों जौन । भयो सोई पूछतो बलि शुक्रसों मतिभौन ॥ * ॥
बलिरुवाच ॥ * ॥ सुमन दीप सधूप दानहिँ किएते फल कौन । मिलत है तुम कहौ भार्गव कृपा
करि बुधिभौन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ देत मनकों मोद अरु अग्र्य देत है अभिराम । नाम
सुमनस कहत ताते पुष्यको बुधिधाम ॥ सुमन जो जन देवतनकों देत है दैत्येश । देव तुष्टित
होय ताकों पुष्टि देत अग्रेश ॥ सुमन जिहिँ जिहिँ देवको उदेश करि जो देत । देत सो सो ताहि
मङ्गल सुनऊ बुद्धिनिकेत ॥ वृत्त जेते यज्ञमाहीं ग्रहण हैं अभिराम । सुमन तिनके देवतनकों
सगत है प्रिय नाम ॥ वृत्त जे नहिँ ग्रहण मखमे सुमन तिनके जौन । असुर राक्षस यक्षगणकों
सगत हैं प्रिय तौन ॥ होय सुमनमाहिँ जिन जिन परम चारु सुवास । सुमन ते सब देवतनके
जानु हे बुधिरास ॥ अत तिनके सुमन जैसे अकण्ठक जे वृत्त । देवतनकों सगत हैं प्रिय सुमन
तिनके सत्त ॥ जलजंजे कमलादि तिनके सुमन हे सुनु तात । थक औ गन्धर्व नागहिँ देत बुध
अवदात ॥ रत्न तिनके फूल अति तर सकण्ठक हैं जौन । प्रेतकेहें योग्य तिनके फूल सुनु बुधि
भौन ॥ कसतिलके फूल जैसे वृत्त जे भूमाहिँ । तिनऊके हैं फूल भूतहिँ योग्य संग्रय नाहिँ ॥ देत
जे आनंद मनकों सुमन कोमल चारु । मनुष्यनके योग्य तेहें सुनऊ सुमति अगारु ॥ सता तर
सतपन्न भे अमानमाहीं जौन । औ भए देवायतनमे जौन सुनु बुधिभौन ॥ विवाहादिकके नहीं
है योग्य तिनके फूल । कहत हौं मै तुम्हें निजु के करत अशुभ अतूल ॥ सता औ तर मए जे उष्यद

गिरिते पर्षे । सुमनकेहैं योग्य तिनके सुमन दैत्य सुमन ॥ सुमन पहिलें अमल जलसें धोयके
अभिराम । मंत्रसें पुनि करै मोक्षण सहित विधि बुधिधाम ॥ सखि कण्ठकरक्त जिनके सुमन
कटु फल पर्षे । जौन जैसे बृक्ष तिनके सुमन दैत्य सुमन ॥ देवताकों आर्पण अरिबधन कारज
माहिं । अथर्वणमे लिखी विधि घट्टमाहि संशय नाहि ॥ देवतनकों करत जे परसन्न सुमन
बढाय ॥ करत तिनकी कामनाहैं निदि देव सचाय ॥ पूजि कारके दयतनको करत जे सनमाना
करतहैं सनमान तिनको देवता सुखदाम । अबज्ञा जे देवतनको करत दुर्मतिधान ॥ भस्म ताकों
करतहैं करिकोप देव महान ॥

शा०प०
दा०ध०

सुमन दानको फल कह्यो तुहै बर्षिं हम सर्व । धूपदानको अब सुनो फल उत्कर्ष अखर्व ॥
एक सारिण निर्जास एक औ है कृत्रिम एक । त्रय प्रकारकी हातहैं धूप सुनऊँ सबिवेक ॥

चन्द्रनादिकी धूप जे ताको सारिण नाम । अष्टगन्धको कहतहैं कृत्रिम धूप ललाम ॥
नाम कहत निर्जासहै गुग्गुलादिकी चार । इन तीन ऊँ मे अष्टहै गुग्गुल धूप उदारू ॥
सल्लईके निर्जास विम हैं निर्जास जितेक । तिनकी प्रिय अति धूपहै देवनकी सबिवेक ॥
यक्ष सर्प राक्षसनकों सुनु दैत्येय अनूप । सब सारिणमे अग्रकः सागतिहै प्रिय धूप ॥
सल्लईके निर्जासको दैत्यनको प्रिय धूप । यक्षादिकके प्रिय नहीं निम्बुके कहत अनूप ॥
मल्लिकादिके सुरससें युक्त राल रस चार । मनुजनकों प्रिय सागतिहै तिनको धूप उदारू ॥

देव दनुज अरु भूतहू यहि सुधूपसें पर्षे । शीघ्रहि तृष्टित होतहै सुनु दैत्येय सशर्म ॥
मनुजनहीं के योग्यहैं अतरादिक जे सर्व । हम निश्चय करि कहतहै सुनु दैत्येन्द्र अखर्व ॥

जौन सुमनके दानकों उत्तम फलहै तात । सोई धूप प्रदानको फलहै अति अवदात ॥

दीपदानको कहतहैं अब हम फल अभिराम । दीपदान किन्हें परम तेज बढतहै माम ॥

प्रभा बढतिहै अङ्गमे होत निरोगित नैन । आधि व्याधि नहि होतिहै नितिही रहत सचैन ॥

दीप बढायो देवकों लीजे पुनि नहि ताहि । ताकी रक्षा कीजिए निकट बैठके चाहि ॥

जौन धरतहै दीपकों तौन अन्ध जन होत । होति नष्ट ताकी प्रभा अघको करत उदात ॥

ससत दीपलौं स्तनमे दीपप्रद दैत्येय । चाहतहै ताकों सदा अमरनसह अमरेश ॥

घृतको दीपक दीजिए प्रेम सहित अभिराम । मिलै न घृत तौ तैलको दीजे दीप ललाम ॥

इच्छा जे अमृत्यकी करै परम हिय माहिं । दीप धरत ते अतुष्य वनमे अरु गिरि पाहिं ॥

होत आत्मा शुद्ध अरु करति सुबुद्धि प्रकाश । दीपदान ते होतहै औसो फल बुधिराश ॥

सुवरण द्विजकों सुनु कह्यो यह फल अति अभिराम । सुवरण नारदकों कह्यो नारद मोकों आम ॥
यह जो विधियों जानि तुम करऊ नित्य महिपासा । पूर्व उक्त फल तुमऊँ कों है है प्राप्त विशाल ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ बुधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

सुमन दीप अह धूपकों जो जन देत सहर्ष । ताकों जो फल होत सो सुन्यो परम उत्कर्ष ॥
धूपदान किहि अर्थ अह दीपदान किहि अर्थ । औ बलिदान किमर्थ जन विधियों देत समर्थ ॥
कहऊ मोहि अवगारिकै सुनऊ तात मतिमान । तुमहीं कहिबे योग्यहैं बन्ना परम सुजान ॥

॥ ॐ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॐ ॥

कहत एक इतिहास है यह प्रसङ्गमे भूप । ऋषि अगस्त्य अह नऊषको है समाद अनूप ॥

॥ ॐ ॥ चरणकुलकण्ड ॥ ॐ ॥

सुष्ठत कर्म सेन मऊष सुमोको । पायो देव राज्य शुभ मीको ॥ तहाँ मानुषी अह देवनकी । किया
करत भो सो निशिदिनकी ॥ विधि सेन करत भयो बलिदानै । तिमिहीं सविधि होम जप
ध्यानै ॥ धरणि माहि पूजत है जैसे । देवनको पूजत भो तैसे ॥ धूपदीप दानहिँ सह प्रीती । नऊष
करत भो गहिकै राती ॥ तदनन्तर अपनेको जाने । इन्द्र करत भो गर्व महानै ॥ ताते किया भई
सब हीनी । महत प्रनाद तास मति हीनी ॥ रथके माहि लगाय ऋषिनको । तापै ऋषि मुद्रमे धरि
मनको ॥ फिरत भयो चऊधा मद पागे । ताहि ऋषिनको उर नहिँ लागे ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
बीतत भो बऊ काल तब मदसेन मयो अर्ष । भो बुलावतो ऋषिनको वारो बाधि सुगर्व ॥

॥ ॐ ॥ चरणकुलकण्ड ॥ ॐ ॥

शार्द पारी कमज ऋषिकी । परम प्रतापमान सम शिखिकी ॥ तव तिन पास सुच्छि भृगु आए ।
तिनको अँसे बैन सुनाए ॥ नऊष करत अपमान दण्डजै । सो हम सहै सुमनि किहिँ काजै ॥
॥ * ॥ अगस्त्यउवाच ॥ * ॥ मन सुदृष्टिमे आवै जोई । होय हमारे बगने सोई ॥ विधियों
नऊष यह सु बर माग्यो । पायो सो ताते भय भाग्यो ॥ यहिते ऋषिके दम तुम दोजु । और
मुख्य ऋषिगणहै सोऊ ॥ नऊषहिँ दग्ध सकत करि नाहो । यह निश्चय मानऊँ मनमोही ॥
॥ * ॥ भृगुउवाच ॥ * ॥ मै ब्रह्माके पास गयोहो । परिभवके अति दुखरोयोहो ॥ तिनको
सब वृत्तान्त सुनायो । कियो नऊषको दुर्मति छायो ॥ चतुरामन मन बाणी सुनिकै । कहन भए
मोको दनि गुणिकै ॥ बली नऊषके है अपकारी । कुम्भज ऋषि वर तेजसधारी ॥ तिहिँ ते
आयो पास तुम्हारे । भयो मोद वर तुम्है निहारे ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
अवहिँ तुम्है बुलवाय नऊष इन्द्र दुर्मति सदन । रथके माहि लगाय सिरमे हनिहँ चरणसे ॥

॥ * ॥ चरणकुलकण्ड ॥ * ॥

ताते अवहिँ अनिन्द्र करौंभो । नऊषहिँ नेकुण उर हिँ धरौंभो ॥ देऊ शाप यह क्रुध करि भारी ।
होजु सर्प तू अति दुख धारी ॥ तदनन्तर मै ताहि महीमे । हँ गिराय जानो सति हीमे ॥ सुनि यह

ऋषिबर भृगुकी बानी । मनमे अति प्रसन्नता आनी ॥ ☺ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ☺ ॥ भयो
 अग्निन्द्र नऊष कहु कैसे । अर किमि परे भूमिमे भै से ॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥
 देवसोक अर मनुज लोकमे सदा घारसों चारामहत बृहकों पाय गृही वर पावत मोद अपार ॥
 ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

सबिधि सप्रीति किहँ बलिदानै। देवत होत प्रसन्न महानै। धूपदीप दानहिं तिमि कोन्हें। होत प्रसन्न
 देव मुदखोन्हें ॥ याते धूपदीप बलिदानहि। करत सबिधिहँ नित्य सुजानहि। सुर अरपितर सुष्टपि
 हैं जेते। पूजें होत प्रसन्न सु तेने ॥ यह मति थापि नऊष मुद पाग्यो। होय इन्द्र सब करनेलाग्यो ॥
 ॥ दोहा ॥ नऊष कौनहू काखमे भाग्य भएतें हीन । प्रापित भयो प्रमादकों भूपति सुनऊ प्रबोन ॥
 ॥ * ॥ चरणाकुलकछन्द ॥ * ॥

सो प्रमादता भए महनि। भूलो धूप दीप बलिदानै ॥ कुत्तित कर्म करण सब लाग्यो ।
 गर्बे माहि दुर्मतिसों पाग्यो ॥ तदनन्तर सु नऊष सुरराजा । रथको माछि लगावन काजा ॥ तटत
 नदी सरस्वति करे। श्रीघ्न सुमुनि कुम्भजकों तरे ॥ तव कुम्भजकों औसी बानी । कहत भए भृगु
 ऋषि बरझानी ॥ शापदेनकों नऊष सुरेशै । जटा माहि तव करत प्रवेशै ॥ करौ प्रवेश जटामे
 जत्रसौं । रहो नैन मूढ़ें तुम तवसौं ॥ कुम्भजकों इमि बांणी कहि करि । तास जटामे बैठे कुप
 धरि ॥ नऊष पास कुम्भजके आयो । तव कुम्भज इमि वैग सुनायो ॥ रथमे हमकों बेगि लगावो ।
 ज्यों मन आवै त्यों सु चलावो ॥ जहा जायवेकी हम पावैं । आज्ञा तहां तुन्हें पऊचावैं ॥ मुनिके
 यह कुम्भजको बानी । दिए साथ रथमे अभिमानी ॥ जब कुम्भज रथको तर आने। तव भृगु
 ऋषिबर अति हरषाने ॥ नऊष सुरेश बैठ रथ ऊपर । चलत बेग अतिसों भो कूपर ॥ कछू दूरि
 चलि मोदसों हेरत । भो प्रतोदसों मुनिकों प्रेरत ॥ तबहू कुम्भज परम तपेधन । नेकज मनमे
 कोन्हो जोधन ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * ॥

तदनन्तर सुरपति नऊष सुनऊ युधिष्ठिर प्रज्ञा कुम्भजके शिरप हन्यो बासपादसों अज्ञ ॥

॥ * ॥ चरणाकुलक छन्द ॥ * ॥

तव सक्रोध शैलें भृगु मुनिबर । नऊषहि शाप रियो यह दुखकर ॥ भूमे जाउ सर्प तुमन्हैके ।
 तहा रहो वज्र दुखसों शैके ॥ शाप पाय मुनि भृगुको पाहों । गिरो सर्पशै भूके माहो ॥ भृगुकों
 नऊष नेकु जौ तकतो । नऊषहि भृगु गिराय नहि सकतो ॥ बलिदानादि कर्म शुभ कीन्हें । रह्यो
 पूर्व वृत्तान्तहि चीन्हें ॥ तदनन्तर इमि कहतो भयो । भृगुकों नऊष दुखसों रयो ॥ शाप अन्तशैहै
 कव मुनिबर । कहऊ छपाकरि मोयै मुदकर ॥ * ॥ भृगुवाच ॥ * ॥ भूय युधिष्ठिर शैहै सुनु
 जब । शैहै मोक्ष नऊष तेरी तव ॥ भृगु नऊषको शैसें कहिके । विधिके पस गयो मुद लहिके ॥

शा०प० सुहृदि अगस्त्यञ्ज परम तपस्वी । नेतिञ्च आश्रमकौ सु अशस्वी ॥ पास आय विधिके इहि विधिसे ।
दा०ध० कहत भए भृगु भरि सुख निधिसे ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
लखि प्रभादता नञ्जषकी हन महान दुखपाथ । श्राप देय करिकै सरप भूमे दयो गिराय ॥

॥ * * * * * ॥

भृगुके बचन विधाता सुनिकै । भए बुलावन शक्रहि गुणिकै ॥ तदनन्तर अमरणके वृन्दहि
भए बुलावत सहित अनन्दहि ॥ जब संपूर्ण देयत आए । तब तिनकों इमि बचन सुनाए ॥
नञ्जषहि भृगु अगस्त्य कुधधरिकै । भूमे डारि दयो अहि करिकै ॥ कार्य न कछू होत तिन राजा ।
भयो परम संदेह दराजा ॥ तातें शक्रहि पुनि बैठावो । देव राज्यपर सुख सरसावो ॥ सब सुर
सुनि यह विधिकी वानी । पाय हर्षता परम सहानी ॥ कहत बचनभे विधिको इहि विधि ।
अबकी करो कार्य यह तुम सिधि । सुनि बाणी यह विधि मुदहायो । शक्रहि राज्य नाहि
बैठावो ॥ शक्र पूर्व राजतहै जैसे । राज्य पाय राज्यो पुनि तैसें ॥ नञ्जषञ्ज दरश तुन्दारो
पाएँ । छूटि श्रापसें मुदसें छाए ॥ बलिदानादि फेरि बज्र करिकै । ब्रह्मलोकको गो सुख
धरिकै ॥ देव राज्य लहि नञ्जष नृपाला । कौन्ही परम अनीति विशाला ॥ तातें अतिहि
क्लेशता पाई । अहिकी लहिकै रिसि दुखदाई ॥ बलिदानादिके फलसें बर । पुनिञ्च श्रोतभो
समुद धर्म कर ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

धूप दीप बलिदानको जैसे फल है पर्भ । तातें गृहो करै सदा भूपति सुनहु सधर्म ॥

॥ * * * * * ॥

धूपदीप बलिदान । जे जन करत सुजान ॥ रूपमान बलवान । ते जन होत महान ॥

सक्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकबोश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजनेपोनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बेण दानधर्मे उत्तमानुशासने द्विनवतितमोऽध्यायः ॥ * * *

॥ * * * * * ॥

धनहर्त द्विजको जैन । जन लहत ते गति कौन ॥ * * * * * ॥ रामगीतोहन्द ॥ * * * * *

बृह एक चाण्डालहो सो सुनु तात सुजान । परै भो के चरणको रज करै तबही ज्ञान ॥ ताहि
लखि एक भूपको सुत कहतभो इमि बैन । परे मोरज करैत कोहि ज्ञान दुर्मति खैन ॥ चाण्डाल
उवाच ॥ अथम एक महिपाल कोज विप्रको हरि गाय । जातहो मित्र धामकों अथमान होव
सचाय ॥ मार्ग ऊपर करत है महिपाल कोज यज्ञ । चरणकी तिन गौनको रज परी तिहिने प्रज्ञ ॥
भयो रजनय सोम ताको भए पीवत जैन । नरकमाही परे ते द्विज सहित नृप बुधिभैतान ॥

शौरज जे यज्ञमाही ऊते जन ते सर्व । भए जाते नरकको सुनु सुमति मान अखर्व ॥ इन्द्रजित
 ऋषि ब्रह्मचारय धर्मको अभिराम । धरे मै है वसत तत्रहि ऊतो बुध मै नाम ॥ धरी भिक्षा स्थाय
 मै ही परी तिहिके माहिं । हरी मोके चरणकी रज कढे ऋके पांहिं ॥ तास भोजन किएते
 मै मयो हौं चण्डाल । लीन मेरो ऋ गयो वर धर्म तेज विशाल ॥ हरी मोके चरणकी रज परी
 जवसों बुद्ध । वेचिबेके योग्य सोम न कहत मतिबर शुद्ध ॥ जान बेचत सोमको ते जात रौरव
 माहिं । सुबुध ताकी करत निन्दा नित्य संग्रय माहिं ॥ परे गोरज भयो हौं चण्डाल मै मतिमानं ।
 सुमऊं याते करत हौं मै पवे गोरजज्ञान ॥ छूटि हौं किहिभांति ही मै चण्डालताते परम । होत
 निश्चय नाहि हमको भूप तात सधर्म ॥ राजसुतउवाच ॥ विप्रके धनअर्थ कोडो युद्धमे तुम प्रांन ।
 है तुम्हारी मोक्षको यह हेतु हे मतिमान ॥ बचन सुनि चण्डाल ए महिपाल सुतके परम । विप्रके
 धनअर्थ लरि कै युद्धमाहि सधर्म ॥ प्राण तजि कै मोक्षको सो भयो प्रापत होत । करऊ ताते
 तुमऊं कारज यह सु प्रज्ञापोत ॥ * * * * *
 स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
 रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
 भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे नृपसुतचाण्डालसम्वादे त्रिनवतितमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एकहि है सुकतीनको लोक परम अभिराम । भिन्न भिन्नकी है कही मोकों हे बुधियाम ॥

॥ * ॥ भोष्णउवाच ॥ * ॥

कर्म कर्मके लोक है प्रथक प्रथक महिपाल । पुण्यलोककों जात है सुकती जौं विशाल ॥

पापमान ते जात हैं पापलोककों तात । यामे संसय है नहीं कहत सुबुध अवदात ॥

कहत एक इतिहास हौं यहि प्रसङ्गमे भूप । गौतमको अरु इन्द्रको है सम्वाद अनूप ॥

॥ * ॥ तोमरकन्द ॥ * ॥

मतिमानं गौतम परम । वनमाहिं तात सधर्म ॥ एक हस्तिको सुत चार । लखि पर्यो मृतक
 उदार ॥ तिहिकों जिवाय सप्रेम । ऋषि कीन्ह दोर्घ सत्तेम ॥ कछू दिननमाहि महान । गिरि सो
 भयो बलवानं ॥ धृतराष्ट्रको धरि रूप । तह आय इन्द्र अनूप ॥ गहतें भए गज तौन । तब देखि
 ऋषि बुधिमानं ॥ धृतराष्ट्रकों इमि बैन । कहते भए मतिअन ॥ मम पुत्रवत है एह । गज चार
 हे अघगेह ॥ गऊ याहि तूं तिहि तेन । मम जीव होत अचैन ॥ यह द्रुप अरु जल स्थाय ॥ निति
 देत सोहि सचाय ॥ प्रिय अति हि लागत मोहि । सुख लहा इहिकों जोहि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥

शा०प० शत दासिका अभिराम । अरु गो सहस्र ललाम ॥ बज्ररत्न चारु अमन्द । अरु चौर विन्नु
दा०ध० बिलन्द ॥ हम तुम्है दै हैं पर्न । सुनुऊ हे ऋषे सह धर्म ॥ नज चाहिए द्विज कौना निजु जानु हे बुधि
भौन ॥ गौतमउवाच ॥ तव दासिका अरु गाय । वर रत्न बज्र सुखदाय ॥ अरु चौर ऊ धन जौन ।
चाहिए न हमको तौन ॥ * ॐ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ

बाहन कुञ्जर नृपणको होत कहत बुध पर्न । घाते मै खोजत हौ है नहि नेक अधर्म ॥
कुञ्जरको अब मोह तुम छोडि देऊ बुधधाम । हस्तो योग्य न राखिबो विप्रणको अभिराम ॥
सुने बचन धृतराष्ट्रके ए गौतम मतिमान । कहत भए जैसे बचन करि कै कोप सहान ॥

॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

पुण्यकमा जाय कै अहँ रहत हँ साबन्द । पापकर्मा जाय कै अहँ लहत हँ अतिदन्द ॥ सुन
ऊँ जैसे सदन हे यमरायको तहँ भूरि । दिवै हौ मै जातना तुम रहे का सुख पूरि ॥ धृतराष्ट्रउवाच
धर्मसो जे रहित हँ अरु रहित अद्वा जौन । विषयमे जेरहत रत हँ महत अधकेभौन ॥ जातना
ते सहत हँ अति जाय यमके धाम । जांयगे हम तहँ नहिं निजु जानु ऋषि बुधधाम । गौतमउवाच ॥
जाऊ गे जौ धनदके तुम लोकमे नरराय । जातना मन्दाकिनीमे दिवै हौ तौ जाय ॥ धृतराष्ट्रउवाच
देत भोजन अतिथिकों जे गहँ ब्रत अभिराम । देत आश्रय द्विजनकों जे परम प्रज्ञाधाम ॥ प्रथम
भोजन देय तिनकों जौन आश्रित होय । करत भोजन धनाधिपके जात लोकहि सोय ॥ हम न जैहँ
धनाधिपके लोककों ऋषि पर्न । दिवै हौ किमि जातना तुम मोहि प्रज्ञ सधर्म ॥ गौतमउवाच ॥
मेरु आगे फूलफल युत विपिन चारु विभौत । भरे आनंद गान किन्नर करत अहँ अवदात ॥
बहति अम्बुमदी है अहँ महति जल गँभीर । तहाहँ जो आपु जै हौ सुनऊ भूमिप धीर ॥ दिवै हौ
तौ जातना मै हरे भोगज चारु । तुम्है निजु कै कहत संग्रय है न भूप उदार ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥
पढत जे द्विज प्रज्ञ हँ इतिहास सहित पुरान । सत्यवक्ता बज्रश्रुत अरु धर्मवान महान ॥ समधु
भोजन देत द्विजकों जौन जन बुधधाम । जात अंबुनदीकों ते कहत बुध अभिराम ॥ तहां मै जैहौ
न ताँ जातना किमि मोहि । दिवै हौ हे ऋषे मतिबर सुनऊ इत तुम जोहि ॥ गौतमउवाच ॥
प्रिय सु नारद ऋषीकों फलफूलसौ युत पर्न । अश्वरा गन्धर्वगणको तिभिहँ प्रिय सह शर्म ॥ करत
किन्नर राज तामे नित्य समुद बिहार । इन्द्र तामे जाय कै अति मुदित होत उदार ॥ सुनऊँ जैसे
विपिन नन्दन तौनमाही तोहि । दिवै हौ मे जातना हम महत का इत जोहि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥
नृत्यमे अरु गीतमाहीं कुशल हँ द्विज जौन । कबळ काहँके न जाचत जौन द्विज बुधिभौन ॥
जात नन्दन विपिनकों ते और कोउ न जात । तहां हम जै हँ न जानो सत्य ऋषि अवदात ॥
गौतमउवाच ॥ * ॥ जहां अधिज बसत हँ अरु पर्वतज हँ यत्र । जलज जन अहँ रहत हँ सह देव
गण एकच ॥ सिद्धि सर्व सुकामना वर करत है अहँ शक्र । नारि नर गणमे न कोऊ कबळ बोलत

षड् ॥ नाम उत्तर कुरुसुताको लोक औसो जौन । आतना तुमकों दिवै हौं मै तहां करि नाम ॥
 धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ कामना करि जात जे नहि कबहुँ कोऊ पास । जे न भक्षत मांस धारें
 ज्ञान सहित ज्ञानास ॥ जिते जङ्गम सथावर हैं भूत तिनके माहिं । कबहुँ हिंसा भावकों जे जन
 विचारत नाहिं ॥ लाभमे औ अलाभज्जमे रहत एकहि भाय । सुती निन्दा करत काङ्गकी न
 सुखदुखहाय ॥ उत्तराकुरुलोकमाहीं जात हैं जन तौन । सुनहुँ ऋषिबर तहांको हम करैगें
 नहि गौन ॥ दिवै हो किमि जातना तुम मोहि करि कौ कुइ । छोडि हौं मै नाहि जै हौं लौ सुगज
 यह उह ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ चन्द्रहूके लोकमे जौ जाऊमे महिपाल । दिवै हौं तौ तहां
 हूमे जातना सुविशाल ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ जे प्रतिग्रह लेत नाही देत हैं नितिदान ॥
 जौन मागत विप्र सोई वस्तु देत सुजाम । जिते आबैं अतिथि तिनको भूरि करि सनमान ॥
 देत भोजन प्रीतिसों जे परम प्रज्ञावान । छोडि रोसहि सदा कोमल जौन बोलत वैत । निरन्तर
 जे करत यज्ञहि सुनज सुश्रुषि सचैन ॥ जात ते हैं चन्द्रमाके लोककों सुख औन । दिवै हो तुम
 जातना किमि तहां हम जै हैं न ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ रजोगुण औ तमोगुणसों रहित अति
 अभिराम । शोकजसों रहित तेजस भरो अतिही नाम ॥ लोक औसो भानुको जौ जाय हो
 तिहिं माहि दिवै हैं तौ जातना हम तोहि संशय नाहि ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ करत सेवा
 गुरुकी-जो प्रीति सहित विशाल । शास्त्र श्रुतिमे रहत जे रत महत जौन दयाल ॥ तपस्याकों
 करत जे अरु गहें सुब्रतहि जौन । सत्य जे जन नित्य बोलत चारु प्रज्ञाभौन ॥ दिवाकरके लोक
 माही जात ते हैं परम । तहां हम जेहें न जानऊ सत्य सुश्रुषि सधर्म ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥
 बरुणके तुमलोकमे जौ जाय हो भूपाल । दिवै हो तौ तहांहुँ हम जातना सुविशाल ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥
 बेदविधिसों अग्निहोत्र हि करै जो त्रयवर्ष । यज्ञ त्रय वर वर्षमाहीं करै
 जौन सहर्ष ॥ सुमारगमे चलै जो निति करै नित्य सुधर्म । बरुणके सो लोकमाही जात सुश्रुषि
 सधर्म ॥ तहां हम जेहें न यातें जातना तुम मोहि । दिवै हौं किहिभांतिसों ऋषि सुनो मोतन
 जोहि ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ जायबेकी तहां मानव करत इच्छा परम । शोकसों है रहित
 औसो इन्द्रलोक सुधर्म ॥ तहां तुमकों जातना मै दिवै हौं अति भूरि । कदा गजकों लेय कौ तुम
 रहे सुखसों पूरि ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ युद्ध मे जे सूर है अरु पढत जे निति वेद । जिये जो
 शतवर्षलौं बर करै धर्म अखेद । इन्द्रवारे लोकमाही जाय हैं जन तौन । दिवै हो किमि जात
 ना नाहि करैगे तई गान ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ स्वर्गहूके लसत ऊपर प्रजापतिको लोक ।
 जायबेकी तहां इच्छा करत सब बुधि ओक ॥ तहां तुमकों जातना मै दिवै हौं महिपाल ।
 कदा कुङ्कर लेय मोरा भरे हर्ष विशाल ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ अश्वमेध हि करत जे अरु
 प्रजा पालत जौन । प्रजापतिके लोककों ते जात हैं बुधिभौन ॥ तहां हम जेहें न यातें जातना

शां०
 दा०

शा०प० तुम मोहि । दिवै है किहिभातिसें ऋषि कहत हैं हम तोहि ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥
 दा०ध० शोकसें है रहित औ है परम दुर्लभ चार । जाय कै तहँ लहत अत्य मोद सुमतिअगार ॥
 सुनऊँ शुचि गोलोक है इहिभातिको अभिराम । तहँ तुमको जातना मै दिवै है अतिमाम ॥
 धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ सहस गो जो देत विधिसें वर्षगाहि ललाम । रहित आदर
 द्विजनकों बुलवायकै बुधिधाम ॥ हौंहिं गृहमे जासु शत गो देत जो दश गाथ ॥ हौंहिं
 जाके गऊ दश सो देय एक सचाय ॥ ब्रह्मचर्यहि माहि जे जन छद्द होत सुजान । करत
 रक्षा धर्मकी जो विप्रवर मतिमान ॥ गौमती अरु कौशिकीमे करत जौन सनान । तिमिहि
 यमुना सुरशरीमे करत स्नान सुजान ॥ विपासा अरु बाऊद्रामे तिमिहि पंपामाहि । प्रेमसें
 जे जाय कै जन करत स्नान सदाहि ॥ और उत्तम तीर्थ जे हैं भूमिमे अभिराम । सबिधि
 तिनमे स्नान जे जन करत हैं बुधिधाम ॥ जात ते गोलोककों है है न संशय अत्र । दिवै है किमि
 जातना हम जायगे नहि तत्र ॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ उष्णता अरु शीतको है नेक जहँ
 भय नाहि । क्षुधा प्यास न लगति है नहि होत दुख सुख पाहि ॥ राग द्वेष न जहां है अरु जरा
 मरण न होय । शत्रुता अरु मित्रता जहँ परत है नहि जोय ॥ पाप पुण्य न जहा औसो लोक
 विधिको परम । जातना मै दिवै है तहँ कहा लखत सशर्म ॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ करत
 काङ्क्षको न जे जन सङ्ग हैं करि मोह । नेमसें जे करत हैं व्रत करत कबहु न कोह ॥ स्वर्ग
 गतिकों प्राप्त है कै तौन जनअभिराम । बिधाताके लोक बरकों जातहैं बुधिधाम ॥ तहां हम
 जे हैं न यानें जातना तुम मोहि । दिवै है किहिभातिसें मुनि कहा जोहत कोहि ॥ * ॥ गौतम
 उवाच ॥ * ॥ पुण्डरीकंसु कंजकी जहँ होति वेदी चार । जहां गाथो जात है निति सामवेद
 सुढार ॥ जातना मै दिवै है धृतराष्ट्र हेतहँ तोहि । कहा गजकों लेख कै मुसकात मोतन जोहि ॥
 तत अनन्तर जानि गौतम शककों हे तात । कहत भे इमि बैन प्रज्ञाअन मुनि अबदात ॥ लए तुमकों
 जानि हे सुरराज अब हम आम । तुम न मनसा वाकहसों करत अघ मुदधाम ॥ शतक्रतुउवाच ॥
 हम सु निजरनाथ हैं तुम लए हमकों जानि । तुम्है करत प्रणाम हैं हम जोरि दोऊ पानि ॥
 व्याजमे गजहरणके हम सुनी अद्भुत बांत । जो कहौ सो करै अब हम सुनऊँ मुनि अबदात ॥
 गौतम उवाच ॥ * ॥ बर्षदशलै हरि हमारे गज हि राखो अन्त । देऊँ सो तुम कृपा करि कै
 सुनऊँ हे सुरकन्त ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ लखऊँ आवत आपुको यह सुवन बारण परम । चरण
 उपटे रावरेके भूमिमाहि सधर्म ॥ सृष्टि तिनकों चायसें से रक्षो सुखसों पूरि । प्रेम बरख्यो
 जात है नहि तास द्विको भूरि ॥ करऊँ बारण लेऊँ बारण आपनो अभिराम । दया धारण
 कर सु धारण श्रेय मम मतिधाम ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ चहत हैं कल्याण तेरो सदा
 हम सुरराय । पाय बारण आपनो मै भयो परम सचाय ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ कहैं बिन

तुम जानि लीन्हें मोहि मुनि मतिधाम । भयो हों परसन्न तारें मयो मुदने नाम ॥ चलउ तुम
शुभलोककों गज सहित ऋषि अवदात । कहे असें वचन मुनि मां शक मुनु हे तात ॥ ता अनन्तर
करि सु आगे मुनिहिं गज सह पर्भ । सुराधिप सुरलोककों भो जात होय सशर्म ॥ दोहा ॥ * ॥

शांप
दांध

पढिहै जो अख्यान यह मढिहै मुदसों भूरि । जैहैं विधिके लोककों गौतमलौ सुख पूरि ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणशाज्ञानुगामिना श्रीबन्दोजनकाशीबासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि
दानधर्म्ये आह्व कल्पे चतुर्नवतितमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शान्ति अर्द्धसा सत्य अरु बज्ज प्रकारके दांन । अपनी तिथमे तुष्टि अरु दान सुफल सुखवांन ॥
वरणि सुनायो मोहि तुम सुनऊं तात बुधिधाम । पूछतहैं एक हेतु अब दाइऊ तौन तुम आम ॥
तपबलतें तुम और का जानत श्रेष्ठ सुजान । कहऊ अष्ट जो हाथ से बक्ता आपु महान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

जितनेतप तिनमाहि है अनसन तप अभिराम । अनसन तप सम और तप है न कहत बुधिधाम ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह प्रसन्नके माही भूप । सुनऊं एक इतिहास अनूप ॥ विधि औ नृपति भगीरथ पर्भ । तिनका
है सम्वाद सधर्म ॥ अमरलोक गो लोकहि पर्भ । अरु ऋषिलोक उलङ्घि सशर्म ॥ गये भगीरथ
विधिके लोक । देखि ताहि विधि आनद ओक ॥ कहत भए असें वर वैन । सुनऊं युधिष्ठिर प्रज्ञा
अैन ॥ आए कौनभालि तुम भूप । इहिं सुलोकक माहिं अनूप ॥ नर अरु अमर तिमिहिं गन्धर्व ।
किऐं तपस्या बिना अखर्व ॥ आय सकतहै कौज माहिं । मम उत्तम सुलोकके माहिं ॥

॥ * ॥ भगीरथउवाच ॥ * ॥ सुवरणको मुद्रा एक लक्ष । दर्द द्विजनकों सादर स्वत्त ॥ कहे वेदमे
जे व्रत चार । कीन्हें तेमे सविधि उदार ॥ तिनके फलतें मै इहिं लोक । आयो हें नहि सुनु मुद
ओक ॥ होत एकादिनमे मख जौन । कीन्हें तेमै दश मुदभौन ॥ होत पञ्चदिनमे जे यज्ञ । तेज
दश कीन्हें सुनु प्रज्ञ ॥ एकादशदिनमे मख जौन । होत किए एकादश तौन ॥ ज्योतिष्टोम यज्ञ
शत एक । कीन्हें हें हम सहित विवेक ॥ बसिकै सुरसरितठ शत वर्ष । कीन्हें तप हम महत
सहर्ष ॥ तहां लक्षरो सहस सुठार । दीन्ही हम सुनु मोद अगार ॥ औ कन्या दीन्ही अभिराम ।
भूषण परम पिन्हाय ललाम ॥ इन्हें हें फलतें हम माहिं । आए इहिं सुलोकके माहि ॥
अश्व दिए सुन्दर एक लक्ष । अरु गो बीस सहस श्यति स्वत्त ॥ दीन्हीं पुष्कर तीरथ माहिं । विप्र
बुक्ताय विज्ञ हम पांहिं ॥ सुवरणके आभरण पिन्हाय । साठि सहस कन्या छविषाय ॥ विधिवत

प्रा०प० हम दीन्हीं लोकेश । भरे हर्षों परम अशेष ॥ तौन दानद्वयके फल सों न । आए द्रुहिण तुम्हारे
 दा०ध० भौन ॥ गोमल माहिँ सुनऊँ लोकेश । करि सनमान द्विजनके बेश ॥ एक एक द्विजकों हम गाय ।
 दश दश अर्बुद दर्दसचाय ॥ पहिलेँ चार्द जो है गाय । मठ्ठी ताहि कहत बुधराय ॥ दोय कोटि
 हम दीन्हीं तौन । सुनु हे द्रुहिण परम सुखभौन ॥ तौन दान फल सों हम परम । नाहि लख्यो
 तव लोक सशर्म । बाल्हिदेशके बाजी चारु ॥ अंत बर्षके प्रभा अगार ॥ सुवरण भूषण सों अभिराम ।
 भूषित लसैँ चालके नाम ॥ दीन्हे मै सादर एक लक्ष । बायु बेगवारे अतिदक्ष ॥ एक एक नखने
 लोकेश । कोटि कोटिवर मोर सुवेश ॥ वेदवान विप्रणकों दीन्हे । तिनको विधिवत आदर कीन्हे ॥
 तौनऊँ फलसों आए नाहि । ब्रह्मा लोक तुम्हारे माहिँ ॥ श्यामकर्ण बाजी अभिराम । अरु बर
 हरितवर्ण कविधाम ॥ सुवरण माला तिन्हें पिन्हाय । सचह कोटि दिए सुखदाय ॥ सुवरण माल
 विशाल सुदान । तिस्रों भूषित अति बलवान ॥ तिनके दन्त सु उन्नत शुभ । मनु बकमाल धरे है
 अक्ष ॥ तिनके कुम्भनि ऊपर परम । चिन्ह पद्मके लसत सशर्म ॥ जैसे सुन्दर मैगल नाम । सचहको
 टि दिए कविधाम ॥ अरु सुवर्णके रथ रमणीय । तिन्हें देखि मोहित क्वे जीया । सुकता लर लागी
 तिन माहि । इन्द्रके जैसे रथ नाहि ॥ सचह कोटि दिए हम तान । युक्त सु वाजिनसों बल
 भौन ॥ अरु दक्षिणाके सु जितेक । बेदमाहिँ हैं कहे तितेक ॥ बाजपेय दश यज्ञ सुवेश । करि
 दीन्हे हम सब लोकेश ॥ बलसों जोति सर्व महिपाल । राजसूय करि यज्ञ विशाल ॥ भूषण सों
 भूषित अभिराम । मधवा सम विक्रमसों नाम ॥ जैसे भूपति एक हजार । दिए दक्षिणा माहि
 सुदार ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀ ॥ पभभस्लीकन्द ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀

हम दीन्हे तीन शत चार ग्राम । अरु षट् छहार बाजी लक्षाम ॥ सङ्कल्प नीरको भो प्रवाह
 सुर सरित सोतहू तें अवाह ॥ तिहि दानतें सु हम अत्र आय । नहि प्राप्त भए सुनु लोकराय ॥
 सुरसरित ल्यायवेकों महान । हिमवान भूमिधर पै सुदान ॥ हम कियो भूरि तप महत काल ।
 धिरिके सुचित्त चञ्चल विशाल ॥ तिहितेँ ऊँ लोक तव माहिँ आय । हम भए प्राप्त नहिँ लोक
 राय ॥ दिन द्वादशमे मख होत जौन । हम कीन्हे त्रयोदश यज्ञ तौन ॥ बर सहस अष्ट बलके
 उत्तर । सुवरण मढायँ एक एक शृङ्ग ॥ हम दिए द्विजनकों वृषभ चार । आए न तौनहूनेँ उदार ॥
 बर हेम रत्नके निचय उह । हम दीए द्विजनकों बोलि शुद्ध ॥ धनधान्य युक्त अभिराम ग्राम ।
 दीन्हे सहस्र विधिसों सुमाम ॥ अरु अश्वमेध बज्र यज्ञ कीन । तिनमाहिँ दक्षिणा भूरि दोन ॥
 मढवाय हेमसों तरु सुदार । करि भूषित रत्नसों उपार ॥ तिन तरुनको सु योजन प्रमान । विश्व
 रित विपिन अति बर सुदान ॥ बर वेदवान विप्रण बुलाय । विधि सहित तौन दीन्हे सचाय ॥

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

फलतें तौनऊँ दानके सुनु लोकेश सशर्म । आए नहि तव लोकमे निश्चय जानऊँ परम ॥

ज्ञा०प०
 दा०ध०

उनके पापको आचार है अभिराम । सुनऊँ ताते योग्य है आचार कीनो नाम ॥ क्रियासों जे रहित हैं नास्तिक है जन जौन । दुराचारो पातकी चर जौन सुनु बुधिमान ॥ होत है अत्यायु ते जन कहत बुध अवदात । नेकु नहि सन्देह थाये जानु कुन्ती तात ॥ तजत जे मर्यादकों अरु शील होडत जौन । रहत मैथुनमाहि जे रत नित्य दुर्मति भौन ॥ शास्त्रकों अरु गुरूको जो बचन मानत नाहि । होत हैं अस्पायते संग्रथ न याके माहि ॥ नित्य बोलत सत्य है अरु जौन करत न कुद । कबऊँ हिंसा करत जे नहि धरि प्रमादहि उद ॥ करत कबऊँ न असूया जे धरत अद्वा भूरि । आयु तिनकी बढति है निति रहत सुखसों धूरि ॥ दशन सों जे नित्य काटत नखनकों हे तात । धारि दुर्जन ताहि जे जन क्रोधकों सरसात ॥ हृष्टनकों जे तित्य तोरत लोष्ठ फोरत जौन । महत आयुहि तौन प्राप्त न होत है बुधिमान ॥ करत चुगली जौन तिनको शीघ्र होत विनाश । हैं नही सन्देह थाये नेक नृप बुधिराश ॥ रहे निग्रि जब चारि घटिका तब सु आलस त्यागि । धर्मको अरु अर्थको नति करे चिन्तन लागि ॥ प्रात उठिके सान संध्या करे विधिवत पर्म । तिमिहि सायंकाल संध्या करे तात सधर्म ॥ अर्ध उद्यत मारतण्डहि कबऊँ लखिए नाहिं । औ न लखिए मारतण्डहि कबऊँ जलके माहिं ॥ हैंहि जब नभ मध्य गत कबहुँ न लखिए तात । होत जनकों दोष देखें कहत बुध अवदात ॥ किऐँ संध्या बढति आयु सु कृषिनको अभिराम । करै तामें सविधि संध्या माने व्हे बुधधाम ॥ प्रातसंध्या करे जे नहि औ न सायंकाल । कर्म तिन सों शूद्रके करवाइ ए महिपाल ॥ कबऊँ नहि परनारि माही रमण कोजै भूप । धर्म चारिऊँ बर्णको यह कहत प्रज्ञ अनूप ॥ सुनऊँ परतिय मनन जैसे आयु नाशक पर्म । और ऐसे आयु नाशन हेत है न सधर्म ॥ सुनऊँ नृप परनारिके अंगमाहि रोम जितेक । रमत जो परनारि सेवत नरक बर्षति तेक ॥ दन्त धावन के मधेधन देव पूजन जौन । प्रात ए सब कार्य करिए कहत वर बुधिमान ॥ मुत्र बिष्टा देखिए कबहुँ न तात सधर्म । औ उलङ्घनकोजिए नहि कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ अतिहि प्रातःकाल औ नहि अतिहि सायंकाल । औ नही मध्यान्हमे खलिए सु धरणो पाल ॥ शूद्र मणके साथसे औ विजातीके साथ । नमन कबहुँ नाही कोजै सुनऊँ वर नरनाथ ॥ भूपको औ विप्रकों अरु बृद्धजनकों पर्म । औ मजकों दीजिए पव कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ गर्भवतिका मारिकों अरु जौन होय सभार । तिमिहि निबलहि दीजिए पथ दया करि सु अपार ॥ पिप्यलादिक वृत्त जेपे पूजनीय सुजान । कोजि ए तिनको प्रदक्षिण मिलै जंहु नतिमान ॥ अर्ध निग्रि मध्यान्हमे औ दुजो संध्या माहिं । चतुष्पथमे जाइए नहिं सुन्यो बुधजन पाहिं ॥ अन्यको पहिरी उपानह पहिरिए नहि तात । औन ओढोबस्त लीजै कहत बुध अवदात ॥ चरण ऊपर चरणकों कबहुँ न धरि ए भूप । मुत्र बिष्टा किजिए तर हाइने न अनूप ॥ अष्टमी औ अमावस्या पूर्णिमाके माहिं । औ चतुर्दशि माहिं तिथके जाइ ए नहि पाहिं ॥ कबऊँ काङ्गकी न

सुगन्धी कोजिए दुखदाय । औ अनादर कीजिए नहि दुखद बैन सुनाय ॥ आपु सेां जो होय
नीचो बढिये मिहिसेां नाहि ॥ कूरताकों राखिए नहि आपने हियमाहि ॥ कबहुँ काहुँकों न
कहिए तात जैसे बैना सुनें जिनकों होय हियके माहि भूरि अबैन ॥ लगें शायक होत जो है देह
भाहीं घाव । पूरि आवत तौन है ककु दिननमे नरराव ॥ वाक शायक लगेसेां जो घाव होत
महान । कबहुँ पूरत नाहि सो है जानु निजु मतिमान ॥ युद्धमे जो लगत शायक सकत कठि है
तौन । बचन शायक सकत कठि नहि जानु निजु बुधिभौन ॥ प्रज्ञ ताते कहत काहुँसेां न है कटु
बैन । औ न काहुँकों करै परिहास प्रज्ञाचैन ॥ रूप बिनके जौन है अरु हीन अंगके जौन ।
कीजिए अपमान तिनको कबहुँ नहि बुधिभौन ॥ जौन बिद्या हीन है अरु जौन है धनहीन । की
जिए अपमान तिनहुँ को न तात प्रबीन ॥ पुत्रकों अरु शिष्यकों शिष्यार्थ ताडन देय । अन्य और
छटाइए नहि दण्ड करमे स्नेय ॥ प्रात अनुदय माहि उठिके देवको करि ध्यानामात औ पितकों
सु करिए निति प्रणाम सुजांनातिनिहि गुरुकों और जेठे होहि तिनकों भूपानमस्कारसु कीजिए
निति यह सुधर्मः अनूप ॥ बढति है यह धर्म कीन्हें आयु तात सधर्म । है मही सन्देह यामे कहत
प्रज्ञ अभर्म ॥ शास्त्रमाही कही जेतीं बस्तु भक्त नृपाल । तिनहिको निति करिय भक्षण कहत
दक्ष विशाल ॥ बैठि उत्तरदिशा मुख कै शौच करिए तात । मौन क्ये कै दन्तधावन करै निति
अवदात ॥ दृढ़ ढिग औ गुरुके ढिग तिमि बिचक्षण पास । देवपूजा किए बिनहुँ जाइए बुधि
रास ॥ देवपूजा किए बिन नहि जाइए अन्यत्र । होम नित्यहि कीजिए यह धर्म भूप पवित्र ॥
मूत्र और पूरिष करि कै धोइए गिनि पावा तिमिहि औ कहुँ जाइए तौ धोइए नरराय ॥ भोज्य
औ अध्वयम कोजे पदनकां निति धोय । नित्यको यह धर्म कीन्हें रहत सुखसेां भोय ॥ देवताके
अर्थ भोजन विरचिए हे तात । ज्ञान करिके शुद्ध क्येके मनत बुध अवदात ॥ मलिन जो
आदरम ताकों देखिए कबहुँ न । औ निशामे देखिए नहि होति परमायु न ॥ शिरहि उत्तर
बोर करिके शयन कोजे नाहि तिमिहि पश्चिम बोर कै हम सुन्यो बुधजन पाहि ॥ पूर्वदक्षिणबोर
शिरके नित्य कोजे शैन । अतिअंधरे माहि शैन न कीजिए मतिचैन ॥ होहि जौने सदनमाही
शोवती परदार । जाइए नहि शोयवेकों तहा भूप उदार ॥ शोइए कबहुँ न जीरण भग
गृहके माहि । औम तिरकी ओरइए हम सुन्यो बुधजन पाहि ॥ कीजिए कबहुँ न भूपति
नास्तिकनको सङ्ग । सङ्ग कीन्हें होत अपनो धर्मनष्ट उतङ्ग ॥ बैठि आसन पायसेां नहि बैठिए
भूपास । नम क्येके न्हाइए नहि कहत सुबुध विशाल ॥ औ निशाके माहि कबहुँ कीजिए
नहि ज्ञान । ज्ञान करिके अङ्गकों नहि पोछिए मतिमान ॥ बिना कीन्हें ज्ञान चन्दन लाइए
भाह भास । ज्ञान करि कै बस्त्रकों फटकारिए न नृपाल ॥ बस्त्र भोजो राखिए कबहुँ न तनके

आ०प० माहि । ज्ञानके दिन किए पूजा वोलिए हे नाहि ॥ दधता पै चढी माखा पाद तिहिकों पर्मे ।
 दा०ध० गरेत सो खैचिए कबज न तात सधर्म ॥ पेंन्हि ताकों जाइए नहि बाहिरे सुनु तात । परशिए
 नहि पातकीकों कहत बुध अबदात ॥ रजस्रलिका नारिसों कबहु न कहिए बैन । ग्रामके
 नहि निकट बिष्ठा कीजिए मतिचैन ॥ मूत्र बिष्ठा कीजिए नहि कबज जलकेमाहि । खेत
 माहीं अन्नके अरु औ न सुरगृह पाहि ॥ अन्न भोजन करत जल नहि पीजिए चयवार । करिसु
 भोजन धादए मुख तीनवार उदार ॥ पूर्व मुख औ नित्य भोजन कीजिए औ मौना कबहुँ भोजनकी
 न मिन्दा कीजिए बुधिभौन ॥ करिसु भोजन राखिए कहु अन्न भाजनमाहि । बढति जनकी
 आयु है ए किए धर्म सदाहि ॥ पूर्वमुख औ किए भोजन बढति आयु सुभूप । बदन दक्षिणचोर
 करिके किए भोज्य अनूप ॥ होत है यश भूमिकामे चन्दसो अभिराम । बदन पश्चिमचोर
 करि कै किए भोज्य खलाम ॥ धन्य जगमे होत है मति पाय कै अबदाता बदन उत्तरचोर करि कै
 किए भोजन तात ॥ होत है कल्याण प्रापित कहत बुध अभिराम । सुमऊ कुन्तीगन्ध वर अरि
 वृन्दर बुधिधाम ॥ करि सुभोजन परशु शिखिको करि सु मनसों भूप । लाईए जल नाक कामसु
 चक्षुमाहि अनूप ॥ मूर्धमाही तिमिहि जलको परशु कीजै तात । ता अनन्तर देहमे सब
 कीजिए अबदात ॥ अस्ति भस्म अलार जहँ बज्र पयो होय सुजानातहा ठाढो ह्रजिए नहि कहत
 प्रज्ञ महान ॥ अन्यजनके स्नानतें जो बच्यो है कीलाल । कीजिए नहि स्नान तासों कहत बुध
 विशाल ॥ अन्न पथमे चलत कबहुँ खाइए नहि ताता खौखरो औ खाइए नहि कहत बुध अबदात ॥
 मूत्र कीजै भस्मने औ गजगृहमे माहि । औ न ठाढो होय कीजै औ न सुरगृह पाहि ॥ आय भोजन
 करतकों तब धोय करि कै पाय । पोंछिए नहि चरण आले राखिए नरराय ॥ शयन कीजै धोय
 करि कै पोंछि पाय सुखदायु । किए यह विधि नित्य नृपवर बढति है बज्र आयु ॥ खाय कै कहु
 विना धोएँ बदनको अभिराम । विप्र गो अरु अश्विकों जे कुवत नहि बुधिधाम ॥ भानु औ सित
 भानुकों औ नखत वृन्दहि पर्मे । जे न देखत होत ते अल्पायु नाहि सधर्म ॥ वृह आवै पास जब तब
 नम्र औ बुधिधाम । जोरि कर उठि आय सेहै सर्बिधि करि परनाम ॥ हाथ अपने चारु आसनको
 विहाय नरेश । वृहकों बैठाइए यह धर्म सुखदअशेष ॥ कांस्य भाजन भृगुमे करिए न भोजनतात ।
 भृगु आसनपै न कबहुँ बैठिए अबदात ॥ कीजिए भोजन न तनमे राखि कै एकवास । औ न कीजै
 शैन औके नम्र सुनु बुधिरास ॥ औ सुनो उच्छिष्ट मुखऊँ कीजिए नहि शैन । औन शिरको परशिए
 उच्छिष्ट मुख मतिचैन ॥ रहत शिरके सर्व आयय प्राप्त हैं नररायाके शततें खैचिए नहि कहत वर
 बुधराया ॥ औ न कबहुँ घाव दोजै हौ न शिरके माहि ॥ शिरहि अपने पाखि दोउनसों खुजाइय माहि ॥
 औ न पुनिपुनि स्नान कीजै सहितशिर नहिपाखा ॥ किए यह विधिहोति जनकी आयु परम विशाला ॥
 जो खवायो तेज शिरने रह्यो तामे जौन । अङ्गमे लगवाइए नहि तौन सुनु बुधिभौन । जौन

भूजे तिनकों कबहूँ न भक्त तान। होत हैं अल्पायु ते नहि कहत बुध अवदात ॥ बेदकों उच्छिष्ट
मुख कबहूँ न पडिए भूप। औ पढाईये न कबहूँ कहत बुध अनुरूप ॥ बेदकों पडिए न तब जब
धरै वायु महान। औ तहां पडिए न अहं दुर्गन्ध होय महान ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ *
बाणी श्री यमरायकी कही परम अभिराम। यह प्रसङ्गमे कहतहैं सुमऊँ तौन बुधधाम ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

पढंत जे उच्छिष्ट मुख अरु पढावत जन जौनाहोत हैं अल्पायु अरु नहि लहत सन्तति तौना ॥
अनध्यायनमाहँ जे जन पढत अज्ञ सुवेद। बेदकों ते लहत हैं नहि रहत नित्य सखेद ॥ होत हैं
अल्पायु ते यहमाहि संग्रथ नाहि। कही बाणी धरमकी हम सुनी बुधजन पाहि ॥ चण्डलाकन्द ॥
भानु अधि गाय विप्र सामुहें अज्ञान जौन। मुच औ पुरोष कर्म होत हैं वतायु तौन ॥ जेन
कर्त ते सुप्राप्त होत आयुकों महान। नित्य ते अनन्दकों लहैं नरिन्द्र हे सुजान ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
विष्ठा मुचहि करत जे उत्तरमुख दिनमाहिं। दक्षिणमुख निशिमाहि ते हैं अल्पायु नाहिं ॥

॥ * ॥ तोमरकन्द ॥ * ॥

हठ कीजिए गुरु साथ। कबहूँ न हे नरनाथ ॥ अब होय गुरु सह क्रुद्ध। तब नस न्हे अति
उद्ध ॥ करि कै बिनै परि पाय। करिए प्रसन्न सचाय ॥ गुरुकी सुनिन्दा जौन। अन करत दुर्मति
भौन ॥ निहचै हि तिनकी साथ। नशि जाति है नरराय ॥ * ॥ रोलाकन्द ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ *
अरु धेयवे काज लयो भोजनमे जो जल। दूरि डारिए बच्यो होय जिहिं माहि जितो जल ॥
भोजन करि कै जाय दूरि कहु बज्जल झै बर। बदन कीजिए शुद्ध नित्य सुनु भूप सुमतिधर ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दूरि कीजिए धामतें मूच जाय कै तात। धाममाहिं नहिं कीजिए भगत सुबुध अवदात ॥
कबहूँ न धारण कीजिए रक्त पुष्पकी माल। शुक्लपुष्पकी मालकों धरिए सदा नृपाल ॥
रक्त सुमन जे विपिनके औ नीरज है जौन। ते तौ धारण कीजिए सदा तात बुधिभौन ॥
कचमारिहुके सुमनकी माला दूषित नहिं। सुन्यो तात सिद्धान्त यह हम बर बुधजन पाहिं ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जो जन करि कै ज्ञान आधे पूजा समयमे। धरमे तास सुजान अन्दन चार लगाइए ॥ ॐ ॐ

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

ओढिबेके बल्ल तिनकों पेंन्हिए नहिं तात। ओढिए नहिं पेंन्हिबेके बल्लको अवदात ॥ दश्री
जौने बसनमाहें होय नाहीं भूप। कीजिए नहिं ताहि धारण कहत प्रज्ञ अनूप ॥ देब पूजा सम
सके अरु शयनके बरवास। तिमिहि बाहिर जायबेके बसन नृप बुधिरास ॥ पृथक पृथक सुराखिए
अतिमान भगत हमेश। राखिए नहिं कार्य सबमे एक बसन नरेश ॥ रहै दिनभर जंझाचारा भयो

शा०प०
दा०ध०

करि कै ज्ञानाब्रह्मचारी होय औ सब पर्वमाहिं सुजाना॥एक भाजनमाहिं जन है चारि मिलि कै तात । कीजिए कबहुँ न भोजन भनत बुध अवदात ॥ गऊ औ मञ्जारको सूँघों सु भोजन जौन । तिमिहिं सूँघों आनको करिए न भोजन तौन ॥ लवण करमे खाइए नहिं औ न निशिके माह । शक्तु दधिसँग खाइए कबहुँ न हे नरनाह ॥ तौन भोजन कीजिए नहिं कढे जामे बाल । मांस सूखे औ न बासी खाइये महिपाल ॥ मांस गाय मयूरको है नित्य बर्जित तात । खाइए कबहुँ न ताते भनत बुध बिख्यात॥भूमिमे धरि कीजिए कबहुँ न भोजन पर्माऔ सु भोजन शब्दवत कोजै न तात सधर्म ॥ पंक्तिमाहीं सबनकों दोजै सु भोज्य समान । दोजिए नाहिं कबहुँ न्यूनाधिक्य तप्त सुजाना॥ भक्ष्य जेती वस्तु तिनकों भक्षि करिके श्रेय । कबहुँ काहकों न दोजै भनत सुबुध सुबेश ॥ उदुम्बर सल्लशाक पिप्लव बटनके फल जौन । चहत जे कल्याण ते नहिं खात हैं बुधिभौन ॥ करि सु भोजन आश्विन करि कहत बुध अवदात । चरण दक्षिणके अंगुष्ठ हि धोय उठिए तात ॥ ता अमन्तर शुद्ध नै कै पाणियों शिर परि । परस करिए अपिको नै खरो सोहे दर्भि ॥ किए यह विधि रहत मोदित पचत अन्न सुजाना प्रसशा है होति जनकी ज्ञातिमाहिं महान॥ज्ञातिको जो बृद्ध अपनी औ दरिद्री निचाइन्हे राखे गेहमाहीं होत गेह पबिच॥ जौन राखत धन्य तेहैं बढति तिनकी आयु । कडति बाधा गेहने सब रहत आनन्द छाया॥सारक शुक औ परेवा राखिए म्हमाहिं।वृद्धि कारक सर्व ए है अत्र संशय नाहि ॥ मृध्र उदोपक तथा अलि तिमिहिं भूप कपोत । सर्व आए धाममे ए करत अशुभ उदोत । कीजिए निन्दा न कबहुँ महतजनको तात । होडि कपटहिं प्रसशा निति कीजिए अवदात ॥ मृपतिकी अरु बैद्यकी अरु वृद्धकी तिय भूप । विप्रकी अरु बन्धुकी अरु मृत्यु नारी अनूपा । बालकी औ शरणमे जो होय ताका दास । नारि सम्बन्धीनकी औ है अगम्या चार॥ गमम इनमे करत जे नहिं महत तिनकी आयु । होति निश्चय कहत हैं बुध सुनऊ बर नररायु ॥ शास्त्र मतसों शुद्ध जो बर बने होय अगार । बास तामे कीजिए बुधिरासि भनत सुदार ॥ शयन औ अध्ययन संध्यामाहिं कीजै नाहिं औ न भोजन कीजिए हम सुन्यो बुधजन पाँहि॥ किए यह विधि होति जनकी आयु महत सुजान । नित्य यामे रहत रत हैं परम प्रज्ञावान ॥ धोइए नाहिं केय कबहुँ करि सु भोजन तात । औ न कीजै आह निशिमे भनत बुध बिख्यात ॥ वज्रत भोजन कीजिए नहिं कबहुँ रज्जुमाहिं । बिहङ्गनकों मारिए महिपाल कबहुँ नाहिं॥ वैन अप्रिय भूप कहिए कबहुँ काहकों न । औ न काहको सशोकै कीजिए बुधिभौन ॥ कीजिए निन्दा न काहकी परोस सुजान । घटति जनकी आयु ए सब कीएते नतिभौन ॥ बतितसों नहिं बोलिए कबहुँ न हे महिपाल । दर्श पर्शऊ कीजिए नहिं कहत प्रज्ञ विद्याल ॥ बतितको संसर्गसे हे आयुधर्ता परम । है नही सन्देह यामे सुनऊ तात सधर्म ॥ किएते दिव्य मोहि मैयुन होत जन अल्पायु । तिमिहिं कन्या नमनते जनहोतोहे अल्पायु ॥ रमण कुलटा माहि कीन्हे होति आयुष चीन । औ किएते ज्ञान पुनि पुनि कहत परम प्रवीन ॥ रजोदर्शन

भय विन नहिं जाइए तिय पास । हेतु दीरघ आयुको यह भएत बर बुधिरास ॥ होय जाको जन्म
 भो कुलमाहिं उत्तम पर्न । होहि जाके अरु सुन्दर सर्व तात सधर्म ॥ होय जाको बरोबरि बध
 तिहिं सु कन्या साथ । व्याह कीबो योग्यहै सुनु धर्मधर नरनाथ ॥ बंश राखन हेत करि उत्पन्न पुत्र
 सुजान । सबिधिताहि पटायकै करि भूरि बर मतिमान ॥ परम उत्तम बंश माही तास कीजे
 व्याह । राखिए निति धर्ममाहि प्रवृत्त हे नरनाह ॥ पुत्रिका उत्पन्न करिकै सहित विधि अभि
 राम । सुकुलमे उत्पन्न शुचि धोमान परमाधाम ॥ दीजिए जैसे सु बरको हर्ष सहित विशाल ।
 धर्मधर बर कीर्तिकर बर प्रज्ञ सुनु महिपाल ॥ सबिधि सह शिरस्त्रान करिकै विमल तन अभिरामा
 देव कारज पितर कारज कीजिए बुधिधाम ॥ होय जानें नखत माहीं जन्म सुनु हे तात । आह
 तिहिमे कीजिए नहिं भनत बुध विख्यात ॥ पूरवा अरु उत्तरामे आह कीजै माहिं । तिमिहिआहै
 कीजिए नहि नखत छंतिका माहि ॥ और योतिष माहि बर्जितहैं जितेक नक्षत्र । आह तिनमे
 कीजिए नहि भएत प्रज्ञ पवित्र ॥ पूर्वमुख औ उदीची मुख जे करावत सौर । बढति तिनकी
 आयुहै बर भएत बुधशिरमौर ॥ होय जौने बंशमे रुज मृगो कुछ महान । व्याह तौने
 बंशमे नहि कीजिए मतिमान ॥ चारु लक्षण जिते तिनसो होय युक्ता जौन । दर्शनीया प्र
 ज्ञता औ होय जो बुधिमान ॥ होय जाने कुटिलता नहिं नेकळ नरनाथ । व्याह कीजै चाहि
 औसो कन्यकाके साथ ॥ ईरषा कबहूँ न कीजै नारिमे नृप प्रज्ञ । हेतुहै अल्पायुको यह कहत बर
 धरमज्ञ ॥ उदयमाहीं भानुके अरु दिवस माही सैनाकिए तें जन होत हैं अल्पायु नृप मतिअन ॥
 औ किए उच्छिष्ट मुखमिश्रि माहि शयन सुजान । तिमिहिं संध्यामे किए अल्पायु होत अजान ॥
 स्नान भोजन पठन संध्या माहिं कांजै नाहि । औ न कबहूँ गमन कीजै पर सु नारी माहिं ॥ करत
 जे ते होतहैं अल्पायु हे महिपाल । है नही सन्देह यामे भएत विज्ञ विशाल ॥ सौरको करषाय
 करिकै तबहि कीजै स्नान । घटतिहै आयुष्य कीन्हें देर हे मतिमान ॥ द्विजनकी अरु देवतनकी
 तिमिहिं गुरुको पर्न । स्नान करिकै किए पूजा बढति आयु सधर्म ॥ निमंत्रण विन जाइए नृप
 बिबाहादिक नै न । निमंत्रणहूँ बिना मलमे जाइए बुधिअन ॥ आयु एकहि करि सु सहस आइ
 ए म बिदेश । औ निशामे चालिए नहिं बिना सङ्ग नरेण ॥ मातको अरु पिताकी अरु गुरुनको
 अवदाताहितज औ अनहितज शासन मानिए हे तात ॥ वेद औ धनुवेदप्रदिए यत्रसें अभिरामा
 तिमिहिं अश्रादिकन पै चठिए सु नृप बुधिधाम ॥ नीति शास्त्रहि तथा बर गन्धर्व शास्त्रहि पर्न ।
 अन्ध शास्त्रहि तिमिहिं पठिए बल सहित सधर्म ॥ शास्त्रमे हैं कही जेती कलातेती सर्व । जानिए

शा०४०
दा०४०

शा०प०
दा०ध०

नर बिज्ज जनसों सु नतिमान अलबे ॥ नित्य सुनिए घोपसों इतिहास सचित पुराणानोतिसों निति
प्रजा पालन कीजिय नतिमान ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

रजसला अब होय तब जादए न तिय पास । दिन चतुर्थमे जाय जब करै ज्ञान सखसास ॥
रमे सु पँचई रातिमे तियके सङ्ग सुनु भूप । निश्चय पुत्री होतिहै भतिबर भएत अनूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

छटई निशिके माहि रमे नारिमे होत सुत । यामे संशय माहि निश्चय करिके कहतहैं ॥

॥ * ॥ अर्धचरणादोहा ॥ * ॥

इनिहीं षोडश दिवसलौं रमे नारिमे भूप । समदिनमे सुत होत विषममे पुत्री होति अनूप ॥

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

सबवेदनमे श्रेष्ठहै आचारहि नररायु । होत धर्म आचारतें बढति धर्मतें आयु ॥

कह्यो विभाताको महा यह आख्यान सुजान । पढ़ें सुनैं याको मिलै यम अरु आयु महान ॥
स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वस्तिज्ञानामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजगेकुसुमापुत्रगोपीनाथस्य शिष्येण महिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म उत्तमानुभासने आयुरास्थाने षण्णवतितमोख्याय ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मानै किमि सुक निष्ठकों जेष्ठ बन्धु नतिदान । औ कनिष्ठ किमि जेष्ठकों मानै कहऊ सुजान ॥

॥ ॐ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॐ ॥

जेष्ठसु बन्धु कनिष्ठको नितिहीं करै सहाय । आज्ञामे निति जेष्ठको रहै कनिष्ठ सहाय ॥

चाहै भलौ कनिष्ठको जेष्ठ बन्धु जौनाहि । पाप लोककों जाय तौ यामे संशय नाहि ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

भरै पिता तब जेष्ठ बन्धुकों मानै पिता समान । रहै सदाही आश्रित श्रेिकै बन्धु कनिष्ठ सुजान ॥

तिनिहीं जेष्ठ बन्धुकी तियकां जानै मात समान । औ जेष्ठा भगनीकों मानै बन्धु कनिष्ठ सुजान ॥

॥ ॐ ॥ सोरठा ॥ ॐ ॥

कियो प्रभ तुम जौन ताको उत्तर हम दयो । सुनऊँ तात बुधिभौन अब आगे का पूछिहौ ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ इच्छा उपवासनकी पर्भ । वर्षे चारिहू करत सधर्म ॥ तिनिही

कोच्छ करतह तात । तास हेतु नहि जान्यो जात ॥ यह हम सुन्यो बुधनसों दस । नेम सु उपवास

नको लस ॥ करै विप्र सचियहि सप्रीति । और न कोऊ करै सनीति ॥ याको कहिए मोकों

हेत । आपुहि कहिबे योग्य सचेत ॥ औ उपवासनको फल जौन । तानऊँ कहौ तात बुधि भाना

जे उपवास करत अवदात । गतिकों कौन तौन जन जात ॥ कौन धर्म कीन्हें अभिराम । जम छूटै
अधर्मसों नाम ॥ औ कज कान कर्मसों परम । मिलै स्वर्गने धाम सशर्म ॥ जे जन करत सविधि
उपवास । करै दाम का ते बुधिराश ॥ * ॥ वैश्यायनउवाच ॥ * ॥ सुनें युधिष्ठिरके ए वैन ।
कहत भए भीषम मतिचैन ॥ ॐ ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ ॐ ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
सुन्यो जौन हम अष्ट मुण उपवासनके माहिं । सुनऊँ तौन हम कहतहैं भूप तुम्हारे पाहिं ॥
पूछ्यो जो यह प्रश्नहै हमसों तुम अवदातासोद अग्निरस विप्रकों पूछ्यो हो हम तात ॥
सुनिकै अश्विबर अग्निरस मम सुप्रश्नकों परम । कहत भए उपवासके फलको तात सधर्म ॥

॥ * ॥ अग्निराउवाच ॥ * ॥

एक रात्रि द्वै रात्रिको तीन रात्रिकों परम । ब्राह्मण औ सची करै बर उपवास सशर्म ॥
इन उपवासनकों करै वैश्य शूद्र जौ भूप । मिलै न कछु फल अचलहै यह सिद्धान्त अनूप ॥
तिथि सु पञ्चमी षष्ठीमे औ पूरणमासो माहिं एक बेर भोजन करै होत दरिद्री नाहिं ॥
समा मिलति सन्ति मिलति होत रूप अभिरामायामे हे संशय नहीं सुनऊँ भूप बुधिधाम ॥
वैश्य शूद्र जौ यज्ञकी इच्छा करै नरेश । तौ कुलवांन बुलाय बर सादर विप्र सुवेश ॥
तिन्हें देय भोजन सविधि खरो होयकौ पाहिं । दृष्टपत्नकी पञ्चमी षष्ठी अष्टमि माहिं ॥
यज्ञ पक्षीहै वैश्यको तिनिहिं शूद्रको परम । व्याधि कढे बीरजवढे कोन्हें याहि सधर्म ॥

॥ * ॥ चञ्चलाष्टन्द ॥ * ॥

मार्गशीर्ष मास माहि विप्र दृष्टकों बुलायादेय भोज्य दक्षिणा समेत कौ विदा सचाय ॥ नित्य
एक बेर भोज्य जो करै सुनो सुजांन । तास व्याधि पापको विनाश होतहै महान ॥ सर्व मोदको
उदोत होत मेह माहिं भूप ॥ होतिहै सष्टाई प्राप्त कीर्ति भूमिमे अनूप ॥ पौष माहि एक बेर भोज्य
जे करै सुबुद्ध होत ते सकीर्ति भूतिमान रूप गांन शुद्ध ॥ एक बेर भोज्य माघ माहि जो करै सचेत ॥
हाथ भूतिमान बंशमाहिं सो महत्व लेत ॥ ॐ * ॐ * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ * ॐ * ॐ *
एक बेर भोजन करत फाल्गुणमे जन जौनताके वशमे होहि तिय दृष्ट तिय बल्लभ भौन ॥

॥ * ॥ जयकरीष्टन्द ॥ * ॥

चैत्र माहि भोजन एकवार । करै जौन जन सुनति अगार ॥ बज धनवांन बंशने तौन । लेत
जन्महैं सुनु बुधिभौन ॥ औ वैशाखउ मँही भूप । किएँ एक बर भोज्य अनूप ॥ होऊ मारि
बा नर नरनाह । अष्टहि होत श्रातिके माह ॥ ज्येष्ठ माशमे भूप सुठार । कीन्हें भोजन एक
वार ॥ मिलत अतुल ऐश्वर्य महान । होऊ मारि बा नर मतिमान ॥ आषाढउ मे जो जन एक ।
वार करै भोजन सविवेक ॥ लहै पुत्र बज धन भूरि । रहै सदा आनदसों पूरि ॥ आषणहमे
जो एकवार । भोजन करै सु बुद्धिअगार ॥ अर तीर्थनमे करै सनाम । वढे बंश ताको मतिमान ॥

दिनके अष्टमभागमें एकवर्षला नेम । गृहि भोजन जो करत गोमखफल लहत सत्तम ॥

जाने सारस हंस वर लागे परम अनूप । तिहि विमान पै बैठि सो जात स्वर्गको भूप ॥

वर्ष सहस्र पचाश्रलौ स्वर्गमाहि करि वास । पावत है आनन्दको सुनऊ तात बुधिरास ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

करत जौ न जन भोजनको हैं मासमाहि द्वैवार । अमावास्या पुरणमासी मांही सुमति अगार ॥

अनशन व्रत षटमासको ताको जो फल गर्म । ताको ते जन होत हैं प्रापत सुनऊ सधर्म ॥

॥ ॐ ॥ चरणादोहा ॥ ॐ ॥

षाट्सहस्र सम्बत्सरलौ सो बसत स्वर्गके माहि करि कै भाव अनेकनि नाचति रम्भादिक तिहिपाहि ॥

एकवर्षलौ मास मासमे जो जन जल एकवार।पोवत सो है लहत विश्वजित मखको सुफल उदार ॥

॥ * ॥ हंसादोहा ॥ * ॥

सिंह व्याघ्रसों युक्त वर असौ जौन विमान । स्वर्गलोकको जात है तापै चढि मतिमान ॥

वर्ष सु सत्तरिसहस्रलौ स्वर्गमाहि करि वास । पावत मोद महानको सुनऊ तात बुधिरास ॥

अनशन व्रत कोजौ सुविधि आनदकर अवदात।सो विधि तुमको कहत हैं सुनऊ तौन तुम तात ॥

॥ ॐ ॥ रामगीतीकन्द ॥ ॐ ॥

व्याधिसों जे रहित हैं अरु जौन आरत माहि । ते किए अनशन हि मखफल लहत पद पद

माहि ॥ हंस युक्त विमान पै चढि स्वर्गमे ही जाय । करत है एकलक्ष बत्सर तहां बास सचाय ॥

असरनको चारु कन्या रहति ताके पांछि । राखतो है ताहि मोदित सदा कौतुक मांछि ॥ व्याधि

घुत औ आरतऊ जौ अनशनहि व्रत परीकरैं तौ आनन्दको अति हैंहि प्राप्त सधर्म ॥ हंससहस्रन

लगे जाने प्रभामान विमान । बैठि तामे स्वर्गको सो जात है मतिमान ॥ लक्षबत्सर स्वर्गमे करि

वास वर बुधिरास । करत सुन्दरि तियन संग सुबिलास सहित ऊलास ॥ सुव्रत अनशन माहि

जाकी देह छूटति तात । भानुकीसी पाय कौ सो प्रभा चारु विभात ॥ जडित मणि मुक्तानसों

छविमान खच्छ विमान । बैठि तामे स्वर्गको सो जात है मतिमान ॥ रोम जेते-देहमाही वर्षसहस्र

तितेक।वसत है सुरलोकमाही सुनऊ नृप सविवेक ॥ श्रेष्ठ लाभ सुधर्मते नहि और है मतिमान।

औ नही है वेदते नृप श्रेष्ठ शाल्ल सुजान।मात सम नहि और गुरु है श्रेष्ठ सुखद विशाला।तिर्माहि

अनशन सुव्रतसम तप और नहि महिपाल ॥ विप्र सम नहि और पावन दुःखलोकममाहि ।

करत जे उपवास हैं यहुंमाहि संशय नाहि ॥ देवतन उपवासहीसों लक्ष्यो है सुरलोक । सिद्धि

साहि उपवासहीसों भए सुवृषि अशोक ॥ कियो भोजन वार एक दिनमाहि विश्वामित्र ।

सहस्र एक सुरवर्षलो गृहि क्षमा भूरि पवित्र ॥ भए ताते विप्रताको प्राप्त अति अभिराम । कश्यो

शा०प० हमसों अङ्गिरस ऋषि परम प्रज्ञाधान ॥ अथन भृगु धर्मदक्षि गौतम ऋषि वशिष्ठ सुजान । सबन
दा०ध० इन उपवासहीतों लक्ष्यो दिव मुदवान ॥ कछ्यो यह उपवासके आख्यान क्रमसँ परम ॥ कृपा
करि कै अङ्गिरस मुनि सुनऊँ तात सधर्म ॥ *ॐ*ॐ*ॐ ॥ दोहा ॥ *ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*
पढि है याकों जौन अरु सुनि है याको जौन । कूटि तौन कर्ममधनसों करिहै दिवको गौन ॥
सहि है कीरनि भूमिमे अति अभिराम महान । सब प्रसिणको जानि है राष्ट्र सुनऊँ बुधिधान ॥
स्वस्ति श्रीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाश्री
वासिष्ठुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मण्डिदेवेन काबना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे श्रान्तिपर्वणि दानधर्मे उपवासविधौ सप्तमवतितमोऽध्यायः ॥ *ॐ*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे सबिधि उपवास अरु कहे सबिधि सब यज्ञ । अरु यज्ञनके जे सुगुण तेज कहे सुप्रज्ञ ॥
धन बिन होत न यज्ञ है याने तात प्रवीन । यज्ञ नही करि सकत हैं जे जन हैं धनहीन ॥
धनहीननकों जौन विधि प्राप्त यज्ञ फल होय । कहेऊँ तात तुम तौन विधि ज्ञान नेमसों जोय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अब जो होय समान मखफलको तौनऊँ कहौ । सुनऊँ तात मतिमान धर्मनेह सन्देह दर ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ लहत हैं धनहीन मखफल किए ते उपवास । यज्ञके सम उपास
ही है सुनऊँ मृप बुधिरास ॥ करत भोजन जौन जन चयवर्षलौं एकवार । धर्मपत्नी माहि जो रत
रहै सुमति अगार ॥ यज्ञ अग्निष्टोमको फल लहत है सो तात । कही हमकों यह सुविधि ऋषि
अङ्गिरा अबदात ॥ चमा धारें सत्य बोझत नित्य जे जन परम । दान औ उपवासमे रत रहत जौन
सधर्म ॥ हंस जाने लने सैसो शुभ चारु बिमान । बैठि तामे स्वर्गको सो जात न्हे मुदवान ॥ वर्ष
द्वैघतकोटिलौं दिवमाहि करि कै वास । रमत है अश्वरनके संग भरो भूरि ऊलास ॥ दूसरे
दिन करत भोजन जौन जन एकवार । वर्षलौं एक औ करै निति होम सुमतिअगार ॥ सोउ
अग्निष्टोम मखको लहत फल अभिराम । अङ्गिरा ऋषि कछ्यो हसको सुनो दर बुधिधान ॥
हंस सारस युक्त सहिकै प्रभामान बिमान । बैठि तामे जाय दिवमे लहत मोद महान ॥ वर्षलौं
एक तीसरेदिन करत भोजन जौन । करै होम सु नित्य आलस छोडि कै बुधिभान ॥ लहत
सो अतिराचिमखको सुफल परम सुजान । युक्त हंस मयूरसों अभिराम पाय बिमान ॥
बैठि तामे इन्द्रलौं लसि प्रभासों अभिराम । जात सप्त ऋषोणके वर लोकमाहि लखान ॥
वास कै त्रयपद्म बस्तर तहाँ आनद लेत । अश्वरनके साथ रनि कै सुनऊँ बुद्धिनिकेत ॥ चतुर्थे
दिन जौन भोजन करत है हे ताता वर्षलौं एक करै होमाहि नेमसों अबदाता ॥ वाजपेय सु यज्ञको

फल लहत तौन सधर्मः। वैठि चार विमान अपर अश्वरन सह पर्न ॥ जाय सुरपतिलोकमाही देव
तनके साथ । रहत हैं चौपद्म बत्सर हर्ष सह नरनाथ ॥ जौन पञ्चमदिवसमाहीं वर्षलौं एकवार ।
करै भोजन होमकों निति करै सुमतिअगार ॥ होत द्वादशदिवसमाहीं यज्ञ जो अवदात ।
होत ताके फलहि प्रायत तौन जन देवतात ॥ भानुकोसो भास जामे हंसयुक्त विमान। वैठि तापै
जात हैसुरलोककों मुदवान ॥ पद्म इकावन सुबत्सर तथा करि कै बासालहत है अरु महत आनन्द
सुनऊं नृप बुधिराश ॥ करत भोजन दिवस छठए वर्षलौं जन जौन । औ करै निति होम धिरि कै
धित्तकों बुधिभौन ॥ लहत है गोमेधको फल तौन जन महिपाल । है नहीं सन्देह यामे कहत
विश्व विशाल ॥ हंस औ बरहीनसों धृत हेमको सु विमान । अघिकीसी प्रभा जामे सुनऊ तात
सुजांन ॥ ब्रह्म लोकहि जात है सो वैठि ताके माहि।लहत है आनन्द अतिही अश्वरनके पाहि॥
सहस्र कोटि सु पद्म अष्टादश पताका दोष । रोचके शतधर्ममाहीं रोम जेते होय ॥ रहत तेते
वर्ष सो है ब्रह्मलोकै माहि । सुन्येः यह फल भूप हस है अङ्गिरस मुनि पाहि॥ दिवस सप्तम माहि
भोजन करै जो एकवर्ष । करै होमहि नित्य तजि कै क्रोध होय सहर्ष ॥ ब्रह्मचर्य्य हि धरै विद्या करै
गुण कबौ ना भास मदिरा कबळ भक्षण करै नहि बुधिभौना।होय जौनें यज्ञमाहीं महत सुवर्णन
दांन । लहत हैं तिहि यज्ञको फल तौन जन मतिमान।मरुतके अरु इन्द्रके सो लोकमाहीं जाया
रहत है ब्रह्मवर्षलौं सहस्र वर्ष सो नरराय ॥ परमसुन्दरि देवकन्या पूजतो हैं ताहिं । करति
मोदित राखिबेकों भाव ते बळघाहि ॥ दिवस अष्टम माहि भोजन करै जो जन तात ।वर्षलौं एक
करै होमहि नेमसों अवदात ॥ पौंडरीक सु यज्ञकोफल लहत सो अभिराम । है नहीं सन्देह
यामे भणत मतिबर नाम ॥ पद्मवर्ष विमानको लहि जाय दिवके माहि । लहत है बळ नारिसो
यहमाहि संगथ माहि ॥ करत जो जन नवम वासरमाहि भोजन भूप । वर्षलौं एक करै होमहि
धरै धैर्य्यअनूप ॥ अश्वमेध सहस्रको फल लहत सो जन दत्त । पुण्डरीक सु कमल कीसी प्रभा
जामे खल ॥ व्योमजान सु पाय औसो सुनऊ भूप उदार । वैठि तामे जाय दिवमे लहत मोद
अपार ॥ कल्प एक औ वर्ष अष्टादशसहस्र नरेय । शत सहस्र सु कोटि औ सो बसत तत्र सु बेया॥
करत जो जन दशमदिनके माहि भोजन तात । वर्षलौं एक करै होमहि नेम गहि अवदात ॥
अश्वमेध सहस्रको फल लहत तौन सुजांन । है नहीं संदेह यामे भणत विश्व महान ॥ खगोलर
मोतीनकी जिहिं माहिं अति अभिराम । जरे होरा चार जामे भरे परमा नाम ॥ लने अनगिन
खम्ब जामे मणिनके अविमान । कोकनदके वर्ष सो है परम परमा वान ॥ हंस सारस वंश जामे
करै नाद अनूर । पाय औसो व्योमजान हि वैठि तामे भूप ॥ जाय कै सुरलोक माही रहत है बळ
फाल । अश्वरनके साथ रनि कै लहत मोद विशाल ॥ वर्ष लौं एक ग्यारहें दिन करत भोजन

शा०प०
दा०ध०

आ०प० जौन । छोडि आलस नित्य होमहि करै सुनु बुधिभौन ॥ लखै नहिं परनारि औ बोलै न मिथ्या
 दा०ध० वन । देय काङ्गजीवकों कबहुँ न भूप अचैन ॥ पिताको अरु मातको उद्धार कोवे काज । महा
 देव सु महाबलको प्रीति सहित दराज ॥ करै दरशन जाय करि कैतौन जन हे तात । अश्वमेध
 सहस्रको फल लहत है अबदात ॥ विधाताको लहत पावन महत चारु विमान । बैठि तामे जात
 दिवकों भरो मोद महान ॥ मिलति हैं तहं हेमवर्णा ताहि सुन्दरि दार । करत तिनके साथ
 माही नित्य सुमुद बिहार ॥ दश हजार सु कोटि औ शतकोटि दशशत वर्ष । करत है तहं बास
 सो बुधिरास तात सहर्ष ॥ नित्य शङ्कर जात ताको देखिवेके काज । अङ्गिरस मुनि कह्यो हमकों
 सुनऊँ बर नरराज ॥ करत द्वादशदिवसमे जन जौन भोजन तात । वर्षलौं एक करै होमहि
 नेम गहि अबदात ॥ लहत सो सब यज्ञको फल महत सुनु महिपाल । चारु जामे जरी मणि औ
 भरो मुकता माल ॥ हंस बरही बंग जामै करै शब्द सचैन । ध्यानजान सु पाय औसो सुनुऊँ नृप
 बुधिअैन ॥ बैठि तामे भानुवारे लोकमाँही जायातहां करिकै बास सो वज्रकाल लौं सुख पाया ।
 लहत है पुनि ब्रह्म लोकहि महत मोद निकेता है न यामे नेक संशय कह्यो सु मुनि सचेता ॥ त्रयो
 दश दिनमाहिं भोजन करत जो एक बार । वर्षलौं निति करै होम हि सहित नेम उदार ॥ देव
 मखको महत सो फल लहत है अभिराम । अग्निको सो तेज तनमे होत हैं अतिमामा ॥ लगी मुक
 तामाल औ मणिजाल तामे चारु । देव कन्या परम धन्या भरी रूप अपारु ॥ करति जामे गान
 औसो पाय कै सु विमान । बैठि तामे जात है सुरलोकमाहिं सुजाँन ॥ शंकु एक औ पताका
 द्वै करुप एक अरु दत्त । कोटि औ एकपद्मवत्सर बसत सो तहं दत्त ॥ करत ताकं सामुहं हैं गान
 निति गम्ब ॥ देवकन्या देति ताको नित्य मोद अलर्ब ॥ चतुर्दश दिनमाहिं भोजन करत जो एक
 बार । वर्षलौं निति करै होमहि गहि सु नेम सुदार ॥ देवकन्या लसति जामे परम सुन्दरि भूप ।
 हंस सारस जूह कूजत भरे मोद अनूप ॥ ध्यानजान सु पाय औसो बैठि तामे परम । देवकन्याके सु
 गृहमे जात तौन सशर्मा ॥ चारु बालूकण जिते है सुरशरीके माँहीहिते बत्सर रहत सो है देवकन्या
 पाहिं ॥ पक्ष जब गत् होय तब जो करै भोजन भूप । वर्षलौं एक करै होमहि नितिसनेम अनूप ॥
 राजसूय सु यज्ञको फल लहत सो अभिराम । है न यामे नेक संशय सुनऊँ नृप बुधिधाम ॥
 चारु एकस्रग्म जामे चारिद्वार सुदार । सप्तषण अभिराम तामे लगी सुमणि अपार ॥ सुरै सर
 मोतीनकी अति प्रभामै नरराय ॥ धजा जामे लगीं सहसन जुँगी ऋबिसो छाया ॥ प्रभा जामे दामि
 नीकी लसति परम अमृपा ॥ ध्यानजान सु पाय औसो बैठि तामे भूप ॥ जात है सुरलोककों अबदात
 सो जन परम । सहस्र युगलौं रहत है तहं महंत प्रज्ञ सशर्म ॥ करत धोडस दिवसमाहीं जौन
 भोजन एक । वर्षलौं एक करै होमहि नित्य सहित विवेक ॥ चन्द्रकन्याके सु गृहमे करत सो
 है बास । जहां इच्छा होय सो तहं जात सहित ऊँसास ॥ प्रभावारी चारु नारी नित्य पूजति

ताहि । नित्य राखति मुदित ते बड भाव करिके चाहि ॥ पद्मशत औ बिधाताके बर्धशत लो
 तव । बसतहे सो सुनऊ भूपति है न संशय अब ॥ सप्तदश दिनमाहिं भोजन करत जो एकवार ।
 बर्षलौ निति करै होमाहि सहित नेम उदार ॥ बरुणके औ चन्द्रमाके लोकमाहीं तौन । प्राप्त
 ष्टैके जातहे पुनि रुद्रके बुधिभौन ॥ तिमिहिं मारुत शुक्रवारे लोकमाहीं जाय । जातहे पुनि
 ब्रह्मलोकै माहि सो नरराय ॥ तहां भूषण सहित कन्या इन्द्रकी अभिराम । राखतीहे ताहि
 मोदित नित्य बर बुधिधाम ॥ चलत जबलौ गणमाहीं चन्द्रमा औ भान । रहत तबलौ ब्रह्म
 लोकै माहि सो मतिमान ॥ अठारहदिनमाहिं जो जन करत भोजन तात । बर्षलौ एक करै
 होमाहि नेम गहि अबदात ॥ देवकन्या चढी जापै महीं सुषमा पर्म । चलत पीछे तास जैसे रथ
 अनूप सधर्म ॥ अब्दकोसो शब्द जाको भूरि आनदकार । व्याघ्र सिंह सुयुक्त जैसे लहि
 विमान सुठार ॥ बैठि तामे लहत है आनंद तौन अपार । देवकन्या सहित तिहिमे बसत कल्प
 आर ॥ देवता जो करत भोजन करत सोई खल । है नही संदेह यामे सुनऊ भूपति दत्त ॥ करत
 भोजन जौन जन उनईस दिनमे तात । बर्षलौ एक करै होमाहि नेम गहि अबदात ॥ लखतहे
 बर लोक सातऊ तौन जे बुधिधाम । रहति तामे अशराहे लहत सो शुधिधाम ॥ करतहे गन्धर्व
 ताके सामुहे निति गाना भानु जैसे कान्ति मय सो लहत चारु विमान ॥ राखतीहे ताहि बर सुर
 मारि निति सानन्द । रहतहे तहें कोटिबत्सर सुनऊ कुन्तीनन्द ॥ बीसदिनमे करत भोजन
 जौन जन एकवार । करै द्वादशमासुलौ निति होम सुमति अगार ॥ जातसो आदित्यवारे लोक
 को अभिराम । लहत है बड मोदको तहें सुनऊ नृप बुधिधाम ॥ अशरा गन्धर्वको नभजान ताके
 साथ । चलतहे निति जात जहें तहें सुनऊ बर नरनाथ ॥ जौन जन द्वादश दिनमे करत भोजन
 एक । करै द्वादश मासुलौ निति होय सहित विवेक ॥ शुक्रके अरु मरुतके सो लोकमाहीं
 जाता जात सो तिमि अश्वनीसुत लोकमे अबदाता ॥ सुखहिमे रत रहत है निति दुःख होत न पासा
 अमरलौ निति करत क्रीडा सुनऊ नृप बुधिरास ॥ रहतिहे बड नारि ताके सङ्ग सुन्दरि पर्म ।
 नित्य मोदित राखतीहे सुनऊ तात सधर्म ॥ करत भोजन जौन जन बार्दसदिनमे तात । बर्षलौ
 निति करै होमाहि नेमगहि अबदात ॥ नित्य बोलै सत्य हिंसा करै कबहूँ नाहि । करै दोषारोप
 काहूँको न गुणके माहि ॥ प्रभामान सुभानुसो सो होतहे महिपाल । बसुनके शुभ लोकमाहीं
 जात समुद्र विशाल ॥ सुरनकी कन्यानके सँग रमत सो है भूप । असृत भोजन करत है निति
 कद्यो सुमनि अनूप ॥ करत भोजन जौन जन त्रय त्रिंशदिनके माहि । बर्षलौ निति करै होमाहि
 करै हिंसा नाहि ॥ मरुतके अरु शुक्रके शुभ लोकमाहीं जाय । जातहे पुनि रुद्रके शुभ लोकको
 सुख पाय ॥ अशरा बर नाचतीहे सदा सोहे तास । होयकै एहि भाति मोदित करतहे तहेंवास ॥

शा०प०
दा०थ०

शा०प०
दा०ध०

बैठिके सुविमान ऊपर देवकन्या साथ । रमतहै आनन्दसों सुनु धर्मधर नरनाथ ॥ करत जो
चौबीस दिनके माहिँ भोजन एक । वर्षलौं निति करै होमहि नेमगहि सन्धिके ॥ जायकै आदित्य
के सो लोकमे अभिराम । रहतहै बड काललौं मुद लहतहै अतिमास ॥ हंसयुक्त विमान
ऊपर बैठिके नरनाथ । सहस कन्या देवतनकी रमत तिनके साथ ॥ पञ्चविंश सुदिवस माही
करत भोजन जौन । वर्षलौं निति करै होमहि नेम गहि बुधिभौन ॥ सिंह गान्ध सुलगे तिवने
प्रभाके अभिराम । देव कन्या चढी तिनपै मढी छविसो मास ॥ बने सुन्दर हेमके इहि भाँतिके
रथ तात । तास पाहिँ चलतहै अति प्रभाके अवदात ॥ आपु वैठि विमानमे एक सहस नारिन माँह ।
रमतहै एक सहस कल्पसु सुनऊँ बर नरनाह ॥ सुधा भोजन करतहै तहँ सुधाहै गहि अथ ।
सुनऊँ बर धरमज्ञ भूपति भणत प्रज्ञ पबित्र ॥ करत भोजन जौन जन यडविंश दिनमे भूप । वर्षलौं
नितिकरै होमहि सहित नेम अनूप ॥ मरुतके औ बसुनके सो लोकमाहीं जात । लहि
विमान श्फाटिकको अति प्रभाके अवदात ॥ वैठि तामे अस्तरा गन्धर्व लौके साथ । रमतहँ द्वै
सहस युगलौं सुनऊँ बर नरनाथ ॥ सप्तविंश सु दिवस माहीं करत भोजन जौन । वर्षलौं निति
करै होमहि नेम गहि बुधिभौन ॥ होत सो जन पूज्यहै सुरलोक माहीं जाय । अमृतभोजन करत
है तहँ महत मुदसों हाधारमत सो नारीनमे तहँ रहत करुप हजारा । वैठि चारु विमान ऊपर लहत
मोद अपार ॥ जौन अष्टाविंश दिनमे करत भोजन एक । वर्षलौं नितिकरै होमहि नेम सह स
बिबेक ॥ भास्करसो तेजसों सो लसतहै मुहिपाल । नारि सुकुमारीनमे रमि लहत मोदविशाल ॥
भानुकीसों प्रभाको लहिके विमान महान । रमतहै शत सहस कल्पहि इन्द्रलौं मतिमान ॥
करत भोजन जौन जन उणतीस दिनमे भूप । वर्षलौं नितिकरै होमहि गहि सु नेम अनूप ॥ सर्व
रत्नसु लगे तामे भानुसो छविमान । जटित मोतिन हेमको बर प्रभाको सुविमान ॥ नखत वृन्दन
सहित राजत उदय कौसो भानु । अस्तरा गन्धर्व तिहिके माहिँ करत सुगानु ॥ रमत तामे बैठिके
सो अमरलौं महिपाल । चारु भूषण भूषिता बड पाथ करिके बाल । बसुनके अरु मरुतके अरु
रुद्रके अभिराम । दसके अरु विधाताके लोकको सुखधाम ॥ जातहै अरु साध्यके सो लोक
को मतिमान । अङ्गिरस मुनि कह्यो हमको परम प्रज्ञावान ॥ मास जब गत होय तब जो करत
भोजन तात । मास द्वादश करै होमहि नेमसों अवदात ॥ तेजसों अरु वपुषसों सो लसत विरलौं
दत्त । देखि ताको होतहै अनिमेष सुरके अत्त ॥ विधाताके लोकमे सो प्राप्त क्यैके परम । रहतहै
आनन्दमे रत नित्य भूप सधर्म ॥ आपनीहाँ प्रभासों जे रह्यो शोभित होय । रमत तिन नारीनमे
नभजान लहि सुखभोय ॥ नित्य कन्या देवतनकी पूजतीहँ ताहि । सदा मोदित राखतीहै
भाव करि बड चाहि ॥ भानु औसो पूर्व दिशि अरु चन्द्रसो पश्चात । मेघ औसो श्याम उत्तर
ओर सो सुविभात ॥ रक्त दक्षिण ओरसो अध नील उर्ध्व विचित्र । व्योम जान सु लहत औसो

सुवङ्ग भूप पवित्र ॥ मेघ वर्धत बूद जेतो वर्ध एक हजारा रहत तेते वर्ध है विधिलोक माहि उदार

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जिहि विधि जन धनहीन लहत यज्ञको फल परमा सोविधि सुनऊ प्रवीन कही तुहै हम बरणि कै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सविधि करत उपवास ते उत्तम गतिकों जात । कोडि कुइ करि शुद्ध हिय धरि सु ज्ञान अवदात ॥

कही अरिस सुश्रविकी यह विधि बर भूपाल । यामे संशय है नही है यह सुखद विशाल ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्री उदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकबीश्वरात्मजमेकुलनस्थस्यात्मजगोपोनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपूर्वाण दानधर्मोपवासविधौ अष्टमवतितमोऽध्यायः ॥

॥ ॐ ॥ जयकरीकन्द ॥ ॐ ॥

॥ * ॥ बुधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सत्र उपवासन माहो जैन । होय महत फलदायक तौन ॥ कही

मोहि उपवास सुजान । धर्म प्रवक्ता आपु महान ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ ॐ ॐ ॐ

अगहनकी एकादशी तामे व्रत करि जैन । केशवकों जे राति दिन पूजि भजतहैं तौन ॥

छूटि जातहैं पापसों होत देह अभिराम । अश्वमेधको फल लहत सुनऊ भूप बुधिधाम ॥

एकादशिका पौषकी तामे व्रत करि पूजि । निशिदिन करत प्रसन्न जे नारायणकों कूजि ॥

वाजपेयके फलहि लहि ते जन मोदित होत । यामे संशय है नही सुनऊ तात बुधिपोत ॥

एकादशमे माघकी करि जे जन उपवास । पूजि माघवहि दिवस निशि कूजत बर बुधिरास ॥

राजसूयको लहत फल कुलकों तारत सर्व । यामे संशय है नही मति बर कहत अखर्व ॥

फागुनको एकादशी व्रत करिकै मतिमान । पूजि जैन गोविन्दकों निशिदिन करत सुध्यान ॥

तौन यज्ञ अतिरात्रको लहिकै फल अवदात । सोम लोककों जातहै है नहि संशय तात ॥

एकादशिका चैत्रकी तामे व्रत करि जैन । सह विधि पूजत बिष्णुकों नेम सहित बुधिभौन ॥

बैडरीक मखको सुफल तौन लहत अभिराम । देवलोककों जातहै सुनऊ तात बुधिधाम ॥

जैन मास वैशाखकी एकादशी अनूप । व्रत करि तामे नेम सह निशिवासर सुनु भूप ॥

पूजत जे मधुसूदनै भरे प्रेमसो भूरि । लहि फल अघिष्टोमको रहत मोदसों पूरि ॥

सोम लोकको जैनहैं प्रभा पाय अवदात । यामे संशय है नही निश्चय जानऊ तात ॥

एकादशिका ज्येष्ठकी तामे व्रत करि तौन । पूजत सविधि त्रिविक्रमहि शुद्ध होय बुधिभौन ॥

पावत सो नेमेधको फल सुखदायक भूरि । सङ्गमाहि अश्वरनके रहत मोदसों पूरि ॥

एकादशि आषाढकी व्रत करि ताके माहि । पूजत वामनकों सुजे बोलि सु बुधजन पाहि ॥

जैन लहत मरुमेधको फल उत्तम हे तात । रमत सङ्ग अश्वरनके लहि भा चारु विभात ॥

सु अनूप ॥ दोऊ नखत अषाढ सुजांन । धरै उरणको माहि सुडांन ॥ काळिगुणी ताराको पर्न ॥
 धरै मुदाकेमाहि सधर्म ॥ धरै सुकान्तिका कठिके ताहि तिनिहि भाद्रपद नाही पांदि ॥ अनुराधा
 धनेष्टा दोय । धरै पंठिने सुखसों भेष ॥ धरै रेवतीको महिपाल । अक्षयमाहि परम हवि
 जाल ॥ वाज्रनमाहि विशाखा भूप । धरै हस्तने हस्त अनूप ॥ पुनर्वसु अहस्तिने खल । अश्लेषा
 हिनखनमे दक्ष ॥ जेष्टा धरै धीवको माहि । धरै अषय काननके पांदि ॥ धरै पुष्य मुखमाहि
 सधर्माखाती दक्ष सोष्टनेपर्न ॥ मघा शतभिषाको महिपाल । धरै मासिकाने हविजासा ॥ लोचन
 माहिं सृगाशरा तात । निष संसाठमाहि अषदात ॥ श्रिने भरणी धरै नक्षत्र । आश्र
 केमनमाहि पवित्र ॥ ज्येष्ठी श्रद्ध ध्यानके माहि । देखि चन्द्रमा अपने पांदि ॥ इहिविधि ताके माहि
 नक्षत्र । धरै पक्षौ भूप पवित्र ॥ ऐश्वर्य पूर्ण जब अह व्रत तात । देव द्विजनों घृत अवदात ॥ *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कोन्हें यह व्रत भूप अज्ञ होत है प्रज्ञवर । पावत रूप अनूप सहि विभूति बळ मुद लहत ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुयो चान्द्रव्रतकी सुफल तुमहीं हम हेतान । सुयो अहत वृत्तान्त अब मनुजनको अवदात ॥
 ॥ * ॥ तोमर हस्त ॥ * ॥ माहिमाहि है जन जैन । किहि कर्मसों भूप तौन ॥ सुरलोकमाही जाय ।
 मुद होत है नरराय ॥ किहि कर्मसों अहसात । जन नरकों है जात ॥ अह जात जे परलोक ।
 नजि देहकी बुधिबोक ॥ कळ जात जो नितनसात । वर प्रज्ञ हे नरनाथ ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

॥ * ॥ अक्षयचन्द्र ॥ * ॥

देखेऊ भूप हस्तनि आवस । मानु समाप्त तेजसों भावत ॥ पूहो इन्हें प्रज्ञ तुम यह वर । और
 न हनसो बक्त बुधिधर ॥ * ॥ * ॥ वैश्यायन उवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

याए इतगहिमाहि वर भगवान सु वृक्षसि । अलि जाने चलि याहि जात भए धृतराष्ट्र सह ॥

सादर भित्तों स्थाय अनुपम पूजा करतभो । तदनन्तर मुदछाय सभासदन पूजा करी ॥

इदन्तर महिपाल धर्ममन्त्र वर धर्मधर । करि कै विनै विशाल सुरगुरुसों पूहन भयो ॥

॥ * ॥ * ॥ अक्षयचन्द्र ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ बुधिधर उवाच ॥ सुजळ वृक्षसि वर धरमज्ञ । सर्वशास्त्रविद मोदद प्रज्ञ ॥ अज्ञकी

अज्ञ सहायक होत । पूहत है तुमको बुधिभौन ॥ अब जन सृष्टिहि प्रापत होत । तब सुत आता

अज्ञ सब मोत ॥ पित सो ज्ञात निबके अह । संवधी सो ज्ञाति समूह ॥ तास शरीर काष्ठसौ द्विप्र ।

होदि जात सब घरको पिप्र । जीव तास परलोकै माहि । कौन जात है कळ सम पाहि ॥ वृह

सुनिबसात ॥ एकदि ज्ञान होत बुधिराय । तिनिहि एकको होत विनाय ॥ एकदि जात नर

॥ माहाभारतदर्पणः ॥

स चतुष्प ॥ दौज नखत अषाढ सुजांन । धरे उरपक्ष नाहि सुजांन ॥ पावनुषा ताराको पने
 धरे मुदाकोनाहिं सधर्म ॥ धरे सुकात्मका कटिके का विनातिनिहिं भाइपद नागी पाहि ॥ अनुरापा
 घनेछा दोष । धरे पंठिने सुषयो मेष ॥ धरे देवताको महिपास । अचरुसोहि परम हवि
 जाल ॥ बाऊनमाहि विद्याका मेष । धरे इशने इश चतुष्प ॥ पुनर्वसु बहुविधने सप । अश्वि
 हिनखनमे दसु ॥ जेछा धरे शिवको नाहि । धरे अचरु कोननेके पाहि ॥ धरे पुष्य सुखना
 सधर्माखाती दसु कोइकेको ॥ अश्वि अश्विनामी महिपास । धरे नासिकाने हविजाखावी
 नाहिं सुमधिरा नात । मेष अश्विनाहिं अचरुदात ॥ अश्विने भरणी धरे नखत । अश्वि
 केमनाहिं पत्रिच ॥ अश्वि अश्विनाहिं । इश्वि अश्विना अचरु पाहि ॥ अश्विनाहिं ताकी नाहि
 नखत । धरे पंचमी मेष पत्रिच ॥ अश्वि अश्विना अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥

॥ सोरदा ॥ * ॥

कीन्हें यह अर्थ है अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 ॥ * ॥ सोरदा ॥ * ॥

सुखो भावनाको सुखसु सुखसु सुख हेताव । सुखो अश्वि वृत्तान्त अचरु अश्विनाहिं अचरुदात ॥
 ॥ * ॥ अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 सुख अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥

॥ सोरदा ॥ * ॥

देवसु अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 ॥ * ॥ अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 ॥ * ॥ अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥

॥ सोरदा ॥ * ॥

अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 ॥ * ॥ अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥
 ॥ * ॥ अश्वि अश्विनाहिं अचरु अत तात । देव द्विजको वृत् अचरुदात ॥

शा०प० दा०ध० कके माहि । भूपति याने संग्रह माहि ॥ कोऊ नहि करि सकत सहाय । पिता आदि निज
जागे राय ॥ अह इनने कोऊ नहि जात । साथ जीवके हे नरनाथ ॥ साथ जात है धर्म सुजान ।
करत सहाय अवश्य महान ॥ ताते कीजे धर्म अनूप । धर्म हि मुददायक है भूप ॥ धर्म युक्त
प्राणी है जौन । दिवकों गमन करत है तौन ॥ अधर्म रत्न जन जे महिपाल । परै नरकके माहि
विशाल ॥ याते कीजे धर्म अनूप । तजि प्रमादताकों हे भूप ॥ * ॥ सोरठा ॥ युधिष्ठिरउवाच * ॥
युक्त धर्मसो वैम कहे तुम्हारे हम सुने । पै एक मोहिय जैन संग्रह भो सो हरज तुम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीव तजत है देह तब परत नही है देखि । धर्म जात किमि सङ्ग है ताके कहिए खेहि ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ * ॥ भू अपतेज अकाश वायु अह अन्तक मन मति । जीवनके ए
देखत हैं महिपाल धर्म निति ॥ सबभूतनके साक्षि भूत ए हैं भूप बुधिधर । इन सर्वन सह धर्म
जात है जीव सङ्ग वर ॥ ॐ * ॥
हमको पूछो जौन । कष्टो तुम्हें हम तौन ॥ अब जो पुहज्ज हेत । सो हम कहें सचेत ॥ * ॐ

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जात जीव सँग धर्म जैसे हम तैसे सुन्यो । अब तुम कहज्ज संग्रह रैन होत किहि भाति है ॥

॥ * ॥ बृहस्पतिरुवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शरीरस्थ जे पञ्च हैं भूत महीप सचेत । ग्रहण करै जो अन्न है सोई होत है रेत ॥
नरनारी संयोगते होत गर्भ है तौन । जन्म पाय के कर्मवश भूमे करत सु जौन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जन्म प्रभृति जे करत हैं धयाशक्ति जन धर्मा । मनुज होय पुनि रहत हैं भूमे नित्य संग्रह ॥
धर्म बीच जे करत जन अधर्मकों महिपाल । सुखको पाछे लहत हैं ते जन दुःख विशाल ॥
अधर्ममे जे युक्त हैं ते जन धमपै जाय । महत दुःखकों लहत हैं जानज्ज निजु नरराय ॥
पुनि भूमे सो चाय के तिर्यगयोगीमाहि । जन्म लेत है भूप सुनु याने संग्रह माहि ॥
पुरुष सु जिहि जिहि कर्मसों सुखदानतिकों जात । ते ते अब हम कहत हैं कर्म भूप अबदात ॥

॥ * ॥ यज्जलीहन्द ॥ * ॥

पठि के सुवेद चारो सु जौन । द्विज स्त्रिय पतितसों दान तौन ॥ खर होय वर्षदमसौ महान ।
दुख सहत परम सुनु भूप सुजान ॥ खरयोगि कोडि के नरेण । पुनि वृषभ होत बसको अश्रेण ॥

आशु
दा०

सन्मत्तार ही कर्तव्य है, अनुश्रयोनि सुनुभूप । जाने संशय हो नही निश्चय जानु कर्तव्य ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ दामवीतीकम् ॥ १ ॥ ॥ ॥
 उरदः प्रो बोधनः पचः तिस्र मूत्र तापुष्कः पर्य । क्वाः चरयोः किञ्चिद् हरतो सुनञ्च तात
 सधर्म ॥ निन्दे चोरतः जैन मूत्रका होत है विद्वत्साज । श्रेष्ठिः सुकृत्तयेति सुकर होत तौन दराज ॥
 रोगसौ न्हे सुकृत्तयोनिको सोः श्यनि । बह्व बलर रश्चोः क्तन न्यन न्हे सुकृत्तयि ॥ तत अन्
 नार होत मानव सुनञ्च चर सधियात् । कर्तव्यो नै सुकृत्तयि कौ चिन्हेः किञ्चिन्हेः ॥ रमत जो
 फरनारिसे सो होत एक बलवान । श्रेष्ठि कौ मूत्रयोनिको सोः श्यन होत कर्तव्य ॥ १ ॥ श्यनयोनि
 हि श्रेष्ठि कौ मुनि कश्चित् श्यनः मृनात् । तत अन्तर मृध न्हे कौ होत है श्रेष्ठिः कर्तव्य ॥ श्यनयोनि हि
 श्रेष्ठि कौ मुनि होत है एक काक । हेमहो चन्देह प्राप्ते सत्य है सत्य वाक् ॥ मरिचकसौ बभुकी
 जो रमत दुर्धर्तमान । रहै कोकिलयोनिसाक्षी एक बलर तौन ॥ सुकृत्तयि चर भुकी चर
 सुकृत्तयि सियसाक्षि । रमत जो है तासः सम नृप और मायो नहि ॥ प्रथम बलर तौन जोवे श्यन
 शूकर होय । श्रेष्ठि शूकरयोनिको सो श्यन न्हे दुर्धर्तमान ॥ रहै जीवत वर्षदशौ सुनञ्च पुद्दि
 चमार । मत्त अन्तर पचबलर होत है मांजार ॥ श्रेष्ठि कौ सुकृत्तयोनिको श्रेष्ठि श्रेष्ठि तौन ।
 रहै जीवत वर्षदशौ परम दुर्धर्तमान ॥ तत अन्तर न्हे पिपीलिक जियत है बधमास । कोट न्हे
 एक मास जीवै सुनञ्च नृप बुधिरास ॥ जन्म यतो योनिमे लहि फेरि सो नहिपाल । जन्मलहि
 क्वाः योनि साक्षी सहत दास विद्यात् । मास चौदह बास करि क्वाः योनि साक्षी तौन ॥ १ ॥
 फिरत बिछा सुकृत्तयि सुनञ्च नृप बुधिमौन ॥ तत अन्तर भय अन्नको नाश है बुधिरास । करत
 मानव योनि साक्षी फेरि सो है बास ॥ व्याहमे अर यज्ञमे अर दानसे अर ज्ञान । करत वाधा
 सहत है क्वाः योनि साक्षी अन तौन ॥ वर्षदश औ पञ्च सो क्वाः योनि साक्षी करि नास । तत अन्तर
 होत मानव सुनञ्च नृप बुधिरास ॥ प्रथम कन्या दर्द जो सो औरको अ देत । तौन न्हे क्वाः योनि
 साक्षी करि मरत दुर्धर्तमान ॥ रहत है क्वाः योनि साक्षी वर्षदश दश । नये अधने सर्व सो
 पुनि मनुज श्रेष्ठ मत्तच ॥ देवकारज पितरकारज क्वाः योनि अन ज्ञान । करत भोजन काक सो
 अन होत सुनु बुधिमौन ॥ काक न्हे शतवर्ष जीवत फेरि कर्तव्य होत । श्रेष्ठि कर्तव्य योनिको
 पुनि तौन सुनु बुधिमौन ॥ श्यन योनि हि प्राप्त न्हे एकमास रहि विधिनात् । तत अन्तर श्यन
 मानव श्यन है मरणात् ॥ जीविका जो देत ताकी करत निन्दा जैन । रहत श्यन योनि रश्च
 वर्षदश है तौन ॥ श्रेष्ठि श्यन योनि सुकृत्तयोनिको पुनि श्रेष्ठि । पचबलर रहत जीवत मानव दुर्धर्त
 मानव ॥ श्रेष्ठि सुकृत्तयोनिको अको होत है पुनि श्यन । श्यन न्हे पचबलर जीवत पाप दुर्धर्तमान ॥
 करत है अन जैन अडेबभुको अपमान । कोकिलो होत सो है सुनञ्च नृप मानमान ॥ कोकिलोनि
 हि श्रेष्ठि कौ एकवर्ष साक्षी तौन होत औरक विद्यन है सुनु भूप प्रज्ञामौन ॥ श्रेष्ठि औरक योनिको

शांवा
दा०ध

निहिते मन्वरे भूप । अहम वातक घोषिको है भवत विप्र अनूप ॥ काङ्गाशीमे रमत जो है मूढ
दुर्मतिमान । कीजए कबई बलाका दरमपरस सुजां ॥ प्राप्त है किमियोनिमे सो मूढ बड
दुख पाय । यान सुकर सेवके मुनि रहत बसों काम ॥ कोहि सुकर येनि को मुनि आन योनी
नहिं । महा दुखको कबतके कब माहि संभय नहि ॥ तिहि अनन्तर प्राप्तकर्षा होत भावव
गीच । पापहीको करत से मुनि वर्ग बंधके बीच ॥ एक सन्तति होय अब तब मृत्यु कहिके तौन ॥
होत मूयंक येचिके है प्राप्त दुर्मतिमान ॥ किबो काङ्ग को न माने जौन अब उपकार । सहन है
धमदूतके सिद्धकी बड मार ॥ दूतकी धमदायके सो मार कहिके भूरि । प्राप्त है किमि
योनिमे मुनि रहतमुखको मूरि ॥ वर्ष पन्द्रह वासकरि किमियोनि जाही तौन । वर्षको पुनि श्लेष
प्रापित करतदुर्मतिमान ॥ गर्भहीमे मृत्युको सो पाय सुनु भूषाण । गर्भको पुनि श्लेष प्रापित सहत
दुख विद्याण ॥ इमिहि पुनि पुनि गर्भ शक्ते वास करि दुखपाय । होत तिर्थगयोनिमे पुनि प्राप्त
हेनरराय ॥ तौन तिर्थगयोनि जाही महा दुखको पाय । कूर्म हैके रहत है बड कास है मरराय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

इधियों चोरत जौन बनसत सो जन होत है । सुनऊ भूप दुधिमान याने संभय है मही ॥

जौन कूल पाव वूप चोरत है दुर्मतिसदन । सुनिए भूप अनूप सो पिपीलिका होत है ॥

॥ ॐ ॥ जयकरीछन्द ॥ ॐ ॥

पाघसकी चोरी जन जौना करत होत तीतिरि है तौना ॥ अर चोरे जन जौन पिसान । होत उखूक
तौन अज्ञान ॥ अर जो चोरत है कोलाय । सो पयिहा है होत नृपाय ॥ कांसपाय जो खेत पुराय ।
हरियल बही सो मरदाय ॥ रजत पायको चोरत जौना होत कपोत योनिमे तौना ॥ अर जो कासन
पाय पुराय । सो किमियोनि पाय दुखहाय ॥ पीताम्बर जो चोरत पर्ना सहत भूख है तौन सधर्म ॥
कामे काने मोख बड तौन । बसन पुरायत दुर्मतिमान ॥ संसयोनिमे अन्धहि पाय । रहत काल बड
है मरराय ॥ अर जो है जन जौन कपासकोच योनिमे पाये वास ॥ कर्ष बख जो खेत पुरायतौन ऊँ
कीच श्लेष दुखपाय ॥ बल्लभूषण पुरायत जौन । सुनु मृप शशा होत है तौन ॥ रङ्ग पुरायत जो जन
भूप । कोरे होत है तौन अनूप ॥ रत्न पीत चन्दन अर चैन । चोरी करि इमको जो खेत ॥ तौन
कुहुन्दरि योनिहि भाय । पन्द्रह वर्ष रहत दुखहाय ॥ तदनन्तर सो मातव होत । सुनऊ मुधि
ठिर प्रजा पौत ॥ जौन सुरासन पय जो पौत । कृष्ण रहत दुखको भोय ॥ सोभी तैव सुरायत
प्राय । तैवप जीव होहि तौन ॥ अर चर्त्री वा अनु विद्याक । अत्र उचित है सुनु भूषाण ॥ अत्र
इधियों चोरत जौना कर्ष होत इत्यु कहि तौन ॥ जीवत गर्भ दोष विद्यात । कोहि अज्ञान मारो

प्राप्य जात ॥ गरिके सो पुनि होत कुरङ्ग । रहे नित्य भै भरो उतङ्ग ॥ एक वर्ष जब पूरव होत ॥ जात
 दाप्य शस्त्रसा सारो सेव ॥ शोचि कुरङ्ग योनि पुनि नीम । होत जीव सुनु भूप प्रवीन ॥ जासोनाहि
 पासि बळ दुखपाय । कळू दिननने माखो भाव ॥ श्रावण वै पुनि सो दश वर्ष । जोवत भूपति सुन
 ऊँ सद्यः ॥ व्याघ्र शोचकी वनने मीन । बसत पक्ष कारतहे तौन ॥ तदनन्तर सो सुनु भूपास ।
 पाप नसेने सर्व विघात ॥ मनुज योनिने प्रापित होत । ये न सहत बळ कोरु उदीत ॥ जौन हरे
 काङ्गकी दार । ताहि देत मन कोष अपार ॥ शीघ्र शीघ्रसे गरि दुःख श्रावण ॥ बीस जन्म पावत
 नरराय ॥ तदनन्तर किनि योनिहि पाव । बीसवर्ष सो रहत अघाय ॥ किनि योनिहि तजि
 की पुनि तौत । होत मनुज हे सुनु बुधिमान ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोजन चोरत जौन जन तौन मक्षिका होय । बळत मासलो रहतहे नहत दुःखसो भेष ॥
 * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्म पापको नाम भय सुउज्ज्वल होत जब । सुनऊ नृपति बुधिरास पावत नाम योनि तव ॥
 * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनु भूप हरी चुरावत जो जन । निखय वै करि नृपक सो जन ॥ नित्य शेरि भोजनको
 काठत । कोऊ न मानत बळ जन दाटत ॥ मीनमांसको जौन चुरावत । काक होय सो दुःखसो
 छावत ॥ अरु जो जन चोरत हे नौनहि । चोरी काक होतहे भौनहि ॥ घृणहि चुरावत जौन सचा
 बन । काक मद्रु सो होत भयावन ॥ धरी भरोहरि जौन ह्यावत । मीन योनि साहि सो दुःख
 पावत ॥ मीन योनिको तजिके सो पुनि । मानव होत कहत तुमको पुनि ॥ मनुज योनिने प्रापति
 वै करि । शीघ्रहि वृत्तु सहत दुःख भै करि ॥ प्रथम पापको पुञ्ज प्रकाशत । समुक्ति तिन्हें व्रत
 करि जे नाशत ॥ फेरि करत अघ तजिके ज्ञानहि । व्याधिबान ते छेत्त नहानहि ॥ अरु निति पाप
 करत हे जे जन । निखय नो छ होत हे जे जन ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करत जौन जन पाप हे पूरव कबित अपार । तिनको जो गरिकु करि भूपति सुनऊ सुदार ॥
 तिमहीकी तौ गरि वै पावति दुःख अपार । यामे संशय हे नहो नहत सुबुद्धि चकार ॥
 रज पापको पक्ष कछो तुमको निश्चित भूप । चोर कपाके धोभने सुविधि सर्व भूप ॥
 जन्मभूमि ती करत महि जौनऊ पाप सुजान । होत अरोनी तौन अरु सुविधि धनमान ॥
 सुनिके भेरे नहान अरु नित्य तुन धर्म । धर्म किये भूपास तुन रहिके नित्य सखी ॥
 सतिभीकाभीराजिनद्वाराजभिराजकी उदितनारायणसाक्षात्पुन्याना । श्रीकृष्णकी भीष्मसि
 रघुनाथकी चरणाजो कुशनेकसाकजोपीलावस । विषेय । प्रविष्टी । विविधा । विरचिते
 धारण्य । महाभारतदर्पणे । भास्विकीणि । दामधने । व्रतनोपध्यायः ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

शूद्र अन्न उत्पन्न करि करिके कौग्रहि भूरि । वेदवाज्य वर द्विजनकों देत मोदसों पूरि ॥
छूटि जातसो पापमें परमा पाय बिभात । पाने संशय है नष्टी भएत सुबुध अवदात ॥
जौन अन्न उत्पन्न करि अपने बलसों परम । देत द्विजनकों तैम नहि दुखकों लहत सधर्म ॥
अन्नदानको फल कह्यो तुम्है, सर्व हस भूप । सब धर्मको मूलहै यह सुविदान अनूप ॥
अन्नदान कोन्हें कहत जन शुभ गतिकों परम । पाने संशय है नष्टी भूषति सुतुल्य सधर्म ॥
सखि श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याम्नागुणभिना श्रीबन्दीजनकाशीनारि
रघुनाथकबीरराजमेन गोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां सद्यभारतवर्षे शान्तिपूर्वणि
दानधर्मो बृहस्पतिपुत्रिष्ठरसम्वादे एकाधिकशततमोऽध्यायः ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ध्यान अहिंसा यज्ञ अथ इन्द्रिय नियम जौन । गुह सुभूषा यौ सुतप इनमे सोयस कौन ॥

॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~* ॥ बृहस्पतिउवाच ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~* ॥

ए सचहीह सुखद पै इनमाथीं भूपास । मिथ अहिंसा धर्महो है अति सुखद विशाल ॥

॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~* ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~* ॥

सौसे कहिकै बृहस्पति धर्म मन्दसों वैन । जात भए सुरलोककों वर आनन्दके वैन ॥

तदनन्तर भूपालमणि पण्डुनन्द बुधमेह । पूछत भे गाढ़े यकों करिके यह सन्देह ॥

॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~* ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~* ॥

हिंसा मनबचकर्मसो करत जौन जन तात । ते छूटत किनि दुखसों कस्यो मोहि विस्वात ॥

॥ * ॥ आभीरछन्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ तजिकै हिंसा जौन । दया धरत है तैन ॥ छूटि दुखसों भूरि । रहत
मोदसों पूरि ॥ कुञ्जर पदमे तात । सबके पाय समात ॥ तिमिहिं अहिंसा नाह । सौध धर्म
नरनाह ॥ निश्चय जान समाथ । संशय नहि नरराथ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

मगसा बाबा कर्मसों हिंसाहोति मृपास । बुधजनसों ले बृहिकै निश्चय क्रियो विशाल ॥

ताते प्रथमहिं होहिह मगसों हिंसा परम । कोरि बाक अथ कर्मसों तजिह पात कर्म ॥

रहि विधि हिंसा होतिके भएत नांस न जौन । छूटत ते हैं दुखसों सुमज्जमान बुधिमोमान ॥

करत प्रसंथा नांसकी ओ जन हे कहियास । तिन्हें होतहे दोष अति कहत सुबुधिविभीक ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

परम अहिंसा धर्महै कस्यो असुखस्य वार । पाने संशय होतहे सुखसँ सुबुधि संवार ॥

कही सुबुधविधि नांससों आपु आह विधि कर्म । नांस प्राप्त नहि होवहे हिंसा किना सधर्म ॥

पाने नांस निषेधने संशय मथे महान । करळ पित्तमह दूरि सो ब्रह्मा आपु सुजान ॥

जो जन भक्षत मांसको ताहि दोष है कौन । जो भक्षत नहिँ ताहि नृष्य होत कौन बुधिभौन ॥
 घृणादिकमको बध करें जो जन आनिष खाय । वा काहूजन औरसों तिनको बध करवाय ॥
 अन्याय जे हगत अर भीख खेत है जौन । तिनको प्रायत होत है कौनदोष बुधिभौन ॥
 यह सुनिवेकी मन हिएँ इच्छाभरि महान । कबहु पितानह मोहि तुम करि कै क्षया सुजान ॥

॥ * ॥ भोषाउवाच ॥ * ॥

किय अमस्य मांसको होत धर्म है जौन । तौन तुम्है ने कहत है सुजड तात बुधिभौन ॥
 रूप बुद्धि बल आपु अर धीर्य अरु सब बुद्ध । किय अहिंसा निखत है एख ब सुनु नृप बुद्ध ॥
 अहिंसाके सम्पादने भयो जौन सिद्धान्ता सो नै तुमसों कहतहौ सुनिष वर चित्तिकान्त ॥
 मांस मांसने करत है अन्ननेषको जौन । औ मधु मांसहि तजत जो सम दीऊ बुधिभौन ॥

॥ * ॥ हरिगोतीशब्द ॥ * ॥

सप्तअहि औ वासुकिस्था औ मरीचय जौन हैं । करत आनिष अमस्यकी प्रसंशाको तौनहैं ॥
 जे न भक्षत मांसको अर हगत जे कबहु न है । निषता प्राणीन कीते लहत दिन दिन दुःख हैं ॥
 जे न भक्षत मांस ताको करत भीष निन्दास हैं । करत ताको प्रसंशाको साधु वर बुधिरास हैं ॥ जो
 बडावत मांस अपने मांस परको खाय कै । कछो मारद निषत सो जन रहत दुखसों क्षाय कै ॥
 सदा कीन्हें अन्नकर औ सदा कीन्हें दान है । सदा कीन्हें तपस्या फल होत जौन महान है ॥ होत
 सो कस त्याग मदिरा मांसको कीन्हें सुजो । कहत निश्चय तुम्है धामे भूप मति संगै जुनो ॥
 प्रथम आनिष खाय करि कै तजत खेरिऊ जौन है । अन्न कीन्हें औ पढें श्रुति निखत फल नहि
 तान है ॥ खात जो जन मांस तासों नाहि होखी जात है । जौन होखत तौन पावत अभय फल
 खबदात है ॥ अभय सब प्राणीनको जन देत जो महिपाल हैं । प्राणदाता होत ते वर भक्षत विज्ञ
 विश्राप्त हैं ॥ सोलसाही अभय दीवो जौन सब प्राणीनको । परम सो है धर्म वर कालि परत है
 प्राणीनको ॥ परम प्यारे अगत जैसे जीव अपने जानिय । तिमिहि सबको जीव अपने अगत
 भिष निजु माशिय ॥ मांसको जो होखियो सो धर्म सुखको धाम है । सर्वलोकाहि प्रायवेको
 हेतु वर अभिराम है ॥ अहिंसा है परम तप औ अहिंसा वर धर्म है । अहिंसा है सत्य वर नृप कहत
 निरुके प्रस है ॥ कबहु नृष्य अर उपलनाही होत आनिष नाहि है । जन्तु मारे निखत बाने दोष
 अक्षयनाहि है । जे न भक्षत मांस कबहु तौन देव समान है ॥ सदा आनिष खात राखत तौन
 दुर्लभमान है ॥ जे न भक्षत मांस निर्भय रहत सो सरवष है । होत प्राप्त न कबहुँ अथको
 नाहि संशय अथ है ॥ कबहुँ काहूजीवको उद्वेग जो नहि देत है । कबहुँ सो उद्वेगको नहि
 प्राप्त होत सचेत है ॥

भा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सादक जो नहि होहि तो घातक होहि न तात । सादक जाई हगत है घातक जन विद्याता ।

॥ * ॥ परदादोहा ॥ * ॥

सुमादिकनकी छिंसाओ है मानव सादक सेत । भयस चाचिबसो श्रीजो नहि घात बुद्धिनिकेत ॥
है समस चाचिब समुज कहत जौन यह बैन । ताकी छिंसा होति है निमृत्सुमऊ बुधियेन ॥
जे जन हिंसा करत है तिनकी चाधु नरेय । कास्य प्रसत है श्रीश्री सतिनर उचत सुवेग ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिंसकहैं जन जौन तिनको रसक निखत नहि । सुमऊ तात बुधिमौन विषय कसि कै कहत हैं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

साथ जान परमांसको अपने मांस बढान । जन्म जन्मके भीतिकों प्राप्त होत ते सत ॥
जौन समसव मांसको सो दायक कस्यान । सुयस चाधु सब सर्वको दातां तिनहि सुजांन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिंसक है जन जौन तिनके निकटे जो बसत । सोख सुनु बुधिमौन विषय हिंसक होत है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

घातें हिंसक जनकी सज्जति कीजे नाहि । सुनिए कुन्तीनन्द बुद्धि कहत प्रह्व हिंसकाहि ॥
भूमिदान मोदान सब सुवर्णको जो दान । वांस अभसस्य छेष्ट है तिनहनें नतिमान ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

करे रसा मांसको जो विप्र हे नहिपाल । किए तो तिहि सक भयस दोष है न विद्यास ॥ पद्मविन
को आह्विन विधिहीन जे जन खात । दोष तिनको होत है अति भयत बुध विद्यास ॥ वृषा
मांसहिं खात जे जन नित्य हे नरराघ । नरकनाहीं जात ते जन महत दुखसो काय ॥ मांस जे जन
खात ताके काज जौन अबुद्ध । कहे विनही हगत पयुको सुमऊ नृप बुध उद्ध ॥ महत दोष हि
कहत सो हक कहत गुनि हिंसकाहि । खात ताको होत दोषन प्राप्त संशय नाहि ॥ मांस मांस हि
प्रथम फेरिऊ हेत जो है त्यागि । कूटि अचरें प्राप्त धर्महि होत सो सुखपानि ॥ जौन कमावत मांसको
अव कहत नीको जौन । सोस मांसहि होत अर जो देत दुर्नतिमौन ॥ हगत जे मांस खात जे जन
मांसको भूपास । होत है जनसबहिको सब दोष भाव विद्यास ॥ रसो अमृत उपरुवि
जौन जन सरवप । सब मांसहि तजत सो है सुमऊ भूप पविष ॥ सुगत हैं हक भूप पूरव कस्ये
नखकार । श्रीहिंकी हजवाप कै पयु चाए बुद्धिबवार ॥ हगत हे सब अज्ञानाहि । सेवनिधिसे
वर्ष । अगत हे नहि कसऊ पयुको दद्यावान सुधर्म ॥ सुमऊ चाचिब काम जे नहि होत सुसो
बुद्धि । अगत जे जन नित्य हेते मरुत सुखने भूहि ॥ वर्धमानको तपसा जो नरत है नतिमान । नरा

धामिष त्याग यो जो दुखो जानु समान ॥ खाइए नहि मांस मदिरा कारतिकके नाहिं । यो
 यवश्चहि खाइए सितपक्षने तो नाहिं ॥ धर्मकरिके योग्य कार्तिकनाहिं है भूपास । कोजिए
 हिंसा न याते भएत विज्ञ विशाल । मास आचए भाद्रपद यो कार कार्तिकनाहिं । जे
 नभक्षन मांस ते दुख लक्षन कबहूँ नाहिं ॥ कीर्ति बल अरु आयु बरको प्राप्त होति महान ।
 है नही सन्देह धार्ते अक्षत वरनतिमान ॥ चारिअहिनानाहिं एकजुँ नाहिं जो नहि खात ।
 छूटि दुखसो तौन जन सुखान होय विभात ॥ मासरूने पस एक जन मांस खात न जीन ।
 तिनजुको है होति हिंसा निवृत्ति सुख बुधिभोग ॥ भूपपुर नाभाग यो नृप अम्बरीष सुजाग ।
 गयन मञ्जुष अर्पति यो नृप आनरण्य महान ॥ आयु नृग ज्ञानवीर्य यो अगिरह शिबि सुख
 कुन्द । इतिगेषि दिक्षीप प्रयु रघु रन्तिदेव मरेन्द ॥ विरूपाक्ष अलर्क नल निमि जनक
 कश्यप सुषेण । धर्मवान महान अरु वर कीर्तिकार अग्रेष ॥ ऐल रैवत सुनासृजय हरिसन्द्र
 नृपास । वीरसन दुष्कन्त अज नृप रामभूय विशाल ॥ माध्याता भरत यो इक्ष्वाकु ब्रह्म सुजाग ।
 सगर यो बसुबाळ भूपति खेत वर नतिमान ॥ इते भूपन कारतिकमे मांस खायो हाहिं । नेमसो
 वर भयो तति मांस दिवको नाहिं । खर्गते पुनि जाय विधिके लोकमे भूपास । बसत सोहैं करत हैं
 गन्धर्व गान विशाल ॥ जन्मभर जे मय मांसहि खात हैं कबहूँ न । मुनिनकी सम तौन तिनकी
 प्रभा होति नखै ॥ पंडित जे अरु सुनत जे यहि धर्मको अभिराम ॥ जाय तौन हि नरकको जग
 दुराचारि उ मांस ॥ पापते छुटि जात पापी है न संशय अरु । दुःखते दुखवान छूटत सुनऊँ भूप
 यविच ॥ जन्म तिर्यग्योनिमा ही खेत नाही भूप । अहि प. वत भूरि पावत पाद्य रूप अनूप ॥ *
 स्वप्ति श्रीकृष्णराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वामिनागामिना श्रीदन्दीजनकाशीवासि
 रघुनाथकवीश्वरात्मजगेकुसुमाचपुत्रनेपीनाथस्य शिष्येण मण्डिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
 महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे मांसाभक्षणप्रस्तावेनामैकाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * ॐ

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥

बलप्रकारकी भोजन तिनको समुज होउि कै तान । आनिष भक्षत प्रीतिसो राक्षससो विख्यात ॥
 धामिषभक्षणकी करत जिनि जन इच्छा परम । अन्यभोज्यकी करत हैं इच्छा तिनि न सधर्म ॥
 मरुँ जानै भोजसम अन्य भोज्य नहिं बार । निश्चय करि कै कहत हैं तुमको भूप उदार ॥
 मांसवनससनाहिं हैं जे नुए वर बुधिवास । यो भक्षणमे दोष जे ते पुनि कहिए आन ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ सोरठा ॥ * ॥

कह्यो जौन तुम कब मांसिक अस्तव्य नाहिं । मांस समान अनूप भोजन और न भुविने ॥
 विषयनाहि रत जीन यो जिनि तननाहिं क्षता । सुनऊँ तान बुधिभोग अरु जे हारि मांसने ॥
 तिनको मांस समान और न भोजन अछै है । अनिष्ट करत महान पुष्टि सुनऊँ भूपासनाहि ॥

शा०प० नास अभयमाहिं बळगुण हैं भूपासनादि ॥ सुमऊं तौन मन पांदि नै निखय करि कै कहत ॥
दा०प० ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जौन बढायो कहत हैं अपने नांसहि भूप । पाष अन्धके नांसकों ते हत्तू अमूप ॥
सबकाइकों और कहू प्रिय नहिं प्राण समान । दया करै ताते मनुष्य शिषकोमाहिं महान ॥
॥ * ॥ अर्धचरणा दोहा ॥ * ॥

नांस होत है मुक्तते थाने संशय नाहिं । ताके भयमाहिं दोष है पुण्य अमयमाहिं ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

वेदनाहिं विधि जौन आनिषभयकी मृपति । तिहिविधिसौं बुधिभौन भयमाके नहि दोष ह ॥
॥ * ॥ जयकरीइन्द ॥ * ॥

पयू बनाए मरुके काज । यहो सुमत हम है नरराज ॥ शिषकी जो विधि है तात । आनिष
भयमाके विख्यात ॥ तौनऊ कहत तुम्है हम परम । सुमऊ काम है मृपति सधर्म ॥ अपने बससों ह
नरराज । सृगया करि कै नांसहि स्थाय ॥ भयमा कीन्हें दोष न होत । कहत महत हैं प्रज्ञायोत ॥
॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

पद्मनके जे देवत है वर तिनके अर्ध नृराय । वनके पयु संकल्पि दए हैं पूर्व अनख्य सचाय ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

घातें वर भूपास सृगया काजै जात है । सुनु वर विष्णु विद्याल तिनकों होत न दोष है ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ये सब भूतनके दया तिहिसन धर्म न और । दयावानकों होत भय कऊ न भूप शिरसौर ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुमऊ अहिंसा जौन लक्षण सो है धर्मको । कहत धर्मविद तौन धर्मनन्द अरिभृन्दर ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सब भूतनकों देत जो अभय सुनहु महिपाल । सर्व भूत हैं देत नृप ताकों अभय विद्याल ॥
दयावानकों होत है प्राप्त दुःख जब भूप । सर्व भूत ताकों करत रक्षा परम अमूप ॥
॥ * ॥ अरिसहन्द ॥ * ॥

भयते अन्ध हि जौन कुभावत । कूटि तौन भयते मुद पावत ॥ परम प्राणको दान समान न ।
चार दान है सुनु अरिभानन ॥ * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * ॥

वरय न नीको खगत है सबभूतनों तात । सृत्युकाकने कहत भय सर्वजीव विद्याल ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

नांस खान जन जौन नारक कुम्भीपाकने । परि कै पावत तौन महत दुःख वर बुध कहत ॥

शा०प०
दा०ध०
कीटकउवाच ॥ * ॥ सकटको सुनि घोर घोषहि भरो भय मे पर्न । धावताहैं शीघ्र यातें सुनऊ
व्यास सुधर्म ॥ मरख सबको लगत अप्रिय लगत जीवन प्रीथ । है नहीं सन्देह यामे गुणो तुमहें
हीय ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
छूट मोदते दुःखसे हौंजन प्रापित व्यास । यह विचारि वै भजन हौं शीघ्र भरो आतपास ॥

॥ * ॥ पद्मभस्मीशब्द ॥ * ॥

भीष्मउवाच ॥ * ॥ सुनि व्यास कीटको ए सु वैन । इति कहत ताहि मे सुबति जैन ॥ सुनु
कीट तोहि है मोद कौन । कऊ मोहि शीघ्र तू करि न गौन ॥ * ॥ चरणारोहा ॥ * ॥ *
तिर्यगयोनीमाहि सुनु प्राप्त भए हैं जौन । तिनको जो है मरण मै मानत हौं मुद तौन ॥
शब्द सरस सुमन्धरस और भोग हैं जौन । तिनको जानत तू न हे यातें सुख है कौन ॥
कीटकउवाच ॥ * ॥ सब योनिमे रहत रति जीव सुनऊ हे व्यास । यहि कारणते मोद है कोको
वर बुधिरास ॥ यहि योनिऊ के माहि मै रहत सहित आनन्द । जीवकी इच्छा करत माने है
निरन्द ॥ * * * * * ॥ * ॥ पद्मभस्मीशब्द ॥ * ॥ * * * * *

मै पूर्व जन्मको माहि पर्न । धनमान गूढ़ हो सुनु सधर्म ॥ छैकूर भूरि मै पापकार । यह
कृपिण महत कृत्त कर अपार ॥ धन देय व्याज लैके अखर्ब । सुनु बिप्र करनहौ कर्ष सर्व ॥ मै
कहत नित्यहो कटक बैन । कबहूँ न देत काहहि बैन ॥ पर इच्छा करत हो करत नित्य । सबहा
सदाहिँ बोलत असत्य ॥ तजि अतिथ भृत्य गृह माहि जाय । हो करत नित्य भोजन सहाय ॥
मै देव काज अथ पितर काज । कबहूँ न करतहो सुबुधराज ॥ जन रहत जौन मन प्ररख आध ।
मै करत हो न ताको सहाय ॥ धन धान्य अन्यको देखि चार । अरु दार बसन भूषण सुढार ॥
अति दुखित होतहो सुनऊ व्यास । निति किएरहतहो कहु प्रकास ॥ * ॥ गजानकशब्द ॥ * ॥
भलो अन्यको चाहतहो नहि अपनेहीके माहौं । अपने भले चाहतहो नित्यहि कहत सब
तुमपाहौं ॥ कूर कर्ममै नित करे हो नऊ दुर्मतिसौं छायो । ताके समरणते अब मेरे ताप हिचमे
छायो ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

पूर्व कर्म जेते किए तिनमे है शुभ कर्म । कीन्हैहैं मै व्यास सुनि तुमको कहत अभर्म ॥
बहु माताकी करी सवा मै निति व्यास । भक्ति राखि द्विध माहि अति वैके सहित उवाच ॥
आ एक निर्मल निप्रको भोजन मै एकवार । दीन्हो हो नम धाममे आएँ सुमति आनार ॥
इन दोऊ कर्मनते मो को पूर्व जन्मको पर्न । समरणहै सुनु व्यास सुनि नतिबर सुनऊ सधर्म ॥
यहि सुकर्मसो होयगो पुनिऊ प्राप्त सुख मोहि । जानि परतहै कीट इति कहे व्याससो मोहि ॥

॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ सेरदा ॥ * ॥

कीट योनिमे तोहि पूर्व जन्मकी अति है । अरु भो प्रापित मोहि शुभ कर्मन दोऊनसो ॥

॥ * ॥ पवङ्गमहन्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०५०

तपके बलते तोहि कीटमै तारिहो । भूरि मोदसां बूरि दुःख सब टारिहो ॥ तपके बल
सम और कीट बल नाहि है । तोहि कहत हम मुणिकै निजु हिय नाहिहै ॥ कीटयोनि मै
भयो प्राप्त तू पापसो ॥ तजिकै अब यह थोनि धर्मके दापसे ॥ ॐ है मोदहि प्राप्त हिहै निजु जानितु
मम वाणीमे नेकु न संशय जानितु ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॥ रामगोतोहन्द ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
मनुज ताकों प्राप्त ॐ है कीट तू मनिमान । धर्मनाही प्रवृत ॐ है प्रेम सहित महान ॥ करत ॐ है
विप्र पूजा देवतमकी यथ । होति ॐ है कथा औ अह बैठिहै तू तत्र ॥ कीट सुनु वर प्राप्त ॐ है
भोग तोकों सर्व । पायहै तू विप्रताकों घाय सहित अखर्व ॥ बैन सुनि ए भयो ठाढो कीट मगके
माहि । मेक कीटो शकटमणकी हिएमे भय नाहि ॥ सकटमण तिहि काल हीमे भयो आवत
उह । मखो तिहिके तरे सो दधि सुनऊ भूपति शुद्ध ॥ व्यास मुनिकी कृपा तें सो कीट सुनु बुधिधाम
भयो सचिय ब्रह्ममे उरपन्न होत ललाम ॥ ता अनन्तर व्यास ताके भए आवत पास देखि सो करि
स्मृतिः उठिके महे पद सज्जसास ॥ ॐ ॥ कीटकउवाच ॥ ॐ ॥ सुनऊ मुनिवर व्यास तव शुचि
कृपा तें अभिराम ॥ छोडिके कीटत्व मै भो राजपुत्र ललाम ॥ तुरगें मैगल ऊष्ट्र रथ अरु और जान
जितेका प्राप्त हैं सब मोहि तेरी कृपा तें सबबेक ॥ बन्धु निचण सहित मै तिनि करत भोजन चारु
सोवतो हैं मोदसों मै सुन्दरी सह दारु ॥ करत बन्दोजन सु कीरति नित्य मेरी पर्म । देत होमै
दान तिजकों नित्य होय सधर्म ॥ प्राप्त जोहि मोहि सो सब कृपातें तव व्यास । कातहैं परनाम
तुमकों भरो भूरि उवास ॥ करो आशा कृपा करि जो करौ मै मुनि तौन । आपु मम आनन्दके
हो हेतु वर बुधिमान ॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ राज्यकों तू प्राप्त ॐ है करत नहि अभिमान ।
भयो है परसन्न घातें मै महा मनिमान ॥ सचियत्वहि छोडिके अब विप्रता अभिराम । पायके तू
पाय है मुद परम प्रज्ञाधाम ॥ राज्यको सुख पायके करि यज्ञ तू सविधान । गऊ ब्राह्मण अर्थ
लक्षिके शुद्धमेतजि प्राप्त ॥ पायहै तू स्वर्ग माही महत मुद नरराय । रहैना तू ब्रह्मपदकों प्राप्त
होय सचाय ॥ जीव तिर्यगबेनिकों तजि शूद्रताकों पाय । शूद्रताकों छोडिके पुनि वैश्यतामे
जाय ॥ वैश्यताकों छोडिके पुनि सचियत्वहि लेत । ता अनन्तर विप्रताकों लहत बुद्धिनिकेत ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रहै धर्मके मोहि मम पाय विप्रता खस । पावतहै तव ब्रह्मपद सुनऊ भूमिपति दस ॥
स्वप्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजमकाशीवासि
रघुनाथकाशीन्द्रात्मजमेकसनाकस्यात्मजमेपीनाथस्य शिष्येण मलिदेवेन कविना धिरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दामधर्को चतुरधिकशततमोऽध्यायः ॥ * ॐ * ॐ * ॐ *

शा०प०
दा०व०

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सत्रिय है सो कीट बर करत भयो तप धर्म । तास निकट आवत भए पुनि मुनि व्यास सधर्म ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कहत भए इनि बैन व्यास आथकै तास तट । सुनऊ भूप बुधिअँन धर्म पास अरि जाल दर ॥

॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूतमको जो पालिबो सो सत्रियको धर्म । करिकै तू तिहि धर्मको नीति धारिकै धर्म ॥

तदनन्तर तू पायहै विप्रताहि अभिराम । सत्रियको तन त्यागिकै पाणि मोदने जान ॥

॥ * ॥ आभीरकन्द ॥ * ॥

तामें धर्म पसारि । सर्व पापकों टारि ॥ पासु प्रजाकों सर्व । नहिकै नीति अखर्व ॥ भीष्मउवाच ॥

व्यास सुनिके बैन । सुनिकै ए बुधि अँन ॥ धर्म पसारि महान । अधरम टारि सुजान ॥ पालि
प्रजा सह नीति । निशि दिन करिकै प्रीति ॥ चोरेहो दिन नाह । सुनु सधर्म नरनाह ॥

पाय विप्रता पर्मे । सो भो होत सधर्म ॥ तदनन्तर मुनिव्यास । आए पुनि तिहि पास ॥ व्यास
उवाच ॥ पाप करत जन जौन । पाप योनिमे तौन ॥ प्राप्त होत है दस । सुनऊ विप्र बर खस ॥

पुख करत जो नाम । पुण्य योनिमे आम ॥ प्राप्त होयकै भूरि । रहत मोदसो पूरि ॥

अब तू हे द्विज पर्मे । रहिहै सदा सधर्म ॥ कीन्हेंते अभिराम । पुण्यकर्म बुधिधान ॥ पुण्य कर्मके
माहि । रह तू प्राप्त सदाहि ॥ * कीटकउवाच ॥ * तव सु कृपाते व्यास । आनद कर बुधिरास ॥

भए पाप सब दूरि । लह्यो मोदने भूरि ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❀❀❀❀ * ॥

कीट कृपाते व्यासकी पाय विप्रता पस्य । किए यज्ञ बज्र भङ्गवर बर धरमज्ञ सधर्म ॥

तदनन्तर सो ज्ञातभो विधिके लोकहि चार । ब्रह्मपदहि प्रापित भयो सुनऊ सुबुद्धिचकार ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

संपति माहि असंपतिमे औसुख दुख साही धर्म । प्राप्त होनके पुण्य पापहै कारण भूप सधर्म ॥

हमसो पूख्यो जौन तुम कह्यो तुन्हें हम तौन । अब आगे का पृष्टिहो सुनऊ तात बुधिभौन ॥

स्वस्तिश्रीकाशीश्रीमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकबीश्वरात्मजगेकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कृत्विना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे कीटेःपाष्ठाने पञ्चाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * ॥

॥ * ॥ शुभिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विषा अब तप दानमे जेष्ठ होय जो तात । पूहतहो नै आपुसो कही मोहि विख्यात ॥

॥ * ॥ भीष्म उवाच ॥ * ॥

यद्य प्रसङ्गके माहि बर कहत एक इतिहास । सुनऊ तौन भूपाल नहि धर्मपास बुधिरास ॥

चारत्रधूके गेहमे पुरी काशिका माहि । हे मैत्रेय सुव्यासमुनि आए तिनके पाहि ॥

॥ * ॥ हरिगीतोक्तम् ॥ * ॥

शां०
दा०ध०

देखि कै मैत्रेय प्रज्ञा राशिवर मुनि व्यासको ॥ जाय आगेँ स्थाय सादर धरे भूरि हुलासको ॥
भए पूजत व्यासमुनिको प्रेमसोँ बैठाय कै । तषावान बिलोकि शीघ्रहि नीर दीन्हो स्थाय कै ॥
प्याय पहिलेँ व्यासमुनिको आपु पोई जल पीयो । देखि ताके धर्मवरको व्यासमुनि विस्मय
कियो ॥ देखि निश्चित व्यासको सो कहत भो इमि बैन हे । कहा विस्मय कियो हियमे कहे प्रज्ञा
अन हे ॥ * * * * * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

सत्य दान अद्रोह अह ए तीनों मैत्रेय । उत्तम व्रत है मनुजके इनतेँ आनद सोय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ए सुवेदके बैन सुने पूर्व हम ऋषिणसोँ । सुनऊ मणीषा अैन धर्म धुरन्धर प्रज्ञवर ॥

• ॥ * ॥ रामगीतोक्तम् ॥ * ॥

ऋषित नोको देखि करि कै त्वषित तुम मैत्रेय । मोहि मोदित कियो सादर नीर पहिले देय ॥
महत ताते प्राप्त तुमको भयो पुण्य सुजान । सर्वलोकनमाहि तवगति होयगी मतिमान ॥
भयो मैश्वरसङ्ग तेरो देखि पावन दान । हैन विद्या तपउ उत्तम दानसम बुधिमान ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जै हो प्राप्त महान तुम आनदकोँ अभिराम । दान किएँ मनसोँ सहत को न हि आनद माम ॥
स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराज्जधिराज्ज्योहितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
रघुनाथकबोश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजबोपीनाथस्य शिष्येण मण्डिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्म व्यासमैत्रेयसंबादे षष्ठाधिकशततमोऽध्यायः ॥ *
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ भीष्मउवाचा ॥ * ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ भीष्मउवाचा ॥ * ॥

पुनि मैत्रेय सुजान कहत भयो इमि व्यासको ॥ तुम है परस सुजान तातेँ पूछत हौँ कहु ॥

॥ व्यासउवाचा ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो जो इहा होय तुम पूछे सो सो सर्व । जो तुम कहि हो तौन हम सुनि हैं सुबुध अखर्ब ॥
॥ * ॥ मैत्रेयउवाच ॥ * ॥ चरणादोह ॥ * ॥

विद्या जो तपतेँ उत्तम तुम कहत दानकोँ चार । यामे संशय है नही निश्चय भयो उदार ॥
दरय तिहारो पाय कै खाम प्राप्त भो मोहि । हरष भयो हियमाहिँ अति कृपा रावरी जोहि ॥
तव दरशनतेँ होय भो मेरो निमि कस्थान । सुमऊँ व्यास बुधिराय वर कृपाधाम सुखबान ॥
सुन्दरकुसुमे जन्म अह शास्त्र पढन तप पर्न । एकारण ब्राह्मण्यके हैं मुनिव्यास सधर्म ॥

शा०प०
दा०ध०

इन तीनों वर गुणनसो युक्त होय जब दक्ष । अष्ट होत तत्र विप्र हे सुनऊँ व्यासमुनि स्वतः ॥

॥ * ॥ जयकरीखन्द ॥ * ॥

होत दत्त जब विप्र सुजान । तस्मिं लक्ष्म सुर पितर महान् ॥ जैसें चारु सेवने परम । मनुज लक्ष्म
फल महत सधर्म ॥ तिमिही गुणवत द्विजकों चारु । दोन्हें तें सुनु बुद्धि अगार ॥ पावत दाता
फलको स्वतः । निजकै तुमको कहत प्रतत् ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ
गुणयुत जो विप्रन मिलै सुनऊँ व्यास बुधिधाम । तो दाता धनवानको व्यर्थ होत धन नाम ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

जैसें जसर माँहि बोएँ कछु न होत है । तिमिहि कछू फल माँहि मिलत मूर्ख द्विजकों दिई ॥
भूर्ख लेत जो दान तौन परत है नरकमे । सुनऊँ व्यास बुधिनाम दान व्यर्थ नै जात है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

स्वयं दान जो विप्रवर गुणसों युक्त सधर्म । होय बुद्धिकों प्राप्त तो दाताको धन परम ॥
धाते दानहि देत जो गुणवत दानहि लेत । लक्ष्म सु पुण्य समान हैं दोऊ बुद्धिमिकेत ॥

॥ * ॥ जयकरीखन्द ॥ * ॥

जो कुलीन द्विज है अभिराम । तपमे रत निरत रहत ललाम ॥ अरु रत पढत पढावनमाँहि ॥
मिथ्या कबहूँ बोलत नाहि ॥ जैसें ब्राह्मण सुनऊँ सधर्म । पूजन योग्य सर्वदा परम ॥ ॐ ॐ * ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि करि कै नैत्रयको बचन व्यास ए मूष । कहत भए नैत्रयकीं जैसें समुद्र अनूप ॥
तेरी बुद्धि निहारि कै नै भो हर्षित परम । तेई प्रसंशा योग्य है जिनमे सुगुण सधर्म ॥

॥ * ॥ जयकरीखन्द ॥ * ॥

दानहिकी सुप्रसंशा चारु । हम हैं कर सुबुद्धिअगार ॥ तुम तौ तप शास्त्रकी स्वतः ।
करत प्रसंशा हो वर दक्ष ॥ स्वर्ग जायवेको अभिराम । वर साधन तप है बुधिधाम ॥ तपसों
मिलत महत्व सुजान । तपहीसों अब निरत महाना । जो जो इच्छा करि कै परम । करे मनुज तप
सुनऊँ सधर्म ॥ सो सो इच्छा ज्योति सु सिधि । धामे नहि संशय बुद्धिनिधि ॥ नृदतिअमाही रम
जन जौन । गर्भ हनै जो दुर्मतिभौन ॥ औ मदिरापी सुभरणघोर । ए सब सुनऊँ सुबुध भिरघोर ॥
तपसों छूट पापमों भूरि । रहत महत आनदसो पूरि । विद्या सर्व पढो जो होय ॥ बीचउ
करै कर्म जो कोय ॥ तौ अपमानन कीजै तास । तिमिहि तपस्वीको बुधिरास ॥ सुति अरु शास्त्र
पढत जन जौन । अरु जो दान देत बुधिभौन ॥ औ जो करत तपस्या परम । ते सब पूजन
योग्य सधर्म ॥ इहि सुलोकमे सम्यति पाय । रहत नित्य आनदसों हाय ॥ औ परलोकमाँहि
मतिमान । पावत हैं आनन्द महान ॥ अन्नदानमों उत्तम लोक । पावत हैं जन वर बुधिधोक ॥

॥ * ॥ अरिलहन्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०प०

अरु जन जात अदाता जँह जँह । पापत दुःख महत है तँह तँह ॥ नतिवर यामे संग्रय है नहि ।
कहत तुम्है हो गुणि कै हियमहि ॥ * * * ॥ अन्तगुहतामरहन्द ॥ * * * * * ॥

तुम बुद्धिमान महानहौ । अरु थेट तुम कुलदान हो ॥ द्रतवांन औ सुदयाल हो । वर धर्म
कार बिगाल हो ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * ॥
घातँ कौनऊ पापकों प्रापत औ है नाहि । तुमसों कौन्हें बाराता भो सुख मोहियमाहि ॥
सदा सप्रेम निबाहिए अपने कुलको धर्म । यह गृहवांनकों उचित सुनु मैचेय सधर्म ॥

॥ * * * ॥ सोरठा ॥ * * * ॥

ताते सधर्म मांहि प्रवत रहो तुम निगिदिबस । सुनऊँ आपु नम पाहि यह सम और कहु नही ॥
॥ * * * ॥ दोहा ॥ * * * ॥

जो भर्ता निजनारिमे तुष्ट रहन है धर्म । औ निजपतिमे रहति जो तुष्ट नारि सधर्म ॥
तिनकों दुःख न होत है प्राप्त होत कल्याण । यामे संग्रय है नहीं सुनु मैचेय सुजान ॥
अभि प्रभासों जात तम अलसों ज्यों मल जात । तिमिही तप अरु दानसों कल्मष सर्व निलात ॥

॥ * * * ॥ सोरठा ॥ * * * ॥

यह कहि कै मुनि व्यास बुधिरास मैचेयसों । विदा होय सऊँचास जातभए निज धामकों ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह तुम मनमे राखियो कृष्ण-तुन्हें हन जौन । बचन सुने ए व्यासके जोरि पाणि बुधिभान ॥
मथ होय परदक्षिणा करि मैचेय प्रणाम । कहत भयो इमि व्यास सुख पायो तुमतेँ मान ॥
स्त्रिभीकाभीराजमहाराजाधिराजभीउहितनारायणस्याम्नामुगामिना श्रीबन्दीजनकाभीवासि
रघुनाथकभीअराऊजनेकुसुमावस्याऊजनेोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन काविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मौ व्यासमैचेयसम्वादे सप्तमाधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ बुधिष्ठरउवाच ॥ * ॥ जयकरीहन्द ॥ * ॥

उत्तम नारिषको आचार । कहऊ पितामह बुद्धिअणार ॥ भई सुमनको इच्छा धर्म । मेदे
दिवने सुनऊँ सधर्म ॥ * * * * * ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥ * * * * * ॥
कर्मलोकके माहि शशिउल्लो सुतप्रसिनी । ताकों लखि कै पाहि सुमनातिय पूछति भई ॥

॥ * ॥ रामवीतीहन्द ॥ * ॥

कौन नूँ आचारवरसों पापकों करि दूखिआय कै सुरलोकमाहीं रही मुदसों पूरि ॥ तेजसों शिषि
शिखा औसी रही राज सुजानि । प्रभासों अग्नि सुता औसी रही भाय महानि ॥ धारि निर्मल
बसन वैठो चार पाय विमान । औ रहो मै अकित ताकी प्रभा देखि महान ॥ अल्प कौन्हें दान

अप०
दा०ध०

तप औ अत्य कीन्हें नैन । सकत कोऊ आष नहि यह लोकमाहि सत्तम ॥ नारि किहि शुभकर्म
सों यह लोकमाही आष । राजती है कसौ मोलों महत आनन्द पाष ॥ चाप सुमना नारिके
ए शाण्डिली सुनि बैन । ताहि जैसे भई कहती सुनऊँ प्रघाथेंन ॥ धारि कै काषाय बसनहि
सौं न बलकल धारि । सौ जटाकों राशि नहिं इहँकोक आरि नारि ॥ चापवेकों हेतु जो है
कहति हो मै तेहि । सुनऊँ सुमना नारि चिरि कै चित्त मोतन जोहि ॥ कहे कबहुँ मै त्र पतिकौ
अहित बैन कठोर । औ न ताको नैन करि कुष अँन प्रियकी चोर ॥ रही युक्ता पितर देवत विप्र
पूजामाहि । करी काञ्चकी न चुनली कवऊँ काहू पाहि ॥ द्वार वै आषारघारे भई ठाठी मै न ।
औ न काहूसों कहे बज्रवारलौं मै बैन ॥ सुनऊँ सुमना सौ कियो कबहुँ न उन्नत द्वास । औन
काहू सङ्गमे एकान्त बागबिद्यास ॥ आय कै कऊँ उ तो आषत जष सु मो भरताप । अदि कै पैठा
बती ही बिहे आसन चार ॥ जात हो भरतार मेरो नाहि भोजन जौन । रही खाती नाहि मैहूँ
कवऊँ भोजन तौन ॥ कहत हो भरतार करिवे कार्य्य जे जे सर्व । करति ही मै कार्य्य ते ते मुदित
होय अखर्व । पतिसु कौनौकाजको जो ऊतो जात विदेश । होति ही मै बहुत मङ्गलघुक्त तष सु
अश्रेय ॥ सो सुपति परदेशने हो आषतो अबलौन । धारती ही अङ्गनादिक सर्व मै तत्रलौन ॥
करत हो अब शयन पति तव ही जगावति नाहि । रहति ही मै प्रीतियों नर नित्यसेवामाहि ॥
धन्य पियविन अन्य मेरो लख्यो कोउ न गात । करति हो म्हकाजको मै प्रीतियों अषदात ॥
करति सेवा सासुकी सौ ससुरकीही मूरि । करतिहो जो कहत हेसों महत आनदपूरि ॥ करति
नारी जौन हैं यह धर्मकों अभिराम । अरुअतिलौं लहति हैं ते स्वर्गमे सुखराम ॥ किहूँ पाही
धर्मकों यह लोकमाही आष । रहति हो मै सुनऊँ सुमना महतमुदको पाष ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वर तपस्विनी शाण्डिली कहि यहि धर्म ललाम । तँह ही अन्तरध्यान सो होति भई बुधिधाम ॥
पर्व पर्वके माहिँ जो षडि हैं यह आख्यान । स्वर्गलोकमे प्राप्त अँ लहि है मोद महान ॥

लक्ष्मि श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञानुमामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषा
यां महाभारतदर्पणे शास्त्रिपर्वणि दानधर्म्यं सुमनाशाण्डिलीसंवादे अष्टाधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ सुभिक्षिउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

साम दान दोऊनमे अेष्ट होय जोःतात । पूहत हो मै आपुसों कहेँ मोहि निष्पात ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

किते सामवा होय हैं मुदित सुनऊँ मधिपाल । किते दानसों होत हैं मानव मुदित निष्पात ॥

शा०प०
दा०ध०

प्रमादकों सुनु बुधिभौन ॥ गार्द गाथा यम अभिराम । कहे औ सुफल तपके नाम ॥ रमा देवष्टि
पितर सुजान । चिचगुप्त अरु प्रभुवान ॥ सो गाथा सुनिकरि कौ सर्व । ए प्रसन्नता लहत अखर्व ॥
तिहि गाथाके माहो परम । उन्नम कहे ष्टिणके धर्म ॥ सब यज्ञनको फल अभिराम अरु वर फल
दाननको नाम ॥ कहे सर्वहैं सुनु भूपाल । तिन्हें सुनें सुख होत विशाल ॥ दश यज्ञसम होत सु
एक । तैलकार सुनु नृप सबिवेक ॥ तैलकार दशसम एक होत । मदिराकार कहत बुधिपोत ॥
दश मदिराकरके सम जानि । बेध्या एक न संशय आनि ॥ दशबेध्यासम एक भूपाल । मीचकर्म
जो करै विशाल ॥ तासों दान लिएतें परम । दोष होतहै जौन सधर्म ॥ यमगार्द गाथाकों चार ।
सुनें भिटत ते दोष अपार ॥ ताहि पढत जो मनुज अनूप । तास होति बुधि उज्जल भूप ॥ तीर्थ
किए फल जौन महान । औ कीन्हें फल जो गोदान ॥ यज्ञकिए औ विधि सह जौन । वरफल
होत सुनऊ बुधिभौन ॥ ते फलप्राप्त होत अभिराम । पढे सुने यमगाथा आम ॥ छूटतिहैं कसमय
तासर्व । प्राप्त होतहै धर्म अखर्व ॥ यमको गाथाको फल परम । पूर्वहि भूपति तुहैं सधर्म ॥ बरणि
सुनायो हन अभिराम । अब गाथाहि कहतहैं आम ॥ देवदूत एक प्रज्ञावान । कौनऊ काल
माहि मतिमान ॥ गुप्तहोयकै तौन सचैन । कहत भयो मघवाकों वैन ॥ * ॥ देवदूत उवाच ॥ * ॥
वर भेषज अश्विनी कुमार । परम श्रेष्ठ गुणके आगार ॥ तिनकी अज्ञाकों नै पाव ॥ नर
अरु पितर देव सुखदाय ॥ तिनकों नै भो प्राप्त सुरेश । सुनिए हे मुदकार अशेष ॥ करत
आइरें भोजन जौन । औ जो आइ करत बुधिभौन ॥ तिनकों मेथुन करण सधर्म । किहिं कारण
तें वर्जित परम ॥ पृथक पृथक पिण्डनसों तीन । भो विभाग किहिं अर्थ प्रवीन ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

प्रथमपिण्डदीजे किहिकों अरु मध्यम दीजेकाहि । अरुसुतीसरी पिण्डदीजिए काहिकहोअवनाहि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

देवदूत ए वैन कहत भयो सुरराय सों । सुर अरु पितर सचैन सुनिसु प्रन्न सब होत मे ॥
तदनन्तर तिहिकों पितर कहत भए इमि वैन । देवदूत आवऊ निकट परम मनीषासैन ॥

॥ * ॥ आभीरहन्द ॥ * ॥

यह तुम पूछो जौन । प्रन्न परम बुधिभौन ॥ सो है गूढ सुजान । दायक मोद महान ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो जन करिके आइकों रमै तिथाके सङ्ग । औ जो जन भोजन करि सु तियकों करै प्रसङ्ग ॥

आइ कारके पितर तौ एक माससों बास । तिन दोउमके रेतमे करै सुनऊ बुधिरास ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

पिण्डनको विभाग अब कम गहि कहत सखाम । सुनऊ तौन तुम देवदूत वरपरमनीषा धाम ॥

॥ * ॥ रामभीमीकण्ड ॥ * ॥

प्रथम पिण्डा नीर माहीं डारिए अभिराम । द्वितीय पिण्डा दोजिए निज नारिकों बुधिधाम
तृतीय पिण्डाको सु कोजै अभि माहो होम । आइकी यह परम विधि है सुनऊँ बर बुधितोम ॥
पितर होत प्रसन्न कीन्हें आइ यहि विधि परम । बढति सन्तति तिमिहि सम्पति बढत अक्षय शर्मा ॥

॥ * ॥ देवदूतउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पिण्डनको सु भानतुम कह्यो सु काम यहि आम । पूछत हौ एक हेतुमै तौनऊँ कह्यो ललाम ॥

॥ * ॥ अरिलकण्ड ॥ * ॥

प्रथम पिण्ड जल माहीं डारन । पितर सुतिहि सेां किमि मुद धारत ॥ तिहिसों होत प्रसन्न
कौन सुर । यह सुम कह्यो कृपा करिकै तुर ॥ मध्यम पिण्डहि पति अज्ञालहि । पत्नी खाति भूरि
रतिसों यहि ॥ ताको परम कहा है कारण । कहे मोहि करिके निरधारण ॥ तृतीय सुपिण्ड
आइ करिकै बर । अभि माहिं होमतहैं बुधिर ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ*ॐ*ॐ*ॐ* ॥
तास कहा फल होत अरु प्राप्त होत है काहि । यह सुनि के इच्छा भई कह्यो आपु अवगाहि ॥

॥ * ॥ पितरउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तुम यह पूछो जौन सो अति उत्तम प्रश्न है । सुनऊँ परम बुधिभौन याको उत्तर देतहैं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करत प्रशंसा आइकी सुर मुनिके संसुदाय । आइ कर्म उत्तम परम है अति आमद दाय ॥

सुनि करिकै भगवान तें आइ कर्मकों आम । लह्यो मारकण्डेयहै निश्चय परम ललाम ॥
और न कोज आइको जानत निश्चय चार । यामे संशय है नही सुनऊँ सुबुद्धि अगार ॥
तौनऊँ पिण्डा होत है जिनकों प्राप्त सुजान । सो मै तुमसो कहत औ जो फल होत महान ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

पिण्ड जात जल माहीं जोहै । करै प्रसन्न चन्द्रको सोहै ॥ चन्द्र प्रसन्न करै देवनको । औ तिमि
ही पितरनके गणको ॥ जो लहिकै भर्नाकी अज्ञा । पिण्ड खाति है नारि सु प्रज्ञा ॥ पितर देत हैं
ताहि सुनीका । पुत्र सुप्रज्ञ महान हि श्रीको ॥ होमत जौन अधिके माहीं । सुनो तासु फल मेरे
पाहीं ॥ पितर सु यहि प्रसन्नता भारी । करत कामना सिद्धि सुठारी ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥

तौनो पिण्डनको सुफल बर्ण सुनायो सर्व । देवदूत हम तोहि सुन बर मतिमान अखर्व ॥
जो द्विज भोजन करतहै आइ माहि अभिराम । आइ कारके पितरत्वहि सेा प्राप्त होत बुधिधाम ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

मैथुनकीवो बर्जित याते आइ दिवसके माहि । होति खनारी परतियतुल्या यामे संशय नाहि ॥
आइमाहि भोजन करै ह्यै शुचिकरिकै खान । क्रोध न खानै चिन्तमे गहै सुखना महान ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यह विशेष है आहकी उत्तम विधि भूपाला एहि विधिसों जनकों निस्त आनद परम विशाल ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

सरद अरु हेमन्त ऋतुमे अष्टमी तिथि माह । करत इहि विधि आहई जन सुनऊ बर नर
नाह ॥ अष्टकाहे नाम एहि बर आह विधिको पर्माकिए यह विधि पितरक्यै परसन्न करत सशर्म ॥

॥ * ॥ उल्लासकन्द ॥ * ॥

तव प्रश्नमाहि आख्यान एक भूमिपाल औरऊ सुनो । हम कहत तोहि अबगाहिके ताहि
तुम सु हीने गुनो ॥ * * * * ॥ * ॥ चरणाकुलककन्द ॥ * ॥ * * * * ॥

बिद्युत्प्रभ एक परम तपस्वी । रविसम तेजस भरो यशस्वी ॥ प्राप्तहोय मघवाकों बानी ।
कहत भयो जैसे सो ज्ञानी ॥ विद्युत्प्रभउवाच ॥ कीट पिपीलिक अरु मृगजूहा । पक्षीगण अरु
सर्प समूहा ॥ जे अज्ञानी इनकों मारै । ते जन बऊ पातककों धारै ॥ तिनको छूटत पाप महाना ।
कैसें कहो मोहि मघवाना ॥ विद्युत्प्रभकी वाणी सुनिकै । कहत भए मघवा इमि गुणिकै ॥

॥ * ॥ शक्रउवाच ॥ * ॥ अरिलकन्द ॥ * ॥

गङ्गा मया प्रभास तोर्य बर । पुष्कर औ कुरुक्षेत्र कलुषहर ॥ इन तोर्यनको करिके ध्यानहि ।
ही महँ धरिके प्रीति महानहि ॥ विधिसों करत स्नानहै जो जन । छूटि जात पातकसों सोजन ॥
अरु जो जन गो के करि दरशहि । करिके तास पीठिके परसहि ॥ पुनि गहि पुच्छ सु करत प्रण
नहि । सो पावत फल व्रतके मामहि ॥ सर्वहि छूटि जातहै पातका धर्मसु प्राप्त हात दुख घातक ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

तदमन्तर वासवकों बैन । विद्युत्प्रभ भो कहत सचैन ॥ अति सुक्ष्म एक पावन धर्म । कहत
तोहि हँ सुनऊ सशर्म ॥ बटके बलकल सुन्दर च्याय । चारु नीरमे तिन्हें पचाय ॥ प्रथम
कांकुको अबटन खल । लाय अङ्गमाहीं सुन दत्त ॥ पुनि तिहि जलसों कीन्हें स्नान । छूटि
जात सब पाप महान ॥ अरु षष्टिक ओदन अभिराम । खाएँ पयके सङ्ग ललाम ॥ छूटत सब
पापनसों भूरि । रहत परम आनदसों पूरि । औरऊ चारु धर्म एक पर्म ॥ सुनिए निर्जरनाथ
शर्म ॥ तीरथ कुरुक्षेत्रके माहिँ । सुर गुरु जाय शम्भुके पाहि ॥ कहत जतेमै सुख्यो सुतच ।
कहत तान तव पाहि पबित्र ॥ चढिके गिरिवर माहि महान । ऊहँ जोरिके पाणि सुजान ॥ व्रत
करि ठाढो पदसों एक । न्यै करिके जो जग सबिबेक ॥ मारतण्डकों लखै सप्रेम । सो जन निव्यहि
रहत सत्सम ॥ महत कियँ तप लहत सु जौन । फलसो प्राप्त होत बुधिमान ॥ औ उपवासनको
अभिराम । प्रापित होत परमफल मान ॥ दिनकरकी किरणिनसों सर्व । छूटि जात हैं पाप
अखर्व ॥ प्रभा देहमे होति महान । हीन होति नहिँ कबऊँ सुजान ॥ परम महान सुपरमाधान ॥

अति सुखदायक पाय विमान । लसत चन्द्रौ ताके नाह । हर्षमान नै सुनु सुरनाह ॥ दोहा ॥
तदनन्तर सुरवर्गने देवराज सुनुभूप । सुरगुणको पूरत भयो यह वर प्रसन्न अनूप ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ देवराजउवाच ॥ * ॥

मनुजनको जिहि धर्म सो भ्रात होय आनन्द । तौन धर्म हमको कही करि कै कृपा विलन्द ॥
औ ह दोष महान जे कही तौनहँ सर्व । आपु अष्ट धर्मज्ञ हो ब्रह्मा परम अखर्ष ॥

॥ * ॥ रोसाकन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ बृहस्पतिरवाच ॥ * ॥ जे जन बिष्ठा मूच करत है भारतण्डदिशि । औ जे निन्दा उच्य
वायुको करत दिवसनिशि ॥ भएँ बिना प्रज्वलित अग्नि जे होम करत हैं । औ जे मानव अज्ञ
दया नहिँ हिएँ धरत हैं ॥ दुहत बालवत्सा सुधेनको सुनऊँ सचीपति । कहत तौन हम तिन्हे
होत है दोष जौन अति ॥ नो अरु रवि अरु अग्नि वायु मनुजनको तारत । इनको सेवत जौन
तौन नहिँ दुखको धारत ॥ * ॥ * * * * ॥ * ॥ रामगीतोकन्द ॥ * ॥ * * * * ॥

मूच बिष्ठा करत जे नर नारि रविकी ओर । नरक सेवत छियासी तेवर्ष सुर शिर नौर ॥ करत
निन्दा वायुकी है जौन जन अज्ञान । गर्भते गिरि जाति तिनकी प्रजा हे मतिमान ॥ भए विन
प्रज्वलित पावक करत होम सु जौन । यहण ताके हव्यको नहिँ करत शिखि बुधिभौन ॥ बाल
वत्सा धेनुको जन दुग्ध पीवत जौन । लहत हैं आनन्द संन्तिको नही जन तौन ॥ सुनऊ ताते बर्थ
कार्य न कीजिए सुरराय । बर्ज्य कारण किएते जन रहत नित्य अचाय ॥ ता अनन्तर देवता अरु
महतगण ऋषि परम । सर्व ए मिलि सुनऊ भूपति परम प्रसन्न सधर्म ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥

पितरमको पूरत भए जो वृत्तान्त अनूप । सो मै तुमसों कहत हौं सुनऊ युधिष्ठिर भूप ॥
पितर होत परसन्न हैं किहिबिधिसों अभिराम । औ अन्वय किमि होत है आइ प्रदान ललाम ॥
औ मानव किमि होत है रहित सुकृतसों सर्व । यह सुनिवेकी है भई इच्छा परम अखर्ष ॥

॥ * ॥ पितरऊचुः ॥ * ॥ मधुभारकन्द ॥ * ॥

पूषो सु जौन । हमसों सु तौन ॥ हम कहत सर्व । कारण अखर्ष ॥

॥ * ॥ मदनदीपककन्द ॥ * ॥

वर्ष होष सोहित औ अंत सुर विशान । होय वदन पाण्डर औ पुच्छत्यो सुठान ॥ वषभ यहि
सुभातिको सुठार शीलमान । नोक्षषण्ड तासु नाम है बली महान ॥ * ॥ मल्लिकाकन्द ॥ * ॥

नोक्षषण्ड शोष धाम । अष्ट होत सो लक्षान्म । तास दानको महान । जूप लौ सुनो सुजान ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

जे सुजानि विधि बुधजन पाहिँ । तिथिसु अनावस्थाके नाहिँ ॥ पितर निमित्त स प्रीति सधर्म

शा०प० नील वृषभकों होउत पर्न ॥ होत अष्टण ते प्रज्ञाधाम । पितर मोदता पावत मान ॥ दीपदान
द०ध० वर्षामे चाराजे जन करत सुबुद्धि अवादा ॥ तेज अष्टण होतहैं सर्व । हम तिष्ठय करि कहत अखर्ष ॥
एसु परम अक्षय हैं दान । इमतें हैं पाल होत महान ॥ हम सन्तुष्ट रहत हे पर्न । है नहि संशय
सुनऊ सधर्म ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

पुत्र करत उत्पन्न जे धर्म सहित अभिराम । तौंन निकांतर नरकतें पितरखकों बुधिधाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

पितरखके ए बैन सुनि सर्वेन व्हेके परम । बृद्धवार्थ नतिखेन कहतभए खेखे वचन ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

नील वृषभ होखें गुणवाम । अरु वर्षाकेमाहि सुजान ॥ दीपदान कीन्हें अभिराम । होत
कहाफल परम ललाम ॥ पितरजघुः ॥ नीलवृषभकी पुच्छ सुठार । उर्द्ध उछारत जौन सुवार ॥
तिहिसों गार्थ सुनऊ बुधिधाम । साविहजारवर्ष अतिनाम ॥ पावत तृप्ति पितर हैं पर्न । संशय है
नहि सुनऊ सधर्म ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

जौन उठावत अरुसों नदीकूलतें पद । सोमलोककों जात है तातें पितर अग्रह ॥

दीपदान जे करत हैं वर्षामे जन जौन । शोभित शशिलौ होत हैं परमासों जन तौन ॥

मूछरिवारे काष्ठको बर भाजन वनवाय । तामे मधुतिल औ उदक भरि करि कै सुखदाय ॥

आमावस्थामाहि बर जे मानव है देत । तिनकों प्रापित होत हैं पुत्र सुबुद्धिनिकेत ॥

अष्टण होत है तौंन जन पिण्ड देतहैं जौन । सन्ततिसों तिनको सदा भरो रहत है भौज ॥

देवत औ ऋषि मरुतभए पितरनके सुनि बैन । पावत भए महान मुद सुनऊ तात बुधिभौज ॥

स्वस्तिथीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दोजनकाशीवासि

रवुनाथकबोअरात्मजगेकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिषेण मणिदिषेण कविना विरचिते

भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि दानधर्मो दशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ आभोरछन्द ॥ * ॥

तदनन्तर सुर पाल । मुदसों भरो विशाल ॥ विष्णुहि असें बैन । कहत भए बुधिबैन ॥

॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आपु होत सन्तुष्ट किमि कहऊ विष्णु सामन्द । करता हरता जगतको दरता दुःखसिखन्द ॥

सुनि सुरपतिके वचन ए विष्णु परम मुदधाम । कहत भए इमि इन्द्रको सुनऊ भूष अभिराम ॥

॥ * ॥ विष्णुउवाच ॥ * ॥

द्विजको जे जन करत अनादर करत हमरो जौन । श्री जे द्विजको पूजत हैं जन पूजत हतको मैन ॥

जब भोजन करि द्विज उठ तब कीजे परवान । तिमि हा संथाकरि चुके मानव जन बुधिधाम ॥

शा०प०
दा०ध०

कर प्रणाम सु आपने चरणनको सुरराय । नै प्रसन्न अति हेत हैं यहविधि किँ एसचाय ॥
 अरु गोमयसौ लीपि कै चक्राकार सुजान । जपि कै न च सुदर्शन हि ताने दे बक्षिदान ॥
 होत परम सन्तुष्ट हैं कोन्हें यहविधि पर्न । मुददायक मानवनों है यह सुविधि सशर्म ॥
 बानन द्विजकों देखि अरु अलाते उठो बराह । तिनको करत प्रणाम जे मानव सुनु सुरनाह ॥
 कल्मष तिन मानवनोंके दूरि शीघ्र ही होत । कबहुँ तिनको गेहने होत न अशुभ उद्योत ॥
 गोकों औ चल् दल दुमर्हि पूजत जौन हमेश । सब जग पूजें को सुफल तिनको होत सुरेश ॥
 पूजा नै तिनको करी अति प्रसन्न कै लेत । परम होत सन्तुष्ट हैं सुनु वर बुद्धिनिवेत ॥
 ॥ ॐ ॥ घरणादोहा ॥ ॐ ॥

गोकों औ चल्दलकी पूजा सोई हमारी जानियन्या पूजा है न हमारी यह तू निश्चय मानि ॥
 ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चक्र चरख बाराह अरु ब्राह्मण बानन जौन । करत प्रसंशा आपु हो तिनको किनि मुदभान ॥
 ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

सुनि इन्द्रके यह वैन । वर विष्णु आनन्द अँन ॥ हसि कै कछौ इनि भूपसुनु धर्मपाल अनूपा ॥
 ॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

॥ विष्णुउवाच ॥ चक्रसों हम दैत्य मारे बक्रबलके धाम । लई वसुधा दावि ह हम पदनसों
 अभिराम ॥ रूप धरि बाराहको हम भूमि ल्याए इन्द्र । रूप बानन धरि हम जोतो सुबलि
 दैत्येन्द्र ॥ करत इनको प्रसंशा यहि हेतुने हैं पर्न । इन्हें पूजे अजय जनकी होति नाहि सुशर्म ॥
 गुप्त यह वर धर्म तुमको कछौ हम सुरराय । किएते यहि महत धर्म हिँ लहत सुख समुदाय ॥
 ॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ तदनन्तर सुनिए नरनायक । मनुजनको अति आनददायक ॥ कहत
 भए बलदेव धर्म वर । ताहि किँ नशि जात कलुषतर ॥ * ॥ बलदेवउवाच ॥ * ॥ प्रात करै
 उठि गोकें दर्शहि । औ दधि घृत सरसों के परशहि ॥ तिमिहि कांकको दरश किए अति ।
 छूटि जात सब पाप कहत सति ॥ * ॥ देवाऊचुः ॥ * ॥ गूलरिकाष्ठ पात्रकों लहि करि ।
 निर्मल नीर आरु तामहि भरि ॥ तौन नीर करमे लहि पाँवन । उत्तर मुख कै होय सचावन ॥
 व्रत उपवासनके सङ्कल्पहि । करै प्रात तब सुफल अनल्पहि ॥ प्राप्त होत मानवहै मतिवर ।
 कबहुँ होत नजीक न दुखतर ॥ करत जौन इनि होत तास सुर । अति प्रसन्न अरु कामे सिद्धि
 तुर ॥ विन सहस्य किँ फल होत न । यह निश्चय सु किथो मतिपोतन ॥ घरणा दोहा ॥ * ॥
 बलिभिन्ना अरु अर्द्धदीजिएतास पाचसों पाव । तिमिहीदीजिएपितरनको वरतिल अरु उदकसुंढार ॥
 ताम्रपाषाण विन दिए होत न फल अभिराम । गुप्त धर्म यह परम अति कछौ देवतन माम ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ रामगीतोच्छन्द ॥ * ॥

धर्मउवाच ॥ * ॥ अतिथि जाकेँ नेहत औ होय जाय निरास । जाय होय निरास तो शिषि
पितर औ सुर तास ॥ गारि औ भो विप्रकों जो हनत दुर्मतिभौम । औ नही उपकार मानत
मनुज नबीँ जौन ॥ करत औ गुरुनारिकेँ संगँ जौन अज्ञ विहार । होत औतो तिन्हें प्रापित पाप
परम अपार ॥ होत तैसो ताहि प्रापित घोर पाप महान । अतिथिको नहि करत पूजन तौन जन
अज्ञान ॥ * ॥ अग्निउवाच ॥ * ॥ गजको अरु विप्रको अरु अग्निको जन जौन । करत कबहूँ
परम परसों परम दुर्मतिभौन ॥ होत ताकों स्वर्गलौ है अथय अतिहीं भूरि । पितर ताको रहत
हैं अति महत उरसों पूरि ॥ ह्य ताको दियो पावक खेत है नहि परम । रहत तास उदास देवत
देखि भूरि कुकर्म ॥ करत सो है नास बज्रदिन नरकनाहीँ उह । करे ताकोँ कर्म जैसे कवज
नहि करि कहु ॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ बशिष्ठादिक रुत ऋषि वर जाय विधिके पास । करि
प्रदक्षिण सर्व ठाढे भए सहित उलास ॥ ता अतन्तर ब्रह्मज्ञानी अष्विबशिष्ठ सुजान । प्रश्न पूछो
द्रुहिणकों यह मोदकार महान ॥ जौन जन धनहीन ते जन प्रश्नको फल परम । कौन कीन्हें कर्म
पावत कहीँ द्रुहिण सगर्म ॥ सुने वचन बशिष्ठको ए द्रुहिण आनदचैन । कहत भे दनि वैन जैसे
सुनऊँ भय सचैन ॥ * ॥ ब्रह्मोवाच ॥ प्रश्न सुनिवर कियो तुम यह प्रश्न अति अभिराम । सुनऊँ
यह शुभ प्रश्नको तुम चारु उत्तर आम ॥ पैषकी श्रितपक्षमाही रोहणी नक्षत्र । प्राप्त औ तव
ज्ञान करि कै होय परम पवित्र ॥ ओढि कै एकवस्त्र बाहिर करै भूमे सैन । रहे अवसौँ रोषिणी
नृप सुनऊँ आनदचैन ॥ परे शशिकी किरणि तनमे सुधामय अभिराम । होत जनकों ब्रह्मको
फल प्राप्त है बुधिधाम ॥ * ॥ भानुउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * *
अत निस्त्राय अक्षतनमे अञ्जलिने भरि वारि । पूरणमासीने दिष्ट शशिकों प्रीति हि धरि ॥
अग्निहोत्रको महत फल लहत मनुज अभिराम । यामे संशय है नहीँ जानऊँ निज बुधिधाम ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकच्छन्द ॥ * ॥

जे जन आमावस्यामाहीँ । करत विचार हि एमे नाहीँ ॥ काठन हैं बज्र नगसातीकों । सुने
सुतिनकी अशुभगीकों ॥ पात कटे वृक्षएमे जेते । हत्या होय द्विजवकी नेते ॥ तिनि सु अमावस्याने
जो है । करै दन्तधावनकों सो है ॥ पावत पाप एनेको चन्द्रहि । मानत हैं उर भितर विचन्द्रहि ॥
खेत न ह्य देव तिहिकेरो । तापै करै क्रोध बज्रतेरो ॥ करत पितरज क्रोध महान । ताकोँ करत
दुखद अचमाना ॥ तिहिको बाढत वंश नही है । सो पावत नहि मोद कही है ॥ अग्नीउवाच ॥
माजम भद्र मलिन जो राखे । दारहि एने कुर्वै नमि भाखे ॥ राखे आसन अग्निहि मलोना । तिनि
राखे भा मरुकी हीना ॥ ताकेँ मरुतेँ जाल पितर सुर । उल्लसने औ पर्यमाहि सुर ॥ अग्निउवाच ॥
जो सनेस गहि एक बन्धन । दीपक देव करञ्जकडुसतर ॥ तिनि सुवर्षे सासतिपा पावै ।

दीपक धरिकै करै प्रकाशै ॥ वंश बढत है ताको नोको । बढत सुयश अह शशिकी सीको ॥ शां०
॥ * ॥ मार्ग्यउवाच ॥ * ॥ होत पुण्य जो शतमख कोन्हे । तिनमे दान महान सु दीन्हे ॥ प्राप्त सु दा०ध०
पुण्य होत सो क्षत्रियों । कहत महत हम करि निश्चयकों ॥ औ अद्वा करिकै हिय माही । कियो
धर्म ताकी क्षय नाही ॥ गुप्त बात यह हम सु बखानी । जानत याहि महत जे श्रानो ॥ ❀❀❀

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रजसला औ कुष्ठिका औ अपुत्रिका नारि । देव पितरके कार्यमे तिन्हें दीजिए डारि ॥
देवकार्य जो ते लखै देवत लेत न ह्यथ । औ देखै जो पितरकार्यकों लेत पितर नहि क्यथ ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ ॥

रहत चयोदशवर्ष असन्तुष्ट न्है कै परम । भूपति सुनऊ सहर्ष कियो मार्ग्य सिद्धान्त यह ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ धौम्यउवाच ॥ * ॥ भय भाण्ड अह कुक्कुट श्रान । औ खट्ट सुनु बर मतिमान ॥ अप्रसन्न
ए सर्बहि जानु । यहिमे नेकु न संशय आनु ॥ भय भाण्डमे कलिको बास । रहत कहत हैं बर
बुधिरास ॥ आइ कारजौ बर बुधिअंन । सुने कहँ कुक्कुटको बैन ॥ लेत सु पिण्ड पितर तौ नाहि ।
है नहि संशय थाके माहि ॥ तिमही बैन सुनै मखकार । तौ न देव हवि लेत सुढार ॥ आइहि औ
यज्ञ हिं जौ श्रान । देखै तौ सुनु बर मतिमान ॥ पितर लेत नहि कथहि पर्म । औ हविकों नहि
देव संशर्भ ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

आइमाहि औ यज्ञमे विप्र बुलाए जौन । खट्ट दीजै बैठिबे तिनकों नहि बुधिभौन ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

जौन निमंचित विप्र बैठै खट्ट माहि जौ । नष्ट होय तौ क्षिप्र दाताको धन महत सब ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥ यमदग्निहवाच ॥ * ॥

वाजपेय अह अश्वमेध मख करै हजारन पर्म । औ शिर नत करि करै तपस्या जो जन सुनऊँ सधर्म
होय न जाको हृदय जौ शुद्ध सुनऊँ महिपाल । तौ निश्चय परि नरकमे पावै दुःख विशाल ॥
जौ न हृदयकी शुद्धता ता सम कोउ न यज्ञ । हृदय शुद्धतासँ लहत मोद महत जन प्रज्ञ ॥
शक्तु विप्रकों देय जौ शुद्ध हृदयसँ पर्म । ब्रह्मलोककों जाय तौ प्राणी होय सधर्म ॥

॥ * ॥ आभीरकन्द ॥ * ॥

वायुहवाच ॥ * ॥ मनुजकों अभिराम । आवददायक मान ॥ जे हैं धर्म सुढार । ते हम कहत
उदार ॥ औ जे दोष अखर्व । कहत तौमऊँ सर्व ॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀
धारिमास वर्षाके माहि । हीमे करे बोधको नाहि ॥ तिल जल देय सु करिकै खान । दीप

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ अर्धचरणा दोहा ॥ * ॥

तदन्तर देवतम सह पितर सर्व सुनु भूप । पूज्यत भए अरन्धतितिवकीं यह वर धर्म अनूप ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ अरन्धत्युवाच ॥ * ॥

कामा तुम्हरो पाय के मोदकारिणी मान । मै वृद्धा होती मई तपहि करत अभिराम ॥
धर्म परमै कहति हैं सुनऊँ तौन तुम सर्व । जिहिकों कीन्हें लहत हैं मानव मोद अखरब ॥
मनुज अग्रहाशन जे सौ अभिमानि जौन । गुरु तियगमो ब्रह्महा हैं जे दुर्मतिभौन ॥
तिम मनुजमको समुहे कहिए कथऊ न धर्म । बुद्ध होय जिनको हृदय कहिए तिनको परम ॥

॥ * ॥ अधकरोहन्द् ॥ * ॥

प्रातकाल अठिकी बुधिभौन । गोके गृह्णमाहिं अत जौन ॥ शिरकै कुशसें जलको परम । पाणि
जेरिकै प्रथम सधर्म ॥ उत्तरे मोदगृह्णते जौन । शिरकै अपने शिरमे तौन ॥ तीर्थ जिते तिऊ
खोकन नाहि । बसै सुमुनिवर तिमके पाहि ॥ तिनमाही कीन्हें तें खान । जैसे फल वर मिलत
महान ॥ गोमृगोदकसो अभिराम । मिलै सुफल तैसोद नाम ॥ सुनि अरन्धतीके ए बैन ।
पितर तिमिहिं सुर आनद खैन ॥ भए प्रसन्न परम सुनु भूप । मोदकार यह धर्म अनूप ॥ पितामह
उवाच ॥ * ॥ भे प्रसन्न हन सुनि यह धर्म । बढे सदा तेरो तप परम ॥ तदन्तर यम जैसे बैत ॥
पितरनको यह सुर मुदखैन ॥ कहत भए सुनु कुंतीनन्द । धर्मधरन्वर प्रह्न नरेन्द ॥ यमउवाच ॥
चिबगुप्तको कह्यो सुजान । सुनो सर्व तुम धर्म महान ॥ करत अराधन रविको जौन । वर धरमन्न
मनीषा तौन ॥ तप्त होत परलोको नाहि । शास्त्री सूरज संगथ नाहि ॥ दीपदान अरु पानी
दान । दीजे अज्ञा सहित महान ॥ इच उपानह दीजे चार । बोलि वेदविद विप्र सुठार ॥
पुष्करतीर्थमाहि अभिराम । दीजे कपिला बज ललाम ॥ अग्निहोषकों करै सदाहि । आलस
स्थावै मनमे नाहि ॥ है यह परम धर्म अभिराम ॥ अब थाको फल सुनिए नाम ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जात अत्रै परलोकने मानव छोडि शरीर । सुधा प्याससें लहत तब तहां जाय अति पीर ॥
अरुन खगत है भाजि कऊँ जाय सकत है नाहि । प्राप्त होत है महत अति अन्धकारके नाहि ॥
करत सहाय महान अहँ कीन्हें जे हैं धर्म । याने संगथ है नहीं निश्चय जानऊ परम ॥

॥ * ॥ अरणाकुलकहन्द् ॥ * ॥

जे जन देत सु उज्ज्वल पानी । नदी सु पुण्योदका महानी ॥ प्राप्त होति है तिनकों गीकी । अक्षय
वर निर्मल पानीकी ॥ तास सुपासो पीके करी । पावन है अति मुष्टि सुठारी ॥ दीपदिय जिन
जन न सदा ही । तहां तिमिदते देखत नाही ॥ रहत प्रकाशित सूरज जैसे । दीपद रहत प्रकाशित
जैस ॥ होत जौन फल कपिला दीन्हें । सुनऊँ तौन अब मन बिर कीन्हें । पुष्कर तीर्थ नाहि अति
पावन । देत जौन कपिला एक पावन ॥ गो अत सवृष दीएतें जे फल । प्राप्त होत ताको है सो

शा०प० फल ॥ द्विजहत्या सम पातक जेहें । एक कपिला दीन्हें नशते हैं ॥ ताते तीरथ पुष्कर माही ।
दा०ध० विधि सह शुक्लपत्रके माही ॥ अतिविद द्विजकों कपिला दीजे । तास भूरि अति आदर कीजे ॥
रुद्र देत है जो अन नीको । शुभ सखींनो शशिकी सीको ॥ सो परलोक जात भगमाही । पावत
आनद दायक छाही ॥ देत उपानह द्विजकों जोहै । कंठको दुख लहत न सो है ॥ ❀❀❀

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कंषह्ण दीन्हें दानको नाश होत ह नाहिं । कष्टों धर्म यह धर्मवर सह सुर पितर न पाहिं ॥
चित्र गुप्तको धर्म यह धर्मसें सुनि कै परम । सुर सह पितरनकों कहत सुरय भए सशर्म ॥

॥ * ॥ उकळाळन्द ॥ * ॥

जे जन अद्वा वान । व्हे करिके ए दान ॥ द्विजकों देत सप्रीति । ते अन लहत न भोति ॥ ❀❀❀

॥ भीष्मउवाच ॥ दोहा ॥

तदनन्तर देवत पितर औ तिमिहो ऋषि सर्व । पूछत भूतवकों भए यह बर प्रज्ञ अखर्व ॥
जौन अपावन रहत है मानव शुचिता टारि । कैसें तिनकों हनत हो कहौ हमै निरधारि ॥
किहिं उपायसों हनि सकत मनुजनकों तुम नाहि । पूछो है हम जौन तुम कहौ हमारे पाहि ॥

॥ * ॥ भूताऊचुः ॥ * ॥

होत अपावन मनुज है मैथुन करि अरु बान्त । करत आन नहि जे तिन्हें डर हम देत नितान्त ॥
जो जन तरुतर मूलमे सोवत शिरहि लगाय । औ पायत करिके शिर हि करि शिरहाने पाय ॥

औ जे जन अज्ञानते सदाहि आभिष खात । औ शिरपे धरि कै कइ आभिष जो लोजात ॥

जलमे औ जे करत है मल मूत्र हि अज्ञान । परम अपावन मनुज है एते दुर्मातवान ॥

ए सब हनिवे योग्य हैं यामे संशय नाहि । याते इनकों हनत नहि दया करत हियमाहि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अब तुम सुनऊ उपाय जाते हम बधि सकत नहिहै अति आनददाय मनुजनकों निश्चय कहत ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

जेरोचन शिरमाहि लगावत बच राखै करमाहि । तास निकट हम आय कै ताहि बधि सकै नाहि ॥
घृतयुत अक्षत अरु लगावत भालमाहि अन जौन अरु जो आभिष खात कबहूँ नहि मानव वरमतिभात ॥

॥ * ॥ अरिलळन्द ॥ * ॥

मारि सकत नहि तिनहूँकों हम । यह निश्चय-मनमे मानऊ तुम ॥ अग्नि रहति मिथि दिन जिमके
घर । अरु सु आत्रके दांत घर्म बर ॥ अरु भूधरके जलकों कूरम । होय आस म्दहमाहि अनूपम ॥

तिनके म्दहमाही हम जातन । केहूँ पावत तिनके तात न ॥ ❀ ॥ सोरठा ॥ ❀ ॥ ❀❀❀❀

पीतवर्ष वा श्याम होय छाग जाके सदन । औ मांजार खलाम होय तहूँ हम जात नहि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें राखे महस्थी धाम साहि ए सर्व । इततें बाधा सकतह देख न भूत खखर्व ॥

॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

सुनऊँ भूप बुधिखैन तदनन्तर खोकेष वर । कहत भए इनि बैन महत प्रह्न सुरराजको ॥

॥ * ॥ हरिगीतिछन्द ॥ * ॥

अति भरे तेजस महत वर बलवान दिग्गज सर्वहैं । सह शैल कानन समुद्र भूको धरें भार
खखर्वहैं ॥ तुम कहौ रेणुक गजहि सादर इहां ताहि बुलायकै । तिन दिग्गजनकों धर्म पूछै रस
नलमे जायकै ॥ सुनि देव सह दैवाधिपति गुणि विधाताके बैनकों । मजरेणुकहि बुलवाय
करिकै महत बलके खैनकों ॥ इनि कह्यो तासों जाय करिकै रसातलके साहितूँ । वर धर्म
आवऊँ पूछि करिकै दिग्गजनके पाहि तूँ ॥ सुनि सुरसह सुरराजके ए बैन रेणुक गज बलो । भो
जाय पासै दिग्गजनके पूछतो विधिसों भली ॥ * ॥ रेणुकउवाच ॥ * ॥ तुम कहौ हमकों कपा
करिकै गुप्त जो वर धर्महै । हम तुहैं पूछत पाय आज्ञा सुराधिपकी पर्नहै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दिग्गजाजघुः ॥ घरणादोहा ॥ * ॥

कृष्ण पक्षकी अष्टमी कार्तिक वारी जौन । अश्लेषा तामे नखत होय जब सु बुधिभौन ॥

॥ श्लोकः ॥ बलदेवप्रभृतयोथे नागाबलवत्तराः । अनन्ताद्यक्षया नित्यभोगिनः सुमहा
बलाः । तेषां कुलान्वयाथैष महाभूता भुजङ्गमाः ॥ तेने बलिं प्रयच्छन्तु ब्रह्मतेजोभिवृद्धये ॥ यदा
नारायणश्रीमानुज्जहार बसुन्धरां । तत्वसन्तस्य देवस्य धरा मुद्गरतक्षया ॥ * * * * *

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

करिकै यह मंत्र ललाम । गुड ओदनकी बलि अभिराम ॥ नील बस्त्रसों ढापि सुढारू । इह
'फूलनसो अतिही' चारु ॥ रविके अस्त समयमे पर्न । सर्व शोष तजि होय सशर्म ॥ वर बलभीक
साहिं बलि तौन । दीजै सुनऊँ मनीषाभौन ॥ तिहिं बलिसों सब नाग सुजान । पावतहैं वरतुष्टि
महान ॥ सङ्ग भुजङ्गनके अभिराम । हमहूँ सहत तुष्टिहै मान ॥ सब धरणीको भार महानि ।
तातें परत मध्ये है जानि ॥ आङ्गल औ क्षत्री मतिमान । तिनिहि वैश्य अह शूद्र सुजान ॥ इनि
बलिदान करेँ एक वर्ष । पाय महत फल रहत सदर्ष ॥ * * * ॥ सोरठा ॥ * * * * *
सुनि रेणुक यह धर्म धर्मज्ञसु दिग्गजनसों । अवि सुर पितर सशर्म तिन्हें कहत भो आयकै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अवि सुर पितर सुधर्म सुनि साहि प्रसन्नता नाम । पूजत भे रेणुक गजहिं सुनऊँ भूप बुधिधाम ॥

शा०प०
दा०ध०

॥*॥ रामगीतीछन्द ॥*॥

स्वामकार्तिकउवाच ॥ * ॥ कहत है एक धर्म हमहूँ सुनऊँ सो तुम सर्व । ताहि कीन्हे
लहत है आनन्द मनुज अखरब ॥ गीलषण्ड सुवृषभको लहि शृङ्गें अभिराम । घृत्निकाकों लाय
तनमे तीन दिन बुधिधाम ॥ करत जोहै काम ताके पाप छूटत भूरि । अष्टताकों सहत दोऊ
लोकमे मुद पूरि ॥ शूरता ताको न कबहूँ नष्ट होति महान । और ज एक सुनी हमसों धर्म
पर्म सुठान ॥ पाच मूलरिकाष्ठको बनवायकै अभिराम । समभुभरि पकान तामे प्रीतिसों अति
मामा । पूर्णमासी सुतिथिमे जब उदयहोय निशेशादोजिए बलि तौन तव अतिखल मधुर अशेश ॥
अथनोसुत साध्य मारुत भानु औ शितभानु । रुद्र त्रिञ्चदेव अरु बसु लेत सो बलिदान ॥*॥

॥ * ॥ कान्ताछन्द ॥ * ॥

यह जो धर्म । है अति पर्म ॥ करिकै याहि । हियमे चाहि ॥ आनद उह । सोत सुबुद्ध ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

विष्णुउवाच ॥ * ॥ बर ऋषिनके अरु देवतनके कहे जेते धर्म हैं । निति पढत जे अरु सुनत
जे जन लहत ते फल पर्म हैं ॥ नहि होत कबहूँ प्राप्त तिनकों विघ्न कौनऊँ आयके । अरु होत
कबऊँ न प्राप्त साध्यस रहत मुदसो छायके ॥ सब पाप मानसि जात सुषमा होति है बर देह मे ।
दुख नष्ट अहे सब जात है सर सात बज्र सुख गेह मे ॥ सुर पितर तिनके दिए मुदसों ह्य कथ सु
लेत हैं । बर होत हैं बलवान औ सतिमान बुद्धि निकेत हैं ॥ सुर पितर औ ऋषि परस्पर तिन पै
प्रीति करत सु उह हैं । श्रुति शास्त्रमे रत रहत औ रत धर्ममाहीं शुद्ध हैं ॥*॥*॥*॥*॥

* ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह सु धर्म अबदात कह्यो मोहि मुनि व्यास बर । कह्यो तुहैं हम तात परम प्रह्व धरमज्ञतर ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

जशमे जे जन अहावानन । करत सुधर्म कथा दिशि कामन ॥ गुरुद्रोही अरु जो सतिमान न ।
यथा शक्ति जे करत सुदान न ॥ तिनकों कहिए धर्म महानन । ये सुसदायक दुष्टतर भान न ॥
इनकों किए कहुँ अपमान न । होत लसत रबिलौ है आनन ॥*॥*॥*॥*॥*॥*॥*॥*॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञामिनामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकबीश्वरात्मजमोकुलनाथस्यात्मजमोपीनाथस्य शिष्येण मण्डिदेवेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वाणि दानधर्मै एकादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥*॥*॥*॥

॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्रकदेहि किहिको भोजन अरु किहिकों चरियतातामैश्यदेहि औ किहिकों किहिकों शूद्रकहौ विख्यात

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

भीष्मउवाच ॥ * ॥ ब्राह्मण सत्रो वैश्य धर्म । देहिं परस्पर भोजन धर्म ॥ दीज भोजन शूद्रहि
नाहि ॥ औ लीजै न सुन्यो बुध पाहि ॥ अन्न शूद्रको जो जन खात । खात तौन बिष्ठा मनु तात ॥
देहि शूद्रको उत्तम कर्म । ब्राह्मण सत्री वैश्य विधर्म ॥ ताके करत सु भोजन जौन । पचत नरकको
माही तौन ॥ जौन कर्म अपनेकों त्याहि । करै सु शूद्र कर्मने लागि ॥ तौन सर्व हैं शूद्र समान ।
संशय नहि यामे मतिमान ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *
विप्र परोहित जौन अरु करत चिकित्सा जौन । कोतवाल हैं जौन अरु सुनऊँ तात बुधिभौन ॥
योतिषहीकों पढत जे और शास्त्र नहि कोथ । अनध्यायमे पढत जे विप्र धर्मकों गोथ ॥
ते सब शूद्र समान हैं यामे संशय नाहि । निश्चय करिकै कहत हम सुन्यो सुबुधजन पाहिं ॥

॥ * ॥ उकटाकन्द ॥ * ॥

जे द्विज शूद्र समान । सुनऊँ तात मतिमान ॥ तिनके गृहके माहिं । भोजन कीजै नाहिं ॥
जो जन करत अज्ञान । सो दुख लहत महान ॥ तिर्यग योनिहि पाय । निशि दिन रहत अचाया ॥
अन्न वैद्यको जौन । है पुरीषवत तौन ॥ विरचत जौन अगार । तिनको अन्न उदार ॥ छोट रुधिर
सम भूप । भएत सुप्रज्ञ अनूप ॥ * * * * *
विद्यासैं जे करत जीविका अन्न तिनऊँको जौन । शूद्र अन्नहीके समान है यामें वर्जित तौन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो जन चुगली करत है तिनको अन्न सुज्ञान । लीन्हें द्विजहत्या लगति बर बुध भएत महान ॥
मगरीको रक्षा करत जो द्विज सुनु मतिमान । अन्न लिए ताको खपच होत महत अधमान ॥
गो द्विजकों जो हनत है मदिरा पीवत जौन । औ गुरुनारीमे रमै जो जन दुर्मतिभौन ॥
भोजन तिनके अन्नको कीन्हें ते महिपाल । महत दत्त ते कहत सो रत्नस छोट विशाल ॥

॥ * ॥ अरिलकन्द ॥ * ॥

धरोहरिहि जन जौन कृपावत । ताको अथय जयत सब गावत । छेत अन्न ताको है जो जन ।
भिन्न योनिकों पावत सो जन ॥ * * * * *
कुलटा तियको अन्न जो सो है मूत्र समान । यामें कबज्जन लीजिए भएत सुबुद्ध महान ॥

॥ * ॥ तोमरकन्द ॥ * ॥

द्विज शस्त्र धारत जौन । सम शूद्रके है तौन ॥ सुनु अन्न तिहितें तास । नहि लीजिए बुधिरास ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

दोष अनादर अन्न तहां न भोजन कीजिए । बरबुध भएत पवित्र औ बिन जाये मनुजके ॥
अन्न कियो तुम जौन ताको उत्तर हम दयो । सुनऊँ तात बुधिभौन अब आगे का पृच्छि हौं ॥

शा०प०
दा०ध०

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीबासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
भाषार्था महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे द्वादश्याधिकशततमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दान लिए भोजन किए होत कलुष है जौन । सो किमि कूटत द्विजनको कहो तात बुधिमान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

दान लिए भोजन किए होत कलुष है जौन । सो कूटत जिहि कर्मसों सुनऊँ कहत हम तौन ॥

* ॥ रामगोतीरुन्द ॥ * ॥

अधिकों प्रज्वलित करिकै समिधसों अभिराम । करेँ होमहि जपि सु गायत्री सुनो बुधि
धाम ॥ होत जो है कलुष द्विजकों लिएँ घृत तिल दान । कूटि सो सब जातहै मतिमान कहत
महान ॥ दान लोन्हें मांसको अरु लवण घृतको पर्भ । होत जो है कलुष द्विजको सुनऊँ तात
सधर्म ॥ लेय जबसों दान तबसों रवि उदयलौ तात । रहें ठाढ़ो होत पावन पाप सो नसि जात ॥
दान कर्मको लिएतें लहत जो अघ विप्र । दान सो विख्यात कोन्हें जगत मांही क्षिप्र ॥ औ सु
गायत्री जपेसों कूटि सो अध जाय । होत पावन विप्रहै सुनु धर्मधर नरराय । तिमिहि नारो दान
लोन्हें बसन दान अनूप । औ लिएँ धन और पातक होत जो है भूप ॥ जपेँ गायत्री सु कोन्हें
दानकों विख्यात । नष्ट सो न्है जात पातक भएत बुध अबदात ॥ लिएँ पायसदान और बर अन्न
दान सुमान । तैल दांनहि लिएते अरु लिएँ इक्षुक दान ॥ होत जो है पापसों त्रयकाल कोन्हें
ज्ञान । कूटिसो सब जातहै सुनु भूपवर मतिमान ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

जावक जल फल दुग्ध दधि अरु सुफूल अभिराम । लोन्हें दानको दान अघ होत विप्रकों नाम ॥

सो अघ गायत्री जपे कूटि जातहै सर्व । यामे संग्रह है नहीं वृषवर कहत अखर्व ॥

लिए क्रियामे मृतककी बस्त्र उपानह दांन । होत प्राप्तहै विप्रकों पातक जौन महाम ॥
करे तपस्या शत बरष धनमे जाय एकान्त । कूटत पातक तौनहै सुनिए बर क्षितिकान्त ॥

॥ * ॥ शेरठा ॥ * ॥

लिए चेषमे दान होत दोष जो द्विजनकों । सो कूटत मतिमान कोन्हें ते उपवास त्रय ॥
बन्दी खानें माह सूतक प्रापति होत जो । सुनिए बर नरनाह कूटत है त्रय व्रत किए ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दृष्यपत्तमे आहमे करत सुभोजन जौन । अष्ट प्रहरको व्रत किए कूटत अघ सों तौन ॥
भोजन कोजे आहमे जिहि दिनमे नरनाह । संध्या पूजा जप नही कोजे तिन दिन माह ॥

॥ * ॥ चरबादोहा ॥ * ॥

शा०प०

दा०ध०

दूतियवेर भोजन कीजे गहि कहत सुबुध अबदात। यहीहेतु अपराह्णमाहि हे आह करणको तात॥

॥ * ॥ रामगीतीहृन्द ॥ * ॥

वेदमाहो वृत्तकके दिन तीक्ष्णरेने जैन । करत भोजन बिप्र है सो सुमऊ वर बुधिभौम ॥ करै
द्वादशदिवससौ निति ज्ञान तीनऊकास । होत हैतव मुह भूपति कहत विश्व विशाल ॥ है। हि
अव गतदिवस द्वादश तब सु करि बऊ ज्ञान । सहित आदर द्विजनको बुलवाय कै मतिमान ॥
दिए भोजन तिन्है छूटत सर्व अघसों भूरि । महत सहि सनमान भूमे रहत सुखसों पूरि ॥ वृत्त
कके दशदिवससौ द्विज करै भोजन जैन । पूर्व जो विधि कही अघसों नुचत कीन्हेतौन ॥
शूद्रसँन एकपँक्तिने द्विज करै भोजन जैन । महत ताको होत पातक प्राप्त सुनु बुधिभौम ॥
ताम पातक छूटिकेकी है उपाय न भूय । करै पै स्नानादिविधिकों कहत प्रज्ञ अनूप ॥ वैश्यके सँन
करै भोजन होत जो अघ तात । किएतें उपवास त्रयदिन छूटि सो अघ जात ॥ सचियनके सँन
किए भोजन पँक्तिमाहो एक । ऐत जो अघ प्राप्त द्विजको सुमऊ नृप सबिवेक ॥ छूटि सो अघ
जात है सब किए ज्ञान सबल । कहत मतिवर सुनऊ मरवर है न संशय अच ॥ * * * * *

॥ * ॥ आभोरहृन्द ॥ * ॥

पूछो हमको जैन । कह्यो तुन्है हम तौन ॥ सुनऊ भूप बुधिधाम । धर्मकार अभिराम ॥
स्वप्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाश्रानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजनेकुलनाथपुत्रनेपीनाथस्य शिष्येण महिदेवेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे श्रान्तिपर्वणि दानधर्म त्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ दोहा ॥ * ॥

तपहू कीन्हे सो दिए दानऊ उत्तम तात । स्वर्गलोकको जात जन है अगोक अबदात ॥
तिम दीउनेने अति हि जो अष्ट होय भूपास । कह्यो तौन मोको सु गुनि करि कै जपा विशाल ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ सेरठा ॥ * ॥

तप सो उत्तम दान हेतो दोऊसमहि पै । वर महान मतिमान करत प्रसंशा दानकी ॥

जे जे उत्तम दान करि गए स्वर्गने पर्न । ते ते तुमको कहत हैं भूपति सुनऊ सधर्म ॥

। * ॥ नल्लिकाहृन्द ॥ * ॥

अधिपुत्र ब्रह्मज्ञान । देय शिष्यको सुजान ॥ स्वर्गलोकको गएसु । भूरि मोदसो रएसु ॥

॥ * ॥ तुनाहृन्द ॥

शिवि वर मरराजा । परम धरम काजा ॥ सुनि सुबचनकीके । शुचि द्विज सुमतीके ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शा०प०
दा०भ०

शुक्त धर्म अह अर्धसौ अह सुखकारक धर्म । होय महत आश्चर्य सुनि जाको मात धर्म ॥
 शैशो वर दृष्टान्त अति सुनिवेको महिपाल । भई हमारे हृदयने इच्छा परम विशाल ॥
 नारायण आनन्दकर दन्ददूरिकर सर्व । बैठे हेतव पास अह भूपति और अखर्ष ॥
 कहिए तिनको सानुहे पूछत हो मै जान । बन्ना आपु महान हो सुनऊँ तात बुधिमान ॥
 भूप युधिष्ठिरके बचन सुनि ए भीषम दक्ष । कै प्रसन्न तिनको कहत जैसे भए प्रतक्ष ॥

॥ ॐ ॥ भीष्मउवाच ॥ ॐ ॥

नारायणको पूर्व वर जो हम सुन्यो प्रभाव । सो मै तुमको कहत हौं सुनु सुप्रज्ञ नरराव ॥
 त्रिजाको अह मोदकर पशुपतिको रुन्नाद । यहि प्रसन्नमे कहत हौं सो सुनु छोडि प्रमाद ॥
 तपश्चर बारहवर्षको करत भए हरि भूप । पर्वत नारद लखनको आए तिन्हे अनूप ॥
 दबल काश्यप धौल्य अह ध्यास परम बुधिराश । और सुच्छवि शिष्यन सहित आवत भे सकलाश ॥
 आसन हरित विद्याय कै कुशके चार नबान । बैठाए सब ऋषिणको हरि सादर सुप्रवीन ॥
 दरशन करि कै कृष्णको नारदादि ऋषि सर्व । सुनहू प्रज्ञ धरमज्ञ नृप आनद भरे अखर्व ॥
 कछूबेरने सुरमको अह भूपनको धर्म । कथा करत भे सर्व ऋषि हरिके सङ्ग सधर्म ॥
 तदनन्तर नृप कृष्णके मुखते परम विशाल । अतिहि महान प्रचण्ड अति कठो सुअग्नि कराल ॥

॥ * ॥ हरिनितीकन्द ॥ * ॥

तरुलता जीवन सहित शैलहि अग्निसो जारत भयो । सब करत हाहाकार भो गए जीवको
 दुखसो रयो ॥ तिहिके अनन्तर जारि शैलहि कृष्णपाहीं आय कै । पद परगि सोहें भयो ठाढो
 होत शिष्य सुभायकै ॥ सुनु भूप हरि तिहिके अनन्तर दग्ध शैलहि देखि कौ करि दयो जैसो रह्यो
 धूरव परमभासो भेखिकै । सब मुनिन विस्वय कियो अद्भूत यह सुचरित निहारि कै ॥ हरि
 देखि विस्मित तिन्हे जैसे कहत भे निर्धारि कै । तुम शास्त्रविद कै परम मनमे महत विस्मित क्यों
 गहै । यह भयो हे सन्देह मम हिय सर्व तुम हमको कहौ ॥ सुनि कृष्णके बँन ए ऋषिष्टन्द
 आनदसो पन । यहि भांति सोहे कृष्णके सुनु भूप ते कहिबे लगे ॥ ॐ ॥ ऋषयजचु ॥ ॐ ॥
 तुम सजत सब हौं लोकको अह करत तुम ही नाश हो । जल तुमहि करषत तुमहि वरषत तुम
 हि करत प्रकाश हो ॥ हे चराचर भुवमांति तिनके मात औ पित धर्म हो । करि कृपा जनपर
 महत प्रभु वर तुमहि करत सधर्म हो ॥ तब वदने जो अग्नि निकस्यो तास हेतु कृपासजु ।
 हमको कहौ संदेह ताते मिटै परम विशालजु ॥ ए बचन सुनि सब ऋषिणके हरि सदन वर
 आनन्दको इति भए कहते बचन तिनको हरण जन दुखवृन्दके ॥ वासुदेवउवाच ॥ यह हे हमारे
 तेव परम प्रचण्ड जो मुखते कठो । तिहिसें जता हम दुखजीवन सहित यह गिरि हो दठो ॥

शा०प० ऋषि ऊठे गिरिके माहि ते ते भए पीडित सर्व हे । अर तुमऊँ सब ऋषिवर तपस्वी भए व्यथित
दा०प० अखर्वहे ॥ इम आपने सम सुवन लहिबेकी सुदच्छा करि महा । इहिं आय भूधरमाहि हन तपके
सुमारमकों महा ॥ तिहिके अनन्तर आतमा मम अग्नि रूप हि धारि कैगो वरद शिवके पास हैं
जहँ महत मोद पसारि कै ॥ लखि शम्भु नेरे तेजकों यहि भांतियों कहतो भयो । मन परम आध
तेजसों तब पुत्र नै है मुदरयो ॥ वरदान लै कै शम्भुसों यह तेज मन सो आध कै । यहि शिष्यसों
मम चरण गो मन देहमाहि समाय कै ॥ मम वदनमें जो कठो पावक तास कारण जान है । तुम
हरऊ मति हियमाहि नेकऊ कछो तुमकों तौन है । तुम तपस्वी हो परम अर वर ज्ञान धारण
किए तौ । गति तुम्हारी सरबन है अतिधरे आनद हिए हो ॥ ॐ ॐ ॐ ॥ सोरठा ॥ ॐ ॐ ॐ
भूने वा दिवमाहि सुन्यो होय आश्चर्यजो । कहऊ तौन मन पाहि बुद्धिभौन तुम सर्व हो ॥
वासुदेवके बैन सुनि कै ए वर सर्व ऋषि । सुनऊँ तात बुधिचैन होत भए हरपित परम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजाकरिके कृष्णकों पडि कै सव अनूप । अति प्रसन्न करते भए सुनऊँ युधिष्ठिर भूप ॥
तदनन्तर ऋषि सर्व परम प्रज्ञ धरमज्ञ वर । कोविद जानि अखर्व नारदकों इम कहत मे ॥

॥ * ॥ अषयजघुः ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अचिरज जैसो होत भो कृष्णमाहि अभिराम । तैसोई भो हो परम गिरि हिमवतमे माम ॥
कहो तौन आश्चर्य तुम हो तुम विज्ञ महांन । सुनि कै नारद ए वचन कहत भए मतिमान ॥

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ रामगीतीइन्द ॥ * ॥

परम उन्नत भूमिधर हिमवान वर रमणीय । आस परमा देखि किहिको मुदित होत न हीय ॥
फूल फलसों युक्त औ युत औषधनसों चार । करति ताने अमरा गन्धर्ववृन्द विहार ॥ यक्ष
किन्नर रक्ष ताने करत केते वास । अक्षमुख अर बाजिमुख हैं किते करत बिलास ॥ व्याघ्रमुख है
किते केते सिंहमुख तिहमाहि । किते जम्बुकवदन ताकों कोडि कऊ नहि जाहि ॥ रुद्र भेदि
शृदङ्गकी धुनि रहो जामे पूरि । करत जामे विहग हैं रव भरे आनद भूरी ॥ फूल फलसों युक्त जामे
लसत लस महान । धमर मुञ्जत फिरत जामे भए अति मुदवान ॥ देवतानल अक्षत जामे लसत
भासों उह । किते बिषधर यक्ष केते किते मुनिगण शुद्ध ॥ लोकपाल ऊ फिरत बिहरत भरे भूरी
अनन्दामरत औ बसु रहत अर बज्ज पिशाचनके वृन्द ॥ चार जैसो अचल है हिमवान ताने पर्न ।
तपसा वर भए करते गौरिनपथ समर्थ ॥ व्याघ्रधर्महि किए धारण औ धरे बज्जथास । अमुर
गणकों वासकर्ता भीमरूप पिशाच ॥ देखि तिनकों महत ऋषिवर करत मे परनाम । नस नै कै
सव पडि कै भरे आनंदमान ॥ तत अनन्तर शैल कन्या परष धन्याचार । शंभुसम व्रतधारिणी
रंग लिए बज्ज सुरदार ॥ औ लिए बज्ज सरु माझी नदी पातक हर्षि । भरी निर्मल गौरसोवद

परम पावन कर्षी॥सर्व तीर्थमको सु जससो भरो अति अभिराम । कलस लीन्हें हेनको करमाहि
 भाग्य नाम ॥ हिए हरपति सुमन वरवति शंभुजूको पाहि । भई आवति प्रेम धारण किए
 हियके माहि ॥ तत अनन्तर हासकीजि शंभुजूके नैन । भई मूढति सोत्र गिरिजा महत आनद
 येन ॥ भए मुद्रित नैन तीजो नैन वरन विशाल । भाल माही होत भो रविके समान कराल ॥
 प्रलय कीसी अक्रिजने कडी ज्वाला भूरि । सो जरावति भई गिरि हिमवानहि चञ्चुदिशि पूरि ॥
 दोस पावक सहस्रतिमकी नैन ऐसे सर्व । देखि तिनको धारि करिके मन्ताहि अखर्व ॥ जोरि
 कर रहे खरीसेहे भई करति प्रणाम । जगत लखि हिमवानगिरिको भयो दुख अति नाम ॥ जते
 जते जीव गिरि हिमवान माही नौना भए आवत शंभु यूके पास तुर करि गौन ॥ ता अनन्तर तौन
 दादबे भागको सौं ज्वाला । भई परसति व्योमको अति भई घण्टु विशाल ॥ जणहि माही दग्ध
 कीहो सर्व गिरि हिमवान । साता वृक्षम सहित पक्षिणके समूह महान ॥ ताहि गिरिजा देखिके
 पुनि जोरि होऊपानि । भई सोछे खरी करिके सजल नैन सुजानि ॥ देखि विकला उमाको अति
 शूलपाहि द्वाला । ललत भे हिमवानको करि कृपा परम विशाल ॥ भयो ताते पूर्ववत हिमवान
 गिरि अभिरामापूर्वकाल धृत विपिन सह सह विहग वृन्द ललाम ॥ पूर्ववत लखि गिरिहि गिरिजा
 अति प्रसन्नसु होय । भई कहती नैन ऐसे शंभु सोछें जोय ॥ * ॥ उमाउवाच ॥ * ॥ सुनऊ शङ्कर
 भयोहै एक नो हिए सन्देह । दूर कीजे नौन तुम कहि भूरि सहित सनेह ॥ भयो तव सु ललाटने
 किहि अबे तीजो नैना सो कियो किहि अर्थ गिरि करि दग्ध परम अचैन ॥ कियो पुनि किहि अर्थ
 गिरिको पूर्ववत अभिराम । जता वृक्षण सहित पक्षिण लच्छ परमाधाम ॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥
 वास्यतेते लए लोचन गौरि मूढ हमार । ह्यो ताते लोक माही तिमिर परम अपार ॥ सुनऊ
 गिरिजे भई ताते प्रजा विकला सर्व । नाशिकेको तिमिर तव हन तमित्य नैन अखर्व ॥ करत भे
 उम्रन नैजस भरो अतिही भूरि । महत तप्त प्रकास भूने गयो अऊधा पूरि ॥ तव पिता हिमवान
 तिहिके तीजसो अतिवह । दग्धहोता भयो सणने सहित लन तर दुपह ॥ पूर्ववत पुनि कियो गिरि
 हन तव सुखीके काय । मस्तिमतीको देखिके हन भरे प्रीति दराज ॥ उमाउवाच ॥ * चतुर्मुख
 तुम भए कैसे कहीहै ईशान । अर सु धारिऊ वदनने तव तीन वर जा वान ॥ वदन दक्षिण
 चोरको सो चोरहै अतिवर्ष । सो कही किमि कष्टमे तव प्रभा मील अखर्व ॥ धरै रहत पिनाक
 करमे गित्यहो किहि काम । सो कही किहि अर्थहो तुम अडाधारे मान ॥ ब्रह्मचारी रहतहो
 तुम सदाही अति अर्थ कहीजोको कयाकरिके सुनऊ शंभु समर्थ ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥
 नैन सुनि गिरि सुताको ईशान ए अचरान । ज्ञानभे वरसक अतिही सुनऊ कुन्तीतमता । तत अनन्तर
 भए कहते गौरि तौ भनि नैन अचरान उवाच वर शंभु आनद येन ॥ भए है जिहि हनु

शा०प०
दा०ध०
सों हम चतुर्मुख हेवान । औ भयो जिनि घोर मेरो बदन दक्षिण नाम ॥ हेतु तो सों सर्वे सो
हम कहैं वे हे वास । सुनें सों तो प्रण सो दिय भयो हर्ष विशाल ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सब रत्नको सार छै तिलभरि अभिराम । विरधीही लोकेष एक परम सुन्दरी बाम ॥
ताको नाम तिलोत्तमा धरत भए सुनु वार । भरी महत बर गुणन सों सब अङ्ग तास सुठार ॥
सोमो मनहिं सुभावती करिकै भाव प्रकास । जो तन खलि मुसकावती भई आवती पास ॥
जिहिं जिहिं खोर फिरी सु वह नम समीप बरबामातिहिंतिहिंखोरभए बदन मेरे परम खलान ॥

यह कारण ते मै भयो चतुर्बदन हे वाम । यामे संशय है नहीं गिरि नन्दनि अभिराम ॥
पालत हा सुरपति यदहि पूर्व बदन सों धर्म । उत्तर मुखसों रमत हौं तो सक नाहिं चर्म ॥
पश्चिम मुख सों देत हौं जीवनको आनन्द । दक्षिण मुख सों इनत हौं प्रजा देयकै रन्द ॥
यह कारण ते बदन त्रय मेरे हें श्रीमान । औ गिरि नन्दनि घोर है दक्षिण बदन महान ॥
लोकनके हित अर्थ मै धरें जटा हौं नाम । सदा ब्रह्मचारी रहत कहत सत्य हे वाम ॥
देवनकी रक्षा अर्थ मै हो धरें पिनाक । होत वृन्द दानवनके जाको देखि प्रयाह ॥
पूर्व बज्र मास्यो रह्यो मो ऊपर सुरपाल । ताते मेरे कण्ठमे भई नीलता बाल ॥

॥ * ॥ उमाउवाच ॥ * ॥

बाहन तजिकै खौर सब प्रभामान बलवानाको । बाहन अपनो कियो वृषभ कह्यु मतिमान ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥

करत भए उत्पन्न बर सुरभीको लोकेश । तिहि सुरभी ते खौर बज्र सुरभी भई सु बेस ॥

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

तिनके बहनको उच्छिष्ट सुकोण आयकै वाम । परो हमारे ऊपर ताते जह करिकै हम नाम ॥
दग्ध करी सुरभीनको तब सु प्रजापति आयादूरि कोभमे मेरो कियो दैकै वृषभ सपाव ॥

॥ * ॥ बरवैहन्द ॥ * ॥

वृषभ भयो तब सों बहन चार । कह्यो जौन हम जो ते पूको दाह ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ उमाउवाच ॥ * ॥ तोभरहन्द ॥ * ॥

दिव नाहिं अति अभिराम । मुख नामके नव धाव ॥ तजि तौम हे तुम सर्व । सममान
नाहिं अखर्य ॥ किहिं अर्थ करत सुवास । कहि ए सु आनद रास ॥ सममान होत नलीन ।
तिहिं नाहि नित्य नवीन ॥ बज्र जर्त हें शय आय । सुरभ्रंता बज्र शाय ॥ सुनि नौरिके शिव बैन ।
कह ते भए मुदखैन ॥ *~*~*~*~*~*~* ॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ *~*~*~*~*~*~* ॥ * ॥ *~*~*~*~*~*~*
देखत पावन धाम । भूके नाहि महान ॥ फिरत भयो सरबज । पै सममान पवित्र ॥ समस्थान

नहि कोय । कहुँ लखि पस्यो जोय ॥ समशानेके नाहिँ । रहत सुभूत सदाहिँ ॥ विन भूतन हम पर्नै ।
कोऊँ न रहत समर्न ॥ याते हम हे दाराबर सम शान सुठार ॥ ताबे कीन्हो वास ॥ तैके सहित ऊलास ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ उमाउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

शहर जो मै संगथ कीन्हो । ताको, आपु दूर करि दीन्हो ॥ चारिऊ बर्णनके अब धर्मै । मो
को कसो कृपा करि पर्नै ॥ सुनिकै यह सु उमाकी बानी । बोले शहर आनद दानी ॥ श्रीमगवान
उवाच ॥ * ॥ ब्राह्मण हैं सु देव धरणीके । वेद शाल विद शुचि वर धोके ॥ विधिसो उपवासनको
कीबो । अब सुर पूजाने मन दीवो ॥ यह सु बिप्रको नित्य धर्म होयाहि किँ फल भिन्नत पर्नैहे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धर्म श्रिया उपनयन अब व्रत आचरण ललाम । इन सर्वनसो होत द्विज सुनु हे सुन्दरीबाम ॥
जान धम सो युक्त द्विज तौन ब्रह्म पद लेत । रहित धम सो जौन द्विज सो दुख सहतबचेत ॥

॥ * ॥ रामगीतीकण्ड ॥ * ॥

पढे वेदहि न्हे अलेदहि नसता नहि भूरि । करै तीनऊँ काल संध्या होथ धिर मुद पूरि ॥
देय जो गुरुदेव आशा करै तौन सप्रेम । मागि स्थाबै नित्य भिन्ना करै होम सनेम ॥ ता अनन्तर
पठन करि गुरुकी सु आशा पाय । ब्रह्मचारज व्रतहि तजिकै सहित विधि सुखदाय ॥ ग्रहण
नारीको करै गुणसो सुठारो लेखि । सत्य बोखै नित्य आदर करे अतिथिहि देखि ॥ लेय अन्न न
अन्नको थर खखै नहिँ परदार । अग्नि होचहि करै विधिधत विप्र बुधि आगार ॥ कबळ हिंसाको
करै नहि दया धरि हिय नाहि । भृत्य जनको देय भोजन करै जोधहि नाहि ॥ देवताकी करि
सु पूजा देय पुनि बलि पर्नै । कह्यो हम द्विजमृहीको यह अल्प तोको धर्म ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
द्विधिको जो धर्मवर सुखदायक अभिराम । तौन धर्म अब कहतहौं मन लगाय सुनु बाम ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातकण्ड ॥ * ॥

प्रजाको सुपालै गहँ नीति नीकी । नहीं हौं न देई तिकी भोन जोकी ॥ सदाहीं प्रजासो कृपा
अंश लीकै । सु राखै सप्रेमै महा मोद दैकै ॥ महीपाल धर्मात्मा जो विशालै । गहँ नीति आछो
प्रजाको सु पालै ॥ भली होति है कीर्ति जाकी महीनै । नहीं तो हिया भूठबानी कहीनै ॥ पढे
वेद जो देय दानै मझावै । करै अग्निहोत्रे अग्नि नित्य भानै ॥ महीपाल सो धर्मसो युक्त न्हे कै ।
रहै भूमिसाहीं महामोद म्हेकै ॥ निषाको गहँही रहै धर्मबारी । करै यज्ञको रीतिसो हे सुठार ॥
सदा भृत्यको इन्द्र राखै सगर्भै । तजै ऊठ बोखै सदा सत्य पर्नै ॥ महीमाहि कोज करै दीप जैसो ।
करै राजकी नीतिसो दख तैसो ॥ सुरक्षा करै दीनकी धारि दाया । गहँ बर्ष तापै करै नित्य
खाया ॥ गंज विप्र काजै करै सुदमाही । करै जीवने लेकहुँ कोभ नाही ॥ * ॥ उकटाकण्ड ॥

शा०प०
दा०ध०

यह क्षत्रियको प्राक। धर्म परम है दाह ॥ करत सु पाकों जैन । सहत मोद बज नाम ॥
अज्ञानेध तें लोक। जैन सु मिलात अज्ञेक ॥ तीन लोक अभिराम । किए मिलात यह नाम ॥ ३

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

द्विजको अह क्षत्रियको कछो धर्म हम चार । अवतोंकें जे वैश्यको धर्म कहत हौं दाह ॥

प्रभुपाखै खेतो करै परै वेद दे दाह । गहि सुमार्ग वासिज्यकों करै वैश्य मतिमान ॥

इन्द्रिणको निग्रह करै अतिबहि भोजन देष । विप्रनकों आए महत आदर करिके लेष ॥

सविधि अविशेषहि करै तैसाहि बेचै नाहिं । यह सुधर्म है वैश्यको कछोरौ मति तब पराहिं ॥

सेवा तीनऊँ वर्णको करै शूद्र हे वान । जीतै इन्द्रिनकों सदा बोलै सब खसान ॥

अतिथिऊकी सेवा करै आए तें गहि प्रेम । अह देवनको द्विजनकी पूजा करै समे ॥

यह सुधर्म है शूद्रको कीन्हे तें यह परम । शूद्र सहत है महत फल नित्यहि रहत सगर्भ ॥

धर्म सुचारिऊ वर्णको तोंकों कछो बखानि । अब आगे का पूछिहै बिरि नंदनी सुजानि ॥

॥ ॥ उभाउवाच ॥ ॥

धर्म सुचारिऊ वर्णको कछो मोहि अबदात । अब क्षत्रियके धर्मकों कछो आयु बिल्यात ॥

॥ * ॥ महेश्वर उवाच ॥ * ॥

धर्म क्षत्रियकों जैन है कहत तीन हम सर्व । जाहि किएसों महत क्षत्रिय सिद्धिहि सहत अखर्व ॥

पय पीवन जब लगत हैं बहुरा होय सगर्भ । निकसत जिनके बदनते फेण दुहैं दिशि परम ॥

तिनकों जे क्षत्रिय पियत हैं फेणप तिनको नाम । सर्गमाहि ते प्राप्त है सहत मोदकों नाम ॥

ब्रह्मा पूरव तप कियो फेण पीयकै परम । तिहिते परम महत्त्वकों प्राप्ति भयो सधर्म ॥

मतिवर क्षत्रिय फेणपनकों मिलात परम फल जैन । सुनु नंदनि हिमवानको कछो मोहि हम नैन ॥

बासुखिस्थगणको परम सुनु सुधर्म अब मारि । है अनुष्ठके पर्य सम ते सब साठि सजाहि ॥

करत भए प्रचीणकी वृत्ति सर्वते दक्ष । सूरज मण्डलमे रहत तिदिके फलसों सख ॥

शुद्ध धिसके और जे दया धर्मयुत परम । फिरत रहत भुवनाहि हैं तपकों करत सगर्भ ॥

सो प्रसोकमे प्राप्त है मतिवर ते क्षत्रिय सर्व । भक्ष्य सु आसु सुधांसुकी मोहित रहत अखर्व ॥

जे क्षत्रिय भोज्य पदार्थकों राखत हैं नहि भेष । औ प्रखरसों कूटि जे भोजन करत सुखे ॥

औ चर्षणही करि रहत जे क्षत्रिय महत सुजान । सुनु बिरिजे तिनकों मिलात वेद फल परम महान ॥

सोमप औ सुर खपनप तिमके निकटे आय । बर्न भा कों खहि रहत हैं नहि प्रसहित सपाय ॥

॥ * ॥ हरिगीतीकवः ॥ * ॥

बिरि नंदनी सुनु औरज वर क्षत्रियको जो धर्म है । अति दुखहि नाशक मुद प्रकाशक कहत

तोंकों तैन है ॥ बस माहि करि इन्द्रिणकों सब काम मोषहि जीतकें । खलि ज्ञान लोचन सों

श्रा०प०
दा०ध०

करै सु पाँचो यज्ञ ए अज्ञासहित महान । रहै शरणमे अग्निकी नित्यहि बर मतिमान ॥
करै नित्य एक होम अह पूरणिमाने तीन । बाणप्रस्थ करि चिन्तकों धिरतामाहिँ प्रभुन ॥
ब्रह्मलोक अह सोमको लोक चारु तिहिमाहि । किएँ धर्म यह जात जन यामे संशय नाहि ॥
बाणप्रस्थको धर्म इन तोकों कह्यो बखानि । अब आमें का पूछि है भूधरसुता सुजानि ॥
शङ्करके ए बचन सुनि आनंद भरे ललाम । फिरि गिरजा करती भई प्रश्न भरो मुंद मान ॥

॥ उमोवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दीप्तिमान जन होयकै लहत लोक अवदाताकिहिविधिसों अब मोहि यह कहो आपु विख्यात ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि गिरिजाके बँन कहत भए जैसे बचन । शङ्कर आनंदअँन प्रश्न कियो नीको परम ॥

॥ * ॥ महादेवउवाच ॥ * ॥

जे जन है व्रतवान अह जे इन्दीवश करत । बोलत सत्य सुजान हिंसा कबऊ न करत है ॥
करत सविधि उपवास दीप्तिमान बर होय कौ । ते जन लहत ऊलास गन्धर्बनके सङ्गमे ॥
श्रीतसमैके माहि जे जन जलमे रहत हैं । ते नागनके पाहि दीप्तिमान है सुद लहत ॥
मृगके संगमे घास खाय रहत जो विपिनमे । दीप्तिमान है वास अमर, रीने करत है ॥
गिरे पात शैबाल बसि वनमे जे खात हैं । अह हिमसाहि विशाल जो जलमाहि बसत निशि ॥
दीप्तिमान है परम उत्तम गतिको पाय ते । रहत सदाहि सशर्म यामे संशय है नही ॥
वायु हि भक्त जौन अह जे भक्त नीरकों । करि सुविपिनमे भौम जे जन भक्त मूल फल ॥
दीप्तिमान ते होय यज्ञमे ऐश्वर्य्य लहि । रहत मोदसों भोय अणुरानके गणन सह ॥
जे जन द्वादशवर्ष पञ्चअग्नि सों तपत है । श्रीपममाहि सङ्घर्ष होत तौन द्युतिमान नृप ॥
गहि सुनेम आहार करत जौन द्वादश वर्ष । परबत नेह सुठार तामे बसि कै प्रज्ञवर ॥
परमावाम महान मीतिमान धरमज्ञ अह । भूपति होत सुजान यामे संशय है नही ॥
अनशनव्रतमे जौन बर बुध-जल शरीरको । दीप्तिमान है तौन स्वर्गमाहि सुख लहत है ॥
जो जन बारहवर्ष धरनोमे आकाश तर । शोबत होय सहर्ष सुनु नन्दनि गिरिराजकी ॥
ताकों बाहन आह निलत औ सु शय्या मिलति । अह बर मिलत अणारागुध्र प्रभामय चन्द्रसो ॥
द्वादशवर्ष सुजान जौन तपस्या करत हैं । छोडि सिन्धुमे प्राण बरुणलोककों लहत सो ॥
बारहवर्ष सुजान करत तप हि जन जौन बर । पुनि दृढताहि महान धरि कै पावकमे जरत ॥
चारुदीप्ति सो पाय परम प्रज्ञ धर्मज्ञ शुचि । अग्निलोकमे जाय पूज्यमान है कै रहत ॥
अनशन व्रतके माहि तजत देह जो बीरलौ । आय इन्द्रके पाहिँ कांतिमान है कै रहत ॥
निरत सत्वगुणसाहिँ जो सदां हिँ रहि तजत तन । तौनऊँ सुरपति पाहिँ दीप्तिमान है कै रहत ॥

साहि विमान अभिराम द्रुपदा पूर्वाक पिरत होपावत है मुद माम अहँ अहँ आत तहां तहां ॥
स्वस्तिश्रीकाश्रीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दीतनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेनकविना विरचितेभाषायां
महाभारतदर्पणे श्रान्तिपूर्वादि दामधर्मे जामाभेश्वरसंवादे षोडशाधिक शततमोऽध्यायः ॥ * ॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ सोरठा ॥

है एक और सन्देह श्रीगङ्गाधर त्रिपुर हर । महत मोदको गेह करऊ तौन दूरि तुम ॥
पूर्वविधाता परम चारिबरण उत्पन्न किय । शङ्कर सुनऊँ सशर्म दक्षयज्ञहर प्रज्ञवर ॥
तिन वर्णनको साहि कौनकर्मसों वैश्य जो । कहऊ हमारे पाहि प्राप्त होत शूद्रत्वकों ॥
अरु क्षत्रियसो खेन वैश्यताहि किहि कर्मसों । अरु किमि मोदनिकेत क्षत्रियताकों द्विज लहत ॥
कि एँ कर्मकों कौन शूद्रयोनिमे होत द्विज । कहिए आनदखैन क्षत्रियऊँ अरु वैश्यहू ॥
अरु जे तीनऊँवर्ण विप्रताहि किमि लहत ते । श्रीशिव संशयहर्ण करऊ दूरि सन्देह यह ॥

॥ * ॥ श्रीमहेश्वरउवाच ॥ * ॥

प्रश्न कियो यह खच्छ तैं सुन हे गिरिनन्दनी । याको हेतु प्रतच्छ अथहि तोकों कहत हैं ॥
जो द्विज तजि निजधर्म क्षत्रियको कर्महि करत । द्विजताते सो परम कूटि सु क्षत्रिय होत है ॥
व्यागि-स्वधर्महि जौन वैश्यकर्मकों करत है । हे सुन क्षत्रिय तौन वैश्यवर्णकों लहत है ॥
शूद्रकर्मकेमाहि वैश्य रहत जौन है । यामे संशय नाहि शूद्र होत है वैश्य सो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अरु कि एँ शूद्रके काम । निश्चय शूद्रहि होत है है नहि संशय वाम ॥

॥ * ॥ रामगीतिहृन्द ॥ * ॥

सुनऊँ गिरिजे अन्न निन्दित क्रूरजनको परम । शूद्रको है अन्न निन्दित अतिहिँ नाशक धर्म ॥
आइमाहीं निमंचित हैं विप्र गिरिजे जौन । तौन भोजन करिचुकैं जब बचो जो हैं तौन ॥ परम
निन्दित अन्न है इहिमाहिँ संशय नाहि । कहे हैं ए पितामहके बचन तेरे पाहिँ ॥ * * * ॥

॥ * ॥ चरणदेहा ॥ * ॥

होय उदरमे अन्न शूद्रको मृत्यु समयके साहि । शूद्रयोनिमे जन्म होय तौ द्विजको संशय नाहि ॥
अन्न सु जिहि जिहिँ जातिको करै साय द्विज जौनानिश्चय तिहिँ तिहिँ जातिमे जन्म लहत है तौन ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

दुर्लभ द्विजता पाय भक्षत जौन अन्नको । निज द्विजता कूटि जाय तौन विप्र अज्ञानसों ॥

॥ * ॥ हरिगीतोहृन्द ॥ * ॥

द्विज सुरा पोषत जौन अरु जे नीच कर्महि करत हैं । अरु जे नही उपकार मानत क्रूरता दिय
धरत हैं ॥ रत रहत चोरीमाहि जे अरु विप्रकों जे हनत हैं । अरु तौन हैं द्विज परम गर्वी औरकों

ब्रा०प० नहि गणत हैं ॥ अरु पठत जे नहि वेदको निति कपटमे रत रहत हैं । अरु जौ न देखत शुद्ध राख
दा०ध० धूतता हिय महत हैं ॥ ब्रत करत कौनऊ माहि जे अरु रजे शुद्धोमाहि हैं । गुरुनारिमे जे रमत हैं
अधको विचारत माहि हैं ॥ जिहि पात्रमाहि बनाय भोजन तौनहीने खात हैं । अरु नीचकी जे
करत सेवा पाप करि सरसात हैं ॥ ब्रत कौन पूरत करत देत सु बीषहीने त्यागि हैं । निति करत
निन्दा गुरूकी गुरुद्रोहमाही पागि हैं ॥ ॐ ॥ सोरठा ॥ ॐ ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
ऐसे द्विज जे बाल वेदवांगहूँ हैं। अहि जौ । सुखदा परम विशाल द्विजताते गिर जात हैं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जौन हेतुसो लहत है शूद्र वैश्यता चारु । अरु क्षत्रियता लहत है वैश्य सुबुधि अगारु ॥
पावत है वर विप्रता क्षत्रिय वर बुधिभौन । सुनु गिरिनंदनि कहत अब तोका कारण तान ॥

॥ * ॥ पाँचमीछन्द ॥ * ॥

सुबुद्धिमान शूद्र आपने । करै सुकर्म मोद आपने ॥ ठहैलमाहि विप्रको रहै । कथा न उय
बैनको कहै ॥ सुमार्गमाहि नित्यही चलै । कहै सुसत्य ना करै छलै ॥ करै सुनेम बांधि भोजनै ।
कहाँ न काऊजीवको हनै ॥ जबै होय तिथ रजसला । करै तबै सुकामकी कला ॥ दोहा * ॥
देवनको अरु द्विजनको करै सदा सतकार । भोजन देय सु अतिथिको आदर करि सु अपार ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बैठै बुधजन पाहिं चारु वारता सुननको । भोजन करै सदाहिं बचो होय जो द्विजनसो ॥
ऐसो वर बुधिधाम शूद्र लहत है वैश्यता । हे नहि संशय बान श्रे नन्दिनि हिसवानको ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

बश्य लहत जिहि हेतुसो क्षत्रियता अभिराम । तौन हंतु नै कहत हौ गौरि तोहिं अब आन ॥

॥ * ॥ महतीछन्द ॥ * ॥

निति सत्य बैन हि कहै । कबहूँ न गर्बहि गहै ॥ अरु क्रोधको नहि करै । हियमाहि शान्ति हि धरै ॥

॥ * ॥ तोटकछन्द ॥ * ॥

विधिसो अरु श्राद्ध सदा हि करै । अरु दै धन दीनहि मोदं भरै ॥ बलि देय सु भूतनको
नितिही । अरु होम करै रतिसो अतिही ॥ शुचि छै करि कै निति वेद पढै । सु गहै सब इन्द्रियोंको
सु हटै ॥ दुयकाल करै निति भोजनको । नहि फेरि करै गहि कै पणको ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॐ
प्रथम अतिथिको देय कै सादर भोजन चारु । फेरि आपु भोजन करै सर्व सहित परिवारु ॥

॥ ॐ ॥ सोरठा ॥ ॐ ॥

कीन्हें ऐसे कर्म क्षत्रियताको लहत है । सतिवर वैश्य सुधर्म याने संशय है न ही ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

जाति कुर्मादिक सुजाके समस्कार सुसर्वा हैंहि जो द्विज होत क्षत्रिय धर्म सहित अस्वर्ष ॥ पाणि करिके प्रजाके सब पुत्रयो अभिराम । लेख छठआ अंगतासों सत्यबोलै नाम ॥ हैंहि जामे दक्षिणा बज्र करै असो यज्ञ । पढे बेदहि अभिहोत्रहि करै वर धरमज्ञ ॥ लखै जैसे दोष तैसा दण्ड देय सधर्म । प्रजा माही देय शासन धर्मकीविं परम ॥ प्रीति करिके दोन जनको करै नित्य सहाय । रमै अपनी दारमाही समय लहि सुखदाय ॥ लखै नहि परनारि कबहू जानि पाप विशाल । अभिहात्रसु होय जौने मेहमे सुनु बाल ॥ शयन तौने मेह माही करै शुचि व्हे परम । देय भोजन अतिधिकों वर प्रेम सहित सधर्म ॥ अतिथि शूद्रजु होयतौ दीजै सु भोजन ताहि । करै विधिवत आहु राखै दुष्टभावहि नाहि ॥ होय पावन परम विधिवत करै वर उपवास । गौशाक्षण काज रणसे लरै सहित ऊलास ॥ ज्ञानवान महान वर धर्मातमा अभिराम । विप्रताकों लहत असो जौन क्षत्रियवाम ॥ धर्ममाही रहै रत तौ शूद्रहू द्विज होय । विप्रहू जो करै अधरम धर्म अपने गोय ॥ शूद्रताकों लहै तौ यह माहि संशय नाहि । रहै ताते नित्य तत्पर धर्म अपने माहि ॥ हेतु द्विज ताको सुधर्माह जानु निश्चय वाम । वचन ब्रह्माके कहे हम कहे ताकों आम ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

द्विजता जौन हेतुसों पावत शूद्र सधर्म । औ द्विज जौने हेतुसों लहत शूद्रता परम ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

ते सब कहत बखानि तोकों हम गिरिर्निन्दिनी । अब हियमाहि सुजानि दृच्छा का है सुननकी ॥ गिरिजा मुनि ए बैन कहति भई इनि शंभुसों । पशुपति आनद अैन एक संशय औरउ कहौ ॥

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

पापकस बंधनने जौन । सुनऊ बन्धेहै मानव तौन ॥ किहि विधिकस किएसों कौन । छूटि करतहैं दिवकों गौन ॥ * ॥ महादेव उवाच ॥ * ॥ यह जो प्रश्न कियो तै वाम । मनुजनकों सुखकर अभिराम ॥ हमसों सुनो कहत हम आम । करिहैं प्रिय यदिकों बुधिधाम ॥ जे रत रहत सत्यके माहि । रहैं सदा प्रश्नके पाहि ॥ ते नहि अघबंधनके माहि । बंधे रहतहैं मुदित सदाहि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिंसा मनबचकनसों करत नही जन जौन । अघ बन्धनसों छूटिके करत लगकों गौन ॥ इन्द्रिणकों जे विषयने लगन देतहैं माहि । प्रभुता न अह मित्रता राखत काहू माहि ॥ दया धर शीलहि धरे अह जे जन अभिराम । अघ बन्धनसों छूटि ते लहत लगने धाम ॥

शा०प०
दा०प०

॥ * ॥ हरिगीतोहन्द ॥ * ॥

धन औरकोने जौन जन कबहूँ न लोभहि करतहैं । अरु रनखकी परनारिने कबहूँ न द्रव्य धरतहैं ।
वर आपनीही दारनाहो रहत जे जन निरतहैं । अरु धर्मते भेग अग्र जोहै प्राप्त ताको धरतहैं ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

ऐसेहैं जन जौन तौन छूटि अघ फासिसों । जाय स्वर्गमे तौन सहत महत परमा भरे ॥

॥ * ॥ अरिलहन्द ॥ * ॥

कबहूँ जूठ न बोखत जे जन । पाप फासिसों छुटिकै तेजन ॥ जाय स्वर्गमे आनद पावत । भरे परन
परमासों भावत ॥ जौ कबहूँ कोउ आवै घर । ताहि कहत मीठी बाणीवर ॥ औ जे कहैं कठोरहि
बैन नाकरैं कुटिल काहूँ दिशि नैन नाते कुकर्म फासीसों छुटिकरि । स्वर्गलोकको जात सुमुदधरि ॥

॥ * ॥ मङ्गलीतोहन्द ॥ * ॥

धुगलीहि जौन करै नही । हिय दुष्टताहि धरै नही ॥ जन औरको निदरै नही । हिय कोष
ताहि भरै नही ॥ * * * * ॥ * ॥ आभीरहन्द ॥ * ॥ * * * * ॥

ऐसेहैं जन जौन । अघ फासीसों तौन ॥ छूटि स्वर्गको गौन । करत होय मुदभौन ॥ * * ॥

॥ * ॥ तोटकहन्द ॥ * ॥

अरु जौन बिरहहि नाहि करै । सठकी कहनू तिहि ना अचरै ॥ दुखहोय महा सुनिके
जिहिको । हियमे नहि बैन कहै तिहिकों ॥ * * * * ॥ * ॥ कान्ताहन्द ॥ * ॥ * * * * ॥

ऐसे जौन । जन बुधिभौन ॥ स्वर्गहि जाय । रहत सचाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अरु अरन्यहूँ माहि द्रव्य परायो देखिकै । जे जन मनमे जाहिँ लोबेकी द्रष्टा करत ॥
ते जन आनद पाय अघ बन्धनसों छूटिकै । स्वर्ग लोकमे जाय ओक सहत परमामये ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

कामवती अति परम सुठारी । औसो जो पर नरकी नारी ॥ ताहि देखि एकामै माही । जे
मानव मनहूँ से माहो ॥ ताने रमै तौन जन भ्रानी । अघ फासीसों छूटि महाकी ॥ जाय स्वर्गमे
मुदसों भारे । पावत है वर सदम सुठारे ॥ जेकाहसों बैर न राहैं । औ करि निचता न अभिचारै ॥
सुपथ कुपथको जौन बिचारै । जीवको करि दया निहारै ॥ * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * ॥

अघ फासीसो छूटि ते जाय स्वर्गके माहि । महत सहत आनन्दको याने संशय माहि ॥

॥ * ॥ अचकरीहन्द ॥ * ॥

शास्त्र माहि रत जौन सुजान । अरु जे अहावान महान ॥ धर्म अधर्महि जानत जौन । युक्त दान
गुणसों बुधिभौन ॥ अरु जे पूजत सुरहि समेन । मानै अतिवत द्विजहि सप्रेम ॥ ते जन अघफासी

शा०प०
दा०प०

योग्य मानव ज्ञान हैं। नहि करत जे सनमान तिनको परम दुर्मतिभौन हैं। सब जात ते जन नरक
मे यहँ माहि संशय नाहि हैं। हम सुन्यो यह वृत्तान्त पूरब लोकपतिके पाहि है ॥ * * * * *
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहैं कबऊ जौ नरकमें तौ कुलित कुलमाहिं । जन्म पायके लहत दुख अरु अघ करत सदाहि ॥
॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

अरु जे जन है नहि अभिमानी । धरें दया दियमाहि महानी ॥ पूजत सुर अरु द्विजहि सदा
ही । कहत मधुर बाणी सब पाहीं ॥ कबहूँ द्वेष न मनमो आनै । सब जीवनकों अति प्रिय जानै ॥
जौन मनुष्य निकटमे आवै । ताको अति प्रिय बचन सुनावै । गुरु आवैं जब मोदित श्रैकै । सादर
स्नेह प्रीतिसो भैकै ॥ अतिथि जौन आवै गृह माही । करत अनादर ताको नाही ॥ जैसे बुद्धि
मान जन जे है । प्रापित होत स्वर्गमे ते है ॥ स्वग माहिं रहिके बऊकासौ पावतहैं आनन्द विद्यासौ ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तदनन्तर अब मनुजता पावत भू के माहि । उत्तम कुलमे जन्म लहि मोदित रहत सदाहिं ॥
प्राप्त होत सब भोगहै तिनको अरु बऊ रत्न । सब प्राणिकों होत प्रिय बिना किएँ यत्न ॥
धर्महि माही रहत रत शर्म सहित अभिराम । धर्म प्रज्ञताको लहत जात भर्म मिटि मान ॥
॥ * ॥ सुग्धविलासहन्द ॥ * ॥

अरु जौन क्रूर महान । अघ भौन दुर्मतिमान ॥ निति रहै परम ससान । नहि करत कैंनिऊँ दान ॥
॥ * * * ॥ दोहा ॥ * * * ॥

कर पदसों अरु रज्जसा तिमिहि माहि कै दण्ड । जे जीवनको देतहै बाधा भूरि प्रचण्ड ॥
॥ * ॥ आभोरहन्द ॥ * ॥

ते जन दुर्मति रास । लहत नरकमे बास ॥ याने संशय माहि । कहत सत्य तब पाहि ॥ * * * * *
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जौ कबहूँ कठि नरकमें लहै मनुजता जौन । तौ बाधायुत बंशमे जन्म लहतहै तौन ॥
बिन अपराधहि करतहैं द्वेष तास जन सर्व । औं निशि दिन तिनकी परम निदा होति अखर्व ॥
॥ * ॥ सुन्दरीहन्द ॥ * ॥

कानऊ भाति सु जीवहि जे जन । देत अथा कबहूँ नहि सो जन ॥ जाब सु देवतलोकहि
भावत । चाब अनूपम आलय पावत ॥ * * * * *
॥ * * * ॥ सौरठा ॥ * * * ॥

निर्जरसौं दिन माहि प्रभा पायके लसतहै । सुरनारी तिहि पाँहि रहि बऊ आनंद देतिहै ॥
लहै मनुजता जौन कबहूँ जौ दऊकासमे । दुःख रहित कुल तौन पाय रहत आनंद सो ॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

महाप्रज्ञ कोते किते अल्पप्रज्ञहैं परम । देखि परत संसारने पशुपति मुनऊ सशर्म ॥

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

महाप्रज्ञ अरु अल्प प्रज्ञ जन कौन कर्मसो होता । यह संशय को करऊ दूरि तुम गङ्गाधर मुदपोत ॥

॥ * ॥ हंसादोहा ॥ * ॥

कौन कर्मसो होता जन अन्धा अरु रूजवान । कौन कर्मसो हाँतहैं ज्ञीव कहऊ मुदवान ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ सोरठा ॥ * ॥

विप्र धर्मविद् जौन तिन्हें अशुभ शुभ कर्मते । तूहि जौन बुधि भौन करत अशुभ तजि कर्म शुभ ॥

तेजन आनंद पाय परम महत यहि लोकमे । फेरि स्वर्गमे जाय रहत सुरणके शरमे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फेरि सहै जौ मनुजता महा-प्रज्ञ तौ होय । पढत शास्त्रको शीघ्रही रहत मोदसो भाय ॥

दुष्ट बचुसो सखतहैं पर नारीको जौन । अन्ध जन्म लहि होतहैं तेजन दुर्मति भौन ॥

दुष्ट चितसों सखत जे नया परकी दार । पीडित तेजन होतहै सहिकै रोग अपार ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अरुजे दुर्मति भौन पर नारीमे रमतहैं । होत ज्ञीवहैं तौन यामे संशय हैं नही ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गुरु तिय गामी जौन अरु पशुको-वेषत जौन । व्यर्थ करत मैथुनहि जे होत ज्ञीवहैं तौन ॥

सखि श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि

रघुनाथकवीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते भाषायां

महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे उमानहेश्वरसंवादे सप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * ॥

॥ * ॥ नारदउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मदकन्तर शर परम गिरिजाको बैन । कहत भय मुसकायकौ बर आनंद जैन ॥

॥ * ॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥

सावित्री तिय इच्छिकी सजी इन्द्रकी नारि । स्वाहा सिखिकी रोहिणी शशिकी नारि सुठारि ॥

तिया नारकण्ठेयकी भूसार्था सुखसाम । सिद्धि धनदकी बरुणकी गौरी तिय अभिराम ॥

सुवर्षणा तिय भामुखी भरी रूपसों चार । कश्यपकी तिय दिति अरु यमसिनी सुठार ॥

पतिव्रता सर्व है प्रज्ञाप्रती महानि । इनसों तोसों परसपर है अति प्रेम सुजानि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शक्रको इमि बैन कहि हैमवती अभिराम । शिवको नारिनके धरम कहति भई सोचम ॥

॥ * ॥ उमोवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जिहिं दिन होय विवाह तिहिं दिनहीरो नारिका । अतिही भरी उमाह पतिकी आझामे रह ॥

लखै प्रीतियों मान जैसे बदन सुपत्रको । तैसेहीं बरनाम पतिकों देखै निशि दिवस ॥

पतिव्रता जे नारि कथा सु तिनकी श्रवण करी । सेवा माहि सुढारि पियकी तोयरहै सदा ॥

कबहूँ कहै कठोर जौ पिय करिके कइ अति । तबहूँ पियकी ओर प्रीति सहित चाहे सदा ॥

करै सुव्रत पिय जौन करै तौन निय आपहूँ । करै अहांकों मीन तहाँ प्रीतियों जाय सक ॥

जानै देव समान पतिकों है मतिमान तिय । स्वपने हूमे आन पुरुष ओर देखै बही ॥

होय पुरुष जौ दीन अथवा रज जुत होय ठग । तबहूँ नित्य नवीन प्रीति सहित सेवा करै ॥

पुत्र भएँहूँ धर्म पति कीरति राखै महत । पतिव्रतानके धर्म सुनऊ शम्भु ए सबहैं ॥

भोग कामके माहिँ औ तिमिही ऐश्वर्यमे । राखै मनकों नाहिँ पति रतिमे राखै सदा ॥

नित्यहि उठिके प्रात करै अगारहि स्वच्छ अति । गोमयसों अथदात लीपि आपने करणसों ॥

पियके सक सदाहि अघिहोच विधिवत करै । पियकी आज्ञा माहि भङ्ग करै कबहूँ तिया ॥

देव अतिथि अरु भृत्य पति सह तिनकों दत्त करि । प्रीति सहित अरु नित्य शेष आपु भोजन करै ॥

सेवा करिके भूरि शासकी अरु लसुरकी । महत मोदसों पूरि तिनसों निति आशोष खे ॥

पतिकी आज्ञा पाय दुर्बल दीन सुद्विजनकों । अन्नसु देति सचाय ते पतिव्रता नारिहैं ॥

राखै चिन्मपति माहिँ नितिहैं सेवा करि परम । जानै स्वर्गऊ माहिँ पियकी कृपा समान बर ॥

जामे होय अथर्म अरु जो कौबे जोग्य नहि । कौजे तौनऊँ कर्म जौ आज्ञा पति देखतौ ॥

महत कष्टहूँ माहिँ पियको सक तजै नहीं । दुख दुख माहिँ सदाहिँ क्वाया लौँ सँग मे रहै ॥

नारिनके जे धर्म तुम्है सुनाए बरिणै । सुनिए शम्भु सशर्म रहति धर्ममे पतिव्रता ॥

पतिव्रत धर्म समान नारिनकों नहि और है । जे तिय करति महान ते पावतिहैं मोदकों ॥

॥ * ॥ भीम उवाच ॥ * ॥

नारिनको जौ धर्म सर्वै नारियों शर्म सुनि । भए प्रसन्न सशर्म सुनहूँ युधिष्ठिर प्रज्ञवर ॥

तदनन्तर सब भूत नदी अथरा मध्यर्ब । हर्षहि पाय अकूत शिवहि नौमि सब जात भे ॥

रघुनाथकबीश्वरात्मजो कुलनाथस्थोत्तमजगोपोनाथस्य शिष्येण मण्डिदेवेन कश्चिना विरचिते


भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपूर्वाणि दानधर्मं अष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ॥ * * *

भा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ अथर्ववेदः ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुन सशर्म हे सर्व कहज महातिम विष्णुके । दायक मोद अखर्व इन सुनिबेकीं चरतह ॥

॥*॥ महेश्वरउवाच ॥ * ॥ अरिलहन्द ॥ * ॥

निर्जर शत्रुणके गणनाशक । वासुदेव सुर मोद प्रकाशक ॥ परम महान तेज हे तिम कर । सम
नहि होत अनेक नदिनकर ॥ तिनकों सर्व देवता पूजत । बड विधि प्रेम सहित हैं कूजत ॥ सब
धावर जङ्गमके नायक । हैं भक्तनके सदा सहायक ॥ * ॥ रामगीतीहन्द ॥ * ॥ 
भए तिनके उदर तें उत्पन्न हैं लोकेश । औसु शिर तें भए हैं उत्पन्न हम यहि भेष ॥ केश तें उत्पन्न
तिनके भए नखत समूह । औ भए हैं रोम तें बर सुरासुरके जूह ॥ रहे सबमे व्यापि हैं अर परम
हैं शरवज । फिरत हैं शरवच तिनकों भजत जेहें प्रज्ञ ॥ आपुही उत्पन्न करता चरा चरके सर्व ।
आपुही संहार करता वासुदेव अखर्व ॥ हेन तिन सेां अष्ट क्रोड तिरु लोक न माहि । और
रक्षिक सुरणको तिन बिनाकोज नाहि ॥ सुरण काजै परम धातें धरत मानव रूप । सर्व भूत सु
करत जाकों नमस्कार अनूप ॥ परम नायक सर्व भूतनके सु आनद धाम । सकै नाहो बर्षिकोज
तास मुए अभिराम ॥ भीति सेां है जौन पीडित हरत तिनको भीति । दीन पालन माहि हैं रत
रहत नित्य समीति ॥ अहङ्कार न करत कबहू क्षमा वान महान । रहत तिनके शरण जेतें होत हैं
सुखवान ॥ हाँहि जे उत्पन्न मनुके बंश साँही पर्ष । सुरणके कल्याणकों गोविन्द परम सशर्म ॥ अङ्ग
व्हेहै पुत्र मनुके परम भेधा वान । पुत्र अन्तर्धा सु व्हेहै अङ्गके बलवान ॥ पुत्र ताके होय गो बर
हबिर्धामा खत्त । हबिर्धामाके सुवन प्राचान बरही दत्त ॥ हाँहि गे प्राचीन बरहीके सु प्रज्ञावान ।
प्रचेतादिक चार दश सुत परम परमा मान ॥ दत्त तियके होय गो व्हेहै प्रजापति तौन । पायहै
सरवच महिमा महत प्रज्ञा भौन ॥ दत्तके दाक्षायणी व्हेहै सुपुत्री चार । होय गो आदित्य ताके
पुत्र उग्र सुदार ॥ होय गो आदित्यके मनु पुत्र बर अभिराम । पुत्र काजै यज्ञ करि है तौन विधि
सेां मान ॥ कहैगी सु बशिष्ठ सेां तव इमि सु मनुकी नारि । करजु औसो काज जातें सुता होय
सुदारि ॥ होय गोतिहि तें सुपुत्री इलाताको नाम । देखि ताकों कहै गे मनु क्रोध करि इति नाम ॥
सुनऊ सुवृषि बशिष्ठ हम सुन काज कीन्हो यज्ञ । भई पुत्री भयो तातें दुखद हमकों प्रज्ञ ॥ वैन
सुनिए सुमनुके ऋषि बर बशिष्ठ सुज्ञान । तपस्यासेां करैगे सुत सुताको हविमान ॥ नाम ताको
धरैगे सुप्रद्युम्न सुवृषि बशिष्ठ । सुदित तातें होयगो मनु भएतें दुखनष्ट । इलावर्त सुखसुख माँहि
तौन शृगपा काज । जायगो तहँ होय जेहै नारि सहित समाज ॥ कहै गे इत्थान्त यह सुबशिष्ठ
क्रोँ मनु फेरि । करैगे तव प्रार्थना ऋषि समुजको टेरि ॥ शशु औसो करैगे सुनि सुवृषि बरके
वैन । धर्मधर बर सुनऊ ऋषिवर परम प्रज्ञा जैन ॥ इलावर्त सुखसुख माँही पुरुष आवत जैन ।
आपतें मम होय नारीं जात निश्चय तौन ॥ अन्यथा सेां होय गो नाँहि सुनऊँ ऋषि बुधिधाम ॥

करतहो तुम प्रार्थना यहि हेतुते अभिराम ॥ एक महिना पुरुष व्हे हे एक महिना दार । करक
 निशय दिएने तुम सुकृषि बुद्धअगार ॥ शत्रुके ए वैम मनुकों कहे ने सुवसिष्ठ । सुदत तिहिते
 होयगो मनु भएते दुख नष्ट ॥ शत्रुजुके वैमते सुयुक्त अति अभिराम । एक महिना पुरुष व्हे हे
 एक महिना वाम ॥ होयगो अब वाम तव बुध प्राप्त व्हे है आय । रमण तामे करेगे खलि तास रूप
 सुभाय ॥ होय गो सु पुरवरामहिपाल तिहिते परम । होय गो सु पुरवरवाके आयु पुत्र सधर्म ॥
 नऊष व्हे है आयुके सुत नऊषके सुयजाति । होयगो बर तास कोरति लोकमाही ख्यति ॥
 होयगो सुयजातिके यदु धर्मवान महान । होयगो यदुकेसु क्रोताष्टाके वृजिनीवान ॥ पुत्र वृजिनी
 वानके शुभ होयगो सुउषरु । होहि ने है पुत्र ताके बली सुभट उत्तम ॥ चित्ररथ अरु सूर
 करि है भूरि कीरति परम । सूरके सुत होहिने वसुदेव खस सधर्म ॥ होहिने वसुदेवके सुत वासुदेव
 प्रचण्ड । जरासन्धहि जीति करिके भरो गर्व अखण्ड ॥ महीपालनकों रुके कुडवाय देहे सर्व ।
 जीति सको है नाहि कौज तिहे सबल अखर्व ॥ ब्राह्मणनको करे गो सो नित्यही सतकार । महा
 दाता होयगो बर वीर्यवान सुदार ॥ शूरसेन सुदेशमे उत्पन्न व्हे के परम । द्वारिकामे जाय बसि
 भू पालिहै सह धर्म ॥ ताहि व्हे के प्राप्त पूजा करेने तुम तास । खच्छ चितसो सुतव पढिके भरो
 भूरि उलास ॥ किएँ दरशन हमारो औ विधाताको जौन । होतहै फल तास दरशन किएँ व्हेहे
 तौन ॥ वासुदेव सु कृपा जापै करेगे अभिराम । कृपा जापै करेगे सब देवता अतिमान ॥ शरणमे
 असुखेवं बन्दनको रहै गो जौन । कीर्ति जय अरु आयुकों जन प्राप्त व्हेहे तौन ॥ धर्मको उपदेश
 कारक होयगो अरु परम । धर्महीने रहै गो स्त कोडि सर्व कुकर्म ॥ कोटि ऋषि उत्पन्न करिहे
 वासुदेव समर्थ । वृद्धि कोअै धर्मकी अरु प्रजाके हित अर्थ ॥ गन्धमादन खच्छ पर्वतमाहि परम
 सुदार । रहैने ऋषि सर्व ते बर सहित सनत्कुमार ॥ श्रेष्ठ व्रत वसुदेव सुतको एक व्हे है खस ।
 सुनऊ तुमकों कहतहो मै परम तौन प्रतप्त ॥ पूजिहै जन जौन ताकों पूजिहै सह प्रेम । कूजिहै
 जन जौन ताकों कूजिहै सहनेम ॥ देखिहै जन जौन ताको देखिहै सह प्रीति । लेखिहै जन जौन
 ताकों लेखिहै सह मोति ॥ करेगे सनमान जो सनमान करिहै तास । प्रेम करिहै जौन तापै प्रेम
 करिहै आस ॥ औ सुनो जो रहैने जन तासु सेवानाहि । कबहू कौनऊ लोकमे भय तौ सहिहै
 नाहि ॥ नमस्कार सुकरतहो मै नित्य नित्यहि ताहि ॥ सुनऊ ताते तुमऊ राखो तास ध्यान सदाहि ॥
 होहिने वसुदेवताके जेष्ठ धाता परम । अक्र लाङ्गल धरै ने ते दुषो बन्धु सधर्म ॥ * ॥ दोहा ॥ *
 क ह्यो महातिम बरि ह्यत्र वासुदेवको खस । अति पावन आनंदकरि ऋषिवर तुम्है व्रतस ॥
 सखि श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउहितनारायणस्याज्ञानुमानिना श्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
 रघुनाथकवीश्वरात्मजनेकुलीमाधवात्मजनेपीमाधवात्मशिष्ये खसणि देवेनकविनाभिरचिते भाषायां
 महाभारतदर्पणे शान्तिपर्कणि दामधर्मे वासुदेवमाहात्म्येकोणविंशत्यधिकव्रतमनोव्यायः ॥ **

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तदनन्तर ऋषि सर्व नैमि नैरि सह शक्ररहि । आनन्द भरे अखर्ब तीर्थ करणकों जात भे ॥
ए सुखबिणको बैन मधुसूदन सुनिके परम । वर आनन्दके खैन पूजत भए ऋषीणकों ॥
तव ऋषि मतिवर सर्व कहत भए इमि कृष्णकों । सदा दयाल अखर्ब दर्शन हमकों दीजिए ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जैसी हमकों खालसा तव दरशनकी परने । खर्गऊ की नैसी नहीं हमकों नाथ सगर्भ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

कद्यो महातिम जौन शम्भु बर्णिकै आपुको । परम सत्यहै तौन सुमहँ कृष्ण आनन्दकर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो कहु तीनोंलाकमे सो जानत हो सर्व । अविदित तुमसो है न कहु कबलादिभु अखर्ब ॥
पुत्र तुम्हारे होय गो तुमहि सहस्र अभिराम । खच्छकोर्ति कर दख वर परम प्रभाको धाम ॥

॥ * ॥ भोग्यउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

इमि कहिकै ऋषि सर्व करि प्रणाम श्रीकृष्णकों । आनन्द भरे अखर्ब जात भए निज धामको ॥

जात भए श्रीकृष्ण हू द्वारावतिकों भूप ॥ सुनऊँ युधिष्ठिर प्रह्ववर बन्ना सत्य अमूप ॥

पूर्व भएँ दश मास वर पुत्र परम अभिराम । रुक्मिणि माहीं होत भो शूर तेजको धाम ॥

तास नाम प्रद्युम्न वर धरत भए सह प्रेम । सब भूतनमे प्राप्त सो रहत सदाहि सकेम ॥

शरणमाहि श्रीकृष्णकी तुम हो रहत सदाहि । याते सुम नृप धन्य हो तुमसो कोऊ माहि ॥

कोरति लक्ष्मी धैर्य अरु खर्गमार्ग अभिराम । जहा कृपा श्रीकृष्णकी तहां सर्व ए आम ॥

॥ * ॥ पद्मभलीखन्द ॥ * ॥

तेमोस कोठि सुर वर विशाल । कृष्णहि तु जानि सुनु भूमि पाल ॥ आनन्द रूप हरि आदि
देव । जानत न तास कोऊ सुभंव ॥ सब लोकनाथ आनन्दरूप । सर्वव तास महि है अनूप ॥

तिहिको सु नाम अघ हरत उद । आनन्द देत करि चित्त मुद ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ * ॐ

तेकों कृष्णहि अघ दर्द अरु वर कीर्ति ललाम । सुनऊँ युधिष्ठिर धर्मधर परम मखीषाधाम ॥

जहां कृष्णको है कृपा तहां सर्व आनन्द । यामे संग्रय है नहीं सुनु धरमज्ञ नरेद ॥

॥ * ॥ अचकरीखन्द ॥ * ॥

तुम सु प्रतिज्ञा पाछनमाहि । रहत निरत हो भूप सदाहि ॥ थारे कोमल रहत सुगाव ।
करत न कबऊँ कोषको क्षय ॥ दुर्धाम आदिक महिपास । बाए तिन्हें सुदने काल ॥ कास
समान और बलवान । कोऊ है बहि भूप सुजान ॥ नरे समदमाही हैं जैनातिनको शोक कास न
बुधिमान ॥ शिव गौरीको जो समदाद । सुन्यो पूर्व तें कोठि प्रमाद ॥ रहे धरे ताको चिपमाहि

सुनऊँ युधिष्ठिर भूप सदाहि॥ पठि है अर सुनि है जन जौन। तिहि सम्वाद हि प्रज्ञाभौन॥ लहि है तौन धरन कल्याण। ज्ये है नहि कबहुँ दुखवाँन ॥ ज्ये हैं सर्व कामना सिद्धि। मरी रहीं गृह मे निदि ॥ भूने करिके धर्म सचाय। लहि है मोद स्वर्गमे जाय ॥ यहिमे है नहि संशय भूप। वर धर्मसु प्रज्ञ अनूप ॥ नहि कौ नीति देत जे दण्ड। पालत प्रजा सप्रीति अखण्ड ॥ ते नृप जात स्वर्गके नाहि। निश्चय याने संशय नाहि॥ तारें पालऊ प्रजा सधर्मान्हिके नीतिहि भूपति परम ॥

शा०प०
दा०प०

॥ * ॥ मथूरशासिनीछन्द ॥ * ॥

वासुदेव बाल भावहोने। ज्ञातिके सुरक्षणार्थ जीमे॥ क्रोधकै महान कंस माखो। सर्व दुःख मात को निकारखो ॥ परम और कर्म कीन्ह जेते। है कहे न जात सर्व तेते ॥ धन्य लोक नाहि जीव ते हैं ॥ तास शरणे रहें सु जे हैं ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * ॥ * ॥
येसे है श्रीकृष्ण ने सखा तिहारे भूप। तिहिते निश्चय पायहौ आनंद परम अनूप ॥

॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ धरणिमण्डनछन्द ॥ * ॥

सुनि सुबैन तातको महा। धर्म मन्दन कछू कहा ॥ परम उड मोदको लहा। ठसकी सुप्रीतिको महा ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

धृतराष्ट्रादिक सर्व अति विषयको प्राप्त है। नहि कौ प्रीति अखरब पूजि पाणि जोरत भए ॥

॥ * ॥ अरिलछन्द ॥ * ॥

तिभिहें नारदादिक ऋषि मतिवर। भीषमके सुनिबैन सु मुदकर ॥ ठसहि पूजत भए सचावन। पठिके बड विधि सुतव सुहावन ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * ॥ * ॥
पुनि भोषमको कहत मे कुन्तीसुत इमि बैन। कहौ महातिम फेरि तुम हरिको धर बुधिबैन ॥

स्वस्ति श्रीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाश्री वासिष्ठमायकवीश्वरात्मजभोक्तुलमायस्यात्मजगोपोनप्रथस्य शिष्येण मण्डिदेवेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणे दानधर्मे श्रीकृष्णमाहात्म्ये विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

भूप युधिष्ठिर सुनिके धर्म। अर पावन सुनि सुखव अभर्नौ। फेरि पितामहको इमि बैन। कहते भए मनीषा बैन ॥ * * * * * ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * * ॥ * ॥

मुख्यदेवता कौन है लोकनाहि अनिराम। अर सुपरायण है कहा कहौ मोहि बुधिधाम ॥
किहिको अरबे औ फेरे किहिकी सुति सु अनूप। प्राप्तहोहि कल्याणको मानव कहिए भूप ॥
सब धर्मनमे परम तुम जानतहै को धर्म। अर सुजय का जगसों रहित हैंहि जन धर्म ॥
पौण्ड्रिके ए वचन सुनि गङ्गासुत मतिमान। कहत भए इमि वीरवर धरिके धर्म महान ॥

शा०प०
दा०ध०

पुण्यं वतमोक्षम सत्त्वाः सत्यपराक्रमः । निमिषोऽपि निमिषः स्वप्नो वापस्यद्विदरधीः ॥ अयस्यो
 प्रासवीः श्रीमान्वायो नेता समीरसः । सहस्रगुहा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ आचतनो
 विकृतात्मा संवृतः संप्रमर्दनः । अहः संवर्त्तकोवक्त्ररनिखो धरणीधरः ॥ सुप्रसादः प्रसन्नान्मा
 विश्वभृषिचमसुविभुः । सत्कर्त्ता सद्गतः साधुर्जङ्गनीराचखोमरः ॥ असंख्येषु प्रमेयात्मा विश्विष्टः
 विश्वजडुषिः । सिद्धार्थः सिद्धसहस्र्यः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ वृषाहो वृषभो विश्ववृषधर्षवा
 वृषोदरः । वर्धनो वधमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ सुभुजो दुर्द्वीरो वाग्मी महेंद्रो वसुदोवसुः । नैक
 रूपो बृहद्रूपः शिविशिष्टः प्रकाशनः ॥ आजसोऽप्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः । ऋद्धः स्रष्टासरो
 मन्त्रस्यन्त्रासुर्भोक्तरद्युतिः ॥ अष्टतांशुद्वयो भानुः श्रयविन्दुः सुरेश्वरः । औषधं जनतास्ये तुः सत्यधर्म
 पराक्रमः ॥ भूतभयभयनाशः पवनः पावनोऽनलः । कामहा कामकृत् कान्तः कामः कामप्रदः
 प्रभुः ॥ युगादिकृपुणावर्तो नैकमायो महायनः । अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥
 दृष्टोविशिष्टः शिष्टेष्टः शिसखी मञ्जोष्टवः । क्रोधहा क्रोधहाकर्त्ता विश्ववाज्जर्नीधीधरः ॥
 अच्युतः प्रवितः प्राणः प्राणदोवासवानुजः । अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ३०० ॥
 सान्दः सान्दधरोधूर्ध्या वरदो वायुवाहनः । वासुदेवो बृहद्भामुरादिवेवः पुरन्दरः ॥ अशोकसारण
 सारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः । अनुकूलः श्रतावर्त्तः पद्मी पद्मनिभेषणः ॥ पद्मनाभोरविन्दाक्षः पद्म
 गर्भो शरीरभृत् । महर्द्धि ऋद्धो वृद्धात्मा महाशोभरुडध्वजः ॥ अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो
 हविर्हरिः । सर्वस्रक्षणस्रख्यो स्रक्षमीवान् समितिञ्जयः ॥ विश्वरोरोहितो मार्गेहेतुर्दानोदरः
 सहः । नशीधरो महाभागो वेगवानभिताशनः ॥ उद्भवः शोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः । करण
 क्षारणकर्त्ता विकर्त्ता महनेगुहः ॥ व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदोषुवः । परर्द्धिः परमः
 स्रष्टः स्रष्टव्युष्टः शुभेषणः ॥ रामोविरामोविरतो मार्गेनेयोनयोनयः । वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो
 धर्मो धर्मविदुषमः ॥ वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्रणवः प्राणवः पृथुः । हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधो
 सजः ॥ ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः । उग्रः सम्बन्धरो दक्षो विश्वामो विश्वदक्षिणः ॥ ४०० ॥
 विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययं । अर्थोऽत्मर्थोमहाकायोमहाभागो महधनः ॥
 अनिर्विन्नः स्वविष्टोमूर्द्धन्यूपो महामलः । मत्तपनेनिर्मन्त्रवी क्षमः क्षामः समीहनः ॥ यज्ञदुज्यो
 महेश्वरश्च शत्रुः शत्रुघ्नां पतिः । सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमः ॥ सुव्रतः सुमुखः सुहृन्मः
 सुषोषः सुखदः सुहृन्मः । मनोहरो जितक्रोधोवीरवाज्जर्बिदारणः ॥ स्थापनः स्वधैव्यापी
 नैवात्मा नैककर्महात् । बलरो बललो बलीरत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ धर्मगुणं धर्महाङ्गर्भी सदसत्
 शरनचरः । अविज्ञाता सहस्रासुर्विवाता कृत स्रक्षस्रभानभक्षिनेमिः सत्वस्यः सिद्धिप्रदमेश्वरः ।
 आदिदेवो महादेम देवेशेदेवपृथुः । उग्ररो नेपथिर्नेता ज्ञानगन्धः पुरातनमेश्वरीरभूतभृशोक्ता

शा०प०
दा०प०

कपीरोभूरिदक्षिणः ॥ शोभयोभ्रुतयः लोक सुप्रभितुवोमनः । विनयो नयः सुवसन्तो
दास्योसात्वतां प्रति ॥ ५०० ॥ श्रीशेषिप्रियता शशो मुकुन्दो पवित्रिकामयचकोभिषिपकताका
महोदधिप्रभोक्तकः ॥ श्रीमहाहर्षः सामाद्योजिताविषः प्रबोदनीः । आनन्दोमन्दभोयन्
सत्यधर्मा विचिन्तनः ॥ महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो नेदिनीपतिः । विप्रदक्षिणप्रभो यशःशुभः
कृतान्तकृतः ॥ महाबराहो मोदिन्द्रः सुवेणः कनकाङ्गदी । मुह्यो गयीरो बभ्रुवो मुनयशोपदाधरः ॥
वेधाः स्वाज्ञो जितः कृष्णोदृढः शङ्करो द्युतः । बभ्रुवो वासुदेवृषाः पुष्करशो बहाधना ॥ भगवान्
भगदा नन्दी भगनाथी बलायुधः । आदित्योऽद्योतिरादित्यः सविष्णुर्नित्यमनः ॥ सुधन्वा सख्यपर
शुदायशो इविणप्रहः । दिवस्युक् सर्वे दृष्यासो वाचस्पतिरथोगिजा ॥ विद्याया सामकः शान्तिर्वाप्यं
भेषकं भिषक् । संव्यासकृष्णः शान्तो विद्या शान्तिपरायणः ॥ सुभाष्य शान्तिदः सखा कुमुदः कुव
लोमयः । मेदिनितो गोपतिर्गोता इषभासो इषप्रियः ॥ अनिवर्त्ती निवर्त्तकः संवेत्ता वेमलच्छिवः ।
६०० श्रीवत्सवद्याः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमताम्बरः ॥ श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीनिभावनः ।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमान् लोकवयाययः ॥ सप्तः सप्तः प्रतानन्दो मन्दिर्धोतिर्नखेन्द्रः । विजि
तात्मन्निधेयताया सत्कीर्तिश्चिह्नसंभयः ॥ उदोर्षः सर्वतक्षसुरजीशः शान्तस्विरः । भूषयो भूषयो
भूर्तिर्निशोकः शोकनाशनः ॥ आर्चिष्णानर्चितः कुम्भोविभुदाता विभोपनः । अनिवहो र प्रति रयः
प्रयुष्मन्मिमतविक्रमः ॥ कालनेमिनिहाः शौरिः शूरः शूरजनेयः ॥ त्रिलोकात्मा विद्योकोशः कोशवः कोशि
हा हरिः ॥ कामदेवः कामपालः कामो कान्तः कृतागमः । अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोमन्तोषनञ्जयः ॥
ब्रह्मणो ब्रह्महाइद्या ब्रह्मब्रह्मविबर्द्धनः । ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ महा
कर्ममहाकर्मा महातेजा रुधोरगः । महाकतुर्नहायजा महायज्ञो महाहविः ॥ शब्दः सत्यप्रियः
लोचं स्रुतिः सोनारणप्रियः पूर्णः पूर्यिता पुष्पः पुष्पकीर्तिरनामयः ॥ मनोजवलीर्यकरोवसुरेता
वसुप्रियः । वसुप्रदोवासुदेवोवसुर्वसुमनाहरिः ॥ ७०० सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्गतिः सत्यरायणः ।
शूरसेनोयदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ भूतानासोवासुदेवः सर्वसुमित्तयोत्तयः । दर्पहा दर्पदो
दृष्टो दुर्हरोधापराजितः ॥ विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तिमूर्तिरसूर्तिमान् । अनेकमूर्तिरध्यक्तः प्रतमूर्तिः
प्रतानमः ॥ एकोऽनेकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुमनं । लोकवभुशोकनाथो साधके भक्तवत्सलः ॥
सुवर्षवशोहेनाधिपराङ्गदनाङ्गदी । वीरहा विषमः शून्यो मृताशीदक्षकक्षकः ॥ अज्ञानी
मानदोमान्यो लोकसाथी विद्योक्तपृक् । सुमेधा शेषजोपन्थः सत्यमेवाभारतदः ॥ तेजो ह्यो
पुतिधरः सर्वशक्तमृताम्बरः । अशो नियशो व्ययो नैकमृते परापणः ॥ सङ्कूर्तिश्चतुर्वाञ्जसुसु
इत्यतुर्नतिः । चतुरात्मा चतुर्भाबसुर्नैदविदेकपान् । समानतो निमृतात्मा सर्वशो सुप्रतिज्ञः । दुर्धरो
दुर्धरोदुर्धो दुरायासोदुरारिणः ॥ सुनाम्नीशकारणः सुनाम्नीशकारणः । इत्यकर्मा महाकर्मा
कृतकर्मा कृतागमः ॥ ७०० सुन्दरः सुन्दरः ६०० सुन्दो रन्तज्ञानः सुलोचनः । सखा वायुनः मृगीजयन्तः

शा०प०
दा०ध०

सर्वविजयो ॥ सुवर्षविन्दुरसोभ्यः सर्ववागीश्वरेन्दरः । महाशक्रो महाभूतो महागिधिः ॥
 कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्वतः परमोऽथ शिखः । अश्रुतांगो श्रुतनयः सर्वज्ञः सर्वज्ञोऽसुतः ॥ सुवभः
 सुव्रतः शिखः शकुनिश्चतुर्नाथिनः । न्यग्रोधोऽम्बरोऽत्यक्षासूराङ्घ्रिसूदनः ॥ अश्रुसार्धिः सप्त
 शिखः सतीषाः सप्तबाहवः । अमूर्तिरनघोऽचिन्त्योऽभयकृद्भयनाशनः ॥ अश्रुवृश्रुतः शूकोऽसुतः
 भृशिशुभोऽमर्षाङ्गः । अश्रुतः सभृतः स्याम्यः प्राग्वंशोऽवशवर्द्धनः ॥ भारतकाचितोऽश्वेत्की कोशीशः
 सर्वकानदः । आश्रमः अमलाश्रमः सुपर्षोऽबायुबाहनः ॥ धनुर्धरोऽधनुर्वदोदण्डो दमयिता दमः
 अपराजितः सर्वसहोऽनिघ्नस्तः नियनोयनः ॥ सत्ववान् सत्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः । अग्नि
 प्रायप्रियाहोर्हः प्रियः सप्रोऽनिघ्नः ॥ विहायसगतिर्ज्योतिः सुवर्षिर्जतभुग्विभुः । रवि
 विरोचक सूर्यः सविता रविशोचनः ॥ अनन्तोऽतभुग्भोक्ता सुखदोऽनैकजोऽप्यजः । अग्निर्विघ्नः
 सदानर्षी शोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ १०० सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरथयः । सखिदः सखि
 कः सखिः सखिभुक् सखिदक्षिणः ॥ अरौद्रः कुण्डली चक्री विकल्पूर्जितशासनः । शब्दानिनः
 सर्वसहः शिखिरः शर्वरीकरः ॥ अक्षूः पेशलोदसो दक्षिणः समिन्धन्वरः । विदुन्मो वीतभयः
 पुण्यववणकोर्त्तनः ॥ उष्मारथो दुष्कनिहा पुण्यो दुःखप्रनाशनः । वीरहारक्षणः भ्रान्तो जीवमः
 पर्यवस्थितः ॥ अन्नन्तकूपोऽन्नन्तशीर्जितमन्युर्भयापहः । चतुरश्रोऽगभीरात्मा विदिशोऽव्यादि
 शोदिशः ॥ अनादिर्भुवोऽसस्त्रीः सुवीरोऽश्चिराद्भुदः । जनोऽजमजन्मादिर्भीमोऽभीमपराक्रमः ॥
 आधारनिलयो धाता पुण्यहासः प्रजागरः । ऊर्ध्वगः सत्यवाचारः प्राणदः प्रणवः प्रणः ॥
 प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवमः । तत्त्वं तत्त्वावदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिमः ॥ भूर्भुवः
 स्वस्वस्वसारः सपिता सपितामहः । यज्ञोऽयज्ञपतिर्व्यज्वा यज्ञाङ्गोऽयज्ञवाहनः ॥ यज्ञभृत्पञ्चयज्ञी
 यज्ञभृत्पञ्चसाधनः । यज्ञान्तकयज्ञगुह्यमन्नमन्वादेवच ॥ आत्मयोनिः स्वयंजातो बैलानः साम
 नाथनः । दैवकीमन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ शङ्खभृन्नन्दको चक्री शार्ङ्गधन्वाऽमदाधरः ।
 रथारूपानिरसोभ्यः सर्व प्रहरणायुधः १००० ॥ इति श्रीबिसुसहस्रनाम सम्पूर्णं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह जो नाम सहस्र है केशवकी अभिराम । तिहकीं पठि है जौन अह सुनि है जो बुधिधाम ॥
 दुर्हलोकने अशुभकीं है है प्राप्त न तौन । यामे संग्रह है नहीं सुनऊं तात बुधिधाम ॥
 पठि है सुनि है याहि जौं प्राणाय परम अनूप । वेदवान तौ होय गो निखय जानऊं भूप ॥
 सधी साहि है विजयकीं वैश्वदेव्य अतिनाम । शूद्र होत आनन्दकीं प्राप्त सुनऊं बुधिधाम ॥
 पाहत अे जन धर्मकीं धर्म कहेत ते पाव । अर्थ कहत ते अर्थकीं पावत बुदि कसप ॥
 अह कामीजन कामीं प्राप्त होत है प्रूप । सवति पावन अनुज ते सन्ति सवत अनूप ॥

शा०प०
दा०ध०

॥ * ॥ मधुभारच्छन्दः ॥ * ॥

हरिनाहि साय । प्रीतिहि सचाय ॥ निति पढत जौन । वर बुद्धिभौन ॥ यत्र सहत सख ।
अति होत दक्ष । अचला अनूप । अत्र सहत भूप ॥ भय होत नाहि । कब होखँ पांदि ॥ बाढत
सुनीर्यी अति सहत धीर्यी ॥ कबहुँ न होत राजको उदोत ॥ बख औं सुरुपापावत अनूप ॥ पुतिमान
पर्न । होत सु सधर्म ॥ अरु ज्ञातिमांह । सुनु भूमिनांह ॥ होत सु प्रधान । वर सुमतिमान ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ ॥

बँधो होय जन जौन सो बन्धनते कूटत है । सुमऊँ तात बुधिभौन रोनी कूटत रोनीसों ॥
कूटत है भयवान भयसों निश्चय भूपवर । मनुज आपदावान आपदसा सो कूटत है ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वासुदेवके भक्त ते अशुभ सहत कबहुँ न । पावत हैं परमा महत आनंद दिन दिन दून ॥
जन्म जरा अरु मृत्युको तिमिहिं व्याधिको पर्न । भय नहिं प्रप्त्यत होत है सुनु वर भूप सधर्म ॥
इति श्रीविष्णु सहस्रनाम माहात्म्यं ॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ * ॥
सुमऊँ पितानह प्राज्ञवर सर्वशास्त्रविद पर्न । कौन जपे जप धर्मफल जन निति सहत अर्भर्न ॥

॥ * ॥ चरणा दोहा ॥ * ॥

देवकर्म अरु पितरकर्मने अरु प्रवेशमे तात । औ तिमिही प्रस्थानमे कहा जपे अबदात ॥

॥ * ॥ हंसादोहा ॥ * ॥

अरु हरिनाशन कौन जप अरु भयनाशन कौन । कहौ मोहि अबगाहि कै सुमऊँ तात बुधिभौन
कह्यो व्यासकों मंत्र है तोहि कहत हौं तौन । धिरि करि कै मन सुमऊँ तुम भूप मनीषाभौन ॥
मनुज सुने जिहि मंत्रकों रहित पापसों होत । महत आयुकों सहत अरु मुदको सहत उदोत ॥

॥ * ॥ अथसावित्रो ॥ * ॥ नमो वशिष्ठाय महाव्रताय पराशरं वेदनिधिं प्रणम्य । नमोऽस्य

मन्ताय महोरगाय नमोऽस्तु सिद्धेभ्य इहाभूयेभ्यः ॥ नमोऽसृषिभ्यः परमं परेषां देवेषु देवा वरदं
वराणाम् । सहस्रशीर्षाय नमः शिवाय सहस्रं नामाय जनार्दनाय ॥ अजैकपादहिर्बुधः पिनाकी
घापरजितः । क्रतुश्च पितरुः ॥ अच्यंस्वकश्च सुरेश्वरः ॥ वृषाकपिश्च शम्भुश्च हवनाथेश्वरस्तथा ।
एकादशैते प्रथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः ॥ शतमेतत्समाप्तांतं शतरुद्रे महात्मनाम् । अंशो भगवन्
निचश्च वरुणश्च जलेश्वरः ॥ तथा धातार्थ्यमा चैव जयन्तोभास्करस्तथात्वष्टा पूषा तथैवेन्द्रो द्वादशो
विष्णुरुच्यते ॥ इत्येते द्वादशादित्याः काश्यपेया इतिप्रभो । धरो ध्रुवश्च सोमश्च सावित्रोऽपि
सोचनः ॥ प्रत्यूषश्च प्रभाषस्त बसवोऽपौ प्रकीर्तिताः । नाशत्याश्चापिदस्रः शक्यतौहावश्चिनावपि ॥
मार्तण्डस्यात्मजावेतौ संज्ञानासाविर्निर्गता । अतःपरं प्रवक्ष्यामि लोकानां कर्मसाक्षिणः ॥
अपियज्ञस्यवेभारोः दक्षस्य सुकृतस्य च । अदृश्याः सर्वभूतेषु पश्यन्ति चिदश्वेश्वराः ॥ शुभा शुभानि

कर्माणि मयः कालश्च सर्वशः । विश्वेदेवाः पिबन्त्या मूर्तिमन्त सपोधनाः ॥ सुनयश्चैव सिद्धान्
 तथासाक्षपरायणाः । शुचिस्त्रिताः कीर्तयतां प्रयच्छन्ति शुभं नृणाम् ॥ प्रजापतिहृतानेतासो
 कान्दिद्यनेजसा । वसन्ति सर्वलोकेषु प्रयताः कर्मकर्मसु ॥ प्राणानामीश्वरानेतान्कीर्तयन्प्रयतो
 नरः । पश्चात्कानैविपुलैर्युज्यते सहिनित्यशः ॥ लोकांश्चलभते पुण्यान्विश्वे श्वरहृताम् शुभान् । एतेदे
 वास्तथासि शत सर्वभूतगणेश्वराः ॥ नदीश्वरो महाकाषो ग्रामणोऽप्यभञ्जजः । ईश्वराः सर्वलोकानां
 गणेश्वरविनायकाः ॥ सौम्यारौद्रागणाश्चैवयोभभूतगणास्तथा । ज्योतींश्च सरितोऽप्योमसुपर्णाः पद्मगे
 श्वरः ॥ पृथिव्यान्तपसासिद्धान्स्थावराश्चराश्चह । हिमवानादयः सर्वे चत्वारश्चमहार्षावाः ॥ भवस्या
 नुचराश्चैव हरतुस्थपराक्रमाः । विष्णुर्देवोऽथ जिष्णुश्च खान्दश्चाविष्णुषासह ॥ कीर्तयन्प्रथमः सर्वा
 न्सर्वपापैः प्रमुच्यते । अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि मानवाह्नं पिसतमानां च बक्रोतश्चरैभ्यश्च अर्वावसपरावसु ।
 औषिजश्चैव कषीवात्सलश्चाङ्गिरसः सुतः ॥ ऋषेर्मेधातियेः पुत्रः करणो बर्हिषदस्तथा । ब्रह्मातजो
 मया सर्वे कीर्तितालोकभावनाः ॥ लभन्तेहि शुभं सर्वं रद्धानेकवसुप्रभाः । भुवि कृत्वा शुभं कर्म मोदते
 दिवि देवतैः ॥ महेंद्रोः श्रवः सप्तप्राचीवैदिशमश्रिताः प्रयतः कीर्तयन्नेतां सचलोको महीयते ॥ उन्मुचुः
 प्रमुचुश्चैव स्वर्गाश्चैव सर्वोर्षवान् । दृढेयश्चैर्ध्ववाङ्मृत्वाणोभोगिरास्तथा ॥ मित्रावरुणयोः पुत्रस्त
 थागस्त्यः प्रतापवान् । धर्मेराजर्त्विजः सत्यदक्षिणां दिशमाश्रितः ॥ दृढेयश्च क्रतेयुश्च परिव्याधश्च कीर्ति
 मान् । एकतस्रद्वितवश्चैचित्तश्चादित्य संनिभाः ॥ अत्रेः पुत्रश्च धर्मात्मा ऋषिः सारस्वतस्तथा । वरुणस्तर्त्वि
 जः सप्तपञ्चिर्वादिशमश्रिताः । अत्रिर्वसिष्ठो भगवान्कश्यपश्चमहानृषिः ॥ नैतमः समरहाजो विश्वामि
 त्शोचकौशिकः । ऋषीकतनयश्चोद्योद्यमदपिः प्रतापवान् । धनेश्वरस्य श्रवः सप्तैते उत्तराश्रिताः ॥ अपरे
 सुनयः सप्तदिशुर्बर्वास्तपिष्ठिताः ॥ कीर्तिस्तस्त्रिकरानृणां कीर्तितालोकभावनाः । धर्मः कालश्चकाम
 श्चवसुर्वासुकिरेव च ॥ अनन्तः कपिलश्चैव सप्तैते धरणीधराः । रामोऽप्यसत्सवाद्रौणिरस्तथा माच
 लोमशः ॥ इत्यनेमनघोदिव्याएकैकः सप्तसप्तधा । शान्तिस्तस्त्रिकरासोके दिशांपात्ताः प्रकीर्तिताः ॥
 यस्यां यस्यां दिशि ह्योतेमन्मसः शरणं ब्रजेत् । सृष्टारः सर्वभूतानां कीर्तितालोकभावनाः ॥ इत्यनेमे रसा
 वर्णे मीर्कण्डेयश्च धार्मिकः । सांख्ययोगैर्नारदश्च परभतश्चमहानृषिः ॥ अत्यन्तपसेदान्तास्त्रिपुलोकेषु
 विश्रुताः । अपरे रद्रसुहाया कीर्तिता ब्रह्मलौकिकाः ॥ अपुत्रो लभते पुत्रदारिद्र्यो लभते धनम् । तथा
 धर्मा र्थकानेषु सिद्धिश्च लभते ॥ पृथ्वीवर्षवन्पृथ्वीयस्मभ्वत्सुता । प्रजापतिः सार्वभौमः कीर्तयेद्
 सुधाधिपम् ॥ आदित्यवशप्रभश्च महेंद्रसमविक्रमं । पुरुरवसमैश्च त्रिपुलोकेषु विश्रुतं ॥ बुधस्य दधितं
 पृथ्वीर्तयेद्दसुधाधिपं । विश्वोक्तविश्रुतकीरं भरतं च प्रकीर्तयेत् ॥ गवामयेन यज्ञेन येन नेष्टं चैकतेयुगे ॥
 रतिदेवं महादेवं कीर्तयेत्परमं यति ॥ विश्वजित्तपसेपेतं लघुलोकपूजितं । तथास्तेष्वराजर्षि
 कीर्तिषोत्परमयुतिं ॥ सगरस्यात्मजायेन प्राप्तान्सापरितास्तथा । ऊगाश्च समानेतान्महारूपान्महो

१५० स्वप्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगाभिना श्रीवन्दोजनकाशीवाहि
१५० रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजनेपोनाथस्य शिष्येण सखिदेषेन कविना विरचिते भाषायां
महाभारतदर्पणे शान्तिपूर्वणि दानधर्मे एकोऽनवतिस्रोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ चरणादोहा ॥ * ॥

यदि प्रसङ्गमे कहत हौं एक इतिहास अनूप । तामे हे वृत्तान्त शपथको सुनऊं युधिष्ठिरु भूप ॥

॥ * ॥ अरिल्लहन्द ॥ * ॥

पश्चिम दिशाभाहि नर नायक । तीर्थ प्रभास परम अथ घायक ॥ तामधि आय सुकृषि मित्रि
भतिवर । करत भए यह मंच सु मुदकर ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

पुण्य मई यह भूमि जो दायक मोद अखर्व । तीरथ जाचकों चलै तामे मिलि कै सर्व ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

भृगु बलिष्ठ गौतमं हरपाने । भरे तेजसों परम महाने ॥ शुक्र अङ्गिरा पर्वत नारद । वरत तेजसों
रविकी भारद ॥ कवि करयप मालव मतिमाना । भरद्वाज अष्टक मुदवाना ॥ बालखिल्य आनद
सों पागे । विश्वामित्र तिमहि अनुरागे ॥ तिमिहि दिलीप मङ्गुष शिविराजा । धुन्धमार पुर समुद
दराजा ॥ नृप ययाति अह अम्बरोष वर । अधर्मदर निति परम धर्मकर ॥ ए हव इन्द्रहि करि कै
आगे । तीरथ करण चले मुद पागे ॥ तीरथ करत करत भूमाहो । आए नदी कौशिकी पानी ॥
सखिधि ज्ञान तामाहीं करि कै । गय ब्रह्म सरकों मुद धरि कै ॥ करि सनाम तामे बड नामे ।
कमल कन्दकों खोदन लागे ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

खोदि खोदिकै कन्द तव धरत भए तटमाहि । तह अमख्य अपना खयो कन्द खलत भे माहि ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

तव अमख्य चिन्नासो छाय । अवि गणको इमि बैम सुनाए ॥ कमलकन्द मेरो किहि लीगो ।
सबने यह अधर्म किहि कीगो ॥ चोरीकरण योग्य तुम नाहो । सत्य कहत हौं अविगण नाहो ॥
ताते कन्द हमारो दीजे । अधर्म गुणि कै लोभ न कोजे ॥ कुलित काल धर्मको भाये । कालमयको
सो करत प्रकारे ॥ सुग्त रहे सोई अब आयो । घाते दुःख मम होमे छाये ॥ जे हे अब अधर्म
भूमाहो । लखि हें भूपति धर्महि नाहो ॥ विप्र लोभ होने बड धरि कै । ग्राममाहि अविश्वर
करि कै ॥ बड सुनावै ने शूद्रनको । धर्मने नही धरि हें मनको ॥ करि हें सब सबके अपमाने । धरि
हँहल हियमाहि महाने ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

बखो निबल हि लूटि हे दया करै ने माहि । ताते अब हम जाय ने नुर परखोके माहि ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकहन्द ॥ * ॥

बखन सुकृषि अमख्यको सुनि कै । कहत भए सब अवि गिर धुनि कै ॥ खोखो हम नेहि कमल

तिहारो । आप न यह हियमाहिं विचारो ॥ कहि अंगरथी जैसे बाजी । हिए शपथको रक्षा
आनी ॥ पुत्र पौत्रनसह दुख पाने । शपथ करण कहि अरु भूप सामि ॥ ॐ ॥ भृगुवाच ॥ ॐ ॥
जिहिं तव पुंकर लीन्हो है । सो शपथान दुःख सो भै है ॥ वृषादिकनको सो पल हैहे । तेज
तास तनमे नहिं रहै ॥ ॐ ॥ बशिष्ठउवाच ॥ ॐ ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो । होऊ
सहा सो दुर्मतिवरो ॥ होय नगरमे सो सन्धाथी । घर घर फिरि कै लहऊ उदायो ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

॥ * ॥ कश्यपउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लयो होय जिहि कलम तव यह तीरथके कूल । बेचो सो सब बस्तुको धरि कै लोभ अतूल ॥
धरी अन्यको वस्तु जो करो लोभ तिहिंमाहिं । भूटो साही होऊ अरु करो धर्मको माहिं ॥

॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

कामक्रोधमाही रत रहो । द्विज है कृषी कर्मको गहो ॥ होऊ मत्सरी दुर्मति धारो । लयो होय
जिहि कलम तिहारो ॥ ॐ ॥ अत्रिउवाच ॥ ॐ ॥ बेदमाहि भूटहि निति भाखो । पास
सदा आत्मको राखो ॥ रहो अपावन द्विजको मारो । लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥
॥ भृगुवाच ॥ शूद्रमाहि पुत्र उपजावो । हितु उपकारण मनमे लावो ॥ आपुहि भोजन करै
मिरावो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहायो ॥ पुरुवाच ॥ करो भोज्य नारीको ल्यायो ॥ रहो
आपु आलससो छायो । होऊ बेय सो दुर्मति बायो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहायो । दिल्लीप
उवाच ॥ एकहि क्रुप होय जामाही । होय न सरिता ताके पाही ॥ असो ग्राम बसै द्विज तामे ।
नितिहि विहार करै शूद्रामे ॥ तिहिकी गतिको सो पद धारो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥
शुकउवाच ॥ भोजन करो वृषापल करे ॥ होऊ भूमिनायकको चरो । रति कीवो दिनमाहि विचा
रो ॥ लयो होय जिहि कमल तिहारो ॥ यमदग्निवाच ॥ पढो अनध्ययनके माही । कहेसर्वदा
बैम वृषाही ॥ शूद्र आहमे भोजन करो । अधर्मसो कबहुँ मति उरो ॥ कहेहुँ न सुमने पव धारो ॥
कथो होय जिहि कमल तिहारो ॥ * ॐ * ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ शिविवाच ॥ * ॥ ॐ * ॐ *
करो अन्यके वस्तुमे बिच होय कै अज्ञ । लयो होय जिहि चोरि तव कमल सुनऊ कहिप्रज्ञ ॥

॥ * ॥ यथातिवाच ॥ * ॥

किए अनार वेदको होत प्राप्त अरु ज्ञान । करो होय जिहि कमलकी चोर । लहे सु तौभा ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

सो धन जो विद्या हि पढावै । अतिथि होय पुनि गृहमे आवै ॥ ताहि होत है पातक जोई । होय
कमलके चोर हि सोई ॥ अम्बरीषउवाच ॥ नारि ज्ञाति अरु भोके माहीं । दया करै ज्ञान जन
माही ॥ अरु जो ब्राह्मणको संघारै । हियमे अधर्मको न विचारै ॥ ताहि होत है पातक जैसे ।
होय अधर्मको अतिमैसा ॥ नारदउवाच ॥ श्रेष्ठकी निन्दाको कीन्है । अरु निर्वलको धन हरि

कमल अबहीं तुम मेरो । चीन्हें तुन्है कहा शशि हेरो ॥ इन्द्रउवाच ॥ सुनिवे धर्म कमल हम ली
न्हों । लोभ नेक हीमै नहि कीन्हो ॥ ताते क्रोध न मनमे कीजे । कमल आपनो यह तुम लीजे ॥
सुनि मै धर्म महत सुख पायो । शपथ व्याज ऋषिगणको गायो ॥ करज क्षमा अपराध हमारो ।
स्वागत डर है मोहि तिहारो ॥ सुनि अगस्त्य मघवाकी बानी । अति प्रसन्नता हीमे आनी ॥ लोभ
भए नीरज ऋषि अपने । ताते मिटो लोभको तपनो ॥ तदनन्तर ते ऋषि बडभागे । अन्य तीर्थको
ने मुदर्पाने ॥ विधिवत पर्व पर्वके माहीं । तीर्थमाहिं वा देवत पाहीं ॥ यह आख्यान पढै जो कौई ।
ताके मूरख सुत नहि होई ॥ कौनऊ आपत पास न आवै । जरा अवस्था नहिं नगिचावै ॥ नष्ट
होति कलुषता भारी । सम्पति गृहतेँ टरति न टारी ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

अन्तकाल जब होय तब जाय स्वर्गके माहिं । भरो भूरि आनन्दसों रहै सुरणके पाहिं ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीवन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकनोश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कबिब्रह्मा विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वणि दानधर्मे शपथविधौ नबतितमोख्यायः ॥ * * * * *

॥ * * * * * यधिष्ठिरउवाच ॥ * * * * * दोहा ॥ * * * * *

याहकर्ममे करत जन उपानहनको दान । तिमिहि ऋचको करत है श्रद्धा सहित महान ॥

तीर्थ औ व्रतहनमे देत सविधिहै धर्म । ताते पूकृत हैं तुन्हें कहिए मोहि सधर्म ॥

ऊपानह औ ऋचकी प्रवृत्ति की है कौन । औ किहिविधि उत्पन्न भे कहो तात बुधिमान ॥

आह तीर्थ अरु व्रतनमे इन्हें देत किहि अर्थ । कहो मोहि विस्तार कै सुनिए तात समर्थ ॥

॥ * * * * * भोगउवाच ॥ * * * * * दोहा ॥ * * * * *

जिहिविधिसों उतपन्न भे ऊपानह औ ऋच । अरु जिहिविधिसों प्रवृत्त भे भे प्रसिद्ध सरवच ॥

सो विधि तुमसों कहत हैं मै विस्तारित महान । तजि प्रमादताकों सुनऊँ पंडुसुवन मतिमान ॥

यह प्रसङ्गमे कहत हैं एक इतिहास अवाद । दिनकर औ यमदमिको तामे है समाद ॥

॥ * * * * * चरणाकुलकण्ठ ॥ * * * * *

ऋषि यमदमि मोदसों पागे । धनु गहि कीडा करणें लागे ॥ शर ऋषिवर सु चलावत ज्यों ज्यों ।

देरि रेणुका ल्यावति त्यों त्यों ॥ जब मध्यान्ह भयो तब भारी । तपति भई ताते सो नारी ॥ भई

बिकल औ ठाढी तरुतर । तिहितें भए अबेर महत डर ॥ भयो रेणुकाके हियमाही । आई

कौपति ऋषिके पाही ॥ तब ऋषि कहेयो ताहि कुपसेतो । लार्द बार कहते एती ॥ रेणुकोवाचा ॥

सुनु ऋषिराय क्रोध जिन कीजे । कारण देरीको सुनि लीजे ॥ तप्त भए शिर अरु पद मेरे । परम

तेजसो दिनकर बेरे ॥ तातेँ गर्द बृत्तर भागे । भूरि बिकलताईसों पागी ॥ जबलौ गर्द बिकपता

णा०प० नाहीं । तबलौं आय सकि न तब पाहीं ॥ यह कारण है देरीकेरो । है अपराध कछू नहि मेरो ॥
रा०ध० सुनि कै यह नारीकी बानी । रिसि करिकै ऋषिराय महानी ॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥ ॐ ॐ ॐ
कहत भए इमि नारिसों गहि निषङ्ग कोदण्ड । मै गिराय दैं हौं रबिहि बर शरणसों चण्ड ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

कहि इमि सुऋषि चढाय सु भौंहे । बैठत भए भानुके सोहे ॥ अपि सरिस यमदग्निहिं
देखे । ऋषिको क्रोधदाप हिय लेखे ॥ मारतण्ड द्विजको वपु धरि कै । आय कह्यो इमि विनतो
करि कै ॥ मारतण्ड तब कहा बिगास्यो । ताँते इतो क्रोध तुम धास्यो ॥ भानु किरणसों जलकों
करवै । ताहि फेरि बर्षामे बरवै ॥ अन्न होत है भूमे ताँते । रहत समुद मनुजादिक जाते ॥ होत
धर्म बज्र विधि सुमहीमे । पढत शास्त्र श्रुति द्विज सुखहीमे ॥ होति विन्न सञ्चयना भारी । बज्र
विधि दान करत नर नारी ॥ तिहितें भानुपै न तुमं रोषो । मेरे कहें रोषकों मोषो ॥ ॐ ॐ ॐ

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कीन्ह चहत प्रसन्न हम तुन्हें सुनऊँ ऋषि पर्मे । मिलि है भानु निपाततें तुमकों कहा सधर्म ॥

॥ ॐ ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ ॐ ॥

भासमानके सुनि वचन ऋषि यमदग्नि सुजान । कहा करत भे सो हमै कहिए तात सुजान ॥

॥ * ॥ चरणाकुलकण्ड ॥ * ॥

॥ भीष्मउवाच ॥ ॐ ॥ भासमानकी सुनि कै बानी । ऋषि न शान्त ताहीमे आनी ॥ तब रवि
नामि जोरि कै पाणी । कहत भए इमि ऋषिकों बाणी ॥ चलत रहत है भानु सदाही । कैसैं
अचल जानि हो ताही ॥ अचल बिना जाने तुम एजू । करि हो किमि निपात रविकेजू ॥ यम
दग्निउवाच ॥ सुनऊँ भानु धिरताकों तेरो । देखति शान्तआलि हैं मेरी ॥ अर्धमेषमधि दिनके
माही । तब धिरता है हेँति सदाही ॥ सूर्यउवाच ॥ निश्चय तुम जानो गे मेही । योँते कहत
ऋषे हम तोही ॥ जानऊँ मोहि आपु अपकारो । करऊँ कृपा हौं शरण तिहारी ॥ भीष्मउवाच ॥
तब यमदग्नि कह्यो इमि हसि कै । हाऊँ त्रिकल जिनडरमे फसिकै ॥ नम्रताहि अब देख तुम्हारी
मिटो रोषता सर्व हमंगरी ॥ तब किरणसों युत पथमाही । दुःख होय जीवनकों नाही ॥ असों
कछू विचार विचारो । मिटै रोष तब सर्व हमारो ॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॐ * ॥

सैं कहि छुप रहे ऋषि यमदग्नि सुजान । छत्र उपानह देत भे तब ऋषिवरकों भानु ॥

छत्र उपानह देय कै ऋषि यमदग्निहिं पर्मे । मारतण्ड इमि कहत भे भूपति सुनऊँ सधर्म ॥

शिरकी रक्षा छत्रसों छै है हे ऋषिराय । उपानहनसों होयगी चरणकी सुखदाय ॥

अबसों छै है लोकमे इनको ऋषे प्रचार । छै है इनको दान फल अक्षय सुमति अगार ॥

॥ भीष्मउवाच ॥

एव उपानहकी प्रवृत्ति कीन्ही रनि इमि तात । उज्जम इनको दानको पुण्य लोक बिल्यात ॥

॥ * ॥ रामगीतीकन्द ॥ * ॥

उपानह अरु एवको तुम करऊ तातें दान । धर्म अह्य प्राप्त तुमको होय गो मतिमान ॥
एव ये जन देत द्विजको शुभ्र सुषमा अँन । प्राप्त ताको होत है परलोकमे बज्र चँन ॥ बसत सुर
पति लोकमाहीं दँवतनकोसाथ । है न ग्रामे नेक संशय सुनऊँ हे नरनाथ ॥ देत द्विजको तपनि
माहीं उपानह जन अँन । लहत तौनऊँ देवतनको लोक आनदभौन ॥ बास बज्रदिन स्वगमे
करि ता अनन्तर परम । जात सो गोलोकमाहीं सुनऊँ तात सधर्म ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥ * ॥

एव उपानह दानको फल जो है अभिराम । सो संपूरण हम कह्यो तुमको नृपनुधिधाम ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरंउवाच ॥ * ॥

एव उपानह दानको सुन्यो सर्व फल तात । अब म्दहस्य धर्महि कहो हमको तुम अबदात ॥
कहा कि एसो मनुजके होय ऋद्धि बज्र परम । सोऊ तुम हमको कहो करिकै कृपा सधर्म ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यह प्रसन्नमे कहतहौ एक वृत्तान्त महान । वासुदेव अरु भूमिको है समाद सुजान ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

हमसो पूछो जान सुनहुँ धर्मधर प्रज्ञ तुम । वासुदेव मुदभौन पूछत भे सो भूमिसौं ॥

॥ * ॥ चरणाकुलककन्द ॥ * ॥

वासुदेवकीं सुनिकै बान्ये । कहति भई इमि धरणि सुजानी ॥ करिकै यज्ञ नेम गहि अतिहीं ।
करै प्रसन्न सुरन्हको नितिहीं ॥ आदर करि सुप्रीति हियमाहीं । अतिथहि करै प्रसन्न सदाहीं ॥
करिकै आङ्गुलिबिधि सह प्रेमै । पितर प्रसन्न करै गहि नेमै ॥ ऋषिबर होहि प्रसन्न सु जैसे । ति
नको करै सुमतिसें तैसे ॥ वासुदेव यह धर्म म्दहीको । आनंददायक है आत नीको ॥ ऋद्धि
मिलित बज्र कीन्हे याको । म्दही लहतहै परम प्रभाको ॥ धरणीकी यह बाणी सुनिकै । कृष्ण
प्रतापवान बर गुणि कै ॥ धरणि कह्यो यहि धर्महि जैसे । करत भए बर विधिसो तैसे ॥ * ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

किँ धर्म यह मनुज बर पाय सुयश यहिलोक । स्वर्गलोकमे प्राप्त है निशिदिन रहत अशरक ॥

स्वस्तिश्रीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दिनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिरघुनाथकभीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मण्डितेन कविना विरचिते
भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्षणि दानधर्मे एकनवतितमोऽध्यायः ॥ * ॥ * ॥ * ॥ * ॥

आ०प०

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दा०ध०

गन्ध धूप अह दीपको किए दान अभिराम । होत कहा फल मनुजको कहऊ तात बुधिधाम ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

यहि प्रसङ्गमे कहत है एक इतिहास सुभूप । मनु औ सुवरण विप्रको है सम्वाद अनूप ॥
हो सम सुवरणवर्णके ताको वर्ष विभात । तौते सुवरण नाम भो तिहिँ दिजको निखात ॥

॥ * ॥ रामगीतीशब्द ॥ * ॥

समय कौनऊमाहिँ सो दिज गयो मनुके पास । बूजि कै अन्योन्य दोज कुशल सहित
ऊलास ॥ मेरु पर्वतमाहिँ सुन्दर शिलापर ते पर्न । भए बैठत मए मुदसों सुनऊ तात सधर्म ॥
ब्रह्मर्षि अह देवदैत्यनकी कथा अभिराम । करत दोज भए तिहिँ वर शिलापर अभिराम ॥
ता अनन्तर कह्यो मनुकों वाक्य सुवर्ण एह । मनुजकेहित अर्थ कहिए धर्म हे बुधिनेह ॥ धूप
दीप सुगन्धसों वर मनुज पूजत देव । होत तिनकों कहा फल है कहऊ याको भेव ॥ * ॥ मनु
उवाच ॥ कहत धहिँ परसङ्गमे इतिहास एक सधर्म । शुक्र अह बलिदैत्यको सम्वाद तामे पर्न ॥
सुनऊँ द्विजवर शुक्र आवतभए बलिके पास । देखि तिनकों दनुजपति बलि उद्यो सहित
ऊलास ॥ सहित आदर पूजि आसन चारु पै बैठाथ । आपु बैठत भयो सोहें शुक्रको सुख पाथ ॥
ता अनन्तर कथा पूछी आपु हमसों जौन । भयो सोई पूछतो बलि शुक्रसों सतिभौन ॥ * ॥
बलिरुवाच ॥ * ॥ सुमन दीप सधूप दानहिँ किएते फल कौन । मिलत है तुम कहौ भार्गव कृपा
करि बुधिभौन ॥ * ॥ शुक्रउवाच ॥ * ॥ देत मनकों मोद अरु श्रिय देत है अभिराम । नाम
सुमनस कहत तौते पुष्यको बुधिधाम ॥ सुमन जो जन देवतनकों देत है दैत्येय । देव तुष्टित
होय ताकों पुष्टि देत अश्रेय ॥ सुमन जिहिँ जिहिँ देवको उदेश्य करि जो देत । देत सो सो ताहि
मङ्गल सुनऊ बुद्धिनिकेत ॥ वृत्त जेते यज्ञमाहीं ग्रहण हैं अभिराम । सुमन तिनके देवतनकों
लगत है प्रिय माम ॥ वृत्त जे नहिँ ग्रहण मखने सुमन तिनके जौन । असुर राक्षस यत्नगणकों
लगत हैं प्रिय तौन ॥ होय सुमननमाहिँ जिन जिन परम चारु सुवास । सुमन ते सब देवतनके
जानु है बुधिरास ॥ अत तिनके सुमन जैसे अकण्ठक जे वृत्त । देवतनकों लगत हैं प्रिय सुमन
तिनके स्वत्त ॥ अलनजे कमलादि तिनके सुमन हे सुनु तात । यद्य औ गन्धर्व नागहिँ देत बुध
अवदात ॥ रक्त तिनके फूल अति तरु सकण्ठक हैं जौन । प्रेतकेहें योग्य तिनके फूल सुनु बुधि
भौन ॥ कस्तुरिलके फूल जैसे वृत्त जे भूमाहिँ । तिनऊके हैं फूल भूतहिँ योग्य संग्रय माहिँ ॥ देत
जे आनंद मनकों सुमन कोमल चारु । मनुष्यनके योग्य तेहें सुनऊ सुमति अगारु ॥ खता तरु
सतपत्र भे अशानमाहीं जौन । औ भए देवायतनमे जौन सुनु बुधिभौन ॥ विवाहादिकके नहीं
है योग्य तिनके फूल । कहत हौं मै तुम्हें निजु कै करत अशुभ अतुल ॥ खता औ तरु मए जे उत्पन्न

गिरिने धर्म । सुरनकेहैं योग्य तिनके सुमन दैत्य सुधर्म ॥ सुमन पहिलें अमञ्ज जलसों धोयकै
अभिराम । मंत्रसों पुनि करै मोक्षण सहित विधि बुधिधान ॥ सरित कण्ठकरत्त जिनके सुमन
कटु फल पर्भ । जौन जैसे वृत्त तिनके सुमन दैत्य सुधर्म ॥ देवताकों आर्पण अरिबधन कारज
माहिं । अथर्वण मे लिखी विधि घहमाहि संशय नाहि ॥ देवतनकों करत जे परसन्न सुमन
घढाय ॥ करत तिनकी कामनाहैं सिद्धि देव सचाय ॥ पूजि कारकौ दयतनको करत जे सनमान।
करतहैं सगमान तिनको देवता सुखदान । अवज्ञा जे देवतनको करत दुर्मतिवान ॥ भस्म ताकों
करतहैं करिकोप देव महान ॥

शा०प०
दा०ध०

सुमन दानको फल कह्यो तुहै बर्षि हम सर्व । धूपदानको अब सुनो फल उत्कर्ष अखर्व ॥
एक सारिण निर्जास एक औ है कृत्रिम एक । त्रय प्रकारकी हातहैं धूप सुनऊँ सबिवेक ॥
चन्द्रनादिकी घूप जे ताको सारिण नाम । अष्टगन्धको कहतहैं कृत्रिम धूप ललाम ॥
नाम कहत निर्जासहै गुग्गुलादिको चार । इन तीन ऊँ मे अष्टहै गुग्गुल धूप उदारू ॥
सुन्दरके निर्जास विम हैं निर्जास जितेक । तिनकी प्रिय अति धूपहै देवनको सबिवेक ॥
यत्त सर्प राक्षसनको सुनु दैत्येश अनूप । सब सारिणमे अग्रकः लागतिहै प्रिय धूप ॥
सुन्दरके निर्जासको दैत्यनको प्रिय धूप । यत्तादिकको प्रिय नहीं निज्रुकै कहत अनूप ॥
मल्लिकादिको सुरससों युक्त राल रस चार । मनुजनको प्रिय लगतिहै तिनकी धूप उदारू ॥
देव दनुज अरु भूतहू यहि सुधूपसों पर्भ । शीघ्रहि तुष्टित होतहै सुनु दैत्येश सधर्म ॥
मनुजनही के योग्यहैं अतरादिक जे सर्व । हम निश्चय करि कहतहै सुनु दैत्येन्द्र अखर्व ॥
जौन सुमनके दानको उत्तम फलहै तात । सोई धूप प्रदानको फलहै अति अवदात ॥
दीपदानको कहतहै अब हम फल अभिराम । दीपदान किन्हें परम तेज बढतहै माम ॥
प्रभा बढतिहै अङ्गमे होत निरोगित नैन । आधि व्याधि नहि होतिहै नितिही रहत सचैन ॥
दीप घढायो देवकों लीजे पुनि नहि ताहि । ताकी रक्षा कीजिए निकट बैठिकै चाहि ॥
जौन हरतहै दीपको तौन अन्ध जन होत । होति नष्ट ताकी प्रभा अघको करत उदोत ॥
जसत दीपलौ स्नानमे दीपप्रद दैत्येश । चाहतहै ताकों सदा अमरनसह अमरेश ॥
घृतको दीपक दीजिए प्रेम सहित अभिराम । मिलै न घृत तौ तैलको दीजे दीप ललाम ॥
इच्छा जे अमृत्यकी करै परम हिय माहिं । दीप धरत ते चतुष्यथ बनमे अरु गिरि पाहिं ॥
होत आतमा शुद्ध अरु करति सुबुद्धि प्रकाश । दीपदान ते होतहै असो फल बुधिराश ॥
सुवरण द्विजको सुनु कह्यो यह फल अति अभिराम।सुवरण नारदको कह्यो नारद मोको आम ॥
यह जो विधिसों जानि तुम करऊ नित्य महिपासा।पूर्व उक्त फल तुमऊँ को है हे प्राप्त विशाल ॥

श्रीरज जे यज्ञमाही ऊते जम ते सर्व । भए जाते नरकको सुनु सुमति मान अर्ब ॥ इन्द्रजित
 ष्टे ब्रह्मचारय धर्मको अभिराम । धरे मै हो वसत तवहि ऊतो बुध मै नाम ॥ धरी भिन्ना स्थाय
 मै ही परी तिहिके माहिं । हरी गोके चरणकी रज कठे ष्टे कै पाहिं ॥ तास भोजन किएतें
 मै भयो हौ चण्डाल । हीन मेरो ष्टे गयो बर धर्म तेज विशाल ॥ हरी गोके चरणकी रज परी
 जवसों बुद्ध । वेचबेके योग्य सोम न कहत मतिवर शुद्ध ॥ जौन बेचत सोमको ते जात रौरव
 माहिं । सुबुध ताकी करत निन्दा नित्य संशय नाहिं ॥ परे गौरज भयो हौ चण्डाल मै मतिमान ।
 सुमऊं याते करत हौ मै परे गौरजमान ॥ कूटि हौं किहिभांति ही मै चण्डालतातें परम । होत
 निश्चय नाहि हमको भूप तात सधर्म ॥ राजसुतउवाच ॥ विप्रके धनअर्थ छोडो युद्धमे तुम प्रांग ।
 है तुम्हारी मोक्षको यह हेतु हे मतिमान ॥ बचन सुनि चण्डाल ए महिपाल सुतके परम । विप्रके
 धनअर्थ लरि कै युद्धमाहि सधर्म ॥ प्राण तजि कै मोक्षको सो भयो प्रापत होत । करऊ तातें
 तुमऊं कारज यह सु प्रज्ञापोत ॥ * * * * *
 स्वस्तिश्रीकाश्रीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
 रघुनाथकबीश्वरात्मजगोकुलनाथस्यात्मजगोपीनाथस्य शिष्येण मणिदेवेन कविना विरचिते
 भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्बणि दानधर्मे मृपसुतचाण्डालसम्वादे त्रिनवतितमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एकहि है सुकतीनको लोक परम अभिराम । भिन्न भिन्नकी है कहे मोकों हे बुधिधान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

कर्म कर्मके लोक है प्रथक प्रथक महिपाल । पुण्यलोककों जात है सुकती जौन विशाल ॥

पापमान ते जात हैं पापलोककों तात । यामे संशय है नहीं कहत सुबुध अवदात ॥

कहत एक इतिहास हौ यहि प्रसङ्गमे भूप । गौतमको अरु इन्द्रको है सम्वाद अनूप ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

मतिमान गौतम परम । बनमाहि तात सधर्म ॥ एक हस्तिको सुत चारु । लखि पयो मृतक

उदारु ॥ तिहिकों जिवाय सप्रेम । ऋषि कीन्ह दोर्घ सक्षेम ॥ ककू दिननमाहि महान । गिरिसो

भयो बलबांन ॥ धृतराष्ट्रको धरि रूप । तह आय इन्द्र अनूप ॥ गहतें भए गज तौन । तब देखि

ऋषि बुधिमान ॥ धृतराष्ट्रको डमि बैन । कहते भए मतिअन ॥ मम पुत्रवत है एह । गज चारु

हे अघगेह ॥ गऊ याहि तू तिहि तैन । मम जीव होत अचैन ॥ यह इध अरु जल स्थाय ॥ निति

देत मोहि सचाय ॥ प्रिय अति हि लागत मोहि । सुख लहा इहिकों जोहि ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥

ब्रह्म ॥ नाम उत्तर कुण्डलको लोक जैसे ज्ञान । आतना तुमको दिवै हौं मै तहां करि गान ॥
 धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ कामना करि जात जे नहि कबज्ज कोऊ पास । जे न भक्त सांस धारें
 ज्ञान सहित ज्ञानस ॥ जिते अरुम सथावर हैं भूत तिनको मारि । कबज्ज हिंसा भावको जे जन
 विचारत नाहिं ॥ लाभने औ अलाभज्जने रहत एकहि भाय । सुती निन्दा करत काहूकी न
 सुखदुखद्वय । उत्तराकुण्डलकोमाही जात हैं जन तौन । सुनज्ज अथिबर तहांको हम करैमें
 नहि गौन ॥ दिवै हौ किमि आतना तुम मोहि करि कै कुह । छोडि हौं मै नाहि जै हौं लै सुगज
 यह उह ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ चन्द्रहूके लोकमे जौ जाऊने महिपाल । दिवै हौं तौ तहां
 हूमे जातना सुबिगाल ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ जे प्रतिग्रह लेत नाही देत हैं नितिदान ॥
 जौन मागत विप्र सोई बस्तु देत सुजान । जिते आबैं अतिथि तिनको भूरि करि सनमान ॥
 देत भोजन प्रीतिसों जे परम प्रज्ञावान । छोडि रोसहि सदा कोमल जौन बोलत बैत । निरन्तर
 जे करत यज्ञहि सुनऊ सुश्रुति सचै ॥ जात ते हैं चन्द्रमाके लोकको सुख अँन । दिवै हौ तुम
 जातना किमि तहां हम जै हँ न ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ रजोगुण औ तमोगुणसों रहित अति
 अभिराम । शोकसों रहित तेजस भरो अतिही मान ॥ लोक जैसे भानुको जौ जाय हौ
 तिहिं माहि दिवै हँ तौ जातना हम तोहि संशय नाहि ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ करत सेवा
 गुरुकी जौ प्रीति सहित बिगाल । शास्त्र अतिमे रहत जे रत महत जौन दयाल ॥ तपस्याको
 करत जे अरु गहँ सुब्रतहि जौन । सत्य जे जन नित्य बोलत चारु प्रज्ञाभौन ॥ दिवाकरके लोक
 माही जात ते हैं परम । तहां हम जेहँ न जानऊ सत्य सुश्रुति सधर्म ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥
 बरुणके तुमलोकमे जौ जायहो भूपाल । दिवै हँ तौ तहांहँ हम जातना सुबिगाल ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥
 वेदविधिसों अग्निहोत्र हि करै जो त्रयवर्ष । यज्ञ त्रय बर वर्षमाही करै
 जौन सहर्ष ॥ सुमारगमे चले जौ निति करै नित्य सुधर्म । बरुणके सो लोकमाही जात सुश्रुति
 सधर्म ॥ तहां हम जेहँ न यातें जातना तुम मोहि । दिवै हँ किहिभांतिसों अथि सुनो मोतन
 जोहि ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ जायबेकी तहां मानव करत इच्छा परम । शोकसों है रहित
 जैसे इन्द्रलोक सधर्म ॥ तहां तुमको जातना मै दिवै हँ अति भूरि । कहा गजको लय कै तुम
 रहे सुखसों पूरि ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ युद्ध मे जे सूर है अरु पढत जे निति वेद । जिसे जौ
 शतवर्षलौ बर करै धर्म अखेद । इन्द्रवारे लोकमाही जाय हैं जन तौन । दिवै हौ किमि जात
 ना नहि करैगे तहँ गान ॥ * ॥ गौतमउवाच ॥ * ॥ स्वर्गहूके लसत ऊपर प्रजापतिको लोक ।
 जायबेकी तहां इच्छा करत सब बुधि ओक ॥ तहां तुमको जातना मै दिवै हँ महिपाल ।
 कहा कुञ्जर लेख मोरा भरे हर्ष बिगाल ॥ * ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ * ॥ अश्वमेध हि करत जे अरु
 प्रजा पालत जौन । प्रजापतिके लोकको ते जात हैं बुधिभौन ॥ तहां हम जेहँ न यातें जातना

शा०प०
 दा०ध०

प्रा०प० तुम मोहि । दिवै हो किहिभातिसों ऋषि कहत हैं हम तोहि ॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥
 दा०ध० शोकसों है रहित ओ है परम दुर्लभ चार । जाय कौ तहँ लखत अस्य मोद सुमतिअगार ॥
 सुनऊँ शुचि गोलोक है इहिभातिको अभिराम । तहँ तुमकों जातना मै दिवै हैं अतिमाम ॥
 धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ सहस गो जो देत विधिसें बर्षगाहि ललाम । रहित आदर
 द्विजनकों बुलवाधकै बुधिधाम ॥ हौं हिं गृहमे जासुं शंत गो देत जो दश गाय ॥ हौं हिं
 जाके गज दश सो देय एक सचाय ॥ ब्रह्मचर्यहिं माहि जे जन बृद्ध होत सुजान । करत
 रक्षा धर्मकी जो विप्रवर मतिमान ॥ गौमती अरु कौशिकीमे करत जौन सनान । तिमिहि
 यमुना सुरशरोमे करत स्नान सुजान ॥ विपासा अरु बाजुद्रामे तिमिहि पंपामाहि । प्रेमसें
 जे जाय कौ जन करत स्नान सदाहि ॥ और उत्तम तीर्थ जे हैं भूमिमे अभिराम । सविधि
 तिनमे स्नान जे जन करत हैं बुधिधाम ॥ जात ते गोलोककों है है न संशय अत्र । दिवै हो किमि
 जातना हम जायगे नहि तत्र ॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ उष्णता अरु शीतको है नेक जहँ
 भय नाहि । सुधा प्यास न लगति है नहि होत दुख सुख पाहि ॥ राग द्वेष न जहां है अरु जरा
 मरण न होय । शत्रुता अरु मित्रता जहँ परत है नहि जोय ॥ पाप पुण्य न जहा औसो लोक
 विधिको परम । जातना मै दिवै हैं तहँ कहा लखत सशर्म ॥ * ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ * ॥ करत
 काङ्क्षको न जे जन सङ्ग हैं करि मोह । नेमसें जे करत हैं व्रत करत कबळ न कोह ॥ स्वर्ग
 गतिकों प्राप्त है कौ तौन जनअभिराम । विधाताके लोक बरकों जातहैं बुधिधाम ॥ तहँ हम
 जे हैं न यातें जातना तुम मोहि । दिवै हौं किहिभातिसों मुनि कहा जोहत कोहि ॥ * ॥ गौतम
 उवाच ॥ * ॥ पुण्डरीकसु कंजकी जहँ होति वेदी चार । जहां गायो जात है निति सामवेद
 सुदार ॥ जातना मै दिवै हौं धृतराष्ट्र हेतहँ तोहि । कहा गजकों लेय कौ मुसकात मोतन जोहि ॥
 तत अनन्तर जानि गौतम शककों हे तात । कहत भेदनि वैन प्रज्ञाअन मुनि अवदात ॥ लए तुमकों
 जानि हे सुरराज अब हम आम । तुम न मनसा वाकहसों करत अब मुदधाम ॥ शतक्रतुरुवाच ॥
 हम सु निजरनाथ हैं तुम लए हमकों जानि । तुम्है करत प्रणाम हैं हम जोरि दोज पानि ॥
 व्याजमे गजहरणके हम सुनी अद्भुत वांत । जो कहौ सो करै अब हम सुनऊँ मुनि अवदात ॥
 गौतम उवाच ॥ * ॥ बर्षदशलां हरि हमारे गज हिं राखो अन्त । देऊँ सो तुम कृपा करि कौ
 सुनऊँ हे सुरकन्त ॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥ लखऊँ आवत आपुको यह सुवन बारण परम । चरण
 उपटे रावरेके भूमिमाहि सधर्म ॥ हृषिं तिनकों चायसें सो रह्यो सुखसें पूरि । प्रेम बरख्यो
 जात है नहि तास हियको भूरि ॥ करऊँ बारण लेऊँ बारण आपनो अभिराम । दया धारण
 कर सु धारण श्रेय मम मतिधाम ॥ * ॥ गौतम उवाच ॥ * ॥ चहत हैं कल्याण तेरो सदा
 हम सुरराय । पाय बारण आपनो मै भयो परम सचाय ॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥ कहैं विन

तुम जानि लीन्हों मोहि मुनि मतिधाम । मयो हों परसन्न तातें मयो मुदमै माम ॥ चलऊ तुम शुभलोककों मज सहित ऋषि अषदात । कहे अमें बचन मुनि मां शक्र सुनु हे तात ॥ ता अनन्तर करि सु आगे मुनिहिं गज सह परम । सुराधिप सुरलोककों भो जात होय सशर्म ॥ दोहा ॥ * ॥

शा०प०
दा०ध०

पढिहै जो अख्यान यह मढिहै मुदसों भूरि । जैहैं विधिके लोककों गौतमलौ सुख पूरि ॥ स्वस्तिश्रीका श्रीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणश्याज्ञानुगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीबासि रघुनाथकवीश्वरात्मजेन भोकुलनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतदर्पणे शान्तिपर्वाण दानधर्मे आह कल्पे घतुर्नवतितमोच्छ्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ युधिष्ठिरउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शान्ति अहिंसा सत्य अरु बळ प्रकारके दान । अपनी तियमे तुष्टि अरु दान सुफल सुखवांन ॥ वरणि सुनायो मोहि तुम सुनऊं तात बुधिधाम । पूछतहों एक हेतु अब दइऊं तौन तुम आम ॥ तपबलतें तुम और का जानत अष्ट सुजान । कहऊ अष्ट जो हाय सो बक्ता आपु महान ॥

॥ * ॥ भीष्मउवाच ॥ * ॥

जितनेतप तिनमाहि है अनसन तप अभिराम । अनसन तप सम और तप है न कहत बुधिधाम ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

यह प्रसन्नके माही भूप । सुनऊं एक इतिहास अनूप ॥ विधि औ नृपति भगोरथ परम । तिनका है सम्वाद सधर्म ॥ अमरलोक गो लोकहि परम । अरु ऋषिलोक उलङ्घि सशर्म ॥ गये भगोरथ विधिके लोक । देखि ताहि विधि आनद आक ॥ कहत भए असें वर वैन । सुनऊं युधिष्ठिर प्रज्ञा औन ॥ आए कौनभाति तुम भूप । इहिं सुलोकके माहिं अनूप ॥ नर अरु अमर तिमिहिं गन्धर्व । किए तपस्या बिना अखर्ब ॥ आय सकतहै कौज माहिं । मम उत्तम सुलोकके माहिं ॥

॥ * ॥ भगीरथउवाच ॥ * ॥ सुवर्णको मुद्रा एक लक्ष । दर्द द्विजनकों सादर लक्ष ॥ कहे वेदमे जे व्रत चार । कीन्हें तेमे सबिधि उदार ॥ तिनके फलते मै इहिं लोक । आये हों नहि सुनु मुद आक ॥ होत एकदिनमे मख जौन । कीन्हें तेमै दश मुदभौन ॥ होत पञ्चदिनमे जे यज्ञ । तेज दश कीन्हें सुनु प्रज्ञ ॥ एकादशदिनमे मख जौन । होत किए एकादश तौन ॥ ज्योतिष्टोम यज्ञ शत एक । कीन्हें हें हम सहित विवेक ॥ बसिकै सुरसरितठ शत वर्ष । कीन्हों तप हम महत सहर्ष ॥ तहां खखरो सहस सुढार । दीन्ही हम सुनु मोद अगर ॥ औ कन्या दीन्ही अभिराम । भूषण परम पिन्हाय ललाम ॥ इन्हहँके फलतें हम नाहिं । आए इहिं सुलोकके माहि ॥ अश्व दिए सुन्दर एक लक्ष । अरु गो बीस सहस श्रुति लक्ष ॥ दीन्हीं पुष्कर तीरथ माहिं । विप्र बुझाय विज्ञ हम पाहिं ॥ सुवर्णके आभरण पिन्हाय । साठि सहस कन्या छबिधाय ॥ विधिवत

शा०प०
दा०ध०

हम दीन्हों लोकेश । भरे हर्षों परम अशेष ॥ तौन दांनरुके फल सों न । आए द्रुहिण तुम्हारे
 भौन ॥ गोमल माहिँ सुनऊँ लोकेश । करि सनमान द्विजनके वेष ॥ एक एक द्विजकों हम नाथ ।
 दश दश अर्बुद दर्दसचाय ॥ पहिले ब्याई जो है नाथ । मृष्टी ताहि कहत बुधराय ॥ दोय कोठि
 हम दीन्हों तौन । सुनु हे द्रुहिण परम सुखभौन ॥ तौन दान फल सों हम परम । नाहिँ लक्ष्यो
 तव लोक सशर्म । बाल्हिदेशके बाजी धार । श्रेत वर्षके प्रभा अगार ॥ सुवरण भूषण सों अभिराम ।
 भूषित लसै चालके माम ॥ दीन्हे मै सादर एक लक्ष । बायु बेनवारे अतिदक्ष ॥ एक एक नखमे
 लोकेश । कोठि कोठिबर मोर सुवेश ॥ बेदवान विप्रणकों दीन्ह । तिनको विधियत आदर कीन्ह ॥
 तौनऊँ फलसों आए नाहि । ब्रह्मा लोक तुम्हारे माहिँ ॥ श्यामकर्ण बाजी अभिराम । अरु बर
 हरितवर्ण हविधाम ॥ सुवरण माला तिन्हें पिन्हाय । सचह कोठि दिए सुखदाय ॥ सुवरण माल
 विशाल सुढान । तिन्हें भूषित अति बलवान ॥ तिनके दन्त सु उन्नत शुभ । मनु बकमाल धरे है
 अक्ष ॥ तिनके कुम्भनि जपर परम । चिन्ह पद्मके लसत सशर्म ॥ जैसे सुन्दर मैंगल माम । सचहको
 टि दिए हविधाम ॥ अरु सुवर्णके रथ रमणीय । तिन्हें देखि मोदित खेजीया । मुकता लर लागी
 तिन माहि । इन्द्रऊके जैसे रथ नाहि ॥ सचह कोठि दिए हम तान । युक्त सु वाजिनसों बल
 भौन ॥ अरु दक्षिणाके सु जितेक । बेदमाहिँ हैं कहे तितेक ॥ वाजपेय दश यज्ञ सुवेश । करि
 दीन्हे हम सब लोकेश ॥ बलसों जोति सर्व महिपाल । राजसूय करि यज्ञ विशाल ॥ भूषण सों
 भूषित अभिराम । मघवा सम विक्रमसों माम ॥ जैसे भूपति एक हजार । दिए दक्षिणा माहिँ
 सुदार ॥ * * * * * ॥ पम्भलीइन्द ॥ * * * * *

हम दीन्ह तीन शत चार ग्राम । अरु षट् चार बाजी खलाम ॥ सङ्कल्प गोरको भो प्रवाह
 सुर सरित सोतरु ते अघाह ॥ तिहि दानतें सु हम अब आय । नहि प्राप्त भए सुनु लोकराय ॥
 सुरसरित ल्यायवेको महान । हिमवान भूमिधर पै सुढान ॥ हम कियो भूरि तप महत काल ।
 धिरिकै सुचिन्त पञ्चल विशाल ॥ तिहिते ऊँ लोक तव माहिँ आय । हम भए प्राप्त नहिँ लोक
 राय ॥ दिन द्वादशमे मख होत जौन । हम कीन्ह चयोदश यज्ञ तौन ॥ बर सहस अष्ट बलके
 उतार ॥ सुवरण मढाय एक एक शृङ्गा । हम दिए द्विजनकों वृषभ चार । आए न तौनहूते उदार ॥
 बर हेम रत्नके निषय उह । हम दीए द्विजनकों बोलि शुद्ध ॥ धनधान्य युक्त अभिराम ग्राम ।
 दीन्हें सहस्र विधिसों सु नाम ॥ अरु अश्वमेध बळ यज्ञ कीम । तिनमाहिँ दक्षिणा भूरि दोन ॥
 मढवाय हेमसों तह सुदार । करि भूषित रत्नसों उपार ॥ तिह तहनको सु योजन प्रमान । विस्तर
 रित विपिन अति बर सुढान ॥ बर बेदवान विप्रण बुलाय । विधि सहित तौन दीन्हे सचाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फलतें तौनऊँ दानके सुनु लोकेश सशर्म । आए नहि तव लोकमे निश्चय जानऊँ परम ॥

ब्रा०प०
दा०प०

जनके पापकों आचारहै अभिराम । सुनऊँ ताते योग्यहै आचार कीबो नाम ॥ क्रियासों जे रहित हैं मास्तीक है जन जौन । दुराचारी पातकी अरु जौन सुनु बुधिभौन ॥ होतहैं अत्यायुते जन कहत बुध अवदात । नेकु नहि सन्देह यामे जानु कुन्ती तात ॥ तजत जे नर्यादकों अरु शील होडत जौन । रहत मैथुनमाहि जे रत नित्य दुर्मति भौन ॥ शास्त्रकों अरु गुरुकी जो बचन सनत नाहि । होत हैं अत्यायुते संशय न याके माहि ॥ नित्य बोलत सत्यहैं अरु जौन करत न कुद । कबऊँ हिंसा करत जे नहि धरि प्रमादहि उद ॥ करत कबऊँ न असूया जे धरत अह्ना गूरि । आयु तिनकी बढतिहै निति रहत सुखसों पूरि ॥ दशन सों जे नित्य काटत बलनकों हे तात । धारि दुर्जन ताहि जे जन क्रोधकों सरसात ॥ दृष्टनकों जे नित्य तोरत लोछ फोरत जौन । महत आयुहि तौन प्राप्त न होतहैं बुधिभौन ॥ करत चुगली जौन तिनको शीघ्र होत विनाश । हैं नही सन्देह यामे नेक नृप बुधिराश ॥ रहै निशि अब चारि घटिका तब सु आलस त्यागि । धर्मको अरु अर्थको नति करे चिन्तन सागि ॥ प्रात उठिके सान संध्या करै विधिवत पर्ष । तिमिहि सायंकाल संध्या करै तात सधर्म ॥ अर्थ उद्यत मारतण्डहि कबऊँ लखिए नाहिं । औ न लखिए मारतण्डहि कबऊँ अलके माहिं ॥ हैं हि जव नभ मध्य गन कबहुँ न लखि ए तात । होत जनकों दोष देखें कहत बुध अवदात ॥ किऐँ संध्या बढति आयु सु ऋषिनको अभिराम । करै तातें सविधि संध्या मैन क्वै बुधिधाम ॥ प्रातसंध्या करै जे नहि औ न सायंकाल । कर्म तिन सों शूद्रके करवाए ए महिपाल ॥ कबऊँ नहि परनारि माही रमण कोजै भूप । धर्म चारिऊँ बर्णको यह कहत प्रज्ञ अनूप ॥ सुनऊँ परतिय मनन जैसे आसु माशक पर्ष । और ऐसे आयु नाशन हेत है न सधर्म ॥ सुनऊँ नृप परनारिके अंगमाहि रोम जितेक । रमत जो परनारि सेवत नरक बर्षति तेक ॥ दन्त धावन के मधेवन देव पूजन जौन । प्रात ए सब कार्य करिए कहत वर बुधिभौन ॥ मुत्र बिछा देखिए कबहुँ न तात सधर्म । औ उलङ्घनकीजिए नहि कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ अतिहि प्रातःकाल औ नहि अतिहि सायंकाल । औ नही मध्यान्हने खलिए सु धरणी पाल ॥ शूद्र बलके साथसे औ विजातीके साथ । नमन कबहुँ नाही कोजै सुनऊँ वर नरनाथ ॥ भूपको औ विप्रकों अरु बृहज्जनकों पर्ष । औ बजकों दीजिए पय कहत प्रज्ञ अभर्म ॥ गर्भवतिका मारिकों अरु जौन होय सभार । तिमिहि निबलाहि दीजिए पय दया करि सु अपार ॥ पिप्यसादिक वृत्त जेपे पूजनीय सुजान । कोजि ए तिमकी प्रदक्षिण निले जह नतिमान ॥ अर्थ निशि मध्यान्हने औ दुस्रो संध्या माहिं । चतुष्पथने जाइए नहिं सुन्यो बुधजन पाहिं ॥ अन्यकी पहिरी उपानह पहिरिए नहि तात । औन ओढोवस्तु लीजै कहत बुध अवदात ॥ चरण ऊपर चरणकों कबहुँ न धरि ए भूप । मुत्र बिछा किजिए तब हाहने न अनूप ॥ अछनी औ अनावस्था पूर्णमाके माहिं । औ चतुर्दशि माहिं तिथके जाइ ए नहि पाहिं ॥ कबऊँ काहुँकी न

चुगली कीजिए दुखदाय । औ अनादर कीजिए नहि दुखद बैन सुनाय ॥ आपु सों जो होय शा०प०
 नीचे बढ़िये लिहिसें नाहिं ॥ क्रूरताको राखिए नहि आपने हियमाहिं । कबहुँ काहूँको न दा०प०
 कहिए तात जैसे बैन । सुनें जिनकीं होय हियके माहि भूरि अचैन ॥ लगे शायक होत जो है देह
 माहीं घाव । पूरि आवत तौन है कछु दिननमे नरराव ॥ वाक शायक लगेसों जो घाव होत
 मर्दान । कबहुँ पूरत नाहिं सो है जानु निजु मतिमान ॥ युद्धमे जो लगत शायक सकत कठि है
 तौन । बचन शायक सकत कठि नहि जानु निजु बुधिमान ॥ प्रज्ञ ताते कहत काहूँसों न हैं कटु
 बैन । औ न काहूँको करै परिहास प्रज्ञाचैन ॥ रूप बिनके जौन हैं अरु हीन अंगके जौन ।
 कीजिए अपमान तिनको कबहुँ नहि बुधिमान ॥ जौन विद्या हीन हैं अरु जौन हैं धनहीन । की
 जिए अपमान तिनको न तात प्रबीन ॥ पुत्रको अरु शिष्यको शिष्यार्थ ताडन देय । अन्य ओर
 छटाइए नहि दण्ड करमे लेय ॥ प्रात अमुदय माहि उठिके देवको करि ध्यानामात औ पितकों
 सु करिए निति प्रणाम सुजांना ॥ तिनिहि गुरुको और जेठे होहि तिनको भूपामस्कारसु कीजिए
 निति यह सुधर्मः अनूप ॥ बढति है यह धर्म कीन्हें आयु तात सधर्म । है नही सन्देह यामे कहत
 प्रज्ञ अभर्म ॥ शास्त्रमाहो कही जेतीं बस्तु भक्त नृपाल । तिनहि को निति करिय भक्षण कहत
 दक्ष विशाल ॥ बैठे उत्तरदिशा मुख कै शौच करिए तात । मौन व्हे कै दन्तधावन करै निति
 अवदातं ॥ दृढ़ ढिग औ गुरुके ढिग तिनि विचक्षण पास । देवपूजा किए बिनहुँ जाइए बुधि
 रास ॥ देवपूजा किए बिन नहि जाइए अन्यत्र । होय नित्यहिं कीजिए यह धर्म भूप पवित्र ॥
 मूत्र और पूरीष करि कै धोईए निति पाव । तिनिहिं औ कहुँ जाइए तौ धोइए नरराय ॥ भोज्य
 औ अभ्ययम कीजे पदनकीं निति धोय । नित्यको यह धर्म कीन्हें रहत सुखसों भोय ॥ देवताके
 अर्घ भोजन बिरचिए हे तात । स्नान करिके शुद्ध व्हेके भगत बुध अवदात ॥ मलिन जो
 आदरय ताको देखिए कबहुँ न । औ निग्रामे देखिए नहि होति परमायु न ॥ शिरहि उत्तर
 वोर करिके शयन कीजे नाहिं । तिनिहि पश्चिम वोर कै हम सुन्यो बुधजन पाहिं ॥ पूर्वदक्षिणवोर
 शिरके नित्य कीजे शैन । अतिअंधरे माहि शैन न कीजिए मतिचैन ॥ होहि जौन सदनमाही
 शोबती परदार । जाइए नहि शोयवेकों तहा भूप उदार ॥ शोइए कबहुँ न जीरण भप
 गृहके माहिं । औन तिरको शोईए हम सुन्यो बुधजन पाहि ॥ कीजिए कबहुँ न भूपति
 नास्तिकनको सङ्ग । सङ्ग कीन्हें होत अपनो धर्मनष्ट उतङ्ग ॥ बैठि आसन पायसों नहि बैठिए
 भूपास । नय व्हेके न्हाइए नहि कहत सुबुध विशाल ॥ औ निग्रामे माहि कबहुँ कीजिए
 नहि स्नान । स्नान करिके अङ्गकों नहि पोखिए मतिमान ॥ बिना कीन्हें स्नान चन्दन लाइए
 माह भाल । स्नान करि कै बस्त्रको फटकारिए न नृपाल ॥ वस्त्र भीजो राखिए कबहुँ न तनके

शा०प० माहि । ज्ञानको विन किए पूजा बोलिए हे नाहि ॥ दृषता पै चढी माखा पाद तिहिकों पर्मे ।
 दा०ध० शरत सो खैचिए कवळ न तात सधर्मा ॥ पेन्हि ताकों जाइए नहि बाधिरे सुनु तात । परशिए
 नहि पातकोकों कहत बुध अबदात ॥ रजसलिका नारिसों कवळ न कहिए बैन । ग्रामको
 नहि निकट बिष्ठा कीजिए मतिचैन ॥ मूत्र बिष्ठा कीजिए नहि कवळ जलकेमाहि । खेत
 माहीं अन्नके अरु औं न सुरगृह पाहि ॥ अन्न भोजन करत जल नहि पीजिए चयवार । करिसु
 भोजन धेइए मुख तीनवार उदार ॥ पूर्व मुख नै नित्य भोजन कीजिए नै मौन । कवळ भोजनकी
 न निन्दा कीजिए बुधिभौन ॥ करिसु भोजन राखिए कहु अन्न भोजनमाहि । बढति जनकी
 आयु है ए किए धर्म सदाहि ॥ पूर्वमुख नै किए भोजन बढति आयु सुभूप । बदन दक्षिणधोर
 करिकै किए भोज्य अनूप ॥ होत है यश भूमिकामे चन्दसो अभिराम । बदन पश्चिमधोर
 करि कै किए भोज्य सलाम ॥ धन्य जगमे होत है मति पाय कै अबदाता । बदन उत्तरधोर करि कै
 किए भोजन तात ॥ होत है कल्याण प्रापित कहत बुध अभिराम । सुमळ कुन्तीगन्ध वर अरि
 वृन्दर बुधिधाम ॥ करिसु भोजन परशु गिहिको करिसु मनसों भूप । लार्इए जल नाक कानसु
 घलुमाहि अनूप ॥ मूर्धमाही तिनिहि जलको परशु कीजे तात । ता अनन्तर देहमे सब
 कीजिए अबदात ॥ अक्षि भस्म अलार अहँ बळ पस्यो होय सुजानातहां ठाढो छजिए नहि कहत
 प्रज्ञ महान ॥ अन्यजनके स्नानतें जो बच्यो है कीलाल । कीजिए नहि स्नान तासों कहत बुध
 विशाल ॥ अन्न पथमे चलत कवळ खाइए नहि तात । खोखरो नै खाइए नहि कहत बुध अबदात ॥
 मूत्र कीजे भस्ममे औ गजगृहमे नाहि । ओ न ठाढो होय कीजे औ न सुरगृह पाहि ॥ जाय भोजन
 करतकों तब धोय करि कै पाय । पांखिए नहि चरण आखे राखिए नरराय ॥ शयन कीजे धोय
 करि कै पोखि पाय सुखदायु । किए यह विधि नित्य नृपवर बढति है बळ आयु ॥ खाय कै कहु
 विना धेएँ बदनकों अभिराम । विप्र नो अरु अपिकों जं कुवत नहि बुधिधाम ॥ भानु औ सित
 भानुकों औ नखत वृन्दहि पर्मे । जे न देखत होत ते अल्पायु नाहि सधर्मा ॥ वृद्ध आवै पास जस तब
 नम्र नै बुधिधाम । जोरि कर उठि जाय सोहै सविधि करि परनाम ॥ हाथ अपने चार आसनकों
 विहाय नरेश । वृद्धकों बैठाइए यह धर्म सुखद अशेष ॥ कांस्य भाजन भ्रममे करिए न भोजनतात ।
 भ्रम आसनपै न कवळ बैठिए अबदात ॥ कीजिए भोजन न तनमै राखि कै एकवास । औ न कीजे
 रैन नैके नम सुनु बुधिरास ॥ औ सुनो उच्छिष्ट मुखळ कीजिए नहि रैन । औ न गिरकों परशिए
 उच्छिष्ट मुख मतिचैन ॥ रहत गिरके सर्व आशय प्राण हैं नररायाके शतानें खैचिए नहि कहत वर
 बुधराय ॥ औ न कवळु घाव दोजे हों न गिरके माहि ॥ गिरहि अपने पाखि दोउनसों खुजाइय माहि ॥
 औ न पुनिपुनि स्नान कीजे सहितगिर नहि पाखा ॥ किए यह विधिहोति जमकी आयु परम विशाखा ॥
 जो ज्ञायेो तेस गिरने रक्षो तामे जौन । अरुमे लगवाइए नहि तौन सुनु बुधिभौन । जौन

भूजे तिनको कबहूँ न भसत तात। होत हैं अल्पायु ते नहि कहत बुध अवदात ॥ बेदकों उच्छिष्ट मुख कबहूँ न पठिए भूप। औ पढाईये न कबहूँ कहत बुध अनुरूप ॥ बेदकों पठिए न तब जब खलै वायु महान। औ तहां पठिए न जई दुर्गन्ध होय महान ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐॐॐ *
बाणी श्री यमरायकी कही परम अभिराम। यह प्रसङ्गने कहतहैं सुनऊँ तौन बुधियाम ॥

॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

पढंत जे उच्छिष्ट मुख अर पढावत जन जौना होत हैं अल्पायु अर नहि सहत सन्तति तौन ॥ अनध्यायनमाहें जे जन पढत अज्ञ सुवेद। बेदकों ते सहत हैं नाहें रहत नित्य खेद ॥ होत हैं अल्पायु ते यहमाहि संशय नाहि। कही बाणी धरमकी हम सुनी बुधजन पाहि ॥ चण्डलाछन्द ॥
भानु अधि गाय विप्र सामुहें अजान जौन। मुत्र औ पुरोष कर्त होत हैं बलायु तौन ॥ जेन कर्त ते सुप्राप्त होत आयुकों महान। नित्य ते अनन्दकों लहैं नरिन्द्र हे सुजान ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
बिष्ठा मुचहि करत जे उत्तरमुख दिनमाहि। दक्षिणमुख निशिमाहि ते हैं अल्पायु नाहि ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

इत कीजिए गुरु साथ। कबहूँ न हे नरनाथ ॥ अब होय गुरु सह क्रुद्ध। तब मस्य ष्टे अति उद्ध ॥ करि कै विनै परि पाय। करिए प्रसन्न सचाय ॥ गुरुकी सुनिन्दा जौन। जन करत दुर्भति भौन ॥ निहचे हि तिनकी आय। नशि जाति है नरराय ॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥ ॐॐॐ *
अरण धोयवे काज लयो भोजनमे जो जल। दूरि डारिए बच्चो होय जिहैं माहि जितो जल ॥ भोजन करि कै जाय दूरि कहु बज्जजल झै बर। बदन कीजिए शुद्ध नित्य सुनु भूप सुमतिधर ॥
॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दूरि कीजिए धामते' सूत्र जाय कै तात। धाममाहें नहिं कीजिए भनत सुबुध अवदात ॥ कबहूँ न धारण कीजिए रक्त पुष्यकी माल। शुक्लपुष्यकी मालकों धरिए सदा नृपाल ॥ रक्त सुमन जे विपिनके औ नोरज है जौन। ते तौ धारण कीजिए सदा तात बुधिभौन ॥ कचनारिहुके सुमनकी माला दूषित नहिं। सुन्यो तात सिद्धान्त यह हम बर बुधजन पाहि ॥
॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जो जन करि कै ज्ञान आर्षे पूजा समयमे। शिरने तास सुजान चन्दन चारु लगाइए ॥ ॐॐॐ *
॥ * ॥ रामगीतीछन्द ॥ * ॥

ओढिबेके बस्त्र तिनको पेंन्हिए नहिं तात। ओढिए नहिं पेंन्हिबेके बस्त्रको' अवदात ॥ दशी जीने बसनमाछी होय नाहीं भूप। कीजिए नहिं ताहि धारण कहत प्रज्ञ अनूप ॥ देव पूजा सम यके अर शयनके बरबास। शिभिहि बाहिर जायबेके बसन नृप बुधिरास ॥ पृथक पृथक सु राखिए मतिमान भनत हमेश। राखिए नहिं कार्य सबमे एक बसन नरेश ॥ रहै दिनभर अज्ञाचारा अर्थ

शा०प० करि कै ज्ञानाब्रह्मचारी होय औ सब पर्वमाहिं सुजान॥ एक भाजनमाहिं जन है चारि मिलि कै
 दा०ध० तात । कीजिए कबहूँ न भोजन भनत बुध अबदात ॥ गऊ औ मझारको सूँघों सु भोजन जाँन ।
 तिमिहिं सूँघों आनको करिए न भोजन तौन ॥ लवण करने खाइए नहिं औ न निशिके माह ।
 शक्तु दधिसंग खाइए कबहूँ न हे नरनाह ॥ तौन भोजन कीजिए नहिं कढे जाने वाला मांस सूखे
 औ न बासी खाइये महिपाल ॥ मांस गाय मयूरको है नित्य वर्जित तात । खाइए कबहूँ न ताते
 भनत बुध बिछाता॥ भूमिमे धरि कीजिए कबहूँ न भोजन पर्नाऔ सु भोजन शब्दवत कोजै न तात
 सधर्म ॥ पंक्तिमाहीं सबनकों दोजै सु भोज्य समान । दोजिए नहिं कबहूँ न्यूनाधिक्य तात सुजान॥
 भक्ष्य जेती बस्तु तिनकों भलि करिके श्रेय । कबहूँ काहूँकों न दोजै भनत सुबुध सुबेश ॥ उदुम्बर
 सलंशाक पिप्पल बटनको फल जाँन । चहत जे कल्याण ते नहिं खात हैं बुधिभौन ॥ करि सु भोजन
 आचमन करि कहत बुध अबदात । चरण दक्षिणके अंगुष्ठ हि धोय उठिए तात ॥ ता अनन्तर
 शुद्ध नै के पाणिसों शिर परि । परस करिए अपिके नै खरो सोहे दरि ॥ किए यह विधि रहत
 मोदित पचत अन्न सुजाना प्रसंशा है होति जनकी ज्ञातिमाहिं महान॥ ज्ञातिको जो बृद्ध अपनी औ
 दरिद्रो मिचाइन्हे राखे गेहमाहीं होत गेह पबिच ॥ जाँन राखत धन्य तेहैं बढति तिनकी आयु ।
 कडति बाधा गेहते सब रहत आनन्द छाया ॥ सारिक शुक औ परेवा राखिए म्हमाहिं वृद्धि कारक
 सर्व ए है अत्र संग्रय नाहि ॥ गृध्र उद्दोपक तथा अलि तिमिहिं भूप कपोत । सर्व आए धाममे ए
 करत अशुभ उदेत । कीजिए निन्दा न कबहूँ महतजनको तात । होडि कपटहिं प्रसंशा निति
 कीजिए अबदात ॥ मृपतिकी अरु बैद्यकी अरु वृद्धकी तिय भूप । विप्रकी अरु बन्धुकी अरु भृत्य
 नारी अनूप ॥ बालको औ शरणमे जो होय ताका दास । नारि सम्बन्धीनकी औ है अगन्या चाब ॥
 गमन इनमे करत जे नहिं महत तिनकी आयु । होति निश्चय कहत हैं बुध सुनऊ वर नररायु ॥
 शास्त्र मतसों शुद्ध जो वर बने होय अगार । बास तामे कीजिए बुधिरासि भनत सुदार ॥ शयन
 औ अध्ययन संध्यामाहिं कीजै नाहिं औ न भोजन कीजिए ह्य सुन्यो बुधजन पाँहा । किए यह
 विधि होति जनकी आयु महत सुजाँन । नित्य यामे रहत रत हैं परम प्रज्ञावान ॥ घोइए नहिं
 केश कबहूँ करि सु भोजन तात । औ न कीजै आह निशिमे भनत बुध बिछात ॥ बडत
 भोजन कीजिए नहिं कबहूँ रजनीमाहिं । विहङ्गनकों मारिए महिपाल कबहूँ नाहिं ॥
 बैन अप्रिय भूप कहिए कबहूँ काहूँको न । औ न काहूँको समोके कीजिए बुधिभौन ॥
 कीजिए निन्दा न काहूँको परोह सुजान । घटति जनकी आयु ए सब कीएते मतिभौन ॥
 बतिलसों नहिं बेलिए कबहूँ न हे महिपाल । दर्श पर्णऊ कीजिए नहिं कहत प्रज्ञ विशास ॥
 बतितको संसर्गसे हे आयुहर्ता परम । है नही सन्देह यामे सुनऊ तात सधर्म ॥ किएते दित
 नाहिं मैपुन होत जन अल्पायु । तिमिहिं कन्या नमनें जनहोतो है अल्पायु ॥ रमण कुलटा
 नाहिं कीन्हें होति आयुष चीन । औ किएते ज्ञान पुनि पुनि कहत परम प्रबोम ॥ रजोदर्शन

भए विन नहि जाइए तिय पास । हेतु दीरघ आयुको यह भएत बर बुधिरास ॥ होय जाको जन्म
 भो कुलमाहिं उत्तम पर्म । होहि जाके अरु सुन्दर सर्व तात सधर्म ॥ होय जाको बरोबरि बध
 तिहिं सु कन्या साथ । व्याह कीबो योग्यहै सुनु धर्मधर नरनाथ ॥ वंश राखन हेत करि उत्पन्न पुत्र
 सुजाँन । सबिधि ताहि पढायकै करि भूरि बर मतिमान ॥ परम उत्तम बंध माही तास कीजे
 व्याह । राखिए निति धर्ममाहि प्रवृत्त हे नरनाथ ॥ पुत्रिका उत्पन्न करिकै सहित विधि अभि
 राम । सुकुलमे उत्पन्न शुचि धोमान परमाधाम ॥ दीजिए जैसे सु बरको हर्ष सहित विशाल ।
 धर्मधर बर कीर्तिकर बर प्रज्ञ सुनु महिपाल ॥ सबिधि सह शिरस्त्रान करिकै विमल तन अभिरामा
 देव कारज पितर कारज कीजिए बुधिधाम ॥ होय जानें नखत माहीं जन्म सुनु हे तात । आइ
 तिहिमे कीजिए नहिं भनत बुध विख्यात ॥ पूरवा अरु उत्तरामे आइ कीजै माहिं । तिमिहिआहै
 कीजिए नहि नखत छंतिका माहि ॥ और योनिष माहि वर्जितहैं जितेक नक्षत्र । आइ तिनमे
 कीजिए नहि भएत प्रज्ञ पवित्र ॥ पूर्व मुख औ उदीची मुख जे करावत और । बढति तिनकी
 आयुहै बर भएत बुधशिरमौर ॥ होय जौने बंशमे रुज मृगो कुछ महान । व्याह तौने
 बंशमे नहि कीजिए मतिमान ॥ चारु लक्षण जिते तिनसो होय युक्ता जौन । दर्शनीया प्र
 ज्ञता औ होय जो बुधिमान ॥ होय जाने कुटिलता नहिं नेकह नरनाथ । व्याह कीजै चाहि
 औसो कन्यकाके साथ ॥ ररषा कबहूँ न कीजै नारिमे नृप प्रज्ञ । हेतुहै अल्पायुको यह कहत बर
 धरमज्ञ ॥ उदयमाहीं भानुके अरु दिवस माही सैनाकिए तें जन होत हैं अल्पायु नृप मतिचैन ॥
 औ किए उच्छिष्ट मुखनिधि माहि शयन सुजाँन । तिमिहिं संध्यामे किए अल्पायु होत अजान ॥
 स्नान भोजन पठन संध्या माहिं कीजे माहि । औ न कबहूँ गमन कीजे पर सु नारी माहिं ॥ करत
 जे ते होतहैं अल्पायु हे महिपाल । है नही सन्देह यामे भएत विज्ञ विशाल ॥ औरको करवाय
 करिकै तबहि कीजे स्नान । घटतिहै आयुष्य कीन्हें देर हे मतिमान ॥ द्विजमकी अरु देवतनकी
 तिमिहिं गुरुको पर्म । स्नान करिकै किए पूजा बढति आयु सधर्म ॥ निमंत्रण विन जाइए नृप
 पिवाहादिक नै न । निमंत्रणहूँ विना मखमे जाइए बुधिचैन ॥ आयु एकहि करि सु सहस जाइ
 ए न बिदेश । औ निशामे चालिए नहिं विना सङ्ग नरेण ॥ मातको अरु पिताको अरु गुरुनको
 अबदाताहितज औ अनहितज शासन मानिए हे तात ॥ वेद औ धनुवेद पढिए यत्नसो अभिरामा
 तिमिहिं अश्वादिकन पै चढिए सु नृप बुधिधाम ॥ नीति शास्त्रहि तथा बर गध्वर्ब शास्त्रहि पर्म ।
 शब्द शास्त्रहि तिमिहिं पढिए यत्न सहित सधर्म ॥ शास्त्रमे हैं कही जेतो कखातेती सर्व । जानिए

शा०ध०
दा०ध०

अने
५०

घारि । कहे बुधिष्ठिरसौ निरधारि ॥ नृप सुनि सर्वधर्म अघारि । फिरि फिरि कहत कहत जिनि
वार ॥ वृथा बसे हम परे ललाषा नहि तुम सुने मेकु मनलाय ॥ युद्ध जीवकी आकी मुद । ताको
मरिबे कौन बिरह ॥ साधु असाधु कर्म जो धीन । धुर्य करत नै देवाधीन ॥ धरने कहे शीघ
को काम । निजपहँ थापत पाप अज्ञान ॥ कोन्हें सविधि यज्ञ तप दान । निहत पाप यह शास्त्र
निदान ॥ ताते अश्वमेध मख पर्व ॥ करे जानि भूपनको धर्म ॥ यह सुनि धर्मभूप हित, जानि
कहे व्यासमुनिसौ अनुमानि ॥ मुनि हम हीनद्वय यहि काल । कैसे करिबै यज्ञ विशाल ॥
भूरि दान दीन्हें विनु तात । सिद्ध न होत यज्ञ अघदात ॥ ॐ ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ॐ ॥ * ॥
जिनके पति सुत वधि नए घोरयुद्ध मधि आय । तिन सुवतिसौ लोभ धन उचित नही मुनिराय ॥
ताते मुनि अनुमान करि कहे उचित जो मंत्र । जेहि प्रकार विधिवत सधै वाजिमेधको तंत्र ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि व्यासमुनीय सुज्ञानी । कहे धर्मनृपसौ अनुमानी ॥ पूर्व मरुत भूपति यत्र कारय ।
अश्वमेध मख कीन्हो आरय ॥ तहँ लहि दान विप्र मनभाए । नहि जो चलो तौम तजि आए ॥
हम कहि देत तौम ले आयो । अश्वमेध करि आनद छायो ॥ जैसे व्यासदेवसौ मुनिकै । धर्म
भूप बभूत भे गुणिकै ॥ कब मख कियो मरुत नरनायक । कहे तौम मुनि मङ्गल दायक ॥ सुनि
मुनि कहे सुनो नरपालक । भयो मरुत जब खल कुलघालक ॥ नृप कृतयुगभै पुञ्जनीचाता ।
भयो दण्डधर मनु बिल्याता ॥ ता सुत भीं प्रसन्धि नरनाह ॥ तासु सुवन सुय दीरघ बाह ॥
तासु सुवन द्रव्यकु महीपा । भए ताहि शत सुत कुलदीपा ॥ नृपति बिंश तिनसै गुर धाता । तासु
विश्वास पुत्र महिचाता ॥ पन्द्रह सुवन प्रबल भे ताके । जेठे खनीनेच वर भाके ॥ तासु सुवर्षस सुवन
सुसाजा । तासु सुवन कारन्धम राजा ॥ जेतानै कारन्धम भूषा । सार्वभौम नृप भयो अनूपा ॥ जाको
सुवन मरुत धनुषारी । भयो विष्णु सम भूतल चारो ॥ सो हिमनिगिरिके उत्तर आश । कियो
यज्ञ करि धर्म बिलासा ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॥ दोहा ॥ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ * ॐ *
व्यासदेवके बचन सुनि कहे बुधिष्ठिर भूप । कहे सुमुनि विसतार करि यह इतिहास अनूप ॥

॥ * ॥ व्यासउवाच ॥ * ॥

मए अङ्गिरसके प्रणट दोष पुत्र तपधाम । प्रथम बृहस्पति दुतिय हे मुनि सर्वार्थ सुज्ञान ॥
तिनयुग बन्धु मसो नृपति भो अतिदुखद विरोध । तब अह तजि कै बन गयो हीनो अज्ञ सुबोधा ॥
॥ * ॥ दोहाछन्द ॥ * ॥

तदनु असुरण जीति बासव इन्द्रपद लहि भूप । इविधि गुरुसौ कहत भे नहि चौर नम
केमरूप ॥ नरुत नृप नम सदृश अहिपर तासुडिभनुन जाय । यज्ञ भक्ति करपाइयो यह करो
पण मनलाय ॥ हे कारन्धम मरुतनृपको पितामह अभिराम । ताहि करवाए अमित मख अग्नि

५०
५०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे वृहस्पति शकसौ मरुत आरु मक्षपाय । यज्ञकरासन हेत भो पापत पूरित आय ॥
तो संगत अनुमानि हम नहि मान्यो सो नैन । अब सम्बर्तहि क्याय सो यज्ञ करत छदि पैम ॥

॥ * ॥ वृहस्पतिरवाच ॥ * ॥

नहि सपत्नकी वृद्धियम काहू सोही जात । जानि वृद्धि सम्बर्तकी हम विचरए हे तात ॥

॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥

तजो श्रेय हम अग्नि कहँ भेजत सो समुक्ताया कहिहि भूपसौ भूप मक्ष करिहँ तुम्है बलाय ॥
छदि अनुयासन शककी अग्नि मरुत पहुँ आय । सर्व पाय छदि नृपतिहो कहत भए समुक्ताय ॥

॥ * ॥ अग्नि रवाच ॥ * ॥

मप हम आय शक को लै यह शुभद सदैम । तजि संवर्तहि जीवकह रित्युज करो शुभेय ॥
जौन लोक बधि जौन फल ईहत भूरतार । तपनिधि सुरगुरु तत्वविद जीव तासु दातार ॥
जायततो संवर्त मन नहि सुर गुरुसु प्रयोग । कै महेंद्रको परम गुरु नहि मन रित्युज योग ॥
तव संवर्तक अग्निहो कहै नयन करि बक्र । भसमित करिहँ तोहि नहि शीघ्र जाऊ अह शक्र ॥
यह सुनि पावक भीत भरि सुरमायक पहुँ जाय । निज नृप अरु संवर्तकी वार्ता दए सुनाय ॥

॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥

फेरि जायतुन तिमि कहौ नहि मानिहि तो ताहिहठ करि बधिहौ जीवहित दुसह बखवर बाहि ॥

॥ * ॥ अग्निरवाच ॥ * ॥

अग्नि कही हम जावनहि गुणि तहइतो विशेषकह्योविप्र अब तोहि छदि करिहँ असनाशेय ॥

॥ * ॥ जयकरी इन्द्र ॥ * ॥

सुनि सुरपति करि क्रोध अखर्व । हो धृतराष्ट्र नाम गन्धर्व ॥ तासौ कहै मरुत पहुँ जाय । मन
सदैम यह कहौ बुजाय ॥ अवि संवर्तहि दूरि दुराय । जीवहि रित्युज करै सपाय ॥ सुनि गन्धर्व
आय नहि पैम । कह्यो मरुत नृपसा यह नैन ॥ * ॥ मरुत उवाच ॥ * ॥ शकहि जीव करावहि
कर्म । सम्बर्तक मन रित्युज पर्य ॥ इतनेनै सुरपति तेहि पर्व । नभ पहुँ गरजत भए शर्व ॥
तव गन्धर्व कह्यो सुनु भूप । तो बध चाहत शक्र अनूप ॥ नभ पहुँ गरजत सनसुह आय । बाहन
चहत बज्र हठ घाय ॥ यह सुनि मरुत महीप सचेत । सम्बर्तकहि सुनायो हेम ॥ सुनिबोध्यो
सम्बर्त उदार । मति भय नहो भूमि भरतार ॥ कहा बज्र का शक्र कठोर । तप प्रभाप मन नहा
अधोर ॥ जैसो निरखन चहो उगाध । तैसो लखो इन्द्रको दास ॥ सुनि नृप कह्यो शीघ्र सुरराज ।
इत अवि आवै सहित समाज ॥ सुनि प्रभाव छदि नृप तेहि कास । तुरित तहां आय सुरपाय ॥
निधि नृप सुरपति सुनि मुद पूरि । किए परस्पर वार्ता भूरि ॥ सरस प्रेम नहि नैर विहाय । सर

पतिको अनुयासन पाय ॥ अक्षर किन्नर यक्ष समक ॥ बसु सुमनस गन्धर्व प्रशक्त ॥ सादर तहाँ
 राखि धिरकाख ॥ कीन्हे यज्ञ मरुत चितिपाल ॥ अग्निनिग तहां ब्रथको डेर ॥ सो सौ बिससो
 यथा कुवेर ॥ व्यासदेवको जैसे वैम ॥ सुनि नृपधर्म पाय अति चैन ॥ राज नीतिको समुक्ति सुतंभ ॥
 कृष्ण चन्द्रसौ बभूने मंत्र ॥ अब हमसौ कह्यु कह्यो न जात ॥ अब जो उचित कछो सो तात ॥
 कहे कृष्ण सुनु भूप प्रवीन ॥ सब जग होत श्रुत्य आधीन ॥ अब इतिहास कहतहौं एक ॥ भूप
 सुनऊ सो सहित विवेक ॥ वृत्रासुर अति छली अमान ॥ हस्यौ भूमिको गन्ध महान ॥ बच तउयो
 तापै मघवान ॥ घसो बारि मधि वृत्र अमान ॥ बच हन्यो फिरि तापहँ शक ॥ तब रस हरि सो
 दैयत बक ॥ दुरो तेज मधि ओज बढाय ॥ हन्यौ बच फिरि शक रिसाय ॥ कै ताहित हरि सु
 विशय रूप ॥ जाय वायु मधि बीर अनूप ॥ हस्यौ वायुको विशय समाज ॥ तहँ फिरि बच हन्यो
 सुरराजा ॥ तब धसि गण मध्य सो बीर ॥ हस्यौ शब्द गुण परम गम्भीर ॥ तब मघवा करि अविशति
 चख ॥ हन्यो वृषकहँ बच उदण्ड ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * *
 तब वृत्रासुर शक कोतममधि प्रविशि सडौर ॥ हस्यौ विशय मोहित भए शक सुमन सिर नौर ॥
 तब वशिष्ठ चिन्तित कियो चेति बचवर चाहि ॥ निज गाचस्थ अदृश्य तेहि बध्या शक जय चाहि ॥
 एक पिताके पुत्र इनि सारे मरे नृप पूर्व ॥ साच धर्म यह सिद्धहै शेष करो मति नूर्व ॥ * * *

॥ * ॥ वासुदेव उवाच ॥ * ॥ * ॥ रोसाखन्द ॥ * ॥

दोष विधिकी होति दुखदा व्याधि सुनिअै भूप ॥ एक देहिक मानसिक ए यथा
 नाम सरूप ॥ लहे सुख दुख रहत सुनिरत सुपट्ट पुरुष प्रवीन ॥ परे दुख सुख करत सुनिरत होत
 नाहि अधीन ॥ सभामधिमै द्रौपदीकी भई ही गति जौन ॥ करन जो दुरबचन भायो सुरतिकी
 जै तौन ॥ अरत बच कडि लाख गृहसौ सस्यौ जो दुख घेरा ॥ विपिनिको दुख समुजि भूपति गुनो
 यह दुख बीर ॥ दोष अक्षर श्रुत्य नृप अर ब्रह्म सुवरण तीन ॥ होति श्रुत्य ममेति अर न ममेति
 ब्रह्म अधीन ॥ ब्रह्म शासत सुबुधि सौ गुनि त्यागि सिगरो शोचा अश्वमेध सु यज्ञ करिवेको करो
 अब रोच ॥ इविधिके बज्र भौतिके सुनि कृष्ण प्रभुके वैम ॥ धर्म भूपति शोक तजिकै भए समुद
 सचैन ॥ पूजि विप्रस प्रजनकहँ दै धीर साहस भूप ॥ भीष्मकी करि क्रिया सहिकै सु दिन सख
 अनूप ॥ गूरि दक्षिणा भूसुरन दे सुमत मंगलचार ॥ सहित श्रुप धृतराष्ट्र प्रविसे पुरो मध्य उदार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यथा उचित शुचि शुभयज्ञनि करिनिवास मतिमान ॥ पूजि भूसुरन देत भे नो नणि पञ्जमी दाना ॥
 कर्म प्रजा पालन करन नीति निपुण नृप धर्म ॥ शुचि बसु बभ्रुन सहित पटु ज्ञाता शुद्ध सुकर्मा ॥

अ० मे०
प०

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दितनारायणस्थाज्ञाभिनाभिना श्रीबन्दीजनकाश्री
वासिनेोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते अश्वमेध
पर्बणि युधिष्ठिरराज्यप्राप्तिर्नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राम कृष्ण श्रीरमणकी लहिकै कृपा अनूप । लगे प्रजा पालन करन मुदित युधिष्ठिर भूप ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

कछू दिन रहि तहा केशव पार्थ पूरित मोद । इन्द्रप्रस्थ सु सभामधि फिरि गए करत विनोद ॥
तहाँ केशव कहे कितने कथा अरु इतिहास । कहतभे फिरि पार्थसे इनि विशद वीर विलास
प्रबल अरिसैं युद्ध करिके विहित धर्म नरेश । पार्थ तेरे बाहुबलसैं लहे विजय सुभेश ॥ सकल
पाण्डव मोहि अतिप्रिय इतो और न आन । धर्म भूपहि त्यानि हम नहि चह्यत कितहू जान ॥
द्वारिका विनुलले बीतो बज्जत दिन इत मोहि । तुम्है सह तहँ चलो चाहत परम आनद जोहि ॥
पार्थ तुम कहरुचै तौ चलि धर्मनृपके पास । हमै सह उत चलन कहँ तुम कहौ तजिकै जास ॥
नए प्राणै तासु अप्रिय करव हम न कदापि । जौन कहिहै धर्मनृप सो करव हियनै थापि ॥
पैन अब इत रहनको कछु अतिप्रयोजन तात । प्रबल भूप अशत्रु बिलगत राज्य लहि अबदात ॥
बचन यह सुनि कहे पारव सुनो यदुकुल मैर । तत्ववार्ता सुनो चाहत कहे कछु एहि ठौर ॥
बचन यह सुनि मोदि केशव कहे करि अनुमान । पूर्वको इतिहास भाषत सुनो सो नतिमान ॥
पूर्व ब्राह्मण एक आये स्वर्गते मम पास । पूजि विधिवत तांहि हम इनि कियो नाक विलास ॥
विप्र आशय समुक्ति मम इमि कहत भो हे पार्थ । कृष्ण चाहत सुन्दो हमसैं कहत तत्व यथार्थ ॥
परम ज्ञाता तत्वको है विप्रवर्थ सहान । जासु र्थत सरवत्र ज्ञापक सर्व कर्म विधान ॥ तासु सेवन
कियो कोऊ विप्र ब्राह्मण एक । सिद्ध ज्यै परसन्न तासैं कह्यो बुद्धि विवेक ॥ कर्मवस परि जीव
भरमन कर्म फल दातार । निस्सत कर्मसैं लोक सिंगरे कर्मको अधिकार ॥ पिता माता पुत्र
धाता शत्रु हित समुदाय । जीव देखत कर्मवस परि योनि अगनित आय ॥ जात आवत धिरत
निपतत चढत निपतत फेरि । सहत सुख दुख विविधि विधिके कर्म गतिसैं धेरि ॥ अराबाधा बिसम
रोग अनेक विधिके खेद । दुसह यमपुर यातना यह कर्म फलको भेद ॥ विप्र इनि बज्जुवर कुलित
कर्मको करि भोग । पाय सतगुरकियो बुद्धि विचार अबल प्रयोग । लहे तब हम सिद्धि ज्यैसी अधिक
लहि है और । लहव उन्नत सुपद इमि करि ब्रह्म चिन्तन और । विप्र फिरि मम आगमन नहि होष
गो यहि लोक ॥ ब्रह्म पद अथवा ता नधि लहव अथय श्रीक । बचन यह सुनि विप्र काश्यप कहत
भो अनुमानि ॥ देह कैसे होत घुत किनि होत कहिहै आनि ॥ कष्टते संसारके किनि कुटत
कहिहै तौन ॥ प्रकानिसो कुटि जीव कैसे करत परपद भोग ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * *

यह सुप्रश्न सुनि सिद्ध द्विज कहत भयो समुदाय । आच परे पतत तन कछु उपद्रव पाय ॥

देह प्राप्त जिनि होत है सुनो तौन व्याख्यान । जीव देह तजि जाय उत भोगि कर्म परमान ॥
 रज वीरज संयोग भव पिण्ड तासु मधि आय । सुनु हिजात निज करनको रूप सेव सो पाय ॥
 जिनि तम पूरित मेह कहँ दीपक करत प्रकाशतथा प्रकाशत देह कहँ जीव आय करि बाब ॥
 समै पाय अँ वायु बस कठंत योनिमग पाय । एहि प्रकारते स्तैतहै जन्म जीव इत आय ॥
 पूर्व कर्म अनुसार लिपि लिखि दीन्हो करतार । भोग करत सो अशुभ शुभ सो प्रारब्ध उचार ॥
 जिनि दुखसँ संसारको कूटत जीव सचैन । सो सुनि विप्र विचार कर संशैनेकु रहैन ॥
 गुनि अनित्य संसारकहँ इन्द्रिजीत रहि दक्ष । सुख दुख लाभ अलाभ महँ रहि सम भाव प्रतक्ष ॥
 करै फलाशा त्याग करि विधिवत उत्तम कर्म । रहि वैराग्यसु बुद्धि गहि पालन करै सुधर्म ॥ इनि
 साधन करि जीव द्विज जगदुखसँ कूटि जात । अबसो सुनि अँ जीव जिनि परपद पाइ विभात
 अजग अघोष सुठोरमधि कै गिरि कन्दर माह । अचल ध्यान धरि धिर रहै तिमि न चलै जिनि
 कौह ॥ जेहि प्रकार सँख्य शिला वारिदमै मिलि जाय । शोधि मनहि तिमि ब्रह्ममै रहै सदा
 लपटाय ॥ एहि प्रकार योगस्थ रहि जीव त्यागियह देह । अग्र्य पर अस्थान लहि बिलसत
 सहित सनेह ॥ सिद्ध उवाच ॥ यह प्रश्नोत्तर सुनितहँ काश्यप विप्र सुजान । फेरि प्रश्न इनि
 करत भो सुनो कृष्ण मतिमान ॥ भोजन कीजै अन्नसँ रस शोणित किमि होत । मांस रुधिर अरु
 आस्थि किमि होत कहे तजि ओत ॥ केहि बधि बरधत गान बल जीव बसत कित तत्रा सुनि
 कहे समुभाय जिनि आत्मा बिलसत अच ॥ सुनो कृष्ण यह प्रश्न सुनि हम इमि कहे बुभाय ।
 सविधि आत्म दरशन किए यह सुभेदे लखि जाय ॥ चक्षुरादि इन्द्रियन सँ है न दृश्य यह भाव ।
 ज्ञानदीप दीपित भए मन यह लखत बनाव ॥ सुनो कृष्ण समुभाय इमि विदा किथो हम
 नाहि । पारय इमि कहि सिद्ध बहुगुप्त भयो जय चाहि ॥ * ॥ क्लृप्त उवाच ॥ और एक इतिहास
 हम कहत सुनऊ सो पार्थ । पूर्व विप्रदम्पति रहे ज्ञाता तत्व यथार्थ ॥ एक समै लहि ब्राह्मणी
 करि हियरे अनुमान । कहत भई इमि सुपतिसँ सुनो पार्थ मतिमान ॥ न्यस्तकर्म जेते लहत कौन
 लोक हे नाथ । कौन लोकमो जाति है भार्या यतिके साथ ॥ यह सुनि पंडित विप्र हसि कहत भयो
 इमि बैनाप्रिये कर्म कीन्हे बिना कौज कबऊ रहैना ॥ वेदउक्त शुचि कर्मको करत मोहवग्रत्याग ॥ जेहि
 कोन्हे विनुब्रतनहि अँसि रहत सो लाग ॥ शब्द अस्परस रूपरसगन्ध विषय जो सर्वाग्रहण न तिन
 को खादको सो संन्यास अखर्ष ॥ प्राण अपान समान अरु ध्यान उदान समस्त । इनको शुचिध्यापार
 करि चिन्तत प्रभुहि प्रसक्त ॥ घ्राता भक्षयिता तथा ओता इष्टा चार । अरु अस्पर्श इच्छता प्रभु हि
 समुभक्त सु बुधि उदार ॥ प्रेय आदि जे बलु है तिनहै विचारत जीव । हनिषि अग्नि होतादि कह
 गुणपति मानत तौन ॥ अबण त्वचाचल जीभि अरु नाथा अरु पग पानि । अरु उपस्थ ए दश तिनहै
 हाता खाजै जनि ॥ बाक्स किथा अरु शब्द रस गन्ध अस्परस रूप । रेत मूत्र मल त्याग ए हैं दश

॥ * ॥ श्रीकृष्णउवाच ॥ * ॥ रोलाहृन्द ॥ * ॥

कृष्णे
५२

सुखरज तम गुणनि कह मम भाव जाओ तात । रुद्र बसु सब सुरनको हम प्रभवहै अबदात ॥
 मोहि मधि सब भूत अरु सब भूत मधि मम बास । सत असत क्षर अक्षर हम हम करत पूरण
 आस ॥ चारि आश्रम धर्म वैदिक ते ममात्मक सर्व । वेद घरु हवि-जूष मख हम मंत्र सोम-अखर्ष ॥
 सकल उद्गता सदा मम करत अक्षुति नौमि । धर्म हम हम धर्म रक्षक धर्म करता सौमि ॥
 विष्णु ब्रह्मा इन्द्र शिव हम भूतयाम समस्त । धर्म रक्षण हेत हम अवतार लेत प्रशस्त ॥ यत्
 दैयत माग सुर गन्धर्व किन्नर जौन । जात हम जेहि धोनि तेहि विधि चरत हे मतिभौन ॥ धर्म
 त्यागि अनीति गहिके किए कौरव युद्ध । युद्ध मधि मरि गए सुरपुर होत तुम कत कुद्ध ॥ मुनि
 उतङ्क सुवचन यह मुनि कहे हे जगदीश । तव यह मुनि आजु मम भ्रम गयो विश्वेवीश ॥ नाथ
 अब दरशाइअे निज विश्वरूप अनूप । कृष्ण तव दरशाइ दीन्दे चारु विश्व सरूप ॥ लखे हे कुरु
 क्षेत्र मै जो रूप अनुपम पार्थ । देखे सो उतङ्क अक्षुति किए जानि यथार्थ ॥ कृष्ण तव उतङ्क मुनि
 सौ कहे सुनु हे विप्र । जौन तुम वरदान मागऊ देहि हम सो क्षिप्र ॥ वचन यह मुनि कहे मुनि
 उतङ्क आनद हाय । तृपितअे हम अहैँ जहँ तहँ दिहेउ दरशन आय ॥ कृष्ण बोलि तथास्तु
 तव गे द्वारिका शुभ भेष । विप्र क्रमसँ कछू दिनमै जात भो मरु देश ॥ फिरत तहँ अै तृपित
 कृष्णहि भयो सुमिरत तौन । मिलो आगे आइ तहँ चाण्डाल विक्रम भौन ॥ श्रान लीन्दे सङ्ग
 शरधनु गहे अरु दिनवास । खरो लखि द्विज तासु पग तरं लख्यौ स्रोत प्रभासाकह्यो सो चाण्डाल
 मुनिवर पिघो जल तजि शङ्क । तासु पग तर देखि जल नहि पिघो मुनि उचङ्क ॥ कृष्णके गुण
 वचन कृष्णहि कह्यो बज्र दुर वैन । कह्यो सो चाण्डाल फिरि जल पिघो संगै है न ॥ पिघो नहि
 जल विप्र तव सो भयो अन्तरधान । विष्णु तेहि धर प्रगट भे गहि शङ्क चक्र महान ॥ विप्र विष्णु
 हि देखि बोलेो उचिन नहि इमि तोहि । चाण्डालके पग तरे जल करि देन लागे मोहि ॥ वचन
 यह मुनि विष्णु द्विजसँ कहे हम समुभाइ । कहे सुरपति सो उतङ्कहि देऊ अमृत जाइ । शक्रसो
 मुनि कह्यो अमृत मानुषहि नहि योगमानि आज्ञा आपुकी कछु ठानि व्याज प्रयोगाजाइ अमृत
 लेन भाषव जौन ले है तौन । प्रगट करि नहि देव तौ फिरि आइबै करि गौन ॥ मेघ कुक्षित शक्र
 हे अरु रछो अमृत वारि । लए नहि अब कहा कोजै कहो तौन विचारि ॥ भाषि इमि प्रभु कहे
 आपुहि अबहि तुम एहि देश । चाहि हौ जल वृष्टि होइहि तवहि वृष्टि सुत्रेश ॥ होइगे उतङ्क
 गामक मेघ अबते तौन । समुक्ति आशय आपुकी इत वृष्टि करिहै जौन ॥ अजैलो उतङ्क नामक
 मेघ वरधत तव । देश मरुमै विष्णु विप्रहि दए आशिष यत्र ॥ जनमेजयेउवाच ॥ रह्यो कैसो
 किए तप उतङ्क जाके दर्प । चह्यो जाते करण कृष्णहि श्राप दारुण अर्प ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥

अथो- ५० शिष्य गौतम मुच्यते उतङ्क परम प्रबोध । गुरु सुसूषा करत प्रगटत नित्य भक्ति अहोन । करत सेवा गुरुको भे केश सिंगरे सेत । एक दिन भो काठ आनन गुरुको गृह हेत ॥ लिप्त वी अति भारसो दिज गिरो गृह ढिग आय । लगे रोदन करन तनसै महा पीडा पाय ॥ पाद आज्ञा पिताकी गुरु सुता तेहि पर जाय । कियेन वारण रुदनको नहि तज्यो विप्र अचाय ॥ आपु गौतम कहे तब कत इतो रोदत आजु । गह्यो कैसो खेद बनसै भयो कौन अकाजु ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गौतम ऋषिके वचन सुनि कह्यो उतङ्क प्रशस्त । तो सेवा करि शत वरिस भए जरासो थस्त ॥ मम आगे कौयक शतक भिप्र शिष्य इत आय । गए गेह नहि जान मोहि कहे आपु सुखदाय ॥ लह्यो न जगको खाद कछु भए शक्तिसो हीन । यह गुणि हम रोदन करत करै कहा अब ईन ॥ यह सुनि गौतम करि कृपा युवा पुरुष करि ताहि। व्याहि दर्द निज कन्यका अति सृति संमतचाहि ॥ तदनु अहिल्यासो कह्यो दिज उतङ्क अनुमानि । अम्ब कहौ गुर दक्षिणा तौन दोहि हम आनि ॥ अहिल्यावाच ॥ * ॥ पुत्र सुश्रूषा तुम किए ताही सो हम तुष्ट । औसि चहौ जो देन तौ देऊ कहै जो पुष्ट। जो सौदास महीपकी पतिनी कुण्डल तासु । आनि देऊ यह बिप्र सुनि तहां चलत भो आसु ॥ जाइ तहां दिज लखत भो राक्षस रूप महीप। दिजहि देखि इमि कहतभो नृप राक्षस कुलदीप ॥ षट दिन बीते दैव बस भोजन पायो आजु । यह सुनिके उतङ्क मुनि कहत भयो निज काजु ॥ गुरुहि दक्षिणा देन हिन याचन अयउं ताहि । देऊ तौन दे आइहौ तव तुम खायऊ मोहि ॥ जो कुण्डल तव तरुणि पहँ देऊ कृपा करि तौन । यह सुनिके सौदास नृप कह्यो क्षणक रहि मौन ॥ मम तियके ढिग जाइ तुम कहि निज अरथ बुभाय । मम निदेश कहि लेऊ दिज कुण्डल आनद दाय ॥ यह सुनिके दिज जात भो मदयन्ती के पास । नृप निदेश अरु निज अरथ विधिवत कियो प्रकास ॥ मदयन्ती सो सुनि कह्यो यत्न असुर सुरनाग । करि उपाय कछु चह त हे कुण्डल लियो अदाय ॥ नृप आज्ञा दृढ हेत कछु बार्ता ल्यायो फेरि । तौ कुण्डल हम देहि तुम लेऊ अपूरब हेरि ॥ यह सुनि नृप पहँ जाइ दिज यह बार्ता लै आय । कहि सुनाय नृप वरनि कहँ चलो सु कुण्डल पाय ॥ श्लोकः ॥ नचैवैषा गतिः क्षेम्या जचोन्या विद्यते गतिः ॥ एतन्मे मत माज्ञाय प्रयच्छ मणि कुण्डले ॥ यहि राक्षस गति मुक्त हित याते और न यत्न । यह मन मत गुणि दोजिये कुण्डल चारु सरत ॥ सहि सुकुण्डलहि सुदित दिज जाय भूपके पास । करि सुवा रता चलत भो गुरु ढिग गुणत सुपास ॥ कछु दूर चलि लुधित दिज वृत्त देलको देखि । चढि तापै तौरन लगे पके सुफल अवरेखि ॥ इतने मे छुटि गिरि परो कुण्डल सहिपै आय । तेहि औरावत कलज अहि गहि नहि गयो समाय ॥ तब तेहि तरुते उत्तरिके विप्र दंड गहि पानि । देखि विवर नागे खँदेन कुण्डल लीवो जानि ॥ भरे क्रोध पैतिस दिवस भूमि खयो जब विप्र । तब भूमिहि

व्याकुल निरखि सुरपति आए विप्र ॥ द्विज उतह सो कहत भे सुरपति करि अनुमाना नाग लोक
अब इहाँसँ योजन सहस प्रमान ॥ विप्ररूप धरि शकसँ यह सुनि कह्यो उतह ॥ विनु कुंडल
पाए इहाँ तजिहौ प्राण अमर ॥ यह निहचै गुणि विप्रको शक दयाके तंत्र ॥ दंडहि योजित
करत भे बच्च अस्त्रको मंत्र ॥ बच्च अस्त्र परभाव ते क्षणमै विरचि सुराह ॥ नागलोकमै जात भो
ब्राह्मण कुंडल चाह ॥ जाय तहाँ द्विज लखत भो नागलोकको द्वार ॥ ऊचो योजन पाँच अरु शत
योजन बिसतार ॥ भयो निराशा विप्र तब मिलो तुरग अतिकाय ॥ द्विजहि गुरूको शिष्य गुणि
कहत भयो समुभाय ॥ मम गुद फूको विप्र तुम तब लहिहौ निजराज ॥ सो सुनि द्विज फूकत
भयो गुदो सिद्ध गुणि काज ॥ रोम रोम ते तुरगके कढो धूमकी धार ॥ तासँ पूरित होत भो नाग
लोक बिकरार ॥ ऋ अति व्याकुल नाग सब आइ उतहहि पूजि ॥ देत भए कुंडल विमल विधि
घत अतुति कूजि ॥ लहि कुंडल अति मुदित ऋ द्विज गौतमपहँ जाय ॥ गुरु पतिनिहि कुंडल
इयो सिमरी कथा सुनाय ॥ अँ सो सरस प्रभाव वर तप व्रत तेज अनूप ॥ मुनि उतहको हम सु
ने कहे जनमेजय भूप ॥ * * * * *

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्थाज्ञाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी
वासिगोकुलनाथकबीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते अश्वमेध
पर्वणि उतहोपाख्यानो नामद्वितीयो अध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ सेतरा ॥ * ॥

विप्रहि दे बरदान कष्ट द्वारिको जायके ॥ कीन्हे कौन विधान सो वैशम्पायन कहे ॥

॥ * ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ चौपाई ॥ * ॥

कष्ट उतह सुनिहि बरदैके ॥ सात्युकि सहित जाय मुद लैके ॥ देखत चारु पुरी को शोभा ॥
जेहि लखि बसति शक हिय शोभा ॥ आनद देत मिलत सब जन सँ ॥ गे निज घर सेदित यदु
गसँ ॥ क्रमसँ बन्दि चरण गुरजनके ॥ बैठे हरणहार मुनि मनके ॥ कुशल प्रश्न विधिवत
कहि सुनिकै ॥ इमि बसुदेव कहत भे गुणिकै ॥ केहि विधि भयो युद्ध अतिभारो ॥ सो सब सविधि
कहा रणचारी ॥ सो सुनि प्रभु कहियो अभिलाषे ॥ महि संक्षेप युद्ध सब भाषे ॥ सुनि अभि
मन्युश्रीरको मरिगे ॥ भो तेहि समे बच्चको परिगे ॥ मातु देवकी अतिदुख लीन्ही ॥ अह्नि सुभद्रहि
रोदन कीन्ही ॥ तिमि बसुदेव शोकसँ भोए ॥ दुहिता सुतके गुण कहि रोए ॥ तब केवय कहि
धर्म बुजाए ॥ ताको तियाहि सर्गब सुनाए ॥ सुनि बसुदेव शोक दुख त्यागे ॥ पिंडदान कीन्हे अनुरागे ॥
साठिलाख विप्रकहँ भोजन ॥ दीन्हे अग्नित धन करि योजन ॥ उमैव्यास कुन्तापहँ आए ॥
यह सुहेतु कहिकै समुजाए ॥ गुरबनि कुशरि उत्तरा बरणी ॥ होइहि सुत पालक सब धरणी ॥
सो सुनि पाण्डव दुख तजि हरणे ॥ बचन पितामहको हित परषे ॥ * * * * *

अश्वमे०
प०

अ०

प०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अश्वमेधके हेत धन आगमको उपचार । करो भाषि इमि जात भे व्यास मुनीश उदार ॥
यह सुनि जनमेजय कहे इमि कहिगे मुनिव्यासानृपति युधिष्ठिर तब कहा किए कहे मति रास ॥
सुनि वैशम्पायन कहे सुनि जनमेजय भूप । तदनन्तर नृपधर्म गुणि लहिके समै अनूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यचन व्यासके कहि मुद धरिके । सब बन्धुनसौ सम्मत करिके ॥ धन ल्यावनको शासन दोन्हे ।
सदल चक्षन भे आनद लोन्हे ॥ प्रभाहि नैमि करिके सब कूजन । विप्रण दानदेत करि पूजन ॥
यह दस्यतिहि नैमि सुभावन । सविधि सुनत सख्ययन सुहावन ॥ राखि युयुत्सुहि नृपके धारे ।
सुरय न नहि नहि चञ्चल घेरे ॥ भीम धर्म आदिक सब भार्द । सदल चलेअति ओज बढार्द ॥
बन्दीजनसौ अस्तुति रूरे । सुनत जाय अति आनद पूरे ॥ क्रमते बन गिरि सरिता तरिके ।
गे तेहि गिरि ढिग कछुदिन चरिके ॥ जेहि गिरि ढिग धन व्यास बताए । गए जासुहित आनद
काए ॥ तेहि गिरि ढिग निवास करि राजा । आगे करि सब विप्र समाजा ॥ करत शान्ति मङ्गल
हित कारी । सबदिशि राखि सुभट धनुधारी ॥ नृपति युधिष्ठिर मधिमे रहिके । लसे शङ्करहि मनमे
गहिके ॥ पटु विप्रणको सम्मत सुनिके । धर्म नृपति रहि निरसन गुणिके ॥ कुश बिश्वाय महि शय्या
कोन्हे । कामदानि प्रभु शम्भुहि ची हे ॥ यहि प्रकार सो निशा बिताए । भोर विजातन होअ
कराए ॥ मोदक पाय समंश सोहाए । विधिवत बलि दोन्हे मनभाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नव शुनि भद्र कुबेर अरु अरु जे गण समुदाय । विधिवत तिनकहँ पूजिके दै बलिदान सचाय ॥
व्यासआदि द्विजवरन कहँ करि आगू मतिरास । सुनत सख्ययन जात भे रतन खानिके पास ॥
पूजि धनेशहि तत्र अरु दे विप्रणकह दान । रतन खदांवत भे तहा धर्म भूष मतिमान ॥
अगिनित पात्र खदांय धन लदवावत भो भूप । तिनको संख्या कहत नृप सो गुणि लेऊ अनूप ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

जैत लदाए साठि हजार । तासु द्विगुण घेरे समचार ॥ द्विरद एकादश शत लदवाय । तितने
सकठनके समुदाय ॥ खर अरु भारवाहनरजौन । संख्या तासु सकै कहि कौन ॥ इतनेो द्रव्य
लदाय चलाय । फेरि पूजि शम्भुहि सुखदाय ॥ विप्र भठन सह पूरित मोद । फिरे नगरप्रति वरत
विनेद ॥ इतै कृष्ण दायक फल चारि । अश्वमेधको समै निहारि ॥ सह प्रदुस सात्युकि बलरामा
अरु गद साम्ब निशठबन्धधाय ॥ अरु कतवरमा सारण सङ्ग । सहित सुभद्रा भरे उमङ्ग ॥ हास्तिन
पुर आए करि प्रेम । सुनि धृतराष्ट्र भूप गुणि सेम ॥ बिदुर युयुत्सुहि समुद पढाय । उचित
करत भे वास कराय ॥ इतने जै सुगुभूपति तंत्र । द्रोणतनै को प्रेरित मंत्र ॥ प्रविशि उत्तराके

उर शोक । पीडन लागे दायक भीच ॥ तेहि क्षण गुणिके श्रीयदुनाथ । ने अन्तहपुर सात्यकि साथ ॥ दृष्ट्य दृष्ट्य टरत तहि काल । कुन्ता आइ कही सो हाल ॥ उर ताडत पूरित परिताप । करत भई आरत परलाप ॥ तुमहें किए प्रतिज्ञा पूर्व । रक्षण करव गर्व हम गर्व ॥ सो तुम भूलि गए कत तात । जाते भयो गर्वको घात ॥ तुम रक्षत पाण्डवन सप्रेम । जैसे पुत्ररिहि पलक समेम ॥ प्रभुते भागिनेयको गर्व । हाथलहै यहि विधि गति खर्ब ॥ धर्म भीम अरजुन यहि देखि । किनि जीहै अनरथ अवरोखि ॥ यहि विधि भयो बंशको नाथ । लखि यह गर्व गयो सब आथ ॥ सो ज सृत्क भयो अब हाथ । जैसे शोक सहो किनि जाय । प्रभु अब निज गुरगरिमा चाहि । उत चलि बेगि जिआयो ताहि ॥ यहि विधि कहि कहि कुन्ता मोहि । महि गिरि रही दृष्ट्य कहें जोहि ॥ तब कुन्तहि महि दृष्ट्य उठाय । साहस देत भए समुजाय ॥ तहां सुभद्रा रोवत आय ॥ बोलत भई बचन दुखदाय ॥ घृत्नक पुत्र प्रगटित भो तात । बह दारुण दुख सहो न जात ॥ लखि यह गर्व पुत्रको शोक । मै सहि रही धीर करि रोक ॥ लहितो अनुकम्पाकी रीति । पाण्डव पाए सब धर जोति ॥ द्रोण तने को अल्ल अमान । तासो बचो भीम बलवान ॥ अब सो अल्ल देत जयचाहि सम पउत्रको जोवन दाहि ॥ अब सब पांडव हारे जात । जाते होत मूलको घात ॥ जाचत तोहि तात परि पाय । भागिनेय सुत देऊ जिआय ॥ द्विज सुतसों प्रण कान्हो जौन । मात करो अब पालन तौन ॥ तात अपुको जानि प्रभाव । हम हठ इतो कहति करि राव ॥ सुनि धीरज दै दृष्ट्य उदार । गए प्रसूत मेहके द्वार ॥ तहां मुषीजन भिषज अनेक । बैठे रक्षण हेत सटेक ॥ घृत तिल तण्डुल सरषप भूरि । लीन्हे बैठे दुखसों पूरि ॥ इपदसुता उत धीरज आनि । कही उत रासों अनुमानि ॥ मातुल ससुर दृष्ट्य तो तीर । आए त्यागि शोक धर धीर ॥ दृष्ट्य आगमन सुनि सुखपाय । घृतकपुत्रकह गोद लगाय ॥ कहि कहिके शोकाकुल बैन । करो उन्नरा रुदन अचैन ॥ तब केशव कल्याणके अैन । लीन्हे करषि अल्ल जग जैन । सहि सोहार अल्ल वह भूप । गयो पितामहपास अनूप ॥ तब सचेत भो पिता तुन्हार । अति पूरित थे मङ्गल चार ॥ वृषि बंधक वृद्ध महान । कीन्हे नामकरण सविधान ॥ बंशचीण पदें भो हविधाम । ताते कियो परीक्षित नाम ॥ नर नारी सब आनद पूरि । दिए दान मणि भूषण भूरि ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एक मासको अब भए पिता तुन्हार महीप । तब धन लै आए सदस्य धर्मभूप कुलदीप ॥ मिलि सबसंग सो परसपर पूजि पुजाय सठौर । हास्तिन पुर राजित भया धर्मनृपति शिरसौर ॥ सकै पाय तब भूपपदें आए आस मुनीय । पूजि यथाचित ताहि इमि कही धर्म अचरीय ॥ अश्वमेध बल महतको कियो आपु उपदेश । अब मुभ समथ बिचारि प्रभु कीजे उचित निदेश ॥

५२७०

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

५०

इति कहि कहे कृष्णसें सानद । आपु होऊ दोक्षित प्रभु मानद ॥ मोहि विहिप्रद कृपा
मुहारी । तुव आज्ञा फल सब मखचारी ॥ यह सुनि कहे कृष्ण प्रभु भागर । तुम अम कुलपति भूप
उजागर ॥ तुव कर तव मन मन तुव आरय । आपु करो अनपम मख कारय ॥ यह सुनि भूप
मोद हिय राखे । पाण्डिजेरि मुनिवरसें भाखे ॥ प्रभु अनूप अनुपम्या गहिये । अरभणको दिन
गुणि कहिये ॥ यह सुनि व्यास कहे करि रूहित । होऊ चैत पूने लहि दोक्षित ॥ सराजाम सब
योहित कीजे । विप्र-बोलाइ निमचण दीजे ॥ भूमि परजटन हि विधि कै कै । अश्व-तमो रक्षक
संग दैकै ॥ सबजगजैन पार्ष धनुधारी । सदल जाहि हय की रखवारी ॥ भीम-ननुक सहदेव
मुखारी । रहे नेह रक्षक मखचारी ॥ यह सुनि भूप विजे अभिलाषे । भीम-काकगुणसे इति
भाषे ॥ अश्वहि रक्षण हेत पधारो । भूमि विजे करि अश्व सुधारो ॥ जो आहै कोऊ भूप अकादर ॥
पहिले ताहि मुजायऊ सादर ॥ जोहि न विरोध बढे सो कीजो । नहि मानै तौ हरि जय लीजो ॥
इति समुभाष पार्षसें कहि कै । भूप भयो दीक्षित दिन लहि कै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बृद्ध भूप धृतराष्ट्रसें आज्ञा लै तेहि काल । विधिवत दीक्षित नै सबिधि अश्व तज्यो क्षिति पाल ॥
पारथ नृपसे नै विदा कृष्णहि ध्ययन सत्तेन । चले अश्व रक्षण करत सुनत मुभद सत्तेन ॥
नै उत्तर पूरव चले अश्व सुनो क्षितिपाल । अब सुनिअे जेहि बल भयो युद्ध महा-त्रिकराल ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

हय आगमन अनूप सुनि त्रिगर्तपति बैर गुणि । बढि सह सेना भूप यज्ञ अश्व साग्यो गहना ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

ताहि अश्व रोकत लखि पारथ । भयो सुनावत बचन यथारथ ॥ सुत बन्धुनको बध नहि
तातो । नहि मान्यो सो नृप रिसि रातो ॥ नाम सूर्यवरमा रणचारी । बाण-पार्षपह
तज्यो प्रचारी ॥ अग्नित रचन सहित बढि बलसें । भिरतभयो पारथके दखसें । नृपति
सूर्यवरमाको भाई ॥ अम-केतुवरमा दृढ घाई ॥ भिरो पार्षसें विद-विदमणिकै । पारथ
ताहि बध्थो अरुहणिकै ॥ तव धृतरमा विदित महारथ । भिरत-भयो पार्ष-भारु-न
पारथ ॥ अति कर लाघव करि धनु करथो । अबिरल बाण पार्ष पह बरथो ॥ अति कर लाघव
लखि तेहि सहनै । पारथ अए सराहत मननै ॥ धृतरमा रिसि करि मोहि करनै । बाणो
बाण पार्षके करनै ॥ करते धनुष नियो तव राजा । देखि मुदित अरे अरुणसारा ॥ तेहि-सथ
पारथ भट अति कोष्यो । नहि भीडीव प्रलै आरोष्यो ॥ महादश सुनिनै तेहि पकनै । अश्वकार
नको अरिदखले ॥ अरिदखके सहसन भट बधिकै । लसो काकचम पार्ष बरधिकै ॥ तहँ

पारथको विक्रम देखी । भगी शत्रुसेना भय भेसी ॥ तब चिन्तनपति गुणि मनब्राह्मी । शर सह धनुष त्यागि रथपाही ॥ टोर पार्थसों कह्यो जुगार्द्र । हम तोवश अब तजऊ सराद ॥ अब हम करै करौ जो शासन । कहे पार्थ सुनि यह सम्भाषन ॥ बभ्रुन सह हस्तिनपुर आयऊ । अश्वमेध मख लखि सुख पायऊ ॥ इनि कहि पारथ भेट जय दईके । स सयन चले अश्वके पीछे ॥ फिरि क्रम सों प्राग्योतिष पुरनै । पळवत भयो तुरनँ अति तुरनै ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तुहँ सुवन भगदन्तको बज्रदन्त बर नाम । कठि पट्टनते सहस्र बढि भिरत भयो बलधाम ॥ पारथ सँभिरि लरत भो बज्रदन्त रणधीर । तिमि पारथके भटनसों भिरे और बरबीर ॥ चढो दीह युगदन्तपहँ बज्रदन्त बलवान । पारथ बोर रथस्थ बहँ बरषो अतिरल वान ॥

॥ * ॥ चौपाई * ॥

पारथ तापहँ शर भरि कीन्हे । बाणन बाण विरथ करि दीन्हे ॥ दोऊ कर लाघवता ठाठ । अग्निनि त बाण परसपर काटे ॥ दोऊ दुऊन प्रचारि प्रचारो । बरषे बाण प्राणहर भारी ॥ दोऊ दुऊन बाण हनि डाटै । घने बाण बाणसों काटै ॥ तहँ पारथ अति तुरता धार्यो । तीसण बाण तासु उर नाख्यो ॥ तासों बेधित ह्यै सो धरकस । मोहित भयो भूलि धनु तरकस ॥ सणमै चेति भूप रिसि छायो । मेघ जलदसम दुरद चलायो ॥ गह्र करसों साँकर उलजारत । नरजत चलो हिरद अथ भारत ॥ पार्थहिरद पह शरजरि करिकै । राख्यो दूरि रोकि पण धरिकै ॥ बज्रदन्त तब करषि शरासन । बरषत भयो बाण अरि नाशन ॥ तेहि विधि पार्थ शरासन करयो । बज्र दन्त नृपपहँ शर बरयो ॥ यहि प्रकार दोऊ भट आरज । लरे तीनिदिन जयके कारज ॥ चौधे दिन नृपबीर अतोसो । करि अट्टाहास इनि बोसो ॥ लरि मन बृद्धपितहि तुम मारे । ताते बर्के हियेनै मारे ॥ आजु तोहि बधिके जय लेहो । बभ्रु गर्वकहँ आनद देहो ॥ इनि कहि नरजत बज्रहि बलायो । चलो हिरद अदरावत जायो ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

सुखादख उदणसों दीरघ नहे जंजीर । अरुन गिरिवर सम हिरद गयो पार्थके तीर ॥ तब पारथ अति कोप करि मारि अमोघ सुबाण । डारि देत भो भूमिपर हिरदहि करि गत प्राण ॥ हिरद सङ्ग नृप निरिपरो तब इनि बोसो पार्थ । भूप भीत तजि बचन सुनु नै यह कहत यथार्थ ॥

॥ * ॥ शेरडा ॥ * ॥

सोकह धर्म नरेश यह मिदेश दीन्हे उचित । फिरि आवो सबदेश मति कीजो बध नृपनको ॥ नृपनसा समुभाष इनि कहियो मति रणकरै । अश्वमेध नै आय लेहि सु उत्सव अग्नि सुख ॥ ताते पैर विहाय नखदेसम आयऊ उतै । यह सुनि नृप सुखपाय कहि तबासु मरु जात भो ॥

व० म०
प०

॥ * ॥ तोनरहन्द ॥ * ॥

तत्र तुरगं तौन शुभेभ्य । वल्लि मयो सिन्धु सुवेभ ॥ सुनि तौन उतके बोर । बडि भितर भे रणधीर ॥
 तर्ह चले अख अघोर । भो मघत सङ्गर घोर ॥ भठ अयुत तुरगं सवार । अर रथी एक हजार ॥
 त्रिडि फाल्गुणकहँ घेरि । भे बाण बरपत टेरि ॥ सुणिजयद्रथको ग्यात । भे करत आसुध पात ॥
 जिनि विहमँ पङ्कर माह । तिनि करत भे नरमाह ॥ यह देखि भयद प्रयोगभे दुखित इत सबसोगा ॥
 तेहि समै अनरथ मूरि । लधि परे असगुण भूरि ॥ घन घोर मधि तन भाग । तिनि भयो पार्थ
 अनाम ॥ तव पार्थ विक्रम अैन । इमि सैन्धवससौ बैन ॥ भो कहत सुनऊ समक । सुधि भूप वृषन
 प्रग्रस ॥ नहि बधत तुमहि सटेक । मम वचन जानो मेक ॥ तुम बैरभाव बिहाष । मरु अरि मम
 पुर आय ॥ यह वचन सुनि ते सर्व । इमि कहँ वचन सर्ग्य ॥ जौ नहे जियको सोभ । मम मुह लखि
 भो सोभ ॥ तौ जाऊ रण तजि भागि । कत कहत कैतव खानि ॥ यह सुनत पार्थ अनाम । भे क्रोध
 काल समान ॥ चलि चक्रसम भट चंड । अति चपल करि दोदंड ॥ करि धनुष मंडल रूप । भो
 बाण बरपत मूप ॥ प्रति भठन शायक जाल । भो रचत बोर विमल ॥ भठ तुरगं अगिनित नारि ।
 भो देत महिपर डारि ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
 पार्थ अगिनिकी शर लपट सेहि न सके भय पूरि । भागि चलै सैन्धव सुभठ बेधित पीछित भूरि ॥
 तव दुहिता धृतराष्ट्रको शिशु पऊन लै आय । रुदन करण लागी तर्हा आरत वचन सुनाय ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

तेहि लखि पारथ करुणा भरिकै । तजि लरिवो धनु रथपर धरिकै ॥ सादर इमि भजिनीसौ
 भावे । कहति कहा कऊ जौ अभिलाषे ॥ तव दुखला कही सुनु आरज । यहि बालकको कर
 दित कारजा यह ममसुतको सुत सुनु भैया । अब याको नहि और सहैया ॥ यह सुनि पार्थ कहे
 से चक्र से । बाको पिता भयो का कऊ से ॥ कहा दुखला पुत्र हमारो । पिता नरण सुनि नरो
 विचारो ॥ अब यहि बालहि आस तिहारो । अभै करो करि रूप विचारो ॥ इमि कहि शीम
 दशासौ पागो । दुखित दुखला रोवन लागी ॥ तव पारथ तेहि आसित कीन्हे । कहे आरज पर
 आनद सीन्हे ॥ इमि कहि ताहि विदा करि पारथ । चले अचके सर्वे मुहि सारथ ॥ आनरा
 अगिनित देश मभाषत । गो मणिपूर देस हय भाषत ॥ बधुवाहना नृप से सुनिकै । मायद पिता
 पार्थ कहँ मुनिकै ॥ विप्रस सहित निरायुध कडिकै । मिलन चलो पारथसौ बडिकै ॥ जिनि तेहि
 देखि पार्थ रिधि कहिकै । गिन्हा किए वचन इमि कहिकै ॥ खोब सनाम आसुध मजिकै ।
 आवत कहा पलटि ओ लजिकै ॥ मरु हय रचत धनुटहारत । नृप नरथिको नरव विदासत ॥
 वृम आवत तुम ताके धोरे । आय सुद सरित कर जोरे ॥ जौ हन इहा विराजुन आरत । तौ इमि
 तोहि देखि मुख पादत ॥ तव यहि विधि मम समनुष आरव । तेहि उचित हो प्रीति बढारव ॥

अःने
५०

यह सुनि बभ्रुवाहन लजिकै । रघो गोसमत करि मुद तजिकै ॥ यह सुनि नागसुता तेहि पल्लवै ।
भूमि वैधि प्रगढी तेहि बलनै ॥ नृपसौ कहत भई नहि धारी । नागसुता इन नाम तुम्हारी ॥ वीर
पालगुण पिता तुम्हारे । युद्ध हेत इत सदस्य पधारे ॥ युद्ध करौ तजि नेह सगई । शाक धर्मकी
इहै बडाई ॥ मातु उल्लूपीकी बह्वानी । सुमत बभ्रुवाहन अभिनानी ॥ काश्यप कवच दोष करि
धास्यो । यह अरिचाण तुषीर सुधास्यो ॥ रथचढि महाकोपसों पागो । उद्य नहि साधक बरषण
लागो ॥ धनु टङ्कारि पार्थ भट नायक । बरषण लगो पुत्र यह ग्रायक ॥ पिता पुत्र दोऊ धनुधारी ।
कोरहे तहाँ युद्ध अति भारी ॥ दोऊ साधव करि धनु करये । अरि रस शर दोऊनपहँ बरये ॥ दोऊ
दुऊन बलसम परये ॥ अद्भुत विक्रम लखि लखि हरये ॥ दोऊ दोऊनके शर हूरे । काटि दुहँ
दिशि साधक पूरे ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * *

अति विक्रम करिकै तहाँ बभ्रुवाहन वीर । पारथके धूमधि हन्यो अतिसै तीक्ष्ण तीर ॥
तासों बन्धित पार्थ भट रहि मोहित लख एक । चेति धनुषटङ्कार करि बरयो बाण सटेक ॥

॥ * ॥ गुरतोमर हृन्द ॥ * ॥

तहँ पार्थपुत्रहि हेरिकै । भो कहत यहि त्रिधि डेरिकै ॥ सुत साधुसाधु सुधीरहै । धनु धरणिधर
रथधीरहै ॥ अब आहु भरि मन बाणकी । जो चूर करनि पषानकी ॥ इमि भाषि शर सभ्यानकै ।
नम दयो विनुरन्धानकै ॥ सो भूप धनु विधि टाटिकै । भो मदत सब शर काटिकै ॥ तब पाय
अदभुत ठामसों । हनि अध विधुवर वानसों ॥ ध्वज काटि मरि पर डारिकै । भो मदत तुरग
मारिकै ॥ तब भूप रबसों कूटिकै । अति गर्व कोप असूदिकै ॥ अति पाणि साधव ठामसों । भो
बाण मजत विधान सों ॥ तहँ हन्यो पारथ घातमै । बज्र बाण ताके गातमै ॥ तब बभ्रुवाहन ते
लिकै । निज भिजै विधि अवरलिकै ॥ अति कठिन धनु टङ्कारिकै । यहि पार्थपार्थ प्रचारिकै ॥
बर शरको तम जालकै । भो लसत आज विशालकै ॥ तहँ पार्थ विक्रम भूरिकै । अबकाश बाणन
पूरिकै ॥ सब बाण बाणन बारिकै । बज्र बाण सास्यो जारिकै ॥ तब बभ्रुवाहन कोपिकै । निज
विजयको छित सोपिकै ॥ * * * * * ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * *

यस्य सनाम उदग्ध शर पारथके उरमाहँ । हनत भयो अति वेगसों दारण भट मरमाहँ ॥
अति तीक्ष्ण अरिबाण वैधि नर्मबल तासु । पन्नग सम कटि जात भो प्रविशि भूमि मधि आसु ॥
मृग तेहि सख्य समबाण नै पयो पार्थ तेहि डौर । हाहा धुनि सैनिक किए मरोपार्थ भट नौर ॥
नेधन पारथके मरत बभ्रुवाहन वीर । मोहित नै गिरि भूमि परत भयो अरि पीर ॥

॥ * ॥ शोपार्थ ॥ * ॥

प्रियपति सुतको मरिभो सुनिकै । विक्रमदा विपति विन मुणिकै ॥ जाय तहाँ अति दुखसा पागी ॥

दोहा हने अन्तर्यपुरि ॥ तेजस्वि महीपको ह्य सुत वधिके पार्थ ॥ नास्ति वाह सुरप्र दीन्हे काठि
 धनु गुहि खार्थे ॥ कूदि रघसा बदा गहि तव चलो भूय अनानाकाठि दीन्हे मया खोज पार्थ हनि
 वरमान ॥ विरव विषनु महीपतिहि करि पार्थ वृषव न चास्ति दयमकरि इति वाक्छि विधिवत् भय
 शीघत ताहि ॥ साधुधर्म अभूषणे करि भय भूम शितिपाल ॥ कर्हे हव सो करो अथ नस्ति कुरु
 वैर विद्यास ॥ अथनेव सु चञ्चलै तुज आहो नृपपास । पूर्ण मल कलि आहोरो इत पाद प्ररु
 सुपास ॥ भाषि इति नै वविधि पूजित वाह अथ चलाय । जले पारव सहित सेना दुन्दुभी वज
 वाष ॥ तहांसो चलि अथ आयो अेदिनगर अनूप । सरभ सुत शिशुपालको तर्हे कियो पूजन
 भूप ॥ पार्थ पूजा आहोरो वज मध्य अभर्म । देह शासन चलो दक्षिण ओर पालक धर्म ॥ तहां
 अह किराने कोपाल भूपमसो पुत्रवाय । गयो देश दशार्थने सहसैन अोज बढाय ॥ तहां धिवा
 प्रद महीपति लरो कठि सह सैन । जीति ताकई चलो आगे पार्थ विक्रमधैन ॥ एक लघ
 निपादके पुह भयो तव ह्य तौम । लरो तर्हे कठि एकलघ महीपको सुत जौन ॥ जीति ताकई
 मर दक्षिण वरिनिधिको कूल । तहां जीतो द्रविडमाहिष कोलपतिन समूल ॥ जाय फिरि
 गोकार्णे फिरिधिव अथ सुषमा खैन । फेरि जाय प्रभाष यल गो हारिका जगजैन ॥ अथको
 सुनि आषमन तर्हे तरण धादव सर्व । नगरने कठि सरन चाहे शक्त पाणि अलर्ष ॥ उग्रसेनहि
 आदि सिंगरे वृह तिमकई वारि । ल्याय पार्थहि करतभे सतकार सविधि विचारि ॥ तहांसो
 चलि अथ सो फिरि गयो पश्चिम ओर । कणासो नै विदो तित गो पार्थ सुभट सजोर ॥ पञ्चनद
 नै जाय ह्य सो गयो अह नान्धर । शकुनिको सुत अथ गहि तर्हे कियो युद्ध अपार ॥ गने कीन्हे
 पार्थ वज्रविधि वचन नृपके भासि । सुनो नहि सो शकुनिको सुत नर्ब हियनै रासि ॥ सैन सह
 बटिठेरि पार्थहि कियो सन्न पीन । बध्थो ताके सुभट अग्नित पार्थ धीरधुरीन ॥ * * * *

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ * ॥

नी गने निज मठमको शकुनि पुत्रवध देखि । आपु पार्थसो भिरि भयो वरषत वाण विशेषि ॥
 फेरि ताहि बरजत गयो धारव ओर अनान । गहि नान्यो तव काण हनि काठि दयो गिर जाना ॥
 ॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

सो लखि उतके चौधा हरे । भिरे पार्थसो अथरष पूरे । तोवर पहिष शक्ति सोहाय । अथि
 रस वरषि पार्थे पहें शोए ॥ तहां पार्थ अति लाघव कीन्हे । अग्नित धर विनु गिर करि दीन्हे ।
 कोन्हे अथिभित कर पव डेदन । कीन्हे अग्नितके उर भेदन ॥ कितने धनु ध्वज काठि गिराए ।
 नये कियो ह्य वज्र अविषाए ॥ एहि विधि प्रसौ देखि तेहि लखनै । मची वृह सुभुधि गुणि मननै ॥
 ल्याय शकुनि भूपतिको रार्थिहि । शमित अथ निज नृप अथि जानिहि ॥ पुषहि वारित करि
 नृप मारी । तर्हे पार्थदिन सान विचारी ॥ पार्थ ताहि लखि धनु तजि साहू ॥ क्रिय प्रणाम उचित

अथने
 पः

अ०से०
प०

करि सादर ॥ कहे प्रकुमिके सुतसैं पारथ । तुम मन बन्धु सरत विनु सारथ ॥ बैर विहाय
प्रीति नहि भार्द । मन पुर आयुज समुक्ति सगार्द ॥ इनि कहि पार्थ विदाव्है तिगसैं । चलो लेत
अथ हारैं किमसैं ॥ अलि तहंसैं मखइय मुखचमरो । पलटि इक्षितापुर दिधि उगरो ॥ तब
चलाक चारण चलि आए । धर्म नृपतिसैं खबरि सुनाए । भूमि बिजै करि आनद छावत । रघत
तुरंग पार्थ इत आवत ॥ धर्मभूप सुनि यह सम्भाषन । बन्धु न बोलि दयो अनुभासन ॥ आजु
माघकी अनुपम पूनो । आवत पार्थ हात सुख दूने ॥ ॐ*ॐ*ॐ* ॥ दोहा ॥ ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*

शुभदबजके सदम की रचना अति कमनोयातोरणकारबावजु शुचि बिसतरितधया उचित रक्षणीया ॥

दूत भेजि सब नृपनकहैं सादर लेजु बलाथ । सादर आमजु जतनसैं विप्रणको समुदाय ॥
यह निदेश सुनि नृपतिको भीमसेन अनुमानियाया योग सब करतभे कमसैं सब विधि जानि ॥
पाद निमंत्रण मुदित व्है आए सिगरे भूप । यथा योग सादर दए तिमकह वास अनूप ॥
भोजन करि करि द्विजन कहैं दीन्हो विशद निवासविधिवत सब सतकारकरि दीन्हो सकल सुपास ॥

कुम्भ धार आदिक सकल पात्र सौज समुदायाविनु सुवरणक एक नहि सखे विप्र चिति राव ॥

सिता मिले दधि दूध अर घृतके ताल भराया । भोजनके परकारके अग्नित डेर लगाया ॥
अजुदिशि ठाढे कहत जन लाजु लाजु मनमान । पित्रो दूध दधि सबद यह पूरि रसोसुखदान ॥
जो जहैं जो आहत भयो लह्यो तहाँ सो तौन । भरो कोलाहल मोदमय कहे नगिवरत जौन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इतने नै तहैं केशव आए । पुत्र पञ्च सहित मन भाए ॥ सात्त्विक एक साम्ब कृत बरमा ।
गद प्रदुन्न सह पूरित परमा ॥ सो सुनि भीम मोदसैं छाए । सबिधि पूजि नृपतिन लै आए ॥
लाखि कृष्णहि नृप आनद लहिकै । बूभे कुशल चवन अजु कहिकै ॥ फिरि भूपति बूभे मन भायो ॥
सुने पार्थ हो तो पुर आयो ॥ तासु युद्ध जय विधिवत कहियै । सो सुनि कृष्ण कहे सब कहियै ॥
इतने नै आनदसो छायो । चार पार्थके ढिगसैं आयो ॥ करि प्रणाम करजोरि सुभाषन ॥ दयो
सुनाय खबरि मन भाषन ॥ सो सुनि नृप अति आनद लीन्है । आदर सहित बसत भन दीन्है ॥
बह दिन बितै दाय दिन कीते । पार्थ निकट आयो हित चीते ॥ धूरं धार धार्द सक दिशि सैनासते
सूर जैसो शशि निशि नै ॥ सुनि हय हो शनि गज नुरजन कीगार्द पूरि सुखप्रद हित मनयै ॥ असु
नि सुनत मोदसैं पाने । गए भूपके ढिन अनुरागे ॥ कृष्ण चन्द्र नृपधर्महि आदिक । सबबटि
मिले वचन प्रियवादिक ॥ बैठि सप्रेम सकल अवदातैं । लगे करम इत उल की मारतैं ॥ इतने
नै तहैं सहित समाज । आयो बधु बाहना राज ॥ ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कृष्णशुचिद्विभोजन अर नकुलपार्थसददेव । बन्दि सबहि आतामह द्विबन्धतभयो सुभेव ॥

अ० से०
प०

सब गुरजनको तिघन कहँ बन्दत भयो सप्रेम । तासु जननि सबसों निखी यथाउचित गहि नेम ॥
यथाउचित सब करत भे तासु उचित सतकार । तेहि लख अति आनद मढो सुनो भूनिभरतार ॥
सखिभोकाश्रीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाहाभिगानिना श्रीबन्दीजनकाश्री
वासिभोकुसुमाचकवीश्वरात्मजिन गोपीनाथेन कविना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे अशुभेध
पर्यायार्जुनदिग्भिजयोनामद्वितीयोध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ बैश्यायनउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जेहि दिन आरु पार्थ अरु गृप मणिपूर अधीश । गृप ताके तीजे दिवस आए व्यास मुनीश ॥

॥ * ॥ अयकरीछन्द ॥ * ॥

कहे युधिष्ठिर गृपसो बैन । करो हवन आरम्भ सचैन ॥ आजु मुहूर्त परम अभिराम । करो अशु
विधि-विप्रद-सखाम ॥ विधिवत त्रिगुण दक्षिणा देऊ । चार तीनिमखको फल लेऊ ॥ व्यास
देवको पाय निदेस । कीन्हो यज्ञ अरम्भ नरेस ॥ युधिपलाशको जूप गढाय । लागे करन कर्म
समुदाय ॥ सदिर पलाश बेलको तीनि । देव दारुके दोष अहीनि ॥ जूप गढाय आगन नेत ।
रतन हेमनय सुवना हेत ॥ रक्त पुंख रचि गरुडाकार । राखे दम हस्तक इष्टार ॥ यथा शास्त्र
सब यसु थापादाकीन्हे ब्राह्मण विधि ज्ञातार ॥ पशु पक्षी अरु जलचर तौनाजेहि जेहि देवनसेहित
जौना ॥ तेहि तेहि सो सब सहित विधान । दोन्हो अधि कर्मगत मान ॥ तीनिगतक पशुके समुदाय ।
जूपन निषमित कीन्हे रथाय ॥ अपसर करत मृत्यु तेहि पर्व । गान करत मोदित मन्धर्व ॥ राजन
किंनर सिद्ध समस्त । अरु ऋषि मुनि जेविप्र प्रयस्त ॥ तपनिधि शिष्य व्यासके सर्व । करत यज्ञके
कर्म अखर्व ॥ तपनिधि सबिधि अशु पुजवाय । हिसन किए वेदमत पाय ॥ रुपदसुता सह धर्म
नरेस । होने अशुअशु तेहि देस ॥ षोडश रित्तिज पुरुष महान । हवन कराए सहित विधान ॥
विष्यम सहित व्यास तपधाम । पूर्ण कराए मख अभिराम ॥ करि मख पूर्ण भूप मतिमान । कीन्हो
भूरि भूमिको दान ॥ भूदि दान लै व्यास मुनीश । कहत भए इमि सुनु अबनीश ॥ भूमि दान दीन्हो
तुम जौन । निष्काय तासु देऊ लै तौना ॥ विप्रहि नहि प्रिय महि अधिकार ॥ विप्रहि प्रिय धन सुखदा
तार ॥ यह सुनि कहे धर्म चितिपाल । यह न मोहि स्वीकार कपाला ॥ विप्रहि दयो दान जो भूमि ।
उचित न सो फिरि शीषो घूमि ॥ चारि भाग करि सिगरे विप्र । हठ तजि घाटि लेऊ अशु चिप्र ॥
भाइम सहित कहे इमि भूप । किए प्रसंशा सुमन अनूप ॥ फिरि इमि कहे व्यास समुजाय ॥ मोहि
दए तुम भूमि सवाय ॥ सो इम तुन्है देत तुम लेऊ । निष्काय भूरि दक्षिणा देऊ ॥ तब गृपसों सुनि
कहे सुबैन ॥ लेऊ देऊ कहुं समै हेन ॥ व्यास कहत सो करो सप्रेम । गुर अनुयायन दायक सेम ॥
यह सुनि धर्म भूप गहि पाव । भाइमसों करि सभमत भाव ॥ * ॥ दोहा ॥ * * * * *

अ० मे० तेहि प्रकार सब द्विजन कहँ दिए रतन धन भूरि । सब मंडप रिखिजन कहँ दीन्हें आनद पुरि ॥
 प० सब जनको परितोष करि करि अवभृथ असनान । सबिधि नृपनको रचि सभा बैठो शक समान ॥
 गज मणि हथ भूषण बसन दै दै नृपनसप्रेम । धार्मभूप कीन्हें बिदा सबिधि पालि व्रत नेम ॥
 कृष्ण राम आदिकन कहँ समुद यथाविधि पूजाबिदा कियो क्षितिपाल मणि उचित वारताकूजि ॥
 बभ्रुवाहनै करि बिदा सानद धर्मानरेष ॥ बसुवरषत सब जनन पहुँ कीन्हें नगरप्रवेश ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वैशम्पायनसँ इमि सुनिकै । बोले जनमेजयनृप गुणिकै ॥ मखमै अचरज होऊ निरेखे । कहौ
 तौन ममहित अवरखे ॥ यह सुनि वैशम्पायन बोले । अचरज लाखे रहे सो खोले ॥ मख पूरण
 सब भो तेहि यलमै । नकुल एक आयो तेहि पलमै ॥ सो अति घोर शब्द तहँ करिकै । नर सम
 बोलि कह्यो पण धरिकै ॥ नहि यह यज्ञ भयो तेहि विधिको । पूर्व लाखे हम जो अति सधिको ।
 यह सुनि विप्र नकुलसँ भाषे । कहौ कौन मख तुम लखि राखे ॥ यह सुनि नकुल कह्यो सति
 बानी । कुरुक्षेत्र मै हो द्विज ज्ञानी ॥ तिय सुत पुत्र बधू मन भावंन । रही तासु तप रचि उप
 जावन ॥ अन्न खेतसो बीन ले आवत । सो भोजनकरि कल बितावन ॥ अति दुरभिक्ष भयो तहँ
 सुनिथै । तब द्विज अति पीडित भो गुणिथै ॥ षट व्रत करि कहु जब लै आयो । तेहिदिन बीत
 त सिद्ध करायो ॥ मो करि चारि भाग सब लीन्हें । विधिवत बलिबैशादिक कीन्हें ॥ इतनेमै द्विज
 एक पुकारत । आयो महा क्षुधित छै आरत ॥ सो सुनि बृह विप्र मुद गहिकै । ल्यायो कुटीमध्य
 हित कहिकै ॥ अर्ध पाय दे विधिवत पूज्यो । आजु कृतार्थ भयो इमि कूज्यो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आदर करि आनद सहित देत भयो निजभाग । तप्त भयो नहि विप्र वह गहे असन अनुराग ॥
 बृहब्राह्मणी भाग निज तब दीन्हें हरषाय । तप्त भयो नहि विप्र वह क्रमसँ सोज खाय ॥
 देत भयो निज भाग तब पुत्र विप्रको दत्त । तप्त भयो नहि क्षुधित द्विज सोज खाय प्रतत्त ॥
 देत भई तब भाग निज पुत्र बधू परवीन । सो भोजन करि विप्र वह तप्त भयो छै पीन ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

भयो तप्त इमि बोख्यो विप्र । नभते कुसुम भ्रगे तहँ क्षिप्र ॥ धन्य धन्य द्विज सह परिवार ।
 कहत भए इमि सुमन उदार । सुमन कहे तेहि द्विजसो तत्र सानद बलो शकसुर थत्र ॥
 असो समै क्षुधित द्विज ताहि । तृप्त कियो तुम मुधरम चाहि ॥ षटदिनको भूखे तुम सर्व । पालन
 कीन्हें धर्म अखर्व ॥ ताते भो यह पुण्य अमेय । सब पुण्यनते दायक श्रेय ॥ सुनु द्विज समै
 समैको दान । हेति कोटिगुण पात्र प्रमान ॥ यथाशक्ति जो देत सुदान । शत सहस्र कै जल
 र बिधान ॥ लक्षत तुल्य फलते लक्षिकाल । हेत पुण्यकी सूक्ष्म चान्द ॥ लेह देव नृप दीन्होवारि ॥

ताते लहे स्वर्ग मुदधारि ॥ नृग नृप दीन्हे लाखन गाय । एक विपरजय कियो अचाय ॥ ताते अ० मे०
 परो नरकमे जाय । सुख दुख दायक न्याय अन्याय ॥ शिवि नृप दै निज मासु सप्रेम । उत्तम ५०
 लोक लहे लहि सेम ॥ तिमि तुम किए अनूपम कर्म । ताते लहे अपूरव धर्म ॥ चढो
 विमान सहित परिवार । स्वर्गचलो लहि शुचि मतिचार ॥ यह सुनि द्विज विमानमधि पैठि । तिथ
 सुत सुगपतिनो सह बैठि ॥ स्वर्ग गए लहि मोद महान । हो जैसे वह यज्ञ विधान ॥ सुनो
 तहाँ हम लोटे जाय । भयो हेम सम आधो काय ॥ अब बज्रविधि लोटे इत आय । नेकु न
 बदली रङ्गलाखाय ॥ ताते साफ कहत सुनिलेऊ । नहि ओहि यज्ञ सरिस मख एऊ ॥ इमि कहि
 नकुल गयो विलिमाहँ । यह आचरज लखे नरनाहँ ॥ यह सुनिकै जनमेजय भूप । फेरि करतभे
 प्रश्न अनूप ॥ नृपति युधिष्ठिर आनद पूरि । मखकरि दए दक्षिणा भूरि ॥ श्रीकृक जाको व्यास
 मुनोय । करता आसु धर्म अधनीय ॥ नकुल भयो निन्दित मख तौन । कहे विप्र यह कारण
 कौन ॥ यह सुनि वैशम्पायन मोदि । एहि विधि बोले महा विनोदि ॥ सुनो भूप इतिहास
 पुरान । पूर्व यज्ञ कीन्हे मघधान ॥ तहँ पशु बधको समै निहारि । दया गहे सब विप्र बिचारि ॥
 कहे इन्द्रसो करि अनुमान । रूचतन पशु बध करव विधान ॥ हिंसा सरिस न और अधर्मा । विनु
 हिंसाको यज्ञ सुकर्म ॥ ताते शाल्व रीति अनुमानि । होमो बीज धर्मविधि जानि ॥ यह विधि
 रूची न इन्द्रहि भूप । तेहि घरभयो विवाद अनूपा । करि विवाद तवते मति भौन । बसु भूपति सों
 बूझे तौन ॥ यह सुनि बसु बोलो गुणि आभा होमो द्रव्य होइजो प्राप्त ॥ यह सुनि बोले विप्रबिधिवा
 बसु उत्तर दीन्हे अपविवा । नहि हिंसा उत्तम पद देत । हिंसा यज्ञ कामको हेत ॥ जेहि विधि धन
 उपराजित होत । यज्ञ किए फल तथा तनोत ॥ लोकै एक अपटुको मंत्र । उचित न करिबो कर्म
 स्वतंत्र ॥ विश्वामित्र जनक गुणि सर्वा कीन्हे धार्मिक कर्म अर्था ॥ द्वादश बार्धिक यज्ञ महान । रहे
 अगस्ति करत सविधान ॥ तहँ नव बरिस न बरषो बारि । तब सब ब्राह्मण कहे बिचारि ॥ अन्न देत
 कुम्भज जयमानानहि जल बरषतहै जलदान ॥ जाँ न अन्न होइहि उतपन्न । तौ होइहि केहि भँति
 प्रपन्न ॥ अस जन लखिहँ पीडा भूरि । तजौ यज्ञ यह दोष बिसूरि ॥ कुम्भज यह सुनिकै मन लाय ॥
 सब विप्रणसों कहे बुझाय ॥ तजौ शोच हम कहत प्रयोग । जाँ नहि सधो अन्न उत योग ॥ तौ
 हम करव मानसिक यज्ञ । कै मख यात्रा करव कृतज्ञ ॥ मन दै सुनो कहत यह और । हम
 चाहँ सो करै सँभार ॥ अब चाहँ हम करै सुवृष्टि । उतपति करै चारि विधि सष्टि ॥ सब जगमै
 जो अन्न धन यत्र । अब चाहँ तब आनै अन्न ॥ सुनि अगस्तिके जैसे वैन । किए प्रसशा विप्र सचैन ॥
 सुनि ए वैन जानि परभाव । बरषे बारि मेघ गहि चाव ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सहित बृहस्पति-इन्द्र तहँ आए रुचि उपजाय । मख समाप्त करि मुनि द्विजम विदाकिए हरषाय ॥

यह सुनि जननेत्रय नृपति खिरि इति कहे विचारामकुल रूप यह को रक्षा कहे तौन निरपारि॥
 ॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥ * ॥

वैशम्पायन मुनि यह सुनि कै । बोले जननेत्रयसौ मुनिके ॥ कधि यमदधि आइपण भरिके
 राखे दूध पाष मधि करि कै ॥ तेहि घर जोष संतन बखि आवे । मुनिके देखत दूध गिराये॥
 सो कखि सुमुनि जोष नहि कोन्हे । जोष कहे इति विसमय कोन्हे ॥ मुनिवर आजु मोहि
 तुम जीतेआज्ञा करऊ होऊ जो पीये॥तव यमदधि कहे सुनु भारीमोहि मोहि नहि बैर नितार्द ॥
 यमदहे पितृ कर्मके आइक । तामधि विप्र किए तुम नाइक ॥ इन न नहे ज्ञत दण्ड उहाइ । अब
 तुम मम पितरन पई जाइ ॥ वे जो कहे करो सो सादर । यह सुनि जोष भयो तति कादर ॥ तासु
 पितर दिन भयो डेराने । तेहि कखि पितर कहे इति अने ॥ तहदि एकरे अकुलको कारण ।
 ताते हो अब नकुल अनारथा॥यह सुनि सो अति बिनती कोन्हे । तब तिम श्राप मात्र कडि दीन्हे॥
 कर्म भूपके नखने जे हो । तब तुम मुक्त श्रापसो न्हे हो ॥ सो यह जोष नकुल भयुधारी । आवे
 तह अब इति विचारो ॥ सो यह वेति आइ तेहि बखी । हुंठे श्रापसो ताही पखने ॥ * * *
 ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यदि प्रकार भूपाल मधि यथी युधिष्ठिर भूप । अन्वमेध मल करत जे खदि प्रमु कया अनूप ॥
 कृष्णिकीकाशीराजमहाराजाधिराजनीउदितनारायणसाक्षात्ताभिमानिना श्रीवन्दीजनकाभी
 वासि मोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचितेसाधारणमहाभारतदर्पणे अन्वमेध
 पत्रे समाप्तिर्नाम अतुर्बोद्धायः ॥ * ॥ इति अन्वमेधपत्रे समाप्तः ॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ महाभारतदर्पणः ॥

॥ आश्रमवासिकपर्व ॥

॥ * ॥ देहा ॥ * ॥

ममस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥
जोहि रघुवरप्रभुके चरित बज्र शतकोटि अमन्दिताहि सुमिरि भारत रचत भाषा बिरचिसुखन्दि ॥
पारथेके स्वारथ भए सारथि परमअनूप । ते सारथ रचि देहि यह भारत भाषारूप ॥
आसु कृपाते सधत है शुभआश्रम विधि सर्व । ताहि सुमिरि भाषा रचत आश्रम वासिक पर्व ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुमिरि उखलनि अल उदधिउलङ्घन समयकी । भारतसमुद प्रतत्त भाषा करिचाहत तस्यै ॥
॥ * ॥ जयकरीखन्दि ॥ * ॥

मुनि तब मम सु पितामह पूर्व । जय लहि पाय राज्य अतिगूर्व ॥ किमि धृतराष्ट्रभूपको तोष ।
कोन्हो गोपि पुत्रवधदोष ॥ कोहिबिधि दम्पति बृद्धमहीप । रहे कितेदिन कज कुलदीप ॥
यह मुनि व्याससिध्द मतिमान । कहत भए इमि सृष्टित विधान ॥ सुनो भूप लहि भूमिअग्नेश ।
रहित सुबन्धुन धर्मानरेश ॥ बृद्ध भूपति हि बूझि सरोति । पालत प्रजा समस्त सनोति ॥ रहत सु
सुरूपा करत सप्रेम । निति उठि बन्दतं चरण सनेम ॥ धर्मानृपतिको शासन पाय । संजय बिदुर
जुजुसु सचाय ॥ सेवत रहत नृपहि सबयामाशासन लहत करत सो आम ॥ करि तहँ बास व्यास
तपधाम । रहत सुनावत कथा ललाम ॥ मन्त्री शुमट सखा समुदाय । रहत पाणि जोरे ठिगजाय ॥
तिमि कुन्ती अरु दुपदकुमारि । आदि शुभद्रा सिगरो नारि ॥ सेवत गान्धारि हि सबकाल । रहि
बिनीत कहि बचन रसाल ॥ भूमि रत्न अनधनको दान । कियो चहो धृतराष्ट्र सुजात ॥ सो विधि
बत करवायो धर्म । औरसपुत्र सरिस करि कर्म ॥ भूषण बसन अशन बेवहारा अरु जो शासनको
अधिकार ॥ रहो पूर्ववत तौन समस्त । अरु ताते कहु और प्रसस्त ॥ जाते पुत्रमरणको शोक ।
भूलि गए दम्पति मुद ओक ॥ एहिबिधि भूपचन्द्र दशवर्ष । दम्पति किए बितीत सहर्ष ॥ सब
दिन सब पाण्डव सुखदाय । सेवें भूपहि दोष मुलाय ॥ भीम भूपको शासन मानि । सेवत बृद्ध हि
आनद आनि ॥ पै उनको दुरमंच प्रभावाअरु जो कुटिलपनेको छावा ॥ सो सब समुजि समाज अन
खात । आदर करत हिए पछितात ॥ एक दिवस पूरव बिरतान्त । समुझि भीम अरिसयन
छातान्त ॥ बाज्र शब्द करि वीर अखर्व । कहत भयो इमि वचन समर्व ॥ परिघोपम ममभुजा बशाल

भा० अ०
भा० प०

अन्यभूपके सुतके काल ॥ चन्दन चरचित पूजन योग ॥ है प्रसिद्ध जानत सर्वलोग ॥ सभासदनसो
एहि विधि बैन । दीरघ गरे कह्यौ बलयेन ॥ तौन सुने नपदम्पति वृद्ध ॥ किए हिएमै शोक
प्रवृद्ध ॥ धर्म नकुल पारथ सहदेव । कुन्तादिक नहि जाने भेव ॥ गहि निरवेद बृद्ध क्षितिपाल ।
कहे हितनसौ बचन रसाल ॥ है हम सब अनरथको मूल । मम कुमंच मम हियको शूल ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दुष्ट मूढदुरयोधनहि राज्य दयो हम जौन । सकल जगतको नाशको दुसतर कारण तौन ॥
द्रीण व्यास भोषम विदुर रूप केशवके बैन । नहि मान्यौ हम मोहवश कत न होहि गतचैन ॥
धर्मशील पालक प्रजा सुबुधि युधिष्ठिर ताहि । एए न महि पैतामही जगत सराहत ताहि ॥
तेहि कुमंचको फल लह्यौ औसो दुसह दराज । नृपतियुधिष्ठिर बाहुबल लह्यौ अनूपम राजा ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

धर्म भूपकी शासन रहसौं । सेवत मोहि सकलजन सुखसौं ॥ इमि कहि बृद्धभूप अनुमानी
कहे धर्मभूपतिसौं बानी ॥ धर्मशील तुम कुरुकुलनायक । हो सर्वज्ञ सकलविधि लायक ॥
तुम मन दोषनको करि गोपन । संवें सकलभातिषौं चोपन ॥ तुव प्रसाद हम कीहे नीके । दान
आइ बिधि भावत जोके ॥ सर्वधर्म शीलक तुम राजा । तुम्है सराहत सुमनि समाजा ॥ हम
गान्धारी संमत करि कै । तुमसौं कहत उचित हिय धरि कै ॥ तुव शासनको लाभ उमाहत । हम
बनवास कियो अब चाहत ॥ वरकाल वसन अनूपम धारी । जाव विपिनि हम सह गान्धारी ॥
दौ अनुशासन आश्रिष लेह ॥ मोहि बिदा करि आनद देह ॥ यह मम कुलकी राति सदांहीं ।
सुताहै राज्य दौ कानन जाहीं ॥ एहि बिधि बृद्धनृपतिसौं शुनि कौनृपति युधिष्ठिर बोले गुणि कै ॥
तुम बनवसौ रुकल दुख सहि कै । तौ धिक मोहि राज्य सुख लहि कै ॥ भोगराज्य मख दान
महानोतुम विनु मोहि व्यर्थ सब मानो ॥ तुम मम पिता वन्धु गुरु माता । हम तो सुवन आपु महि
जाता ॥ लहे आप करि अपयश पोखे । अब फिर अयश देन तुम दखे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जौ बन चलिवो अवसि तौ देऊ जुजुम्हहि राजाबिपिनि चलब हम आपु संग सहित सुवन्धु समाजा ॥
यह सुनि कै धृतराष्ट्रनृप कहे सुनो क्षितिपाल । उचित मोहि बनवास अब देखि बयक्रम काल ॥
सकलभाति वज्रदिबस तुम किए सुसुखा तात । अब आज्ञा बनवासको देव न अनुचित बात ॥
बृद्ध हमहि बन उचित अब यह मम कुलकी रीगिपाणि जोरि इमि भाषि नृप मोहित भए सप्रीति ॥

॥ * ॥ रोलाएन्द्र ॥ * ॥

धमनूप अति भए खेदित दगा यह लखि तासु । बारिसौं मुख हृदय ताको भए धोवत आशु ॥
विदुर सञ्जय आदि सिगरे किए रोदन तत्र । आदि कुन्ती युवति रोदन परे भूपति यत्र ॥ चेति

एतन्मै बृह उठिकै नृपति अहू लगाय । करे गदगद गरो फिरि इमि कह्यो प्रेम बढाय ॥ कौह सों भरि हियो मेरो भयो पूरित मोह । तदपि तपको भावना नहि तजति मेरो मोह ॥ सुनो ताते हियो दूठ करि देऊ शासन मोहि । जाव हम बन नीति गुणि नहि नेकु अनुचित तोहि ॥ महा रोदन शब्द तेहिथर भयो पूरित भूप । व्यासमुनि तब धर्मनृपसों कहे बचन अनूप ॥ कहत कुरुकुलदीप नृपसों करो संग्रथ त्यागि । यह अवस्था पाय तपविधि उचित बनमग लागि ॥ शास्त्रविधि यह धृष्टनृप सब किए तपवन बास । भावि इमि निज आश्रम गे गुप्त ह्ये मुनिव्यास ॥ धर्मनृप सुनि घरिके गुणि इमि कहत भो मति भौन । औसि सो करतव्य आज्ञा गुरजननकी जौन ॥ करो भोजन आज्ञा अब इतै मम कह्यो प्रभु मानि । गह्यो आश्रमवास तब जो किए पर अनुमानि ॥ बचन यह धृतराष्ट्र नृप सुनि करत भे खीकार । गए दम्पति गेहनिज सह बिदुर सब परिवार ॥ तहाँ करि सब व्यत्य विप्रन पूजि विधि दरशाय । किए भोजन बृह दम्पति सरस रुचि उपजाय ॥ भोजनोत्तर बृह भूपति सहित सरस सुप्रेम । कहे नृपसों राज्य करियो सहित नीति सुनेम ॥ राजधर्म सुकर्म जो सब कहे भोषम तात । सदा तेहि अनुसार पालेऊ प्रजा भट अवदात ॥ प्रजा पीडित होइ नहि जेहि सैन होइ न क्षीन ॥ लहे छिद्र न शत्रु जाते रहऊ तिमि परवीन ॥ राज्यके सब अङ्ग रक्षत रहेऊ सहित विधान । राखियो शुचि सुहृद मंत्री परम जो मति मान ॥ अंब विनु मति किहेऊ कारज किहेऊ करि अनुमानामत्रको नहि भेद पावै लखन कोऊ आन ॥ सदा तोषत रहेऊ सुभटन करि सु दान सुमान । सैनपति अरुयूथपनकह किहेऊ मित्र समान ॥ महा चतुर चलाक चारण रहेऊ राखे ताताखबर सिंगरे देशकी सुनि किहेऊ जतन भिभात ॥ सरस सुकृती सुहृद राखेऊ सहित चाकीदार । सूप पाणी पानदायक किहेऊ सुहित सप्यार ॥ सदा आमद खर्च अपनेा रहेऊ सुनत सनेम । अश्व गजके देखिबे मै रहेऊ राखे प्रेम ॥ रहेऊ रक्षत सदा सयल जातिकुलको धर्म । रहेऊ पूरण करत सबमै सबिधि सकल सुकर्म ॥ नित्य करि ओ सुबुधि अरु कबिकोविदनको सङ्ग । नित्य सुनि ओ शास्त्र अरु निति रहेऊ गुणत सुढङ्ग ॥ मित्र अरि अरि मित्र अरु अरि शत्रुको अनुमान । करत रहियो युगतिसों जेहि होइ निति कल्याण ॥ युवा युवति शकार आदिक विषयके आधीन होइओ मति कबऊ ढिग करि पुरुष मति गतिहीन ॥ सदा डर परलोककी यहि लोककी अति लाज । रहेऊ राखे करत रहि यो दान पुण्य सु काज ॥ नृपतिसों नृप नीति इमि कहि नृपति बाहेर आय । दिए विधिवत दान अगनित द्विजनकहँ बलवाय ॥ खबर यह सुनि तहाँ आये अथिन पुरजन सर्व । जोरि युगकर भूष तिनसों कहे बचन अखर्भ ॥ सुनो मम मनपुत्रके दुरमंचसों यहि देश भयो अनर्थ महा सो नहि कहत बनत असेश ॥ नृप युधिष्ठिर सहित बन्धुन सबिधिसे ओ मोहि । सकल विधि परसन्न हम गुण धर्म इनके जोहि ॥ सुनो अब मम हिय प्रगटित भयो अति निरबेद । जान चाहत विपिन सह गाथा राजा एहि भेद ॥ सहित बन्धुन धर्मगुपति नीति सागर गूर्वा । सबिधि सबको करि हि पावन अशत पूर्वत पूर्व ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

आ०अ०
वा०प०

आ०श०
बा०प०

॥ * ॐ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॐ * ॥

ताते तुम सब मुदित ह्यै बिदा करा अब मोहि । यह सुनि सबजन बिकसै ह्यै रोए अनरघ जोहि ॥
इतनेमै तह धीरधरि ब्राह्मण एक सुजान । कहत भयो धृतराष्ट्रसौं सुनो भूप मतिमान ॥
नहि काहूकी कुमतिसौं भयो युद्ध जननाश । दैव चहत जो यतमसौं ताको करत प्रकाश ॥
सबिधि पालि है प्रजनकहँ पांडव नहि सदैह । भूप जाऊ तुम बिपिनिकह कौ म कहै तजि नेह ॥
इतनेमै संध्या निरखि सबको बिदा महोप । करि गान्धारोके सदन जात भयो कुरु कुलदीप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तहँ सो रजनि बिताय कहे विदुरसौं बृहन्नृप । धर्मनृपतिपहँ जाय कहे सदेश अदेश तजि ॥
जाव बिपनि हम तात पाय कार्तिकी पुर्णिमा । किओ चहत अबदात एहि अन्तरमै आइमख ॥
भीष्म द्रोण वाल्हीक दुरयोधन आदिकनको । आइ करव लखि लीक हिता सुहित भूरिधन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि विदुर मोदसों बाए । सादर धर्म नृपतिपहँ आए ॥ बिधिवत समाचार सब
भाखे । सो सुनि भीमसेन अति माखे ॥ कहे न एहिहित देव उन्है धन । करव आइ हम यथा
रुचि हि मन ॥ दुर्योधन आदिक सुत उनके । हे नहि आइ कर्मके गुणके ॥ अब इमि बोसत
रिजुता पागे । यह मति कहां गईही आगे ॥ यह सुनि अर्जुन अनुचित जानी ॥ कहे कहत कत अति
कटु बानी ॥ बृहपिताके जेठे भाई । निज आश्रित हतपुत्र सहार्ई ॥ दम्पति बन जैवे कहँदीचित ।
करिवो उचित तासुत सब ईशित ॥ देव नदेवन तुष आधोना । उचित करि हि चितिनाथ
प्रवीना ॥ यह सुनि धर्म भूप सुख पाए । भीमसेन रऊ मौन सुनाए ॥ तब इमि कहे विदुरसौं
राजा । तासु सकल मम राज्य समाजा ॥ हय गज रजत बसन मणि जेतो । मागै भेजि देहि हम
तेतो ॥ बनदुख समुक्ति भीम इमि माख्यो । ताते इबिधि बचन कटु भाख्यो ॥ सो यह बचन हिए
मति अनै । मम धन प्राण आपनो जानै ॥ तब चलि विदुर भूपपहँ आए ॥ सबिधि सकल बिरतान्त
सुनाए ॥ सो सुनि भूपति आनद लीन्हे । सबिधि आइकोरमन कीन्हे ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥
तहँ युधिष्ठिरनृपतिके भूयनके समुदाय । हाजिर रहि सब सौंजसह शासन लखे सचाय ॥
शत सहस्र अरु अयुतधन जाहि दिआए जौन । हय गज मणि चिति बसन सब दिए ताहि ते तौन ॥
पृथक पृथक सब जननको करि करि आइ सप्रोति ॥ भूरि दक्षिणा देत भे नृपधृतराष्ट्र सनीति ॥
यथायोग सब बरणकहँ भोजन दीन्हे भूरि । एहि प्रकार दशदिन किए आइ यज्ञ मुद पूरि ॥

॥ * ॥ जयकरीहन्द ॥ * ॥

तब भूपति सो निशा बितायाभार कार्तिकी पूनो पाय ॥ प्रातकृत्य करि सतिथ सचाय ॥ प्रेम भरे
पाण्डवन बलवाय ॥ करि सुबारता दम्पति भूप । गहै बिपिनकी गैस अनूप ॥ पठसों बाधे चष

आ०
बा०

अभिराम । गान्धारी अति पतिव्रत वाम्ना । कुन्तीके काधे भरपाणि । धरे चली विधि गति अनुमानि ॥
गान्धारीके काधे हाय । धरि भो चलत वृद्ध चित्तिनाथ ॥ कीन्हे अपि होय सुखदाम । आगे चलो
विप्र मतिमान ॥ रुदन करतं कुरुकुलकी नारि । सङ्ग चली अति दुख विसतारि ॥ रोषत पाण्डव
करत प्रलाप । चले सङ्ग अति धरे उताप ॥ व्याकुल रोषत पुरजन सर्व । रुदत चले दुख गहे
अखर्व । सुनो भूप तेहि सखकी मत्त । दुसख दया कहु कही न प्रात ॥ अलि कहु दूरि भूप सुसु
भाय । फेरत भए युवति समुदाय ॥ फिरि कुण्ठय पुरजन कहँ फेरि । चले भूप दुसतर दुख मेरि ॥
धर्म भीम अर्जुन दुख पुरि ॥ मन्त्री सुवन गहे दुख मुरि ॥ सङ्गय विदुर युपुरसु अचैनधैम्य आदि
वञ्ज दिज गतिचैन ॥ रोषत गळे विकशता हाय । कहत प्रसापित बचन अवाय ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव भूपति पाण्डवम कहँ चञ्जल भौति समुभ्ताय । आशिस दे कीन्हे विदा गहि गहि अङ्ग सनाय ॥
धर्म भूप अह भीम तव मोहनए वञ्ज वैव । विज जमनीसों कहत भे व्याकुल भए अचैन ॥
सो सुनि कुन्ती रुदन करि सविधित्तै समुभ्ताय । गहि पलटो नृप सँग चली नेह आखनिहुटाय ॥
तव दम्पति वञ्ज विधि वाहे तासु किरमके हेत । तपहँ कुन्ती गहि फिरि गर्द विपिनि गत चेत ॥
रुदत प्रदक्षिण तिन्हादि करि भूपति आण गेहा । विपिनि गए सङ्गय विदुर भूप सगँ भरे सनेह ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राम कृष्ण सिध राम रठत भूप अति प्रेव सों । उत्तर निर्गि अभिराम सुर सरितठ चलि जातभे ॥
सखिओकाशीराजसहाराजअभिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञानिकामिना श्रीबन्दीजनकाश्री
वासिनेरकुलमाधकवीश्वराक्षजेन गोपीनाथेन कर्मिना विरचितेभाषायां महाभारतदर्पणे आश्रम
वासिकपर्वणि पृथराष्ट्रस्याश्रमवासगननोत्पन्न प्रबनोध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरसरि तठ धूमसङ्गम जातिकामिनकी भोद । अशिहोच विधि करि निवसि रजनि विताए धोर ॥
॥ * ॥ जयकारीछन्द ॥ * ॥

भोर विदुरकी अश्रम धैव । कीन्हे तहां निवास सनाय ॥ कुन्ती सह दम्पति मतिमान ।
कीन्हे सुरसरिने अश्रम ॥ कीन्हे उचित कर्म अनुमानि । विप्रस सहित वेदविधि जानि ॥
आरु तहां मुनिगण सङ्ग ॥ भए सुवापत कथा प्रसङ्ग ॥ दनि मुनि सगँ सो दिवस विताय ।
संख्या कथ्य फिरि मनसाय ॥ अलि उपकलें हासि कुमरोनि । भूप वितायत भे सो दैनि ॥ प्रात
कथ्य कहि विप्रस वन्दि । कुरुसेव कहँ गए अगन्दि ॥ तहां मिलो राजर्षि अनूप । कोकथ अथिप
भूप गङ्गाभूप ॥ सो पुचहि दे राज्य खलाम । हँ वनवास करत तपधास ॥ भिक्षि तासा नृप ताके

तेहि देश ॥ नगर रक्षण हेत राखि युयुत्सु कहँ रणधीर । कष्ट दिन कलि उत्तरि बसुना गय ॥ १ ॥
 तीर ॥ दूरते कलि आसरस सब त्याग वाहन सर्व । मुनिम बूझत गए नृपतिव भरे शोष अहर्ष ॥
 बारि पूरण कलत्र लीन्हे तिमै आवत देखि ॥ दैरि पाण्डव भरे पायम महा दुखसौं भोसि ॥ सादके
 सहदेव कहँ उर तजति आसुंधार । कही कुन्ती पच आए सुनत भूप उदार ॥ भयो सबकहँ यह
 लावत करत रोद्रम भूरि । यह सारँ सुतव कहँ गाभारजा दुख पूरि ॥ कलत्र तिनके लए निज
 कर सकल पांडव वच । बधुनसौं पुरजमसौं मिलि गए आश्रम वच ॥ आगमन मुनि पांडवनको
 ऋषिनके समुदाय । कहे संजै देऊ सबके नाम भेद बताय ॥ बचन सो सुनि मुनिमसो रनि मघा
 कहत सुभेवाचर्म ए ए भीम अरजम नकुल ए सहदेवा । द्रोपदी बसुदेव आए उत्तरा एहि रीति ।
 पृथक पृथक बताय दोन्हे बहे अतिसे प्रीति ॥ देखि मुनिवर गए निज निज आसरग सुखदान ।
 बृह नृप तब भयो बूझत कुशल सचित विधान ॥ भाषि सबविधि कुशल निज नृपधर्म इत उत
 जोहि । कहे कित मो बिदुर महि लहि परतहै इत मोहि ॥ कहे नृप बसि बिदुर बमसै चरत तप
 अतिघोर । मौन रहि करि वायु भक्षण भरो भूरि अघोर ॥ मुनिम कहँ लखि परत कषरुं भ्रमन
 रहि दिगवाच । बसो मोकहँ भूलि आवत कबजँ नहि मम पास ॥ इतेने नृपधर्म कहँ लखि परो
 बिदुर महान । चलो बमसै जात धूलिन मन द्विरद समान ॥ देखि नृप उठि दैरि कौ इनि चलो
 टेरत ताहि । इन युधिष्ठिर बिदुर धिरिके देऊ दरशन चाहि ॥ भूपके सुनि बचन सत्ता महन
 बमसै जाय । एष सौं लखि लरो रहि मो लखत एक टक साथ ॥ जाप नृप भो लरो आने गहे
 प्रीति अघोरि । मौन रहि सो रघो अनंभिव चखनसौं चख जोरि ॥ योग बलसौं मिलै दीन्हे
 प्राणने निज प्राण । इन्द्रियनसो सकल इन्दी दयो मिलाय सुजान ॥ बुद्धि मन चित वायु सिधरे
 मिलैकै परतीति । बिदुर यहि त्रिभि धर्म नृपसै होत भो तहँ लीन ॥ धर्मनृप तब बिदुरको तहँ
 लखि अनेमन जात । तेज गुरु बल अधिक निजने लखत भो अबदात ॥ व्यास ताकह रहै योगी
 कहे सो अनुग्रहि । योग विधि करि भयो मोमह लीन असौं जानि ॥ बहेतव नृप दग्ध करिवो
 ताहु देह अमूय । गवसवासी भई तहँ नतिकरेो असौं भूप ॥ परम योगो किएहँ यह ज्ञान दग्ध
 शरीर । बचन यह सुनि पलाटि आयो भूप सुसति मँभीर ॥ बिदुरकी सो दरश सबसौं कहे भूपति
 जाया सुनत सो संका रहेछपि से महादुखसौं जाय ॥ बृह नृप तब देनमें फल मूल भोजन औम ।
 असन सो करि भूमि गय्या किए सब अनिमोन ॥ कथा बार्ता करत सबने तैनि रजनि धिताय ।
 काल कतिके बृह नृपकी स्तरस आशा पाय ॥ लखन साथे मुनिजनको आसरम रमणीय ।
 अविनि बची सुग मर्षाण सो परम जो कननीय ॥ बन्दि विग्रह देत बाली युवा अजिन अनेक ।
 अरु अरु सु कलत्रको मुनि अनुग्रहित विवेक ॥ इविनि मिलि सब मुनिमसौं धिरि भूपके
 दिन आश ॥ बन्दि विग्रहत भए पैदा करम आशा पाय ॥ सुमन सुरपति कहित जैसे लखत
 सुर गुर दत्त । पांडवन सह भूप तैसे भयो लखत प्रनत्त ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

आ. ११
६१५९

आत्म
विक

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इतनेने सिव्यन सहित आए आसनवीस । आसनस्य कीन्हे सविधि पूजि ताहि अनीस ॥
 आसनस्य नै मुनिन सह आस मुनीस महान । तप मन सहचर ज्ञानकी बूझे कुशल विधान ॥
 कुशल प्रश्न करि आसमुनि कहत भए समुझायो जमराजहि आंड्य छवि भाष दयो अनखाया ॥
 दासी सुत तू हो अर्जुन जेवो विदुर तेहि देत । माहनि मूय धर्मने निखो सुज्ञान निकेत ॥
 धर्म जौन सो विदुरहि विदुर जौन सो धर्म । नायु बसि विधि अथिनि भव सम ए निरमल कर्म ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

इतनेने तहें मुनिवर आए । नारद परबत देबल गाए ॥ अब निजबसु आमद होए । धिक्सेन
 मुनिव सुनि भाए ॥ बृहभूषको आज्ञा पाए । पूजि धर्म भूपति बैठाए ॥ विदितहा मुनिव तप
 रिधिके । कथा प्रसन्न कहे बऊविधिके ॥ तब मुनि आस कथासो भरिके । श्रोतत भए दवा
 हिय धरिके ॥ सुत धृतराज मुने कहि दीक्षित । हम प्रसन्न कहे जो दीक्षित ॥ देखो सुनो लक्षे
 जो बाहे । सो धन रहि न दुख अबबाहे ॥ यह सुनि भूप जोरि हिय राखे । प्राणि जेरि मुनिवर
 सो बाहे ॥ बन सुत भयो कपट अति नगने । ताते प्रली होतयो रक्षे ॥ मुन पउत्र सखा सन
 वन्धी । बन्धु पितामह जे अनवन्धी ॥ तिन्है सवुनि मनधीर न धारे । से दुख अथिनि सरिस हि
 य जादे ॥ इनि कहि जौन रणे अनधारी । तब इनि कहत भई गाथारी ॥ नाय भूप हम अब सव
 कारी । प्रियजनके बध वरन दुखारी ॥ सहि न सके दुख हिय करारि । हम सब तिनकाई देखन
 चाह ॥ यह सुनि आस मुनीस सु ज्ञानी । कुन्ती सो बोले प्रियवानी ॥ कुन्ती सोर परम प्रिय
 मैरि । सो अब नाय बरह मुनि जोरि ॥ खा सुनि कुन्ती आनन्द अतिके । विभितत प्रतीत करन
 की कहिके । इनि कहि कहत आई अति प्रीति । नै नुर सखी नताउ सखे पितासो रहि लखे ।
 जननि सुख जेवो । यह दुख हिय किते दिन पोखे ॥ दरमन तहें देऊ मुनि नानक ॥ मुन सरपञ्च
 सर्व विधि सावध ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

तब मुनि आस पारि नधि धरिके । नब अर्थ करि रथिजन धरिके ॥ अथीये आनन्दव वत
 धरि । भो जल मध्य मद्र अति भारी ॥ भूषतिनहें सुरसरि सो धिकरे । भावन अथन सहित मूय
 विन्दे ॥ आको जेवो रूप सो हावण । बाहन वेव रहे । नानाभाषण प्रीतिनि सट भए उकुलजा ॥
 कौचक सखा सुनिसेन सबाजा ॥ हुपर पिदाव कर कुर पाये । नै मुनि अतिन सहि सन जेवण

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

तब मुनि आस पारि नधि धरिके । नब अर्थ करि रथिजन धरिके ॥ अथीये आनन्दव वत
 धरि । भो जल मध्य मद्र अति भारी ॥ भूषतिनहें सुरसरि सो धिकरे । भावन अथन सहित मूय
 विन्दे ॥ आको जेवो रूप सो हावण । बाहन वेव रहे । नानाभाषण प्रीतिनि सट भए उकुलजा ॥
 कौचक सखा सुनिसेन सबाजा ॥ हुपर पिदाव कर कुर पाये । नै मुनि अतिन सहि सन जेवण

शकुनि जयद्रथ सलौ शिखण्डी । सोमदत्त बाल्हीक अदण्डी ॥ भूरिअवा शत्रु बृषसेना । धृष्ट व्याश्र
 युञ्ज केकय अगजेना ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु सुवीरा । लक्ष्मण इरावाण रणधीरा ॥ चेकितान हैडम
 अमाना । भट भगदत्त अलम्बुष जाना ॥ इन्द्रै आदि नृप सुभट घनेरे । गले रहे जे वीर वडरे ॥ वाण
 विनु विरोध ते सिंगरे आए । देखि परस्पर अति सुख पाए ॥ व्यास प्रसाद दिव्यचक्षु सहि
 कै । दम्पति बुद्ध भोद अति गहि कै ॥ सांदर पुत्र पउवन देखे । बन्धुन देखि सुदिन अब रेखे ॥ पांडव
 अति आनदसौ फेठे । उठि उठि पुत्रन सुहितन भेटे ॥ निज निज सुत पति पितहि निहारो । उठि
 उठि मिलत भई सब नारी ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
 नृप सो निशि सब कह भई अति आनदकी खानि। युवति पतिनसौ मिलि रहि महा उत्तारधमानि ॥
 एहि प्रकार मिलि परस्पर महा भोदसौ पूरि । नर नारी सबहि एको शोक करत भे दूरि ॥
 एहि प्रकार मिलि रहि तहां नृपसो निशा बिताय । सब सबहीसौ छै बिदा गए भोद दरशाय ॥
 जे आए जेहि लोकसौ ते तु गए तेहि लोक । तब सब तरुनिनसो कहे मुनि जलस्थ तपशोक ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जो चाहै पतिसङ्ग सो जलमधि धसि त्यागि तन। लहि पतिलोक अभङ्ग बिहरै पतिसङ्ग भोदभरि ॥
 ॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

यह मुनिकै पतिवरता नारी । लहि नृपकी आज्ञा हितचारी ॥ जलमधि सधि सधि कै तन तजि कौ
 जान भई पतिद्विग छवि सजि कै ॥ दिव्य विमानन चढि चढि भामिनि । निज निज पतिद्विग गई
 सु कामिनि ॥ जनमेजय भूपति यह सुबिकै । व्यास शिष्यसौ ब्रूभे गुणि कै ॥ सबको देह रहो इत
 माहि छै । सब यह देह लहे कित कहिअै ॥ जनमेजयके बचन अतोले । मुनि इमि वैसम्पायन बोले ॥
 होत न नाश कर्मको जालौ । नृप नहि देह नशति है तौलो ॥ जो लागि दूसर जनम न होई । तौ
 लागि बिलसति आकृति सोई ॥ तब जनमेजय मुनिसौ भाषे । हम निज पितु दरशन अभिलाषे ॥
 व्यास कृपा करि पितहि लखावै । तब हम निहचै गुणि मुद पावै ॥ तब मुनि व्यास भूपके चाहन ।
 किए परीक्षितको आवाहन ॥ निज बय रूप भूप तहँ आए । जनमेजय लखि आनद पाए ॥ बन्दि
 पिताके धरण सोहाए । नृप अबभृथ असनान कराए ॥ करि अबभृथ असनान सुखारे । नृपति
 परीक्षित स्वर्ग पधारे ॥ इतिहास सरचि जे मुनि है । ते लहि है जो लखिबो गुणि है ॥ वैसम्पायनकी
 यह बानी । मुनि बोले जनमेजय ज्ञानी ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * * * * *

पुत्र पउवन सखन लखि नृप धृतराष्ट्र अहीन । किए कहा सो अब कही व्यासशिष्य परबीन ॥
 वैसम्पायन मुनि कहे तब नृप आश्रम आय । परजन अरु सैनिकनवहँ बिदा किए समुजाय ॥
 पाण्डव निज इच्छिन सहित अरु सह सेनाशेष । बैठि लखे दिग नृपतिके मानो सुमन विशेष ॥

आःशु
वाःप०

॥ * ॥ जयकरोहन्द ॥ * ॥

तव मुनि व्यासदेव सुखदानि । कहे बृहन्नृपसौ अनुमानि ॥ नृप तुम सबविधि सरस सुजानानारद
दिसों मुने सुज्ञान ॥ अबमति गहौ शोकको लेस । तप ब्रत करि बितवो दिनशेस ॥ आधो पाण्डव
नृपति अनूप। एक मास बीतो सुनु भूप॥ विदा करौ अब सबिधि बुजासाकरै प्रजा पालनमट्ट जाय ॥
यह सुनि कै धृतराष्ट्र महीपाकहत भए सुनु कुरुकुल दीप ॥ इत तो आगमके परमाद। हम पाया
सबविधि अहसाद ॥ अब हास्तिनापुर जाऊ सप्रिती । करौ प्रजा पालन गहि नीति ॥ यह सुनि
बोले धर्मनरेश । भूप मोहि राखौ एहि देस ॥ भीम आदि मम बन्धु बियास । करि है जाय प्रजा
प्रति पाल ॥ तब गान्धारी कही सचैन । पुत्र कही मति खैसे बैन ॥ तुम कुरुकुलके नाथ महान ।
करौ प्रजापालन सबिधान ॥ मानि भूपको बचन सनेह । बन्धुन सहित जाऊ निजगेह ॥ यह सुनि
धर्मभूप दुख धारि । निज जननीसों कहे बिचारि ॥ मातु विसर्जत भूपति मोहि। हम गहि त्यागि शकत
बन जोहि ॥ बन्धु सखा सम्बन्धिन हीन । मो कहँ लगत राज्य पदत्तीन ॥ यह सुनिकै बोले सहदेव
गेह जाऊ तुम भूप सुमेव ॥ हम इत रहव जननिके सङ्ग । सेवबचरण पालि ब्रतअङ्ग ॥ यह सुनि कै
कुन्ती दुख पाय । फिरि फिरि पुत्रन अङ्ग लगाय ॥ बोली पुत्रनेह दुख त्यागि । पालौ प्रजा नीति
मगलागि ॥ तुम्हरे रहे भङ्ग तपहेत । ताते जाऊ पुत्र मति पोत ॥ एहि विधि कहि कहि बचन
प्रसस्त । विदा करत भे बृह समस्त ॥ तजत चलनते जलकीधार । विदा भए सब बन्धु उदार ॥
करि करि पर दक्षिण सबिधान । चरण बन्दि उगरे मतिमान ॥ इपदसुता आदिक सबवाम ।
रुदत चली अति दुखसों काम ॥ चलै लखै फिरि चलै सखेद । एहि विधि चलि पूरित निरबंद ॥
हय गज तुरगण षडि षडि सर्व । आए हास्तिन नगर अखर्व ॥ हास्तिन नगर आइ नृपधर्म ।
लागे करण नृपनके कर्म ॥ ताके दोष हरिकुके बाद । नारद करत बिष्णुगुणनाद ॥ आए धर्म
नृपतिके पास । पूज्यो सबिधि भूप मति रास ॥ आसनस्थ करि ज्ञान निकंत । ब्रह्मते भे आगमको
हेत ॥ नाथ देऊ अनु शासन ज्ञान । सानद शीघ्र करौ मै तौन ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनिकै नारद कहे सुनो युधिष्ठिर दान्त । उत्तरदिशिहम जाइ कै लखौ एक बिरतान्त ॥
नृप आश्रयसों अब इहाँ तुम आए तव भूप । कुरुक्षेत्र तजि कै गए गङ्गाद्वार अनूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताहा भूप अनशनब्रत लीन्हे । कथु अहार चुधाहित कीन्हे ॥ जल अहार ब्रत करि
गान्धारी । रहत भई तन्ह पतिव्रतधारी ॥ कुन्ती एकमासगत करि कै । हाय कछू फल ब्रतविधि
चरि कै ॥ इठएइत पल मूल अहारा । संजय करै पालि ब्रतधारा ॥ एकादिवस सुरसरि
तट बनसै । बैठे परिहि जयत हे मनसै ॥ इतगेमै तोहि बनभे राजा । लगे दवानल अनरथ साजा ॥

तव वनजीव विकलता पागे । जरे असंख्यन अगणित भागे ॥ निराहार व्रतसों बलहीने । खलि न सके तो पितर प्रबीने ॥ सञ्जयसों द्रमि कहे बुभार्द । अब हिय दृढ करि नेह बिहार्द ॥ तुम कठि जाऊ न संग्रय आनौ । एह यहिसमै कहे मम मानौ । यहि प्रकार सञ्जयसों कहि कै । तेचय रहे योगविधि गहिकै ॥ सो सुनि खलि सञ्जय मेधावी । गुणि रहि घरिक बूझि कै भावी ॥ सत्वर तिन्है प्रदक्षिण करिकै । गङ्गातीर जात भेटिकै ॥ कुन्ती भूपति अरु गान्धारी । योगी सबै योग विधि धारी ॥ जरे काठसम निहचल रहिकै । भए न नेकु विकल दुख लहिकै ॥ संजय यह मुनि जनसों भाषी । ने हिसवान योग अभि लाषी ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
 मुनि मुनिजनसों यह दशा हम आए तुवपास । उचित होइ अब जो क्रिया करौ तौन मतिरास ॥ यह अनरथ मुनि धर्मनृप गहि अति दसह उताप । कुन्ती नृप गान्धारजहि शोचि किए परलाप ॥ भोम अरजुनसे प्रबल जाके सुतरणधीर । तेजरि मरे अनाथ सम समुजि होत यह पीर ॥ यहि विधि कहि कहि धर्मनृप महा शोकसों पूरि । भोमादिक बन्धुन सहित रोदन कोन्है भूरि ॥
 * * * * * ॥ चोपार्द ॥ * * *

द्रुपदसुतादिक तीय यह सुनि कै । रुदत भई अति अनरथ गुणि कै ॥ पुरजन सखा सुभट दुख भोए । अति आरत धुनि करि करि रोए ॥ तब नारद भूपहि समुजाए । मौन कराय सु वचन सुनाए । भूपति सुनो शोक मति धारो । बिहित अविहित विधान बिचारो ॥ कुन्ती अरु भूपति गान्धारी । हे अति ज्ञानी तत्व बिचारी ॥ किए उग्र तप अतिव्रत गहि कै । हे चाहत तन त्याग उमहिकै ॥ जरे न प्रकृतानरुमधि परिकै । हम यह सुने मुनिनसंगं चरिकै ॥ कीन्है होम अनलसों बढिकै । बरधित भयो तरुन पै चढिकै ॥ तामधि जरे भूप सुनि लांजै । अब उरनको कुकु शोच न कोजै ॥ गर्द पाण्डुद्विग जननि तुम्हारी । जेहिहित तपत रही व्रत धारो ॥ शोक त्यागि अब धीरज धरि अये । विधिवत उदक क्रिया सब करि अये ॥ यह सुनि भूपति जानि यथोचित । बन्धुन सहित दुखित अति शोचित ॥ इस्त्रिन सहित सहित पुरवासिन । एक एक पटग हे उदासिन ॥ कठि पुरते सुरसरितट आए । बैठि दृणक फिरि पैठि अन्हाए ॥ तब जुजुसकहं आगे करि कै । उदकदान कोन्है विधि धरि कै ॥ गान्धारी कुन्ती निज मातहि । अरु पुतराष्ट्र नृपतिमाणि तातहि ॥ उदकदान करि मत ठहराये । सुहित विधिज्ञ सु ज्ञानि बलाये ॥ तिनसों कहत भए समुभार्द । गङ्गा द्वार जाऊ तुम भार्द ॥ जहा जरे नृप दावानलमे । तहँ लै अस्थि प्रवाहेऊ जलमे ॥ सो सुनिकै ते आनद धारे । तुरित हि गङ्गाद्वार पधारे ॥ बरहे दिवस युधिष्ठिर राजा । शुद्ध होत भे सहित समाजा ॥ विधिवत आद्वकर्म नृप कोन्है । दान असंख्य द्विजन कहँ दीन्है ॥

॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * *

तिन दृमुनिको भूमिपति पृथक पृथक लै नाम । पिण्डदान करि द्विजनकहँ दिए द्रव्य अभिराम ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ महाभारतदर्पणः ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरक्षेत्रे नरोत्तमं ॥ देवीं चन्द्रकान्तिं च ततोऽजयमुद्गीरयेत् ॥

॥ * ॥ श्लोकाः ॥ * ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नैमि । वन्दि विरा व्यासहि रघुत भारत भाषा सैमि ॥

भूहत भूमत भूभरण भूक्षानी भगवान् । तेषि भरतहि मजि शत्रुत यह भाषा आते मदान् ॥

जहि रघुवर प्रभुके चरित-वत्त जमकोठि चन्द्र । ताहि सुमिरि भारत रघुत भाषा विरचि सुन्द ॥

पारयको सारथ भए सारथ परम अनूप । ते सारथ देहे विरचि भारत भाषारूप ॥

॥ * ॥ श्लोकाः ॥ * ॥

वन्दो कपिलर श्रीर राम परमप्रिय पारयत् । मङ्गल मूर्ति धीर भारत सख्य भ्रजस्य वर ॥ कुमल

कुमलता सख्य जन आर्षो जयत सुमान । ताहि ध्याय भाषा रघुत मुमल र्वं अनिराम ॥ * ॥

॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ अथकरीच्छन्दः ॥ * ॥

भूप सुभिष्टिर राज्य मदान् । इमिस परिस भोगि मतिमान् ॥ अनरघ करता असनुन भूरि ।

देखिरघुत भे पिन्ता पूरि ॥ सुमे कछुदिनमे अतिघोर । यदुबभिनको नाम कठोर ॥ अति भाका

कुल नै हत चेत । सब सङ्ग्रह भए तजि देत ॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ केहि प्रकार विनयो

यदुबभ । सब नृप संदलको अवर्तम् ॥ * ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ सुमे भूमिपति अनरघ तौना

हरि की ह्वा नेहे कौन ॥ निम्नामिष कस्य मुमिराज । अथ नारदमुनि मुनिसिरताज ॥ आर

इरिका मै तप वेद । भए विश्रित सहित सुमेह ॥ तिनसौ सारथ आदि कुमार । कौतुक करत

भए एहि पार ॥ आरवि नरविधि पुनति बनायाकहे मोहवस मुनिसौ जाय ॥ बाको होइहि कैसो

बास । देख बनाथ सु तपके पासा ॥ अथ सुमिकै मुनि करि अनुमान । कहे सुमे मम तपको ज्ञान ॥

यह जो ज्ञान पुन इविषय । अथे पुनतिको वेध विधान ॥ होइहि पाके सुमल मदान् । सोहि

को किरताका सदान् ॥ ताहि यदुबभिनको नाम । होइहि बीच कहे कछु मास ॥ तब अरुधर

करवायो पाणि । असुद मध्य अरुहे तन त्यागि ॥ अहि पर सोवत कृष्णहि देखि । धीपर अराजकु

अवरेशि ॥ बेधिहि कृष्णहि रोहे वैज । मुनिवर कहे अरुधर करि नैन ॥ इमि तिनसौ कहि हरिपहँ

जाय । मुनि दोन्दे किरताका सदान् ॥ प्रभुसौ सुनि भविष्य अनुसार । सबकहँ दए सुनाथ सपार ॥

दूजे दिवस साय मजवूत । सोन्दे पाथ अनुमल प्रभूत ॥ सो सुनिकै यदुकुलको भूप । सुमल

करायो पूर्य रूप ॥ पूर्य करिकै दोष वराथ । दोन्दे सावर मध्य उराय ॥ सब पुरमै होजी

वज्रपाथ । अरुमिसौ दोन्दे मदान् ॥ * * * * *

मु०प०

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आजु प्रभृत कोउ करौमति आसौ सुरा सप्रेम । करिहि तौन दै जायगो सूरौ सुनो सनेम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तवसा होतभयो पुरमाहो । असगुण होत कुशल जेहि नाहो ॥ श्याम युवति वर दन्त निकारे । इत उत फिरति फिरार बिचारे ॥ नहि घर बासी बिहगं घनेरे । लगे गृहनमै खेन बसेरे ॥ सारस शिवा नगर मधि बोलै । पांडु कपोत गृहन बसि डोलै ॥ मूषक लरै नकुल सौ भिरिकै । फिरै कबन्ध सूर ढिग घिरिकै ॥ कृष्णपक्ष तेरहदिन करो । भयो शुक्ल चौदहको हेरो ॥ चामर छत्र ध्वजा आभूषण । निशिमै हरै असुर शुभ दूषण ॥ यहि प्रकारके असगुण रूरे । लखि यदुवंशी विसमय पूरे ॥ सो लखि प्रभु भविष्य बिधि चीन्हे । तोर्यं करणको शासन दोन्हे ॥ सो सुनिकै यदुवंशी सिंगरे । युवतिन सहित नगरसौ निकरे ॥ बसे प्रभासतीर्थतट जाई । बेष बसनके वास बनार्द ॥ तहा मोक्षरति ऊधो ज्ञानी । मिलि सब जनसौ भाषि सुबानी ॥ छै कै बिदा समुद्रमधि बसिकै । गुप्तभयो योगी सम लसिकै ॥ विप्रण हित जो अन्न बरायो । बोलि बानरन तौन खवायो ॥ तव कृतवरमा सात्युकि आदिक । मद्यपान करि भए प्रमादिक ॥ मन समताके रङ्गमे बोरे । बैठे राम कृष्णके धेरे ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

तह कृतवर्मासौ कहे सात्युकि बचन मलान । कुसित कर्मा भटनमै कृतवर्मा नहि आन ॥

जो भारतके अन्तमै द्विज भटके सजलागि । निशिमै सूते भटन कहँ बध वायो मुट पागि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि कृतवरमा अमरष गहि कै । बोलै कोथानल सौ दहिकै ॥ बाऊ बिह्वन गिरायुध चाहे । भूरि अरुहि बध्या तुम काहे ॥ यह सुनिकै केशव भट तीक्ष्णदेख्यो तानि अरुण करि रक्षेण ॥ सो लखि कै सात्विकि रिसि अतिसौ ॥ असिगहि उठो भटन को जतिमो ॥ जहगे दुपद सुताके बारे । तहाभेजि हौ तोहिंगबारे ॥ इमि कहि कूदि सिंहसम डायो ॥ करतल बाहि तासु गिरकायो ॥ कृतवरमहिबधि गरबित बकि बकि चलो तासु सब पछिन तकि तकि ॥ तब ताको बारण करिबेको ॥ खले कृष्ण अनरथ हरिबेको ॥ इतनेमै भोजान्धकवंशी घेरि लिए सात्युकिहि प्रसंगो ॥ सो लखि कृष्ण काल गति जाना । चुप छै खरे रहे अनुमानो ॥ ते सब अनुदित बाणी कहि कहि जूटेपात्र परे सो गहि गहि ॥ चाहि चाहि बध कीबो मनमै । इनन लगे सात्युकिके तनमै ॥ तिमि सात्युकिहि प्रयुक्त निहारे । बरजनलगे कोधसौ भारे ॥ मद्यपान कोन्है नतवारे । लगे प्रयुक्तहि मारण सारे ॥ कृष्ण प्रयुक्तहि ध्याकुल देखो । भरे कोध अनरथअवरेखी ॥ जमो रहो सरकासो चीन्हे । मूढी एक ताहि गहि लान्हे ॥ करमै आर भयो सो मूखल । जाके लगे रहै को कूयल ॥ सो गहि केशव खोज बढाए । बधे तिमै जे सनमुख आए ॥ सरका लीन्है सब बलवाना । भो सके कर मुखल समाना ॥ ताहि

प्रहारि सबै मति विगरोकनमै मरे परसपर सिगरो। भ्राता पिता पुत्र गहि जाने । बधे काल बध भए
अयाने ॥ अरै पत्रङ्ग अग्नि परि जैसे । तिमि यदबंधो मरे अनैसे ॥ मूगल लागि कृष्ण रहि ठाढो ।
देखत रहे तोष गहि गाढो ॥ बढि बढि मारि परसपर मरि मरि । अर्णानत लसे भूमिपर परिपरि ॥
तहँ प्रदुन्न साम्वाहि अनुरुद्धहि । गद अरु चारुदोष्ण भट उद्धहि ॥ मरो परो लखि अति रिंसि
धरिकै । केशव मुगल चक्रसम करिकै ॥ हँ हत शेष तिन्है बधि डारे । हरे जैन बधि हँ बिसतारे ॥
दारुक बधु देय तहँ बाँचे । ते कौतुकलखि बिसमय राचे ॥ तिन्है सहित प्रभु कौतुक सागर ।
गे जह हँ प्रभु राम उजागर ॥ तहा जाय प्रभु रामहि देखे । ध्यानावस्थ योगविधि भेखे ॥ तहँ केशव
दारुकि हों भेषे । हम अरजुनहि लखन अभिलाषे ॥ तुम रथचढि हास्तिनपुर जार्द। शीघ्र अरजुनहि
ल्याबऊ भाई ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
सो सुनि दारुकि हंकि रथ चले नागपुर यत्र । तब केशव प्रभु बधुसों कहत भए इमि तत्र ॥
बधु द्वारिका जाय तुम रत्तो युवति समूह । नातरु धनके लाभ धसि बधिहै तसकरजूह ॥
सो सुनिकै तहँ चलतहो पाय मुगलको घात । मरे बधु तब रामसों कहे कल अषदात ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

तुम यहि ठौर रहे मनलाय । हम फिरि आवत निजपुर जाय ॥ इमि कहि निजपुर जाय उदार ।
कहे पितृसो कुल संहार ॥ फिरि इमि कहे बिपनि हम जात। भोचिन नगर रुचत अब तात ॥ जौलौं
आवै पार्थप्रसन्न । तौलौं रक्षऊ युवति समस्त ॥ नृप तेहि क्षण रोदन धुनि भूरि । जात भयो महि
नभलौं पूरि ॥ रुदन सुनत करि हियो कठोर। केशव गए रामकी शेर ॥ रामहि तहां लखे सुनु भूप।
सहस्रश्रीरषा शेष सरूप ॥ तत्क वाशुकि कद्रुहि आदि । आइ तहाँसब अहि अहलादि ॥
सरितन सहित सरितपति आय । सादर गए लवाय सचाय ॥ तामु गवन लखि प्रभु अनुमानि ।
कुरु यदुकुलको ह्यगति जानि ॥ गुणिगाम्बारीको जो शाप । दुरवासाको बचन प्रलाप ॥ बनमधि
जाय योगविधि धारि । महिपै कीन्दे शयन विचारि ॥ जरानाम व्याधा तहँ आय । मृग गुणि
तउद्यो बाण धनु लाय ॥ पगतलमध्य लगे सो बान । तब गो निकट जरा दुखदान ॥ प्रभुहि देखि
गुणि निज अपराध । पग महि करत भयो अवराम ॥ तेहि आश्वासित करि प्रभु बैठि । बिलसे
योग युगतिमधि पैठि ॥ सुर सुरपति सब ऋषि तहँ जाय । नभ रहि अस्ति किए सचाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उत दारुकि पांडवनसों कहे दशा सब जाय । सो सुनिकै अति विकल भे धर्म आदि सब भाया ।
सब बन्धुन सो नै बिदा शोचित पार्थ सुजान । जाय द्वारिका लखन भे हतंथी शूण्य महान ॥
लखि पार्थहि आकुलि महारानी रुकुमिनि आदि। घेरि बैठि लागी रुदन अति आरत धुनिनादि ॥
वारि धार चखसों तजत करि तिनको आश्वास । पारथ शोचित जात भे कृष्ण जनकको पाश ॥

सु०प०

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

देखि पारथहि रोदन करि कै । इमि बसुदेव कहे दुख भरिकै ॥ शप दर्द गान्धारी जोई ।
 पारथ प्रगट भयो अब सोई ॥ मुनिजन शप दयो जो पाछे । सोऊ अनरय भयो अनाछे ॥ जब
 विनाश यदुवंशी पाए । तब केशव इत मन टिग आए ॥ कालकला कहि मोहि बुजाए । अरु एहि
 विधिके बचन सुनाए ॥ दारुकि गो अरजुन हि बलावन । सुनतहि आइहि सो मनमानन ॥ जो
 हमसौं अरजुन सुनि लीजै । जो अरजुनसौं हम गुण लीजै ॥ सुतन सहित युवतिनको रक्षण ।
 अरजुन करिहि पालि सब पक्षण ॥ करतव बस तो जरधदेहिक । करिहि पार्थ मन परम सनेहिक ॥
 पारथ जेहिदिन एहिपुर आइहि । तवसो बीति सात दिन आइहि ॥ तब बढि उदधि नगर यह
 बोरिहि । पुरको छोर बारि निज जोरिहि ॥ इमि कहिके गो कृष्ण प्रथसी । मरे जहां सिमरे यद
 वंशी ॥ पारथ मोहि लगत जग फीको । मोकह दंहतजे अब नीको ॥ यह सुनि महाशोक गहि
 पारथा कृष्णजनकसो कहे यथारथा ॥ द्रुपदसुता अरु हम सब भार्द । एहि जगमै बिनु कृष्णसहाई ॥
 नहि रहि सकव काल दिन आयो । कृष्णगमनसो आगम पायो ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ ❀❀❀

बाल बृद्ध नारी जितो है व्याकुल हतचेत । इन्द्रप्रस्थलै जाव हम तिनकहँ रक्षणहेत ॥

इमि कहि कै दारुक सहित सभासदनमै जाय । राजकाज करता रहे तिनसो कहे बु भाथ ॥
 गए सातदिन नगर यह बोरिहि बारिधि बारि । सरङ्गाम सब जननशह सादर कढो विचारि ॥

॥ * ॥ रौलाइन्द ॥ * ॥

बचन सुनि सब करण लागे कठनको व्यापार । बसे अरजुन तहाँ तेहिजिगि गहे शोक अपार ॥
 राम कृष्ण ह सुमिरि सबनिशि भोर लहि बसुदेव । देह तजिकै गयो उरधलोक सुबुधि शुभेव ॥
 नगरमै अतिघोर तेहिक्षण भयो हाहाकार । पार्थ ताको किए निजकर उचित करतव धार ॥
 मई ताके सङ्ग जरि कै सुबुधि पतिनी चारि । देवको अरु रोहिणी अरु शुभग मदिरा नारि ॥ अरु
 सुपतिनी प्रिया भद्रा जरी सङ्ग सप्रेम । किए शेष कुमार कुलके उदकदान सनेम ॥ देय काल
 विचारि कै करि किया तेहिधर पार्थ । गए यदुवंशी सकल जहँ मरे हे बिनुस्वार्थ ॥ देखि सबको
 गात निपतित महा दुखसो पुरि । राम केशवके सुतन लखि मोहि धरि क बिसूरि ॥ प्रेत कर्म
 विधान करि कै भरे अतिशै शोक । भए आवत सातएदिन कृष्णप्रभुके शोक ॥ रुदन ताउत शीघ्र
 उर सब तियनको समुदाय । अपदि पुरते किए बाहर सहित सौज सहाय ॥ अश्व गज रथ बसन
 मणि धन सकल दासी दास । बरण चादो दुखित पुरजन कढे पूरित भास ॥ बञ्जनाम पञ्ज
 हरिको सहित शिशु सुकुमार । चलो रोदत युवति कौटिन गहे शोक अपार ॥ बञ्ज सहश कठोर
 अतिशै हृदै कोन्हे तब । लिए सबकहँ बसो पारथ धर्म भूपति यव ॥ उदधिको जल उमगि
 तेहिदिन नगर दीन्हो बोरि । कियो माया बिसतरित सो विष्णु लीन्हो मारि ॥ लिए सबकहँ

पार्थ माघत शैल विपिनि अनेक। पञ्चमद नै भए निवसत राखिजनसबिबेका॥ देखि तिन्हहि अमोर
जुरिकै किए मंत्र विद्याल । एकधनुष पार्थ सिंगरे दृढ़ युवती बाल ॥ घेरि सबदिशि युवतियन
धन लोऊ इनसैं होरि । मंत्र यह करि परिघ गहि गहि चले पारि जोरि ॥ देखि पारथ कहे हँसि
फिरि जाऊ रे सब मूढ । अहो जीवन आपनौ तौ तजो ममता गूढ ॥ बचन सो सुनि रुके नहि ते
भिरि बल कत आधापार्थ तव गांडीव धनुष हि भीठि भीठि घडाया॥ दिव्यशस्त्र गुणत भे अस्मरणभे
नहि एक । वीड विधिगत बूझि लागे बाण तजन सटेक ॥ होइ सूत्रम घाव ताके लगे जाके वान
पार्थ तव भो खेत जवि उसांस करि अनुमान ॥ परिघ सम तव बाहि धनुषाथके बल करि सर्ष ।
गए अगिनित युवति हरि लै खेह कमती खर्ष ॥ दृष्ट्यअन्धक भूप कुलकी युवतिको समुदायालहत
अर्जुनके गए लै खल अमोर सघाय ॥ अस्त्र शस्त्र प्रभाव निजको जानि जय तेहि काल । बूझि
भाबी सुनिरि कृष्णहि रहे घरिक अचाल ॥ धीरधरि हत श्रेष तियधन सहित पारथ जाय । बसत
भे कुरुक्षेत्रमधि अति दुसह दुखसैं छाया ॥ तहांसैं हार्दिकको सुत भोज कुलकी नारि । तिन्है
राखै मार्तिकावत नगर मध्य विचारि ॥ इन्द्रप्रस्थ सु ग्राममै फिरि आय परि क्लेश । सात्यकीके
सुतहि दोन्है सरस्वतीतट देश । कृष्ण प्रभको पैत्र हो जो बज्र तेहि सनमानि ॥ भए राखत इन्द्र
प्रस्थ सु ग्राम मधि अनुमानि ॥ राज्य लहि जब भए राजत बज्र तव हे भूप । पार्थ शोक्षित किए
विधिवत राजनोति अनूप ॥ अकरूरको तिय सकल कीन्ही ग्रहण तव सन्यास । बज्रको नहि
कहो मान्यो सहित दासी दास ॥ शक्रिणी गान्धारजा अरु हेमवति मतिमान । दह्यौ तन जांव
व्रति सुधा अग्नि मै धरि ध्यान ॥ सत्यभाम हि आदि सिंगरी कृष्णको तिय जैन । ग्रहण करि
सन्यास ते सब कियो काननगैन ॥ द्वारिकाको जिते पुरजन रहे तिनकहँ पार्थ । सबिधि सौपे
बज्र कहँ कहि यथा योग यथार्थ ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *
अंति यथाविधि बज्र कहँ न्है कै विदा सठैर । हास्तिन पुर प्रति चलत भे करत कालगति गौर ॥
कहू दूर चलि विपिनमधि व्यास हि बैठे देखिानिकट गए रथते उतरि निज हित प्रितअवरोखा ॥
करि प्रणाम अति प्रेमसैं बैठे आदर पाय । लखि शोकाकुल पार्थ कह कह्ये व्यास मुनि राय ॥

॥ * * * * * ॥ जयकरीइन्द ॥ * * * * *

श्रीव्यासउवाच ॥ * ॥ पारथ मुन अति सिद्ध लखात । हत थी सुखो बदन विभात ॥ रणमधि
तौ नहि पाए हारि । भो ने तौ नहि रजयुत नारि ॥ घटहनुने तनपै जलदान । करि तौ नहि
कीन्है असनान । बसदशी नख कषजस तात ॥ परसे तौ नहि कऊ तो गात । कीन्है तौ नहि
द्विजको घात ॥ जिते हतथो दोन लखात ॥ लख्यो न कबज तुन्है अस दीना शीघ्र कहे निज दशा
नधीन ॥ अर्जुनउवाच ॥ * ॥ कहा कहे कहु कहे न जात । महा अनर्थ भयो हे तात ॥ पद्मज

मुप० शोचन प्रभु घनश्याम । महापुरुष श्रीमहिमाधाम ॥ श्रीहृत्सुधर सह प्रभुता चोक । गण देह
 तजि करध लोक । गान्धारीके प्राप प्रनाम । अह लहि षडविको प्राप महाम ॥ पाप मुगलको
 घात कठार ॥ किनसे कदुकुसुपरुष अघोर ॥ महासुर अतिबल रणधोर । आसु पराक्रम
 विदित गैभोर ॥ अकि नदादिक आरुष पात । गण पात है आको गात ॥ ते भठवर सरकाके
 पात ॥ नरे काखनति कही न जात । पाप पाप भेद पाप कि आवदि । नरे परसपर लरि उन
 मादि ॥ और अखन नरप प्रभुको लार न नारीके वल नका ॥ नभको पतन सिन्धुको सोष ।
 पर्वतको आखनसन पाप ॥ देखि कण्यप्रभुको तिमिआनी । और सहजात महाम अभाप ॥
 अहि अति कष्ट कुलिशको पात । नम रिय होत विदारीये तात ॥ काखन वृष्णार्थकी नारी ।
 हरिसे गण अघोर प्रचारी ॥ नहि गांधीर मगव डहारी । भुजु वन वने न तिनकई वारि ॥ अख
 शस्त्र मन जे अखण्ड । सो सब तही गण नै नडे ॥ परकीया जे गण जे नारीये । मन सहाय कत
 विश्वेशीय ॥ निज रथस्यलहि आदि सहाय । हम दाही अति प्रभुनुदाय ॥ आदि बिना
 मन जैसे हास । प्राप्त भयो दुख दुख करास ॥ नाहि बिको आदि रिय दास । अब न मोहि
 जीवनकी पास ॥ अब जो करे कोहि मुन भेष । सो तुम तात करो उपदेश ॥ यह सुनिके बोले
 मुनि व्यास । यह भविष्य सो सुनु मतिरास ॥ सुनो कण्य प्रभु प्रभुता चोक । सकै अन्धया करि
 बैलोक ॥ विप्र प्रापकी कितनो दाप । ठारिके को विष्णु प्राप ॥ भूमि भार भेटनके हेत ।
 इत आए ह कृपानिकेत ॥ तुमसो करि अति मेह पवार । हरि हराय अवनिको भार ॥ निज
 अस्थाम गण नुदधार । सो कौत जो तुम तव विचारि ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * ॥
 कस संक वन्धुन सहित तुम कोहि सुरकाय्ये । तुम वन्धुको प्राप्त भो वनन समै हे आर्य्य ॥
 पञ्चातव जगदीशको भूक कोल है ताके । आदि करत विप्रिय अरु दुरबल बली बिलास ॥
 निज करतव करि अखतव गण सुनो नासनाम । तसो भए प्राणाय तुम करि करि युद्ध महाम ॥
 अब तुमसु वन्धु न सहित करो नदीमखान ॥ यह सुनत तुमकी महा है वेधद कल्याण ॥

॥ * * * * * ॥ शारदा ॥ * * * * *

व्यासदेवके जैन मुनि नै विदा प्रभुता अरि । जोरि प्रभु अति शक्ति मुर प्रति बलत भे ॥
 कण्यचन्द्रकोध्याम करत जाय शक्तिन नार । तसो पाप अति नरकपात मुधिहर है जहां ॥
 आय नृपतिके पास कहत भए विरताने सब । मुनि कृपाने अतिरिषे और रहे अन्धरि प्रभुहि ॥
 कश्चिभीकाशीराजनपाराजाधिराजश्रीउरिनभावावबलाआमिप्रानिना श्रीवन्द्यजन काशीवासि
 मोकुसुमावकश्रीचराकजेन मोपीनाथेन कविना विरचिते भाषार्थ महाभारतदर्पणे मूषीलपत्रे
 समाप्ति नव नत ॥ * * * * * ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * * ॥ * * * * *

श्रीताम्र श्रीराज प्रभु भरतापत्र अर्धभेजासु कथा अरिसे भए किरित सुमन सुभेज ॥

॥ महाभारतदर्पणः ॥

॥ महाप्रस्थानपर्वः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । बन्दि गिरा व्यासहि रचत भारतभाषा सौमि ॥
जेहि रघुबर प्रभुके चरित बज्र शतकोटि अमन्द।ताहि सुमिरि भारत रचत भाषा विरचि सुकन्द ॥
पारथके खाद्य भए सारथि परम अनूप । ते सारथ देहै विचरि भारत भाषारूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बन्दौ कपिवर बोर राम परम प्रिय पारपद । मङ्गल मूर्ति धीर भारत स्वस्य ध्वजस्य वर ॥
सुमिरि उल्लसि अच्च उदधि उलङ्घनसमयकी । भारतसमुद प्रतच्छ भाषा करि चाहत तस्यौ ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आहि ध्याय मानव सकल लहत शुद्ध अस्थान । ताहि सुमिरि भाषा रचत पर्व महाप्रस्थान ॥

॥ * ॥ जनमंजयउवाच ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मौसलको विरतान्त सुनि सवन्धु कौरव अधिपाकिए कौन सिद्धान्त व्यास सिष्य मुनि कहऊ सो ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ यदुकुलकी मौसल उतपात । महा कठोर कुलिषको पात ॥
सुनि सर्वशु कुरुपति क्षितिपाल । शाचि कालगति अमिट विशाल ॥ करिवेको सु महाप्रस्थान ।
करतभए सिद्धान्त महान ॥ दै युयुत्सुकहँ भार विवेक । किए परीक्षितकहँ अभिषेक ॥
कहे सुभद्रासौ समुभाय । पौत्रहि पालेऊ नीति बढाय ॥ इन्द्रप्रस्थको राज्य पुणीति । बज्र हि
हम दीन्हे गुणि नीति ॥ इन युगजनमै बाढै प्रेम । शीघ्रतरहिओ तथा सनेम ॥ तब कुरुपति नृप
सहित विधान । कृष्णादिकन दए जलदान ॥ राम कृष्ण सात्यकि वसुदेव । तिन्है आदि जितने
शुभशेव ॥ पिण्डदान सबकहँ करि भूप । दीन्हे मणि महि बल्ल अनूप ॥ भोजन भूषण ह्य गज
नारि । द्विजे वृन्दकहँ दिए विचारि ॥ कृपाचार्य गुरुवरहि सराहि । नृप परीक्षितहि साँपे ताहि
यह बालक तुवशिष्य सुजान । पालेऊ शोकेऊ सहित विधान ॥ नृप परीक्षित हि प्रजा समस्त ।
सापे कहि कहि नीतिप्रसस्त ॥ तब सबकहँ कारण समुजाय । दीन्हे निजप्रस्थान सुनाय ॥ सो
सुनि प्रजा लहे दुख भूरि । सुख उतसाह जात भे दूरि ॥ नृपसौ कहत भए सब लोग । भूपति

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

संप०
स्था०

माषिबेका ताहि तामधि चले योमी भेव । धर्मनृप तब भीम अरजुन नकुल अनु सहदेव ॥ तामु
पीके द्रोपदी तब आन एहिबिधि जात । द्रोपदी कहु दूरि चलिकै गिरी तँह हे तात ॥ देखि
निपतित द्रोपदीकँह भीमसेन निहारि । कहत भे इमि धर्मनृपसों शोच अतिशै धारि ॥ महाराज
बिलोकिशै इत गिरी द्रुपदकुमारि । किए कहु न अधर्म काहे गिरी साहस हारि ॥ * ॥ युधिष्ठिर
उवाच ॥ * ॥ पार्थसों यह रक्षी राखत अधिक द्विधमै नेह । गिरी इत तेहि पापसों तेहि पापको
फल एह ॥ भीमसों इमि भाषि भूपति चले योग सुधारि ॥ गिरे तब सहदेव तेहँ दुस हहिमिसों हारि
भीम भाषे गिरो अब प्रिय बन्धु तुव सहदेव । कौन पातक कियो इन सो भूप कहिअे भेव ॥ आपु
सम मतिमान औरहि गुणत हो नहि एउ ॥ गिरो अब तेहि पाप इमि कहि चलो नृप तजि नेऊ ॥
नकुल तब कहु दूर चलिकै गिरे सुनु क्षितिपाल । भीम भाषे भूपसों तब गहे शोक विशाल ॥
हाय निरतो नकुल भूरति कहे याको पाप । कह्यौ भूपति रक्ष्यौ यहि निज रूपको अतिदाप ॥
तदनु अरजुन गिरे बोले भीम तब बिलखाय । भूप अरजुन गिरो अब इत कौन कारण पाय ॥
भूप तब इमि कह्यौ अरजुन कहत हो बऊ बार । एकदिनमै करौ मै सब शत्रुको संहार ॥ तौन
बहि करि शको हो एहि वीरताको गर्व । तौन पातक गिरो अति अभिमानपाप अखर्व ॥ भीम
आयो धीर धरि इमि भाषि अगरो भूप । तदनु कहु चलि भयो निपतत भीम वीर अनूप ॥ टेरि
भायो सुगऊ हमरू गिरे हे मतिभौन । हेरि समदिशि कहे याको कठिन कारण जौ न ॥ कह्यौ
भूपति तुहँ बलको रक्ष्यौ अति अभिमान । गिरे तुम तेहि पापसों लहि कालगति बलवान ॥
भाषि अंधु चलो नृप नहि लखौ तेहि करि चाह । आन सोई गयो नृपको सरू हे नरनाह ॥
सुरथ चढि तब शक आंए भूमिपतिके पास । कहेरथ चढि चलो समपुर भूप महिमारास ॥
॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ बन्धुमम अरु द्रुपददुहिता गिरी एहि महिमाह । तिन्है विनु दिव
जाइबेको नही भोको चाह ॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥ मानषी तग त्यागि ते सब लसत दिव
मधि जाय । चलो तुम यहि देहसों उत लखौ तिन्हहि सचाय ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥
आन यह मम सरू आयो ताहि इत हो त्यागि गए दिव मोहि लगति लघुता कूरता अथ पाषि ॥
॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥ लहे तुम अमरत्व दिव सुख परम श्री अधिकाय । तजे आन हि तुन्हहि
लघुता लगति नहि यह न्याय ॥ * ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ * ॥ निग्य हे यह कर्म आर्य्य हि नही
करिबे योग । भक्त जनको त्याग करिबो चाहि श्री सुख भोग ॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥ आन अतिशै
अशुचि नहि संसर्गके अधिकार । त्याग कोन्हे अशुचिको नहि लगन लघुता चार ॥ ब्रह्महत्या
सरिस पातक भक्त जनको त्याग । तजब नहि हम आनकँह करि स्वर्गको अनुराग ॥ आत अरु
अनारथी निज आसरित जो ताहि । तजत हम नहि कष्ट प्राणै नित्य व्रत अबगाहि ॥
॥ * ॥ इन्द्र उवाच ॥ * ॥ आनको संसर्ग करता पुरुष जो है तामु । दान व्रतको हरत फल सर

॥ महाभारतदर्पणः ॥

॥ स्वर्गरोहणपर्व ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमस्कार नारायणहि करि नरोत्तमहि नौमि । बन्दि निरा व्यासहि रचत भारत भाषा सौमि ॥
सीतराम सलहमणहि रकुमिनि कृष्ण सरामाकपि अग्रस्थ ध्वजस्थ सह धरु धारण हिय धाम ॥
राम सतिय सानुज संकपि सहित भक्त समुदाय । ध्याय चहत हौं भार्तको पार लहव सुखदाय ॥
आरोहणि सबलोककी जासु नाम भवसेत । स्वर्गरोहण रचत यह ताहि ध्याय लहि चेत ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्दः ॥ * ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दिवमधि जाइ पितामह सर्व । बसे पाइ चल कवन आलर्ब ॥
किमि दिव दर्शो धर्मनरेश । बैशम्पायन कहो विशेष ॥ * ॥ बैशम्पायनउवाच ॥ * ॥ दिवमधि
जाइ युधिष्ठिर भूप । दुर्योधनहि लखे अतिरूप ॥ राजत सिंहासन लहि बेध । सिद्धि साध्य सेवत
चङ्गदेश ॥ लखि ताके अतिशय ऐश्वर्य । नहि सहिष्णुकेउ धर्मनृप बर्य ॥ तेहि लखि सादर चल
मनु फेसि कइत नए सुगमणसे टेरि ॥ एहि सहसा कर्मके साथ । हम नहि निवसव हे सुर
जाययाके दोष भूप समुदाय । मरे व्यर्थ लरि खोज बढाय ॥ सभामध्य गहि कुमति दराज ।
पाश्चालिहि कीन्हो हतलाज ॥ कहो दुसह दुर्बचन अनेक । नाहक युद्ध कियो गहि टेक ॥ यँइ
नाथो परिवार समस्त । हित सम्बन्धी भृत्य प्रसस्त ॥ हम न शकत इतह एहि देखि । जान चहत
जहँ बंधु विशेषि ॥ यह सुनिकै नारद मुसुकाइ । कहे न इमि भाषो कुरुराइ ॥ त्यागि बिरोध
बसत सब अत्र । तजि सभ अमरष बसो एकत्र ॥ साक्षधर्म करि कैतन त्यागि । यह इत बिलसत
आनद पागि ॥ यह दिव इहां उचित नहि बैर । त्यजो द्यूतकृत सगरो घैर ॥ मिलो भूपसों प्रीति
बढाइत राजहेतु हत दोष दुराइ ॥ यह सुनि बोलो धर्ममहोप । इमि न कहो शुभविधि कुल
दीप ॥ जो कोन्हो बज्र कुतसित कर्म । सो इमि बिलसत मुदित अभर्म ॥ जे सबविधि सुकरमके
ओकाते मम बंधु बसत कहिलोक ॥ धृष्टद्युम्न आदिक मम मित्र । ते कहँ बिलसत परम पवित्र ॥
सोथर दरशावो मुनिराज । जहँ बिलसत मम सहित समाज ॥ द्रौपदेय अभिमन्यु अमान ।
इरावान आदिक बलवान ॥ धृष्टद्युम्न उतमौजा आदि । येनृप बूझे जप यज्ञ नादि ॥ ते सभ

स्वर्गारो°
ख° प°

बिलसत जेहि चख्यान । सो दरशावळ सुनि सुजान ॥ बलिल दानकी समय निहारि । जो
मम जननी कहो विचारि ॥ कर्ण तिहारो सोदर भाय । सो मुनि मम हिय तपत अचाय ॥ कर्ण
बसत इत लहि थल जौन । मुनि हम लखो चहर्त थल तौन ॥ मुनि विनु इन्हसभके सह बास ।
सब दिवमधि नहि मोहि सुपास ॥ यह सुनि कै मुनि सुमन समोद । कहे भूपसो गहे विनोद ॥
लहि सुरपतिके शुभद निदेश । हमसभ तोहि तरत यह देश ॥ तुमहि रुचै यो रुच्य असुच्य । हे
हमकहँ सोई करतथ्य ॥ देवदूत संग लोळ प्रसक्त । आज्ज जहां तुव बन्धु समक्त ॥ सो सुनि देवदूत
ले सरु । चलो भूमिपति गहे उमरु ॥ ले भूपहि चलि आने दूत । गये जवन थल अशुचि अकूत ॥
तम पूरित सो देश अशुच । मांस रुधिरको कीचक तळ ॥ अऊँदिशि फैलि रषो नृप कोश । माही
भरी अनाही बेध ॥ इमि अरु कीट भयानक बेध । बज्जदिशि ज्वाल किये परिबेध ॥ अगणित
काक मृध अरु प्रेत । बोलत डोलत किये निकेत ॥ पूरित मेद रुधिर सो गात । रपटत भूपटत
पीधत खात ॥ मांसरुधिर मज्जा अनुबन्ध । पूरित महा दुसह दुर्गन्ध ॥ अतिथै तपित बालुका बारि
महा भयानि नदी निहारि ॥ अतिधारा सम जाके पत्र । अविबल वृत्त लखत भेतत्र ॥ लोह
कुण्डमे प्रतपित नेल । प्रतपित लोह शिला प्रति नेल ॥ अति दुर्गन्ध दुसहते पीडि । धर्म महीप
कहत भे बीडि ॥ यह पन्था दुर्घट अऊँओर । नहि मम गमन योग अतिघोर ॥ यह पथ इमि पूरित
दुख भूरि । अब चलबेके केतनी दूरि ॥ हे यह कथन देवके देश । कित बिलसत मम बंधु शुभेश ॥
एह सुनि पलाटि दूत मतिमान । भूपतिसै इमि कहे निदान ॥ हम अफ फिरत फिरो तुम भूप ।
अमित भयो अति पावन रूप ॥ इमि आज्ञा दोन्हे बसदेव । फिरेऊ देखि भूपहि अम भेवा ॥ जोह
मूर्कित लहि महा कलेश । तहँ सो पलाटन भयो नरेश ॥ दुःख शोक पूरित सिधिपल ।
पलाटि सुनत भो गिरा अलाल ॥ हे राजार्थि भूप सिरताज । जणक थिरो मम आनद
काज ॥ लहि तुव तनको गन्ध अनूप । हम रुच चयन लहत हे भूप ॥ बज्ज दिन पै नृप तुमकहँ
देखि । हम सब पाये मोद विशेष ॥ जबसे इत आयो तुम मात । तबसो मम दुख निघटत जात ॥
ताते कछुक्षण थिरिअै तत्र । हम सब पावै आनद अत्र ॥ सुनि एहि विधिको दीन पुकार । थिरत
भयो तहँ भूप उदार ॥ महा कष्ट लहि नथ तेहिठौर । को तुम कहत भयो करि गौर ॥ सो सुनि
कहत भये ते सर्व । भीमार्जुन हम नकुल अखर्ब ॥ हम है द्रुपदसुता सहदेव । धृष्टद्युम्न दद कर्ण
शुभेश ॥ * * * * * ॥ दाहा ॥ * * * * *

द्रौपदेय आदिक इबिधि बोले सब रणधोर । परे निरयमधि दैववश पावत अतिशय पीर ॥
सो सुनि धर्ममहोष तहँ गये शोचसों पूरि । ए सब पाये देश यह किये कवनअव भूरि ॥
पापात्मा धृतराष्ट्रसुत तिनि बिलसत गहि गौर । धर्मशाल ए सब लहे असो कुसितठौर ॥
निद्रावश होइ स्वप्न यह लखत भर्त की भान्ति । देखि महा विपरीत यह मोसन गहत न भान्ति ॥

इति धिन्ति अति शोचि नृप निन्दि सुरनकहँ भूरि । देव दूतसों कहत भय महाक्रोधसा पूरि ॥
जाऊ शक्रके पास तुम हम इत करव निवास । कहेऊ मोहि यहियर रहे पावन बन्धु सुपास ॥

सुर्गारो
ख० प०

॥ * ॥ रोलोहन्द ॥ * ॥

भूपके ए वचन सुनिके कृत सत्वर जाव । भूमिपतिके वचन शक्रहि दयो सर्बिधि सुनाय ॥ वचन
सो सुनि.शक्र सुरगण सहित नृपपहँ आथ । सङ्गित आदर धर्मनृपकहँ लाखे आनद द्याय ॥ मेद
मज्जा आदि यहियर रहे कुलित जौन । देवपतिके जातही तथा भये लोपित तौन ॥ बहून खानो
सुखद मारत गहे निज गुण पर्मे । शान्ति गहि तहँ शक्र बोले सुनऊ भूपति धर्म ॥ * ॥ इन्द्रउवाच ॥
सिद्धि तुमकहँ भद्र प्रापत महा महिमाओक । भूप प्रापत भये तुमकहँ परम अक्षयलोक ॥
क्रोध भूपति करो मति मम वचन मानो साँच । अबसि है द्रष्टव्य भूपन्ह नरक दुःसह साँच ॥
सुकृत भोगत प्रथम पावत निरय ते पश्चात । प्रथम भोगत निरय पावत स्वर्ग ते अबदात ॥ अधिक
पातकहेत जाके पुण्य घोरा होत । भोगि सो कहु स्वर्ग भोगत निरयको लहि सोन ॥ होत घोरो
पाप जाके पुण्यको अधिकार ॥ भोगि घोरो निरय सो फिरि लहन स्वर्ग उदार ॥ आचार्यके बध
समय भाखे व्याजसे कहु बैन । व्याजते लहि निरय ताते भये घरिक अचैन ॥ भीम अर्जुन
नकुल तिमि अरु द्रौपदी सहदेव । व्याजते सभ नरक परसो भूप तैसो भेव ॥ मुक्त ते सब भये अघते
चलो निरखो भूप । स्वर्ग मध्य सपक्ष बिलसत अरु अक्षय रूप ॥ तपत जाके हेतु तुम सो करण
महिमा भौमे । पाय पूरण सिद्धि बिलसत लखो करि उत भौन ॥ भूप मांधाता भर्गोरथ भूमिपति
हरिचन्द । भरत अरु द्रौपदेय बिलसत जौनठौर अनन्द ॥ भूप सबके जई है तबलोक बिहरऊ
तत्र चरै निरखऊ पक्ष निज यो किये सङ्गर सत्र ॥ स्वर्ग गङ्गा लखो पावन करत यो त्रैलोक । तामु
मधि असनान करि कै चलो आनद ओक ॥ इहाके असनानते तुअ छुटिहि मानुषभाव । नाश
होइ है बैर ररिषा शोकको तेहि छाव ॥ कहत जैसे शक्रके तहँ धर्म गहि निजदेह । प्रगठ लसिकै
भूमिपतिसो कहे सङ्गित सनेह ॥ क्षमा दम तो दया लखि हम भये अति परसत्र । बार त्रय तो
करि परीक्षा भये मुद आसत्र ॥ परम पावन बन्धु तो सब नरकको नहियोग । शक्र दरशाये तुमहि
निज परम माया भोग ॥ स्वर्गगङ्गामध्य चलि असनान करिये भूप । त्यागि मानुषभाव जाते लहो
दिव्य स्वरूप ॥ वचन यह सुनि नृपयुधिष्ठिर सहित सुमन समोर । शक्रसह अरु धर्म सह चलि
गये सुरसरि तीर ॥ तहाँ करि असनान भूपति मानुषी तनु त्यागि । गहे दिव्यस्वरूप अनुपम परम
सुपमा पागि ॥ तहासे चलि गये नृप जई रहे बन्धु समस्त ॥ सुवन सब धृतराष्ट्रके अरु भीम आदि
प्रसन्न ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

जाइ तहाँ गोविन्दकह भये बलोकन भूप । चक्र आदि आयुध प्रभुहि शेषव गहे सरूप ॥
अरु सेवत अर्जुन प्रभुहि जिमि सेवत हे अत्र । तिन्हहि देखि नृप मोद गहि अमरि गये अन्यत्र ॥

संगारो
६० प०

तहाँ जाइ कहि लखे सह द्वादश आदित्य । फिर मरुद्रण सह लखित भीमहि लखे अचित्य ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

फिरि आगे चलि लखे शुभेवहि । आश्विन सहित नकुल सहदेवहि ॥ पुनि आगे चलि रुपद
कुमारिहि । देखे रमा सदृश दिव चारिहि ॥ तह नृप कछु बूझन अभि लाखे । सो गुणि शक्र भूपसैं
भाखे ॥ यह दिवकी श्रीपरम सोहावनि । तो हित गई भूमि मन भावनि ॥ ए गन्धर्वपंच अति
पावन । भये तुन्हारे सुवन सोहावन ॥ फिरि आगे चलि शक्र समीपहि । दरशाये धृतराष्ट्र मही
पहि ॥ ए सबगन्धर्वन्हके स्वामी । तोपितुके गुरु बन्धुसुकामी ॥ साध्य मरुत वसुगणमधि अंगी ।
वृष्णि भोज अरु अन्धक बंशी ॥ सात्यकि प्रभृति खलो नरनायक । जितने महारथी रण चायक ॥
सोम समान सोम सह राजत । देखो अभिमन्युहि छवि छायत ॥ कुन्ती अरु माद्री सह प्रोभित ।
पाण्डुमहीप हि लखो अलोभित ॥ वसुन्ह सङ्ग भीषमकहँ पेलो । सङ्ग जीवके द्रोणहि देखो ॥
अवर जिते दुःऊदिशिके पत्नी । सुभट महीप राजसुत रत्नी ॥ गुह्यक यत्त पुण्यजन ये ते । तिनके
सङ्ग लसत इत तेते ॥ यह प्रकार सुरपति-फिरि फिरिकै । भृषंहि दरशाये थिरि थिरिकै ॥ शक्र
साथ नृपधर्म सोहाये । तिन्हहि देखि अति आनद पाये ॥

॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भीष्म द्रोण भूरिश्रवा शकुनि जयद्रथ भूप । जयत्सेन अरु कर्ण अरु नृपधृतराष्ट्र अनूप ॥

नृप दुर्योधन पुत्र सह सत्यसेन रणधीर । धृष्टकेतु अरु कर्णके पुत्र घटोत्कच धीर ॥

इन्हहि आदि अगणित सुभट मरे युद्ध करि जौनाते दिवमधि कितने दिवसे कहे सुनि तौना ॥

सर्गवास करि कर्मके अन्त लखे गति कौन । सो सुनिबेकी लालसा हमै कहे तपुमान ॥

॥ * ॥ सूतउवाच ॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनिकै सुनि बैशम्पायन । भूमिपालसों कहे सचायन ॥ सो हम कहत सुनौ सब कोऊ ।
जाहि सुने सुधरत दिशि दोऊ ॥ नृपको प्रश्न अनूपम सुनिकै । बैशम्पायन बोले गुणि कै ॥ भूप
प्रश्न तू किये सोहावन । सुनो तामु उत्तर मनभावन ॥ देव गुह्य यह गुणिबे लायक । यहि विधि
कहे व्यासमुनिनायक ॥ पापकर्मको शन्त अहीना । भे निज निज प्रकृतिन्हमधि लीना ॥ मिले
वसुन्हमे भीषम ज्ञानी । गुरुमे मिले द्रोण द्विजमानी ॥ मिले महतगणमे कृत बरसा । रविमधि
मिले करण अतिपरमा ॥ दम्पति धनदमध्य चलि संप्रति । नृपधृतराष्ट्र मिलत भे दम्पति ॥ पति
निन्ह सहित पांडु मुद धारे । देवराजके सुदन सिधारे ॥ समतकुमार सु सुनि सब याओ । तिनमे
मिले प्रद्युम्न सुनाओ ॥ शशिमो मिले पार्थसुत बोरा । यो अभिमन्यु विदित रणधीरा ॥ रुपद
बिराट शङ्खसल राजा । उद्यसेन वसुदेव ससाजा ॥ धृष्टकेतु अरु भूरि सहोपति । उत्तर भूरि
श्रवा करि कोरति ॥ कंक विदूरथ भानु कहाये । साम्ब निशट अरु रुर गणाये ॥ कंस आदि

पूरित अति इवसे । विश्वेदेवा मधि सब प्रबिते ॥ धृष्टद्युम्न अह शकुनि मरेया । कीन्हे पावक मध्य प्रवेया ॥ शत सुबन्धु दुरयोधन आदिक ॥ जातु धानहें प्रबल प्रमादिक ॥ ऋषि पावक रणे तन तजिकै । बसे स्वर्गमधि सुषमा सजिकै ॥ विदुर युधिष्ठिर मुद गहि मनमै । किए प्रवेश धर्मके तनमै ॥ शेषरूप गृह हस्तधर आरय । गए रसातल करि जन कारय ॥ कृष्णदेवकी तनय गोशार्द । विससतं भए पूर्वकी गार्द ॥ सोरह सहस कृष्णकी रानी । रहीं जितो सुख सुषमा खानी ॥ मन बच करम माधवहि भजिकै । सरस्वती मधि धरि तन तजिकै ॥ ऋषि अपसरा मिली घनघ्यामहि । मारायण जगदत जगधामहि ॥ आदि घटोत्कचरात्स जेते । दुःऊदिशि रहे विजै यग्रहेते ॥ ते गन्धर्व यक्ष अक्षुकिन्नर । ऋषि लहे लोक अति सुन्दर ॥ केकय मद्र आदि चक्रुदिशिके । रहे जिते भट शंघि रण निशिके ॥ तेसब दिव्य देह गहि गहिकै । क्रमसों बसे लोक लहि लहिकै ॥ जे माधवको दरशन कीन्हे । ते सब जन उत्तम पद लीन्हे ॥ जे कीन्हे सहवास सोहावन । ते कि न लहे स्वर्गमनभावन ॥ जे जन राम कृष्ण रट लावन । कहत बेदविद ते दिव पावत ॥ ❀*❀*

॥ ❀*❀* ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ सैतिक उवाच ॥ * ॥ ❀*❀* ॥

व्यास शिष्य द्विजश्रेष्ठें यह अनूप व्याख्यान । सुनि जनमेजय भूमिपति आनद लहे महान ॥ तदनु शेष मलकर्म सो किए समापन भूप । याजक पूर्णाङ्गति दिए पठि पठि मंत्र अनूप ॥ करि मोचित सब अहिन कहें मुनि आसीक अनन्द । अति प्रसन्न हतहृत्य ऋषि पडे सु आशिष कन्द ॥ जनमेजयतिपालमूर्ख महाभोदसों पूरि । पूजन करि सब द्विजनकहें दए दक्षिणा भूरि ॥ जनमेजय ऋषि वैशिदा दे आशिष सुखदाय । निज निज आश्रम जातभे मुदित बिप्र समुदाय ॥ श्रेष्ठ ॥ ❀*❀* ॥ व्यासाज्ञया समाख्यातं सर्पसन्ने नृपस्य तु । पुण्योद्यमितिहासाख्योपबिन्त्रं वेदमुत्तमं ॥ कृष्णेन मुनिना बिप्र गदितं सत्यवादिना । सर्वज्ञेन विधिज्ञेन धर्मज्ञानवतास्तुता ॥ अतीन्द्रियेण शुचिना पतसाविधृतात्मना । ऐश्वर्यवर्तताचैव सांख्ययोगविदस्तथा ॥ नैकतंत्रविशुद्धेन दृष्टा दिव्येन चक्षुषा । कीर्तिकथयतालोके पाण्डवानां महात्मनां ॥ अन्येषां सत्रियाणां च भूरिद्रविण तेजसां । यद्द्रव्यं श्रावयेद्विद्वान्मुदा पर्वणि पर्वणि ॥ धूतपापजितस्वर्गो ब्रह्मभूताय गच्छति । यच्चै न श्रावयेच्छ्राद्धे ब्राह्मणान् पादमन्तृतः ॥ अक्षय्यमानं पवनं पितृतस्यैपतिष्ठते । अन्हा यदेन कुरु ते इन्द्रियैर्मनसापिवा ॥ महाभारतमाख्याय सायंसंध्याप्रमुच्यते । यद्रात्रौ कुरुते पापं ब्राह्मण त्विन्द्रियैश्चरन् ॥ महाभारतमाख्याय पूर्वसंध्यां प्रमुच्यते । धर्मं चार्थं च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ॥ अदिहास्ति तदन्यत्र यत्रे हास्ति न तत्कथितं । जयानामितिहासोयं श्रोतव्यं भूतिमिच्छता ॥ ब्राह्मणे नचराज्ञाच गर्भिण्या चैवयोषिता । स्वर्गकामो लभे स्वर्गं यजमानो लभेज्जयं ॥ गुर्विणी लभते पुत्रं कन्याविन्दति सत्याति । अनागतत्रिभिर्वर्षैः कृष्णद्वैपापनप्रभुः ॥ सन्दर्भं भारतस्येन कृतवान्

स्वर्गारो० धर्मकाश्याया । षष्ठींशतसहस्राणि चकारेमांचसंहितां ॥ त्रिंशत्शतसहस्राणि देवलोके प्रति
 ए० प० ष्टितं । पितृ पञ्चदशं ज्ञेयं नागयत्ते चतुर्दशं । एकं शतसहस्रञ्च वैशम्पायन गीयते ॥ इतिहासमिने
 पुण्यं महार्तिवेदसमितं । आवयेद्यस्तुवर्णंस्त्रीन् कृत्वान्नाङ्गणमग्रतः ॥ स नरःपापनिर्मुक्तः कीर्तिं
 प्राप्येहसौमिक । गच्छेत्परमिकांसिद्धिं मंत्रमेननसंशयं ॥ महर्षिर्मगवाग्यासः कृत्वेमांसंहितापुरा ।
 श्लोकैश्चतुर्भिर्धर्मात्मा पुत्रमध्यापयत्कुक् ॥ नात्परिद्वसहस्राणिपुत्रदारशतानिच । संसारेष्वनु
 भूतानि याति यास्यति चापरे ॥ हर्षस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानिच । दिवसे दिवसे मूढाःप्रवि
 शन्ति न परिहृताः ॥ ऊर्ध्वं वा ऊर्विरौमेष नच कश्चिच्छृणोतिमे । धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थंनसे
 व्यते ॥ न जातुकामान्नभयान्नलोभाद्दुर्भयजेज्जीवितस्यापिहेतोः ॥ धर्मानित्यः सुखदुःखं त्वनित्ये जीवे
 नित्योहेतुरस्यत्वनित्यः । इमां भारतसावित्रीं प्रातरुत्थाय यः पठेत् ॥ स भारतफलं प्राप्य परं ब्रह्मा
 धिगच्छति । यथा समुद्रो भगवान्धथाच हिमवानगिरिः ॥ ख्यातानुभौरत्ननिधो तथा भारतमुच्यते ।
 कृष्णं वेदफलं विद्वान्श्रावयित्वा र्थमश्नुते ॥ स वक्ता देवलोके हि गत्वा देवैः सहाचरेत् । महाभा
 रतमाख्यानं यः पठेत्सुसमाहितः ॥ स गच्छेत्परमांसिद्धिमितिमेनास्ति संशयः । पुस्तके पूजनं कुर्यात्
 श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ काष्ठमासनं वेष्टञ्च मुक्तादामभिरन्वितम् । धूपैर्दीपैश्च शय्यैश्च नैवेद्यैर्वि
 विधान्वितैः ॥ गीतेर्वाद्यैश्च नृत्यैश्च उत्सवेन मनोहरम् । भूयसीदक्षिणां च्यात्वाष्टांगं प्रणमेत्ततः
 वाचकं पूजयेत्तत्र ग्रन्थिवन्धनसंयुतः ॥ पादप्रक्षालनञ्चैव पादपूजनमेवच । तदूर्ध्वं तिलकं कुर्यात्पु
 ष्यमात्मासमर्पणम् ॥ उष्णीषो जायिकं तत्र कटिबेष्टोत्तरोयकम् ॥ भूषयेत्तेषु कर्णौ च कुण्डलाभ्यां
 तथैवम् । विष्णुपूजनजं पुण्यं लभते नात्र संशयः । व्यासस्त्रीपूजनं कार्यं त्रिवर्णैश्च ॥
 सर्वाभरणभूषणान् लक्ष्मीः स्नेन प्रपूजिता । वाचकं तोषयेद्भक्त्या विन्तसाद्यविचर्जितः ॥ * * *

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगाभिना श्रीवन्दीजन काशी
 वासिगेकुलनाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भाषायां महाभारतान्तर्गते शतसहस्रसंहिता
 यां विपासिक्यां स्वर्गारोहणनाम प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ * * * ॥ इति महाभारत दर्पणः
 समाप्तः ॥ * * * ॥ शुभमस्तु शकाब्दाः १ ७५१ सम्वत् १८८१ मघादि ३१ दिवसे ॥ * * *

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

यव प्रजापति कहेउ नृप सहविसतार सहेत । इधि बंय कनसो वडहि कहियो ज्ञान निजेन ॥

॥ ॐ ॥ चौपार ॥ ॐ ॥

जकरना करि इंचित ईसा । प्रवर्हि आप रचेउ जगदीया ॥ तेहिनिधि वजेउ बोके जन
सामो । करि विचर कहु आंतरजानो ॥ भइए बोजतेहि अण्ड अनूपा । अनस अपूरक सुवरन
रुपा ॥ तेहिनिधि विधिजे एकवरीसा । वसि तेहि विधिजीन्हे जगदीया ॥ अरध भूमि दिव कोन्हे
उ गाथा । तेहिनिधि अनूय आकाश अवाभा ॥ इधभा दिधि तेहि निसेद बनार्द । ब्रह्मा निरखेउ
निज निपुणार्द ॥ कास काम अर केध बत्तार । अर मन वाचहि रजेउ सोहाय ॥ पुनि जगईहि
जुमुनि हित बेधा । सम प्रजापति रचेउ सुसेधा ॥ अरि खरीजि पुसहि सोहाय । पुसह अनिरस
अर अतु जाए ॥ अर वधिबर तपविधि कोन्हे । मानस पुन सात निधि कोन्हे ॥ विधिसन तिन्ह
हि पुरान बखानै । नारायण आत्मक जग जानै ॥ रोसात्मक पुनि इइहि जाए । समतकुमार रचे
सतभाए ॥ सम प्रजापति उतपति कोन्हे । वडत प्रजा अतिकारुंद सीन्हे ॥ इइ प्रण्ट असकंध हि
कोन्हा । अइसमूह रचि आनंद सोन्हा ॥ इइपुन अर समतकुमार । प्रजा प्रहमवत्त हि
धारा ॥ प्रण्ट कीह तब विधिगुण गाए । विद्युत असनि नेत्र सनभाए ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

संधाधिप रोहित धनुष पखो विविध अखेद । रचि विधिरचेउ सप्रेम फिरि यज्ञ सुधारन वेद ॥

॥ ॐ ॥ चौपार ॥ ॐ ॥

सुखसा प्रण्ट कोन्हे विधि देवन । उरसे पितर पुनीत सुसेवन ॥ अइतं सुखसा उतपति
मानव । कोन्हे उ जघनदेससा दानव ॥ अइरारि सब सुकि अनूप । अइ अंग प्रति प्रियेउ भूया ॥
तब विधि रिधा कोन्हे निजगाता । नारी मुख भए सुनु ताता ॥ इइ तब करन लगी इइ नारी ।
पुस विराटरूप तेर धारी ॥ अइ विराट निजअंग तिधाया । सुनि सप्रभुवन रचेउ सुजाना ॥
एकइत्तरि युग भोग विधाना । तासु मन्तर कहत पुराना ॥ अइत करिस तपकरि इइ नारी ।
नाम सुभन सतिरुपा धारी ॥ अइ अयं भुवन प्रति परबीता । अइतान सुत उतपति कोन्हा ॥
कन्या करदमकी सुभचारी । पानिअहीत बीरकी नारी ॥ अइ सुन भए तासु बखाना । उत्तानपाद
प्रियव्रत जगजाना । नानवधिइकी सुता सोहार्द । काम्या सुपति प्रियव्रत गाई ॥ प्रण्टेस तारि
पुत्र शुभ चारी । ते संघाट कुहि बलभारी ॥ पुनि विराट अर प्रभु बलवाना । प्रियव्रतके पुत्र
पुराना ॥ उत्तानपादकइ अवि सुजाना । यहणकीन पुत्रव विभाना ॥ अइ अयं मुख परम पुनीता ।
धरम नृपतिकय सहित सुनीता ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

भई चार कव्या प्रपठ तानहते सुनु भूप । सुनीता नाम लही सुवनि ७ तानपाद अणुरूप ॥

॥ ॐ ॥ चौपार्द ॥ ॐ ॥

तासु भए सुत चारि अणुपा । धुव अरु कीर्तिमंत चरंभूपा ॥ आयुषमंत वज्रि वसु आगे ।
तिनमे धुव भागवत बखानो ॥ तीनि सहस्र बरिस धुव ज्ञानी । कीन्ह तपस्या अति हित जानो ॥
लहि ईश्वरसो सबरान देया । प्रथिबो पावन किएउ नरेया ॥ शंभूनाम प्रिया लहि नीकी । सुख
दायिनि अबलबनि जोकी ॥ सृष्ट भव्य है सुत उपजाई । बसे जाई पद अणुपन पाई ॥ को धुवकी
कहिसकै बडाइ । सेय सारदासके न जाइ ॥ कवि यह जोहि परदेहि न करही । आपुहि धम्य
जानि मुदभरही ॥ पिष्टनृपमिकी तिया सुहाया । तासु भए सुत पांध सदाया ॥ रित्य रिपु जय विप्र
सोहाए । इकल वृपति इकले अन्न गाए ॥ रिपुको इहती तिया सयानी । तासु सुवनचसुष नरेज्ञानी ॥
पुथरनी चसुषकी घरनी । तासुत ननु नृपपालक धरनी ॥ प्रिया नबूला मनुकी प्यारी । दय सुत
तासु भए सुभचारी ॥ उरु पुरु सतकुसुम मपंसी । सत्यवाक कवि परम असखी ॥ अमिष्टव हरिरात्रि
सोहाए । कहिसुसुध अमिमन्यु सुभाए ॥ अथेई तिथ जरु करी । ता सुत वट श्रोता जयभेरो ॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

अंग सुनन अरु स्वातिकतु अंगिर गय भूपास । नाम सुनीता कासकी सुता अंगको बाल ॥

॥ ॐ ॥ चौपार्द ॥ ॐ ॥

ता सुत नाना अणुण निधाना । नाना कोणुण गहे अमाना ॥ भयो बेणु अणुमारगगामी । कुमती
क्रोधकलित कुलिकानी ॥ कियो वेदपथ सोपन तेही । निजपथ रोपैस कुपथसनेही ॥ इठे करि
सठ यह दिहेसि निदेह । धनु जाय कर रज्जु न लेह ॥ मोहि अपऊ मोहि जानऊ देया । मोसो
प्रबल कौनको भेयो ॥ धर्म सीप लखि अविगण आए । अत्रि प्रभृत यह कहि समुजाए ॥ हमसबकोवे
यज्ञ उभाए । तुव सहाय सर्वाविधसो पाहे ॥ तू अधर्म तजु हे वृपसाई । करु सुधर्म निजु पितुको नाई ॥
सो सुनि धर्म हास करि वोलैसि । मिजमनत्वको पदबिखोलैसि ॥ मुनिजाना एहि मोहि न चेता । तब
तेहिको गहि ज्ञानिकोता ॥ दक्षिण जानु नबो रिसिरति । छस पुरुष प्रगट्यो एक ताते ॥ सो वह
बेसुपापको रूपा । भयो जोरि कर ठाठो भूपा ॥ कछी निषीद अत्रि तपरास । बैठ शर्थ यह भपति
ताह ॥ ताते जाति निषाद अपाना । की लभिलेगण भए सयाना ॥ फिरि भुज दक्षिण मचन कीन्ह ।
प्रगटे पृथु कर भर धनु सीन्हे ॥ कडते अत्रि जिमि मचे सुधरही । तिनि दरय वरबचस बरही ॥
लेखि लोक मोहि भयो सुखारी । मुद मंगल पसरौ दिशि चारी ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

धारी । फिरि तन तजि सुचि सुद्ध सुखारी ॥ विधिने खीन रहे सब ऐसे । रहत बीजमै मिलि तह
जैसे ॥ प्रगट होहि यहि विधिते तैसे । अस्त होत प्रगटत रवि जैसे ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

दितिके दोय तनै भए हिरण्यकसिपु बलवान । अरु हिरण्य बल बर गरव औगुन ओव अमान ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

हिरण्यकसिपुके भे सुत चारी । ज्हाद नाम संज्हाद अनारी ॥ अनल्हाद फिरि भूयो सुखारी ।
अरु प्रह्लाद सुतत्वविचारी ॥ ज्जह्लाद पुत्र अह्लाद निरदंदा । संल्हाद तनै है सुंद निसुंदा ॥ अन
ल्हाद सुन आपू एका । नृप प्रह्लाद जु सहित बिकेका ॥ बिलुभक्त भावत अपारा । भयो विरोचन
तासु कुमारा ॥ तनय विरोचनको बलि धीरा । बान बार बलिको बरबीरा ॥ हे बलिके सुत बली
अनेका । तिनमे बडै बान सबिकेका ॥ इंद्रदमन सुत बान बलिके । लौहिति तियसे प्रगटे नीके ॥
पात्र हिरण्य नैनके बेटे । रहे बली बर बिरद लपेटे ॥ रही हिरण्य नैनकी चाही । सुता सिद्धिका
कायाग्राही ॥ इति दितिबंश । अथ दनूवंश ॥ शत सुत भए दनूके भूपा । तिनमै कहै प्रधान
अनूपा ॥ विप्रचित स्वर्भानु पुलोमा । वैश्वानर हयग्रीव सजोमा ॥ अरु वृषपर्वा सुनु नृप ज्ञानी ।
कहै कहाँलो सब अभिमानी ॥ स्वर्भानूकी प्रभा कुमारी । अरु पुलोमकी सची दुखारी ॥ वैश्व
नरकी दुहिते दोई । काली और पुलोमा सोई ॥ हयग्रीवकी तनया जानी । उपदानवी सुन
ऊ नृप ज्ञानी ॥ ❀❀❀❀❀❀❀❀❀❀

॥ ❀ ॥ दोहा ॥ ❀ ॥

वृषपर्वाकी ही सुता शर्मिष्ठा यह नाम । तिनके बंश कहै सुनो भूपति आनंदधाम ॥

॥ ❀ ॥ चौपाई ॥ ❀ ॥

प्रभापुत्रके नऊष उदारा । नृप जयंत है सचीकुमारा ॥ पौलौमा कल्पसो जाए । धाठि हू
आर पुत्र मनभाए ॥ चौदहशत कालीसो कीन्हा । तिन सब विधिसो यह बर लीन्हा ॥ देवनसो
नहि मरो विधाता । तिनै फाल्गुण जाइ निपाता ॥ उपदानवी तासुके जाए । मेदुहंत महत बल
गाए ॥ सरनिष्ठाको पुर भो पूता । तासो बाढ्यौ बंश बज्जता ॥ सिद्धिका हिरण्याक्षको जाई । विप्र
बिच पति अमुपम पारै ॥ तासुत जेठो राऊँ बखानो । बातापी सुचि इखल जानो ॥ इन्ह हि आदि
सुत शतसह पाके । पुत्र पउत्र अनगिने ताके ॥ इति दनूवंश ॥ अथ तास्रावंश । षट तनया तास्रा
की जाना । काकी शेनी भाषी मानो ॥ सुग्रीवा सुचि मध्वा कहिचै । तिन जाए जहि तेहि
श्रुति सहिचै ॥ काकी काक उलूकनि जाई । शेनी बाजप्रधति नृपराई ॥ भाषी भाषादिक रचि
दीन्हा । मध्वा गोधन प्रपठित कीन्हा ॥ सुषी अई अलजंतु ससीवा । सुग्रीवा हय घर लखगीवा ॥

... ॥ विष्णु संहिताके ... ॥ ... ॥

॥ ७ ॥ वेदाः ॥ ७ ॥

विष्णुसंहिता ... ॥ ... ॥

गोपति किएउ ... ॥ ... ॥

॥ ७ ॥ दोहा ॥ ७ ॥

मेधावसु ... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥

द्विषाद्यन जो सो सुभराती ॥ सहि विधि जो वृष देवरीसा । तद्वगुण
 मनु निसुरिन दीसा ॥ निसुरिन दशगुण पक्ष कहावै । सहिदशपक्ष सास मनु पाती ॥ द्वादश
 मास सहै अतु होई । सहि अतु दोद अद्यन मनु कोई ॥ दोय अद्यन सहि पूरितहोई । मनुको
 वरिस कहै सबकोई ॥ देववरिस बर चारिदशरू । सतयुगको बर भोग विहारू ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

चारि चारि सतसंधि दै भूपति करो विचार । चारि सहस्र अर आठ अत अतयुगको संचार ॥

॥ ॐ ॥ चौपार्द ॥ ॐ ॥

वरिस हजार तीनि परमाना । जेतायुगको भोग विधाना ॥ तीनि तीनि सतसंधि विचारे ।
 तीनिसहस्र षटसत अधिकारे ॥ द्वापर दोयहजार बरीसा । भोग भोगवत सुनु अरनीसा ॥ द्वै द्वैअत
 देखंधि समेता । दोय हजार चारिसत एता ॥ कस्यजुग वरिस हजार विराजे । अत अत वरिस
 संधि सुभ साजे ॥ एक हजार दोयअत मानो । द्वादश सहस्र वरिस सब जानो ॥ ए जुगचारि चौकडी
 नामी । ता एकहतरिके मनु खानो ॥ सहस्र चौकडी जुगतेहि माहीं । चौदह मनुगुण भौमिसा
 हीं ॥ सो कसपांत कहत सब लोका । बोते विधिको दिवस असोका ॥ बीतम्य दिन संधा जोत्रै
 तब वेधा निद्रित नृप होवै ॥ तब कछु सहि ईश्वरकी आसैं । द्वादश अदित प्रचंड प्रकासैं ॥ असम
 होई अर अचर अहान्ते । सुरनद्यादि सब कहें कहाते ॥ विविध विधान विधिसो बगरे । लोन होई
 छिने विधिमे सिगरे ॥ होई रूतेज असम रचि जेज । लोन होई विधिमे सब तेज । पसरे पूर पयो
 धि पसार । सहि ईश्वर ईशा अनुसार । सयन करहि तब सुचित विधाता । सकल पसार धारि
 निजगता ॥ सहस्र चौकडीके परमाणा । बीते निसि तब सुनऊ सुजाना ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॐ ॥

जागि बिरंचि विचार करि बिरचें विश्व अखेद । बाही कान बेई सकल प्रजा प्रजापति बेद ॥

अवा दुकान समेटि सब सोवै बनि क सुजान । भोर पसारि जागि सब सोई बसुन आन ॥

॥ ॐ ॥ चौपार्द ॥ ॐ ॥

वैसंपानि कहा सुनु भूपा । वैवसतधो अन्ध अमृपा ॥ रवि कश्यपकेतनच सैवसि संधी मान
 निया तिन पाए ॥ बिसुकरमाकी तनया सोई । रविके तेज दुवित सो होई ॥ नीटि नीटि सो द्वै सुत
 आई । वैवसत अह अम सुषदाई ॥ दुहिता एक सरस अभिरामा । कश्यप अरिह जग अमुना
 नामा ॥ पिरि न सकी सहि तेज अमाना । तब सद्गा द्वियकरि अमुना ॥ मिये होयाकई नित्यते
 कीन्हो । निज अमुरूप ताहि लधि लीन्हो ॥ कहेवि रसकतुन नृपिने काला । पीसिक तीन
 करऊ प्रति पासा ॥ खले न पावै रवि यह भेदा । इनि कहि पितुवर गर्द अखेदा ॥ बिसुकरमा ते

बहु दिन कीने । करल्लगे मल पुत्र धिरीते ॥ निबवहल्लकहदेहि सुखाकनिपनाति कजे सुता
 कुमदाकुति ॥ सो बह इला नाम सुखदाई । निबवहल्लसे बूजेति जाई ॥ ईश नीतिहजे देउ
 निदेशा । सो भै करी रहै तेहि देख्य ॥ तब तेन कहा नृपतिपह जाइ । होउ सुदुन्न नृप नै लाउ
 कसो बड्डीरि तब मनु नृप पाही । रभे प्रसासो नृप मग मांही ॥ सुत पुहरना तहां परगटे ।
 सरसमेजसो ससे परगटे ॥ तदसु इला पुरुष तनु धारी । नाम सुदुन्न महीतल चारी ॥ सुत सह
 बैनसत पह जाई । रिशो सकल विरतांत सुनाई ॥ मनुके श्रीकंत भे ईचाकू । प्रगठ नाशिका ते
 मुन साकू ॥ मनुकी तिया अठ सुत जाई । नाभाग धृष्ट सर्पति नृपराई ॥ *~*~*~*~*

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॥ ॐ ॥

अह निरिख्य कहि प्रांशु फिरि कहिअै नागादिह । भूप कुहव ह्यध्र ए पालक प्रजा सुदिह ॥

॥ ॐ ॥ चौपाई ॥ ॥ ॐ ॥

भै सुदुन्नके सुवन सोहाए । उतकल अह विनताअ गणाए ॥ उतकल नृप उतर दिशि पाए । गय
 छहि पूरव गया सोहाए ॥ विनताअहि पश्चिम दिशि दोहा । देव अमानित सो शिखरिहा ॥
 प्रतिष्ठान जो देव सुराजा । सो सुदुन्न कह दीन्है राजा ॥ जो अब कसो प्रगठ कहावै । श्रीचरित
 दिग महिना पावै ॥ दंड आदि सुत तीनि सोहाए । प्रगठे फिरि सुदुन्नको जाए ॥ निकरिहक नम
 रथे प्रबोना । पावन परना पूर अहोना ॥ इस्लीवपुनै सुधसो जाए । जो सुहदवा सुनगुण पाए ॥
 प्रतिष्ठानको नृप तेहि करिके । गए सुदुन्न सर्ग सुद भरिके ॥ भै नाभाग तनै अलकाना । अंबरीष
 भागवत बखाना ॥ धृष्ट पुत्र धर्तक रणधीरा । सुत निरिख्यको सकी सुबीरा ॥ भै कह्य कहि मने सुबाने
 ते काश्य नाम गुण गाने ॥ भै नाभागदिहके वारा । ते सकरीकतके अनुवार ॥ सहि बहुरसना
 फिरि बरनागी । सहै दिजत्व कर्म अनुरागी ॥ भए ह्यध्र प्रांशुके बालक । ससे प्रसने सुहो
 बालक ॥ प्रांशु तनय भै भूतसभरता । नृप सर्पाति दुषन दक्ष दरता ॥ त्रै सर्पात जगदपराजोभ
 नृप आनर्त नाम अभिरामा ॥ कन्या एक सुकन्या नामी । भै अहि अयम अस्तुके सानी ॥ भै
 आनर्त तनै बलभारी । रेवाष्टपवर भूषिविहारी ॥ देवतको सुत देवत लापक । सुमहानोके प्रति
 सुखदायक ॥ *~*~*~*~*

॥ ॐ ॥ दोहा ॥ ॥ ॐ ॥

देवतको सुत औरहै अत परमित अभिराम । तिनमें देवत है बडे नीतिगिनुष मुषपाव ॥

देवतको कन्या भई तासु देवती नाम । से ताको विधिरे कहिअै सुनरीषराज ॥

॥ ॐ ॥ चौपाई ॥ ॥ ॐ ॥

गण श्रुत विधिको साखिठाडे । देखि मुंजरीरहे मुष पाडे ॥ प्यार बूजेउ विधिसो चित
 चाही । ईश देउ कन्या यह काही ॥ विधि हसि कहा जाई जग देखा । बलिअंम तनया दे लेखा ॥

यस्य करिष्यति मकारा ॥ अथि वरिणि जस्य शीतल मीरुः ॥ भुवनेन को नः ॥ ततः शीतल ॥ सुभक्तान्
 कृतिं सुरमण इदमे, सुमन समूह मुपै वरये ॥ भुभ वरु वरु मान् वरुणा, भो सुभक्तान् को नः ॥ अथि
 भूया ॥ अथि कुशलाय तनै प्रसन्नो ॥ अमर्तै तीनि वनेरहि करे ॥ हे द्विजन्त्र जे सुभक्तियुगे । तसुन
 भुवदिजन्त्र सुदिनतै ॥ तासुन तै विरुः ॥ धनुषारी । तासुन संरुताय वरुभारी ॥ हे सुन संरुताय को
 जाए । अकयाय कयाय सोदाय ॥ अकयाय को सुत जगजेतां । भै प्रयेन रूप नीति निकोता ॥ तसु
 तुभे यवनान्त्र प्रसोले । मांघाता सुत तासु खलोले ॥ हे सुत मांघाता को तातां । पुरुकुल मुपुकुद
 सुदाता ॥ पुरुकुल को सुत विरुयता । भै वैदसु मुयीमुय ज्ञात ॥

॥ ७ ॥ दोहा ॥ ७ ॥

ताके सुत शंभू भए तासु सुधन्वा पूत । सान विधन्वा तासु सुत शंभुपारी वज्रवूत ॥

॥ ७ ॥ चौपारद ॥ ७ ॥

तनै विधन्वा को सुखरासी । भै जेज्यारण भूमि विरुयारी ॥ भये मासु सुन सुन प्रसन्नारी । गण
 सत्त्ववत अति उनमादी ॥ पाणिग्रहण समैने तेसी । अथेति प्रयाकी तिग्या अथेति ॥ अथेति मुनि
 जेज्यारण अति कोपी । तासो कछो जानि पयलोपी ॥ तू प्रणालकर्म अधिकारी । इति कहि
 दीन्है उ ताहि निकारी ॥ गुरवशिष्ठ नहि कोन्ह निवारण । आकी रंउ अयस्य सुभक्तियुगे ॥ अथ
 जेज्यारण मुनिव्रत धारी । वसे जाइ वन शैलवचारी ॥ गुरजन्त्र परिजन परजा जेने ॥ गुरजन्त्र
 पासहि सब तेने ॥ जेज्यारणको तनै सदाया । गुरवशिष्ठपै दुइ विधि रोजन ॥ गुरवशिष्ठ
 यवरण भयज । ताके पाप मोदसब गयज ॥ अथि सबसुनको गुरव उपासी ॥ अथि गुरवको
 गुरवण बाधी ॥ कौशिकको तिय बेचन लापी । सो अथि वरु सुपतय सुभक्तो ॥ अथि गुरवको
 भीरज दीन्है । अथिसुत बंधन मोचन कीन्है ॥ अथि गुरव नारि मासु पयंजाले । कौशिकको
 अथिचाबै ॥ एक दिना धूम पाएसि नाही । गुर सुदभी विनि कोन्है सि ताही । को सुनि गुरवशिष्ठ
 अतिकोपे । तासु विरंजु नाम आरोपे ॥

॥ ७ ॥ दोहा ॥ ७ ॥

पित्त अबज्ञा प्रथम कहि गोबध करिना देय । तीजे ने अतः विषो रनि शिखरु भै कोय ॥

॥ ७ ॥ चौपारद ॥ ७ ॥

इतनेने कौशिक मुनि आए । समाप्त सुति अति सुख पाए ॥ अथि मांघु वरुय एहि
 वांज । अथेति खदेइ सर्वदे प्रयंज ॥ कौशिक वांज इ अथ सुभक्तो । अथि गुरवको वजार
 नगारा ॥ मुनि तेहि यज्ञ करावम लाये । अथि अथि को अथरय पाये ॥ अथि गुरव को अथ तहां न
 आए । गुर मखभाग न शीन्ह सुभाए ॥ अथि गुरव जानि भूपकर करनू । अथि रंहे सब जुदे

धरन् ॥ तत्र कौशिकं मुनिं कौपं बडावा । भूप हि सरं सदेह पठावा ॥ चला वशिष्ठ हि गरव
सुनारं । श्रीवशिष्ठ कहा वशिष्ठ रिसारं ॥ गिरत देखि तेहि गवण मजारे । उंतरउ कौशिक वचन
उचारे ॥ रंहा विशंकु लटकि नभ कैसे । विधि वंशुक विच लोहा जैसे ॥ भैं विशंकुको सुत
भूमरता । नृप हरिचंद दुवन दल दरता ॥ तासुत रोहित अरिभद्वारी । हरित तासु सुतहित
हियहारो ॥ ता सुत वंशु वंशु सुत दोरं । विजय सुदेवं कहत सब कोरं ॥ भए हकक विजय सुत
बोरा । तासुत एक सब गुणन गंभीरा ॥ एकको पुत्र बाऊ बलवाना । तेन लखे नृप नीति
निषाणा ॥ वृषति बाऊ पै अरि चठि आए । तिनसौं बाहु पराजय पाए ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बाऊ जाय बनभै बसे श्रीवसुधुषिके पास । तहांभए सुत सगर नृप जाको सुजय प्रकाश ॥

दोरदंड कुदंडसों धरि कोदंड कराल । सगर रोष परचंड करि जोत्यो तिन्हें उताल ॥

श्रुतिश्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिषाग्निना श्रीवन्द्यीजनकाशीवाशिगोकुल
नाथात्मजेन गोपीमायकविना विरचिते भाषायां भारवान्तर्गते हरिबंशदर्पणनाम चतुर्थाध्यायः ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जनमेजयउवाच । केहि श्रीगुण नृप बाऊ पराजै । लहे कहे मुनि शंसै भाजै ॥ सगर नामताके
सुतकेरा । मो काहे करि कहे निबेरा ॥ कहा मुनीशं सुनुऊ परबोना । बाऊ भूप हे व्यसन अधी
ना ॥ जुवा विकार लैलि दिन लोए । कै जुबतिनके संग परि सोए ॥ असती निरगुण हास्य प्रधीने ।
तिन्हे लभसह करि हित चोन्हे ॥ संबो सुभट गुणी निमित्तके । तिन्है न कीन्हे प्रियसम जीके ॥
सोअनुजि अरिअव गाजन लागे । लरि न सके तब एहि गुण भागे ॥ काल जंव सक हैहय आदी ।
शिवराजवधि ए उम मादी ॥ सगर मातुकी सैति अघानी । गर्वसने गर दोन्हेसि जानी ॥ गरसै
भयो न कछू अकाजा । नरसह भयो पुत्र शुनु राजा ॥ ताते सगर नाम मुनि कीन्हा । मंत्र दीव्य
अस्त्र कहे दोअस्त्र तिन अस्त्र नृप रिपुदल जोता । पालेउ प्रजा पुनीत सुनीता ॥ सगर नृपतिकी
तिया पुनीती । रहि दोष शुभचरित सुनीती ॥ श्रीवसुधुषि तिनकह बर दोना । दै डमि कहा
लेऊ अरना ॥ बाठिअजार पुत्र एक बारा । होहि एकके एक कुमारा ॥ जेठी तिथे एक सुत मागो
कोठी साठिअजार अनुरागी ॥ भर्द गर्बिणी दोअनारी । दम्बरकी माया अधिकारी ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौशिककैतिव एकके नूषाके आकार । भरे पुत्र तेहि जोअसम तिलमित साठीअजार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

घृतभरि कुम्भ भूप धरवाए । साविहजार मोदसौं छाए ॥ एक एक सुत तिमनै कीन्हा । एक एक प्रति धादन दीन्हा ॥ समै पाइते भए सधाने । अतिबलवान जगतमै जाने ॥ जेठो मियके सुत शुभ करणी । भेअसंजस पालक धरणी ॥ भूप सगर जग जीतन बोधे । अन्धमेध बरबल आरोपे ॥ साविहजारपुत्र संग लागी । चले अन्धरक्षण अमुरागी ॥ अघिकोएनै अन्धघोरार । बांधो इन्द्र कपिल ढिग जाई ॥ अन्ध अद्रिस्थ भए नृप वारे । मंही खोदि सागर करिडारे ॥ जाई पताल कपिल कहं देषे । अन्ध निकट लखि अतिसै तेधे ॥ तब तिन तहां कीन्ह उतपाता । कपिल कोप करि तिन्है निपाता ॥ सगर जाइ बळ अलुति कीन्हा । कपिल ताहि शुभ आशिष दोन्हा ॥ सगर सुतनके लंधे बनाए । ताते सागर नाम कहाए ॥ सगर सुवन असभंजस नामी । ते भं भूरि भूमितल स्वामी ॥ असंजसके सुवन महीपा । अंशुमान भे पालक दीपा ॥ तासुत भूप दिक्षीप सुसाजा । तासुत भए भगीरथ राजा ॥ तासु सुवन श्रुति स्मृतिपथ गामी । श्रुतिके सुत नाभाग सुधामी ॥ भे नाभाग तनै बरबीरा । अंबरीष रणकर्कस धीरा ॥ तासुत सिंधुदीप दलवाहक । तासुत अयुमाजित गुण गाहक ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अयुताजितके सुवन श्रुति भे रतवरण सुजान । तासुत आर्त्तापणि नृप शीसक धमुष विधान ॥ तासुत भए सुदास नृप तासुत कल्मषपाद । दुतिथनाम है शिवसह जो पूरक कहलाद ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तासुत सर्वकर्ष जगजाने । तासु तनै अमरम्य बखाने ॥ ताके तनै निधनय गामी । ताके सुत आनमित्र सुनामी ॥ ताके सुत दुलिदुह गुणगामा । ताके सुत दिलीप हविधामा ॥ भे दिलीपसुत रघु नरमाऊ । रघुके सुत अज दीरघवाऊ ॥ अजके सुत दशरथ बडभागी । तासुत राम स्वजम अंशु रागी ॥ श्रीश्रीपति सिधराम सुखामी । बंदा न्यामक अंतरजामी ॥ भरथ लखिनन सरस सोहाए ॥ अरु शत्रुघ्न शत्रुहन गाए ॥ राम अनुज ए परम पिआरे । सुंदर नृप दशरथके आरे ॥ रामचंदके सुत धनुधारी । भे कश लव जगयानदकारो ॥ कुशके सुवन अतिथि श्रुति लक्ष्मि । तासुत निषध शुभे सुदगच्छिअे ॥ तनै निषधके नल नय नागर । नलके सुत नभ सब गुणआगर ॥ पंडरीक नभ सुत सुत ताह । भए जेनेधन्या सुखराह ॥ तासुत देवानीक प्रदीना । तासुत अर्हानगू गुणनि अहीना ॥ तासुत भए सुधन्वा गाए । तासुत नल नय निपुल कहाए ॥ नलके सुवन उवस्थ परताकी ॥ तासुत बज्रनाभ दलदापी ॥ तासुत शंख पुष्य सुत ताके । तासुत अर्धसिद्धि अरभाके ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए सुदर्शन तासु सुत अभिवर्ण सुत तासु । अभिवर्णके शीघ्र सुत नर तनै भे जासु ॥

अए मरुको तवय मृप विभुतवत मतिधाम । शुभद बंश बरण्यो सु जेहि प्रगटे राजाराम ॥

सृष्ट्यंशके एकहेजे जे पुरुष प्रधान । इनते भयो पसार सौ को कहि सकै सुजान ॥

आइदेव बर देव हैं सृष्ट्यंधामके धाम । तासु बंश बरण म प्रदे सौ इत उत अभिराम ॥

अस्ति श्रीकाशीराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्वाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवाग्निगोकुल
नायात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायांभारतीयान्तर्गते हरिवंशदर्पणोनाम पंचमोऽध्यायः॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

हरज आइदेव मुनि कैसे । को हैं पितर कहे सब तैसे ॥ जासु नाम लै पीछां देहीं । परे कर्म
गतिते किमि लेहीं ॥ तेहिनें इतर पितर कोउ होई । कहे प्रगट करि मुनिबर सोई ॥ विधिवत
आइ किए जे तोषैं । आइ करै तेहि बज्रविधि पोषैं ॥ शुनै बेदविदसों यह बाणी । पितरहि पूजहिं
सुरशुभजानी ॥ सो सव कहे मुगोश बुजार्द । सुनि तबकहा हरषि मुनिरार्द ॥ पूकेउ प्रश्न भूप
तुम सोई । नृपति जुधिष्ठिर आनंद भोई ॥ भोग्य पितामह सो इमि बृजे । जाके बाण बार बज्रजुजे ॥
सो मुनि बोखे भीषम तावें । शुनऊ भूप एकदिनकी बातें ॥ हमहें करत आइ सुखदाता । भूतें काढि
हाथ मम ताता ॥ मागत लगे पितरनि जु पानी । सो प्रकारहों अनुचित जानो ॥ कुशपैं धरयो पिड
कमहोसों कृष्ण खिह्यै प्रसन्न पितु जोसों ॥ कह्यो सुवन हम कोन्ह परीक्षा । तुम विधिसों
करिहो प्रसन्नो ॥ तले कुपथ जौ भूतलहानी । तेहि मग चलै प्रजा अनुगामी ॥ ताते धर्मशास्त्र
विधि लोपै । सो अनुवित लखि ईश्वर कोपै ॥ हो तुम निपुण नीति अनुसारी । विहित अविहित
विधानविचारी ॥ मृत्युकहत जेहि जगत पुकारे । सो सुत रहैं सुवस तिहारे ॥ दै आग्निष डमि
सहि सनेऊ । कह्यो मंमि सुतवर तुम लेऊ ॥ इहै प्रश्न तव भूप तुम्हारा । हम बुजा तिनकहि
निश्चारा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आदिदेवके सुवन है पितर प्रसिद्ध उदार । विधिवत अर्चनहारकों सुख संपति दातार ॥
गोत्र नाम लै जासु जन करत पिण्डको दान । सो जेहि गतित ताहि तित पोषतर सुजान ॥
प्रश्नोत्तर संक्षेपसों बरखि कहा हम तात । कहि हैं सब बिसतारसों मार्कण्डे अवदात ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

यह कहि भेपितु अंतरध्याना । हम तिनसों सब कहा विधाना ॥ मार्कण्डेय कहा मुनु
भूपा । पितरप्रभाव प्रकार अनूपा ॥ मेरुशिखर मुचि निरखि सुहावन । हमहे करत तपस्सा
पावन ॥ तहां विगान चारु आसीना । आए सनतकुमार प्रवीना ॥ लसै विमान मधुते कैसे ।
ज्वलत अग्निभे सबरण जैतें ॥ तब हों करि दंडवत प्रणामा । अर्घ पाय दे बृजेउ नामा ॥ तब

तिन आपन नाम उचारा । मुनु मुनि हैं हस अमनसुप्रसन्न ॥ अविधि अचरुद सुभाषण तारु ॥
 निरखि भए हस तुम्हहि लखारु ॥ इहित होइ मुनिसे खेच ॥ तत्र सुत पूजा प्रसन्नदेह ॥
 पित्रको प्रभाव किष्काता । जो तुम बूजेउ नृप मुखमना ॥ उगलपुत्रर हाहाता वैशे ॥ भीषण
 शूरो कर्षो सो तेहि ॥ ब्रह्माचारि देवकृष्णाय । निज आराधन छिन नमनाइ ॥ होने पाउने
 विधि हि मुजाए । चाहि अतस सुख नै मन जाए ॥ भाषदियो विधि निरखि मुजाने । मुख
 हृदय तुम होऊं अद्याने ॥ ते निज हृदय मुन्य खलि आरु । विधियों कियो बिनै गुण्यारु ॥ त्रिभि
 हास कथा सहै छतपाइ ॥ अब तुम निजसुतपे चलि जाइ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वै जो कहैं निष्कारिसे प्राञ्जित करो अखेर । होइ हि तव चैतन्य प्रसन्निति हि शानि निरवेद ॥
 ॥ * ॥ चौपारु ॥ * ॥

सो मुनिने निजसुत पहं आए । तिनसें सब विरमांत मुनाइ ॥ मुनि ते तिनै उपाय बताए ।
 सो करि ते ब्रह्मविधि सुख पाए ॥ तत्र सुत कथा प्रसन्नोत्तमाली । अक्षयपुत्रभव पर सुखमानी ॥
 सो मुनि आदिदेव अंगवाए । कार विनाद ब्रह्मापइ आए ॥ विधियों कयो कथा मुनि बेधा ।
 सत्य कयो वै परम सुमेधा ॥ देह जनक तुम वै तुववधि ॥ अमररतिने प्रियर सुभारे ॥ तुम
 देउ जने पितर अहरेबा । हो अन्योन्य पिता सुत भेसा ॥ आदि देव तत्र विधि मुनायो ॥ सुतपइ
 आइ पितर कहि भाषे ॥ प्रथम पूजि तुम कहं सब लोग ॥ अहं हि मुद नमं अयन्योग ॥ प्रोखे
 पूजन करि हि इमारा । सुर अर असुर सकल संसार ॥ तवो मुतो निरीय विराधे ॥ भए
 पितर प्रसिद्धि अगार ॥ पितर निमित्य कर्म जो करी ॥ निज कर्मक मुद संसल धरणी ॥
 पितर द्रव नै चंद्रहि पोरै । चंद्र सोषधो शय्यहि तोरै ॥ सबकहसाइ देवकी बानी ॥ मुनि निज
 कोल प्रसन्न सुमानी ॥ किते पिषगणहै सो कहि बै । बसत लोक नैहि खरि ; कुलजिनि ॥ अहं
 कुमार कहा सो जायो । हे गणसात पित्र अनुमानो ॥ * * * * *

॥ दोहा ॥

मूर्तिमंत गणधारि हैं हैं समूर्तिगत तोम । सग्रत सात रमि विषेण्ड मुमुमुनि संहत प्रकोम ॥
 ॥ * ॥ चौपारु ॥ * ॥

तिनके लोक वंश सब भाषे । तुमसें मुनिब्रह्मोद बंधारु ॥ तिनमें तैर्नि समूर्तिगवाए ।
 भूप तसु तिननाम बताए ॥ प्रथम कहें वैश्वसुमानी । अपिशाता अमरवानी ॥ संतपे बरहिबेद
 कहें उदारु ॥ लोक समागत महा बिहारु ॥ अमिराजके वागत आए । मनमय मुधि मुन मन जे
 पाए ॥ इन्है देवचरचै करि आदर । और विमान तासु मुनु सादर ॥ पितर विदित बैराज

कहाए । सुता नामसिक ते उपजाए ॥ मेना नाम तामु करि लीन्हे । सो हिमवतनगेये हि दीन्हे ॥
सुत मेनाके तासु सुभे देया । जोष तासु सुत उद्यत भेसा ॥ तीनि सुता मेनाकी आई । ते दुसतर तप
करता आई ॥ जेठी सुता अपरणा चाही । परण अहार कौन्हे जिन नाही ॥ दुतिय एक परणा मुनि
लीन्हा । एक परण तिन भोजन कीन्हा ॥ तृतीय एक पाटला कहाई । पाटला पुष्प एक तिन खाइ ॥
भई अपरणी शिवसंयोगिनी । दुतिय भई देवसु सभानिनी ॥ एक पाटला ममप दुखारी । जैगोषंथ
कीन तेहि नारी ॥ अप्रिसाता पितर सुधरितातनया तासु अंष्टिदा सरिता ॥ कहत अंष्टिदा सरिता
आसो । भयो अक्षोद सरोवर तासो ॥ सो सरिता बिनु पितर निरये । व्याकुल तासो निजहिय भये ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बिनु देखे निज पितर अह बिनुजाने नृण नाम । सज्जित न्है अतिसीध करि भई अक्षिदा हान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बली सरन तव पितर निरेखन । देखिपरे तई पितर अभेखन ॥ तहां अनावसुको तेंद देखा ।
सहित अत्रिकाति आयु भेसा ॥ तासो कहेसि मुन ऊ करि होइ ॥ तुम दोउ मातु पिता मम
होइ ॥ आपन पितर ताहि बिनु लीन्हे । और हि देखि पितर करि लीन्हे ॥ निजगरिमा छित
तेहि अब सोई । भिरी तहांते तप बल खोई ॥ देखेसि तव सुचि चडे विमाना । तेअपुंज चसरेणु
प्रमाणा ॥ नाहि नाहि लखि तिन्है पुकोरेसि । तांसु कृपा लहि धरता धारेसि ॥ ते बोले हम
पितर तुम्हारे । तुम और हि कहि पितर उचारे ॥ योग स्रष्ट ह्यै ताते जैसे । गिरिज भूमि कौज
रोखे कैसे ॥ सुर अर असुर आदि सब लोग । औसि भोग धै निजकृत भोग ॥ विधि विरथ्यो जो
विहित विधीया । विविध भातिसो विधि बलवाना ॥ ताते कहे भविष्य तुम्हारा । जो ईश्वर ईक्षा
अनुसारा ॥ न्है हे रूप अनावसु आई । हापरमै निजकृत गति पाई ॥ तासु अत्रिका होइ हि नारी
पति व्रत पूरित पति हि पिबारी ॥ पितर वितिक्रम फल तुम पाई । मत्स्योनिजा ह्यै हो आई ॥
लहि पितु मातु इन्है सुख भे हो । अब ईछे ऊ तव परतछ पैहो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारावरसो सुवन तव उत्पति करि हो एक । एक वेदसो चारि जे करिहे सहित विवेक ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

किरि कहि ह्य संतन पति प्यारे । उत्पति करिहो है शुभ वारे ॥ विदित विविध बीज
बलवाना । अब चिन्तद पाद सुजाणा ॥ तव बह तन तमि सब सुख बोका । आइ भोगि हो यह
निजलोका ॥ कछो पितर यह सब जैसे ही । लछो अक्षिदा सो तैसे ही ॥ पितर बरहिषद जो

शुभरासी । सो वैवाजलोकके बासी ॥ ते पुलासिके दुषम सोहाए । नामस सुता सोवरी आए ॥
 होपरने सो यह चरवरनी । होइ हि व्यासपुत्रकी घरनी ॥ चारिपुत्र प्रक कर्मा सोइ हि ।
 शुकाचार्यके मम अतिभाइ हि ॥ छत्र गौर प्रभु शंभुकहे हे । पुत्र अमकी अनुमिजि गेही ॥ अमानस
 सुता शुभचारी ॥ होइ हि सोई अमहकी भारी ॥ तासुत प्रसादत्र मुहधरि ही । तपवला बंध कहिने
 करि हे ॥ ए अमूमिबरे पितर बखाने । जे गेह तीमि जनतमि जाने ॥ सुर नधके असुर चरकि मर ।
 असुर जस इन्ह अरचवर ॥ मनिबंत गल चारी बतौए । तिमकी नाम शुभक ममभाए ॥ शुक्रस
 आंगीरस शुभधा जौने । शुभद सोमपा शुनि सुख नौने ॥ कहि सुखल गल पितर सधाने ॥ ति
 बसिष्ठके सुवन बखाने ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दिव्यलोक तिमको महत पूजक ब्राह्मण तासु । मनया ताको मानसिक प्रणट नाम नौ जासु ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो शुक्रकी पतिनी गुणखानी । छी हे शुनु मुनि बर गुणज्ञानी ॥ जे आंगीरस पितर गल कहिचै ।
 ते आंगीरस तने श्रुति लखिचै ॥ ते क्षत्रिय कहि पूज्य पुणीता । देनहार अरचक चित चीता ॥ सुता
 यशोदा मानस ताकी । ता पति विश्वमहान सुताकी ॥ सुवन दिलीप राज कवि ताके । क्षत्रिय
 सराह्यौ सुचिमल जाके ॥ पितरसु स्वधा पुलहकी बारे । ते निमि कामग लोक बिहारे ॥ पूजहि तिन्है
 बद्रथ विचारी । विरजा ताकी सुता दुलारी ॥ तापति भूप मऊव नथंगामी । सुवन थजाति भूमिके
 खानी ॥ बरणे पितर सोमपा जाही । हिरण्य गर्भ उपजाए ऊ ताही ॥ मानस लोक बिहार हि
 सोऊ । पूज हि ताहि स्रष्ट सब कोऊ ॥ मानस सुता तासु अह हरिता । नाम अनेदा प्रावनि
 सरिता ॥ पुरुष कुलपति अनुपमा पार । असद नाम सुत तेद उपजाइ ॥ आइ देव इ एफल
 दायक । ए निमि अरचन करिवे लायक ॥ पितर प्रभाव भय अतिभारी । सनत सुनार कही नभ
 चारो ॥ रहे पूर्व युगने शुनु ताता । भरदाजके सुत गुण ज्ञाता ॥ योगक्षेत्र ह्यौ ते एक बारो । गिने
 सुमान सरोवर पारा ॥ कहुदिन पै ते तू तजि जाई । योग किए हे ताफल पाई ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

छी सुमनस सो भोगि फल कुरुचेनो आर । कौशिक को पितर सुत भय विधिगति कही न जाई ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

उत हू वै कर प्रर धनुषारे । पित्र कने मिसि सुन बळ मारे ॥ नास बनारि उदर भारि लोहा ।
 जूव निहारा पितर हि देही ॥ हिंसा अघते कहि कुजानी । निज कृत कर्म कथा बत होनी ॥ पितर

भए सुवन सतनीपके नाम सबनको नीप । भूप देय पंचालके भूषित कीन्हे दीप ॥

॥ * ॥ चोपार्द ॥ * ॥

जेठेके सुत समर कहाए । तीनि सुवन तिनके गुण गाए ॥ पर सदस्य पारापर बहुराज । परके सुत भे पृथु पुरपासक ॥ पृथुके पुत्र सुकृत धनुधारी । तासुत भे विधाज विचारी ॥ तासुत असुत भासक विधि चीन्हे । छात्वा सुता ताहि युक्त दीन्हे ॥ तासुत ब्रह्मदत्त भे आए । समस कौशिक सुत भे गाए ॥ नृप विधाज बहुरि जग आए । ब्रह्मदत्तके सुत भे आए ॥ विश्वकेन नाम भो ताको । दंड सेन प्रगद्यौ सुत जाको ॥ ब्रह्मदत्तको सुत एक औरो । सर्वसेन दासी हो औरो ॥ जाको धरु श्रांख रंगराती फोरसि पालित पक्षीघाती ॥ दंडसेनको सुत बल भास्यौ । हो भस्त्राक रक्त त्रेहि भास्यौ ॥ तासु भयो उयायुध बारा । सतनीप कहं जेद सदमारा । हो सुधि कामनसे तस बाणन । मारो परौ पुरुष पंचानन ॥ शुनि उयायुधको यह काजा । तूभो विदसि युधिष्ठिर राजा ॥ पूर्वजन्मको कोय ह पापी । केहि गुण यहि मारे ऊ परतापी ॥ भीषत कहा मुनज भूपति वर । अन्नभीटको सुवन जबीनर ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासुत भे धृतिमन्त अर तासु सत्वधृति जानि । लको सुत द्विद नेनिनृप तासु सुधर्मा मानि ॥

॥ * ॥ चोपार्द ॥ * ॥

तासुत सर्वभौम नृप जानो । सुत मंहान ताको अनुमानो ॥ भए रकुमरय ताके बारा । तासुत भयो सुपार्श्व उदारा ॥ तासुत भयो सुमति बलदाना । ताको तनै सुव्रति मुखवाणा ॥ तासु पुत्र हत वेद विचारी । तासुत कार्ति भयो बलभारी ॥ सोद उयायुध भयो बहीपा । जेद बल कियो नीपकच्छदीपा ॥ उयायुधको सुत शुनुताता । सेननाम भो दीरघराता ॥ तासुत भयो सुबीर सुबीरा । तासुत भयो नृपंजय बीरा ॥ बहुरय ताको सुवन रसाया । एते बीरसंग बिसाला ॥ उयायुध उनमत्त अचेतू । जाउर सागर औगुण सेतू ॥ हति भीषत फिरि रहहि मरेसू । भेजेसि धूत दूत निरदेशू ॥ राज काज जुत जीवन चाहौ । मननिदेश तौ भीषत पाहौ ॥ तामनेध काशी निज माता । देह भोहि तुम ममबलज्ञाता ॥ कै सन मुख यहि करौ चरार्द । केहि तयहि कै जाऊ परार्द ॥ सो शुनि हों करि कोप करात्ता । कछो सजन शुभ सुभट बिसाला ॥ लखिन तव नृप तोनि शुनावा । लमधा करिवो उचित बतावा ॥ सास दान अर भेद अपार्द । परिसे करि लोभे नृपरार्द ॥ ताहि न जो मानै सठ कोर्द । करै दंड तव नृप मय जोर्द ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो शुनि ताको पास हों दूत पठायो बढ । तेद समुजायो भांति बड एक न मान्यो मूढ ॥

॥ * ॥ चौपारद ॥ * ॥

नव दंड साजि नाजि चठि ताता । किधो आर हो तासु निपाता ॥ नखी तीनिदिन लरि
 उनमादी । खर्वयसापिद सगरव बाडी ॥ तासु नरख सुनि चतिसुख राजे । रहे नीपके सुत ओ
 भोजे ॥ भूषते भोज नम पाद निदेषु । वसि कीन्हउ पाखन मिज देसु ॥ तासुने इपदराज
 चंभिकारी । जोति नहि अरजुन धनुषारी ॥ ताकर देव द्रोण कह दोन्हा । सो वह द्रोण भाग दे
 कीन्हला साधा लियो द्रोण धनुषारी । साधा इपदहि दियो विचारी ॥ भूप बुधिअर मुदनै बागी ॥
 किहि भीषणसो बूजेउ झुगौ ॥ सर्वसेनको कोरेसि आखे । कहिगुण चटक आपु सी भाखे ॥ भीषण
 कहा मुनउ नरबाह । पराक्रम करे दीरेव बाह ॥ ब्रह्मदत्त शृप तपकर शानी । वृष्ण हि सब
 जीवमकी बानी ॥ इत्यं एकाते करनै राखे । सहित सनेह सखा कहि भाखे ॥ सो वह चरण
 देवांतर जाये । शक्ति आर सब पावा गुनाये ॥ ब्रह्मदत्त भूपतिके बारे । सर्वसेन हे परम दुलारे ॥
 भयो चटकके प्राण खपारो । एक वेदुवा अनि सुकुषारा ॥ करत कुतूहल भूप कुमारो । तासु नरम
 नर नर । चण्डिका मन्मथी । वेदुषपीक दबाने । ब्रह्मदत्त सो गुनि पहिताने ॥ आर चटक तह
 योगति देखी । भर मोह बस विकल विशेखी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मुरखिन नै फिरि चेति सो करि रोदन परलाप । जह कहसि फिरि भूपसो निजहिचको संताप ॥

॥ * ॥ चौपारद ॥ * ॥

भूपजि कुन नर नर । जह नर नरे । किमि तुष सुत नमसुत कह नारे ॥ पीडित सुधितदीन शरणागत ।
 इत्यं नर नर । चण्डिका मन्मथी । वेदुषपीक दबाने । ब्रह्मदत्त सो गुनि पहिताने ॥ आर चटक तह
 योगति देखी । भर मोह बस विकल विशेखी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वेडक प्रभु रीति यत्नको बल ॥

भीषम फेरि कहा जनभेजय । भूप बुधिधरिसें अति मुदमय ॥ कौशिकको सुन सात बताय ।
 तिनको जन्म कर्म सब माए ॥ जत कुसित करि जे सब विगरे । पिन प्रसाद मन्त्रीविधि सुधरे ॥
 जानि तिन्हे कर हीके छोटे । कौशिक तिन्हे कियो चषघोटे ॥ गार्ग्यसृष्टिने छे मनभाषन । तासु
 गाय बन गए चरावन ॥ तेहि हति रक्षितों मासु बनाए । पितर न अरधि मूढ सो साए ॥ सुमिहीं
 कहेनि बत्स सुमि खोज । धेनु हिं हतेसि पाव बन गेज्ज ॥ सुहृ हृदय सुमि सेर सति जाने । कछुदिन
 वैते मरे अधाने ॥ व्याधा भए सहोदर जाइ । तेहि अवको फल ते सब कार ॥ पितर प्रभाव
 सुद्धिर्नात तिनकी । भद्र रही सुधि पूरन दिनकी ॥ घोर जीव मारिकौ तेछे । जाने मता पिता कह
 पोवै ॥ तिनको मता पिता तन छोडे । ते तब मन हिंसाधों भोजे ॥ बनमै नसि मन त्यागन कीन्हे ।
 तब फेरि जनम मृगाकर लीन्हे ॥ भए कलींजर शैल विहारी । सवै पूर्वः मृगाकर विहारी ॥
 कछुदिन मुनिवत रहि तन त्यागे । फिरि भे चक्रवक संग खाने ॥ तितज्ज पूर्वः तर्कने ब्राह्मी । ध्यानवर्च
 इत धारे जानी ॥ सो तन तजि भे हंस उदारे । मानसरोवर सुधर विहारे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शुभग सहोदर सात ते जीति सार परवीन । ब्रह्मचर्यइतधारि हे जोग अनुतिमै लीन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गए तहां तिय सहित विहारण । नृप विधाज अरिंद विदारण ॥ तिनको सुख प्रसाद सति
 नीको । सोभ्ये एक हंस मुचि जोको ॥ जौ कछु तप कीन्हे एहि दीपा । तों सह चैसे होई मन्त्रीपा ॥
 औरौ द्वै बोले फलवीते । हम मनो छेहै हित हीते ॥ रहे चारि ते मुनि कृपि भोए । सुम मूढ
 तप फल नाहक होए ॥ इनके बंध प्रगटि हो जाई । ए दोउ छेहै मन्त्रीभार ॥ येषु जे साहिरु है
 मुम लीन्हे । राज्य साख सौ गहि भव कीन्हे ॥ शुनो तात यह भावो भाखे । फिरि जोग प्रेहो
 कहिराखे ॥ पुरुष एक असलोक मुनै है । सो मुनि के मुवचित समजै है ॥ तब सुम सैति जोग मग
 गाहहा । तेहि प्रसाद उत्तम पर लाहहो ॥ तिन हंसकहं खलि सुख पाए । नृप विधाज बडरि
 घर आए ॥ तासुत अनुह धर्म धर आगर । ग्रील समर सर्व गुणसागर ॥ कला सुता ताहि मुक
 दीन्ही । वितचैतन्य चारुता धीन्ही ॥ वत नृपमणि विधाज विधारी । सुते कह कियउ राज्य
 अधिकारी ॥ सब तजि आपु जोग इत धारी । बेसे जाई तेहिसर शुभ चारी ॥ इन्हे देखि जित
 हंस सोभाने । ए जित हंस सरब शुभ माने ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सायकं तमस्वीयवे तोना इत्युत्तमाने । जो अस ईशा नृप मणि सो तस लोको विधानः ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

इत्यौ राजमपि सो राजा । अनुहपुत्र न्हे विसद विराजा ॥ ब्रह्मरत्न भो नाम सुसजा ।
आदि लेखि द्विचतुरपति लाजा ॥ वैदे नभी भए सुनाए ॥ कंडरीक पचास कहाए ॥ तत्र जीवन्मकी
कृष्णे वाली ॥ ब्रह्मरत्न नृप निरनसद्गामी ॥ ब्रह्मरत्नकहे राज सुधारी । लक्ष्मी परमपर अनुह
संज्ञारी ॥ देवता नृपकी सुता दुखारी ॥ संसति ब्रह्मरत्नकी भारी ॥ वैजे चरि हंस वर सोपी ॥ त्रियस
सुहि विरदके भागो ॥ सो तमस्वीजे तेहि पुर आए ॥ ब्रह्मरत्न जाके पति गए ॥ आषो दुज्जके सुन
सुहा दारण चारी भए ल्होहर भारी ॥ कजु दिन मै ते तजि पितु माता । कानन बसन खेलें सुनु
तामा ॥ माको पिता बोले ॥ कौन्हा । तेहि अशोक एक दिन दीन्हा ॥ भविन सहित नृपकहे
घारी ॥ एह अशोक मुनाएऊ ताही ॥ देह भूय सो लेह मुद भरियो ॥ भगवत भजन सुधित कै
करियो ॥ तब नै जोर भए बनवासी ॥ योग जगतिके विसद खिलासी ॥ ब्रह्मरत्न लै तिय बर दीडी ॥
करन एक दिख हेवनकी डी ॥ तह पीपलिका दंपति भोले ॥ रति चेटित आपुसमै बोले ॥ * * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो शुनि सुखद ज्ञान नृप समुजि हसे तेहि काल । सो लखि जगन्धे नृप घरणि भोहि हसे चितिपाल ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

हठि बुजिसि हसिबेको कारण । सोविरतांत कह्यौ भूभारण ॥ सो शुनिसन्नति साच न मानी ।
बूजिसि पानेसा कहि सुदुबानी ॥ गिरा पिपलिकको तुम जाना । केहि कारण सो कह्यौ विधाना ॥
योगधृष्ट तुम ही इतधारी । कै ईश्वर आशिष अमृतारी ॥ तब भूपति अनशनद्वत लीन्हे ।
नारायण आराधन कान्हे ॥ छठर निशि नारायण आए । दंगोहर इति ताहि सुनाए ॥ चिए
भावना ही नृप जोर । हारति प्रगट काल्हि सब सोर ॥ यह कहि भे प्रभु अन्नरध्याना । धन्य
आपु कहि भूपति जाना ॥ प्रात न्हाय सर सचिव समेता । रथचढि भूपति घले गिकेता ॥ इतभेने
नृप वाह्यण शार । चारा हंस जोस सुतहोर ॥ दे अशोक भए बनवासी । सो वह डाह्यण वद
खिलासी ॥ भरो भरे सद सममुख आया ॥ भूपति सो अशोक सुनाधा ॥ व्याधा सात दसा रणदेशा
गिरि कालीजर पमाभशा ॥ फिरि सरदोप रहे कौका । मानस सरभे हंस यशोका ॥ हभ
उत्तम पर जात सयान । तत्र वतऊ सति रहऊ भूलान ॥ शुनि नृप दाउ भविन तमजा हे । सब
विरतांत समजि मन नैहि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

किरि भूपति चैतव्य ऋ तेहि विप्रहि मनमान । गोनरदह भूमि दे दिव्यो प्रसन्न सुजान ॥
निध्वक्सेगकुमार कह करि राजा सुखदान । सहमित्य संधिव सुजान नृप साधे जोष विधान ॥
अक्षित्रीकाशराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्याश्रीभिरामिना श्रीवन्द्यप्रकाशप्रतिभोजकुल
माधासजेन गोपीनाथकविना विरचितेभाषायामरिचान्तर्गते हरिवंशदर्पणेनाम सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

॥ कियो प्रभु अनुभागी ॥ बुजिय कृष्णि

बंशे बैवहारा । सो अब कहैं सहित विसतारा ॥ प्रह्लाको नामस सुत जाएषी । अचि सुनीश्रीद विद
गाए ॥ ऊर्धवाऊ ऋ अत्रिसुनीशा । कियो तपस्या शुभु अबनीशा ॥ तनिहृदय बरिस रुद बाढे ।
तरसभा हँ अचल ऋ ठाढे ॥ दिव्य बरिस इतनेके बाने । तब केहु रचना भजनी राने ॥ सत्वहि
करि सो मत्व सचेता । छलपव काढे जरव रता ॥ द्विगने कबत वारिकी चारन पश दिमि देवी
निज उरधारि ॥ ते न सकी सो गर्ग सक्तरी । भूपे गिरो गवैसो भारी ॥ भूमिसेसुनी शोभा सुभा नार ।
तज पुज सतगुरु भे भावर ॥ शशिहि भूमि पै ललि अजसाए । ली सादर सपे वैजसाए ॥ सखव
शुभेस बाजि जेहि लागे । सोभा शीव सेत रग पागे ॥ सोमहि र धर्म मुनिव्यव देसी । कसुति किए
शुभाशिव भेखी ॥ वार ए कौस सोम पन धारी । भूमिप्रदसिल किय भोजसाही ॥ तबते तिरिजे तेहिह
कासा । तासु खोषधी भई रसाला ॥ पदुम हजार बरिस तपकीन्हे । सोमसरस इजसाही कीन्हे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विधिवत विधिकीन्हें सृप तिमशिहि राउध अभिषेके । विप्र खोषधी भोजकरसंविचार संधिव विवेकी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राजसयमल विधि तब कीन्हें । कियो काज सह विधि सुर खान्हे ॥ ली सखे शशि अनयनि
बारा । हलो बृहस्पतिकी तिय तारा ॥ अगिर सुवन बृहस्पति कोपे । ली सुरकाक सरस कऊ जोये ॥
तब भे शशिके शुक सहारि । ली असुरने कह किए सरारि ॥ सुर अह असुर सरेए रोज । राज
प्रवस न हारे कोज ॥ तब सुर तुषिता विधिं जाई । सब यहकथा कौसो समुजारे ॥ मुनि विरचि
तब सादर आए । कल इबरीद शशि हि समुजाए ॥ ली ताराहि सुर सुरकाह दीन्हे । ताहि सगरना
सुरगुर चीन्हा ॥ सुरगुर कह्यो गर्व यह नाहो । यह परधीज करन जातिये सतिमिच तारसो सरम
गिरारि । भरि दीन्हा गाढरपे जाई ॥ तेज पुज अति उग्र प्रभाभि । कौसो तहा सो कासक शक्ति ॥
दक्षि मोहि विसमिति न्हे देवा । बूजो तारा सो यहभेका ॥ कसि सख यह सुन हेकाकोसमिको
के सुरको कऊ जाकी ॥ सो मुनि तारा उतर न्हे दीन्हा । तब सो सुवन कोप अमिकोन्हा ॥ नम

पितृको नहि नाम बतावे । साप नचन्धो बुद्धि एहि भावे ॥ करि तेहि सनिम विरंचि अछेदा ।
बूजो तारासों यह भेदा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नमः साय विधिसें कछो हे शशिको यह वार । सो मुनिकें सुत अंकमें लीन्हो सोम प्रवार ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

कीन्हों सोम नाम बुध ताको । सुत पुहरवा भूपति जाको ॥ भए इलासों जो नृप आछे । आए
अपराधि कथा सो पाछे ॥ नृप पुहरवा भो भूभरता । दानशील अगिनित सुखकरता ॥ ताहि
अरवसी बरेसि सक्तामा । तेजपुंज लखि अति अभिरामा ॥ तासंभ भूप तासु शुचि हि हरे । नन्दन
सगमैं बज्रदिन किहरे ॥ वन चद्रवरय अलका तामैं । मेह मंधमादन सुखदा मैं ॥ अर मंदाकिनि
प्राद निधारा । तहं पुहरवा कियो विहारा ॥ जमनेजय बूजा यह भावा । नृप उरबसि हि कौनि
विधि पावा ॥ बैसपायम हरवि बताए । सो उरबसी साप ही पाए ॥ हवे मानुषको संघोबिनि ।
भई पुहरवाकी संभोगिनि ॥ लीन्हिसि करि करार करि शोचन । सोद करार हो साप विभोचन ॥
भूपति नगन दरज मति देखी । नम इच्छा लखि रतिसुख लेह ॥ एकवार घृत भोजन करह । नित्य
निरंतर पम नम धरह ॥ शयन पास है छाग सोहाए । राखौ बांधि करौ मनभाए ॥ एहि करारसों
अहि दिन टरिह्यौ । तेहिदिन हनै अद्रिप्य निहरिह्यौ ॥ एह करार भूपति द्विठ घारे । तासंभ
बोगसठि बरिस विहारे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अधे धितत मंधवंगल जानि निबंध निधान । आद तहां निशिमै हस्यौ एकहाग सुखदान ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

छाव हरत लखि नृप हि जगार्द । कहेसि उरबसी लेऊ क्हार्द ॥ नृपहं न गनन उठे विचारो ।
इतिय छावनिम हरे निधारी ॥ फिरि उरबसी कहेसि अनखार्द । तब नृप छाग होउथो धार्द ॥
तब मंधवं सुचौसर जागी । विजुरी प्रणट किए अभिमात्री ॥ तावचि नृपकह मगन निरेली । भई
अद्रिप्य उरबसी लेली ॥ तेहि निमु लखे नृपति अकुखाने । मोह भए बहूतै पहिताने ॥ कै व्याकुल
घार तजि वन देरत । कुपघ्नेन सेवे तेहि देरत ॥ रुदन करत अतिसाया भेषे । सरनै ग्हात तहति
देवे ॥ लखि भूपति नेत्रो से भरे । भूप हुन्हार गवे हन छोरे ॥ नीते बरिस पास तुन आर्द । एक
राशि बरिस हीं हुलपार्द ॥ कहि सो भई अद्रिप्य सनेहा । भोहित नृप आए निजगेहा ॥ नीते बरिस
भूप पै आर्द । रनि उरबसी उपाय बताई ॥ मंधवंगकह भूप अराधो । तुम मंधवं होऊ सो साथो ॥

शुनि नृप तिग्हे अराधि समागे । हन नंधर्व हेहांहं बंध मागे ॥ पूरि अधि वाली तिग्हे खोन्हा । करो
यज्ञ कश्चि नृपकंह दीन्हा ॥ यज्ञ किर निज इक्षित पैहो । तब यहि लोकमोदसो पैहो ॥ कश्चि दीग्हे
सुत सात सोहाए । जो उरवसी भूपसों जाए ॥ * * * * *

॥ दोहा ॥ * * * * *

अधि इक्षित सुवनी नृपनि सुतन सखिन घर आया । तिग्हे यथेचित राख्ये दी आप लखेवन जाय ॥
* * * * * ॥ चौपाई ॥ * * * * *

तज्जं न भूपति अधि निरेखा । तेहि घर श्रीपरको तह देखा ॥ तबकी सर्वसनी लखि भूप ॥
नए ज्ञानं नंधर्व अनूपा ॥ तिग्हेों यह किरतांत शुनाए । शुनि नंधर्वे उपायवताए ॥ ताकोर अरवी
रखि मुद बाढो । अधि ताहि नधिके वृप काढो ॥ वृप पुहरवा सो जिह लोहा । अधिकादि
मंजुल लख कोन्हा ॥ एक अधि आने परधाना । तबनी चेतानि जगजाना ॥ यज्ञ सिद्ध करि के
समभावा । शुभ नंधर्वे लोक वृप पावा ॥ जे पुहरवाके सुत मोह । तिनके ज्ञान शुन ऊ मन
भाए ॥ यज्ञ खौर अनाबसु जागो । सता विदित बनारु पुमाने ॥ विद्यायु द्विद्वैतु कोहि जो ।
भूप यगायु शुनि मुद बहि जो ॥ अनाबसेके सुवन अधीना । नृपसोना अरवी केह जागो ॥
ताके सुत कांचन प्रभ मोके । ताके सुवन मुहोच सु जीके ॥ सुत शुहेचके अन्ध मशीली यज्ञ करत ते
रहे रशीले ॥ ताकह पति करिवेके लोभा । गैरा आई तह सह लोभा ॥ जन्हे न माग्ये तब रिसि
आई । दर्द यज्ञ सामान बहार्द ॥ सो लखि के तब अन्ध रिसाने । नवीहै पान कियो जगजाने ॥

॥ दोहा ॥ * * * * *

तब कपिगण अस्तुति कियो शुनि सजस्य न्हे भूप । होखी धारा खोतमन सुंदर सुधासंहूप ॥
* * * * * ॥ चौपाई ॥ * * * * *

निज संकल्प सखितं गंगा । कियो दोय निज शुभन सुखनां ॥ न्हे आधे कावेरी सरिता । नद
जन्हुकी तिया सुपरिता ॥ तिग्हेों सुवन शुनऊ नृप जाए । पुब शुनहके आपदपाए ॥ कुशके भए
चाहि सुत पाहू । कुशिक खौर कुशुनाभ उदाहू ॥ वृप कुशां वर किरद बखाने । मुतिमान
मंजुल जागे ॥ कियो उद्यतप कुशिक महीपा । ईहि इन्द्रसभ सुत पाहू दीवा ॥ श्रीने सहसवरि
तह चार्द ॥ इह कुशिकवै कछो मुकाम ॥ वृप मन अखिल यज्ञ संवक्रिया । पैहो सुवन उग्र जिनि
सविता ॥ कुशिक सुवनभो बाधि सोहाए । गृध अनाधि कौशिक अक्षि पाह ॥ पुरुकस्य तिग्हे तहसु
पियादो । सत्य मसी कामुत दुकारि ॥ बाहेउ बाधिरिषी कश्चि खेरी अरुन करे सुकित युत खेरी ॥
वर्षि रिचोक यह चार बनाए । पुबहत है जगन समाए ॥ ब्रह्मनभ नभिन एक कोन्हा । इव शक्ति
दूजे मे दोन्हा ॥ अस्तुभेद तजि खेद यताई । निजतिव कह दीन्हे उ मुनिराई ॥ यज्ञप्रह चार
चरिह मुन लेऊ ॥ यह चर निजमाता कह देऊ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चरु है अथि कान्तमप्य सख्यवती तत्र जाय । त्रिजगत्प्रसन्नै दिव भवति देहः प्रिये भवति सुखदाय ॥

॥ * ॥ चौपद ॥ * ॥

सो मुनि गाधि भूपकी नारी । चरु करवौ कहु भेद विचारो ॥ सुखि अह तासु आयु लै
सायो । आपस चरु सो वाधि सखायो ॥ सुखि चरु चरु भेद लै जाने । निज पतिपत्नीसै कह्यो
सयाने ॥ होइ हि सुत तुन्दारे भनुधारी । ज्ञानसंगी बीरक रूपकारी ॥ कूरसुभय कठोर कराला ।
विदिते बीर रणवीर कसोला ॥ तुक मन्ताको सुत तन धाता होइ हि अथि चरु तप विधिधार्ता ॥
सख्यवती मुनि आगुजित प्राणी ॥ पतिपत्नी कही त्रिजगत्प्रसन्न वाग्ये ॥ वन सुत यैसो होइ न शर्मा ॥
तपनिधि होइ तुम्हारी पतिपति ॥ चरु प्रभाव जौ इषा न जानौ ॥ जन्मपदच तौ यौसो जानौ ॥ एक
मस्तु तब कहा मुनीका ॥ इष्टप्रभाव निरखौ अवनोभा ॥ तपनर सख्यवतीके जाए ॥ जगत् साहिर
जमदग्नि कहाए ॥ अर्थसंग तुम रेणुसुदातो । तासु रेणुका सुख सयागो ॥ मुनि जमदग्नि तासुके
भरता ॥ जगत्प्रसन्न सुख तन करत ॥ वासुत परशुराम भनुधारी ॥ भेतेहि चरु प्रभाव
अनुसाये ॥ हे सुख चरु सामुसम कीन्हे । मुनि जमदग्नि मोद वर लीन्हे ॥ सुकसेप सुनपह
कहाए ॥ जगत्प्रसन्न सुख तन जाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गाधि सखिपत्नी सुखवती जगत्प्रभावने भूप । सख्यवतिपत्नी गोक जे विद्यानिधि अनूप ॥
जे सुत विद्यानिधके तपकरता सविबक । ज्ञानवशिक कतिबध चरु गालव आदि अनेक ॥

॥ * ॥ चौपद ॥ * ॥

जो जमदग्निकेर सुत दूजा । सुनखेप नामक कतपूजा ॥ सौ कौशिकको मानि निदेश । भयो
पयस्य सुखि सुभवेना ॥ चरु हरिद्वय जिसे मख तामे । जानुस वसिनिर्जित हो जानै ॥
विद्यानिधि ताहि सुत कीन्हा ॥ विजयपुत्रके गुहता दीन्हा ॥ सुत पुत्रदाको जे भाये । ज्ञान उरबसीसै
रजि राये ॥ तिनसै अंग अज्ञानसुके परे ॥ अथ कहियो व्यापूके छेरे ॥ प्रभा तिया चापूकी
सुखिता । सो सर्भाज्ञ भूपकी सुखिता ॥ तिनके प्राणि तने बरसेना । जज्ञप रजि चरु दम अवेना ॥
अथ अथ सुखी विद्यानिधि । अथ अथ अथ अथ अथ ॥ रजिके सुख पतिपतिन जाए । केषा
चौसत राव कहाए ॥ देवा आनुपती अयो विद्याधर । राज विदिले आर्यसोभा ॥ हयशेठ
लारनसैर बखधारी । को अति वि भो अथ अथ चरु ॥ विधि भाषा जेहि चरु सुजीमि ॥
रजिपति अथ अथ अथ अथ अथ ॥ अथ अथ अथ अथ अथ ॥ अथ अथ अथ अथ अथ ॥
भाए ॥ कही सुरनक्षे रजि सुभागी । इतें असुर हन तुम्हारे सागी ॥ यह कहर पहिले कहि
लेह ॥ जे लहि हमे इन्द्रपद देह ॥ * * * * *

॥ दोहा ॥

कीर्ति सुरत करत, सा मन चरि रमि सुकाय । अनि चसुरत विने विरसद रजासुतचरं आय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब सप्तबाण विने विधिवाजा । इस तुलधर्मपुत्र है राजा ॥ सुरसमाह आपन कार खेइ ।
उचित मूजि प्रियि ह मकह देइ ॥ सो मुनि वृषति रुजि सुखपाए । इन्द्र दि उतै ररख रत आए ॥
रञ्जिभूमिपति अब तनुत्यागे । तब नृपको सत्र सुत ब्रह्मपाले ॥ ते सतपांच इन्द्रपै आरे । पदकरि
खोन्हे राज्य खखारे ॥ ते तह भोग बज्जत दन कोन्हे । इन्द्रदि काहू भांति बरि दीन्हे ॥ इन्द्र दुखित
जुगुपै आरे । काह्यो सकल विरतांत बुझारे ॥ भ्रान गुरु इन्द्र हि सोइस कोन्हे । मत बासोक्त भगठ
सत्र कोन्हे ॥ गुरु कन मुनि नृपसुत विखि लोन्हा । सोइ व्याचरण चरि विरि कोन्हा ॥ ताते प्रसन्न
भे सिपके । सोनपराक्रम कै अतिविगरे ॥ खलि निह तेज आपणे उणे । मयापाणि चरि तिन्हे
दिपाके ॥ गुरुसहाद साह सववाराजे । तीनलोकपति कै प्रियि साजे ॥ आपुके सुत रंभ कहाए । ते
सकसंबस पुत्र पाए ॥ नृप आयुके सुत सुखदानै दे अनेन ताबंस ब्रह्मना ॥ गुरु सोनके सुवत्र बखाने ।
नृप प्रतिवच अब विधि जाने ॥ तासुत सृज्य जय सुत ताके । तासुत निजय सुवनकत जाके ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हर्यश्वन ताके सुवन ताके सुत सहदेव । भे नदीन ताके सुवन हरख दीनदुख भेष ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तासुत जयसेन जयकरता । तासुत संकत अरिदल दूरता ॥ तासुत कथर्म सुभरूपा । ए
अनेन के अंज भूमा ॥ क्व वृध आयुके बारे । तासुत भे सुमयेक दुखने ॥ तासुत तीनि काससल
माने । और गूत्मद बरहद माने ॥ भूपमदको सुत बीरा । सुनक महीप सत्त ररधोर ॥
सुवन सुनकके शौनक नामी । भए भूप अमलिने सकसमी ॥ चारो करन भए ते माने । जितकत
धरस करस गति जाने ॥ सासनृपतिको सुत बल भारा । प्रणिभेन भे भूप उदरता ॥ तासुत भये
सुसुप नरनाह । जासों लक्ष्यो न जय अरिकाह ॥ तासुतभूको सुत सुसु ताता । भयो दीर्घतप
दीर प्रहारा ॥ भूपदीर्घतप बरतप कीन्हे । पुत्रकसमा जमने खीन्हे । भूपदीर्घतप ते सुत पाए । जे
धन्यकरि निहित कहाए ॥ कडे सीर सानरते कोरे । प्रगटे सस्र भांति सिरे ॥ भूपदीर्घतपके
सुत नाए । क्व चरि आपने जाए ॥ धन्यकरि सुत सुखदानी । प्रगटे सुकाम करहाजी ॥ तासुत
भए भीमरच दसी । तासुत दिवोदास अरतापी ॥ * * * * *

दिवोदास काशीमको चितिभोषवत अनूप । भः विचित्र कथा कहू सो अब मुनिए भूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

काशी काशिकेशवर्षादिरेषो । काशी लियो ब्रह्ममुभजेषी ॥ नक्षत्रिकुम्भको दिवो निरेह ।
तुम काशीने करी प्रवेह ॥ करि प्रवेह कहु बला बहायो । दिवोदासको सोरि लवायो ॥ सोरि
लगाइ प्राप किरि देह ॥ दिवोहि प्राप तेज हरिलेह ॥ नै निहतेज होडि सो भावे । तब उत
बसिबेकी विधि जानै ॥ सो मुनि बल्लिकुम्भ तह आए । कंडक नाउहि सपन देसाए ॥ मंत्र मूर्ति
असपायन करह ॥ करि पूजन मुद नगल भरह ॥ सो मुनि कंडक आनद सीन्हे । तासु मूर्ति अ
संभापित कीन्हे ॥ पूजनको सब पुर जन पावै । जो कल जो मानै सो पावै ॥ सो मुनि दिवोदास
हस्पाई । निज पतिगोषो दिवो यंडार ॥ दिवोदासको पतिनी आर ॥ करि पूजन बज भाति
नगार ॥ सुवन सुपत कांभि घर आर ॥ परिवेसि बजत दिवस मन सार ॥ भयो न सुत तब भूप
रिसार ॥ मठ मूर्ति सुदि दिवो बहार ॥ तब निकुभ नण खीसर पार ॥ उग्रयाप दीन्हीअन
सार ॥ रहे मुन्यपह सुखद काशी । बरिस हजार अमानव वाशी ॥ प्राप प्रभाव आर तह
घोरान् हेनक नाम देन सह जोरा ॥ किहेसि उपद्रवता भय आगे । पुरजन होडि कोशिका भागे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मुन्य देखि काशी पुरी देवदास मृप धीर । चिति प्राप फल आर तब बसे गेमतो तीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सखि शिव शिवा सहित सुख साजे । आइ काशिकार्में तब राजे ॥ कही एक दिन शिवा सो
हार ॥ सुवति ब्रह्मसे संनया पार ॥ बलो नाथ कंठ अनत विहार ॥ कामन भैलपेल सुखधार ॥
कही ब्रह्म तियसों चितपावन । आबिमुक्त यह मम गृहपावन ॥ चाहि होडि इन अनत न जैंहें ।
सब जुन नित्य इतही रहैं ॥ रहैं तीनि जुन प्रगट महेश । कलिने रहत मुन करि भेषा ॥ देव
दासको मुन बलभारी । भए प्रतर्दन भूतलपारी ॥ भए प्रतर्दनको री बारे । बलभार्ने मृप भूमि
विहारे ॥ भूपसर्कबलको जाए । कुम्भकी तियसों बसाए ॥ हाडि सहस बरिश तन धारे ।
ते शीमक राहसको सारे ॥ पिरि काशीने बसि मुदभारे । ललकुलको बल विरद विदारे ॥ सुन
असर्कको संगति जाए । ताको सुवन मुनोप कहाए ॥ ताको सुवन सेनवर सेनो । तासुन केतुमान
मृप नेनो ॥ तासुन भए सुको सुकोतू । तासुन धर्मकेतु अशसेतू ॥ तासुन सत्यकेतु सतिबकता ।
तासुन त्रिभु हरिगुणरसकामना । नृपबानर्ने तासु सुत वीरा । तासु सुवन सुकुमार सुधीर ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मुनभूपति सुकुमारको भूडकेतु बलवान । वैशुषोप ताको सुवन तासुत भर्न सुजान ॥

॥ * ॥ चोपासः ॥ * ॥

एते काव्यमन्त्रपुराणी । मन्त्रवन्त्राश्चैव वसन्ती । विष्णोर्मिह सुता वरुणरी । मन्त्रवभूमि
 पतिकी सो चरणी । मे तिनको चठ सुत कुसदीपा । पति यजानि संवादि मदीया । चर रावाति
 यातिवर राजे । ए चठ मन्त्रव तने सुखसाजे ॥ नृपककुत्स्यकी सुता दुसारी । सो संवरा पतिकी
 नारी ॥ पति दंपति श्री जोगविद्यासी । भए आइ कामनके वासी ॥ भए यजानि चरणी विवेकी ।
 वेदविहित भूधर अभिमेकी ॥ तासु देवजानी तिय ध्यारी । सुता युक्रकी पतिव्रतधारी ॥ तासुत
 यदु अरु तुवंसु जाए । यदुवंग यदुवंगी गाए ॥ विसुपवद हो असुर सुनामा । तासु सुता सर
 मिष्ठा आमा ॥ सो यजानिकी दूजी नारी । तासुत भए तोनि गुणकारी ॥ दुहा दुकन्दर अर
 अनु आछि । प्रगठ भए पुर तिम्को पाछे ॥ नृप यजानिकी सुयति श्रीम् ॥ प्रविशुर च सो भूपति
 लीम् ॥ शुभ मनोजव ह्य जेहि लागे । तापे चठ यजानि मुद पागे ॥ चठ यजानि चरणी श्रीम् ॥
 जाहि जगजेता जयहीते ॥ भूपति भोगि बज्रतदिम चरणी भए चरु करत गुणकारी ॥ विषे भोग सो
 तोषन पाए ॥ श्री आरत पुषन पह आए ॥ कछी बजाइ सुतनको वाणी । जे जो कहै करी सो ज्ञानी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूमि विषेको भोगसो मो मन लहे न तोष । हे तृष्णा आतुर भरे करी तासु पारि पोष ॥

॥ * ॥ चोपासः ॥ * ॥

मम विरधापन सुत तुम लेह ॥ आपन तरुणापन मोहि देख ॥ कामरी चारिसुतनसो भाथो ।
 भपति वचन न काहू राथो ॥ दिए आप तव नृप रिसिभारि । होहि थाराजक सुवन तुम्हारि ॥
 तिन्हे आप दे पुर पंह आए । पुरसो कहि तेहि भांति बजाए ॥ यनि पुर तासु विरधर लीन्हे । निज
 तरुणापन भूप छि दोन्हे ॥ जबापुरुष छे मोहित भया । लगे भोगवम विषे अनूपा ॥ बज्र विधि किए
 भोगसो । विद्याजी आदिक तरुणीसो ॥ जितो भोग वै विषे विहारी । होइ तितक तृष्णा
 अधिकारी ॥ बज्रविधि भोगि बज्रत मन लाए । काम भोगको अंत न पाए ॥ तव मा भूपतिके
 छर जाग्या । विषे त्याग तव कियो सुजाग्या ॥ पुरुको तरुणापन नृप दीन्हा । आपन विरधापन तो
 लीन्हा ॥ तव नृप भूमि पांचधा करिके । पांचो सुतहि दियो नरुभरिके ॥ चारि सुदेय चारिकह
 को नृपान्धवे मपति पुर कहै लीन्हा ॥ कछी यजानि ज्ञानमें वाणी । समे पांच सुदेसद पहिवाणी ॥
 जीरक भएन श्रीरष होई । जाहि न त्यागि सके सुवजोई ॥ जा तनचन राखीन लागी । कवहू
 पगिन न दोह जाग्यो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो यह तूला प्रबल है याहि तजे सुख होइ । जवली यह तन नै रहे तवली सुखी न होइ ॥

तोनि लोको को ईय ह्यै कोडिनारिपति होए । औ बखी नारै नतौ मोदिन कबज न सोए ॥
 जितो लहे नृप्यो जितो नृप्या बाडति जति ॥ जैसे आकृतिको दिय अवसान को कि कहिनासि ॥
 भेरो हाहि विनय कहै तिय अणयन परधान ॥ ज्ञानीजन ज्ञानोपदेश पयत सोइ नद्वान ॥
 कहि कैसै भूपालनहि निधयत करि बन्वास ॥ साधि जोगविधि तपनिगम कोन्है । सर्वनिष्ठास ॥
 अक्षिणीकाशीसाधिराजभीउदितनारायणकृष्णशक्तिगामिना ॥ श्रीमन्दीजनकाशीवासिभो कुल
 नाथात्मजेन मोपीनाबकविना विरचिते भूषणयां भारतान्तर्धने हरिवंशदर्पणोनाम अष्टभोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुमिजनमेजय भूपति ज्ञानी । सुमिलों कछी मनोहर बानी ॥ नृपजजातिके सुवन बखाने । अरु
 पुर अरु अरु अरु अरु ॥ अरु अरु सु ए पांच ननाए । इनके वंश कहै । मन भाए ॥ वैसंपानि कछा
 शुभभूषा । पुरके पुराणगीर अरु पा ॥ तासुत भए मनसु मनखी । तासुत अमयदभए यशखी ॥ तासुपस
 धन्या सुत धनुषजा । तासु सुबाजु तनै भूमरता ॥ भेरोद्राच तासु सुत राजा । भई तासु दशसुता
 सुखाजा ॥ सपिमाती तपूरा मलदा । भद्रा सुला बला अरु मलदा ॥ मद्रा सुरथा बलदा जानो ।
 मोक्षपलाए गणिदश मानो ॥ अत्रिवंश अत्रिवर तपभारो । नाम प्रभाकर परम अचारी ॥ दशौ सुता
 तेहिकों नृपरोडा । शुनिकी रिवा सुशचि कहि लीन्हा ॥ जेसुत इनके हाहि दुखारे । ते सिगरे
 सुतहोहि हनारे ॥ एक एक सुत तिनके जाए । निहै भूप निजसुत करि भाए ॥ नृपकछपू अरु एक
 लेपू । स्थण्डिलेप अर्धेप सनेप ॥ नृपति कचेपु बनेपु जलेपू । धीरधनेपु मद्योप थलेपू ॥ तानि सुवन
 कछेपू केहै । भूपसभा नरचतुवते ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अरु परनेचु प्रवीण नृप ज्ञाता धनुषविधान् । भए सभाभरके सुवन काला नल बलवान् ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

काला नलके सृजय जाए । सृजय सुवन पुरंजय गाए ॥ ताके सुत जनमेजय नामी । महासाल
 ता सुत मडि स्वामी ॥ तासुत महामना नयगामी । तासु दोय सुत भए सुधामी ॥ भए उसीनर जेठे
 वासे ॥ भोतितिज सजुरो जो तासों ॥ पांच उसीनरकी तिय जानो । मृगो किमो अरु नवा बखानो ॥
 सुवन किमोके किमो कछु बाए । तने मवाके मव कहि गाए ॥ दर्वाके सुत सुंजत बीरा । दृषहीतीके
 सिबि रणधीरा ॥ जो सिबि भय चारि सुत ताके । चंप बृष दर्भ सुवीर सुसाके ॥ मद्रप अरु
 कैकेय विचारो । पांच उसीनरके ए चारो ॥ नृपतिशुके सुतजन जेता । भए उसप्रथ सुधर
 पुरलेता ॥ तासुत येन सुतप सुत ताके । तासुत बलि वरलै गुण जाके ॥ दिखो तिन्हे वर कृपानिधाना ।
 विधि आधू करि कल्प प्रमाना ॥ बलि हँ जागो ईदो जेता । ज्ञान गेह अरु उरधरेता ॥ ताते निज

तियते मन भाए । मुनि सों पांच पुत्र कर बाए ॥ अंग वन यह सुभ सराहे । पुत्र कलिंग प्रजा जिन
पाहे ॥ अंगपुत्र इधि बाहन कीरा । तासुत दिविरच नुखन नभीर ॥ भए धर्मरच तासुत राजा ।
तासु चिचरच सुवनद राजा ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए चिचरचके सुवन खोनपाद परवीन । झंभी कपिको ल्याइ जे शांता खसुता दीन ॥
शृंगी कपि को छपातें खोनपाद सितिपाल । पायो सुवन सपूत शुचि नृप चतुरभ सुखाल ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

भे चतुरभ भूप के बारे । नृपपृथु लाह यह गुण बारे ॥ तासुत भएचंप नृप चारु । तासुत भे ह
रि जंग उदारु ॥ कपि बैभांडकि जाहित धारे । येरावतगज भूमि उतारे ॥ भे इय्येन भूपके बेटे ।
नृपति भद्ररच विरद खपेटे ॥ तासुत बृहत्कर्म बलवाना । ताके सुत बृहत्कर्म सुजाना ॥ तासु
बृहत्कर्म सुत धनुधारी । ताके द्वै पतिनी पति प्यारी ॥ एक यमोदेवी शुचि नामा । सत्वा दुतिय
सुवधि सब जाना ॥ सुवन यमोदेवीके जाहर । भए जयद्रथ सब गुण माहरि ॥ त्रिदरभ भए
तासु सुत मामी । तने विश्वजित तासु सुधामी ॥ तासुत भए करण शुभ करणी । तासु विकर्ण
तने बरवरणी ॥ इनके बंश बजत नयचोन्हे । अंगभूपकी कीरति कोन्हे ॥ भए भिसे सत्वाके बालक ।
ताके सुत धृति खलकुल घालक ॥ तासुत धृतिव्रत धोरज धारी । सत्यकर्म तासुत बलभारी ॥ सत्य
कर्म भूपतिके जाए । भे अधिरथजे हत कहाए ॥ तेर्द करण हि पालि ब्रदाए । करण ताहि
गुणहत जगाए ॥ सुवन करणके विष्वक्सेना । तासुत वृषबाहक बरसेना ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए बंशज कहेपुके पुत्रवंत सबधीर । अबच्छेपुके कहत हैं रौद्रपुत्र जे वीर ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

खलनातक सुतादुलारो । सो कछेपुकी पतिनी प्यारी ॥ ताके सुत मतिनार महीया । तासुत
मोनि भए कुलदीपा ॥ अंगु प्रथम फिरि प्रतिरथ मानो । यह सुबाज नृप धार्मिक जानो ॥ यह एक
कन्या नैरीनामा । तासुत मांधाता गुणयामा ॥ भए कर्षप्रतिरचके बारे । नेधातिथि भे तासु
दुखारे ॥ इक्षिणी तासु सुता ब्रतधारी । ताको किए अंगु प्रियनारी ॥ तासुत भए सुराध सुजोधा ।
ता निय उपदानवी सुबेधा ॥ ताके चारि सुवन गुणवंता । नृपदुष्यंत भए सुखवंता ॥ अंगु प्रवीर धीर
ए प्रारी । बरसे वीर शुभे मुदधारी ॥ नृपदुष्यंत भूपमहि नाए । रनि सुकुतलासों सुत पाए ॥
भरतनाम नयविद महिचाता । आंगु अतन भारत ल्याता ॥ तने भरत के हे बरदापा । ते
निजजमनोको सहि शापा ॥ नये तिन्है नामित सहि राजा । भरत वृध कीन्हे यह काजा ॥

भरद्वाज सुरगुरके वारे । पुत्र बधूसों मिहै विहारे ॥ सुवन वितथ नामक तब जाये । अभिपेकित भूपाल कहीये ॥ सुवन वितथके पांचल लामै । भए सुहोच जेठ हे तामै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ॐ सुहोचके सुवन द्वै कास गृहमति नाम । भए गृहमतिके सुवन ब्राह्मण स्या आम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

काशभूपको सुत शुनु ताता । भयो दीर्घतप दीरघ दातां ॥ भूप दीरघ तपकी सुत गए । धन्वतार द्वापरमे जाए ॥ धन्वन्तरिके सुत सुखदानी । प्रगटे केतुमान वरज्ञानी ॥ तासुत भए भीमरथ दापी । तासुत दिबोदास परतापी ॥ दिबोदासके सुत बलभारी । भए प्रतर्दन भूतल चारो ॥ भए प्रतर्दनके द्वै वारे । बल भार्गव नृप भूमिविहारे ॥ भूप अलर्क बलके जाए । लोपामुद्रासों वर पाए ॥ सुत अलर्कके सन्तति जाए । ताके सुवन शुनीथ कहाए ॥ ताके सुवन छेमवर छेमी । तासुत केतुमान वरजेमी ॥ तासुत भए सुकेतु सुहेतु । तासुत धर्मकेतु अशसेतु ॥ तासुत सत्यकेतु सतिबकता । तासुत विभु हरि गुण रसकता ॥ नृप आमते तासु सुत वीरातासु सुवन शुकुमार सुधीरा ॥ धृष्टकेतु सुत तासु मुजानी । बेनुहोच तासुत बलबाना ॥ तासुत भर्ग भए बलभारी । एते कासवंश अधिकारी ॥ जे सुहोचके सुवन द्यतीथे । ताको बृहत् नाम शुनि लीथे ॥ ताके सुवन तीनि अजमांडा । अह धीमीठ तृतीय पुरमीडा ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तीनि तिया अजमांडके नीलि निके शिनि जानि । अह धूमिनि मुकुमारि सुचि सरसशील मुजानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अजमांडके शिनिसो जाए । जह्नुभूप बरतप कर गए ॥ नृप युवनाश्र सुता शुभचरिता । ताकी तिय कावेरी सरिता ॥ तिनसों सुवन शुनह नृप जाये । पुत्र सुनहके अजक कहाये ॥ तासुत बलीकाश्र बलभारी । ताके सुत कुश आनद कारी ॥ कुशक भए चारिसुत चारू । कुशिक और कुशनाभ उदारू ॥ नृप कुशाव अह भूरमति मानू । सुवन कुशिकके गांधि सु जानू ॥ तासुत विश्वामित्र कहाए । तिनके सुवन अनृगिने गए ॥ ए अजमांड भूपके जाए । केशिनिसों ते तुहै वताए ॥ जे नीलिनिसों प्रगटे वारे । ते अब तुमसों कहे पुकारे ॥ भे सुसनि नीलिनिके जाए । पुरु ताके सुवन कहाए ॥ नृपति पुरुके बाह्य सुवालक । तासुत पांच भए सिति पालक ॥ मुद्रल सुत्रय बृहदिष कहियै । सौ क्रिमिलाश्र जयी नर लहि थै ॥ एपासो जो देश बसावा । सोई सुदेव पंचाल कहावा ॥ जेठो सुत मुद्रलको जाई । इइसेन कह बाएउ सोई ॥ इइसेनके सुवन सयाने । भ बधुश्र जगतमै जाने ॥ ताकी तिया मेनका नासा । सासाथ

हि जाएसि अभिरामा ॥ दिबोदास सुत पाण्डक धरणी । सुता अहिख्या भौतनधरणी ॥ तासुत सता
नंद शुचि जीके । ताके सुवन सत्यधृति नीके ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देखि अपसराको भयो ताको बीज खलास । परिसरईके पुञ्ज पै सो शुचि लह्यो सुपास ॥
तासें भूप तहां भएसुत अरु सुता अहूप । कृपाचार्य जो विदित है कन्या कपी अनूप ॥
तिनैयें संतन करिकृपा लै आए निजधान ॥ शुनो भूप तातै भयो कृपा कृपो यह नाम ।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

दिबोदासके सुत सुनु राजा । भए निवधुः कृत शुभकाजा ॥ ए मुद्रलके वंश बखाने । अरु
सृजयके सुनु सुखमाने ॥ सामरत्त सृजयके वारे । भए तासु सहदेव दुसारे ॥ तासुत भे सोमक
महिसारई । ता सुत जंतु पिताकी नारई ॥ शत सुत जंतु यज्ञ करि पाए । सबने क्येते पृषत कहाए ॥
तनै पृषतके रुपद प्रवीना । धृष्टदुष्ट ता तनै अहीना ॥ धृष्टकेतु ताकोसुत सूर । सर्वशस्त्रविद्यासों
पूरा ॥ ए अजमीठभूपके वंशज । भे नीलिनिसों ईश्वर अग्रज ॥ अब धूमिनिके वंश बखानै । जेहिने
तुहै प्रभृति सुखदानै ॥ धूमिनिपुत्र हेत व्रतधारी । अयुतवरिस कीन्ही तपभारी ॥ कर्कनाम ताके
सुत जाए । ताके सुत संवरण कहाए ॥ ताके सुवन कुरू नयलीन्हे । तज प्रयाग कुहसेव सुकीन्हे ॥
ताके वंशज कौरव गए । गे कुरूके सुत चारि सोहाए ॥ भूपसुधन्वा सुधनु महीप्रो । नृपति परी
क्षित भे कुलदीपा ॥ चौथा सुत अरिमेजय चारू । भयो धनुर्धर परम उदारू ॥ भयो सुधन्वाको
सुत बौरा । भूप सुहेत्र सरसरणधीरा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रूपसुहात्रके अवन सुत ताके सुत कृतयज्ञ । चौथोपरि चरतासु सुत भूपति परमकृतज्ञ ॥
अतरिक्त गणनाश बसु ताको हैं अवतार । षट्सुत एक तनया लह्यौ चौथोपरिचर चारू ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नृपति बृहद्रथ मगधअधीया । अरु प्रत्यग्रथ वर अबनीया ॥ नृपकुश अरु मनिवाहन साकल ।
अरु पदुआहिर युधिकर ताकल ॥ सुता भलकासी अतिपावनि । पतिप्रताव्रतभावत हि भावनि ॥
तनै कुशाग्र बृहद्रथकोरे । तासुत नृषमल ए अरिछेरे ॥ तासुत पुष्यवान महिजाता । नृपतिसत्यहित
तासुत ल्याता ॥ तासुत जर्ज सकलगुणखानी । तासुत संभवनृप गुरखानी ॥ ताकोतनै भयो द्वैफार ।
लखि अनिष्ट सो बाहेर डारा ॥ लखि तेहिं जराराससी कीन्ही । सारकील दै त्रिसंत कीन्ही ॥
ताते जरासंधि न्है राज्यौ । बिसदनीर दग्दिगिमें गाज्यौ ॥ तासुत भे सहदेव नरेश । तासुत
उदायु तनै शुभभेखा ॥ तासुत सुतशर्मा महिसोचक । मगधअधीश भीर जयचक्र ॥ कहे सुधन्वा

कुरुके वारे । तिनके बंशज कहि निरवारे ॥ नृपति परीक्षितके अवकाहि छै ॥ कौरौ बंश विदित
जो लहि छै ॥ सुवन परीक्षितके जननेजय । तासुत तीनि सुनो जननेजय ॥ उयसेन अतिसेन
सुसेना । भीमसेन जिनको पनदेना ॥ ए सुत एकप्रियासो जाए । दूजी लिया एकसुत पाए ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो जननेजयको सुवन भयो सुरधबलवान । भूपविदूरथ तासु सुत सीलक धनुषविधान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुवन विदूरथके बलवाना । भए रिचनृप परम सुजाना ॥ भीमसेन ताके सुत जाने । ताके
सुवन प्रतीप बलाने ॥ भे प्रतीपके तीनि कुमार । सन्तन अरु देवापि उदारा ॥ अरु बालिक
भे लीकनिवाह । तासुत सोमदत्त जयचाह ॥ तासुत भूरिअवा भो भूपा । महारथी बिदेत
अनूपा ॥ देवापी संतनके भई । ते मुनि भए अवन ठिग जाई ॥ संतननृप नृपसेवक जाके । भीषम
भे अनूपम सुत ताके ॥ बंशसुत भीषम धनुधारी । इंद्रीजित जोगीश अचारी ॥ रही गम्भकाली
तिय दूजी । संतनको प्रियबावनि कूजी ॥ तासु दोयसुत अनंत सिंगरे । नृपतिविचित्र बीज हें
अंगरे ॥ छेठे पिशाचद कुलसानर । मूर बीर धनुधरमें आगर ॥ इहि कुभाव शुद्धता चाहे । ए दोउ
बंधुदेह निजदहै ॥ तिनकी तिया नेचपथआनी । किए व्यास सेत्रज सुत ज्ञानी ॥ भूपपांडु धृतराष्ट्र
कहाए । भए विदुर भानवतबनाए ॥ पांडवके सुत अर्जुन बोरा । तासुत भे अभिमन्यु सुधोरा ॥
तासु परीक्षित भए सुसाजा । तासुत तुम जननेजय राजा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रही पांडुसिंहिपालकी शुभद्रा दुहिता एक । नाम शुभद्रा तासुको कीन्हे सहित विवेक ॥

शत सुत हें धृतराष्ट्रक नांधारीसों बीर । तिनमें जेठे हें नृपति दुरजोधन रणधीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नृपति यजातिभूपके वारे । कहे पांचज भूमि बिहारे ॥ पुरु तुर्वसु अरु द्रुह्य सुलारे । अरु
अनुधुद वरमा भारे ॥ तिनमें पुरुके बंश सुनाए । जे पैरव कौरव कहि गए ॥ तुर्वसुको सुत
बन्धि विख्याता । तासु तनै गोभामु सुदाता ॥ तासुत मैत्रेसादिसु सानी । ताके सुत मारुत विज्ञानी ॥
नृपति मरुतके दुहिता एका । भई संनता सहित विवेका ॥ नृपति ताहि सर्वतहि हीन्हे । सुत
दुष्यंत तासु निजकिन्हे ॥ सुतदुष्यंत भूपको जायो । कर्तव्यामवर भूप कहायो ॥ तासुत नृप अश्विष्ठ
शुभेसी । भेताके सुत चारि सुदसो ॥ कोरल पार्थिव पांड प्रवीने । अरु नृपगोल वीररसभांमे ॥
नृपतुर्वसुके बंश बलाने । कहे दुह्यके अश्व मनमाने ॥ भए दुह्यके हेसुत मारु । ब्रह्मसेतु सुधरीप
उजागर ॥ नृप अंगारसेतुके वारे । तहि युवनाश्व समरमें मारे ॥ जयजोवको जास अरुभे । चौदह

शुनि मुदभार ॥ तासु सुवन सत्यक बलभारी । तासु सुवन सात्यकि धनुधारी ॥ ताको सुवन
असंग कहाए ॥ तासु सुवन भे भूमिसदाए ॥ ताके पुत्र जुबधरराजा । किए सदानथ निमित्ततकाजा ॥
क्रोधा गांधारोके अंगज । नृप अमित्र तिनके ए वंशज ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यदु सुत क्रोधाभूपकी माद्री तिया सुजानि । ताके वंशज अब कहैं गुनो भूप सुखदानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

माद्री सुवन युधाजित कूजे । भूप देवमी दुष हें दूजे ॥ नृपति युधाजितके द्वै सुत भे । वृष्ण
अंधते नृप नयजत भे ॥ भए वृष्णक द्वै सुत वीरा । अफलक अरु चित्रक रणधीरा ॥ काशिराज
भूपतिकी तनया । रही यषार्ष गांदिनी सनयाः ॥ सो अफलक भूपतिकी प्यारी । तासु तनै
अकूर अचारी ॥ तासु अमुज हें बारह चौरी । सुत अफलक नृपके सति सौरौ ॥ उद्यसेनकी
सुता दुलारी । सो अकूर कीरि प्रियनारी ॥ द्वै सुत तिनसों भए सयाने । ते प्रसेन उपदेव बला
वे ॥ वृष्ण तनै दूजे नहिचाता । जो चित्रक अफलकके धाता ॥ तिनके सुवन कहैं सो मानो ।
पृथु विष्टु ए जेठे जानो ॥ बाऊ सुबाऊ सुपार्थ सुसीवा । और सुधर्मा अश्वर्षीवा ॥ अरिष्टने
नि अवेधिय वीरा । अश्वबाऊ सब गुणन गंभीरा ॥ सर्मिष्ठा अयवणा द्वै कन्या । चित्रकनृपकी धनी
सुचन्या ॥ क्रोधा अरु माद्रीसों जाए । दोय सुवन जो तन्है बताए ॥ जेतायुद्ध युधाजित कूजे । भूप
देवमीदुष हें दूजे ॥ वंश युधाजितके ए जानो । अब दूजेको शुनि सुख माना ॥ तियादेवमीदुषकी
जानी । रहो अश्वकी सरस सयानी ॥ तिनके तनै सूर नृप जतनो । भोज वंश जाताकी पतिनी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भए सूरके दश सुवन सुता पांच शुभभेष । तिननै सबते हें वडे भाग्यवान बसुदेव ॥

तासु जन्मनै दुंदुभी सुरन बजायो आम । तातेभो बसुदेवको आनंकदुंदुभि नाम ॥

देवभान नडूष फिदि अमाधृष्टि अरु श्याम । देवअवा मृद्धिम बऊरि बत्तावत अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अश्वर्षी समीक कम बक उर आनो । तनै सूरके ए दश जानो ॥ जेठी पृथा तदनु अतदेवा । पृथु
कीर्ती अतअवा सुभेमा ॥ अरु राजाधि देवरा पांचो । सुता सूरकी शुनि सुखरांचो ॥ राजा कृत
सूरसों मांगे । पृथा सुता तेदे मुदपाने ॥ तेहि निजसुता किथो भूखानी । पृथा भरतव कुंता नागी ॥
कुतहि कुंत पांडुको दोन्हें । लोक वेद विधिसों मुदलीन्हें ॥ भेकुंताके तीनि कुमार । नृपति
युधिष्ठिर भीम उदार ॥ और धर्मअथ कमसों जानो । जम अरु बायु इंद्रसों मानो ॥ कुंतभूमि

पतिको पति पाद । देवश्रवा जम्बू सुत जाद ॥ बृहस्पतिगणको पति सहिकै । पृथुकीर्तिसों बर मुद
गहिकै ॥ दंतवक्र सुत उतपति कीन्ही । उद्यतेजमै तेहि लखि लीन्ही ॥ सूर सुता सुतश्रवा कहाई ।
सो वैद्यपति अनुपम पारि ॥ जै गिसुपाल तासु सुत जायो । जो हिरण्य कश्यप कहि गायो ॥ सूर
भृषकी सुता सयानी । तिनके बंश कहे नृपज्ञानी ॥ कहे सुवन जे दशगुणज्ञाता । तिनके बंश गुनौ
अब ताता ॥ जेठे नृप बसुदेव सोहाए । जाके सुवन कल गुणगाए ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देव भाग गंडूष अरु अनाधृष्ट अरु श्याम । देवश्रवा मृञ्जस बज्रि वत्सावत अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपारि ॥ * ॥

अरु सनी ककन बक उर आनो । सुवन सूरके ए दशजानो ॥ देवभाणके सुत बरज्ञानी । जधो
भए परम परमानी ॥ अनाधृष्टिके सुवन बखाने । भए निमर्त जगतमै जाने ॥ देवश्रवाके सुत सुख
भोए । भे शत्रुघ्न शत्रुजित जोए ॥ देवश्रवाके सुवन सराहे । एक लख जे परपुर दाहे ॥ वत्सावतके
सुत न हि जायो । तब ताको करिकै मनभायो ॥ तेहि बसुदेव सुवन निज दीन्हे । कौशिक तेहिते
निजसुत कीन्हे ॥ सूर सुवन गंडूष उदारा । तिनके भयो न थात्तज वारा ॥ निजसुत वारि निन्हे
हरिदोन्हे । कृष्ण कृपामय कृष्ण चीन्हे । तासु नाम कृतलक्षण चार । चार दोष पचाल सुचार ॥
तत्रिपाल तत्रिज द्वे वारे । भे कनकके परम दुलारे ॥ हनु विश्वाम्भ दाय सुत बीरा । भे मृञ्जसके
हरहित पोरा ॥ सुबुबिस्थामको सुवन सुशीला । भे सुनिच सहसा नर शीला ॥ सुत सनीकको
परम प्रवीना । भो अजात अरिजय जशलीना ॥ हौ बसुदेवभूपको रानी । चौदह चातुरि चार
सयानी ॥ सबसों बडी रोहिणी रानी । फिरि मदिरापी हौ गुरज्ञानी ॥ फिरि वैशाली अरु सहदेवा ।
तदनु सुनामा कहि श्रीदेवा ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिया सांतिदेवा सुरुचि देवरक्षिता रानि । बृकदेवी अरु देवकी उपदेवी सुखदानि ॥

सुतनु सुतनु बडवा बजारए चौदह गण लेज । नृपगणि श्रीबसुदेवको पतिनो सरस सजेज ॥

॥ * ॥ चौपारि ॥ * ॥

पौरवभृष बाल्हीक जसोला । तासु रोहिणी सुता सुशीला ॥ आदि सुमन दुई दुहिता ताके ।
नृपबसुदेव सुवस हें जाके ॥ जेठे श्रीबखिराम कहाए । फिरि सारण शक दुर्दन गण ॥ दमनश
भू फिंकारक जानो । उद्य उसीनर एंसु मानो ॥ विवासास सुता एका जाद । सो तन तत्रि फिरि
ताउर जाद ॥ सोद शुभद्रा भई सोहाई । जो पतिव्रता वार्त्तपतिवार्त्त ॥ राम देवतीरमण उदारा ।
तामों प्रगथौ निशठ कुमारा ॥ भए देवकीके सुत जागर । कृष्ण कृपानिधि कृष्णसागर ॥ भए

शांतिदेवाके धारे । भोज विजय है जयहृषि धारे ॥ गद वृकदेव सुवीर करेरे । ए है सुवम नामासु
करे ॥ वृकदेवीके सुत अय ईसक । भए अनावह धनुषर सोसक ॥ सुता तृगर्भिराजकी ज्ञानी ।
वृकदेवी हीं सरस सयानी ॥ ता भूपतिके रहे पुरोहित । शिशिरायल बरतप सज पोहित ॥ ताहि
नपुशक काहू भाव्यो । सो रिसिते बननै गहि राव्यो ॥ बीते द्वादश बरिस प्रमाना । तब लहि
चौसर करि अनुमाना ॥ गोपसुता लहि रतिसुख लोन्हे । निज मनुषापन प्रगठित कोन्हे ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो शापित हीं अपसरा गोपसुता जो बाल । मुनिसंग रनी अनेकदिन सहित सुप्रेन सुचाल ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

सुवन एक पगव्यो तहू चासी । तब सो गई स्वर्ग भरि भासी ॥ मुनि मिसपूह नहिं सुतहि निहारे ।
सो कानन तजि अनत बिहारे ॥ रघ्यो जमनराजा यक कोर्द । लख्यो आद तहसो सुत सोर्द ॥ सा
सुत लै नृप निजसुत कोन्हे । कालजमन सोद शिवबर लोन्हे ॥ कालजमनके रथके बाजी । रहे
वृषभ मुख बर जयसाजी ॥ शुभज भूपजंगमेजय ज्ञानी । अचजो कहे सहचि शुचिवानी ॥ क्रोष्टा
भूपतिके बलवाना । भयो एक सुत और सुजाना ॥ तासु नाम वृजनीव सुनोको । तासुत खाहि
सूर शुचि जोको ॥ ताके सुवन रुसद्रु सुवीरा ॥ ताके पुत्र चित्ररंघ धीरा ॥ ताको सुत सरबिंदु नरेश ।
तासुत पृथुसबा शुभेश ॥ ताके सुत अंतर महिखामी । ताके सुत मुयज्ञ शुभनामी ॥ ताके पुत्र
उत्तम विख्याता । ताके सुवन सिनेयु सुदाता ॥ ताके तनै मरुत महिजाता । कंबलबरहिष ता सुत
ज्ञाता ॥ अत प्रसूति तासुत सुखदायक । रक्त कवच तासुत सत्र लायक ॥ तासुत अपराजित
रणजेता । तासुत पांच भए जयलेता ॥ रक्तेयु पृथु रक्त मदाना । अरु ज्यामेध अमोघ सुजाना ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पालित अरु हरि पांच ए बरणे वीर विशाल । सुवन पराजित रूपके अरिबृन्दनके काल ।

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

भूप बिदेहताहि नृप दोन्हे । पालित हरि है सुत मुद्रलोन्हे ॥ भे रक्तेयु राज्य अधिकारी ।
भे पृथु रक्त तासु सहकारी ॥ ए देउ मिलि बिरोध हिय धारी ॥ लरि ज्यामेध हि दियो निकारी ॥
ते मुनि संग बसि मुनिसे ॥ थापेसख भव जे जयविधिखाये ॥ तब चठिरण ज्यामेध सहायक । विदित
वीरवर बिना सहायक ॥ गदी नर्मदातटभटभारे । रिछबंत गढपति कहगारे ॥ बसि तहू राज्य
कियो संबिवेका ॥ हिण्टिकाये रक्तजय देका ॥ हीं ज्यामेधभूर्णकी रानी । सैव्या नाम प्रणभानामी ॥
लख्यो न भूपति पुत्र उदाहू । तिय अघ करै न दुनिय । बवाहू ॥ जीति कऊ भूपतिकी दुहिता ।
स्थाए निज तिय हितकरि सुहिता ॥ ललिसैव्या बोली रिसिभारे । यह को तिय है साथ तुन्हारे ॥

शुनि उरि भूपति कहा बिचारी। पुत्रबंध यह तिथी तुम्हारी ॥ तबनेद कहा मूढमति होइ ॥ पुत्रहीन
किनि लहो पताऊ ॥ कह्यो भूप नति रिति उरिआनो ॥ सुत भविष्यको पतिनीआनो ॥ तब
वह सुता किषी तपभायो ॥ ताके भाग्य भूप सुतपायो ॥ ने। ज्यानेध भूपको वारा ॥ ताको नाम
विदभेउदारा ॥ ताके भए तीनि सुतमानो ॥ लोमपाद ऋष कौशिक जानो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लोमपादके बंधुसुत ताके सुत आह्यावातासुत कौशिक वैदिता तासुत वैदि विख्यात ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भो विदर्भके सुत एक औरौ। बलगुणगर्व गहे जो गौरौ ॥ भूपति भीम भूरिवलभीमा। एक
विदित जो विदित महीमा ॥ तासुत कुनि मोति विधि चोन्हे ॥ जेकुन्हि निज तनया कीन्हे ॥
ताके तनै धृष्ट चितिकता ॥ तासु तानिसुत गणनि अनता ॥ नाम अंबन दसाह सुहावन ॥ विषहर
परपुर दुंद सचावन ॥ सुतदसाहके ब्योम सुनोता ॥ ताके सुत जीमूत पुनीता ॥ तासुत इहती
अरिदल कूटना। तासु भीम रथ परपुर लूटन ॥ तासुत नररथ रिपरथ लूटन ॥ दशरथ तासु दुवन
दलदूदन ॥ तासुत सकुनि सुशोल सराहे। तासु करंभ सुनय जे चाहादिबरोत तासुत अतिबाहक ॥
तासु देवब्रिती वर असचाहक ॥ तासुत मधुमंजुल महिभरता ॥ तासुत ई सुत अरिदलदरता ॥
सहस्र सत्य सत्यप्रतिपालक ॥ पुरदान मरुवसके बालक ॥ तनय सत्वके चारि उजागर ॥ कौशिक्या
खो भे गुण सागर ॥ नृप भजमान देवभृथ जानो ॥ अधिक इच्छा भूप ए मानो ॥ ई भजमान भूपकी
रानी ॥ तिनमै बडो बाह्यका ज्ञानो ॥ उपबाह्यकी दुतीय सयानी ॥ भए बाह्यकाके सुत दामि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धृष्ट विदूरथ व्रमन ह्रम और पुत्रयुपाठ ॥ अयुताजित सुसहस्रजित सतजित सहए आठ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रपन्नाह्यक के सुत बलभारी ॥ देवदह भे भूतलचारी ॥ सुवन सपुत हेतव्रतधारी ॥ कीन्ही तप
हो परण अहारी ॥ जाय सरिततट संध्या करही ॥ लहि बिकाल जल परधम करही ॥ नृपकी
चिन्म इतिमुचि देपो ॥ सरिता भए प्रसन्न बिलेषी ॥ तब ह्यो मूतिमान वह सरिता ॥ कही भूपमें
सहस्रि सुचरिता ॥ चितिपति अब निज दक्षित भावो ॥ किए कर्मको मुधि रस कियो ॥ भूपति कही
छपा यह कीजे ॥ मोहि सहस्र मोहि शतसुत दीजे ॥ मुनितर गुली तियाकार कियो ॥ भागवान मुचि
सुहृद सदेही ॥ जो खैसो सुत उतपति करिह ॥ भूपति अति आनरसों भरिह ॥ यह गुणि
आपुहि मुचि तम भारी ॥ भई भूपकी पतिनी प्यारी ॥ राम तासो भूपति मुदलोन्ह ॥ विधु नाम सुत
उतपति कीन्हे ॥ ताके पुत्र पउत्र विधाना ॥ भेवशज शतसह बलवाना ॥ जे भजमान भूपके वारका ॥

बीर विदूरथ बैरि विदारक ॥ नृप राजाधिदेव सुत ताके । दत्त अदत्त सुवन भे जाके ॥ तीजो सुत
सोलाः हि जाने । चण्ड चेतबाहनको माने ॥ सुवन दत्तके अरिबल खोज । समीदंड प्रभा ए
दोज ॥ अबला अर सरनिष्ठा-तनया । दत्तभूपकी शुचि रचि सनया ॥ भे प्रतिहृष समीके आए ।
तासुत अद्यभोज जगभाए ॥ ताके सुवन हृदीक विष्णाता । ताके बऊत तने गुणज्ञाता ॥ जेठे कृत
बर्मा गुणज्ञाता । भिषगु सुधन्या भोमहिवाता ॥ तनया देय कामदा नामी । कामदंतिका लहे
सुखामी ॥ इमके बंशज अतसहजानो । सबको धीरबिर अनुमानो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सत्त्वाभूपतिके सुवन नृप भजमान उदार । ताके बंशज ए कहे नरपति सह बिसतार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सत्त्वाको सुत अंधक भाषा । शुनो तासु बंशजको साषा ॥ नृप त्रिढाश्रको तनया चारु । ताके
अंधक नृप भरतारु ॥ तिनसो भए चारिसुत उत्तपति । तिनमै बडे कुकुर भे नरपति ॥ अंभजमान
तदनु सम सांधे । कबल बरहिष बर जस रांचे ॥ तनय कुकुरके धृष्ण कह्याए । ताके सुवन कपोतर
गाए ॥ तैतिर नृपति भए सुत ताके । प्रगटे सुवन पुनर्बसु जाके ॥ ताके सुत अभिजित महिभाषा ।
ताके भए सुता सुत साषा ॥ सुता आऊकी भई सुशीला । आऊक नामक सुवन जशीला ॥ नृप
अर्बति पति निज सम जानो । दियो आऊकी सुता सयानो ॥ भे बाऊकके देय कुमारा । देबक
उग्रसेन बल भारा ॥ देबकके सुत चारि बखाने । देबवान उपदेब सयाने ॥ अर सुदेव शुभ कारज
करता । और देबरक्षित ह्यहरता ॥ तनया सात देबकी आदी । और शान्तदेवो शुभवादी ॥ देब
रक्षिता अर उपदेवो । आदेवी अर शुचि वृक्तदेवी ॥ सतरं सुता सुजान सुनामा । सब बसुदेव
भूपकी बामा ॥ नब सुत उग्रसेनके जानो । कंस न्ययोध सुनामा मानो ॥ ककु सुभूमिप सुधन
सुधन्वी । राष्ट्रपाल अर संकु सुमन्वी ॥ अनाधृष्ट बलधीरंज गेह्लापुष्टिमान ए नब गनिलेह ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कंसा कंसवती सुतनु कंका जेहिं प्रिधसांव । रही राष्ट्रपाली सहित बहिनि कंसकी पांव ॥
चदुबंशज परधान जे बरणी शुनाए भूप । बीर धीर दाता विदित जेता जशी अनूप ॥
स्वस्तिश्रीकाशोराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगाभिना श्रीवन्दीजनकाश्रीवासिणोकुल
नाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिबन्धदर्पणनाम दशमोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चदुसुत कौष्ठानृपकी नारी । संजुल माश्री और गंधारी ॥ गंधारी महिषीके जाए । भूपति जे

अनभिन्न सदाए॥ माद्रीपुत्र युधाजित जुजूजे । और देवगोदुम हें दूजे ॥ तिनके बंश भेद बेवहारा ।
 प्रथमहिं कछा सहित विसतारा ॥ और एक माद्रीके जाए । ते भूपति अनभिन्न कहवाए ॥ अन
 भिवके सुत मित्र महोपा । ताके दोय तने कुलदीपा ॥ नृपप्रसेन प्रवाहितजेता । विदित वीर
 विरदैत सचेता ॥ सब अदुबंशी कृष्ण समेता । बिहरै दारावती समेता ॥ सचाजित हें सूर्य्य अराधका ।
 परमभक्त अविच्छिन्न अबाधक ॥ ते एक दिवस समुद्रतट आई । रवि सममुख द्वैवाह उठाई ॥
 रहि तहं खरो खरीलय लाए । छै प्रसन्न रवि भूपै आए ॥ रविहि समीपजं आए लेखे । तेजपुञ्ज
 नहिं मूरति देखे ॥ तब नृप कछो सूर्य्यसों जैसे । देखत रहे तुहै प्रभु जैसे ॥ नभपै तैसे द्रतहं लेखे ।
 तेजपुञ्ज नै मूर्ति न देखैं ॥ सो शुनि रवि निज गरसो तूरी । मणि सिमंत धरि दीन्हें दूरी ॥ तब
 रवि सउमि तेज छै भाए । नृप छै सुचित मूर्ति लखि पाए ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि संभाषण भूपसों रवि चढि चले बिमान । मांग्यो नृप सीमन्त मणि दियो खर सुखदान ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

सो मणि बांधि कंठ मुद जोहे । भूपति भूमि सूर्य्य छै मो हे ॥ अचाजित सो मणि मुद लीन्हे ।
 नृप प्रसेनजित भाइहि दीन्हे ॥ सो मणि देखि कृष्ण प्रभु माणा । दिये न सो अठ सालच पागा ॥
 सो चलि मणि सह बिपिनि बिहारेसि । मणि रहित ताहि सिंह तहं मारेसि ॥ मणि लहि छै यह
 सिंह असूदै । लाग्यो बनमै द्रत उतं कूदै ॥ मोदित लखि तेहि बधिरिसि आए । जांबवान मणि
 लियो छटारै ॥ अब सेनाजित घर नहिं आए । तब तागुरजन कपट बढाए ॥ मांग्योकृष्ण न तेदं
 मणि दीन्हा । ताते ताहि मारि तिन लीन्हा ॥ कहन लगे इमि सबै अयाने । सो शुनि कीहरि अनु
 चित माने ॥ प्रभुलै संग शुभठ शुभ भेषा । लगे लगन करि बिपिनि प्रवेशा ॥ तहां मरो तेहि नृपकों
 देखे । ताके कण्ठ न सो मणि लेखे ॥ चलि आगे सब सिंघ निरेखे । रिछ खरन तहं उपटे पेले ॥
 उपटे चरण लखतचलिआगे । दोरघ गुहा देखि मुद पागे ॥ शुन्यो तहां बाणी एहि भाषे । कससुत
 हीजो धाय शुनावे ॥ उर प्रसेनको सिंह बिदाखो । सिंहहि जांबवान नहिं भाखो ॥ कत तुम रोदन
 करत कुमारा । हें यह चार स्यमंत तुम्हारा ॥ सो शुनि सबहिं राखि बिलि हारि । प्रथिं कृष्ण
 रोस बरधारे ॥ जांबवान हरिकह लखि जपयो । घोर सजेर शब्द करि लपयो ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

छै सकुह सोउह भठ बाऊ जुह करि घोर । एक इस दिनमें जानि प्रभु पयो पाय सह जोर ॥
 जांबवती कन्या दियो खर स्यमंत मणि चार । सो लै मोदित हरिको आए कृष्ण उदार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो मणि श्वाजितकहं दीन्हे । जूठो लांछण लोपित कीन्हे ॥ हीं श्वाजितके दशगारी ।
तिनके शतसुत भूमिबिहारो ॥ तिनमै तोनि प्रसिद्ध सुकामो । हेमङ्कार नातपति मामी ॥ बिच
रक्षात ए सुत बच मामी । तनया तोनि प्रबोण बखानी ॥ चार सत्यभामा अह ब्रतिनी । प्रसापिनि
हरि रतिरस रतिनी ॥ श्वाजित नृपमिअ भलघीन्हे । तीमो सुता कृष्णकह दीन्हे ॥ हे सुत भंगरा
जके जाने । नृपं सभासु नारेच बखाने ॥ अक्ष मारि जो मणि प्रभू ल्याए । श्वाजितको दै सुलपाए ॥
नित्य सुवर्णभरै मणि सोई । रहै तहां न अवर्षण होई ॥ यहगुण लखि अक्रूर लोभाने । मणि
लोभेको मत हिय माने ॥ शुनि पांडवको कौरव जाये । कृष्ण राम महं गय पियारे ॥ तब अक्रूरसु
औसर पाई । शत धन्वाको संव शिखार्द ॥ श्वाजितको हति मणि ल्यावो । निशिमै हमको दै मुद
पावो ॥ शतधन्वा तेहि हति मणि लीन्हे । सहित प्रेम अकरूर हि दीन्हे ॥ कह्यो अक्रूर करो पन
भार्द । हमै दियो तुम जो मणि ल्याई । सो मति काऊहि भेद बतावो । किमो कष्ट जौं बासो पावो ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पितामरण लखि दुखित नै समिभामा रिसि आइ । रथ चढि जाइ मोबिन्दर्ये कही दशा बिलखाइ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शुनि हरि तहां सात्यकिहि राखे । आप दारिका गेरिसि राखे ॥ शतधन्वाकों घेछो जाई । लखो
निकसि सो सममुख आई ॥ कष्ट छिन लखि फिरिचल्यो पराई । रथमै एक अश्वनी लाइ ॥ सो
वाजिनि शत नाभिनि नामा । शत जोजन, बलि मरी सुकामा ॥ तब शतधन्वा भयसो पागयो । रथसो
उतरि पयात्रे भाग्यो ॥ पीछे राम कृष्ण महं आए । रथ की दशा देखि सुख पाए ॥ निज रथ सहं तहं
राम हि राखी । ता योबे हरि बखे सुसाखी ॥ लखि ताको इमि कियो जपेटैं । जिमि गदन्दको सिंह
दपेटैं ॥ मिथिला पुर पञ्चत तेहि मारे । तेहि मणि बिनु ताकठ निहारे ॥ फिरि ने आतापिं मुद
पागे । राम लखनकों सो मणि मागे ॥ कह्यो रामसो कृष्ण बुझाई । तासो रह्यो न सो मणि भाई ॥
सो शुनि राम क्लमठ अणुमाने । निध्या बचन जानि रिसिआने ॥ रूसि जाइ मिथिला सुख माजे ।
मिथिला पतिसें पूजित राजे ॥ लखि मणि कनक प्रसूति सुखारे । गुणि अक्रूर यज्ञ पन धारे ॥
नित्य निरन्तर शुनि मख कर हीं । दै असंख्य दक्षिणा मुद भरहीं ॥ साठि बरिस यहि विधि मख
कीन्हे । मणि प्रभाव सै काऊं चीन्हे ॥ शत मारगमै रत तेहि लेखे । कहि न सकै कोज बिनु देखे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एहि अन्तरमै राममै निबिद्यापुरमै जाय । नदा जुद्ध सीख्यो सुभट दुरजोधन नृपराय ॥

॥ हरिवंशदर्पणः ॥

॥ * ॥ चौषाई ॥ * ॥

अंधक दृष्टि रामये आर्द्रं । संहितं कृष्ण लै गण नमार्द्रं ॥ मणिकारह नै चंनरवासी । ने अक
रूर दूरिके वासी ॥ ने अकरूरं दूरि कडि अयते । भोजिज देश अवर्षण तवते ॥ तव अंधकमृप जाद्र
मुभाए । अकरूरहि निजपुरमह ल्याए ॥ शुनऊ भूप तन्न मणिके भेवा । वरयो हारा वतिमै देवा ॥
सुधि अकरूर कृष्णकहं दोन्हे । निजधर्मया हिय आनद लीन्हे ॥ सभामध्य अकरूरहि देखी ।
कह्यो कृष्ण बाणी रिसिभेखी ॥ मणि स्वमंत हैं तुम्हरे रेऊ । निजभल चाहि हमें सौ देऊ ॥ शुनि
अकरूर न उत्तर माखे । सो मणि हरिके आगे राखे ॥ लखि सो मणि प्रभु निजकर लीन्हे । ह्यै
प्रसन्न अकरूरहि दोन्हे ॥ बाधि कंठ मनि मुद्रसों मोहे । नृप अकरूर सूर समसोहे ॥ जांबवानके
धरके द्वारे । प्रभुजो शुन्यो शब्द पुन धारे ॥ भादौ चौथि चंद जौं देखे । हिय कलकके भयसों भेखे ॥
तौ वह शब्द पउन जौं लागै । जूठ कलक न ताको लागै ॥ हिय प्रसेनको सिंह बिदाह्यौ । सिंह
हि जांबवान गहि माह्यौ ॥ कत रोदन तुम करत कुमारा । है यह चार स्वमंत तुम्हारा ॥ अश्लोक ॥
सिंहः प्रसेनमवधात्सिंहो जांबवता हतः । सुकुमारक मारे दोलब ह्येष स्वमन्तकः ॥ * * * *

॥ * ॥ देहा ॥ * ॥

तौनि वार एहि जो पडै नि हचेसों हिय भेषि । जूठ कलक न तेहि लगै चौथि चंदको देषि ॥
फारि बूझो मुनिराजसों जनमेजय त्तिपात्त । विदित विश्वभरविष्णुकी पावनि कथा रसाल ॥

॥ * ॥ इन्द्र ॥ * ॥

शुचि सुबुधि सफल पुराणविदसों सुखचि यह बाणो लहै । भेषिसद विष्णु वराह ताकर
शुभ कथा शुनिभो चहै ॥ आचरण चरित सुभाव कारण रूप गुण तिनके कहे । अरु
विश्वसृज भगवान कत वसुदेवके सुत भे अहो ॥ जेहि अखिल अनर विरंधि आदिक
ध्यान धरि लखि हृदि धरे । निज लोक तजि एहि लोक प्रभुते नरनखंग किडाकरे ॥ जो
रधन पालत करत गोपन विश्व बडविधि बड घने । तै गोप कहवाए सुखचि गोपाल
गोपोपति बने ॥ अरु विविध विधिके विविध विधिसों विविध वर विधिसों भए । बड
विश्व जाके उर वसत उरबास सो प्रभु कत लए ॥ ते यज्ञते यज्ञांग तार्द्र यज्ञ कारक यज्ञ
यसी । ते यनुति पावक ज्वलन जाहिर वासुकी रति पगवसी ॥ जे वरख विद्या वेदव्यापक
धर अचर समुदा हैं । लण आदि जुग परजन्त ताके भेदमै जे काय हैं ॥ जे गरुडगामी
सौरसाम्ग शयन कर अभि राख हैं । जेहि भजे गोपीनाथ जनगण लहत आनद धाम हैं ॥

॥ * ॥ बर्ता इन्द्र ॥ * ॥

और एक । बात नेक ॥ तामु भेद । का अछेद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रसों घोखित होत अरु घोखितहोसों मासु । होत माससों भेद त्रिठ होत हाड किदि तासु ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

तासों मज्या होत नोसार्द । तासों होत शुक्र शुभठार्द ॥ होत शुक्रते बर्भ विधाना । सबको मूलक रस परधाना ॥ ताते प्रथम भाग रस जाने। आंकर तासु सुधाकर माने।। ताते सोमात्मक सबकोई । शुक्रहि कहत अनुक्रम जोई ॥ दुतिय भाग जो रज रमणीको । सो पावकआत्मक हैं नीको ॥ हैं कफवर्ग शुक्र शुनि जाने । रजकह पित्तवर्ग अनुमाने ॥ हृदय होइ कफका असधाना । रहत माभिमै पित्त प्रधाना ॥ हैमन नित्य हृदयको वासो । मनको देव घंदसुखरासो ॥ नाभि देश रज पित्त शुभेवा । ताकोसदा ज्ञताशन देवा ॥ रज अरु शुक्र एक ते व्हे कै । बाढे अंगुद सम दोउ भैकै ॥ तब तेहि गर्भ मध्य शुभदेशा । करि ईश्वरमय बायु प्रवेशा ॥ अंगभेद प्रगटित करि पावै । तामै आपु पांच व्हे तोवै ॥ प्राण अपान समान कहाए । अरु उदान अरु ध्यान गनाए ॥ अध अपान हृदि प्राण बिआरै । अरु उदान ऊधर संचारै ॥ नाभिदेशमै बसै समाना । सर्व देखभै विहरै व्याना ॥ ऐसी दया देखकी जानो । पंचभूतमै सो अगुमानो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पृथिवी बायु अकाश जल अग्नि पांच ए भूत । दश इन्दीते हैं सबै मन जंताके सूत ॥

प्राणबायु तन भूमिमै चक्षु जोतिमै चारु । रंभ अकाश अदृश्य जो जल प्रसेद अरु लारु ॥

सब प्रकार निर्मित कियो व्यामक ईश्वर जौन । सोई आपु प्रभु नर भए सो यह कारण कौन ॥

गर्भवासको महत दुख बरणत है सबकोय । तासु बास ईश्वर कियो कहे कौन गुण थोय ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

इतनों प्रश्न भूप कहि लींन्हे । तब मुनिबर यह उत्तर दींन्हे ॥ अहो भूमिपति तुम बड भागी । पावनि बिष्णु कथा अनुरागी ॥ निमिष मात्र भूमै मन लावै । सो अपूर्व उत्तम पद पावै ॥ नृप तुम भाग्यवान सब चीते । जो प्रभु कथा अबण चित्त चीते ॥ एक मुर्त्ति प्रभु की सुखरासो । जोति रासि वैकुण्ठ बिलासो ॥ दुतिय क्षीरसागरके बासी । सहित योग माया शुभदासी ॥ सहस्र चौकडी युग परमाना । श्रेय जोति ते करि अनुमाना ॥ नाभि कमलपै विधिहि बिलासै । ताहित मधुकै टभको मासै ॥ रचै जगत वद्धा ममभाए । जोहि प्रकार पीछुं कहिआए ॥ प्रभु जोहि हेतु लेत अब तारा । सो अब शुनिये भूप उदारो ॥ जब जब दैत होहिं मदमाने । अति उनपाग करै रिसि राते ॥ तब तब धर्म ले प्रजग होई । दुखत होहिं ऋषि सुर सब कोई ॥ तब प्रभु लै अबतार महाशै । करणा

विधि कलको कुल नारी ॥ असुर हिरण्यनेन मद भारा ॥ स्त्री बराह ताकंहं प्रभु मारा ॥ अन्न अंग
जितना अति धारो । ते बराह प्रति अंग विदारो ॥ ताते अन्न बराह भिक्षाता । धस्यो देशन्यै नहि
हित वाता ॥ जल प्रवाहमै बूडत देखी । करध कियो लोक हित पेली ॥ * * * * *

॥ दोहा ॥

यह बराह को शुचि कथा तुहै शुनायो भूप । अब गुनिअै नरसिंहको पावन चरित अमूप ॥

॥ * ॥ छंद तासर ॥ * ॥

शुभ सत्य जुगमै आम । जु हिरण्य कश्यप नामा । खल दैत्यवर बलधाजातप कियो अति अभिराम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सइस इगारह पांचगन बरिस निरंबु विधान । तपत देखि बिधि आइ गव कह्यो मांगु बरदान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कै ओदित तब तंद्र बर मागा । सब जग जातनको पन पागा ॥ देव असुर गन्धर्व कहाए । कि
झः यक्ष पिशाच गणए ॥ अह मनुष्य ष्टधि तप बल भारे । हों न जरो प्रभु इनके मारे ॥ अख मंड
अह पर्वत भारी । तिनमें सके नमोहि कोउ गारी ॥ सूखे बोदे आयुध जेते । कोतन व्यर्थ होहि
भव तेते ॥ इनते इतर निरायुध आवै । करै पराक्रम जो बहि भावै ॥ सो गुनि एव मत्तु कहि वेधा ।
सुर सेवित गे खर्ग सुमेधा ॥ बर प्रभाव अति उय निरेली । सुरन कह्यो विधिसो भयलेली ॥ प्रभु
निमित्त बर दीहै तुम वाको । निमित्त मृत्तु करो तिमि ताको ॥ गुनि बिधि कहा गुनो सब कोई ।
तप प्रभाव मिथ्या न हि होई ॥ तप फल भोगि गर्व हिय भारे । मरिहि बिष्णुसौ उदर बिदारै ॥ कै
हिरण्य कश्यप बलभारी । जोतेमि तीनि लोक धनुधारी ॥ तब सुरगण बिष्णुपें धाए आरत कै विधा
व्यथा शुनाए ॥ प्रभु सुरगण कहं साहस दोन्हे । ता बध करिवेको पन कोन्हे ॥ घन सम नपुत्रल धेज
कठोरा । करिघनबेग घनखन घोरा ॥ कै सकुह नरहरि बपु धारे । दुष्ट दैत को उदर बिदारै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जेहि हित प्रभु नरसिंह भे सो बरणे छिति पालाअं कहियतु जेहि हेतु भे बाधन विदित बिसाला ॥

॥ * ॥ रोला छन्द ॥ * ॥

शक छबे हेत विरच्यो बलि महत मख जूप । तब विनै गुनि पुरुहूतकी प्रभु भए वाधन रूप ॥

जाथ बलिपें नागि साठे तीनि पम नहि पाय । खगे नापन ताहि कै अति अमल उन्नत काय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहं प्रभुके कटि जानु सो भए निशे श दिदेश । ता दिव की सुपमा न कहि सकौ सारदा शेष ॥

॥ * ॥ चौपार्ई ॥ * ॥

सकल लोक अजगत लखि धार । असुर जिते पहिले कहि आए ॥ दिति अरु दनुके बंशज जेने । प्रभुसों हते गए तह तेने ॥ फिरि प्रभु बलिहि पताल पठाए । सह सुर शुक्र सरस सुख पाए ॥ फिरि प्रभुले अवतार सुहावन । दत्तात्रेय भए छित चावन ॥ वेद धर्मको लोप निरेखी । भए अबिके सुवन सुभेखी ॥ वेद धर्म मल बरण विवेका । रोपित कियो सुरिति अनेका ॥ दत्तात्रेयहि पूजि सुजापो । कांति बीजे भो परम प्रतापो ॥ प्रथम रक्षा सों है भुज गायो । लहि प्रभु कृपा सहस भुज पायो ॥ सातदोषको पति छै राज्यो । माहिस्वती पुरी वसि गाज्यो ॥ ताकापापकर्म लखि कोपो । भे प्रभु परशुराम पन रोपी ॥ परशुराम जयशह निवेदन । कियो ताहु वध करि भुज छेदन ॥ वास एकैस जोति माहि लीन्है । सो विधियत धिप्रनकहं दीन्है ॥ अत्र मृपचित्त एक तं ल्यार्ई । भुनु क्षप्रेम हिय भक्ति बसार्ई ॥ जहि बिरचि सनकादिक ध्यावैं । सो उदार अवतार बनावैं ॥ राव सागरको सेतु सो हाथो । जासु नाम शुभ धाम गनाथो ॥ प्राणध्यान सभै जेहि नावैवसि काशीमें शंभु सुगावैं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राज नाम अभिराम अति माहिना सागर चार । अमल अगाधि अमौर शुधि अनुपम सरल सुतार ॥ श्री श्रीपति सिय राम छै कीन्हो भूमिविहार । सह कारुण्य सो शुनि सजन योसि लहत भवपार ॥ विधि बर लहि अति प्रबल छै रावण निशिचरराज । सुर सुरपति अरु ऋषिनको कीन्हो महत अकाज ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

लोकपतिके कर्म कुलित देखि अति दुख पाय । भूमि धरि गोरूप विधिमें कही बड़विधिजाय ॥ कही सो शुनि समुझि बेधा सङ्गि सुर ऋषि भीर । समुद्र करुणासमुद्र डिगमे पयसमुद्रके तीर ॥ कथो अस्तुति सरुचि रचि रधि जोरि कर सुखपाय । भक्ति बल्ल प्रगट भे प्रभु दिशा प्राची आय ॥ रमा सह डलि गहड पै प्रभु हर परमापूर । उदै गिरिपै उदित मानअं कला कोठिन हर ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ तोटकहन्द ॥ * ॥

मुदभै शुनिके विनती विधिसों । विधिके मनकी करिषा विधिसों ॥ कहिके प्रभु अन्तरधान भए । सुरसो करता निज धाम गए ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ चौपार्ई ॥ * ॥

पूरणब्रह्म विश्वपति स्वामी । रमारमण नागान्तक गामी ॥ जन हित हेति हरधि पुरुषोत्तम । भे नरेन्द्र अत्र इद्र पुरोगमा ॥ शुनऊ तासु शुभ चरित नरेगा । जहि शुनि रहै न पातक लेखा ॥ विधि

को विने मानि मुदभारे । भे दशरथके सुवन सुहारे ॥ अख चक्र सह गदा सुहारी । भए चाहि
 है चार सुवारी ॥ राम भएच अह लखन पिचारे । अह प्रभुत्र भए लखु वारे ॥ रामाहि परब्रह्म
 नृप जानो । अनुज नीमि ब्रह्मादिक मानो ॥ रधि रधि बालचरित धित चापन । ब्रह्म विधि
 विहरि भाराव भाषन ॥ अहे कहु दिनने शुभन सयाने । नहि सर धनु विधि धनुधर जाने ॥
 कौशिक बचन मानि मुद लोन्हे । दशरथ वृष कौशिक कहै दोन्हे ॥ अति अभिराम राम सब
 जानिहि । पुरुष सिंह लखिनन अनुगामिहि ॥ मगने मारि ताडकै खानी । मै मुनि बन शत रनि
 सम धानी ॥ तहं मुनि यज्ञ विध्वंसन हारे । आदि सुबळ दइत बळ मारे ॥ लखि मारीच हि शर
 एक छाडे । सो लै गयो समुद तट चाडे ॥ अवि सह चलि तहतै मुद धारे गौतम चरणि अहिल्य
 हि तारे ॥ तहतै चलि सुरसरि तट जाई । मुनि केवटसें विनै सोहाई ॥ ** * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुर सरि उतरि उदार प्रभु अवि अह अनुज समेत । लखे मनोहर मंजु पुर निबिला छपा निकेत ॥

॥ * ॥ लीलादिन्द ॥ * ॥

सुरभरे । कर धनुष धरि सो धनुष धरि
 करि द्विधा धरणी पै धरे । निज प्रिया परमा पूर पावन करहि सिय तेहि पुनि बरे । करि
 लाकरीति सप्रीति फिरि निज तेज भृगुपनि सेां हरे ॥ सुख औधि जाय सु औधि पुर बर
 बरिस दादश सेां रहे । पितुं बचन मिसि सिय लक्षण सह फिरि सुरन हित बन मगगहे ॥
 लहि शृंगबेर निषादपै करि निपा फिरि सुरसरि तरे । मिलि सुमुणि भारद्वाज सो फिरि
 उतरि जमुनाबल खरे ॥ चलि बालमीकमुनीशसेां मिलि चित्रकूटहि चाहिंके ।
 कहु दिन रभे तिल भरत आए तेहि सुवचननि पाहिंके ॥ शुचि पादुका दै बिदा करि
 फिरि अचिमुनिपै प्रभु गए । तब तहतै चलि नदी तरि लखि बधि बिराधहि बर दए ॥
 फिरि सुवेम दण्डक चाहि जेहि तरु बलि अति सुन्दर जमे । सरभंग सुतप सुतीक्ष्ण
 सुमिगल सहित सह बळ दिन रमे ॥ करि कुम्भसंभवसेां समानन जाय पंचवटी बसे ।
 ते धन्य गोपीनाथ जाहिय बन बिहारी प्रभु लसे ॥ * * * * *

॥ तोटकण्ड ॥

तह रावणकी भजिनी बलमै तह सूर्यजला ठगिनी हलमै ॥ धिन चापन सेां अति चातुरि
 है प्रभु पास गर्द मदनातुरि है ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रभुकी आज्ञा लहि तहां लखिमन वीर निसंक । सूर्यजलाकी गहि लियो नाटिकान अह नंक ॥

॥ * ॥ श्लोक ॥ * ॥

तासु दशम निशाचर पाए । चौदह सस्य मरुत बल आए ॥ सर दूषण पिडिया बल थारे ।
 सचमे तेहि औराण सगरी ॥ तब सो देखि रदन करि भागी । रावणके विष कई सगरी ॥
 ताको दशा दशानन मुनिके । गो मरीचमें छिय कहु गुणिके ॥ करि सिचिज नृप ताहि बलपे ॥
 पोके आपु भूत बनि आयो ॥ लखि विचित्र मुग प्रभु पहिचाना । निज संकल्प छिय अनुमान ॥
 करि तब सिचिहि अगिनीमें लीला । किय नाथा आसन आसीला ॥ खलनहि राखि तसु बल
 वारी । कथो जाइ तेहि असुर विचारी ॥ सखो रामवत बचन मुनार्द । सो मुनि खपनहि सिचि
 पठार्द ॥ नाथा सिचियै रावण आर्द । हरिलै बल्यो सुरब वैठार्द ॥ लखि जटायुतेहि पचन माखो ।
 चेद जटायुको पत्त विदाखो ॥ प्रेष प्राण छै परे जटायू । गयो सिचिहि लै सो लघु आयू ॥ प्रभु
 फिरि आइ सिचिहि नहि देखे । थाकुलतासों निज छिय भेखे ॥ यह मुनि भूपति धम मनि कीजे ।
 लीला प्रौढ हेत लखि लीजे ॥ लखि जटायु कहं शुचि गति दीजे । बलि कबम्ह भुज छेदन कीजे ॥
 सोतन दहि सो निज मद पायो । तिमि सबरिहि निज धाम पठायो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पम्पा सर जल परस करि आगू चले उदार । तह पठए सुधीवके आए पवन कुमार ॥
 भक्ति सहित दडवत करि बूझि कथा सुखदाय । त्रिरिपै सह धाता प्रभुहि लीगे कंध चठाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तह सुधीव परे पन आई । कीन्हे ताहि सखा रघुराई ॥ तासु दशा मुनि प्रभु पन कीन्हे ।
 बालिहि मारि राज्य तेहि दीन्हे ॥ बालि सुवन अंगद बलवाना । कियो ताहि जुवराज प्रभाना ॥
 राज काजमें कपिहि लनार्द । बसे प्रवर्षण पै प्रभु आर्द ॥ तह सुधीव अरुद अथोरे । कलकराज
 कपि कटक बठोरे ॥ लखन जाइ तेहि प्रभुपै ल्याए । सिचिहि निरेषन हेत पठाय ॥ जांबवान अंगद
 हनुमानहि । आदिबीर दश वर बलवानहि ॥ निजनामांकित अमल अंगूठी । प्रभु हनुमानहि दर्द
 अंगूठी ॥ लै तेहि कपिवर चले सदाए । बीचहि एक निशाचर पाए ॥ छै सरोष ताको बध करिके ।
 पेलि जोगिनीको मुद भरि कौलएसमुद तट आनद भेजे । तह सम्पाति ग्ध्र कहं देजे ॥ लहि उदेश
 सियाको तासों । पौनकुमार चले भरि भासों ॥ सुरसासों संभाषण करिके । प्राणसिंहिका को परि
 हरिके ॥ समुद समुदके पार कपीया । जाइ निगह संकपुर दीशा ॥ तब कपिवर लखन वपुषारी ।
 संकापुर मधि चले सुखारी ॥ मगमै मिलो लंकिनी धीरा । सीहि ताहि पुर अविश्या बीरा ॥

चर सना सुभट सवारै ॥ दशकंधर निज बंधुहि देखी । शक्ति अमोघ चलाए सिने ली । सो लखि
लखि मन निज उर लीन्हे । रघुवर पाहि अनैवर दीन्हे ॥ तानें प्रभु लीला अनुसारी । परे भूमिपें
मनो दुखारी ॥ शक्ति लखनहि प्रभु सब जनाए । शौर्य छित प्रिय कपिहि पमोए ॥ बंधुबेग
चलि बानुकुमारा । मगनै कालनेमि कहं नारा ॥ तदनु आय द्रोणाचल ल्याए । लखनहि शौर्य
दे सुखपाए ॥ सुनि दशकंधर शक्तिहुल पाएसि । कुम्भकरण कहं सारन पठाएसि ॥ बिदिन बीर
रावणको धाता । कठिन जुद्ध कोन्हेसि मदमाता ॥ निज कर रघुवर ता बधकोन्हा । तानें तेहि
उत्तिम पददीन्हा ॥ सो सुनि रावण अति दुखपायो । मेघनाद तवनेहि समुजायो ॥ चल
भिकु भिक्षानै फिरि आर । लाग्यो जज्ञकरण मन लार । सोयह भेद विभीषण जानो । प्रभुसो
कह्यो भिनय मय वानो ॥ प्रभु अब आज्ञा लखनहि देऊ । मेघनाद कर बध सुनिसेऊ ॥ प्रभु
तब आज्ञालखनहि दीन्हो । लखन जाइ ताकर बधकोन्हा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मेघनाद को मरण सुनि छै व्याकुल दशकंध । पाइ मंत्र भृगुसों करन लाग्यो लखनति अंध ॥
प्रभु आज्ञा लखि कोटि दश सुभट सारहे जाय । ता मख धंसम करि बजरि पेले प्रभुको पाय ॥
रावण निशिचदराज तब उन्नत रथपं राजि । उमडि घनोघन घोर सम चटो प्रवल दलसाजि ॥

॥ * ॥ मोदकछन्द ॥ * ॥

आवत ताहि त्रिलोकि बली बर । मारुत नंदन दैत दलोंदर ॥ कोप कराल कियो जय
चाहक । वानरघूष सयूथपाहक ॥ * ॥ खोरवा ॥ * ॥ * * * * *
हनूमान बलवान तरपि करपि धन सम गरजि ॥ मूका बज्र समान रावणको उर मै द्यो ॥

॥ * ॥ भुजंगप्रयात छन्द ॥ * ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

लगे दीह मूका भयो मूठ मूका । रहे छै दशोद्यास्य ज्यों मंजु मूका ॥ उद्योषेतिके हेतिके युद्ध
भारी ॥ सराहे हनूमानको नब धारी । कहा माहि रे तु सराहे सुखारे ॥ लखे फेरि बौगान जों
प्राण धारे । अरे एक मूका हनै मारि खेत ॥ लगे फेरि भेरी तने छाडि दंत ॥ सुने सो हनूमान कां
मूक माख्यो । न ताते कंजु दंद सो बीर धाख्यो ॥ भगो लेखि लकायि सकत जानी । गया फेरि यी
रामपं मन्मानी ॥ कखे कै देखी कै भलेक करालो तजे सुल आ वाण भिंडान भालें ॥ भयो मोहभ
मूठ माया पसारै । तिन्हे अर्थ दहै तज ना बिसारै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मायानिधि प्रभु सो करै यों माया बिसतार । चहै नहायो जल निधिहि मउप्रसे द्यो धार ॥

निश्चर पतिहि रथी निरखि प्रभु हि पदाती देखि प्रक वडाये मातलिहि निज रथ अखनि भेलि ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

बडि तेहरथै प्रभु मुद भारे । गहि प्रचंडकोदंड निहारै ॥ बीरक मूढ खरोमति भाये । निज
कत फल लहि निजु तन त्यागे ॥ कहि वर बाणनि मारन लागे । ताके तनहि पिदारण लागे ॥
दशमिर बीस भुजा प्रभु काठैं । नए प्रगटि फिरि सुख साठठैं ॥ गिरैं शीघ्र रावणके कौसैं । ताल
दसते वर पास जैसैं ॥ कटै कटै दनि भुज सिर ताके । अदरग दरग यथा समदाके ॥ एहि विधिनि
शि दिन सात प्रमाना । सोलि ताहि वर शुधविधाना ॥ प्रभु निश्चरपतिको बध कीन्हे । वरपि
सुमन सुमन मुदसीन्हे ॥ लखि विभीषणहि कहित विनेका । कियो लंकपति करि अभिषेका ॥
माथ सीतहि अग्नि प्रवेशी । लहि शुचि सीता महिमा भेशी ॥ बडि पुष्यक पै सहित समाजा ।
आए प्रभु जहं भारद्वाजा ॥ एक निसीचिनि तहां बिताए । फिरि शुभदोध औध पुरं आए ॥ गुरु
अर मातु बन्धु पुरवासी । मिलि सबसों प्रभु आनंद रासी ॥ फिरि प्रभु महि मंगल सों साजे ।
विधिवत विशद राज्य लहि राजे ॥ पाद प्रभुहि प्रति पासन परणी । भई भय ता दिनते धरणी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रतिरोमण वच्चाण जो पासन करत अनूप । महिपासन की ता कथा कहैं कहालों भूप ॥
शुभद चरित औरामके पावन करण उदार । बरणि कहे संक्षेपसों भवनिधितारणहार ॥
अब कहिय तु श्रीकृष्णके चरितं चाह संचार । जे प्रभु न्है बसुदेवसुत कियो दैत संचार ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

हो तब माथुर कल्पअनूपा । भए कृष्ण जब अनुपम रूपा ॥ भे बसुदेव तनै जब स्थनी । दुष्ट
दसन हित अन्तर जामी ॥ मंत्री सखा शुभट सुत धाता । सहित कंसको कियो निपाता ॥ और
जिते खल नृप मदमाते । कौतुक सौतुक तिन्है निपाते ॥ प्रभुके चरित कहालों गावैं । ताते भेद
निहाव बतावैं ॥ लखौ शुनौ जो गुणि अनुमाने ॥ सो सब कृष्णचरित करि जाने । नख कख
आदिक अवतारा ॥ ए वरणे शुनु भूप उदारा ॥ आस कपिल समकारिक आदिक । प्रभु अवतार
असंख्य सुवादिक ॥ चाहि जानिबो जासु प्रमाना । लहैं देवमण मोह महाना ॥ अब भविष्य
अवतार महीपा । शुनु सप्रेम कौरव कुलदापा ॥ होइहि संभल पुरको बासी । नाम बिष्णुजग दुज
सुख रासी ॥ तासुत न्है न्है हें बिल्याता । सु प्रभु कलकी पुऊमीनाता ॥ अन्तरबैद मध्य करि बासा ।
करि हें प्रभु दुष्टनको नासा ॥ असती पुरुष सबै मिटि जहैं सुसती प्रगटि सुधर्म बढेहैं ॥ शुनो भूप
तब कल युग जाइहि । परम पुनीत सत्ययुग आरहि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो प्रभुकी चबतारके शुनै सुचरित सप्रेम । सो धनि परमारब धनी इत उत लहै सुखेन ॥
याहोसों सब बगतहैं एहि विनु सबै नग्राथ । नहि एहि कीन्हे अम आधक मजे न सुख संरसाथ ॥
बिना बिचारे सहजहीं बाबाद बडो नग्राथ । किए बिचार सु सहजहीं बडी बात बनिजाथ ॥
लक्ष्मिथोकाशोराजाधिराजश्रीउदितनारायणश्यामाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशोवासिभोकुल
नाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गतेहरिवंशदर्तयोनामै कादशोऽध्यायः

॥ * ॥ चौपारं ॥ * ॥

परब्रह्म ईश्वर गुणगाए । सुरसवित बैकुण्ठ कहाए ॥ ते प्रभु मानुष छै गुणधारी । कस कहाए
भूतलधारी ॥ जे प्रभु सीरधिउदधिविहारी । धिरथ्यौ विधिहि सरुचि अनुसारी ॥ कामसों विधि
जग उतपति कोन्हे । गुणमै विविधिभाति सुद लीन्हे ॥ सबमै रहैं व्यापि प्रभू औसैं । उपल दारुमै
पावक जैसे ॥ अदितपुत्र छै निजजम पालक । भे उपेद्र राक्षसकुलघालक ॥ करुणा निधिकी
कीरति नीकी । पावन करणि शुनऊ प्रियजीकी ॥ भयो कृत्ययुगमै बल बाना । दृवासुर अघ बोध
अमाना ॥ मुगल प्रमाण रोज सो फौ लै । भयो प्रमत्तसुरन सो जैलै ॥ लै दधीचको हाड सोहायो ।
विदत बिडौजा बज्र बनायो ॥ तासों वधि दृवाहि जय लोन्हे । तातें असुर बंद रिसि कीन्हे ॥ चढ्यो
कोपि मय वर बल भारी । लखौ सुरगसों सुजय विचारो ॥ कोन्हेसि क्रुद्ध यूद्ध अति घेरा । भाषा
व्यापित करि चऊंघेरा ॥ गरजै घूमि घनो घनकायो । अतिसै अंधकार नहि आयो ॥ तउपे
तडित भयानक भेसा । जेहि लखि रहै न धोरज खेसा ॥ मारत सात प्रबल छै डोलै । अतिप्रचंड
दशदिशिसेबोलै ॥ तपित धारि बरसे बर बूदन । उलका पतन होइ दिशि दूदन ॥ सुर बिंनान
परबस तेहि नाहीं ॥ उलटै पलटै जुकेँ उडाहीं ॥ बर बोधी सागरमै जैसेबोभित बोहित बिहरैं तैसे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरपति सहित समस्त सुर छै तब तहां अचैन । चाहि चाहि करुणायतन आरत बोले बैन ॥
सो शुनि करुणासिंधु प्रभु दोनोहरण उदार । तां छिन तहं प्रगटित भए लखि निज विरद विहार ॥

॥ * ॥ चौपारं ॥ * ॥

है जितने उतपांत महाने । ते तेहि छिन एहि भांति नसाने ॥ ज्वलित जोति जिमि किरणि
सुभेसा । रहैं न घरमें तमको खेसा ॥ घनघन श्याम नेरुसम भारी । चारु चतुर्भुज आयुध धारी ॥
गरुडध्वज रथमें आसी ना । जासु चक्रवर्ति सुर अहीना ॥ कौल जासु मन्दर तनुधारी । नखौ अंनत
किरणिसों भारी ॥ जाँमै सुमनगुह सम खाने । तारा येह नखुच छवि पाने ॥ राव रथके बाजी

जेहि बाधे जे जयलीबेकी निधि साधे ॥ प्रभु हि पेशि नै सुमन सुखारे । सहित इंद्र जे जैतिपुकारे ॥
 कह्यो अक्षरों सारंगपानी । होऊ निबंध दैत बध जानी ॥ साथ संजकीसुनि यह बानी । भए
 अशंक सुमन सुख भानी ॥ सुमन सुरपतिहि निरभै देखी । दानव दोहे कहे अतितोही ॥ द्वादश
 ग्रहवर ह्यप्रमाना । चारि चक्रको सुरध अमाना ॥ कंचन मय परदलकी दाहक । सहस्र
 रिह मण जाके दाहक ॥ अक्षर विशेष भूरियों भाखी । तापे चडि मय करन पधाखी ॥ कोसभरे
 को जासु पसारा । सोह मघो अखनि सौभारा ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जाने खने सहस्र खर चाहे खंचनहार । तेहि रथ चढ्यौ प्रमत्त नै दैत नीर बर तार ॥
 हंसरीवसह राज खर अरु अरिष्ठबाराहा प्रबल नीर रथ चडि खसे करत सुइको चाह ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

विष्व चित दनुजेश कहायो । अंत नाम भूट ताको जायो ॥ बलो निरेखन बर रणधीरा । बलिको
 तने अरिष्ठ प्रवीरा ॥ ईन्है आदि दैअत बर बढिके । हय-गज रथ खर कठम चढिके ॥ ब्यूह बांधि
 भे सनमुख ठाढे । नीर धीर मुद उनमद बाढे ॥ सिंह बराह रिह आरोह । कितने नीर पदातो
 सोह ॥ नामा रूपनकोबल भारे । विविध भांतिके आयुध धारे ॥ दैदौ ताल काल सम गरजै ।
 लाखि लाखि सुमन समूहन तरजै ॥ प्रभु प्रसाद सुरपति दल जाजे । ऐरावत गजपें चडि राजे ॥
 ह्मद्रादित्य आदि सब देवा । तैतिस कोटि संग शुभ भेवा ॥ पूरव दिशि पुरुक्षित बिराजे । दक्षिण
 दिशि गरवी जम गाजे ॥ पश्चिम दिशि रहि बरण प्रचारे । उत्तर दिशा कुम्भ बिहारै ॥ सहित
 साज सुर सेना पाहैं । करदन परदल मरदन चाहैं ॥ कित्तरे यक्ष गंधर्व सोहाए । मुंनिगण सर्व
 गंध रहि भाए ॥ बाजि सहस्र जेहि रथनै खाने । तापे चडि अग्नि सुषनापाने ॥ माहत्त सात प्रबल
 न्हे बाहैं । न्हे सममुख अरि दलपें बोलैं ॥ उमडि मेघ अरि दलपें गरजैं । जानै धरै दैत उरदरजैं ॥
 तडिता अखनि भयामक तरपें । निरभै असुर खले जेहि डरपें ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मथक बासुकि विसद विष जुरे सहित परिवार । दैखल दल प्रति तजत तकि फूलकारकी धार ॥
 अर धनु सहगादिक विशद आयुष धरै सुवीर । सोभे सब सुमनस शुभल संगर करता धीर ॥

॥ * ॥ तोटकहन्द ॥ * ॥

शुभदं शुभ नंगल आशिषनै । सुमनै सु खणी असुरें विषनै ॥
 तप पुंजबनय मुनि हृदपडै । सुनि सो मुदसौ सुर पाव चढे ॥

॥ * ॥ महिलेरीहन्द ॥ * ॥

इति सजी सुर शुभसैन तामधि निषु सुर खामो लसे । प्रभू गहड गामी गहडकेतु बिलोकि

जेहि परबल बसे ॥ धरि शंख चक्र नदारि भंजन सकचि सारन धनु महे । फाटि खडग नंदक
नंदकर तूखोर बहय हनि लहे ॥ लखि प्रभुहि विधिवत बदि सुरपति सहित सेन बडि बखे ।
जिनि नाचिबेसा उदधि- कौसल तिनि असुर दल पैरले ॥ सरल मल सुमति सुकर
भिंडपासहि आदिने । सब बखे आयुध पुङ्ग दिशिसे घोर बद्धविनादिने ॥ बरसेन देण्ड
कुट्ट बोर सेा पलिदो समुद से भिरि मिले । जिमि प्रसे मारत पाय कीची उठति तिनि अठ
गणलखे ॥ भट जुटे कुटे कुटे कुटे भट फिरि जुटि धरै । बडि मार मार पुकारि मारै
मारै जुधि कोडा करै ॥ इमि मडो घोर अमोघ संगर देखि मय मायामयो । सर गवं नाया
फोस सेा सब बाधि सुरसेना लयो ॥ तेहि फसे सुरकै जडी भून न सकहि हिलि चिचित
भए । तब देखि सुरपति बखसेा बहकाटि बर बंधन दए ॥ * * * * *

॥ दोहा ॥

मायापांसहि काटिके दानव दलभै जाय । तामस जस अमोघतेहि तज्यो सुरेश मथाय ॥
ताते निशिचरसेनपे नयो घनो तब शाय । जाने नहि दानवनको मिज परपै लसाय ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

अंधकार व्यापे चक्रवोरा । भए बितप होजनी घरदेरा ॥ निज दल विकल देखि मेधावी । माया
प्रगटेसि मय मायावी ॥ तामस भर अग्निनि को प्रवाला । कीन्हेसि प्रगठ अघिनि नति खाला ॥
तनभो दूरि दैत मुद पागे । न्हेके तपित सकल सुर भागे ॥ शशिके पास जाइ भे ठाढे । लखि
सुरेश अति अमरक कडे ॥ कछो बरुण सेा मय नतिपावोकरि उधायह अग्नि बराघो ॥ सो अग्नि
कछो बरुण मुद दाता । एहि मांथा की नति सुनु ताता ॥ रछो पूर्व युग मै तप राखी । ब्रह्म
क्षिपिज कानन को बाधी ॥ उर्व मान दुस्तर इत कीन्हे । तपके तेज तपित नहि कीन्हे ॥ ताके पास
तपित न्हे आए । सुर क्षिपिगणा करि ताहि गुमाए ॥ तात तजउ दुखह्वन भारी । सुत उतपति
करउ लहि नारी ॥ सो सुनि उर्व कोप करि बोले । ब्रह्मचर्य की नहिमा खोले ॥ धोरज धर्म
तप जानो । ब्रह्मचर्य के बस ते मानो ॥ ब्रह्मचर्य को ब्रत निबाहै । ते यागोश करै जो चाहै ॥
विना योन नहि सिद्धि अधोना । सिद्धि विना नहि सुजर्व अहीना ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आसु सुजग संसार मै होत कहे संसार । ताको इत उत्तम सर्ग हैं उम सुरथ बिहार ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

नि अ संयह करि सुद उप जावन । तुम जो कहे बडे जिन चरन ॥ प्रथम सृष्टि उतपति विधि
कीन्हे । तब ते कहे तियाहे लान्हे ॥ ब्रह्मचर्य ब्रत धारो जोगो । मानस पुत्र रचै मुद भोगो ॥

एहि प्रकार बज्र विधि सों भाषे । फिरि मुनि उर्ब पुष अमि लाषे ॥ दक्षिण जानु अग्नियें राखी ।
 कुससों भवन कियो सुसाखी ॥ भेदि उबको उरू चारू । और्वलनल भे प्रगट उदारू ॥ जगत
 दहन ईहें रिषि भारे । तीनि लोक निज तेज पसारे ॥ ताहन कहे सि पितासों बीसों । रोष मयो
 रख करे अमैसो ॥ वैहोंबुधित देऊ मोहि शासन । हों जग भदौ सुनो सुभासन ॥ इतने मै
 तह वेधा आए । बज्रत भांति उर्ब हि समुभांए ॥ सुनि निज सुतको तेज अपारा । इमित करा
 बज्र ज्ञान अपारा ॥ हम देहें तुव सुतके लायक । आसन असन चारू चित चायक ॥ सौसुनि उर्ब
 सरस सुख मानी । विधि सों कह्यो परम प्रिय बानी ॥ नाथ कियो काकित अनुमाणा । मम सुत
 जोग यसन असथाना ॥ कह्यो विरचि सुनऊ मुनि ज्ञानी । बडवा कहत अखनिहि ज्ञानी ॥ ता
 मुख संदृश समुद को आनन । परम सुहावन मरुचि सुकानन ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तामधिवसिहों करत हों सदा उदधि जल पान । सो जल तुव सुतको असनसो मुख शुचि असथान ॥
 सो शुनिकै मन मुदित कै मुनि सुत अजल महान । बडवा मुखमै बसि करै सदा समुद जलपान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

विधि मुनिगण गे निज निज धामा । यह कैतुक लखिकै अभिरामा ॥ दइत चिरण्यकशिपु बर
 जोरी । कहसि उर्बसों करि चित चोरी ॥ तात त्रिलक्षण चरित तुम्हारो । लखि मोहित मन भयो
 हमारो ॥ तातें हमै सिष्य करिलेहू । यह सुप्रयोग मंत्र मोहि देहू ॥ मुनि मुनि हापा तामुयें
 कीन्हें । औत्र प्रयोग मंत्र तेहि दीन्हें ॥ कहि निज बंश अद एहि माजो । सोई यह प्रयोग है
 जाजो ॥ ताते अब मोहि देऊ सहार्द । सोम शीतकर कह सुख दार्द ॥ शशि सुधाशु करि शीत
 प्रकासन । करिहैं ज्वाल जालको नाशन ॥ सो शुनिकै सुरपति मुद भारें । शशिसों कहे सराहि
 सुखारे ॥ तुम अरू बरुण अतेज प्रकासो । रजनीचर की माया नासो ॥ शासन मुनि सुधाशु मुख
 पागो ॥ कै हरषित हिमि बरषण लागे ॥ ज्वाल जालमै माया हजमै । लोपित करि पूरे यन मनमै ॥
 प्रलै काल के धारा धरसे । तुहिन धारू अरि दल पर बरसे ॥ बरुण पाश धर मुदित ननरदें ।
 पास डारि दैअत दल मरदें ॥ जल आकर जलपति ए दोऊ । इनसों जीति सकै नहि कोऊ ॥
 कै कै छिभितें बिकल पिरारे । गिरे दैत जिनि पर्वत भारे ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो लखि मय निशिचर अधिप करिके कौप कराल ॥

शैलमयी भाषा प्रगट कीन्हेंसि बरुणविशाल ॥

परन लाग्यो सुर सैनपै शिला बिटप चऊं बोर ॥

आकसमाद अमोघ अतिमद्यो शब्द अति धार ॥

हरिभीतश्चन्द्र ॥

सुर शयन मधि गिरि विपिनि कन्दर सरित सर अनगिन बने । जेहि एक राकधि लपत
महि रहि करनिघर अन्तर घने ॥ बहू सिंह ग्यात्र बराह निर्मित भालु भोषण लखि प्ररै
शै छार वायु प्रकर्ष उन्नत अभित धनि दिशि रज भरै ॥ शशि बरुण आदि समस्त सुर
गण अकित रहि व्याकुल भए । लखि असुर बलहि प्रमत्त गरजहि मेघ सम मन मद
भए ॥ सुर असुरको यह लखत संगर गरुड गामो प्रभु खरे । बर दरत पतिको बध समय
करि समा परखत धनु धरे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब प्रभु मारुत अगिनि कह आजा दयो उदार । करौ प्रबल शै आसुरी मायाको संघार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुसें लहि निदेय ते कोपे । शै अति प्रबल प्रलय आलोपे ॥ गिरि काननजे माया बारे
तेहि उडाइ पर दखपर हारे ॥ प्रबल पौनको पाइ सहायक । शै प्रकर्ष अति अनल सुभायक ॥
धूमि जूमि दैखत दख जारे । जरे मरे शै दैत पिरारे ॥ मरै किते अधजरे पराने । किते भागि
सर सरित समाने ॥ सुरपति सेनाके भट गाजे । सुखद जोतिके दुंदुभि बाजे ॥ मय निशिचर पतिकी
शुनि हारी । कालनेमि दामब बल भारो ॥ शत मूलकसें शोभित तैसें । शत शृंगनको पर्वत
जैमै ॥ शत भुंज वीर बली बरणको । कठिन कराल जई पररणको ॥ शत आयुध लीन्हे मद
नाता । आयो मयपै रिसि रस राता ॥ तेहि लखि मय उठि अकलगायो । शै शरत निज दशा
शुनायो ॥ सो शुनि काल नेमि रिसि भरिकै । सुरन जोतिबेको पन करिकै ॥ धीगधकेत धुरंधर
धीरा । धारा धरसें बर बपु बीरा ॥ संगलै चढ्यो दानवी सेना । मय आदिक निशि चर जग जेना ॥
कठिन कराल काख सब घेरा । विशद बाण बरषत अजंबोरा ॥ विविधि भांतिके आयुध धारे ।
भंग भयानक भूषण भारे ॥ कालनेमि को लखि सुर नायक । किए सजुष सेना सरसायक ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भियो प्राय सुरसेनसें घासत शक्त अघात । धिरे सघन बन मै मनो बरसत मेघ सवात ॥

॥ * ॥ भुजंगप्रयातश्चन्द्र ॥ * ॥

भिरे ताल दै पायदे पायदे सें । रथी से रथीते लरे काय देसें ॥ भिरे बाजि बारे न
सें बाजि बारे । लरे मै बली मै बली रोस धारे ॥ सुभासै तभालै तसें जग माच्यो ।
जुवानै तवानै तसें रंग राच्यो ॥ सबेवोर शै भिरे जोर जोरै । अमानै नकेऊ मनै नेकु

मार्ति॥ किते वीर बाबो बखीजे विपारी । विद्या श्रीबन्धे नै लारे सप्रधारी॥ मने वाव खाने
किते वीर भूने । एको सेवारे नै किते वीर भूने ॥ किते मर्तिने बाबो नै सप्रधारी । मने
किते धर्मपं ताहि धारे॥ भिदे भक्तवैरे किते वीर चैवें । किते कलकटे इव नै सानु जैवें॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बाहु सुदकंते करै भिरे वीर बलवान । दांकि दाकिरै हांक हरि धारे होय प्रथम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भेरी दुंदुभि को अदारा । अह कोदंडनको टंकोरा ॥ वीरशकी गर्जन तें चोरा॥ मन्द अनोप मयो
घऊंधारा ॥ सायो शोनित समुद मझाना । तामधि सत्र जलमनु सजाम्य ॥ एहि विभिको अखि
संगर सायो । कालनेम दानव रिसि रायो ॥ साय्ये सुद करण अति भाविसुत भुजयो व्रत सायुध
धर्यो ॥ खेसै मृग सुरणपे भोखै । चलमंदर मनु कंडुक खेसै ॥ मने सजाम ममको गुंथ लीखेसि ।
मख वडिको दुरदिन कीखेसि ॥ सरनै बंधन रधि भरि भासो । गदेसि बाधि सुरपति कह तासो ॥
मर कुदेरु खै बबल कहाए । शशि सूरज अे प्रबल गहाए ॥ अलख अमिल अलखाना सरिता सुद
गधर्व जिते शुभ चरिता ॥ सबहि जीति निज बस करि भायो ॥ अखित पांसनहि नख करि पायो ॥ वेद
धर्म अह सभा सोहार्द । सुखद सत्य अह श्रीगुणगार्द ॥ ए सब नारायण अमिता कौसे इन्है सबे गति
हीना ॥ सुरम जीति मन नमताये रेसिताव सो नारायण तन हरेसि ॥ मरबी नेप अग्नि सो सांढो ॥
अलखे प्रभूको सममुखटाढो ॥ सयो कहन नडि बचन कटोरा । मयो काल बसि खै मति भोरा ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तुम्ह मनबैरी विदित हो बनि सुरमणके नाथ । करै वज्रत अपराध है अति सुरपतिके साथ
मले समेनोखलि परे भलो बन्धो यह काजु । खेसै सब दिनको बधर वध सुधार करि पाजु ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सोभुनि हरि बोले सुरसामी । श्रीश्रीपति नामांतक सामी ॥ इत जाना तुम हो बलवाना ।
वज्रभुज वज्रत धरे धनुवाना ॥ हो वज्रमुख वज्रविधितें पोखी । निज अरिसाकी पदबोखानी ॥
रहै एक मुखके सब आगे । कहि न सके इभिते रिसि पागे ॥ बेरो कडिते मर फल पाए । अबतुम
बंजुतें कंइत दिन आए ॥ मते कहत अधिक कल साबो । हो मरु जानि यह इज दीन्हो ॥ अर
धातर मर्धित यह बानी । सुनि नै कालनेनि अमितामी ॥ मरु रतालि मरुत बरभास सी । सगपति
का मरुतकव मारेसि ॥ खै अर्जित मेहि सने अनेय । मरुभूमि वैदि सुभया ॥ सो खलि कालनेनि
सुद पायो । बाण पखाननि मारण साख्यो ॥ अहि सुमवकाण अवरज जानो । अस्तुति करण सने
शुभवाणी ॥ अस्तुति मुनि प्रभु अंतयजानी । वरधित भय नइह अइ सामी ॥ मम विरोट महि

बदल सो हाए । अरु बियाल भूजा निवि नहिनि । उष बचसो नहिना ठाटे । कालनेमिके चिर
भुज काटे ॥ चिर भुज कटेऊ रसो रिचि पाठो । गाला सोन वृक्षसो नरो ॥ हनो बससो तेहि
उरगारी । कंचे निविनी वैचननगारी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मय तारहि अचिक रहे अति रम्य बरिबारे । बरु नदा सो प्रभु कियो तिग सबको सवार ॥

॥ * ॥ चौपद ॥ * ॥

॥ * ॥ अतिरोसाहन्द ॥ * ॥

सुर बकसो इनि कहेउ प्रभु इनि इनुजकी समुदाय । निज निज परन बसि करऊ अब
निज भरत पासन आगन गुन होन दख बडि कस्यो हम सब असुरको सवार । बसि रोक
सुखे भागि तिमसो दखेऊ निवि अचिबारे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रकासन तह अचिकरि अकृति अोरजन की । मेनिज लोक लवाए अति अनोच आमद भरे ॥
सक्तिषी काशीरजिन हरिजाधिराजषी उरिनगारा वरुसाज्ञाभिगाभिना श्रीधदीजनकाशीवासी
गोकुलनावाकजिन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतातर्गते हरिचंद्रदण्डे मयतारका
मयदेवासुरसंघनिनाम द्वादशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ चौपद ॥ * ॥

वैसंपायनको बर बानी । मुनि बेलि जनमेजय शानी ॥ ब्रह्मलोक विधिके संग जाई । कियो
कहा प्रभु कहा बरुनि ॥ कहि कारज हिन प्रभु अभिरामहि । ने लवाय वेधा निज बाबहि ॥
सहि असाठको प्रयनी नाना । गुलपक्षको अति अभिरामा ॥ एकादशि मुचि सुयमा रूसी ।
मयन करहि अे विचविहासी ॥ एकादशि कार्तिक को चारु । सहि जागहि लोकप भरतारु ॥
सौरसमदने बसै सवासी । कैंसे करे विश्व प्रतिपाला ॥ प्रस भूपको मुनि सुख रायक । बाले
मुनि मुनि रूप सब लयक ॥ प्रभुको बनि अति सुखम जागे । सुर न सकहि अहि कालि दनि
माने ॥ विष्णु लोकनिध भदिना पूरे । लोक विष्णुमय ई सब करे ॥ अक्षतरुकी गति उर आगे ।
कंचन भवण सुम अनुजागे ॥ प्रभु भीहना शगरको पासा । करि विचारको राधन हारा ॥ मुनऊ
जाद वेधाके सोवा । ब्रह्मलोक प्रभु कियो संवाया ॥ ताहीं सरस सुयमा सो भेधे । यज्ञ करन
प्राप गण कह दे ॥ एहिनि अचि निवि कह प्रभु बदे । मयदेव पक्षक आनरे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अर्ध पायदे चार । परब्रह्म भगवानकी अकृति कियो उदार ॥

॥ * ॥ श्लोकार्द्र ॥ * ॥

शुनि यत्नति नै प्रनुदित स्वामी । ने निज भान विधनपतिभानी ॥ वज्रुल नठन जासु वज्रं
बेरा । अथकार अतिसों अति बेरा ॥ जहां न अनल निभेय दिनेय ॥ प्रभुके तेज हीपित सो
देश ॥ तहां सहस्रशीर्षा नै स्वामी । शयन कियो प्रभु अंतरजानी ॥ बरिस हजार शयन तह
कोन्हे । इत युग द्वापरको सुद हीन्हे ॥ तब अषि कृत सहित विधि आर्द्र । प्रभुहि अजाए नुर गुण
गार्द्र ॥ आभि कस्यो विधिसों बर बानी । विश्वंभर प्रभु आनंद दानी ॥ कहे सुमन कासों भय
पाए । आ हित तुम मोहि आद्र अजाए ॥ तासु निपात करै हींसादर । विधि बोखे शुनि बाणी
सादर ॥ सुरम कुतो भय हरि घुघासक । प्रभु किपास जिमके प्रतिमालक ॥ सुमन समूह सुचिन्त
विलास्यै । सह सुरपति सुषमात्रों भासै ॥ अथा काल वर्ष खनकासी । तातें परजा परम सुखारी ॥
नृष करि नीति प्रजन सुख देहीं । छठवा भाग भाग निज लेहीं ॥ मृत समूह धरणीपे बाडे । ते
बल दल सों विहित उकाडे ॥ नगर ग्राम गढ मानुष भारे । अप्रमेय अति बने विहारे ॥ तिनके
भार भई इमि धरणी । वे प्रमाण बोभी जिमि तरणी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तातें धरणी दीन नै आतुरि मम ढिग आद्र । भरी भूरि भय निज दशा कहति विकल विलाआद्र ॥

॥ * ॥ श्लोकार्द्र ॥ * ॥

तादहित सत्वर हों ईत आर्थों । तासु दशा प्रभु तुम्हहि गुनाथो ॥ लहि नर नरपतिको बर
भाए । धरणी पीडित भई अथा ए ॥ याको एक आपुकी गति है । गुणे सर्वदासो यह सतिहै ॥
ते सब धर्मनैलके नामो । भूमि भार किमि हरिहो स्वामी ॥ निनु अथार्थ प्रथम कह सारे ।
रहिहि न प्रभु कछु धर्म बिचारे ॥ भार हरे विनु नहि दुख पादरहि । सकि विषयानि पातालहि
जार्द्रहि ॥ तातें चलज नेशपें सार्द्र । सह सुर करज नभ मेहि ठाई ॥ प्रभुके कहि प्रभु तब आए ।
नेव शिखरपें सुषमा ह्याए ॥ अत्र सुरपति सुर चिबिष सबेता । वेदे गढ़ प्रभु कासि विद्वता ॥ भूमि
जोरि कर नै तह ठाढो । लगी कहन अति करवा भाढो ॥ सुम सुमने मज्जर नेवादे कस्यु नाथ
तुम असुर सवारण ॥ अब नहि रह्यो सृष्टि बेवहारा । हो पुदित बस सुर पवारण ॥ तहां शेष सार्द्र
तुम नाथ । गाभि कमल पै विधिहि रमाए ॥ तब तह कागन से प्रभु बोडे । प्रेमी मधुकीटम बल
बाडे ॥ ते करिबे कह विधिहि प्रचारे । विधि हिन प्रभु तुम निजकासि नाडे ॥ जोरि त सहस्र युद्ध करि
घोस । ते दोउ नरे सरस सह जोसा ॥ * * * * *

॥ * ॥ श्लोकार्द्र ॥ * ॥

जललहरिनसों मथि जनी जल पर बर बिसतार । तासु नेदकी नेदनी जपि विश्व पसार ॥

हरिणक्षय हरि लै बख्यो तब बराह कै आप । ता बध करि करध कियो मोहि भरी परताप ॥

॥ * ॥ हरगोतिहृन्द ॥ * ॥

कै भारवति लषीनसो जब भई, हो आकुल भइ ॥ तब परशुराम उदार कै प्रनुपरशु
तीक्ष्ण तुम गहा ॥ सोविदित बार एकैस हति हथीन को आनद सए । करिपिताकी
शुभ खाइ लौकिक मोहि कश्यप को दए ॥ बर साब भौम महीश जोग निरेखि सब
सुगुण मए । दे मोहि वैशस्तमनुहि तपहेतु कश्यप बन गए ॥ ईसाकु आदि नरेद्र दिनकर
बंश मम पालन करे । अब मोरि हो तुष शरण आई पाहि कहला कर एरे ॥ शुनि भूनि
की इमि विनै सुरगण सहस्रदिनि विधिसो कहोते समुक्ति आसय विष्णुकी चित चाहसो
करिबो चहे ॥ जिमि कहउ तिमि सब सुमन गण हम जाय मानुष तन धरे । तहं विष्णु
की रचि रूचिरकी अनुसुम करि महि धर हरै ॥ शुनि कह्यो विधितुम कहेउ सो करतब्य
निश्चय करउहे । महि प्रगट भारत बंश तेहि तुम जाय सब अब तरउहे ॥ रचि योग
राख्यो पूर्वसो हो कहत सो तुम सब शुनो । हिय जानि ईहित विश्वपतिकी शीघ्र सा
करिबो गुनो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एकसमै कश्यप सहित खंवर समुद्र पै जाय । करत कछू बातें रहे ईश्वरके गुण गाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताहिनि समुद्र उमडि करि हेला । गंगा सहित नांघि मिज बेला ॥ पूर्ण चंद्र लखि आनद पागो ।
खहरिन सो मोहि भेवन लागो । तब हो क ह्यो सांत हो सागर । सो शुनि तन धरि उदधि उजा
गर ॥ सो अति राज सिरी सो बाढो । सुरसरि सह मम आगे ठाढो ॥ तब तिन सा हो कहे निर
खो । तुम भे राजतुल्य बपु भेली ॥ ताते जाय भूमिपति होऊ । शांतन नाम पुण्यअज पोऊ ॥ तित
ऊं ए गंगा तुव पतिनी । तन धरि कैहे पतिव्रत व्रतिनी ॥ अत कै बसुबसुमहि पय ज्वैहे । ते
गंगाके गर्भज कैहे ॥ अछम बसुसो शुनु सह कारण । हेईहि महिको भारनेवारण ॥ ताते अब
तुम सादर जाइ । हो शुभार्थ बंशज कह लाइ ॥ पह विधान पहिले रचि राख्यो । लखि लविध
सोतुम सो भाख्यो ॥ सो अब जनासुत महि धारी । विघमान भीषमधनु धारी ॥ दुतिय तिधा
संतन की तामो । हेसुत भए भरे बर भासो ॥ तिनके भए दोय सुत ह्यानी । पांडु और धृतराष्ट्र
सुदानो ॥ ऊं हे तिधा पांडुके नीकी । कुतां अर नांझी शुचि जीकी ॥ हे धृतराष्ट्र भूपकी ध्यारी ।
गांधारी तिय पतिव्रत धारी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निमके पुत्र सो मुनो विघ्न बढी महान । द्वापर पुनको अंतमे मुनि सुमन सुखदान ॥

दोजनिज निज पक्ष लै करिहें युद्ध विसास । ताते श्रीहे भूमिपै भूमि पतिमको नाम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मव काल सुम कर शार हि पसारा । निठिहे सभे धर्म बेवहांर । शिव अर शिव कुमार दे देवा ।
श्री हे वृज्य उच करि सेवा ॥ ताते तुम संव सुभन उदारा । निज निज अंग खोज अपनारा ॥ कुंता
अर माझीके बारे । धर्म अंग सों होऊ सुहारे ॥ कलि प्रनाथ लै ममता छाए । प्रमटऊ माधारीके
जाए ॥ सो मुनि भूमि गर्द निज आसन । लहि सुरमण विधिको अनुभासन ॥ कुर पांशुस अंगन
जाए । कर बलनै मुख गरिमा गाए ॥ अंग जुधिठर धर्म राजको जीमर्शन नारत दराज को ॥ अंग
शकके अर्जुनधीरा । अरिगर्दन जब वर्धनधीरा ॥ मासदसके अंग अर बादा । नए मकाल सहदेव
उदाह ॥ रविके अंगज करण कहाए । नुके अंग टोण श्री भाए ॥ जमके अंगज विदुर विख्या
ता । अंगि अंगज अभिमन्यु सुजाता ॥ भूरिथवा सुकांभज जायो । जो अरु लोचि सुतासुध नायो ॥
शिवको अंगज अश्वत्थामा । नित्रांगज भे कलिक सुनामा ॥ अस नंधके अंगनै निरारे । ने दुखासन
आदिक सिगरे ॥ एहि विधि सुर निज अंग सुधारी । जब आए नहि पैमुनधारी ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव नारद मुनि कलह प्रिय देव सभाने जाय । कह्यो विहसि इनि विष्णुसे अंशुनि करि मुणगाय ॥
प्रभु अंग अचवतरण जो कीन्हे सुमन मसूह । तिन सो नहि कारज सधिधि कहै साध करिऊह ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नर नारायण सों सुरखामी । सधिहि काज यह अंतरजाती ॥ जे तुम हते असुर धनुधारी ।
युद्ध तारका मय नै मारी ॥ तेसिगरे प्रथिवीपै जाए । वै सेदबल विरद बढाए ॥ मधुरा नाम पुरी
एक पावनि । यमुनाके तट सरस सोहावनि ॥ रक्षो पूर्व राक्षस मधुनामा । तै मधुवन विरच्यो
अमिरामा ॥ तासुत रक्षो सबल नपु पोषक । दीह दाय दामन दुज दोषक ॥ लंका जीति राम
जब आए । सीध पुरीनै मजल छाए ॥ तबसे सबल दूत एक आतुदधिग कठोर बंधन कहि पातुरा ॥
नेजसि परम पास पमधारी । युद्ध हेत बड भाति प्रधारी ॥ रामके सो मुने सदेह । मधुघ्नहि
इनि दिखै निदेह ॥ तुम भन साग्रनु मुनि पम धरह । जाद सबलकर बंध इति करह ॥ मुनि
मधुघ्न उचपम कीन्हे । काहर जाद तसु बंध कीन्हे ॥ ताबध करि करि सोवन हेदन । पुरीरच्यो
जब अहनिर्देन ॥ सो मधुरा यह आनद दासी । परम सोहावनि सुपणा रासी ॥ सुरसेन ह ताके

स्वामी । ताकुस उग्रसेन हैं नानी ॥ ताको हुत नै कह्य बहाओ । दानव कालनेनि जो गयो ॥ हय
घोवसो भै अभिरामा । अतुल कह्यो खेरी नामा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वृषा भासुर हैंतं भायो दैत अरिउ अमान । रिउदैत तह हैभयो कुवलय पज बसवाना ॥
सब नास इतव उतै भौ प्रखव है जाव । हर नामक राखव उतै भेनुकरह्यो कछाव ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

जे बाराह किशोर इतै तें । भे मुष्टिक चाखूर उतैतें ॥ ए सब उमें भवानकभेनी । हैंतप मुभद
कषाके देषी ॥ सबको अधिप कह्य बसवाना । उग्रसेनको तने अमाना ॥ दिव सागर अरु पृथिवी
पाही । हैं तुमसों ए बध्य बदाही ॥ और सुमन नय जेतने आही । तिनसों बध्य कदाचित नाही ॥
तातें जाय भूमि पै स्वामी । अतुल अथ भरउ नय नानी ॥ दानव कुसको करउ निपाता । हर उ
भारु पृथिवीको कता ॥ सुनि नारदको वचन सुहावनाबोले कषा सिंधु प्रभु चावन ॥ तुम जो कहे
त्रिकास विचारदोहै सब इन जानहि हे नारद ॥ जो हैं इत उत जो नै रामे कछादिक दानव सुख
साजे ॥ मम अहकार हेतु तुम धामे । सो विचार इन द्रिड करि रावे ॥ इति कहि नारदसों सुर
स्वामी । बोले किमिसें अंतरजामी ॥ काके गर्भ बास करि वेधा । जन्म लेहिं इन कछउ सुमेधा ॥
सोसुनि कछो विरंचि विचारी । एक समै कश्यप पज धारो ॥ हस्यो बरुण की कामद गार्द । सो
मान्यो कहि बंशु मुभार्द ॥ दियो न कश्यप तव अनसाए । सुंदर बरुण पास मम आए ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे तातमम जमक नै कश्यप अमय विचारि । कामपयद मम गाय सो हरि लीन्हे कधि धारि ॥
मान्यो हो कहि भांति बज्र पिता न मान्यो एक । अदिति सुरभि हैतियनको सहि समता । ह ठेक ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

सो सुनि यह विविध जिय जानी । होइ इति दियो शाप अनुमानी ॥ कश्यप हरण गायको
कीन्हे । अदिति सुरभि कोचमत् जिन्हे ॥ तातें होइ गोप भुवि जाई । अदिति सुरभि सह इत फल
पारै ॥ ताते कश्यपांस गुर ज्ञाता । हैं सुधिपै बसुदेव विष्याता ॥ अदिति देव की नै अभिरामा ।
सुरभी चारु रोचिणी नामा ॥ भई तासु सुखदाइनि चामा । करै भूरि भूवितभुचि भान्या ॥
तिनके गर्भ बास सौ स्वामी । हाउ प्रमट नै भतल गामी ॥ निज भक्तनको करउ सुनावा । करि कीडा
प्रभु तिनकेसाधा ॥ इति कहिने वेधा निज सासन । सीरधि तोर गए नरडा सम ॥ सीरधिके
उतर तड चारु । नहा पावती नाम उदारु ॥ तह निज तेज विभज्य सो घाय । सह बसुदेव धनी

को आए ॥ नारद सु मुनि भेद यह अज्ञानी । कछो कंचकीं कछो सुज्ञानी ॥ भल तुम्हार यह जिय
 होई हैं । नामे कंच तुम्हीं इति सी हैं ॥ सुर कंच सखि कंच करि को हैं । तुम्हको वन प्रभु मन
 सी हैं ॥ सो सुखिके हम आदर आए । सखि प्रेन बिरतान्त सुनय ॥ देवकी तनवा बभिरामा ।
 जो तुम्ह खसा देवकी नामा ॥ * * * * *

॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

ताके अहम गर्भसे लोई खर अवतार । ये तरोष करि हैं अचरि तुम्ह संबंध संघार ॥
 ताके अहम गर्भसे लोई खर अवतार । ये तरोष करि हैं अचरि तुम्ह संबंध संघार ॥
 ताके अहम गर्भसे लोई खर अवतार । ये तरोष करि हैं अचरि तुम्ह संबंध संघार ॥
 * * * * * ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

कंच सखि साखानको इति दिवो चाहि निदेश । देवकी को गर्भ रक्षण करउ भीषण भेष ॥
 एक लोई यह आठ लोई जे होहि ने सुततासु । ज्यतेही यागि किन्को करै निषेधां तासु ॥
 * * * * * ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

मन हित इसी द्रिढता गहि कै । रितु दिन मणै तासु छिड रहि कै ॥ मूरखवास सुने निश दिन
 नै । अति चैतन्य रह्यो छिन छिन नै ॥ जनम तंही सुत मो डिब भयावह ॥ कंचको अहम गर्भसे लोई खर
 पाएउ ॥ निशि बसुदेव हि चलचर राखौ । बचन कठोर कछू मति भंसी ॥ कंच सुनि प्रभु रधि अंतर
 ध्याना । कछो कंचको द्रिढ अनुमाना ॥ भावो भूत चितिके खानी जेपतीस ॥ अमु अंतपराजी ॥ तहं
 षट दैन रहै खल पूरे । ते षट गर्भ नाम हरे ॥ ते हैं कालवेनिके आरभीष छिडक कशिपुके जाए ॥
 तप करि विधिहि मुदित ते कीन्हें । अब धल सुरप्रसों सीन्हें ॥ ताते निषेधे अहो निरिषाई । दैते
 हिरण्यकशिपु अनखारै ॥ कत तुम मन महत्वको बाधे । हजै इति कत सिद्धि पराभे ॥ मोहि
 अराधि मांनि तुम खोते । पर अमोघ पाहत हैं जेते ॥ मोहि अराधि विधि सोई कंचको । ताको फल
 पावउ ने आगे ॥ निश पितुके हांयनि सो सियरे । बधेआउ ने ने मतिपिके ॥ अण्णोनि तिमको पितु
 जेहे । सोई मधुरा कंच भयोसे ॥ सोई प्रभाव चितिके मयावक ॥ जे अहं के कंच गर्भ सो हावन ॥
 * * * * * ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

तहां जाई जलगर्भने सोवत तिन्हें निषेधे । प्राण्य करनि तिनको चियो दया समकी भेलि ॥
 तिन्हें अहमविधि दिवो कहि ईनि अरवि सखास । अहम विषयको अंतपरे पावौ । अपने पास ॥
 * * * * * ॥ * * * * * ॥ दोहा ॥ * * * * *

देखि देवकीको रितु भेषा । नामसे ताके गर्भ प्रवेश ॥ ईकी करायउ ई मुषायनी । भूत भविष्य
 सके अनुमानी ॥ जगन यह पै नामु विनाहा । कंचि अहं इत्यं रिति पाता ॥ नामसे नाम

करिहि रम पदकोश अथ मृग कंस काखिन्दी तठको ॥ तब मा समन गर्भ बिहारू। करिहि चार मन
 अंग खदाक ॥ अथ मास हेतु अथ तासू ॥ तब सो गर्भ करणि तुम चासू ॥ उरखि दोहि दोकेसु
 चाबसो ॥ ताहि सखियो गुनि सुभाषसो ॥ ताते संकरमथ पद पार ॥ ज्ये हे मन अथज प्रियभार ॥
 तासु गर्भ अछन जो भासो ॥ ताते ह्ये बसिहो गुनि राखो ॥ तब तुम चाहि चार बर परणी ॥ अशुदा
 मन्द नोपकी घरणी ॥ ताको गर्भ वास तुम कोजो ॥ जानि जनन मन साचहि खोजो ॥ सरखि अशोदा पै
 हम आउत ॥ मुझे देवकी पास पठाउत ॥ जानि जन्म तब कंस नरेया ॥ गार्ह तब चरण मृत्यु उदेया ॥
 पंठकम खनिहि शिलपे आसत ॥ ताके करसो छुटि तुम तासण ॥ जाइ ननख पै विहित बिहारोऊ ॥
 दिख सूरप अनूपन धारेऊ ॥ चारि भुजनि सों धारि अतूलहि ॥ खड कंज मधुपाच विभूलाहि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूषण वसन विचित्र धरि रेजुपुत्र अधिकाथ ॥ उग्र उदार अमन्द तेहि निज स्वरूप दरशाय ॥
 चोर भूतगण धूमनों सेवित परम अपार ॥ सानद जाएऊ स्वर्ग धरि द्रत कौमार उदार ॥

॥ * ॥ हरिनीतीछन्द ॥ * ॥

तब समुक्ति नपिनी सहित सुर सुरराज विधिवत पूजिहें ॥ प्रिय करनि मङ्गल भरणि
 मङ्गल वरखि अमुनि कूजिहें ॥ फिरि शक देहें वास तुम्हहि सुबिन्ध्य गिरि रमणीय पै ॥
 तहं वसि विविध धरि रूप रनेऊ अनेक बल अवनीय पै ॥ अथसोख चारिणि चार
 चरिता विषयिष्य निवासिनी ॥ हे दैत शुभ निशुंभ ज्ये हें तासु दर्प विनाशिनी ॥ त्वं
 सिद्धि आर्य कीर्ति भूति अर कामदा कात्यायनी ॥ तुम राखि संध्या प्रभा निद्रा कौशिकी
 वरदायनी ॥ बळ रूपिणी सुबिरूपिणी नारायणी अनरसनी ॥ तुम उग्रजनकी असा
 जेटी दैत कुक्षकी भक्षनी ॥ तुम जया विजया समा दाया अग्नि जोति सरूपिणी ॥ अर
 सिंधवाहनि अर सूर पताकिनी सु अनूपिणी ॥ तुम रमा वाणी पार्वती इंद्राणि चौ
 परजा वसी ॥ तुम सर्व आधिनि सर्वमै हो सर्वदा चित चायसो ॥ जे जानि जन परभाव
 मन बर प्रेम तुम कहं ध्याइहें ॥ ते अमै रहिहें सबसमै जो चाहिहें सो पाइहें ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रनि कहि प्रभु महिभारहर भे तहं अन्तर्ध्यान ॥ सुदित महानाया करी कर्मसो सकल विधान ॥
 दर देवकी के उदर बठ गर्भन को वास ॥ सबान कंस तिनको कियो जन्म भए पै नास ॥

॥ * ॥ दोहाछन्द ॥ * ॥

गर्भ सतयो नास सतये गए आधीरिभि ॥ देवकी को जीह बसि खसि करणि सो जनजोनि ॥

राखि उरने रोहिणीके दर भेद बनाय । रोहिणी सुनि रही चुपन्हे नहत आनद पाय । देव
की निज गरभलास कर सपनकी विधि देखि । आनि उर विमुक्त करि हिय देखी दुखसों
भेखि ॥ तासु अटई नभ मै तब बसे श्रीपति आब । मंदकी तिथके उदरनिधि बसी नाय
जाय ॥ देवकी को गर्भ अठयो आनि कंस भरेस । किधो चौकी हेत नियमित सुहित सुभट
सुभेस ॥ माघ दशम भाद्र पदकी कृष्ण पक्षी भाति अष्टमी को रोहिणी सहि नर आधी
राति ॥ देवकीके जनम लीन्हे आपुं त्रिभुवननाथ । भई असुदाके प्रमट जमदेव प्रभुके
साथ ॥ मोह मै न्हे लोग सबको उनदियह लखे बाभै रहे पित चैनन्य दंपति देवकी बसुदेव ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निज सरूप सों प्रमट भे प्रभु सरवज्ञ उदार । लखि बसुदेव कस्यो देव कंस भीतके भार ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

यह सरूप प्रभु गोप न करहू । न्हे प्रसन्न लौकिक वपु धरहू ॥ सो सरूप प्रभु गोपन करि
कै । बोले तासु शेष सब हरिकै ॥ मोहि लै बलहू मंदके गेहा । असुदाके ठिम सरस संगे हा ॥
ताके पास मोहि धरि आवो । ताके सुता भई सोल्योवो ॥ सो सुनि प्रभुहि नेह ते लीन्हे । तुरित
पयान तहां को कीन्हे ॥ सुत असुदाके ठिग धरि दीन्हे । ताको सुता भाद मै लीन्हे ॥ निज गृह आय
आनद साने । इत उत काहू भेद न जाने ॥ दियो देवकिहि सुता सभागी । तब सो तमया रोवन
सागी ॥ चौकोदार हदन सुनि जागै । सावधान न्हे आनद पागे ॥ नै बसुदेव कंसके आतुर । कन्या भई
सुनायो आतुर ॥ सो सुनि आइ कंस तई सादर । कन्यहि मांनि लिहति छटि कादर ॥ तासु चरण
गहि आवद पागे । अंधि शिलापै पटकन लागे ॥ तब ताके करसों छुटि कन्या । दिवपै दिव्य रूप
धरि धन्या ॥ करि अट्टाट्टहास सुखदानी । कंसहि टेरि सुनाएनि बानी ॥ तुम जो आत्म कुशलके
काजा । मम बध निहित विचारहू राजा ॥ कहु दिन बीते तब बध होई । ताहि नैवारिसके थव कोर ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासो इनि कहिकी भई देवी अन्तर्धान । पाय पस्यो सो देवकीके करि विनै महान ॥
कहि निज मुखसों सोरि निज भयो शेषसो हाम । सीस नवाए दीन समभेदी आपने धाम ॥

॥ * ॥ दोहाइन्द ॥ * ॥

रोहिणी यो प्रथमहीसों मन्दको घर आय । रही ही तित भयोसों सुत सचचि सुन्दरकाय ॥
नासकरण सरोति तिनको किधो श्रीहराय । भेदसों अम धेनु मखिनल बसन बेस लुटाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कीन्हे अडे कुवरको संकरषण यह नाम । किधो कुमार कर्मिणको कृष्णनाम अभिराम ॥

सक्तिभीकाभीराजमहाराजाधिराजभीउरितनासबसखाप्राभिवानिना श्रीवन्दीजन
काश्रीशक्तिनेकुसुमाबाकजेन मोपीनाचकविना विरचिते भाषायां भारतांतरवते हरि
नमो दर्पणः कलाभनारवरहमोनामथयोदयो ॥ ५॥ ॥ * * * * *

॥ * * * * * वैसंपायनउवाच ॥ * * * * *

॥ * * * * * दोहा ॥ * * * * *

कया कल्याणकेजनमकी बरहि कहे सह हेत । चरित कहत अब कल्याणके जे चितकर पितभेत ॥

॥ * * * * * चौपार ॥ * * * * *

एक दिन कल्याणचन्द्र अभिरामहि । बाल चरित विचरत छवि धामनि ॥ स्थाय तहां जा ऊरध
भारो । बांधो रूछो सकटमहिचारी ॥ गर्त ज्योदा जनुना तोर ॥ भाग्यवती जग धन्या धीरा ॥ इत
लीला भिसि कल्याण उदारु । रूपल कठाय चरण चल चारु ॥ दयो गिराय सकट बह भूपर । अधर
हि आपु ताहि लै अपर ॥ वदन कारण लागे किलकाद । तिमि तह खखो ज्योमति आद ॥
निज उर ताडि धार तह आद । अंचि सुतहि लै अंक लगाद ॥ विसमित थोचि कहन इमिलागी ॥
हरष विषाद भावसों पागी ॥ आजु कुमल यह ईश्वर कीन्हें । नयो जन्म करिसुत मोहि दीन्हें ॥
बनते तहां मन्द तक आए । सकट लेखि विसमबसों छाए ॥ लगे साधरज बधम उचारण । कैसैं
गिहो सकट बिनु कारण ॥ रहे लखत ते बाल बताए । एद पगसों सकट गिराए ॥ सो सुनि काहें
सांच न माने । हैमोमति हिय मै अनुमाने ॥ एक समै निर्गमै तह आद । दारनि कंस भूपकी
धाद ॥ नाम पूतना पापिनि नाद । कुब कुम्भनिमै जहर लगार ॥ अरध रातिमै सूनो देखी । प्यावन
लगी कल्याणकहि तेसी ॥ * * * * *

॥ * * * * * दोहा ॥ * * * * *

मुखसांक्षन गहि सिम्र करवि तासुप्राण प्रभु जानि । घोरं पूतना घोर धुमि करि गिरिपरी उतानि ॥

॥ * * * * * चौपार ॥ * * * * *

सो धुनि सुनि नंदादिक जाने । तेहि लखि विसमित बोखन खाने ॥ को बलवान यादि जो
माखो । को गहि स्थाय यादि इत डाखो ॥ विरचि अथार्ह सब अनुमाने । पै काहें कहुभेद
नजाने ॥ क्रमसों रामकल देउ भार । घुतवन चलन लगे सुपदार । लेखै इत उत आंगण माहीं ।
कल्याण चपल कठि बाहेर आहीं ॥ लोकि एकदिन जमुदा नार । कल्याण नहि बाहेर सो चार ॥
कठिमै बांधि दाम सुदखीन्ही । ताहि बांधि जलसमै दीन्ही ॥ कुहुं कारजमै आपु भुषानी ।
खोखरिसह चलि प्रभू अनुमाणी ॥ जुरे बढेहें डिगबर छाए । जमसांखुन है वृस सहाए । तिनके
मधि अहे कठि मन भाए । तिनमै बर बेखार अटकाए ॥ अंचि मूलसो तिनमै उखारे । बासभाव

प्रभु हसैं सुखारे ॥ तब तिमि तेहि तहं खोद निहाये । चारदर अजुरधि जाइ गुकारे ॥ सुनि सो
दश अमोदा भार । हा हा करत पुन पद भारे ॥ भार उदार बंधुनि कोनो । विचरित सुचित
घोचपुञ्ज कोनो ॥ सुनि नंदादिक गोप महाने । खुरे चार तहं शिष्टन सवाने ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वृत्त पात खलि बिसरित कोन्हे । नंद विचार । कादर खलि पावे न कहु करे कदा उपचार ॥
दाम उदर मै कृष्णके बांधो गयो ललाम । ताहीते गोपनि कछो दामोदर कहं नाम ॥

॥ * ॥ दोहा छन्द ॥ * ॥

राम कल उदार सुवना सोंब आनद धाम । चार कंचन बरण वै वै बमक बर चमलाम ॥
बाल चरित अनेक विधिते त्रिरचि कोन्हे जौन । कहैं गोपीनाथ सो कहि पार पावे कौन ॥

॥ * ॥ हरिगीतो छंद ॥ * ॥

बलिराम कल उदार क्रमसों सात बरिसन के भए । धरि नील पीत अमद अंबर अखिल
सुवना सों मए ॥ सुचि अंत पीत सुचंग रंगनि चार तन विधित करे । बमनाक चार
विशाख अर शिखिपस अति मंजुल धरे ॥ खै गोप सुगनि सनेत बलनि जाय बन
बिहरण खगे । तह करैं कोडा बंधु दोउ बड भाति अति आनद यगे ॥ तह एकदिन बलि
रामसों श्रीकृष्णचंद्रजु इमि कहै । यह बनु बिरल रमणीय नहि एहि तअन मो मग कहत
है ॥ है काखिदीके पार वृन्दावन परम रमणीयसों । ता निकट मोर्झन संयस कवि
कीबनै कचनीयसों ॥ सो सुवन बिहरण जोग निबिड सकुंज सरित सुता रहैं । तह गोप
गोपनि हं सुखद हित गउनकों अति चारहैं ॥ उनवास बिरचन सेत हम कृष्णरति प्रगटन
करत हैं । उतपात अति दरसांय गोपनि भूरि भयसों भरतहैं ॥ नवहरापके नंदादि सब
इत होडि खलि बसिहैं उनैं । तह मोदसों दोउ बंधु विविध विस्तार करिहैं अदभुतैं ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि समत बलिरामसों करि श्रीकृष्ण अनूप । प्रगट किए इकजुन तहं निकट अवागक रूप ॥
तिमसों खलि उतपात डरि नंदादिक सब गोप । वृन्दावन में जाइके वृजदधि बसे सचोप ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

जोजन भर को बोडो चार । इर जोजन बिसतरित उदार ॥ रघो पुरी पुंन अति रमणीया ।
पुन किन होइ जाहि खलि हीया ॥ चारिउ दिशा रथान बडाय । पुनक पुनक बरगोठ बनाय ॥
रमैं तहां सिनरे वृज वासी । राम कृष्ण प्रभु त्रिपिन विद्यात्री ॥ एक दिन कृष्ण विना बलिभार ।
गोप सुगनि कह सगलभार । बसम सए रगत बर कावम ॥ परम पुरीन पुरुष पचानम । जोग

कल वदन्विद्युत्प सोरायो । उग्रमो भङ्गीरु क प्रयो ॥ शोभाः शशी यनो यनीयो । नदो सतनिसे
 वरस रवीयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 योमे । निरविद्युत्प शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 मंद पाणे ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 देवी । इत का इतका एने मुचि भोवी ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 तारी ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 योवै । भुरि भयानक सति भद्र पावे ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥

॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥

ब्रजो उग्र देवने सोरायो है निज । चाहि माहि पितने वरिष रौने आनंद भोग ॥
 काशी जानै वसतहैं सचित कस परिवार । यह घर सुनो ताहिके फूतकारके भार ॥
 ॥ ॥ चोपार ॥ ॥

यह विपति चाहि देखे कठिने । बूढ़े कृष्ण करन हैं पठिने ॥ जलमै भयो ब्रह्म पति घोरा ।
 उमचि गयो ब्रह्म कति हुअं पोरा ॥ चोरकण्ड मुचिके रिचि छांयो । काशी प्रभुके संगमुल आये ।
 फूतकारको फूत रि विरायो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 गयो ब्रह्म प्रभुके कठिने ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 जयोमति भाय । बाजक वृह मुनासन आस ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 टेरत ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 बोले सभके किमिही नेयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 गहि माहि कति मुह सोये भविके रिचि रौने ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 निजै कति सोरायो कठिने ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 कृष्ण तुन सच परिवारा । करो जादके उदधि विहारा ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 काहं मुचिय काहरे कठिने ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥

प्रभु आस कति चाहि नंद जयोमति भाय । अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 धन्य आशिने प्रभुको कति रिचि रौने ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥

॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥

सकल प्रभुको कति चाहि नंद जयोमति भाय । अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥
 वन विहरने अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥ अश्विनो वीरकोर शशीनकाशिनो वरयो ॥

तासु वृक्ष जेहि फूले । जिनमें करिकरसम फल भूले ॥ तिनको पाय सुद सोहायो । संकरषण
 सोहायो सोहायो ॥ सखो तासुफल सरस सुहायन ॥ सोहायो सोहायो सोहायो ॥ ताको खाद
 कसूरु नै है । कसूरु फल खानद सो जै है ॥ सो सुनि रोहिरोष सुहायन ॥ तबसु तासुतब तुरित
 हलाए ॥ भो अति शब्द तबसुके हाले । फलके गिरे फलके चाले ॥ सुनि धेनुक देखत अचखानी ।
 ता बलको रसक अतिमागी ॥ गरदभ रूप भयानक भारी । तन तन रूप लए अचुधारी ॥ छाता
 भौंयने अफसु निरुत्तिकै ॥ संकरषणहि दांनसो दधिकै ॥ फिरि पहलानति नारण सारयो ॥ दावण
 दुख दोषसो पागरो ॥ तासु चरण दोउ पूरव वारे । नहि अरुषको राम पवारे ॥ उन्नततासु
 शिखाए परिकै ॥ गिल्लो मूठ तह नहिपै मारकै ॥ रचे जिते ताको संग्वारे । ताही विधिगहि तिन
 कंहनारे ॥ तिन्है मारि अति खानद पाने । वीर धीर वन विहरण खाने ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गोपत संग क्रीडा करत लै गोधन समुदाय । बड विद्याल भांडोरको दिन प्रभु नए सचाय ॥
 तहां जाय पेवण खगे बासापनके खेच । दोष गोखकरि आवसो विरधि वरम चितनेख ॥

॥ * ॥ अचकरिहन् ॥ * ॥

असुर प्रलंब नाम बलवान । गोप सुवन बनि कुटिल खानन ॥

खाए तऊ जह हें ब्रजनाथ । खेखन खगो कृष्ण बनि शाक ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

खेखत रहे खेख बलधामि । यह करार निरमित हो तामें ॥ खदे सो निजकंध वरुह । जो जीते जाको
 लै जार ॥ सुबिठपवट भांडोर कृष्णवै । फेरि चढाए इत लै खाने ॥ सो वीरकानन विषवादी ।
 भयो कृष्णको तह प्रतिवादी ॥ जो प्रलंबहो करेवोरी । सो भो संकरषणको पीरी ॥ जो ख विरधि
 एहि भांति सभाते । प्रतुर घाषसो खेखन खाने ॥ कृष्ण सखुसखन सुखीने । अहित सखप्रविधादिहि
 जीते ॥ निज निज वादिवपै चडि घावन । खगे गोप तन जायन खावन ॥ संकरषण कंह
 कंध चढारि । बल्यो प्रलंब सुखोत्तर पारि ॥ बडदिम जाय दोष विरधिशक्ति । खेखरभित निज वपु
 दरखाएनि ॥ उन्नत कम्बल विरिसा भारी । भूरि भयलख भेव सुखरी ॥ संकरषण कंह लै लै
 भायो । मत्त अनन्त गर्बसो पायो ॥ तापै संकरषण हें खेखे । खख गरिदरमै खिख स्थि जैसे ॥ तब
 संकरषण छिए विचारी । कहे कृष्णसो भीक्षु भारी ॥ मोखे तुम कखन सुखरी । का करिचै
 सो कहे पुकारी ॥ सुनिदखि कखो कृष्ण सुखरानी । जाकहि भूकि कखिनुन वानी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जगदाधार अनंत तुमहो अमंत परभाव । नहि धारख तुम खेखे प्रेति गहो चितचाव ॥

हम तुम एक न भिन्नहै भए एकसो दोष । धारण पोवण जगतके हेतु विचारी सोय ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

नातें मधुवचनमम सुमिके । नाति चमन चापुको मुनिके ॥ बसी देत को कब ब्रह्म करिके ।
हमसों चारु निखे सुरभरिके ॥ सो सुनि संकरवह रिसिभारे । मूका तासु मोरुषीं बार्दे ॥ मूका
मारि कोरि मिर दोन्हे । कोरि जानुवों ताउन कोन्हे ॥ तब मरि निखे भूमिपिं सोर ॥ छेण
ग्वाल हरवे सब कोर ॥ रहि अदरु से छलि सुभनसगल । बरवि सुभन इमि कहें मुदिने
मन ॥ बलसों हते देत चरिारते । ए बलदेव नाथ अब ताते ॥ करि प्रलयको बध सुख पाए ।
सहित समाज कण्ड ब्रज आए ॥ साहत सखा प्रभु ब्रह्ममें राखे । चारु पुरो सुभनासों पाजे ॥ सहि
बरसाजो अन्त सोहाए । गोप वृन्द आनद सों हाए ॥ इंद्र जज्ञ आरोपण चाहे । तब इमि बोले
कण्ड उहाहे ॥ को है इंद्र अज्ञ को भाषो । तासु प्रभाव गोपिननि रावो । सो सुनि इद्र गोप
एक बोख्यो ॥ अज्ञ यज्ञकी महिमा सोख्यो । इन्द्र नेषके अधिपति सरसैं ॥ तासु निदेश पाय घन
बरसैं । बरसैं होरु कति हय धरोखी ॥ तब अरु अस्य होरु बज बरणी ॥ तब तब सता कूलि कलि
भाषैं । जीव जात सब आनद प्राषैं ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जस तब अज्ञ कर्मसों चौपधीनसों तात । जगमें सब जीधीनको जीवन बरने जात ॥
वृन्द गउनको चरि सुगुह कोके पुष्टि प्राप्त । देहि वृजत पथ ताहि तें गोपनिको प्रति पात ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

बाही देत सुभन अत्रि कूजम । कहे इन्द्रको इन सब पूजनागोप वृद्धकी सुनि यह बानी ॥ इति
इमि बोले कण्ड सुझानी ॥ गोप अति हम विपिनि विहारी । गोपन जीवन वृत्ति हमारी ॥ गोपन
गिरि कोषिमर्गें भारी । गिरि कामगसों रहैं सुखारी ॥ नातें हरी पूज्य गिरि कामन । अरु गोप
न करि विधि विधान ॥ अप्रनमृति जासु है जासों । सोरु तासु देव सर्वदासों ॥ तिन्हे छोडि
जे औरहि धूमि । ताहि कर्मसु सुपुधि जम कूमि ॥ गिरि प्रभाव यक और सुनत है । सोनिज अत्रिसे
साध नमताहैं ॥ गिरि नै अत्रि काकमन भारी । कहे स्वमको गिरि रसवारी ॥ गिरिवरको पूजे अ
न कोडीकासु निजक कर्मसु । ताहि होरु अत्रिनु गिरि पूजे विधिनि विहारी । बाघ सिंघ नै गिरि तेंहि
बार्दे ॥ नातें जीव सुभनसों दिख धरुह । गिरि गोपनकार पूजन करुह ॥ सोसुनि गोप वृन्द हर
षानो कण्ड कहे जो सो अत्रिभानि ॥ पूजि गउनकोह भूमिं करिके । नौ गोवरधम पे मुद्र भरिके ॥
पथ दधि घृतसैं कुड नहाए । गोपन अत्रिको गांज सजाए ॥ नर नारिन सह आनद लीन्हे ।
गोवरधमकर पूजन कीन्हे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजांतर्गुण कृष्ण प्रभु नाथा विरचि उदार । विरचित यम भरि प्रकटि रिचि पुरष की चार ॥
भोज्य बह्नु भोजन करे पय दधि कीन्हे पान । दधि अपूर्व कथा भेद हरि रोषि सुवान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गोपम सहित कृष्ण बखिराम । कीन्हे तेहि दंडवत प्रणाम ॥ प्रभु कीतुकी कृष्णक शोन्हे ।
आपुष्टि आप दंडवत कीन्हे ॥ शैल मूर्तिधर से करजोरी । कहे गोप करि प्रीति अपोरो ॥
आज्ञा करौ नाम अब जोइ । करै नेमसो हन सब सोइ ॥ सो सुनि कहे गौसवपुधारी । प्रति
वरधन करि पूजा न्हारी ॥ सहित समाज प्रदक्षिण करिहीं । सरस संपदासों तो भरिहीं ॥
हन तुव आदिदेव उपकारी । अपर न पूजेऊ हने बिसारी ॥ निरिपुधारी कस सुजाना । इमि
कहिके भे अन्तरध्याना ॥ सहित समाज गोप हषिहाए । निरिह प्रदक्षिण करि ब्रज आए ॥
कहे चाव चातुर चित चाहे । कृष्णहि भांति अनेक सराहे ॥ निज पूजन निधि धंसन देखी । दग्ध
शतपथ अति मन में तेखी ॥ संबर्तक गण बसी बसाइका । तेहि निदेश दोग्हे सुरपाइक ॥ मन
निदेश सहि मन हित चाऊ । तुन सिगरे बलि ब्रजप जाऊ ॥ ब्रजको नाम करसको घोषी । वात
बुद्धिसों प्रलया रोषी ॥ सात रातिदिन अतिस घेरा । करऊ पुष्टि ब्रजप बसो जेरा ॥ प्रीति सकोथ
निदेश मु दोग्हे । सो सुनि घले मेघ रिचि लोन्हे ॥ * * * * *

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

सजल नेत्र असेख्य उन्नत सब दिग्गनिते घेरि । बसो इमि ब्रजपे सजबजन लहत जे रहि हेरि ॥
सुधित मन अनन्तने गल सुबस बिनु गढदार । ऊकत जिनि बसो जेरे ते सहि जलकी कदार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रजमण्डलको घेरिके धिरे घन घने अपार । होइन सबे सरोष अति करि करधन जलधार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बरजि तरजि नडि करि अधिधारी । सहि प्रकट माएत उपकारी ॥ प्रीतिपाल आरोपित
कीन्हे । ब्रज वासिनको अतिदुख दोग्हे ॥ ब्रज वासिनकह चारन देखे । मन जोकलस्य अति
तेखे ॥ करि अनुमान प्रथम विचार । गोवधन धिरे करध धारि ॥ तीसरे के नुदरीते । गो
गोपी गोपाल जहांते ॥ हृष्यन पहर बसाइक बरसे । काऊके तन बरि ॥ न्ह लज्जित तब
ब्रज सुखाना । मेघन सहित गण निजभाऊ ॥ प्रति कस हानि गोपक ॥ यथा प्रदेश निरिह
प्रभुरावे ॥ निरि धारण ब्रजराज जेके । सुरपति मनने विरजित जेके ॥ रोरावतपे घडि छवि
हाए । परम प्रेन नहि प्रभुपे आए ॥ गोवधनको प्रीति आरोपन । तापे बडे ह प्रभु पावन ॥

श्रीधनज्ञान पितांबर धारी । मञ्जु मुकुटधर विपिनि विद्यारी ॥ वनज कुसुमके भूषण धारी । जेहि
लखि जाहि कामधन धार ॥ उर श्रीवल सुखांशु सोहै । देखि जाहि सुर मुनि नर सोहै ॥ रहि
तहै नृप सुपेख सुकाया । कान्हे हे पथगिरी काया ॥ किये इन्द्र लखि दृषित सुखलियन । सासल
छाज भरे अनविषयन ॥ लहे सेन्ह तहै अन्न सुभेधी । अनविषयन अखियन सो देवी ॥ *ॐ*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुत्रहि पेशि अति मोदलहि सुरपति सरस सुजान । अथुर मनोहर बचन सी करन लने गुणगान ॥
करपर बिरि धरि कृष्ण तुम लीन्हे जो वृजराधि । सो अनोघ गुण अपुनको सकै न कोऊ भाषि ॥

॥ * ॥ हरगीतिइन्द्र ॥ * ॥

सुर जहदरस समहनङ्कों काज यह दूसतर रझी । तुम सहजहीं मै किए सो यह जात
गुण कापै कझी ॥ निम्ब यज्ञधंसन देखिहो रिसि मानि अति अर्नुषित करे । निज
काज लीन्हे साधि तुम कहुरोष महि दिय मै धरे ॥ अतिदिषित उय समस्त वैखव तेज
तुम गोपन किए । को सकै बूजि विचारि कहि अति अमल गुण तुम ओ लिए ॥ जो
आपु विधि तुम नृसगणिको अन्त कहु लहिबो चहै । तौ देखि बिरिवर पंगु जिनि
तिमि बूजि मन सो बकिर है ॥ हैं पूर्व हम तुम अदित गर्भज तब हीं अयज सुने । सो
जानि मन अपराध हियसो दूरि करिबोई गुनो ॥ हैं कोल दण्डसमान जलपै गैल महि
तापै बनीहै भूमि पैसब आदि मानव जाति जितनी अमगनी ॥ अर तासु ऊरध बगनमै
गति अणुकी सब कहत है । ता ऊर्ध है रवि सूर्यको शुचिद्वारता जोगहहैं ॥ हैं तासु पर
मन सूर्यलोक सुतासु पर विधि लोकहैं हैं तासु पर गोलोक शुधि आन्दको जो लोकहैं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरम सहित विज लोकमै हेनिति करत बिलास । ब्रह्म कृषिण सह विधि करै ब्रह्मलोकर्म नाम ॥
करत साध्य मोलोकमै गोपाचन वन धारि । तासो अति ऊरध तहां तुम बिलसत भुजधारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जासु भेद सुर मुनि महि पावै । बडत भांति विधि जऊ बतावै ॥ पृथिवी कर्मसे बहै पावन ।
इते कर्म करि जीव सुपावन ॥ पद अमरूप कर्मके पावै । सब थल जाहि बजरि इत आवै ॥ उत्तम
पद तुम्हार जे पावै । तेन कबळ फिरि महिपै आवै ॥ कुलित कर्म तमोमय करहीं । ते भूमिऊते
अथ सखरहीं ॥ कङ्क सुकृत कऊ दुबकृत करिके । धमै नगम भारतवस परिके ॥ शुद्ध सुकर्म सुकृत
जे करहीं । पाय सूर्य ते आनद भरहीं ॥ पाह ब्रह्मलोक करि अनुमात्री । पावै ब्रह्मलोक मरज्ञानी ॥

गज सहै गोसोक उदारा । औरहि दुर्लभ तासु विहार ॥ जो तव मत्त मुमुक्षु अकामक । पावे
ते तव लोक सुनामक ॥ इमि कहि सुरपति आनन्द द्याए । फलक कुम्भभरि सुजल मगाए ॥ शुचि
अभिषेक कृष्णको करिकै । कहे इन्द्र हिम आनन्द धरिकै ॥ हम देवनके इन्द्र बिल्लाता । तुम
गारुडके इन्द्र सुजाता ॥ अबसौं तुम गोविन्द कहाबो । निज प्रमकेहि प आनन्द द्याबो ॥ शुभव
वारषिक आतुर मासा । मम पूजन दिन विहित बिल्लासा ॥ तिनमें दोष मास हम जेहैं । दोष
मास शुचि तुम कहै देहैं ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरबा रितु द्वै मासमे हमहि पूजि है खोगा करिहै कहि रितु सरदकों तव पूजन उपयोग ॥
यह कहिकै फिरि कृष्णसौं इमि भाषे सुरराजा श्रीघ्न करौ बध कंसको सहित सुसखा समाज ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कंसहि मारि मोद हिम धारी । ब्रजमण्डलमें शुचित विहारै ॥ तुव पितु भगिनी कुन्ताममा ।
ता गर्भज अर्जुन अभिरामा ॥ सो मम पुत्र धीर धनु धारी । तापै करिकै कृपा विचारी ॥ कीजो
सखा सप्रेमहि यातै । कहु हमरे कहु अपने नातै ॥ सो तुव चित्त वृत्ति अनुश्रामी । होइहि समर
भूमिमें नामी ॥ कहे सचीपति जो सो सुनिकै । सादर कहे कृष्ण इमि गुणिकै ॥ चाहि सुरेश इतै
तुम आए । तासों हम अति आनद पाए ॥ भाव तुम्हार अहैं हम जाने । सो करिवो मतहै अनु
माने ॥ अति प्रिय सखा अजुनहि करिकै । यह बर तासु भृत्तता धरिकै ॥ भूधि भार तिनसों हर
वैहैं । नीनि लोकमें आनन्द हैहैं ॥ सो सुनि सुरपुर गये उच्यहैं । दै आश्रय वरु भांति
सराहैं ॥ काज अमानुष साखि व्हे बिसमित । आनद भरे कहै इमि शशिमित ॥ बाखापबलों अब
लों कीन्है । तुम जो कारज आनद लीन्है ॥ देवनहँ इसतर ते कारज । कहे सहजहँमे तुम आ
रज ॥ तातैं हम सब बिसमितव्हे कै । बूजौ कहेो सत्य मुद भवै कै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हो तुम को सुरमल्लनमे यह कहि कारख आय । व्हे मनुष्य प्रगटित भए कहे कृष्ण समुदाय ॥
पद्मदलै लन कृष्ण प्रभु सो सुनि बोले बैन । तुम जो कहे विचार करि इनमें हमकोउ हैन ॥
है हम बोप सजाति तुव जौ जालेह यह मारि । कहु दिम चुप रहऊ फिरि आपुहि सहै जानि ॥

साखि श्रीकाशीराजमहाराजाभिराजश्रीउदितनामस्यसाक्षात्प्रभिश्रिणिना श्रीवन्दोजनकाशी
वासिगोकुलमाषाक्रेन नापीनाथ कविसा विरचिते भाषार्या भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे बालचरित्रे
कलस्यकचमामनोगाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

श्री श्रीकृष्णचन्द्रगुहसानर । धरम धुरन्धर धोर उजागर ॥ नाप उबारण भारे प्रनयन । भए
कुमार मोदसन सुन्दर ॥ पाप सारदी निशा उदाकर । चाहि चाँदनी चन्द सुचारु ॥ ससिक राज
अति आनद पाए । मोहनमुरखो बधु बजाए ॥ सो सुनि गोप बधु मुद मै कै । गर्दछण्य पै जो
दित नै कै ॥ भाति अनेक रने प्रभु तिन सेां । कहीआर सो सुपना किनसेां ॥ बड विधि रने
अऊत मित्रि नागर । अन्तेरजानी सुपना सागर ॥ सो बिसतारि कहौलौ कहिखै । बडत माँद
घोरो कहि सहि खै ॥ सुनो एकदिनकी मनभावनि कृष्ण चंदकी कथा सुहावनि ॥ नाम सार छ
दैत बलभारी । रसौ अनाम वृषभ बपुधारी ॥ जोअबनिमै परसथ नाथक । छोटे बडे वृषभको
बाधक ॥ गारुडको दुखइ अन्वार । संध्या समै एक दिन आर ॥ प्रभुके तनमुख बरजन सांभ्यो ।
भयो कालबस अति रिसि पांभ्यो ॥ तेहि सखि हरि करनाखो दीन्हें । सुनि सो चलो इकडि रिसि
खोन्हे ॥ कसि शरीर पुरपूछि उठाए । चौच निरीछे शृङ्गि उदांए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एहि विधि आवत ताहि सखि कूदि शृङ्गनिह बोर । घूमि घुमाइ गिराइ तेहि बधे कृष्ण रणधीर ॥
वृषभासुरको देखि बध सिंगरे गोप सुजान । नै मोदित श्रीकृष्णकी अस्तुति किए महान् ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

सिगरे चरित कृष्णके सुनिके । कंसभूप निज हियमै गुणिक ॥ उद्यसेन बसुदेव निशंकहि । बधु
अक्रूर भोज अरु करहि ॥ सात्विकि दारुक अरु इतवरमा । कंकाबरण विकरु सु परमा ॥
विष्टयु पृथुं त्रिषु अरु वैतरणू । ए यदुवंशी आनद भरणू ॥ अरधरातिमै ईन्है बोलाई । करि
तिनकी बडभांति बडार ॥ हिए अस्ति जपर अभिमानो । कहन खनो एहि विधिकी बानी ॥
मम विनाशकी कारण नाडो । मन्द गोपको सुतकै बाडो ॥ कृष्णनाम अति उद्धत बीरा । दुसतर
कारज कर रणधीरा ॥ मंचीचार विचारण हीना । हों यह पायो शोच अधीना ॥ जिनि आलससेां
रोग बढावै । तबचेतै अब अति दुख पावै ॥ तिमि अबलौं हन खेत न कीन्हो अब सुनि तासु चरित धित
दीन्हो ॥ खेलात हों पलनापिंजबसेां ॥ अदभुत काज करेपै तबसेां ॥ एक समै नारदमुनि आए । दुतिय बार
इमि मोहि सुमाए ॥ तुव विनाश करता हों डैरो । अठवां पुत्र देवकी करे ॥ तेहि बसुदेव जयोदहि
दीन्हो । तासु सुता निज तनया कीन्हो ॥ बिंदु शेषवै विदित विराजं । सोहत शुभ निशुंभ दराजं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अठवां सुत बसुदेवको तुव बध करता बोर । मन्दगोपके नेहमै बिसासत है रणधीर ॥
सा तुम सब बसुदेवको देखो कुतसित कर्म । मम विनाशचित चाहिकै कैसेा कियो अधर्म ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

मम दिन रहि करिबोन विद्यासाम्ने कृतज्ञ चाहे मम मायक ॥ ममवध रहि प्राव विनारमै ।
 अह निज सुगहि रसम्य अभिप्राये ॥ अपुहि असु कोद हिय बदि । मम वध करीयो सहज
 विचारे ॥ वृध कहाय मान्य सनहीके । है सभह कुठिल अति जीके ॥ वारपकीते वृध न कोर ।
 वृध सोई वरकुधिको जोई ॥ इन्हहिं न वधउ वृन्निअह आजू । ज्ञाति वृध गिब वधउ कुकाजु ॥
 ताते है अकरर सुजामी । आऊ मंदये सुनि मम वानी ॥ कहेऊ मन्दयो मम दिन चाहे । उचित
 दण्ड दे आनद हावे ॥ सबकोउ उनके सुजन सराहे । तिऊको हव देसन चाहे ॥ तिऊको
 संग लीन्हे लीहे ॥ जे है तवसंग लीन्हे जे है ॥ वनुपवजज हन रंभन कीन्हे । ताते तिऊके बुद सुत
 लीन्हे ॥ मेरे मल्लमसो हरि जीते । मांनि लेहि ते जोचित नीते ॥ यहि प्रकार बळ भांति बुजाइ ।
 क्यासे तिन्हे बिन्यास बढाई ॥ सो करियो जेहि इतसो आवे । उत इतको कहुभेद न पावे ॥ कझी
 कंस जो सो सब सुनिके । बले अक्रूर मन्दये गुणिके ॥ प्रभुहि साखकी उलुक कैसे । नृपित
 जेठको अलको जैसे ॥ सबके मान्य वृध शुचि भेषहि । देव मुख्य वर बुद्धि बसुदेवहि ॥ अति कठोर
 वाली रिधि सानी । कहेसि जु कुठिल कंस अभिमाणी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो सुनि नहि बोले कहु श्रीवसुदेव सुजाम । सब यदुवंसी अथित न्हे मूँदि रहे निजकान ॥
 अति अवाच्य वाने कहे ताहि काल बसमानि । उचसेनके पितामह अंधक बोले जानि ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

अछो कंस तुम शुचि मति नावे । बसुदेवहि जो यहि विधि भावे ॥ ए नहि सीसा कहिये जोगू । इन्हे
 सराहत हैं सब लोगू ॥ यदुवंशज वीरध अरु पोषू । सब मांनि इनको संकोषू ॥ तासु निरादर
 इनि तुम कोन्हे । सबके हृदय भल्ल यह दोन्हे ॥ मान्य पुरुष कहें निदरै कोर । ताको भल कवळ
 नहि होई ॥ निज सुतको इनरसण कोन्हे । सो अब जानि रास तुम लीन्हे ॥ नीके निज पितुसो नौ
 वृजौ । याही विधि उगळसो कूमौ ॥ माहक तुमको पोषि सुधारे । जननत चाहे मारिनडारे ॥
 सुनये करै नेह पितु जैसे । वे तुमसो कहिहैं सो तैसे ॥ पीछे किए करन तुम जेते । से विचार
 करि पहिले सेते ॥ निज अर्थ समझे ह कहि आवत । ते तुम कहते जो कहु अज्ञान । तुमबळ अन
 रव लीन्हे पीछे । अरु कवळ करिवौद रहे ॥ ताते इत अति अमनुष्य होई । राजे इतको नाशक
 जोइ ॥ संकरक अरु हत्या सुओभा गिनसो तुमसो बडो निरौपा ॥ ताते जन सीसाचिय धरिके ।
 श्रीवसुदेवहि नेदित करिके ॥ श्रीवसुदेवहि मम उपाय । प्रवी कहेये वपउ विहाइ ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनुभवां यह सुनि कवन कोले कछु न वैज । से उठिके निज भोगने करि रिखिराने नैन ॥
अन्य करि यादव नए निज निज घर सुखदानि । जानि कंसको काख वस हरि ईश अमुमार्ग ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

रहीन्दित एक कीशो नामा । बाजि बेसघर वर बल धामा ॥ रहैं सदा वृन्दावन जांहीं । गो
नामन हनि खाद सदाहीं ॥ तेहि घटए हो कंस संदेखू । कषण नाशको उप निदेखू ॥ सो यह कीशो
अकविधाला । आयो ब्रजपै कंठिन कराला ॥ तेहि खलि ब्रजवासी भय पाए । आरत भानि कषणपै
आए ॥ ब्रजवासिनको साहस दैके । ताडिग चले कषण मुद लीके ॥ कृष्णहि आवत सनमुख देयो ।
आइ हथेन्द्रभक्त भय भयो ॥ हींसत घोष सुपूछि उठाए। घुन्टो प्रभुके दहिने बाँए ॥ वार अनेक
घुनि चउँ बेरा । शठ तारेहि पखलात कठोरा ॥ फिर अति घोर शब्द करि डांटेसि । बाजुमूलमें
रदसों काटेसि ॥ वर अशुके मनतासों छायो । चाहेसि उरसों रेलि गिरायो ॥ तब हरि निज भुज
वरधित कीन्हे । डारि दैतके मुखमें दीन्हे । करि ता उरमें भुज बिसतारा । कीन्हे केशोको दुद फारा ॥
केशिहि तरो देखि ब्रजवासी । अति मोदित भे बिपनिबिलासी ॥ यथा उचित कहि कहि प्रिय
बानी । बड विधिप्रभु हि सराहे शानी ॥ नारद मुनि परभाव अतोले । रहि अदृश्य नभपै तहँ बोले ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

या केशीको बध रघो दुसतर हे असुरारि । याके अधिघे जोग हें तुमही के बिपुरारि ॥
तुम केशीको बधकरे ताने महिमा धाम । होइहि जगमें प्रगट तुव अनुपम केशव नाम ॥

॥ * ॥ हरिगीतीकन्द ॥ * ॥

खलि तुम्हहि तुव चरितानि अब हम जातहैं आनद भए । फिर आइ इत खलिहैं सबधि
अब चरित करिहैं जे नए ॥ इमि कषणसों कहि प्रेम पूरि मुनोष नारद दिव नए ।
सह गोप कृष्ण उदार प्रभु प्रिय परम ब्रज प्रबिसत भए ॥ तेहि दोस संध्यासमें तहँ अकरूर
पऊँचे बुधि हरे । तुर उतरि रथसों मन्दके घर बए । अति सुखसों भरे ॥ गोवत्सके व्यापारमें
तहँ देखि कृष्णहि तकि रहे । रोमांचितो न्हे पुर्वाक पसिजि सुनैन जख भरि जकि रहे ॥
एक समैमें बटपत्रमें शिशु रूप प्रथम सखि करैं । तेआइ महिपै गोपवनि एहि भँतिके
कारज करैं ॥ इमि भूक्ति मनमें ज्ञान वर प्रसि कृष्ण कृष्ण सुटेरि कै । गहि निखे अरु
लागइ कसि वह मूर्ति बखसै सेरि कै ॥ सह कृष्णसे अह मंद हे तहँ भटिके निगसों निखे ।
बलि रामसों निखि तांशिष्य ते कदम किमुकसे सिखे ॥ तहँ वृद्ध गोपन सहित बैठि
सुकुशल कोइ सुनि मुद लहे । फिर कछो कंस मदीपको तहँ मन्द अब हरिसों कहे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शासन कंसनदीपको सुनऊ मंद सख्योप । नार्थिक करलै कस्यउ उन को सं निपरे मोप ॥
 कंस नृपति कोन्हे महत धनुमलको अरोप । बसैं तहां तेहि लखकों राम कस्य वर खोप ॥

॥ * ॥ चौपारद ॥ * ॥

इनि कहि कहे कस्यों जैसे । दस्यत रह्यो निज मनको जैसे ॥ दह पिता कस्यो कतिहारे ।
 परबस परे जन्मते हारे ॥ रहति देवकी जन्मी बारी । तुमहिं लखे विनु सदां दुखारी ॥ तुमसों पुन
 पाइ ते दयति । लखै शोच सो अनुचित संपति ॥ तुम्हरे अमरुत कर संसि लीन्हे । कंस विन्ही अतिसै
 दुखदीन्हे ॥ तासैं उत बलि सहित समेह । नातहि पितहि सरस सुखदेह ॥ सोसुमि कृष्ण नरिसि
 कस्युकीन्हे । उत बलिवेके शासनदीन्हे ॥ रामकृष्ण अकरुनसोहाए । निग्रि कहि कथा प्रसंग
 विताए ॥ बखे भौर सब संमत करिकै । अथदधि दधभ नहिष वृत सैक्यै । राम अकूर कस्य तहँ बडिकै ।
 दुसरे एक सुरष पै बडिकै ॥ निरखि कालिंदी दीरघदा मद । कहे अकूर कस्यों समद । ताम
 एकस्य तुम दोउ मारि । रथ कस्य इतै रह्यो सुख्यारि ॥ न्हार आइयेपहि इत अवलों । नहि
 आवों मोहि परिखेऊ मवलों ॥ इनि कहि जाइ कालिंदी भीतर । सैक्यै भवैं कसैं अनीतर ॥
 सेबित तहकादि अहि मणसों । शोभित शेष सहस्य सुफणसों ॥ तसुउहँ विष्णु आसीमा ।
 निकट निराजे राम प्रवीना ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

खलि विष्णुहि इनि तहँ कस्यु चाहे कस्य अकूर । कहिन गयो कस्यु तकिरहे अनुपम परमापूर ॥
 बाहेर कठि जाँ लखै तौ श्याम गौर अभिराम । रथपैं बैठे हसतहैं रामकृष्ण अविभाम ॥

॥ * ॥ चौपारद ॥ * ॥

अस्यमै बूडि निकसि फिरि देवे । ताही विधि उत इतै निरेवे ॥ तब तजि अस्य अकूर सोहाए ।
 साधरजित से रथडिग आए ॥ बोले विहंसि कस्य तेहि चाहे । हो आधरजितसे तुम काहे ॥ सुनि
 अकरुन कहे प्रभुपारि । तुमकह्ये कस्यु अचरज नाहीं ॥ बान्हे सो करि आनद कस्यो । एक
 अनेक रूप दरयायो ॥ उत तुम्हरे सनमुख मन भायो । हमसों कस्युबोधि नहि आयो ॥ इत इहि
 भांति रनो सवही सां । लाने इतक आधरज जीसों ॥ इनि कहि रथ बडि चले उतालहि । पऊचे
 मपुरा साधरजसाहि । ने अकूर निज नेह लपारि । साइर नदां उतारे जाइ ॥ बोले तहां अकूर
 सुबानी । सुनऊ कस्य बसंराम सुहायो ॥ कस्यु दिन इत उत वैडि विताइऊ । अवेन निज पितुके
 घर जाइऊ ॥ जीपितको जैसे सुनिलेइहि । तौनृप उन्हाहि अविष दुखदे इहि ॥ सुनि हंसि बोले
 केशव आरज । उत जैसेको मोहिन कारज ॥ जहँ तहँ जाइ पुरी यह पेलव । धनुष यक्षको

शाखादलवा। सुनि अकर भोदहिय धरि कौ। हरिहि प्रसाज मनहि मन करिकौ ॥ गए कंसपै आनद
पावे। अंगराम सुनि देखे। अंगराम सुनि देखे। अंगराम सुनि देखे। अंगराम सुनि देखे ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राज मार्गनै रजकहों रंगकार तेहि देखि । तासों मत्पन लागे शुचि बसन विधिप्र निरेखि ॥
रजक कहेति तुम कौन हो कोहि बगको रसवार । कंसभूपको बसन साखि भाजन लागे पैवार ॥

॥ * ॥ समथमन्तसिखाएन्द ॥ * ॥

सबक रजक कर संकत बचन सुनि रितिकारि तेहि हरिहनि करतलसों ।
धिर धरसन भिन्न करि दिचे तब गद रजकिनि कहन नृपति बरवससों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बसन पहिरि तब प्रभु दोऊ भारी इंदे शुचि मासा हविशार। बलि कछु दूरि सुसवन नि भेधे।
गुणकसु नाथक माखिहि घेधे ॥ तासो कहे छल हवि गेहू । हमचंजोग शुचि मासा देहू ॥ सा
सुनि कहेसि प्रियबंदे माली । लीजे सुधमा निधि बलशाली ॥ इमि कहि तिन्हहि हार पाहरा
एसि । अथि बर्षन शुचि आधिष पीएसि ॥ राज मार्गनै फिरि ते उमरे । तँह देखे कुबजहि गुण
अगरे ॥ अंगराम करे माजम लीगहे । साखि तेहि छल प्रभु इमि कीन्हे ॥ कमलानचनि बह
शुचि अनुलेपन । करिहो काके अंगनै लेखन ॥ सुनि हसि कुबुजा चितै तिरीके । बोली मन मथ
सरसों सीछे ॥ आवड तुम मोहि अति प्रियलागे । अनल अलीकिक हविसें पागे ॥ कंस भूपको
दुहिता प्यारी । हाँ ता अनुलेपन अधिकारी ॥ तुम को कहे कदासों आएकोहि हित मोहि मोहि
बेलभाए ॥ सखित छल कहे तब तासों । भरे भूरि मनभाषनिभासों ॥ हम दोऊ बंधु अतिष एहि
पुरके । मर्दन मल्ल मल्ल बलपुरके ॥ अंगराम सह तुमकँह चाहे । सोनिज अंग लगावन चाहे ॥
जयायोग अनुलेपन भावन । भाभिनि देऊ मनेऊ सचावन ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हे प्रमुदित कुबुजे दर्द अंगराम सित पीत । सो लै साए अंगनै हलधर कृप अमीत ॥
तदनेतर तारपर कौपी करि केशव घदुराथ । टैंढी तर दे आंगुरी लीगहे ताहि उठाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यीवतनेसी पीठि लखाएसि । हे बखलितिय भाव लखाएसि ॥ लप्रेमयो निलि कृप करमने ।
प्रभुप्रभाव सो जानऊ मगमौ ॥ कंसका लमासी सुन्दरि होके । प्रभुसे कहेसि मादसें लीके ॥ अए
मोहि तुम अनुपम लाहू । अब मोहि होकि करुँ मनिजाहू ॥ सुगऊ कंस अब सहित बनेहू ।
बसि करि श्री पावन मम गेहू ॥ बाणी तासु प्रेमनै सुनिके । छलबन्द बोले इमि मुणिके ॥ कछुदिन

सुन्दरि धीरज राघो । अबै न आतुर ह्येकै भाषो ॥ कहु दिनमें हम सारर आइव । बसि तुम्हरे
 इर आनद पाइव ॥ ताहि प्रबोधि बोर दोउ भारी । बोर बिलोके बनु गृह जाई ॥ अमु सखि बडत
 धनुष तहँ रावे । सखित धनुषपालसो भाषे ॥ सो बह कौन धनुषहो धीठि । मूपति जासु यज्ञ
 आरोपे ॥ तेहँ दरशाए सो धनु भारी । संकीन जाहि इन्द्र गहि टारी ॥ सखि उडाइ तेहि प्रभु
 गुण जेरे । सखजहि सखि बीचसो तोरे ॥ टूटत धनुष अन्ध अति बोरर । अयो मुकुह व्यापित
 चञ्जबोरार ॥ धनुष तोरि दोउ बंधु सुखारे । सो गृह तजि कऊ अनत बिहारे ॥ शकित धनुषपाल
 तबजाई ॥ कहेसि कंससो कथा मुजाई ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुरुष सिंह द्वै वीरवर गौर श्याम शुचिनात । तेजपुञ्ज अति प्रमानै विनुधोपमित विभात ॥
 आइ लखे तहँ धनुष तब छल पुरुष बरवीर । बडो धनुष गहि तोरिधौं कितै गए रणधीर ॥
 ॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

धनुष अंगको दुसह संदेसा । कहेसि तासु करि विदा नरेसा ॥ कीन्हे अन्तह मवन प्रवेशा ।
 मनमें कहे अभाव अदेसा ॥ राम कृष्णको पौरुष भारी । समुक्ति बिलचन भयो दुखारी ॥ मुनिको
 बचन साँच करि जाग्यो । निज छत कर्म समुजि पश्चिताग्यो ॥ इन घट बालिक माहेक मारे ।
 विधि चाहत सो टरत न टारे ॥ इमि चिन्तित कठि बाहेर आयो । मलशालाको कृत्य बतायो ॥
 मन्त्रादिक की रचना जेती । करि आज्ञा भृत्यन कहँ तेती ॥ जुहू धर्मावद अरु जुध करता । अरु जे
 जुहूपेसि मुदभरता ॥ ते सब प्रातर है ईत आई । इमि कहि बैठी घरमें जाई ॥ मुष्टिक अरु
 घाणूर सुनामा । दोष मल्ल हँ बरबल धामा ॥ तिन्हें बोलाइ तहँ मुद भरिके । अस्तुति तिनकीं
 बज्रविधि करिके ॥ कहे कंस लखि सूर-मुजीके । मुनज बोर तुम मन हित नीके ॥ जे बंसुदेव तने
 द्वाउ भरई । बरधित भए मन्दघर जाई ॥ संकरषण अरु छल कहाएति नमै शासनति ॥ इत आए ॥
 ते दोउ बिसद बोर बिख्याता । जुहू भेदके सरस सुजाता ॥ तिनसो तुमसो जुहू महाना । होइ हि
 कासिं मुनज बलधामा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सायकान ह्ये युह कदि पन धरि मकरि यकारि । जीवत तिन्हे न छोडियो पाकेकहि यो धिजादि ॥
 सो मुक्तिप्रोखे मल्ल नृप उनकी आयु क्षाम ॥ तौ सौ अरु समसुख अरु लोहोयौ ललाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ते दोउ मल्ल सखन बोखे इमि कहि वेदनि प्रर अति गौरव सो । तब नृप कंस बलायसि
 कुबलय गजपालहि रवधर वरसो ॥ तोटक अन्ध ॥ कुबली गज पालक सोद मयो ॥

गुणको विग्न आर खरो जु भयो ॥ मोहि देखि कहे इति कंस वली । हिय दंभ भरे मति
संग्रहणी ॥ तुम ही कुबली गज मत्त मया । मख हार रहौ मम मानि कहा ॥ गुणको
बलको सहरोष किए । रहियो निज पास सुखकरिए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे कसिके वसुदेवके तबयनको करि भेर । गजसौं बध करवाद्यो कीजो कहु न देर ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

तिनको नाम देखि मुह कहिकै । तब हो खोर रोष हिय कहिकै ॥ भए मोहि यदुबंशी लखी ।
सिगरे राम कृष्णके पत्नी ॥ तिनको नामकरौ किरि सादर । ऊयसेन आदिकजे कादर ॥ उयसेन
नहि पिता आरे । कहिने हैं मुनि कसह पियारे ॥ सो मुनि के बोख्यो गज मत्तक । यह विरतांत
कहज लल घालक ॥ कहे कंस एकघोस बिभारद । मम ठिग आर सुमुनिवर नारद ॥ मोसों
इति हसिकहे सुखारे । उयसेन नहि पिता तुम्हारे ॥ तब हो हठि नारदसों बूजे । सुनिनेको
विरतांत अरुजे ॥ आरुद कहे सुनऊ कहिआता । कहु दिव कहि मोदित तुम माता ॥ गिरि जो
बाह सुजामुव नामा । तारै साखिनसहित हविभामा ॥ गर्द लखन बर बनकी घोभा । कुसुमित
विपिनि देखि बसलोभा ॥ कूडवि सुनि सुखदानि खनकी । गूडनि सुने मत्त अलि वणनकी ॥ मारत
सुखद विविध तब लखौ । तिय सुभाष मम मनमर्थ आगे ॥ अति अभाव आवदसों पागो । तियन
सहित बन बिहरत लखी ॥ विधिवस ताहीहन तह आयो । इमिल नाम दामव हविआयो ॥
रससों उतरि सुतसह सोज । लख्यो रमण बसैं हवि जोज ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तह कन बिहरत हरिषों तुम मातहिषों जोहि । विशमित नोख्यो सुतसो मनबैं अनिसे जोहि ॥
यह अपूर्व मनसोहवि अति रूपमती नारि । बन बिहरति मो मन भयें बिहबल याहि बिहारि ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

यहपै कौन भूपकी नारी । लखी मोहि यह अनिसे प्यारी ॥ याको भेद कौधि विधि प्राणै । किनि
बसकरि यह अंक सबावौ ॥ तब अख परसि ध्यानविधि ठानेसि । उयसेनकी तिय यह जानेसि ॥
तब सो उयसेन बनि खीन्हेसि । आर तहां तासों रति कीन्हेसि ॥ प्रथम ताहि तिन खीन्ही
गंधी । अति प्राणपीन रम्ये उरुहरी ॥ पीके रतिवोरप कहि ताह । बेखी अकि अंध करि
आह ॥ को नू मनपति सब बनि आएव जो अक पतिवस धर्य मशाए ॥ रे अठ दुष्ट पतिव सपराधी ।
धिक मोहि लख परतिव रतिबाधी ॥ सो बोख्यो कै हो परशानी । हुनिल नाम दामव अलिभानो ॥

इति कमरोष करुण गजगामिनि । त्रैजो कहे। सुगज सो भागिनि ॥ केतीतिय परपति रति सुनिचै ।
 किते पुरुष परतिय रति गुनिचै ॥ हे तिय पुरुष को यह कामा । भयो कहे यह चतुषिं प्राणमा ॥
 मम संभोगज सुत अब लहिहै । तब कामिनि बर आनद गहिहै ॥ को तुम इति तोहि बूजेज
 बामा । ताते तबहु कंस यह नामा ॥ होइहि सो अतिसै बलवाना । करि नरदन अमनीत
 अमाना ॥ सुनि सो बोखी सुनु मति विनरे । पुरुष नखण्ड तोहि धन सिगरे ॥ होइहि यह तिय
 परपति बामो । कहं एक कोउ भई हरामी ॥ ताते ए निय म है तिय सिगरी । जे बिकरीहै ते
 विगरी ॥ तुव संभोगज सुत जो होइहि । सो खल धर्म लोककर होइहि ॥ तब कोउ एक पुरुष
 अवतारी । होइहि यदुकुलमें बलभारी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब तुव संभव पुत्रको कर्म निरखि गहि रोष । बध करि करिहै सोइपुरुष यदु कुलको परिपोष ॥
 यह सुनि सो निज पुरगयो ए आई निजधाम । इनि कहि भोसो दिवि गए नारद मुनि अभिराम ॥
 * * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ताते सुनु हे बारप आरज । हमै न मातुपितासो कारज ॥ तुम मम कहे भोरही कीजि । फिरि जो
 होइहि सो शक्ति लीजो ॥ इनि कहि तेहि गजपास पठाए । नृप चिन्तित सो निशा बिताए ॥
 भोरहि सुभट सचिव सुखदार्द । बुरे जुहघरमें सबआई ॥ युद्ध विसारद जोध आए । आए
 मल्ल वीररसखाए ॥ पुरजम आए आनद साने । युद्ध देखिबेको ललपतने ॥ तब नृप कंस मत्त
 मद छाये । रङ्गभौमके द्वारे आयो ॥ कुबलहि गजहि राखिके द्वारे गयो आपु भीतर मुदधारे ॥
 सब समान तैह देखि नरेणा । यथा उचित को देह निदेशा ॥ अति उन्नत हो अंध बज्रधारा ॥
 रचित सब भौति सोहायो ॥ तापें जाद गर्बगहि बैठो । मोह उमेठि औंसो औंठो ॥ इतर दारुने
 मच्च बनाए । तिनमै बसि अदुबशी भाए ॥ मंचे तिघन जेण जे लासैं । तिनपै बैठि लसी रनि बासैं ॥
 लसै मंच मनदेवन लीन्हे । सपद विमान भूमि पद दीन्हे ॥ नुठिके आदि मल्ल बलबाडे ।
 करिकी तीनि गोल भे ठाठे ॥ बज्रविधि बाज्रन बाज्रन लागे । जय साज्रन जम गाज्रन लागे ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताहीसमै सुबधु दोउ राम कृष्ण बलवान । रंगभूमि के द्वार पे आए वीर समान ॥
 मगरोके कुबलय गजहि खरो देखि अनमानी । कहे कंसहिनिपालका लिए कंस प्रभु जानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुहि निकट लखि गजप रिसाए । कीन्हेसि कुबलय गजहि रिसाए ॥ कुबलय करको कुंडल
 करिकी । प्रभुपै चली दुसहरिसि धरिकी ॥ तब प्रभु ताले ठीकि करकीले । द्वै पंभ पोछू हठे लसीले ॥

सिंधुधरिवो मनमै धरिसि । सुखा दण्ड उदण्ड पसारिसि ॥ लखि नडि जपडि कण्ड रिशियामे ।
 लपडि सुखमै जूलन लागि ॥ रद परमनके अन्तर द्वारे । प्रविशे कडे सुख उरधारे ॥ दीह दसन
 अर सुख परधनसो । करि न सकी कहु द्विरद रणनसो ॥ कहु कन गजसन कण्ड बिलसिकी इमि
 दावे मजकर कर कसिकी ॥ अति नै पीडित गजराजू । मैडि नयो गिरि सहस्य रराजू ॥ तब प्रभुधन
 कुंभन डिक धरिके । लए उखारि दयन दोउ धरिके ॥ गज सहस्य सोर दसन प्रहारे । मज गिरिकी
 सिद मृग बिदारे ॥ पूछि उपारि लिए हलबाहकाकौतुक लागि युद्ध जय बाहक ॥ गिरि बिलिमै
 मभि प्रविशे नागहि । रीचिलोह जिनि शुचि परनागहि ॥ गज गजवानहि बधि गजमर्दन । धीर
 धराधर धर जन वर्धन ॥ गज रसक हें सुमट घमेरे । बली कंस भूपतिके प्रेरे ॥ गज दन्तनसो नै
 दोउभार्दीतिनको नाम किथे सुखदादी ॥ फिरि धरिकभूमयै रद प्रबिसो सुपुह्य सिंह रंगवरप्रविसे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहाँ जाइ निरखत भए भट सल्लनको जूष । सिंह सरोष खलै यथा गजनलके रद रूथ ॥
 गजबध सुनि खोन्हे दयन खलि दुख पायसि भूषा । लागे चतमै लपण जिमि प्राणो होत बिरूपा ॥

॥ * ॥ हरगोतीशब्द ॥ * ॥

बलिराम मरु बलि वीर वीर सुवीर भेष सहस्रि धरे । बर वीर रससो भरे धीर प्रवीर
 यकाद जण करे ॥ तँह धूमि रत उन देखि सकंस समाज जन मुदसो मए । लखि रंग
 घरको मध्यदेश सुशेष प्रभु ठाढे भए ॥ नृप कंस खलि अति क्रोध करि चाणूरको
 आसुर दार । तुन कण्डसो बलिरामसो मुष्टिक लरज्ज चेतन भए ॥ बलि चावसो
 चाणूर बल यज चंदके सनमुख भयो । अथ चाहि बचल बचल सम चौगानमै ठाढो
 भयो ॥ रणरुद्ध वीरघ काय ताहि बिलोकि अदुबंगो कहे । यह मल्ल शास बिहद जुडत
 सोत अति अति अति ॥ है मल्लजुद्ध समान बपु बधको सुकोविद कहतहैं । तिमि
 खैन हें बलभरे शुभद जु हरे गौरव रहतहैं ॥ सुनि कृष्णचंद विचारि अदुबंगीनसो इमि
 कहतभे । ए मल्ल वीरघ काय हमसो खरनको मुद रहतभे ॥ ए धर्म जुद्ध बिहद करत
 सकुह नै हम हें सुने । ए मारि कितने मल्ल सहि पै एक चापु हि हें गुने ॥ * * * *

* ॥ दोहा ॥ * ॥

जैसा करिथे चाहि अ हमसो ए बलवान । तैसा रनकीं जानि हत करि है सुने सुजान ॥
 इमि धीरज दे जादवन ह्ये मोदित बडुनाथ । तालटोकि चाणूरके सनमुख कोन्हे हाथ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

हाथहि हाथ पकारि दोउ वीरा । लपटि गए हरकैल सु धीरा ॥ लपटि छूटि भिरि छूटन

साते । बंध विधाननि जूटन लागे ॥ करै पेंच अर पेंच बजावै । अतिसे बंधलगा दरवायै ॥ पकटि भूमि
 कोउ काम लागवै । कोउ ऊपरसे । पेंच बजावै ॥ फिरि उठि भिरै तासो दै पावन । कति कति विविध
 धांतिके दावन ॥ जैसे सिंह गजहि गहि जावै । ऊपटि खपटि तनि खपटि थिरावै ॥ फिरि उठइ फि
 रि दाधि चिरावै । तिन तिन विहरै जिनि जिनि भावै ॥ श्री श्रीकृष्णचन्द्र प्रभु तैसैं । गहि पाए
 रहि कोउ सुखसैं ॥ दक्षिण करसैं कंस निवारो । वै जे बाजत बाजन भारे ॥ चढे निमावन सुखन जावै ।
 सदय सप्त कवि समुद सुभावे ॥ जैति कस कहि आनद छावै । बजत भांति दंडुभी बजावै ॥ किए
 कंसपै रिधि प्रभु मनसैं । कपित भई भूमि तेहि सखसैं ॥ हास्यो मंच मुकुटतें ताके । मुचि गहि निरे
 सदन सुषमाके ॥ कस प्रखरित वृत्तते जैसे । भरे अनूपस सुसमन तैसैं ॥ इनि भिरि सदै बोझ भट
 भारे । जिनि बबने सैवल नद बारे ॥ छौ चाणूर रोष रसरतो । डोड न नेकु नातु सरमातो । * * *

॥ * ॥ रोसाइन्द ॥ * ॥

चाणूरको बध भए पैं अति क्रोध करि बलिराम । बीर मुष्टिक सों भिरे वर बीर ताके
 धाम ॥ हो नाम तोसल सख मन सुविदित बल बलवान । भिरे तासो कस सीसक मख
 इन्द्र सुविधान ॥ राम मुष्टिकको बधे करि पंच पांच पहारि । कृष्ण पकटि पसाद मारे
 गहि संहियै डारि ॥ नाथ करि मल्लानको श्रीराम कृष्ण सुभोरतास दे देख भे रमणोप
 अति रणबीर ॥ तीनि पुरको एक ते संहिनो है विपुारि । उग्ररूप स्वप द्युते ससै
 तिनको आरि ॥ तथां तिनको देखि जो सुख नद अर बसुदेव । सहे जो गहि सहे कंस
 देव देवसुभेव ॥ कंसको मुख अंत भो अर ओदकल भे हाथ । डारि कियतो सणक
 अंकित रह्यो श्रीसमवाय ॥ फेरि साहस आनि गरबी मठनको दिगि घेनि । सखल दक्षिण
 करहि करि इनि कहन साग्योठेरि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बोम बनेअर जे जुरे तिनको देऊ विकारि । नंदहि गहि कैपे करे देऊ पायसै डारि ॥
 अमयंग बोधमवण सकल बोधनको हरि लेऊ । शकल ह मन राज्य ब रहै बसत जाति देऊ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

हो सुनि कंसचंद्र रक्षधीरा । कूदि संध पे गए सुबोरा ॥ जानन काऊ सुखसै देव । परे मंधये
 सबको उधये ॥ मुकुट विरारि कंस गहि लोहे । कंसहि अजीम कहि बोले ॥ केशरि के ऊपटे
 राज जेहा । हेत सयो सो भयनि तेरो ॥ चले जाच तब नेकु स हासी । भलि गये बल कुटिल
 करासी ॥ प्रभाइंग बलि सको मय मुरा । रधा कदि रूप याक ल मुरा ॥ गह कुंभवतिहि सहित

साहाय । कूदि भवते नहिपे आए । कसो कस नाम हो जाको । प्राण बिहीन भयो नतन ताको ॥
जित तिन ताहि कठोरि सुखारे । रंग भूमिके बाहेर डारे ॥ जेहि मन गयो कठोरि जेवारणतँह भे
कस कठो रणखारा ॥ रघो सुमान कसको भारी । बंधे ताहि हलधर सुखदार । तब सहबधु कल
आनन्दीमातु पिताके शुचि पन बन्दी ॥ सिंगरे यदुबंशित से । हरषो निखि घनखामे मोदजल बरषे ॥
यथा उचित निखि शुभन सो होए । यदुबंशिनसह पितुघर आए ॥ कंस भूमिपति को सब नारी ।
पतिको मरण निरेखि दुखारो ॥ जाइ अंतक ढिग रोवन खानी । आं सुनसें अन धोवन लागी ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हाथ माथ कैसे भए कत हो रहि अबोल । आलिंगण करि करि बकति करवण करो निजोल ॥
पुरुषसिंह पुरुषार्थ तजि कत सोए हिय हरि । अब हम सब करिहैं कहा सो किन कहौ पुकारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अब को तुम्है बिना हँसामी । निरखि समान तियन प्रियकामी ॥ सरस बचन कहि कहि
हिय समुजार्हि । बहि सप्रेम सादर उर लादहि ॥ चलत न कहि लोन्हे तुम भरता । कैसे भए
निठर हरता ॥ तुम तिथलहि उतहू सुख लाहिहो । अब मन सुधि काहे को गहिहो ॥ इनि प्रलाप
बज्रविधि कहि कहिके । काट उर भज जरू गहि गहिके ॥ कीन्ही रुदन कंसको पतिनी । परम
पिआरी पति ब्रत वतिनी ॥ रुदति आरु तेहि नृपकी माता । उरपै करति खकरतल पाता ॥ सुत
गिर निज जरुन पर धरिके । बज्र बिलाप कीन्ही दुख भरिके ॥ सुत तुम हें राजन के राजा । गए
शोध कत छाडि समाजा ॥ रथ भज तुरे ह्व भट नारी । लैन गए संग कहा विचारो ॥ कहि गो
हो रावण सुनि लीजे । बंधहि बेरी कबज न कीजे ॥ बंधु विरोध किए भल माहीं । बंधु प्रयोग
आडि नहि जाहीं ॥ सा अब हमें प्रतहू लखाना । बंधु बेर हन अणुण अमाना । एहि विधि
बिलपि कही ब्रजपतिसो । ब्रजो जाइ कृष्णजदुपतिसो ॥ जा बै कहैं सोई उर धरहू । कृत्यकाज
माही विधि करहू ॥ उद्यसेन सुनि दुखित पधारे । गए जहां हें प्रभु मुददारे ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैठे यदु बंशिन सहित करुणा सिंधु विभात । रुदन कंस को तियनको सुनि सुनि हें पङ्कितान ॥
यदुबंशी मुखियानको लेकेसंग सहाय । उद्यसेन संध्याससैं कृहन लगे ढिग जाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नाम कंस निजगत फलपाई । गयोसंग निज देह विहाई ॥ तुम वीराधि वीर जगमाही । तुम्हें
कह्य कौड नहिपे नाही ॥ अब सुनि भूमि पाछ सब उरिहैं । बिना प्रयास उचित कर भरिहैं ॥

प्रवृत्तिनि धर्म अधर्म नशादृष्टि । सुजय तुम्हार भूमि पर होइ हि ॥ जदु कुल वरधितु मोदित
होइ हि । कोउ अमर्ष कबहुँ नहि जोइ हि ॥ देश कोअ सेना मट जेतै । करउ राज्य निज बस
करि तेते ॥ देउ निदेश कृपा हिय धरिकै । प्रेतकर्म हम सुतकर करिकै ॥ तिय अरु पुत्र बंधुन सह
जाई । बसव जाइ बन नगर बिहार्इ ॥ उग्रसेनकी आरत बानी । बोले कृपा सिंधु सुखदात्री ॥
उग्रसेन तुम सब विधिज्ञानी । तजऊ शौच-सुनि गुणि मम बानी ॥ कर्म कालको बस बस शौका ।
अमल रहत सह शोक अशौका ॥ तन धरि कर्म करै सबकोई । तन धरि चौसि काल बस होई ॥
कर्म फेर परि तन धरि सोई । कृत फल भोगि कालबस होई ॥ ताने कर्म प्रधान विचारौ । तजौ
शोक सहस उर धारौ ॥ करौ सुराज्य ग्रहन तुम आरज । हमै न कहू राज्यसो कारज ॥ हम
सुतच विहरब नहि पाहौं । जिमि खग पुर थल बन गिरि माहौ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताक कर्म निरेखिकै ताहि काल बस जानि । हां कीन्हो बध तासु नहि राज्य हेत अनुमानि ॥
सादर प्रभुके बचन सुनि उग्रसेन सुख पाय । उमर नहि दीन्है रहे चुप ह्यौ शोस नवाय ॥
इमि कहि यदुवंशिन सहित कृष्णचंद्र सबिके । उग्रसेनपै करि कृपा किए राज्य अभिके ॥

॥ * ॥ सारटा ॥ * ॥

यदुवंशिन सह जाय उग्रसेन अभिके लहि । प्रेत कृत्यमन लाय पुत्रनको कीन्है सविधि ॥
करि पुत्रनको कृत्य उग्रसेन भूपाल मणि । आपु भए कृत कृत्य पाइ सहार्इ कृष्णको ॥

स्वस्तिथीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याक्षाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
नोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचते भाषायां भारतन्तरगते हरिवंशदण्डे कसबधुग्रसेन
राज्याभिकेकोनाम पंचदशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

राम कृष्ण प्रभु खेलाचारी । उग्रसेन कहै राज्य सुधारी ॥ युवती सुबा यग्री अब जेता । कहु
दिन मथुरा बिहरि सनेता ॥ प्रिय दरगन धावन दोउ भारीपुरी अबतीनें बलिजाई । तहुँ ह्यै शंकी
पन तपरासू । तिनसो शीखे धनुष बिलासू ॥ चौसठि दिनमैं चाहि उदारू । सीखे चौसठि विद्या
चारू ॥ एहि विधि बुद्धि बिलक्षण देखा ॥ शंकीपन मनमैं अब रेखा ॥ रूपबुद्धि कृष्ण निरखि सज्जाने ।
अति उतकृष्ट देव करि जाने ॥ पैंसठ ए दिन कृष्ण सुजानी । कहे गुरुसो आनंद दानी ॥ सरुधि
भोगि मुरदसिखा लेह । घर जेके शोसन देह ॥ सो सुनिके गुरु सरसुख पाई । करि प्रभुकी
बज्र भांति बडाई ॥ कहे सुमऊ ह्यै कृष्ण सुदाता । रह्यो तुम्हार एक गुर भाता ॥ लवण उदधिमें
तीर्थ प्रभासू । सो अन्हान गो सुषमारासू ॥ गिल लि ताहि जलमैं गाह मीना । सो सुत आन

हे जगन्मोहिनी ॥ अब मनु कहि सागर तीरा । नए राम अह दृष्ट सुवीरा ॥ किए समुद्रमै जाइ
प्रवेसा । तह आबो सागर भरि भेसा ॥ तासों कहे दल हवि नेसा । आदीपन जुनिकर सुन देहा ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सो सुनि सागर जोरि कर बोख्यो सुमऊ दृषाए । पञ्चवन्द्य नामक असुर है जयरूप विसाए ॥
आदीपन को तनय को पकरि गयो सो खार्य । निज गुरको घर तनय को खेऊ नाहि रहि जाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि रामदल रिसि लीन्हे । शीघ्र जाइ ताकर बध कीन्हे ॥ पांचजन्य शुचि ब्रह्म सोहायो ॥
हो ता तनमै जा गुण गायो ॥ लीन्हे ब्रह्मनसो सुन देखे । तब यमपुर मे रिसिसों भेखे ॥ जैनहि जोति
गुरको सुत लैके । आइ भूमिपै नरको दैके ॥ मथुरा आइ मोदसों पागे । यदुबंसिन सह बिहरण
लागे ॥ जरासंधनृपकी दुइ दुहिता । कंस भूपकी हीं तिय सुहिता ॥ ते वै जाइ पितासों रोइ । पति
वियोग अति दुखसों भोइ ॥ इइ सुमाइ दया ते सिगरी । सो सुनि कौ ताकी मति बिगरी ॥ कारुण्य
दन्त बक शिशुपाल । साक्षिति कालजमन महिपाल ॥ मिथकसुत सह अह भगदंतू । दुरजो
धनके शिक छितिकंतू ॥ भूरिअवा अयद्रथ बीरा । चित्रसेन अह सख्य सुधीरा ॥ अंगबंग
कलिंग देशपति । काशककाशको पति बरमति ॥ माद्रिदेशपति आदिक जितने । रहे भूमि
भूपति तितने ॥ लै संग चढौ कोप करि भारी । जरासंध चितियनि धनुधारो ॥ मथुरहि घेरि लिहसि
अऊ दिगिसों । बरवानैत भरो अति रिसिसों ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासुं चमू लखि मंत्र करि राम दृष्ट सहधाव । यदुबंसिनको संगलै कीन्हे ब्यूह बनाव ॥
कहे बिहसि बलि रामसों विशद बीर बलबोर । दरम धुरंधर धराधुराहरण धनुर्धर धीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

लखऊ कालवस नै चडि आयो । जरासंध रिसिअसें छायो ॥ भूमिपाल सिगरे संग लैके ।
निज भुजबलसों तिनहै अमैके ॥ हंस राज सम राजत जेहे । शुचि सिंग अह नृपनके ते हे ॥ ५ सब
अतिथ सु प्रथम समरके । बलिपशुसे संगर मख बरके ॥ अब इनसों करि संगर भाई । हरे भूमिको
भार भलाई ॥ बेहि निशि जरासंध भुकी सेना । करि नेवास जाहिर जगजेना ॥ भए प्रात नृपण
हैं जेते । जरासंधके ढिग मे तेते ॥ जरासंधमतिअध नरेशा । दयो तिनहै अति उय निदेशा ॥ सुम
सब निज निज सेना लैके । लगऊ मोनिद्रिअि गन निरभैके ॥ रामकृष्ण बधि जाहिर म जांलां ।
सरोऊ सरोष भूप सब तौलां ॥ इनि निदेश दै बररिसि पाग्यो । आपु जाइ दक्षिण दिशि
लाग्यो ॥ लै शिशुपालहि संग सोहायो । अति अमोघ अमरष सो कायो ॥ चारि अूथ करि पर लै

कदिकै । सरण लगे जदु बंगी बढिकै ॥ रघुबडि रामकृष्ण धनुषधारी । लाने करण सुद बलभारी ॥
 तोलण बाणनि मारण लाने । पर दल ब्यूह विदारण लाने ॥ अति सबेस चउ दिशि रघु फेरै ।
 परबल भटके तनगर नेरै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इतने मै तहँ सर्गित आए आयुधवेद । हल मूरुल अरु धनु मदा दिव्य प्रभाव ज्ञेद ॥
 सो मन्दक नामक मुगल सर्वतक हल चार । तिनहै धारि शोभित भए श्रीवलिराम उदार ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शार्ङ्गधनु अरु मदा धरि कौभोदको घह नामा भए शोभित समरने श्रीकृष्ण प्रभु अभिराम ॥
 करवि हलसों आनि ढिग बरभटनको बलिराम । मारि मूरुलसों लाने सबेर करण
 ललाम ॥ विकल न्है नर नहि सब तब भागि जाइ अचैन । जरासंध मरेन्द्रके ढिग कहे
 आरत बैन ॥ तिनहै लखि करि क्रोध अति नृप जरासंध सुबीर । सरयो धिक धिक कहन
 तिनको धनुषधर रणधीर ॥ विद्रित हयो धनुष धारे जीवको करि लोभ । भागि आए
 समरसों सो किए काज अशोभ ॥ प्रबल अरिसों सरजु अब कौ शीर धरि उत जाय ।
 कौ सुचित मन जुद्ध दे लौ बैठि पीछे आय ॥ बचन सुनि न्है भूप सिंगरे राज्यमान सचेत ।
 जाय निज निज थरण लागे सरण जय जय हेत ॥ विविध विधिके सब लागे चलन
 दुअदिशि भूरि । धनुषके टंकार रबसों रछो दिशिदश पूरि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मरुडध्वज सुरधस्य श्रीकृष्णचन्द्र बरबीर । जरासंधके तन हने आठबाण रणधीर ॥
 बेधे ताके सारविहि सारि बाण बर पांच । तर तरुणके बध करे मारि विग्रह नाराच ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जरासंधको विकल निरेखी । चित्रसेन नृप अतिसै मेखी ॥ आर सामु हे प्रभुहि प्रभारी । हांउसि
 बाण चपलारघधारी ॥ केशिक सेनानी रिसि धारेसि । तीनि बाण बलिरामहि मारेसि ॥ तब
 बलदेव क्रोध करि डांटे । तासु धनुष बर सरसो काटे ॥ तब नृप चित्रसेन बलदेवसि नव सुधारण
 मारे शुभ भे पहि ॥ पांच बाण कौशिक रिसि भरिकै ॥ मारे कौपि सुतिन अनुप्रविकै ॥ जरासंध
 घर सात बिसाले । मारेसि कौपि नैन करि खाले ॥ तब हरि अर मोरुण कवि वारे । तीनि तीनि
 तीनोंको मारे ॥ पांच पांच नाराच सुधाक । मारे तिनको शर बदरक ॥ नृप जो चित्रसेन हो
 बना । काटे ताके रबकी तागा ॥ अर श्रीराम उदित मुगल उमकाके तासु कठिन कोरडा ॥ विरघ
 विधनु न्है विकट मदासै । चित्रसेन नृप महत मदासै ॥ रबसों खतरि क्रोधसों ब्रायो । संकरषणके

नमुख धायो ॥ चिन्तयेन्की नाश विचारो । लाए बरधनुसा हलधारी ॥ सो लखि जरासंध नृप-
॥ह । सरसी दबो कोठि सर ताह ॥ जरासंध धनुधर धनु भेदी । संकरषणको बरधनुषेदी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सत्वरं निज रथसों उतरि गरजि नदासों मारि । रथ बाहक हथ रामके दीन्हें महिषें डारि ॥
उह जुद्धको बाह करि नै सकुह बखिरान । सजय युद्ध लागे करण नदा युद्ध अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

संकरषण मनघेश सोहाए । दोज नदा जुद्ध बिदबाए ॥ कर लैगदा प्रचारि प्रचारी । किए युद्ध
अतुलित बलधारी ॥ भांति भांतिके बातनि मारैं । नरुबे नदा नदासों टारैं ॥ लागे नदा नेकु नहि
मानै । नहि अकिरोष मारि मुद आनै ॥ ठौर ठौर एहि विधि चउ बौरा । महत युद्ध नाच्यो अति
घोरा ॥ एहि सकुनहि को बंध धनुधारी । इते न मान भविष्य विचारो ॥ दिवस सताइस खों एहि
विधिको । भयो युद्ध अति सुभट समृधिको ॥ हलधर जरासंध रणधोरा । लरि नै विरल विधनु
बर धोरा ॥ बाह नदा कर नै लै लै कै । सरै नदा अगनै लै दे कै ॥ नदायुद्धमै तेहि दृढ देखी ।
श्रीसंकरषण अति लैनेसी ॥ जरासंधको बध अनुमानो । लोन्हें मन्दक मुगल सुझानो ॥ मुगल अमोघ
अमोघ प्रभायो ॥ जब हलधर भरि व्याम उठावा ॥ तब भद्र नभवाणी गंभीरा । समज जोध हलधर
रणधोरा ॥ बंध न तुमसों यह मनघेश । ताते हना धरुहं शुभ भेसा ॥ याको बधन हार जय चाही ।
हे जगप्रभट बधिहि सौ याही ॥ सुखदानी यह बानी सुनिकै । अभय भए हलधर हिय नुनिकै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जोध दोध क्रि म हि करे मुगल प्रहार सुभाय । जरासंध सोज भयो सुनि बिसमित तजि पाव ॥
इतनेसो संघ्यः किरि सि दाम हाय लै सैन । गलधनि करिकै करे पुर प्रवेश सहि धैन ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

भए प्रात मनघेश नरोपा । नृपन सहित ही दिनको दीपा ॥ मन धरि मनघ गयो मननेलो ।
इत बरवधै प्रभुसों लोसो ॥ पारि सुनि निज दुहितन कोवानो । रिशि करि चढो मनघ पति
नानी ॥ ताही विधि किरि भई सराह । पृथक पृथक सो बरणि न आई ॥ किरि हलधर नहि मुगल
सुधारे । किरि मनघाही सुनि न प्रहारे ॥ सहि प्रभात किरि नृप मनघेश । बिसमित अमित
गयो निज देवा । कसौ कसौ कंध को रहिचै । समझ बाए हरि इनि सहिचै ॥ बोर सोहिणी
दलको लानी । जरासंध नरपति अय कानी ॥ चढि अद्यह बार अघाना । नपुराकै किरि
किहसि पंथाना ॥ सो सुनि रामके बलधारी । बलधनि सह सहि सुधारी ॥ लागे करण
मंथ मनघाए । तहें इनि बचन बिकहु सुनाए ॥ सूर्यवंश दसाकु नरेया । इतासुत हजंभ सुभेश ॥

मधुदत्तको तनया चाह । हे ते ताके प्रिय भरताह ॥ हे हरिअंशकेर नृपधामा । अभिवेकित
नरपति माहनाता ॥ सो हरिअंशहि दया जिकारी । सो तजि अबध भए बनचारी ॥ नृप हरिअंश
विपिनमें बसिके । अनिदुख लहे शोचने गसिके ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तह एकदिन नृपसो कहो इनि मधुमतो सुनीरि । कुन्त राज्यको मोह अब तजऊ बीरता धीरि ॥
तजि जैसे मधुवन बसौ मन पितु मधुके गेह । बिनादित करि हे तुम्हे सादर सहित समेह ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुनि नृपहरिअंश सुखारी । मधुवन नए सहित प्रियनारी ॥ मधुसहि निकठ भूप जाना
तहि । सादर मिलि वूजे कुशलातहि ॥ सुनि विरतांत कहे इनि मानद । तब ऊँशोच हव धारऊ
आनद ॥ मधुवन विना राज्य मन जेतो । लोऊ समेऊ देउ मै तेतो ॥ मधुवनने मन क्षण कुनारा ।
बसि निनि करिहि सहाय तुम्हारा ॥ दक्षिण समुद्र कूलसो धरणी । होइहि नृप तुव सुवस
सुवरणी ॥ इनि कहि नृप राज्यवर दैके । मधुदानव द्विय आनद लैके । जाइ लखण निधि तट शुचि
जानी । तप साधन कौन्हे हित जानी ॥ पाइ राज्य हरिअंश सुखारी । पिब्यन प्रजा मधुचारी ॥
पुर आनत सुमान बसाए । दूर्गम दीरघ दूर्ग बनाए ॥ मधुजा जो मधुमतो सुनीरि । तासिं भयो
पुत्र यदुनामा ॥ सम्यकर दश सहस्र सुनामी । बिहरि भूमिमें नृप मधुपानी ॥ तम तजि जाय स्वर्ग
बसि भाए । इत यदु लहि अभिवेक सोहाए ॥ नीति निपुण यदु करि भई पालन । अति
शोभितभे खलकुल घालन ॥ हित वर्धन अरिमर्दन बोर । धरम धुरधर धने धर धीरा ॥ एक
दिवसप्रिय तिखन समेता । जाइ समुद्र तट क्रिपा निकेता ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लाने जलक्रीडा करण भरण मोद सुनु तात । सहित मत्स्य मत्स्यपति सम शोभित शुचिजात ॥
सर्वराज तह जदुनपति गहि लैये मिज धाम । जाइ नृपति अहिपुर लहे सुपनासे अभिराम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बाह भूमिमें वारिजासन बने हो अतिवेक । नृपकी वेदाइ लोके सर्वराज सुभीत गफे
इनि भूपालसो सब भातिसो हित जानि । कन्यका हे पति धारी सर्वसुख लोखानी ॥
पितृव्य अह तव पिताजे युवनाथ अह हरिअंश । तासु भूमिती को सुनाए सिसे गुण
सुवच ॥ पाषिचहण सरोति इनसो प्रीतिसी करि भय । जाऊ ली निज सदन सुवदन
सदसु कदम सरूप ॥ सुवन नरे हे पाषु इनसो परन । परन परन । सर्वपुत्र संपन्न भूमिप
समरजेता सूर ॥ जग नृहत छे हे विशद यदुवच इनसो ल्यात । देव असेज नृपति इनसो

प्रगट्ठै हैं तात ॥ भौम अंधक, कुकुर भोज दशाह वृष्ण उदार, । पुरुषवर परसिद्ध है
हैं वंश नृपण हार ॥ वंशवर्धन पारं यह वरदान, वरनृष जानि । नातको वृ विष्णु की नृ
नृपति सुदु सुखदानि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पाणि कण्ठ सरोति करि मांघो तियम समेत । कंठे उदधिके बाहिरे सबकों आनद देत ॥
नाम नरखकी कन्यकन नृपति भिलाय कराथ । पुर प्रवेश कीन्हे समुद्र समुद्रकूल तजि जाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कहु तिमनै अहिपतिकी तबथा । पांचौ लही पांच सुत समथा ॥ पद्म बर्ष मुचकुन्द मरेशहि ।
माधव सारस हरित शुभे सहि ॥ ते सब क्रान्तों बरधित अहेकै । कहै पितासों मुदसों अहेकै ॥ नात
हमै जो आशा देखे । सो भतिसि हम सब करहि सनेह ॥ सो सुनि रमि बोलै यदुराजा । प्रिय
सुत मुमं मुचकुन्द सुभाजा ॥ विंध्यरिच गिरिको मधि देखा । तँह पुर रचि बिलसैं शुभ भेखा ॥
सह्य शैलपै जगके काजै । पद्मवर्ण पुर रचि बसि राजै ॥ पश्चिम दिशि तेहि गिरिपै नीकी । सारस
रचे पुरो प्रियजीकी ॥ धूम बर्ष अहि पतिको दीपा । पालन करहि हरित कुलदीपा ॥ जेठे सुत
माधव शुभ साजा । सम पुर पालहि अहे जुवराजा ॥ पितु निदेश अभिवेक समेता । लहि लहि ते बल
बुद्धि निकोता ॥ जथा निदेश देश बसि राजै । राज राजसी सुषमा साजे ॥ यदुनृष राज्य माधवहि
देक । हर सुगनिज कृत फल लैके ॥ माधव नृपके सुत गुण गाए । भए सत्व बरसत्व सोहाए ॥
सुवन सत्वके भीम कहाए । भूपति भूमि भावतिहि भाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भीमहि नहि शीघ्रतसमै दाशरथी श्रीराम । को निदेश सनुम लहि इति लवणहि अभिराम ।
मधुवन छेदक करि निरचि सधुरापरी सप्रेम । सुतहि राज्यदै रामपद सेवन करे सप्रेम ॥

॥ * ॥ मधुभारकन्द ॥ * ॥

जब राम चन्द्र उदार । कुश लवहि दे सहिभार ॥ वर सरगहारि प्रविश्य । प्रभु भै
सुत सुभाजा ॥ हर भीम नृप निज जानि । बसि खर मधुरा जानि ॥ तँह लहे सुत नृप
भीम । सो नाम अथक भीम ॥ * * * * *

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अथकके सुत रेवत भया । ताके सुवन छेदक अनुरूपा ॥ दैवत नाम चरुकी दूजा । विश्वगभ
ताम्रत कृत पूजा ॥ विश्वगभको भीम सुभापी । रही प्रियपतिहि परम पियारी ॥ लही चारि
सुत ते कलजाची । बसु अरु बधु सुख सबारी ॥ यह यदुपय बरके करता । असेनदाहिके ह मुद

भरता ॥ बसुके सुत बसुदेव सुखारो भाग्यमान जे जनक तुम्हारे ॥ यह सुबंश उतपति निमि भाख
जिनि द्रैपायनसो सुनिराखे ॥ होख बंश सदैव अदुषित ॥ तुमहि पाइ भो अतिसै भूषित ॥ सुनऊ
दृष्ट्य यदुबंशज जेते ॥ हेतव सुबस मुद्र सब तेने ॥ यह नृप जरासन्ध बलवाना श्रीस होहिहीपति
जग जाना ॥ अदुबंशी धारे गिनतीके ॥ सरे बज्रत दिन सूर सुजीके ॥ अब अति खिन्न भए
सबसोगू ॥ एक बार नहि सारिबेजानू ॥ नहि संधक नहि सहर पनाइ ॥ अउ नउ नउ बिरथो
नहि काइ ॥ ताते सरे न अब बरि आइव ॥ इंधन अन्न बिना दुख पाइव ॥ हे सिनरे पुर जन भय
भारे ॥ अवरोधनते भए दुखारे ॥ ताते मन सुमंच यह सुनिकै ॥ उचित होइ सो करिचै गुणिकै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि बिकटके बचन इनि हरषि कहे बसुदेव ॥ उचित मंच यह तुम कहे राजनीतिके भेद ॥
सो सुनि बोले दृष्ट्यप्रभु तुम भाषे सत मंच ॥ याको कहैं उपाय हो सो नै सुनऊ सतंच ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

हे विरोध या नृपसो हमसो ॥ यासो ककु न बैर तुम सबसो ॥ ताते ककुचण यासो सारिकै ॥
हम बलिराम मोद हिय धरिकै ॥ कडि जेहे दक्षिण दिशि दुरी ॥ तब यह मनसै नंद भरिभूरी ॥
इतकाइके निकट न आइहि ॥ अत हम जाव तहां खलि जाइहि ॥ तुम सब रडेऊ सुचित सुखपाई ॥
हम यासो उत लेव बनार्द ॥ इतनेमै नृप पुरदिग आयो ॥ अति गहवर दुन्दुभि बज्रबाधो ॥ सुनि
पुरते कडि दोऊ भार्द ॥ राम दृष्ट्य जगके सुखदाई ॥ ककु दिन तासो सारि नख अगरे ॥ हरकाले
दक्षिण दिशि डगरे ॥ शैल अनेकनि सैरि सुखारे ॥ गण सहा गिरिपै मुद धारे ॥ पद्मवर्ण नृप जहां
सोहावन ॥ पर करबीर रचेहे पावन ॥ बैणु सरित तठ तह बठ तह तर ॥ बेटे हे नृगुपति मुनि तप
वर ॥ तेज पुंज सुधमासो छाए ॥ परशुकाधपे धरे सोहाए ॥ राम दृष्ट्य भृगुरामहि खलि कै ॥
जाइ निकट हिय आमद रखिकै ॥ करि प्रणाम ठिग बैठि सुझानी ॥ बोले दृष्ट्य मनाहर बानी ॥
प्रथम तासु गुण कीर्तन कीन्हे ॥ फिरि निज कथा कहे मुंद लीन्हे ॥ उमर द्विधि यमुनाके तीरा ॥
नबुरा नामा पुरी गंभीरा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यदुबंशज तह विदित है श्रीबसुदेव उदारा ॥ एसकरपण हास हम निनके सुपुत्र कुमार ॥
कारण यह नृपकसयो हमसो बडो विरोध ॥ ताते हम बंधकसिको करि कोहे निज बोध ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जरासंधको सो जानाला ॥ सो ताते सो सुनि विचाराता ॥ सपटी कस नृपके जनक हि ॥ दयो
राज्य हो सुभद बचन कहि ॥ जरासंध बर प्रस दस साजी ॥ आइ ससो बज्रवार सकाजी ॥ सैन

साजि बऊरो चडि आये। अति प्रमत्त मन तासों हाये ॥ तेहिते पुरजम अति दुखपाए। तब हम
पुर तजि इत चलि आए ॥ अब भृगुपति तुम मंत्र विचारि। कहौ करै हम सो व्रतधारि ॥ मो सुनि
परशुराम हँसि बोले। परम प्रेमकी पद बो लोले ॥ तुम जो हौ जो कीन्हे कारज। जिहि हित
जो अब करिहौ आरज ॥ सो हम भखी भाँतिसों जानै। भूत भविष्य सब अनुमानै ॥ तुम सर्वद
सरबज्ञ सघाने। बूजऊ हमसों मनऊ अघाने ॥ सो कहिवेकी आज्ञा जानी। हम अब कहैउ
वित अनुमानो ॥ यह करबीर नाम पुर चारू। निरम्यो यदुको सुवन उदारू ॥ ताको वंशज-सों
लरि जैलै। नृप शृगाल बिलंसत निज कैलै ॥ सो अति क्रूरसुभाव कुचाली। तातें तुम यह पुर तजि
हाली ॥ वेणुनाम जे नदी अगारे। तेहि तरि जाऊ पार मुदभारे ॥ चारू यज्ञ गिरि हँ एक आगे।
तापै बसि एक निधि अनुरागे ॥ ताडिग नदखयोग महाना। उठि प्रातहि तेहि तरेऊ सुजाना ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कनक कसनके उपलसों भूषित ताके कूल। तेहि लखि फिरि आगे चलेऊ मुदमंगलके मूल ॥
यदुसुत सारसको रचो तहां कौंच पुर चारू। नृपति महाकपि है तहां ताके वंश उदारू ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहँ बसि वृषसों मिलि मुददाता। गिरि गंगमंत लखेऊ चलि ताता ॥ अति उन्नत मभयत एक
सानू। है तेहि गिरिको मंजु महानू ॥ तहँ बसि तेहि महिभासों भेखेऊ। जहँलों रविगुति तहँ
लों देखेऊ ॥ जरासंध नृप जबते आई। तब तासों तुम किहेऊ लराइ ॥ है यह कामद गज हमारी।
करऊ तासु पंथपान सुखारी ॥ पंथपो चलऊ शोष मुदप्यारे। हमहँ चलिहँ साथ तुम्हारे ॥ पथ
करि पान धले दोउ भारे। परशुराम मुनिसंग सहारै ॥ चलि कहुदिमनै ते सुखदारै। गिरिगंगमंत
लखे डिन जारै ॥ अति रमणीय मनोहर नोको। अतिउन्नत आनददा जोको ॥ चडि तापै ते द्रवि
कबिसाजे। मनुष्य विद्वज विदिवै सजे ॥ बोले तहँ भृगुपति गुरज्ञानी। सुनऊ कृष्ण सादर मम
बानी ॥ इत बसिके कहु दिवस बितावो। गिरि सोभा लखि आनद पावो ॥ इत अहँ सब शस्य निहारे।
उग्र अमोक्ष प्रभावनि भारे ॥ जरासंध नृपसों जय जेहौ। यदुवंशिनको आनद देहौ ॥ इमि कहि
बऊ विधि आसिष दैकै। भृगुपति गए लखल मुद लैकै ॥ राम कृष्ण प्रभु आनद पागे। सुन्दर
वनगिरि बिहरण लागे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कलबंद विनु एकदिन वनबिहरत बलिराज। पुंसुपित चारू कदंबतर बैठे अभिराम ॥
तहां मयको ग। लहि पीवेकों लखचाय। उठि कदंब कोठर लखो मंत्र उदा कहि जाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तेहि कोठर में मदिरानीकी । भरी लखे सुखदादि जीकी ॥ बरषामें जल तेहि तर मांही ।
परि धिरिरहे सुकोठर मांही ॥ सोई होइ मदिरा अभिरामा । उनमादक कांदबरि नामा ॥
सोले करे पान हलधारी । मदिरा मधुकी अलिबब चारी ॥ लणमें ताके रसदंग राते । भे उनमत्त
मत्तमदमाते ॥ मूर्त्तिमान इतनेमें आई । बरुण कुमारि बारंशी गइ ॥ सो तहँ आरि पाणि है ठाठी ।
करि बज्र बिने प्रीति रहि बाठी ॥ श्रीवलिराम बीरके तनमें । भई लीन आमद रहि मनमें ॥
तदनु आइ तहँ कांति सोहार्ई । मूर्त्तिमान सुपमासों छार्ई ॥ हलधरसों संभाषण करिकै । सोऊ
भई लीन मुद भरिकै ॥ तदन्तर तहँ श्रीसुखदाता । आई प्रभ पुञ्जमय गाता ॥ नणिनेमाल बिचित्र
सुहावन । हलधर कहँ पहिराय सचावन ॥ जोति जालको चार निकेता । कुण्डल चरु किरोट
सु सुहेता ॥ नील बसन अरु हार अनूपा । अमल अलौकिक अरु अतु रूपा ॥ सो सरूपके ए तव
भाषण । कहि धारण करबाइ अदूषण ॥ शंकरषणके तनमें लीना । भई तेज बर्धन परबीना ॥ * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मोयल तजि बलिराम प्रभु कलखंदपै आय । बैठि लगे बतलान तिनि जिनि गृहमें सुखदाय ॥
वैखल चारु किरोटलै तेहि लणतहँ खगराज । आइ कलके शीसपै तकि तजि करे लकाज ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुके मौलि यथोचित चारु । सोभिज भयो मुकुट हियहारु ॥ सो बिरतांत जानि खलगंजन
कहे बंधुसो मुनि मनरञ्जन ॥ क्षीरधिमैं हम शयन सोहायो । करतहहे तहँ बलि अलि आयो ॥ बनि
सुरपतिसम मम दिन जाई हरि किरोट लै गयो दुरार्ई ॥ कछु दिनमें सो समुजि खनेषा । तासों जाइ
लरे शुभ भेषा ॥ अब तासों जय लहि यह लीन्हे । सादर आइ छमैं इत दीन्हे ॥ अबतजि शोच
नाद हिय आनौ । यह सुभकर्म अयद अनुमानौ ॥ इतनेमें वा नृपकी सेना । देखि बरी दारुणि
दुखदेना ॥ तेहि लखि कल कहे कित लेखौ । जरासंधकी सेनादेखौ ॥ चतुरंगी यह सेना भारी ।
धूरि धार सह परथि निहारी ॥ जखद जखदगनु संग करि भावैं । अतिरब अमसों उखडे आवैं ॥
जरासंधके भयसों पागे । सबनृपगण थाके सगँ लागे ॥ भये कालबध आए कोही । ठग संग मंचित
जया बटोही ॥ इतनेमें भूपति मग धेया । घेरसि जाई शैल खडदेश ॥ तेहि निधि तहँ निवास
करिराजा । भोरहि बैठे सहित समाजा ॥ सबभूषणकहँ पास बोलाइ । दिव्योनिदेशरोशसों छार्ई ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

घनकूद दारिगतो कविन शिला समूह बिदारि । समकरि गिह्रि सहसैम घटि लेहतिहै रहिमारि ॥
जेदुर्गम दुरगम्य नृप शस्त्रकुशल रणधीर । हरपूरवलके लरैं ते आगे रहि वीर ॥

लागे करन विनय गुणगाय ॥ केशव तुम करुणाके अैन । शील सिंधु बकता प्रिय बैन ॥
 ह्वन तव पितु भगिनीके बार । ताते तुम मनबंधु उदार ॥ जरासंधके भयसें नाव । रहत
 रहे हम वाके साथ ॥ कहत रहे बहु भांति बूजाय । नहि वह मानतहो इठकाय ॥
 भल तुम्हार मनबचकम काय । चाहत हैं हम देव मनाय ॥ सो अब मोपर जो षधि
 भूरि । हो हियधरे करऊ सो दूरि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब हम तुव अमु गमन निति करि हैं रहि आधीन । सय अय करतय जो सो सुनि करऊप्रवीन ॥
 पद्म वर्ण यदु सुवनको विरच्यो पुर करबीर । तिहि भुज बलसें निज करे हैं शृगाल नृपधीर ॥
 पुरुषसिंह यदुंश तुम मन दल सह चलि घेरि । मारि शृंग लहि सो नगर जोतिलेहु कसिफेरि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि सबंधु प्रभु मोदिसह सेना शिशु पाल सह । तेहि पुरके चहुँ कोद घेरि लए दिनतोनिचलि ॥
 खलिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्वाज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासि
 गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे गोसंतगिरि
 दहनो जरासिंधुपराजयेनाम षोडशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुरु धित लखिके कढे नृपशृगाल सहसैन । धनु टंकार करत कहत गवीं बर्बित बैन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शुचि हरितश्च सुरथपे चढिकै । आयो हरिके सममुख बढिकै ॥ हरि हलधरहि प्रचारणलांग्यो ।
 बरवाणनसें मारन लाग्यो ॥ सख सदन सु शयलसम भारी । बरयो एक बोर धनुधारी ॥ हो शृंगर
 जुधि जययम लोन्हे । गहि प्रभु चक्र तासु बध कोन्हे ॥ नृपति शृगालकेर बध देखि । भाग सैनिक
 भटभय भेलि ॥ पति बध सुनि भूपतिकी नारो । उर शिर ताडन करति दुखारी ॥ पति ढिग जाइ पीन
 दुख पागी ॥ हदन प्रलाप करन सब लागी ॥ पद्मावती नाम पठ रामी । धरि धीरज हैं सुनिहि सयानी ॥
 रुदन करति प्रभुके ढिग जाई । लगे कहन करि विनै बडाई ॥ जा नृपको बध प्रभु तुम कोन्हे । यह
 ताकोवास्तकभय लोन्हे ॥ पाषि बाधि तुव पगढिग जाई । ढाढो भयो लखऊ यदुराई ॥ जो करि हपा
 देह अनुशासन । सो यह करै सुनऊ भय नाशन ॥ सो सुनि कृपासिंधु यदुनदम । दए ताहि धीरज
 जग बंदन ॥ ताके भंची सखा पुरोधा । तिन्ही बोखाइ हल करि बोधा ॥ नृपसुतकों अभिषेकित
 करिके । लै हरिताश्च सुरथ मुद धरिके ॥ निज पुर चले किर्त्ति लहि बरणी । शक्रदेव कीन्ही
 पितु करणी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पांशु रजनि मन्त्रे विहरि रामकृष्ण शुभ भेष । छँडए दिन विगुणस सह मधुराक्षिण प्रवेश ॥
बन्दि घरस बसुदेवके जननके सह प्रीति । नर लखु सभसों फिरि मिले बचाउकिस सह प्रीति ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

तहँ फिरि राम कृष्ण अनुरागे । यदुंबशिन सह विहरम लागे ॥ एकसने बलिराम सुखारे ।
कृष्णबिना गे ब्रज मुद धारे ॥ नन्दादिक गोपनपै जाई । सादर मिले प्रेम दरभारै ॥ सबसों मिले
मिलतहँ जैसे । सानद संदज सुभावनतैसे ॥ कुमल बूजि कहि आनद पाए । हरि बिचोकको
दुखंतिन पाए ॥ कहे गोष अति आनद लीन्हे । तुम दोउ बंधु इत्ता जो कीन्हे ॥ अथप्रभृत जै अशकी
कारज । सो इन सुगत रहे हे आरज ॥ तुमहँ देखि अब अति सुख पाए । कहै कहाले हे मन
भाए ॥ सो सुनि कहे राम नुर श्रानो । जनम भूमि वह मन सुखदानी ॥ तुव घर हम सुख पाए
जेतो । साहिदि न कीउ निजघरमें तेतो ॥ दधि पय माखन बज्रविधि साए । संग सखनके गाय
धराए ॥ इनि गोपनसों बति करिके । लै संग सखन रामे मुदभरिके ॥ बर दन्टावन देखन लागे ।
फूलनसों अंगभेषन लागे ॥ तहँ प्रिय सखा बारणी स्याए । सो करि पान सरस छवि छाए ॥
सखन संग किछिअशकी उमरे । अति उममन भए नुए अगरे ॥ सखि काखिदिहि न्हाइ बोवाही ।
कहे काखिदिहि सो हल बाही ॥ मन असमान हेत इनि आबो । सुनि मो बचन बिलम्बन साबो ॥
यव देखे यमुना नहि आई । तब हलाय ता तडनै आई ॥ निज दिन करवि विशद जल धारा ।
कीन्हे मंजन बीज अपारा ॥ तब छै मूर्तिमन्त सुखदाई । यमुना कहन लगी टिग आई ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हलधर तुम हठ कहि करे मन धारा अवरोध । केहि मन छै हम जाहि अब सो कहि कीजै बोध ॥
सो सुनिके हलधर कहे साहि अति आनद साऊजल प्रवाहसों तोरि नहि याही मनसों जाऊ ॥
यमुनाको भेदन गिरसि मोरित गोपसुजाग । हलधर तिनसों छै बिदा मधुरा नए अंगाम ॥
हलधरको आबन गिरसि उठि निखि हरि सुखदान । कुमल प्रअ ब्रजजनकी पूजि सुने मतिमान ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

एक समे प्रभु मोहित मनमें । हे बैठे सुधि संभा सदगमें ॥ तहँ बलाक धारण बलि आयो ।
करि प्रहाम करजाहे सोहायो ॥ दीहित अति प्रिय खवरि सबावन । लख्यो कहन सो सुबुधि
सुधावन ॥ नाथ हलधर वृष कुखिनपुर की । सुवन भूय नीलाक बख पुरकी ॥ भक्ति भाकी
बकुमिनि नामा । परना पूर सर्व बुध नामा । गिरासु खबर रधि शुभ साजा । किह एकव देखके

राजा ॥ तिसरे दिवस आजुके गानी । होई तासु खंभर खानी ॥ यह सुनिके हीं सादर आये ।
 प्रभु कहै सब निरतान्त सुनाये ॥ सुनि प्रभु उद्यसेन बलिरामहिंपुर पवन दिन तधि बलवानहि ।
 साजि सैन चतुर्दिशि भारी । कुण्डिनपुरप्रति बले सुखारी ॥ सिधरे बटुवंगी धनु धारी ।
 संग तहं गए सुखारी ॥ संध्या सने सैन सह जादोपऊंचे कुण्डिन पुर सुखदाई ॥ निज प्रभाव तह प्रकट
 न कारजा नरडहि सुभिरे कोशव आरजा ॥ सुनिर तहीं नागान्तक आए । पत्तज भारतसौ दिशि आए ॥
 गिरे बास गृह पटापटिके । जुरे रहे जे भूपति तिनके ॥ लखि नरडहि प्रभु आनदखीन्हे ।
 प्रेन पूरि अनुशासन दीन्हे ॥ मन ठिग रहि अब आनद धरइ । लखिनिपनकहै भयसो भरइ ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इति कहि सैनासहित ने कैशिक नृपके गेह । ते प्रभुको आगमन सुनि बलि ले गए सनेह ॥
 जामि विविध मन्दिर विषद जाको बर बिसतार । तामै प्रभुहि नेवासु दै किए उचित सहार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभु आनमन नरड सह सुनिके । नृप समूह सब मनमें गुणिके ॥ भीष्मक वृपके सभा
 सदनमें । जुरे जाद सब विन्तत मनमें ॥ लागे करण मंत्र शुभ भेषा । दीप्यो तहै भूपति भगभेषा ॥
 दृष्टा प्रभाव खोज सुनि नेसे ॥ कहेउ करेउ फिरि भादहि सोसों ॥ इति कहि कल आनद बतारत ।
 कहि सबकीर्त्त कीर्त्ति बेवहारा ॥ इन्द्रावनमें जो जो कीन्हे । कपसों सो सब कहि सुद
 खीन्हे ॥ नपुरामें जिनि नैगल मारे । मंलमन नपको सघारे ॥ सबहवार आयु करि हारो ।
 कनसों सोसब कहेसि सुखारो ॥ फिरि गोमन भैल पर बारो । कहत भयो सब कप विषारी ॥
 नरडविना ए कीन्हे खेसो । नरड सहित धौ कारहै कौसो ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए अश्वक भवमान हैं खीखा बितरइ हार । अबकरि इनसों प्रीति दिठ तजऊ सुद बेवहार ॥
 जरासिंधुको बचन सुनि नृपति सुनीच सुजान । कहे कस्यो भगभेषको हैकरतय न खान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जधु भरइन्द्रा फिरि बतबक नहीपारम कहत भोकुखदीप ॥ ए दृष्टा आनद खीन । हे सदन
 शीख सबै ॥ इन वासपन है खादि । सहि आयु ए उमनादि ॥ बहि किए कबइहारि । यहि
 खोज बूझि विचारि ॥ जो भिरो गारक आय । इन किए ताहि सजाय ॥ ए बखत कलह बराव ।
 घरके कोतिके जाय ॥ बसि रहे हैं सहसेन । हे कलह आयक सैन ॥ इन कहें सो प्रभुनामि ।
 अब करऊ निज दिन जामि ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नृप संमत्त बचनस्यै प्रसिद्धौ सद्दित्तं वनेज्ज । पूजि प्रबोधितं वचनं कश्चि परमं विद्वान् कश्चिजेज्ज ॥
नृपकन्या अकच्छ वरिहिं सो तेहि सही सचन । नाहकहीं विग्रह किय सुयो मया कहु ऐन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

रत्नपद्मकी-सुनि शुभ-बानी। बोख्यो साख नृपति अभिनानी ॥ तुम सब वचन कहे जे जांचे ।
ते सुनि परि नहि मम मनराचे ॥ सबी धनुधर धीर कहार्द । एहि विधि तिनसो बैर बढार्द ॥
तजि तजि मत्त दीन न्हे जाई । आरत भाषे कहा बढार्द ॥ बिना काल कोउ सकैन मारो ।
प्रातकाल कोउ सकै नठारी ॥ काल अप्रात असुर बलभारे । तिन्हें न हठि प्रभु कबहुं नारे ॥
बिना काखबस बखिहि जिहारे । हलि पतास पठए नहि नारे ॥ ताते धीर रहीं सब कोई ।
जो सोनो होइहि सोइ होइ ॥ वचन हमार और यह सुबहुं । सो यह सांच हिएमै नुन हूँ ॥
ए महिभार हरब मुदभारे । क्षितिप संहारख हित तन धारे ॥ बैर करज्ज के प्रीति बडाधो ।
रखो दूरि कै विन रहि भावो ॥ समै पाय इनसों सबकेज्ज । कश्चिठो नाम खोज सुनि खोज ॥
ताते आनि तज्ज अति भार । बैर प्रीति निबहेहि भलाई ॥ नृपति साखको सुनि यह बानी ।
पुप न्हेरुहे भूप सब बानी ॥ आगत संध्या समै निहारी । निज निज डेरख ने धनुधारी ॥ भोइकृत्य
कहि मोहिम मनमै । जुरे आइ फिरि सभासंदममै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उत जिदमपुरमें सुखद देव दून एक आय । पातो कौशिकभूपकैं दीन्ही अति सुखदाय ॥
पामीं पठई इंदकी बच कौशिक नृप देखि । जाइ कृष्णसों जोरि कर लगे कहन मुद भेषि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जाय जाय तुम तिऊ पुरके हो । तुव इसा नाया तुमते हो ॥ सो प्रभु तुम मुद नरख हारे ।
अए कृपा करि अतिब हमारे ॥ ताते तुव सन कार सुभावन । करि इन भयो चहत है पावन ॥
यह मन राज्य समाज समाजा । सो करि यहयु होऊ महिराजा ॥ जे नृप तुहहिं बरामा
कहिसे । अनुचित वचन कहैरिहि बधिके ॥ तुव प्रभाव मन आसन मानी । इन न्हेरुहेरुव
अभिनानी ॥ मुक्ति अतिबेक मुमहिं सब करिहैं । आपुहि भव्य जानि मुद भरिहैं ॥ इति कश्चि
देख बंधुवर आपुं प्रांती कुंठिन जकर पठाए ॥ जे ही मानी लिखे सुनेसा । भूपति सुनऊ कश्चि
मनभेषा ॥ सुरपति हमें निरेख पठाए । सो हब तुम्हे लिखे नबभय ॥ कज्जकौशिक सुन आपसन
मानी । कृष्णहि बरबहु बरिहिलो ॥ रत्नमये विग्रहवन बाक । जे कृष्ण के जे परम
उदारु ॥ तापर कृष्णहि करि आसोना । अर्पऊ आपन राज्य अहोना ॥ कुंठिन पुरमें भूपति

भते । जुते ये सार लोड तह तेने ॥ तिन्हे सहित प्रनुसखं अभिमेका । कसक ये सहिपि सहित विवेका ॥
तुप शंकासु सुनि जे नहि बोधे । ते सकस्य कृष्णसो बोधे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गुरनिदेश सुरसाजको हस यह देत पडास । सो सुनि आवळ घीघरत तजि विरोध नहि जास ॥
पत्नी कैशिक भुवकी कुशिलपुरतै जाय । तृपसजाजमें देतभो भावन प्राति सुखदास ॥

॥ * ॥ दोपार ॥ * ॥

सचि पयसी बह नृपति यनामा । लाने करव संन अनुमाना ॥ इतनेमें तह सुरप यशयो ।
सुधि विषमं दूत सोहायो ॥ अन्तरिच रहि सो नुरशानी । सके कहन रहि विधिली वाणी ॥
तुम सज्जो मंडन निदेश ॥ हीने सो सुनि करळ नरेका ॥ कजि विशेष हरियें प्रवि आस ॥
कस्य जाई अभिमेक उवाह ॥ उनसों वैर किर भल जायो । अणे त्रिणु जातेऊं नगमां प्री ॥
अरास्य प्रक साकनहीया । नृपति सुवीच सकुन कुलकीचा ॥ इत अमुवाचितार नृप बासी ॥
रहीहीरीच विनुकरो ॥ जोर नृपति जे सहि सुरमाही । ते निहर्मपुर सख्य जाही ॥ अणुवि करि
अभिनेषिक बोधे ॥ विरि इत व्याह सखंधर देवे ॥ इति कहि विचान रहि उवाह ॥ अणुवि
मन सुख सुमेस ॥ विचानकी सुनि यह वाणी । भोषक दादि नृप चित्त जासी ॥ अणुवि
आहस कहिले । ते विमान लौ सब मुह भरिके ॥ दिच पताके सचि नुरागारे प्रदे विमान सुरत
विशदे ॥ शुभद इंडुभि सुर बजवावें । नद हुं दुभी रव दगदिमि हावें ॥ हे सुनि सुनि नुरागारे
सने । अणुवि भव भरपर जाने ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विषद सिंघासन शकको सुचि तायें आसीन । कसकौशिक क्षितिमालसों सेवित प्रभा यहीन ॥
दिवाप्रभव चर चगरस दिचगंध सन सख । सो सूचित सभुके विरवि अेरिच विषदे प्रह ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नयने अखर दिचय विघापर सु सुनिगदं जाय । पडे जाननि करै अचुति सरवि सरस
सपाय ॥ मुदित वन नमवान संनु विमान अदि हरि हाय विने अन्वर्षे कौ प्रहं सनी
सह सुखीच ॥ नुर अणुकी पर सपको भये अ अणुवाच ॥ अणु भूति निविच नुरागारे
ताकिर हासि नृपि अणुपौ नृपति कौशिको सखसे कजि सख्य नुरागारे प्रहं सनी
रव सीके सखीच जाते सुखे अणुकी विचो अणुकी विचो अणुकी विचो अणुकी विचो अणुकी विचो
विधि अनुसंधित भाव प्रकृति मृत प्रकृति अणुकी विचो अणुकी विचो अणुकी विचो अणुकी विचो
रहे दय दिशि पुरि ॥ नगर अरदिच तेहि सखें भो एक नगर सनाग । रन्ध परत उपेंद्र

सुरगर रथे निशि सुख दान ॥ स्वयं च अभिवेकित प्रभुहि दे अर्थ नृप समुदाय । जोरि
महाशय्य बैठत उचित आसन पाव ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नृपकौशिक तहें ज्ये सरे प्रभु सममुख कर जोरिसुविधि अरज करि नृपनकी माफ कराए खोरि ॥
नृप भीष्मक फिरि जोरि कर प्रभुसों बोले बैन । प्रभु प्रभाप खलि चिन्तनै चिन्तित भए अचैन ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

प्रभुमम आत्मज हकुम सुगामी । सो ज्ये बाल भाव अनुगामी ॥ चाहे कियो स्वयंवर सोई ।
निज भगिनीको निज बस होई ॥ सो प्रकार हमं नहि अनुगामी । कह्यो हमार नसो कहु नामी ॥
ताते कहैं दसको नार्द । सम तासु अपराध नोसार्द ॥ सो सुनि हंसि इनि कोशब बोले । कपट
भूपके मनकी खोले ॥ तुम सुत बाल भावनै जैसे । करै प्रौढह्यै करिकै कैसे ॥ तुम जो कह्यो स्वयंवर
काधो । और भूपकी कन्या दोवो ॥ हम नहि चहैं सुता बरिचार्द । करैं कछो सो शिशुकी नार्द ॥
इतने पति तिहारें आए । खलि आगे तुम तिनकहें स्थाए ॥ तिनहै देखि तुम खलि सै तोषे । करि
सतकार भांति बड पोषे ॥ मन आनमन तुम्यो नहि रोख्यो । सो प्रकार हम आपुहि शोख्यो ॥
मम सतकार न तुम कहु कौन्हे । ताते हम इत आसन लीन्हे ॥ बल विद्याम हेत खवलों इत ।
रहे न तह जाते निज पुरनित ॥ कन्या जेहि चांउह तिहि देह ॥ भय हमार मति हियमैं खोज ॥
कन्या बरत विभ्रं जो करई । रौरव नरक चौसि सो परई ॥ कृष्णचंदकी सुनि यह बागी । बोले
नृप भीष्मक भयनामी ॥ हे हम चर्न हृष्टि प्रभु तबलो । तुव दरजन नहि पाए अबलों ॥ अब ज्ये
दिख्य हंष्टि हम ताता । भए असत सत विधिके ज्ञाता ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शरणागत ज्ये अपुनकी नाथ हमै भय नाहि । अब चिन्तित निज चिन्तकी कहैं साध प्रभु पाहि ॥
विरधि स्वयंवर अब न हम कन्या देव विचारि । करउ कृपा प्रभु हीयते रोस दोजिख्ये डारि ॥

॥ * ॥ अयकरीछन्द ॥ * ॥

भीष्मक भूपतिके ए वैनासुनि बोले प्रभु करणा खैन ॥ सुता तुम्हारि खेउ करि नौर । देउ
न देउ कहैं को और ॥ पै हम कथा कहैं यह एक । सो तुम सति जानउ सविवेक ॥
लिए विसु नहिपि अचतार । कहै रमासों तम करतार ॥ तुम कृष्णन पुरनै खलि जाउ ।
खेउ भीष्म कहैं तनया साहु ॥ श्री हकुनिनि तप सुता खसाम । चाहि न जानेहु खोकिना
बाम ॥ हे नहि हह अरपतिके खोनाइते बुझियो जोष अजोग ॥ तुम अब रथे स्वयंवर तासु

तब सुरपतियों आशा आसु॥ लहि इत आये बखी सुपर्ण । विघ्न करणके हेत सुवर्ण॥ इमहं
 आए सहज सुभाव । उत सब देखनको गहि धाम॥ समी करण नुम कहै सुखीका । सो यह
 लगे हमें अति नीक ॥ बुधिवर कहैं समा गुण जोय । समा किए सिधि कारज होय ॥
 तुमसों प्रथम निरोदर पाय । हम इत बसे समा करि आय ॥ कथकौशिक मम करि सन
 माम । दए मोहि निजराज्य महान ॥ तेहि प्रभाक इनके दश पूर्व । पाए उततम लोक
 अपूब ॥ इमहि आदि द म्यारह और । लहिहै उतगलोक सुदौर ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ देखा ॥ * ॥

जे नृप मम अभिषेक यह आए लखन सचाय । तेज सुमन सुलोक शुचि लहि हैं समया पाय ॥
 इमि कहि प्रभु सब नृपनकहैं दोन्हे संहित विधानासन रतन हाटक अमल करि सबको सनमान ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

एहि विधि सबको मोदित करिके । सदल चले निजपुर मुद भरिके ॥ रथ ठिग आवत
 भीष्मक भूपहि । दरशाये प्रभु निज वररूपहि ॥ सो लखि भीष्मक आनन्द स्विके । अस्तुति
 कीन्हे गुरगुण कहिके ॥ प्रभुको अस्तुति करि मुद लीन्हे । अस्तुति विद्वराजकी कीन्हे ॥ जे
 प्रसन्न सुनि अस्तुति आमी । चले सुरथ चढि अन्तरजामो ॥ नृपसब परम प्रेमसों पागे । गए कोश
 भरि प्रभु संग लागे । तब प्रभु तिनसों कहि प्रिय बागी । विदा किए सबकहैं समझागी ॥ फिरि
 फिरि कथकौशिकसों मिलिके । विदा किए अति मुदसों रलिके ॥ इत विदर्भपुरमें सुर आई । ने
 सिहासन लै सुखदाद ॥ जे प्रभुसों नृप विदा सुखारी । ने कुण्डिनपुर विकसित भारी ॥ सभा
 सदकभै सभा सोहार्द । रधि बैठे तहैं सबकोउ आई ॥ जरासंध आदिक सब राजा । बैठे तहैं
 सबके काजा ॥ समाचार हो उतको जेतो । भीष्मक सबहि सुनाए तेतो ॥ समाचार कहि भीष्मक
 भूपा । कहे सपथिकरि बदन बिरूपा ॥ जनित स्वयंवर दोष विशाला । समेज भोर सिगरे महि
 पाला ॥ समाचार सब जानऊ भार्द । अब न स्वयंवर किए भलाई ॥ किए स्वयंवर विघ्न महाना ।
 होइहि जानऊ करि अनुमाना ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इमि कहि कै सब नृपनको कीन्हे विदा नरेण । नृप नृपति निज निज पुरम किए भस्मिग मन वेण ॥
 जरासंध नृप शाल्व नृप अब सुगीव चितिपाल । दन्तवक्र नरनाह अब महाकूर्म नरपाल ॥
 कथकौशिक भीष्मक अब बेनुदार नरनाह । कासवीरको भूप अब अरिद्रव सुहित पनाह ॥
 इतने भूपति तहैं रहै मन्ध करणके हेत । जनमेजय चितिमन्धमणि सुनिए बुद्धि निकेत ॥

खलिओकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिमानिना शोबन्दोजनकाशोवात्सि
गोकुलनाथाभजेन गोपीनाथनकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे इक्षुमिनी
खण्डवर कृष्णभिषेकोनाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ *~~~~~*

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चिन्तत भूपति भीष्मक ज्ञानी । बोले जरासंधसों बानी ॥ नीति निपुण है तुम सब राजा ।
तुम समत सहि हम यह काजा ॥ कीन्हे सो गुणि धीरज नह रह । अब जो उचित होत सो कह रह ॥
इनि कहि भीष्मक रकुमहि चाहे । तेहि निदरण छित प्रभुहि सराहो । धनि बसुदेव देवकी दोजा
इन्हे संमान न महिपैं कोऊ ॥ जाके सुवन कृष्ण धनुषारी । विदित धीर सद असद् विचारी ॥
रिपुदल दलन धीर नयगानी । गुणी ज्ञाननिधि अन्तरजानी ॥ औसार्द सुत देव विधाता । विना
सुवन कह राखत माता ॥ इनि वाली भीष्मककी सुनिकै । बोले शाख नराधिप गुणिकै ॥ भीष्मक
जो तुम एहि विधि कहिकै । रकुमहि निदरे रिसि हिय गहिकै ॥ राम कल कहँ जीतन खायक ।
को तीजो महिपैं धित चायक ॥ राम कृष्ण विनु ताजो को है । रकुमहि जीतन लायक जो है ॥
रकुम एक धनुषैरँ विख्याता । नीति निपुण विधिवत महिचाता ॥ परशुरामसों धनु विधि सीखो ।
रिपुदल मर्दन बखसैं लीखो ॥ कृष्णहि देव सनातन जाने । निज पृथ हि मति निदरि बखानो ॥
ताते हम जो कहैं विचारी । सो उत जोग करऊ दृढधारी ॥ *~~~~~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कालजवममृषको पिता गार्ग्यनेत्र मुनिराज । माग्यो शिवहि अराधि वर लखि कहु कारणकाज ॥
दीजै सुवन सुवीर मोहि धनुषर भीर धुरीन । मधुरोद्भववीरनसों जा अजेय परवीन ॥
ताते माधुरभटवसों कालजवम जुत मोति । है अबध्य जयजय सहिहि उनसों रणभे जीति ॥
ताते दूत पठाइकै करौ सहार्द ताहि । हम कहँतौ यह बचत है कहीरचै जो जाहि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वाही शाख सो मुनि सबराजा । कहे औसि करिए यह काजा ॥ सब नृपतिनको सुनि यह बानी ।
बोले जरासंध अभिमानो ॥ अबलों मम आश्रित तुम रहिकै । हस्यो राज्य मोसों किरि सहिकै ॥
भए बहत अपराश्रित तैसें । कुलटा तिथ परपतिरत जैसें ॥ सो अब कहु संग्रथ मति धर रह ।
जाते भल जानऊ सैं कर रह ॥ मम बिर तांत सुमऊ सब लोमू । पर आश्रय नहि हम कहँ जोगू ॥
हमैं हांकि लरि मरे भलाई । पर आश्रय कहियो कदवाई ॥ तुम सब कह हम मने न कीजै । बर
एहि जोग दूत कहि दीजै ॥ शाख भूमिपति है परज्ञानी । हम कऊ दूत करऊ छित जानी ॥
हैं एवहित अविहित विचारी । है हमको रथ नभय घारी ॥ अन्तरिख बलि ए उत जैसें । अहिते

केशव भेदमयैहै ॥ नृप गणसों इनि कहि मगधेश । शास्व नृपतिको दिए निदेश ॥ नृप तुम काल
जवन पहुँ जाई । किए मंत्र से साधऊ भारी ॥ जाते कालजवन अनखारी । जाइ कृष्णसों करै खराई ॥
जीति तिन्है दुन्दुभी बजावै । नृपसमूह आनदसों आव ॥ एहि विधि मम निदेश अनुसार ।
कहेउ बढाई विशद चौहारा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इनि निदेश दे मगधपति सदल गए निजदेश । और नृपति तेज गए निज पुर सबल सुभेश ॥
शास्व नृपति मभय गे रघुपै ए मुदित महान । कालजवन नरनाहपै सादर गए सुजान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कालजवन नृपशास्व हि देखी । सानद उठि सादर शुभभेली ॥ चलि कहुँ मंथिन सहित उमाहे ।
उचित अर्घ लै अरपन चाहे ॥ तव रथमें नृपशास्व उ तरि कै । बोले हिय आनद सों भरि कै ॥
हम नहि अर्घ जोग एहि काला । हमहि अर्घ मति देऊ नृपाला ॥ जरासंध आदिक नृप गए ।
तासु दूत व्है हम इत आए ॥ याते डेरि कहै तुमपाही । नृपहि दूत अरघारह नाही ॥ सो सुनि
कालजवन नृपज्ञानी । बोलेो बिहंसि बिहित बरबानी ॥ नृप यह भेद प्रचन हम जानी । ताते
तुन्है पूज्य अति मानौ ॥ सबके संमतसों तुम आए । अतिसै सुखद सरूप ललाए ॥ तुन्हहि पूजि
मनु सब कह पूजै । कहे शोचनहि मिथ्याकूजै ॥ इनि कहि देऊ नृपति सयाने । निले परम आनदसो
साने ॥ कुशल बूझि कहि नृप सुखदारी । बैठे सिंहासनपर जाई ॥ बोले कालजवन सुखपारी ।
जेहि हित चले कहऊ सो भारी ॥ जासु दया लहि हँम सबराजा । सदा अनीत रहै सहसाजा ॥
सोमगधेश तुन्है केहि कारण । भजे कहऊ जुकरऊ अवारण ॥ यह सुनि शास्व भूप सुख पाये ।
जरासंधका वचन सुनाये ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जरासंध नरनाहपति जो कहि शुभद सुदेश । पठए मोहि सो सुनऊ नृप काल जमन शुचिभेश ॥
इनि कहि शास्व महीपमणि क्रमसों कहे सहर्ष । भयो कृष्णसों शैलहिन अग्नि संगर उतकर्ष ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहँ द्वादश अक्षोहिणि सेना । हने सबंध कृष्ण अजनेना ॥ अरुजिनि भई विशद मभवानी । सो
सब कहे शास्व नृपज्ञानी ॥ कहि नृप कहे सुनऊ जवनेशा । यह कहि कहे भूष मगधेशा ॥ गार्ध
गोच सुनि पिता तुम्हारे । ते सुत हत उग्रमत धरे ॥ अति चूरण भक्षण विधि सीधि । शंभुहि द्वादश
वरिष अराधे ॥ वर बूझि यह शिवकी जानी । सुनि माने तहँ करे बरजानी ॥ सुनि उदयवर्षस
वरवीरा । देहि धनुर्धर गुणन गभीरा ॥ जो माधुरभटवण कहँ जीते । सिद्धि लहे सो जो धित

जिनि शैलस्य रवि हि लिखि
 रतनमंथो रथ प्रभा अहोना । तपैँ प्रभु हि पेलि आसीना ॥ दिव्य बसन भूषणसों भूषे । कोटि सैनको
 महिमा दूषे ॥ घामर अजन सुहृत्त उदारू । अति उन्नत गरुडध्वज चारू ॥ राज चिन्ह संपूरण
 देखो । नृप निज हिथ आनदसों भेखी ॥ बोखे श्रीहलधरसों बैना । मोद वारिसों पूरे नैना ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब रथ चढि मोहि कृष्णके सनमुख जाव अजोग । हें उदार ए विष्णु प्रभु गहे कछू उतजोग ॥
 रहि सुयुरापैँ गुप्त ए पुरविदर्भमें जाय । प्रगटत कीन्हे आपुकों लहि अभिषेक सथाय ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

ताते पायन चलिबो चाहें । विधि वत अस्तुति करण उमाहें ॥ उग्रसेनकी सुनि यह बानी ।
 बोले राम परमप्रिय भानी ॥ भूपहिँ अस्तुति करव न जोग । देवहिँ अस्तुति कहत बुध लोगू ॥
 तुमसों प्रभु प्रसन्न वै सेंहीं । मिलजु मिलतहें जिमि तै सेंहीं ॥ इमि वतरात भूप अरु हलधर ।
 चलि यज्ञके प्रभुके ढिग बुधबर ॥ अर्धपात्र लै भूप उवाहे । कृष्णचन्द्र तहें अरपष चाहे ॥ तिमि
 रथ रोकि कृष्ण नयगामी । कहे भूपसों त्रिभुवन स्वामी ॥ मथुरा अधिपति करि अभिषेका । कीन्ह
 तुम्है हम सहित विवेका । तुम मति अर्धपात्र मोहि देह । सीख हमार मानि यह लेह ॥ तुम
 अभिप्राय बूझि हम एहा । कहे करजु सो तजि संदेहा ॥ सहित समाज शत्रुकुल पालज । निज
 पुर पुहुमि पूर्व ता पालहु ॥ जितने नृप सहिँ अहलादे । मान्य हमहि तुम सबसों ज्यादे ॥ इमि
 काह कृष्णचन्द्र प्रभु मानद । दीन्हे उग्रसेन कहें सानद ॥ दिव्य आभरण वस्त्र जभोजित । जिमि
 दीन्हे हे नृपन सुरोचित ॥ आदि बिकहु भूपके संगमें । हें जेतें यदुवंशी मगमें ॥ दश दश सहस द्रव्य
 मुद लीन्हे । भूषण बसन तिनहै प्रभु दीन्हे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परिजन पुरजन सुभटगण बन्दीजन हि समोद । सहस सहस वसु दै सविधि कीन्हे विषद विनोद ॥
 गलिका अरु गायननिकों शत शत द्रव्य अमंद । दीन्हे प्रभु यदुवंश जसि पूरित प्रसन्नमंद ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

॥ * ॥ जयकरीचन्द्र ॥ * ॥

विधिवत करि संभको सतकार । कृष्णचंद्र प्रभु भूभरतार ॥ उग्रसेनसों मोखो बैत पूरे मोद
 वारिसो नैन ॥ तजि संदेह भूप सिरताज । चढौ खरबपैँ सनृप सुसाज ॥ इमि काह रथप
 नृपहिँ सहाय । पुरविदर्भ कीन्हे यदुराय ॥ भेरी सुहुमिसदस मिशाल । तुम गलको अग

मुदनाल ॥ बन्दोजनकी सुति धुनिवेश । जय उच्चरत जु सुभट सुभेश ॥ गज वृद्धित ह्य
होसन-भूरि । रघु धुनि रही दिग्गजमै पूरि ॥ श्रीश्रीकृष्णचन्द्र चणश्शान । बसु बरसावत
आनद धाम ॥ उग्रसेन नृप अरु बलिराम । अरु यदुवंशिन सह अभिराम ॥ सरस सुखद
प्रभु सहित समेह । मोर्दित गे निज पितुके गेह ॥ नै मोहित बसुदेब सुजाम । पतिनिग
सह लहि माद महाम ॥ प्रभु हि निरेखि रहे मेहि ठोर । करि न सके कहु कारज ओर ॥
दे तैह प्रमुद्धि अर्ध मुद धारि । चातुरि उग्रसेनकी नारि ॥ कंग किएहो अरजम जौन ।
अरपण कीन्ही धन सब तौन ॥ तब प्रभु परम कपाके औन । बोले उग्रसेनसों बैन ॥
पुर धन राज्य बाजि गज राज । इनसों नाह कहु हमसों काज ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इन सबको नृपनाथ मुन करऊ अचिन्तित भोग । करऊ थय्य विधिवत विविधि तजऊ कंसको भोग ॥
एहि विधि कहि भूपाल सों सोधन दै फिरि ताहि । सहित राम श्रीकृष्ण गे अन्तर्भवन सघाहि ॥

॥ * ॥ मधुभारहन्द ॥ * ॥

हे ग्रहण कीन्हे जौन । शुभ सस्र तजि तहँ तौन ॥ करि नित्य नियमित कर्म । दोउ बंधुपालक
धर्म ॥ तहँ करख लागे आम । बर बारता अभिराम ॥ तेहि सनें आकस माद । सुनि पक्षी दीरघ
माद ॥ अति बहौ रीध सबाता जोहि बढो अनि उतपातासब विकल भे अनमानि प्रभु किए क्षित
सुसुकामि ॥ सेन शुभद सारुत मानि । प्रिय गरुड पक्षज जानि ॥ लखि परे प्रगट सुपण । बर पत्र
गासन कर्ण ॥ ते दिश्य गंध सुगाल । हे धरे विशद विशाल ॥ लखि प्रभुहि आनद धाम । कोर
दण्डवत परिनाम ॥ ढिग राजि राजे भूरि । अनि अनघ आनद पूरि ॥ प्रभुबूजि स्वागत तासु ।
सहबधु तेहि सह आसु ॥ बलि बैठि एक थल जाय । भे करत मंत्र सघाय ॥ तहँ गरुडसों एहि
मांति । प्रभु कहत भे बरकांति ॥ यह काल जवन मरेश । अरु भूमिपति मनधेश ॥ ए बध्य हमसों
है न । हम लखव इनसों जै न ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताते अब एहि नगरमें हम बसि लखव न सेना याहि छोटि कऊ अनत बलि बसिबो चहँ सप्रेम ॥
गरुडध्वजके बचन सुनि गरुड कहे ए वैम । मोय आपसों ह्यै विदा जो हो गया अचैम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

पश्चिम दिग्गजमें जाय निरख्यौ परब विचित्र बसा । रैवत गिरि सुखदाय सागरतट रमणीय अति ॥
॥ * ॥ शोषार्द्र ॥ * ॥

अतिपावन सौ सुगर गोसांरि । सुन्दर मुनह सुखद शुभ ठारि ॥ हे तब बसिबे जोग सोहावन ।
बन उपवन पुरसों मन भावन ॥ बेतयेको सुनि यह बानी । कश्यप मुद मंगलदानी ॥ ईक्षित

करबकी बांध लीन्हे । उतका बासवा रोचित कोन्हे ॥ सो सुनि उयसेन नद खैके । कह छल्लसों
शोचित छैके ॥ आप अनंतको बास विचारे । सो सुनि हम सब भए दुहारे ॥ तुम्हहि बिना हम
व्याकुल छैहैं । जल बिनु मीन सट्टय दुख ज्वैहैं ॥ तुम्हहि बिनाहैं हम सब वैसे । बिना पुरुषकी
पतिनी जैसे ॥ तातें हम सिंगरे हे स्वामी । हैं मन बच क्रम तुव अमुगामी ॥ तातें जहां चलहु नय
गामी । लए चलहु तित सभहि सुनामी । कहे तथास्तु छल्ल सुनि सोई । सो सुनि हरषित भे सब
कोई ॥ एहि बिधि छल्ल बारता भावनि । रहे करत रधि सभा सोहावनि ॥ कालजवन इतने में
आई । पुरठिग परो निसान बजाई ॥ तासु आगमन सुनि यदुनायक । बिधिसत कौतुक बितरण
चायक ॥ यदुबंशी बर वृल्ल हि आदिक । मंत्र निपुण नयविद प्रिय बादिक ॥ बिधिवत तिनसों
मंत्र दिटाए । विषद भयानक ब्याल मंगाए ॥ घटमैं ताहि मूदि चावनसों । तापें भेजि दिए धाव
नसो ॥ सो घट खोलि देखि नृप ब्यालहि । समुजि सु कृष्णचंद्रके ब्यालहि ॥ बऊ पिपिलिका मुरित
मंगाइ । भेजि दियो तेहि घटमैं नार्इ ॥ सो लखि कृष्णचन्द्र मुसुकाने । जवनहि बुधिसानअतिजाने ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तासु बुद्धिबल प्रबल लखि कृष्णचंद्र मुखदान । बोले यदुपुङ्गवसों यह नृप बली महान ॥
हमहि आदि मायुरभटनसो अबध्य यह बोर । रण चडि यासों जीति नहि लख सुनऊ रत्नबीर ॥
तातें तुम सब शीघ्र अब तजि मयुरा सह सैन । रैवत गिरिठिग चलि बसऊ समुदं मानि नम बैन ॥
प्रभु आज्ञा लखिकै कठे यदुबंशी सह साज । सहकलत्र रुद्धन सदल सह हय नय नज राज ॥
पश्चिम दिशि सभ चलत भे सहकटुम परिवार । शुभठ असंख्य निग्रक मति प्रभु आज्ञा अनुसार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जे भट बीर धीर गलतीके । मर्दन परदल सुभठ अनोके ॥ तिन हि सहित प्रभु सबके पोके । भेरि
निसान चले जय ईके ॥ बन गिरि सहर नदो नद सैरत । ने रैवत गिरिठिग प्रभु जैरत ॥ रैवत
गिरिके ठिग अति पावन । सिखर मंदरोदार सोहावन ॥ हो नृप एकलथ ता आमी । हो तहैं
ताको रचो सुनामी ॥ पुरो द्वारिका अति रमणोया । प्रमुदित होत जाहि लखि होया ॥ सो लखि
प्रभु हिय आनद लीन्हे । निज निवास हित रोचित कीन्हे ॥ दै तहैं सबहि निवास सुपाह । मयुरा
प्रति पलठे प्रभुचासू ॥ एकाकी यायन पथ चारी । मयुरा प्रविशे प्रभु धनुधारी ॥ प्रभुहि देखि सह
सैन नरेश । चढो कालबस छै जमनेशा ॥ प्रभुकी सनमुख बाण बसावन । लाग्यो भरे बीररस
भावन ॥ प्रभुतापें कहुबाण बसाई । फिरि फिरि चले हरहरे धाई ॥ कालजवन गरवी नद पागा ।
दलसह प्रभुक पोके लागे ॥ मांभाताको सुत जयवर्धन । हे मुघकुन्द भूप बीरमर्दन ॥ पूब देवसुर
संगर कोन्हे तवते लरि इन्द्रहि अयदीन्हे ॥ कहे इन्द्र तब सरस सनेहानुप मुघकुन्द मानि बरलेह ॥

॥ * ॥ दाहा ॥ * ॥

सो सुनिके पुहङ्गतसो असो कहे नरेण । बज्रत काल करि युध अति होहो अमित सुरेश ॥
ताते चाहत करण हों निद्रा दिवस बहृत । दीजे मोहि बरदान यह पुरपालन पुहङ्गत ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सोम्यत मोहि जगावै जोर । असन होइ मों देखत सोई ॥ एवमस्तु सुनि कहे सुरेश ॥ सो
सुनि क्षितिपर आइ नरेण ॥ दोरघ गुहा देखि मुदभोए । सोए ते हें तबलो सोए ॥ सो विरतात
समुक्ति प्रभु नागर । कलित कौतुकी कौतुक सागर ॥ ताके देखत प्रविशे तामें । सोवत हो नृप उँहि
सुगुहामें ॥ जाइ भूपके अमल उसीसे । बैठे छपि विनु ताके दीसे ॥ कालजवननृप प्रभुके पीछे ।
प्रविश्यो तामै जय जग ईछे ॥ खरो पांयते न्हे धनुधारी । हनिशि पायसों दृष्ट बिचारी ॥ लान
लात जामिनृप सोई । आँखि खोलि देखे रिसि भोइ ॥ सुरपतिके बरके अनुसारा । कालजवन नृप
जरि भो हारा ॥ तब श्रीकल परम सुखपाए ॥ उठि भूपतिके सनमुख चाए । कहे भूपसों आनद
भोए । नरपति आप बज्रतदिन सोए ॥ जेहि कारण तुम सोए जबसों । नारद मुनि भाषे सब
हमसों ॥ नृप तुम महत काज सम कीन्हे । तुमहि देखि हम अति मुद स्तीन्हे ॥ अति हरन्ध वपुवर्ष
सुभेखी । पुरुष बिलक्षण प्रभुवह देखी ॥ जग विभेद मनमें अनुमानो । कहे भूप इमि प्रभुसों बानी ॥

॥ * ॥ दाहा ॥ * ॥

को तुम कितं आए इते कोहि जगमें इत आय । सोए हम अब कौन युग सो सब देऊवताय ॥
सो सुनि बोले दृष्ट प्रभु चंद्रनग कुल चंद्र । नृपति नज्जघके तनय हे नृपति यजाति खड्ग ॥
नृपज्ञातिके चारि सुत तिनमें गुर यदु भूप । ताके कुल बसुदेव भे बंश विरद अनुरूप ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

नृपति ताका सुवन हाम कृष्ण मेरो नाम । दुबन मेरो दुष्ट हो यह कालजवन सकाम ॥
रह्यो हमसों यह सबध्य सुहेत एहि तुवपाश । आइ जूक्षितिपाल मणि हो लस्थो याको
नाश ॥ सैन कीन्हे आप जब तब रह्यो चेततात । अंतदापरको अहे कलि प्राप्त कलमष
नात ॥ कृष्णके ए वचन सुनि मुचकुन्द तजि गिरिगेह । निकसि बाहेर खरे भे यह हाल
पूरित गेह ॥ अल्प बधि बल बोर्ज अल्प हरख लखि नर नारि । होन संपति सोण कानि
मलीन भूमि निहारि ॥ और बंशजकों गिरसि निजराज्यपति अनुमानि । दृष्टसों न्हे
विदा श्रीमुचकुन्द नृप बलवानि ॥ जाय गिरि हिसिबतपे करि उद्यतप रुदपाणि । नृप स्वर्ग
लक्ष्म फल यहि सुचित शुधि तब तयाधि ॥ कृष्णकुन्द उदार प्रभुनृप जवनके दख भाइ

अथ गज रथ ससध्वज धनु कौच हरि सुखशाय॥ जाय हारायतीमें सब कहे इतको हाल ।
 मीन सुनि यदुबंश सिंगरे लहे मोद विशाल ॥ भोर लहि फिरि ससम सह यदु राय
 प्रभु कुलधर । देखि बन गिरि सुधर चऊँ दिशि पूरि परम अनन्द ॥ ह्वं बर्धन करण बाय
 मलय शुभद महान । रोहिणीं द्विजमको मनमान करि है दान ॥ स्वस्तिवाच्यपुनीत
 सुनि विधिपूर्व करि शुभकाज । दुर्ग रचनाको किए आरम्भ प्रभु सहसाज ॥ कहे इनि
 जादवनसे प्रभु बचन प्रिय कमनाय । पुरो निर्मित करत हों इत सुखद अति रमणीय ॥
 नाम प्रिय द्वादशवती अमरावतीसी बेसाविरचि निज किज गेह तुम सुर सदृश लसऊ मुभेस ॥
 प्रौक चत्वर सौध सुन्दर राज मार्ग बनायपद्मपौर विचित्र रचि रचि रंमऊसुचित सचाय ॥
 कण्ठके सुनि बचन यादव लहि सुदिन कर तेना लगे रचनाकरन पुरकी परम मूरितप्रेम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुर रचिवेके काज प्रभु विश्वकर्माके हेत । मनसि शकसें कहत भे यदुपति छपानिकेत ॥
 लहि सुदेश सुर राजको विश्वकर्मा तेंह आय । जोदि पाहि प्रभुसें किए विनै परम सुखपाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मेहि इन्द्र अनुशासन दीन्हे । जाऊ उपेंद्रपास मुद लीन्हे ॥ हो सुनि प्रभु तब नै दिन आये ।
 बंदपंकर लखि अति सुख पाये ॥ जो अनु शासन देऊ गोसांई । सो नै करे दासकी आई ॥ तासु
 बचन सुनि प्रभु मुद लीन्हे । पुर रचिवेको शासन दीन्हे ॥ सुनि निदेश सो निरखि विचारी ।
 प्रभुसें कहे जोरि जुग वारी ॥ नाथ चहूँ दिशि सागर जोहै । आत संकोर्ष किए सो सोहै ॥ नाथ
 देइ जो महि कहु सामर । तौ पुर रचना बने उजागर ॥ विश्वकर्माको सुनि यह वानी । कहे सरित
 पतिसों प्रभु मानो ॥ मम पुर रचना हित सुनि खेलाद्वादश जोजन चिति मुचि देह ॥ जो सरिते
 प्रमान्य मोहि जानै । ता सम बचन शोत्र यह मानै ॥ प्रभु को आशा अलखि सुनिकै । करषि
 प्रवाह दए महि गुनिकै ॥ सम विकारित भूमिसों ज्वैके । विश्वकर्मा आनदसों ज्वैके ॥ सामस पुरी
 रचे मम भावनि ॥ चाऊत चखचित चाव चटावनि । चामीकर नै विरचित मारु ॥ रतन विविधित
 जाल उदार । जबा जोग म्ह सबके सायक ॥ रचि दीन्हे भरि भासों भायक ॥ भाति भातिके
 सौध बनाए । रचि विचित्र सुवर्मासों हाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धिरसे विग्रह बजारवर विविध विधान बनायाविश्वसू सबसे बनिक जेहि बधिनिसे बसुपाया ॥
 बापोकुपतडाव वर उपवन विग्रह विचारि । विरक्तमा विरचे सुवर्षि सुवचित सुधर निहारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभुहि जोय अति उत्तम गेहा । भलिमय निरचे सहित समेहा ॥ अन्तह पुर बज्ज बडे विधि
निरचे । हीरा हेमनि हंरघनि हिर चे ॥ कण्ठचन्द्रं ग्यामक बरभाको बिसवकर्मा हे शिखरीजाके ॥
तापुर म्दकी सुपना को कहि । सकै सर्व मुलकी गरिमा कहि ॥ रचि पुर विघद समुद बिसवकरना ॥
प्रभुहि बन्दि गे खघर सुभरना ॥ गेल निधिहि तब कण्ठ बोलाई । ताहि दएयाज्ञा बलभाई ॥
दारापतिने सानन्द सरसो । सर्व संपदा घर घर बरसो ॥ प्रभु निदेश लाहि निधिपति हरसे ।
सरस संपदा घर घर सरसे ॥ फिरि एकांत्ते बैठि सोहाए । मुरमर्दन मासतहि बोलाए ॥ प्रभु ठिण
आइ जोरि कर सामद । मासत कहे सुनऊ प्रभु मानद ॥ जिनि इन देव दूत शुभ भेजा । तिनि
तुव दोजे सुखद निदेशा ॥ यह सुनि प्रभु जो हे अभि लाले । सो सादर मासत सीं भाखे ॥ जाऊ
शक्ये मन हित मानी । सभा सुधर्मा स्थावळ ज्ञानी ॥ सुनि मासत सुर पति पै जाइ । सभा सुध
र्मा दोन्हे स्याई ॥ सभा पांच प्रभु आनद पागे । यदु वंशिन सह विहरण लागे ॥ फिरि प्रभु नीति
रातिके चारी । नियमित किए काज अधिकारी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उद्यसेनको नृप करे सत्य सभ्य भगवान । अनाभृष्टको करत भे सेनापति बलवान ॥
उद्वव कंक विकडु गेद स्वप्लक विषय ताहि । चिषक प्रभु सात्युकिहि किय मंत्री बुधि बर चाहि ॥
अधिकारी बर बुद्धको किए सात्युकिहि जानि । साम्दीपनको करत भे पूरोहित हित जानि ॥
दारुको प्रभु करत भे निज रचकेरों छत । धीर वीर बुधिमान खलि संकर विद मज्जत ॥
एहि विधानको बखे रधि कण्ठचन्द्र सुखदानि । विहरण लागे दारिका में मुद मंगल खानि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

रैवत नृपतेह आए स्थाय रेवती निज सुता । बलिरामहि सुखदाय व्याहि गये बन तपकरन ॥
खलि श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायण स्थापनाभिनामिना श्रीवंदीजनकाशीवास
भोक्कुलनाथात्मजेम नोपानाथेन कविना निरचिते भाषायां भादतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे काशजपन
नरसो दारावतीनिर्माणाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निर्मित करि दारावती रनि सह अंधक कण्ठभूपति सो अब कहत हीं किए घरित जो कृष्ण ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बनेकी खिच दारिका जानी । अरोसंभ भूति अभिजानी ॥ सन भूपन कहै पास बोलाए । सबसों
कहि वह प्रंच दिगए ॥ रकुमिनिको नृप सहित उछाह । हे शिखुपाल भूपसों व्याह ॥ तुम सब

कोउ मन्थवर्मा सुहारी । रक्षण करऊ वीर धनु धारी ॥ दन्त बन्धुको सुवन महीपा । नाम सुवक्र
धीर कुसुदीपा ॥ पांडुदेशको भूप सुभेवा । सुदेवके सुवन सुदेवा ॥ एकलव्य नृपको सुत वीरा ।
पाण्डुदेशपतिको सुत धीरा ॥ वेणुदारि सुत बरमा राजा । अंगुमान अरु काच सुसजा ॥ नृप कलि
देशको जोसो । अरु गांधार देशपति होसो ॥ काशीपति आदिक नृप जेते । ते शिशुपाल सन सजि
तेते ॥ मुनि वैसम्पायनसों यह मुनि । बुझे जन्मजय नृप हिय गुणि ॥ बंश देशकेहिमें रकुमिनि
जू । भई प्रगटसो कहि सै मुनिजू ॥ यदुसुत हैं कोटा महि स्वामी । तावंगज अपराजित नामी ॥
तासुत हैं वृजनीवसु नामी । ता बंगज अपराजित ज्ञानी ॥ ताके पांच सुवन हैं आनी । तीजो सुत
ज्यामेघ सुदानी ॥ भो ज्यामेघ भूपके बारा । ताकोनाम विदर्भ उदारा ॥ ताके भए तीनि सुत
मानो । सोमपाद ऋषकौशिक जानो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सोमपादको बंधुसुत ताके सुत अद्वात । ता सुत कौशिक चेदिता सुत चैय विख्यात ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ऋषसुत अंगुमान शुभ सजा । कौशिकके सुत भीष्मक राजा ॥ भीष्मकके सुत रकुम
विख्याता । सुता रकुमिनी श्रीजन्ममाता ॥ बिंध शैलके दक्षिण देशाकीन्हे राज्य विदर्भ नरेशा ॥
तहँ कुण्डिन पुरमें नथ चारो । हैं भीष्मक भूपति धनुधारी ॥ सुत यज्ञतिके पुरके बंगज । हैं चैथो
परि चर बसु अंगज ॥ ताके सुवन छहद्वय गए । जरासंध ता बंगज भाए ॥ बंगज चैथो परि चर
होके । हे दमघोष भूप शुचि जोके ॥ रही अतिश्रवा ताकी पतिनी । जो बसुदेव भूपकी भगिनी ॥
तासों भए पांच सुत ताके । शिशुपालहि आदिक बरभाके ॥ जरासंध नृप आवद साने । शिशु
पालहि निज सुत करि जाने ॥ तेहि सम्बन्ध पावसों घोपे । अनरथ मूस ब्याह आरोपे ॥ सै सँग
नृपन मोदसों शाएसाजि सैन कुण्डिनपुर आए । रकुम भूमिपति आगेचलिकी ख्याए तिन्है मोदसों
भरिकी ॥ मुनि शिशुपाल बंधुको ब्याऊ । रामकृष्ण मनमानि उहाऊ । सह यदुबंशिन साजि सुसेना
आए कौशिक पुर जगजेना ॥ ऋष कौशिक बलि आगे सीन्हे । मुदित यथोचित पूजन कीन्हे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कौशिक पुरमें बास कार प्रभुसो निशा बिताया । प्रातकाल करि सैन सह रथ चलि ज्योसकया ।
ताहोचर रकुमिनि गर्द रथ चढि सलिन सभेत । इन्द्राणिको मूर्त्तिको शिष्य पूजनके हेत ॥

॥ * ॥ गुस्तोत्तरचन्द्र ॥ * ॥

तहँ रकुमिनी तो देखिकी । प्रभु हिए आवद भेषिकी ॥ करि बंधु श्रीवर्धिराजसों ।
अब सबी जूकों पुजिकी । बर बरणि अकृति कूजिकी ॥ सखि प्रभुहि हरि नेहको भरि ॥

प्रलय आसी नेहको ॥ तब पाणि गहि बलबीर आरधनुषधर रथधीर सु ॥ बहुभिषहि
 रथधै आनिके । बैठाथ रमणी आनिके ॥ अति चपल बाजी हांकिके । काठि चले बीरन
 हांकिके ॥ बहिरांस वृक्ष उपारिके । पर वर भठनकहँ मारिके ॥ सहयादवनरिषि
 कौ । भिर रहे तहँ धनुषारिके ॥ तब जरासंधहि आदिजे । नृप रहे हँ उममादिजे ॥ नै नृपसि
 धर दल साजिके । सब भिरे तिनसों गाजिके ॥ बडि आदवौ भठ भावसों । भिरि सारन
 खाने चावसों ॥ तहँ दु दुभीके जेरको । हय मैगलनके डेरको ॥ वर धनुषके अकारको
 कर भठनके अकारको ॥ बऊ मल्ल तोमर बाणको । अनिभिलिम टोप मिलागको ॥
 रथ रथौ पूर दिशामनै । तेहि समै केयससामनै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रुकुमिनिकों हरि कंसहा निज रथपै बैठाथ । लए जात है सुनि रुकुम महत रोषसों हाथ ॥
 गहि कोदंड उदंड भठ मुजदंडन तन देखि । किए प्रतिज्ञा प्रलयकर प्रबल प्रकर्ष विनेलि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मारि कृष्णहि जौ न ल्यावों रुकुमनीको फेरि। न आवों या नगरमें बचन खैसो टेरि।
 चलो रथ बडि चावसों चित चाहि जय जय पूर । सबल सत्वर साजि सेना सरस सांघ
 सूर ॥ चलो सँभै खानि रुकुमके नृप अशुमान सुधीर । बेणुदार महीप वर भठ चौधुतथा
 कीर ॥ बेणुसों चलि सुभट ते बऊकोस बीधी जायानमदाके तौर प्रभुसों भिरे घैरेचाय ॥
 रुकुम मारे कृष्णकहतहँ चार चौसठि बान। बाण सत्तरि रुकुमके तन हने कृष्ण सुजान ॥
 रुकुमके ध्वज सूतकोसिर वाणसों प्रभु काठि । तजे अगनित बाण धनु सों बिकट बीरन
 दांठि ॥ अशुमान महीप दग्न नृप सुतबाणौ पांच । बेणु दारिक सात प्रभुको हने तब
 मारि ॥ अशुमान महीपके उर हने प्रभु एक बान । गिहों तातें बिल ह्यौ सो बिरित
 बीर सखन ॥ अशुमान महीपके वर बाजि सरसों मारि । बेधि ताकों हृदय रथपै दए
 ताकों मारि । बेणुदारमहीपको ध्वज काठिकी चदनाह ॥ मारि शीघ्रग बाण दोहरे बेधि
 दखिण बाँझाकोध करि ए सुभट प्रभु पैं झूके तब एक बार । मुदित ह्यै प्रभु किए तबहि
 भाँति युह बिहार ॥ हलसाघव अमक करि इमि तजे सरस विधान । सुभट सिगरे मजे
 जाने बिकला ह्यै बजि साब ॥ रुकुम निजबल अर्ध साखि ह्यै बिकल करि अरसोस
 हने प्रभुके हृदय मधि गर पांच कदियति रोझातीनि घर वर हनत भो फारि सारथीके
 देह ॥ अशुमान महीपके वर तम रुकुमके सहनेह ॥ काठि दोहरे रुकुमको फारि धनुष

शरसे साधि । रुकुमनूप लै और धनु तव दृष्टदेव अराधि ॥ दिव्य अस्त्र अनेक बाहत
भए जय अभिलाखि । काटि ते सब बाणें प्रभु नए महिपैं नाखि ॥ *~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

काटि शस्त्र सब रुकुमके प्रभु काटे फिरि तासु । रथको ईषा चारु अरु धनुष बाणसों आसु ॥
कटे चाँप रथ क्रोध करि रथतें उतरि उतासु । खड्ग चर्म लै चलत भो प्रभुपैं से क्षातिपासु ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब प्रभु धनुषकी विधि ठाठे शरसों खड्ग मूठि ढिग काटे ॥ खड्ग काटि कङ्कुरिषि हिय धारे ।
तीनि बाण बर उरमैं मारे ॥ तातें रुकुम मूरु कित ह्यै कै । महिपैं गिरे चावसबस्यै कै ॥ रुकुमनि
धातहि मुरकित ज्वै कै । प्रभुके चरण परी दुखस्यै कै ॥ अब मति याहि हनऊ कमुददानी । यह
रुकुमनिकी आरत बानी ॥ सुनि कै कृष्ण क्रोध परिहरिकै । गए द्वारिका आनद भरिके ॥ दृष्ट
आदि यादव समुदाई । भूपन जीति निशान बजाई ॥ सेना सहित द्वारिका आए । मिलिके सबसों
आनद पाए ॥ उतै सुतर्वा नृप धनुधारी । रुकुम भूपकहँ रथपैं डारी ॥ कुण्डिन पुरप्रति चलो दुखारी ।
चेति रुकुम तव स्वपन बिचारो ॥ होन प्रतिज्ञां भे हे तातें । गए न कुण्डिन नगर हि याते ॥ कुण्डिन
पुरके दक्षिण आसा ॥ कीन्हे पत्तन विरचि बिलासा ॥ नाम भोजकट पुर भो सोईतामे बसे रुकुम सुख
भोई ॥ कुण्डिन पुरमें भोजक राजा । रूहे पूर्ववत सहित समाजा ॥ उतै कृष्ण विधिवत मुद लीन्हे ।
पाणिग्रहण रुकुमनिको कीन्हे ॥ निज अनुरूप प्रिया बर पाई । बऊ दिन रमि संप्रेम सुख दाई ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उतपति कीन्हे दश सुवन प्रवल प्रदुन्न उदार । चारु दोषण सुदेषण सुत सुत सुषेण सुकुमार ॥
चारु गुप्त सुत चारु अरु चारु बाँज रणधीर । चारु विन्द अरु चारु कहि भद्र चारु पर वीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कन्या चारुमती शुभवाी । प्रगटी रुकुमनिसों शुभचारो ॥ महिषी सात और प्रभु कीन्हे ।
तिनके नाम सुनऊ मुदलीन्हे ॥ कालिन्दी कमनाया सोई सुता सूर्यकी यमुना जोई ॥ मिर्चबिदा
सुखदादनि सनया । सो आबंत्य भूपकी तनया ॥ भूप नम्रजित अबध अधीशा । सत्वा तासु सुता
नयदोशा ॥ जाम्बवानकी सुता सयानी । जांबवती सुखदादनि नानी ॥ कौकैपतिकी सुता सुखानो ॥
भद्रा दुतिय रोहिणी नामी ॥ भद्रराजकी सुता ललामा । नाम सुशाला अति अभिरामा ॥
सत्राजितकी सुता दुखारी । सतिभामा अति पतिहि पिआरी ॥ सैथराजकी तनया ज्ञानी ।
नाम लक्षणा नवई रानी ॥ सोरह सहस और शुभनारी । लहि प्रभु कीन्हे अतिसै म्याही ॥ प्रगटे
सुवम हज्जरन तिबको धीर वीर दाता गिनतिके ॥ तिनहहि सहित प्रभु आवद द्वारे ॥ द्वारावतिनमें

मुदिन विहार ॥ एकुम नृपतिको शुभद कुमारी । नाम सुभागी सुषमा भारी ॥ एकुम भूमिपति
आनंद लीन्हे । तासु स्वयंवर रोपित कीन्हे ॥ देश देशके भूप बलाए । तहँ प्रदुस्र ने आनंद छाए ॥
तहा स्वयंवर सभासदन मै । बैठे नृप सव मोहित मनमै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एकुम भूमिपतिकी सुता आइ स्वयंवर गेह । निरखि प्रदुस्रहि सो तँहा वरत भई सहनेह ॥
विधिवत पाणि ग्रहण करि सतिय प्रदुस्र सुभेश । आए द्वारावति गए निज निज पुरण नरेश ॥

॥ * ॥ महीखरीकन्द ॥ * ॥

ककुयौस रनि ते सरुचि दंपति शुभग सुत उत्पति किए । अभिराम ताको धाम लखि
अनरुद्र पद ताकों दिए ॥ क्रमसों सुवर्धित ह्यै विशदगुण सर्व शास्त्र सविधि दिखे । अरु
धनुषवेद विधान सो शुभमत्र सह सांनद शिले ॥ तेहि लखि अनुपम अरु अपूरब अति
अलौकिक गुणभरे । शुचि सावधान सराहिवेके जोग सुषमा लय लरे ॥ ही एकुमके
सुतकी सुता तेहि जोग सुन्दर वर गुनो । लिखि एकुम नृपको विहित पाती कियो संमत
रुकुमिनो ॥ तब साजि बेस बरात वर प्रभु भोजकट पुर प्रति गए । बलिराम रुकुमिनि
सहित यादवजूथ मन आनंद मए ॥ तहँ एकुम नरपति करि उचित बेवहार लहि शुभ
दिन सुखो । दोन्हें सविधि अनिरुद्र कह शुभसुता सुतको शशि मुखी ॥ अति भयो उत्सव
दुहँ दिशिसो सरस आनदसों भयो । लहि दान अरु सनमान जाचकगणनको दारिद
गयो ॥ तँह एकदिन सव नृपतिगण न्है एकमति मत करि गए । नरपति एकुमके पास तहँ
एहि भौति सो भाषत भए ॥ नृप अल्लखेल विधानमै तुम सहत चातुर हौ कहे । अरु
हम सबै जन अल्ल खेलनमै परम पटुहँ अहे ॥ बलिराम कह है अल्लप्रिय पर खेलि नहि
जानहि सुनो । हम सबहि मिलकर जीतहँ यह वात मनसै तुम गुनो ॥ इत बोलि ताते
उन्हहि उनसों दामलीजै दावसों कटु बचन व्यंग प्रसिद्ध कहि कहि कटु कीजै चावसे ॥
सुनि मोदि एकुम नरेश मिसिसो बोलि बलिरोम हि लए । करि वारता कहु चातुरीसों
अल्लखेल तहाँ गए ॥ बदि दाव धरि धरि द्रव्य दुऊदिशि घने घातनि खेलिकै नृप एकुम जीते
बलहि पासा कितव ताके जेलिकै ॥ तव राम अमरष करि दए धरि कोटि द्रा कनकको
सोड जीति लीन्हे एकुम पासा डारिकै वर वरणके ॥ सो जीति एकुम विदर्भपति द्विय
गर्व अतिसै महतभे । गहि गर्व हसि हसि नृपनसो कटु बचन एहि विधि कहत भे ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अवल अबुधि अति अपटु ए अरु अबिद्य असमर्थ । इत आंए हैं द्यूत मिसि द्रव्य देनके अर्थ ॥

यह सुनिके कालिंगपति विहसि हस्था करि मार । चार दशन दरशाय के लखि हलधरकी बोर॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि हलधर अति मनमै मांखे । कहे न कहूँ रोकि रिषि राखे ॥ कोटि सहस दश मुद्रा नांखे ।
बोले दावपै खेलन लागे ॥ रुकुमनरेश जीति ललचाने । अक्षपात कीन्हे मुदसाने ॥ पखो रामक
जयके पाषा । बोले रुकुम तज कटु भाषा ॥ यह मन दाव जोति यह मेरी । कहि जुड़े जगरे
जगरेरी ॥ मर्द इन्मै तह मभवानो । जीते हलधर आनद दानी ॥ सुनि नभगिरा राम अति
कोपे । नृप मण्डलमै प्रलया रोपे ॥ मोहर भरी संजुलै थैली । धरी रह्यो आनद अमैली ॥ तिन
मैतें लै एक रिसारे । रुकुम भूपके उरमै मारे ॥ ताके लये रुकुम नृप मरिकै । शोभिन भए
पुञ्जनिपै परिकै ॥ दांत निकासि हसो हो जोई । नृप कलिंगपति आनद भोई ॥ सगरब मेहि
अमरपसों पूरे । लात मारि ताके रदतूरे ॥ सिंह समान सकुइ गरजिकै । दिरद सहस नृप भठन
तरजिकै ॥ छष्णचंद्रपै सानद जाइ । कहे सकल बिरतान्त बुजाई ॥ सो सुनि छष्णधर मेहि बोले ।
निज अन्तगत कछू न खोले ॥ बन्धु मरण सुनि रुकुमिनी रानी । करि रोदन अतिसै बिल खानी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देवीगति कहि रुकुमिनिहि केशव प्रभु समुजाइ । सहित यादवन द्वारिका आवत भै सुखदाइ ॥
वरण या अध्यायमै प्रभुरुकुमिनिको व्याह । उतपति व्याह प्रदुन्नका वरणन किए सचाह ॥
कहे जनम अनिरुद्धको अरु बिबाह उतसाह । अक्ष खेलि जिनि रामसो भरे रुकुम नरनाह ॥
खलिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशपासि
गोकुलनाथात्मजेन गोपोनाथकविना बिरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे रुकुमिनोखयं
वरोनाम ऊणविंशोऽध्यायः ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे खयंबर रुकुमिनीको तुम बर बरणि सहेत। सो सुनि हो आनद लह्यो सुनिये ज्ञान निकेत ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अब कहिअै मुनि बर तपराह । श्रीहलधरको चरित विचाराह ॥ जनमेजयवृषको बाणी सुनि ।
बोले बैसम्प्रायन मुनि गुनि ॥ अमघ अन्तन अमोघ सुज्ञाता । शेष धरा धर जो गिह्याता ॥ है
बलि राम हलायुध सोइ । जानै ज्ञानमान सबकोई ॥ अयुत नागके बलसो भरो । जरासन्ध हो
पुस्व वारो ॥ बाहुजुइ करि जीते तासों । भूषित भए भरि भरिभासों ॥ दुरजोधनकी सुता
सोइ । हरि लै चले सांभ मेहि जाई ॥ लखि दुरजोधन वृष रिसि भरो । गीत मेहि कारागृहमें

डारे, ॥ जांबवतीके सुवन दुलारे । सांब कृष्णकँह परम पिचारे ॥ मुनि तँह जाइ राम रिसिपाने ।
सांबहि दुरजोधनसों मागे ॥ दिए न दुरजोधन जदमाते । तब बलिराम अधिक रिसिराते ॥ पुर
परिखाको बप्र सोहावन । तामें साय हलाय सो भावन ॥ ब्रह्म मंत्रसों विधिवत सीछे । ईचि
वाहि पुर उलटन ईछे ॥ पुर उलटत लखि नृप दुरजोधन । बर कन्या दै कोन्हे बोधन ॥ सतिय
सांबकँह लै सुखंहाए । नत उग्रत पुर तजि घर आए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धेनुक और प्रसन्न अह मुष्टिक आदिक बोर । को बधिवो कहि कहे जो वमुना करब्यो धीर ॥
मुनि मुनिके ए बचन बर जनमेजय क्षितिपाल । फिरिबूजे मुनिराजसों पूरित प्रेमविशाल ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

हकुम भूपके बधके अन्त । आइ द्वारिका ठस अमन्त ॥ गुणनिधि कीन्हे कहा बिलास । सों
कहिअै मुनि ज्ञान प्रकास ॥ नृप जनमेजयके ए बैन । मुनि बोले मुनिआनद अैन ॥
रह्यो प्राग्योतिष पुर ग्राम । तहँ बसि नरकासुर बलधाम ॥ प्रबल प्रमत्त भरो उबमाद ।
करै सुरमसो हठि अनवाद ॥ सुरगंधर्बनको सुकुमारि । लखि घतुईशी तनया बारि ॥
सोरह सहस एकगत जानि । किहेसि एक ते हरि हरिआनि ॥ महि सागरतें हरि गहि नेम ।
हरंभित जोरिसि हीरा हेम ॥ सुवन भूमिको अतिबलवान । नरकासुर अघ बोध अमान ॥
प्राग्योतिष पुरपति निरदन्द । सब असुरनको अधिप अमन्द ॥ रतननिको पुरठिग बर फौला
रचेसि चारू अतिसुन्दर शैल ॥ पुरमै रकवा चारिउद्दार । द्वारे चारि चारि रखवार ॥
हृद्यश्रीब जूथप सरदार । पालत हें सो पहिलो द्वार ॥ निसुन्दवती द्वार निसुन्द । नोजी
पौरि पञ्चजन तुन्द ॥ चौथी पौरि रहै अम नैत । सुवन सहस्र सहित मुरदैत ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नरकासुर असुराधिपति निज भुजबलके जोर । हरेसि सुकुण्डल अदितिके पारि स्वर्गमें सोर ॥

शैरावत चडि इंडतव आए प्रभुको पास । धिन्ति चिन्तमै चाहिकें नरकासुरको नास ॥

* ॥ चौपाई ॥ * ॥

रामकृष्ण आदिक यदुवंशी । हेंवै ठेजँह कृष्णप्रसंगी ॥ तँह सहसा सहि आवत देखी । उठि
मोदित ते सरुचि सुभेरी ॥ अर्ध पाय दै मोदित कीन्हे । जथा उचित शुचि आसन दीन्हे ॥ आसनस्य
सहसास सोहाए । सामदं प्रभुसो बचन सुनाए ॥ जो हित हेति इच्छां हम आए । सो प्रियबंधु
मुनऊ मनभाए ॥ महिसुत नरकासुर बलभारी । है अतिपापकर्म अधिकारी ॥ तपि विधिसों

वर पाद आयानो । हे अबध्व सुरगणसें जानो ॥ सुरबंधर्व अक्ष अपसरगम । अहमिधि देइ तिन्है
 दुखनहिपम ॥ हरेसि अदितिके कुण्डल सोडाकुदिल कलकी कुमती सोडा ॥ सुनि मन बचन मोदसें
 यागी । करऊ तासु बध सुरहित लागी ॥ खगपति इत आए मन मोहन । करऊ शोध तापें
 आरोहन ॥ चक्रपाणि चतुर जगनेता । बधऊ ताहि नैकतकुल जेता ॥ दश शताहकी बाणी
 सुनिकै । कृपासिंभु प्रभु मनमै गुणिकै ॥ सतिभांसां सह आनद दाता । घटि खगेस्यै विंभुवन
 चाता ॥ साथहि चले शक्रके मानद । गहि निज आयुध पूरित आनद ॥ इंद्र उपेंद्र धनुष सरधारी ।
 जरथ चले गगन पथ धारी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आबह प्रवहिहि आदि देवायु मार्ग जे सात । कनसें तिनपै चलि भए इंद्र उपेंद्र बिभात ॥
 महिसैं यदुबंशीतिन्है लखे ऊर्ध करिगौर । गजपति खगपति सहित शुचि रवि शशि सम एकठौर ॥
 असुर अह गन्धर्वसें तहँ अस्तुति सुनिधीर । शक्र भए निज लोक प्रभु प्राण्येतिष पुर वीर ।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

करि अतिवेग बिहंगके स्वामी । सणसैं तहँ पडजे नभगामी ॥ दूरहिसैं प्रभुद्वारे देखे । षट
 सहस्र भट आयुध भेले ॥ भट गजस्य वाजिस्य सयने । अरू रथस्य पैदर उमदाने ॥ तिन्ह हि
 खेखि प्रभु आनद माने । धनुटकार किए मनमाने ॥ तब लखि प्रभुहि दैत सुरशानी । जानेसि
 विष्णुवेश अनुमानी ॥ गहि कर शक्ति क्रोधसें छाये । सेनासह उठि सनमुख धाये ॥ दीरघ
 शक्ति हेमसें भूषित । सोप्रभुपै छाडेसि मति दूषित ॥ तेहि आवत लखि छष्य खलेदे । शर सुरप्रसें
 बीचहीं भेदे ॥ तब सुरदैत क्रोध अतिधारेसि । गहि बुर गदा दूरसें मारेसि ॥ प्रभु लखि
 बाण गदा मधि मारे । काठि बीचसें महिपैं डारे ॥ करि अतिक्रोध दामवन डांटे । मुरको शीश
 हलसें काटे ॥ मुरको मारि धनुष शरधारे । ताके संगके सुभट संधारे ॥ तिन्हहि मारि प्रभु
 महिपैं डारे । नाचे प्रथमप्रकार सुखारे ॥ दुतिय पौरिके तहँ रखबारे । भिरे आइ ते अति रिसि
 भारे ॥ असुर पंचजन वर बलवाना । दरतिनि सुण्ड उदण्ड अमाना ॥ इद्यशीच दितिमुन बल
 भारी । भिरे आइ तहँ सब धनुधारी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सयन सहित ते असुर तहँ कीन्हे जुद्ध महान । विदित वीर बानैतवर प्रबल प्रकर्ष अमान ॥
 इष घटि वीरनिमुंद तहँ प्रभुके सनमुख आंध । मारत भो दशबाण वर महत कोंधौं शीष ॥

॥ * ॥ अथकरीछन्द ॥ * ॥

निज शरसें प्रभु ताशर काठि । मारे ताहि सात शरकाठि ॥ सो सुभटन सहबाण

प्रसाय । दीन्हेसि शरको जाल बनाय ॥ तव श्रीकृष्णचन्द्र जय रूँछि । उग्र प्रजग्य मंत्रसों
 सीछि ॥ बाण सबै सुभटनके वारि । पांच पांच शर तिनको मारि ॥ दीन्हे मारिभूमिप
 वारि । तव निरुद अति रिसि विसतारि ॥ मारि बाण बरभुजके जेर । शर पञ्जर कांन्हेसि
 चलंगेर ॥ तव शाबिब शस्त्र तजि धारि । शरपंजर प्रभु दए विदारि ॥ तव शरमों रब
 धनुं ध्वज भेदि । अह हंय शोस सृतको छेदि ॥ भंड निरुदपै भस्त्र चलाय । कीन्हे तासु श्रीश
 चिनु काय ॥ सत्वर दीरघ शिला उठाय । मारे स प्रभुपै सबल चलाय ॥ लखि श्रीकृष्ण
 बाण बर वाहि । वीचैहि दए चूर्ण करि ताहि ॥ प्रभु चलाय बरबाण अलेष । राक्षस
 सेना कीन्हे शेष । हयग्रीव तव अति रिसि धारि ॥ कीन्हेसि दीरघ वृक्ष उछारि । हो
 हय धामं जासु विसतार ॥ सो प्रभुपै डारेसि द्विडसार । प्रभुतजि शिघ्रग बाण हजार ॥
 कांठि किए तोहि तिलके तार ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि गरुडध्वज कृष्णप्रभु मारि एक बरबाण । हयग्रीव बरवीरको कीन्हे तनवितुप्राण ॥
 पंच अगहि आदिक सुभट आठलाख बरवीर । मारि तहां श्रीकृष्ण प्रभु शोभित भेरणधीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्राग्योतिष पुर ध्वंसन करिकौ श्रीश्रीकृष्णचन्द्र मुद भरिकौ ॥ मध्य कक्षमें हो कवि छायेन नाम
 धवनद विशद बमायो ॥ नरकासुर असुराधिप ताको । मंजु महत पुर पयधर भाको ॥ ताके पास
 गए कृष्णि छावत । पांचजन्य शुभ शंख बजावत ॥ धुनि सुनि तन धनके मद मातो । नै नरकासुर
 अति रिसि रातो ॥ सोह हेम रतननि मय भारी । पूरित शस्त्र सहस हय धारी ॥ रथ विशालपै चढि
 धनुभारी । प्रभुके सनमुख चलो सुखारी ॥ विविधि भांतिके आयुध धारे । शुभट असंख्य बीजबल
 भारे ॥ चले संग बलकत गरबीसे । हयं गज रथ चढि बने छबीसे ॥ बीर पदानी धीरनि कीले ।
 चले बाघसों क्वि हरकीसे । घनमादोपम बाघ बजावत ॥ घने समान निसान घुमावत । मो
 ससैन तहँ बहँ हैं सामो ॥ सारंग धर नागांतकगांभी । सैनिक सुभट सहित नद पाग्यो ॥ अख
 अनजिने मारण लाग्यो । शक्ति शूल शर पास सोहाए ॥ भिंडिपाल बर नदा बनाए । तोमर मल्ल
 आदि हैं जेतो शंख चलाए ते तहँ तेतो ॥ सीकित सुभट सुगौरव कीन्हे नभ माहि पूरि शरणाँ दीन्हे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कृष्णार्जुन कृष्णप्रभु गहि कौदण्ड विशाल । तजे अमन्त असोच द्रुप कौण्डिककुलके काख ॥
 अखजाख राक्षसके निज बाखगसों भेदि । शिरभुज कठि पग भूमिपै डारे तिनके छेदि ॥

॥ * ॥ नरतोमरहृन्द ॥ * ॥

शिरक टे कितने डोलाही । धर मार कितने बोलाही ॥ भुज कटी जिगकी दाहिनी । ने
 वामकर अंग पाहिनी ॥ ली हरे अनुपम भावसों । हें कितें भट भरचावसों ॥ भट जितें
 निमिषरराजको । हें दहत दापद राजको ॥ ते समे प्रभुके बाणको सब गिरावै विनु प्राणको ॥
 गज बाजि रथ धनु बाणसों । प्रभु दए काटि विधानसों ॥ परसैनमें जेते रहे । गहि एक
 विनु भेदे रहे ॥ यह दया लखि निज सैनकी । अतिदुसह विपदा सैनकी ॥ असुराधिपति
 जय घोषसैं । कोदह गहि अति कोप सों ॥ बर दिव्य अस्त्र बनावसों । भे तजत
 प्रभु पै चात्रसों ॥ सो अस्त्र चक्र प्रलायकौ प्रभु दए काटि बचायकौ ॥ फिर तासु ध्वज हथ
 सूतको । धनु कवच रथ मजबूतको ॥ प्रभु मारि बाण विवेकसों । करि बज्र दीन्है एक
 सों ॥ नै विरथ विधनु सुवीरसों । बर तजेसि गूल सुधीरसों ॥ सोउ बाणसों प्रभु काटिकै ।
 असुराधिपतिकों डाटिकै ॥ तेहि युद्ध विधि इमि ग्रीष्मिकै । भे मुदित निज अब रक्षिकै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उग्र प्रभाव उदग्र रुचि चक्र अमोघ चलायानरकासुरको बध किए हृष्णचन्द्र यदुराय ॥
 नरकासुरनिज सुवनको मरण देखि दुख पाय । कहत भई श्रीकृष्णसों भूदेवी तह आय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

नाथ याहि तुम दीन्हैउ मोही । तुम मारेउ एहि अवगुण जोही ॥ हो तुम खेहाचारी सोई ।
 क्रीडा करऊ बालकी नाई ॥ अशिति देविके कुण्डल जोई । नरकासुर ल्यायो रिसि सोई ॥
 हो यह मोहि दए हो ल्याई । लीजै यहि प्रभु रोष बिहाई ॥ राज्य रतन धन हथ गज नारी ।
 लोड तासु लीला बिसतारी ॥ इमि कहि पृथिवी कुडल दैकै । गर्द प्रभुहि लखि आनद लैकै ॥
 तब प्रभु अति सुयमासों भेले । मोदित जाइ कोसगृह देखे ॥ सरकत नखि आदिक नखि जेते ।
 लखे अस्त्रजहां प्रभु तेते ॥ मुकुता अरु प्रबाल हविहाए । चंद्रकांतके डेर लगाए ॥ जान लखे
 कलधौत सोहाए । लखे अतौल न जतत बताए ॥ हो नरकासुरके घर जेतो । प्रजन बनाधिपके घर
 तेतो ॥ कोष सदमके रक्षक भाए । पृथक पृथक सब प्रभुहि लखाए ॥ तिनमें जितनो सुवर्ण ल्यायो ।
 हृष्णचंद्रके मनमें भायो ॥ राक्षस लखे ग्रीस चढाई । दीन्है सो निजपुर पडै चढाई ॥ फिर कधिपति
 राजको आदर । चढि गे नखि पर्वतपै सादर ॥ बैठे पाँचराजपै सांनद । लखत भए तहके सब मानद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मध्य मैलमें कन्दरा बनो विषद रमणीय । रतनेमयो आकाश तहाँ विधित अति कजणीय ॥
 सुरगंधर्वनकी सुता तह देखे अभिराम । सोरह सहस सु एक शत कंचनकीसी दाम ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

ते सब नरकासुरकी आनी । ब्रती कुमारी तेजस सानी । ते सब प्रभुहि पेलि प्रभु श्रीन्ही । अति मोदित प्रभु अजलि दीन्ही ॥ अजलि नाथ कृपास निहारी । कृपा कटाक्षहिसें असुरारी ॥ सुन्दर दिनमथि सुरधि सुदिनके । पाणि यहण किए प्रभु तिनके ॥ दै अजलि ते सरस सथानी । कहत भई प्रभुसों भर बायो ॥ नाथ एकदिन भारत आई । मेहे जैसे बचन सुनाई ॥ सोई बचन महत सुनि आरस । कहि बेहे भर बिदित विशारद ॥ ब्रह्मचक्रधर खगपति गामी । गदा धनुष गृहि अन्तराज्यी ॥ ससयन नरकासुरकों मरिहैं । तुमहि प्रिया करि मोदित करिहैं ॥ नाथ आजु तुम सोई कीन्हे । जै प्रभु अजलि दरशन दीन्हे ॥ यह सुनि कृष्ण प्रेम अति गृहि कै । उचित बचन प्रिय तिनसों कहिहो ॥ तहे इन्द्राक्षस तह रक्तक । तिनकों दै आज्ञा प्रभुदत्तक ॥ सिबिका जान सवाह मगाए । सादर तिनपै तिनहि चढाए ॥ सँग करि सुभठ समूह सोहाए । बेगि द्वारिका तिन्है पठाए ॥ तेहि चिरिकी ओश्रुम सोहावनामणिमै अरचित हो भनभावना ॥ तापै जे असबावर जंगमा हें कीन्हे अति अनुपम संगम ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पक्ष राजते अतारि प्रभु तिनहि सहित सो गेल । गृहि उखारि धरि गरुडपै गृहे स्वर्गकी गेल ॥ प्रभु आज्ञा कृहि बिहंगपति मेरो परि जै जाय । शक्र सचीके द्वार पै उतरत भए सचाय ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

अतारि गरुडसों प्रभु सतिभौमां । मे जह शक्र सची अभि रामा ॥ यथा योग जहें यत्र जिनसों । बन्धि मिले तह ते तिन तिनसों ॥ कुशल प्रण कृहि सुनि मुद लीन्हे । प्रभु सा कुण्डल शक्रहि दीन्हे ॥ जै कुण्डल सह सची सुखारे । सतिय कृष्ण सह इंद्र पधारे ॥ गए अदितिके सदन अनंदे । दै पुग कुण्डल सुधि पग बंदे ॥ इंद्र उपेंद्र सची सतिभौमहि । दिव मरिह पासन कर अनिरामहि ॥ अक्षय दीन्ही अदिति सुमाता । सुनि प्रमुदित मे दोऊ धाता ॥ समाचार तब इंद्र सुनाए । जेहि विधिके मंत्र कुण्डल ख्याए ॥ सकिय अदितिसों शंसन लक्षिके । श्रीश्रीकृष्णचंद्र मुदगृहिके ॥ साहस त्रिस शक्रमे जैके । चटि खगपतिपै नन्दन ज्यैके ॥ पारिजात तह सरस सोहायो । पुष्पित तह प्रभुके संगभायो ॥ गृहि अतारि तेहि लीन्हे वापन । चले गरुडपै धरि मनभावन ॥ सो सुनि शक्र रोकि रिसि राखे । बूझि प्रभात कछु नहि भाखे ॥ सुर मुनिगणसों अस्तुति भाए । सुनि श्रीकृष्ण द्वारिका आए ॥ कृष्णआदि सब यादकर्मणसों । मिले यथोचित गुरु लघु जनसों ॥ सह परिजात वेदसों पाये । वज्रि पूर्ववत विहरण लागे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करके यह अध्यायमें हस्तधरके प्रभाव । अरु द्वारावति पुरीमें प्रका गनन सखावनी ।
नरकासुरको बध बज्रि सह सरन्य परिवार । तियसमूहको लाभ फिरि बरके सह विचार ॥
स्वर्ग गनन फिरि कृष्णको शक्त अदिति संभास । बज्रि आरके द्वारिका बरके विशद विचार ॥
सत्सिधीका श्रीराजनहाराजाधिराजभोजिततारायणस्याग्नाभिनाभिना ओवन्दीजनकाभीवासि
नोकुलनाभात्मजेन नोपीनाबेन कविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पशेखरकासु
रवधोनाम निशतख्यायः ॥ * * * * * ॥

॥ जनमेजयउवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कृष्णचन्द्रके चरित सुनि मोमन दृष्टि लहै न । ताते कहियै और अरु चरित सुमुनि तपयेन ॥
॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

सुनि अर्पवचन कहे सुनि आज । किए कृष्णप्रभु फिरि जे कारज ॥ एक दिवस प्रभु अमरजानी ।
सहित रकुमिनी विभुवन स्वामी ॥ रैवत गिरिपै जाइ सुखरे । रकुमिनीको समत अनुसारे ॥
उत्सव कीन्हे निज अनुरूपा । आनद अैन अपूर्व अनूपा ॥ तहां वासमह विषद रचाए । संपूरण
परिवार बसाए ॥ द्विजसमूहको अरचन कीन्हे । करि सनमान दान बज्र दीन्हे ॥ चन्दीजन अरु
अरबी जेते । प्रभुसो लहे दान तह तेते ॥ बंधुवर्गके करि रुचि रोषितोबेस बास बसु दिए धर्षाधित ॥
बज्रविधि तह उत्सव करि मोदे । सह कंसच करि वास विनोदे ॥ रकुमिनीके घरमें तह सागद ।
बैठे रहे कृष्ण प्रभु मानद ॥ मेथर सुनिवर नारद आए । पूजि जषोषित प्रभु वैठाए ॥ पारिजातको
पुष्प सोहावना दिए कृष्ण कह सुनि मनभावन ॥ कृष्ण अपूर्व पुष्प सो चीन्हे । प्रभुसहित रकुमिनि
काहँ दीन्हे ॥ रकुमिनि पति ईछा अनुसारी । भागिनि भावन भावविचारी ॥ राक्षस भई शोशपै
नाको । ताते लहो दुगुण बरभाको ॥ तब नारद रकुमिनिसें बोले । पारिजातकी सहिजा लोले ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देवि तुम्हारे योन यह पारिजातको फूल । ईहित सौरभको सदां देनहार अनुकूल ॥
शीत उष्ण ममसानको देनहार सुखदाणि । बांछित रसको अवत यह मनकी वांछा जाणि ॥
सुधा पिपासा जराको हैयह ब्रह्मजहार । संवत सरपरजन्त यह ईहित देस बिहार ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

रामि दोषसन गुनन उजेरी । रक्षति पुष्पके बज्रदिशिबेरी ॥ अस्तिनि जना अरु सखीसीहारी ।
रुद्रदि आदि सुरतिव सुखदारी ॥ पुष्प एक प्रतिसंवत धरि । लखि सोहाव पण्डित विचारी ॥ वा

यह फूल कृष्णके करसें ॥ लहेऊ देवि तुम अति आदरसें ॥ सांच बचन मानऊ मनमाही । तिय न
तुंहहि सम कोउ जनमाही ॥ सतिभांमा आदिके जे रानी । निज सुपमाकीहि अतिभांमा ॥
तिनके सतिभांमा बरमानो । निज सोहागकी सगरव जानी ॥ तुव सोहाग लखि कहे नहि हैं ।
सतिभांमा लहि हरि लजे हैं ॥ निज सोहागकी ईहा तजि तजि । लहि हैं अब सब तियगुनि लजि
लजि ॥ गारदगुनि हिम कहु अभिलाषें । यह सुवचन रकुनिमिसों भाषे ॥ आबुहि पतिहि एक
जिय जानें । और तियन कह्यो न्यारो मानें ॥ 'सो सुनि सखी सकल मागिनिकी । सति भांमा
आदिके रानिनिकी ॥ कांही जाय निज निज स्वामिनिसों । वज्रभांमिनि भांमिनि कामिनिसों ॥
सो बिरतांत सबै तिय सुनि सुनि । चिन्तित भई चिन्तनै गुनि गुनि ॥ सखियनसें सो सुनि सतिभांमा ।
रूप प्रेम गुह्य बुविके जाना ॥ मानि अमान मानकरि मागिनि । ठैनि अटाय ठानकी ठागिनि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भुवन बसुन सु अंबसरिस तेहि नै सरिस उतारि । प्रविशो कोपनिकेतनै बसुन सेस मुचिधारि ॥
तनु असुक मुचि सेतसों वेष्टि भाल्य शुभदेश । सेपि अरण चन्द्रन कियो गोपित बन्दनभेष ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

जभि उवांच सेनि रिखि राती । त्यों तरेरि भांति अबदाती ॥ सुनिरि सुबिरि सिरकषण
करि करि । अलपति फिरा देससें भरि भरि ॥ धरि करतखपें चारु कपोलौतकि अनिनेष सनक
नहि बोखें ॥ सुपति सेजपै उठि फिरि सोवै । अति उदवेग दशा संभोवै ॥ आसनि गुनै कमल
संपूरण । तजति मखनसें करि करि चूरण ॥ चरण अंगूठासों नहि खेखति । समुक्ति सनुजि अमर
वतें तैखति ॥ उतै कृष्ण प्रभु अंतरजानी । यह बिरतांत जानि नहि खानी ॥ रकुनिनिके गृहसें
उठि आतुर । पट्टे प्रदुच्छि मुनि ढिग आतुर ॥ चिन्तित संकितसे मन भाए । सतिभांमाके आसय
आए ॥ दूरहिते समाहितजाके । लखि अनुभाव भावबर भाके ॥ वपें अरण बलि आनंद साने ।
अलिके खोठ जाद नगिजाने ॥ अब ब डारि बदनपें अंचल । रही सोय तव आतुर अंचल ॥ जाद
पिकेंहे प्रीअव सीन्हे । नैन सैन सखियनकह कीन्हे ॥ 'हो जैसे तैसेही रहइ । मन आगनको भेदन
कहइ ॥ रनिकाहि कौतुकके रंग पाने । बीजम मंद डोषावन लागे ॥ उत जो पारिजातको पदपेन ।
हैं सीन्हे कर कुसुम सोहाग ॥ तेहि प्रभाव शुभ सौरभ नीको । बगवौ अरनै मोदइ जीको ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तेहि सवर्षसौरभ सुबद कोकहि प्राय सुजांमि । सतिभांमा नै अकित उठि बैठो अबरज मानि ॥
यह सौरभ जोहि पुष्पको परतमही पहिचानि । आबत कितसों सखिनसों कहत भई अनुमानि ॥

सखीगण सुनि कृष्णके भय सका नाह कहु भाख । साक सत्यहि भरे प्रणमित शीख
 नहिपै राखि ॥ ताहि परिमलकी प्रभाव तहँ चहुँदिशि चलफेरि । लगी हेरए सत्यभामर
 परे प्रभु तब हेरि ॥ लखतहीं चल कमलते कठि चलै अलिजल बूद । पैलि जेहि
 श्रीकृष्णके मन कियो मनमय बूद ॥ नौरखों करि तौर तिरहेँडौरसों सतुराय । फेरि
 मुख धरि पाखि मलपें रही शीख नवाय ॥ तजतही तिथ नैनतेँ जौ बारि अति अनलाच
 पाखि पुठमै ताहि खै प्रभु लए उरमै लाय ॥ बारि हियसों लांचके विजप्रेम बर
 दरसाय । कहे बचन विनोत विधिवत गहे पठता भाय ॥ प्राणप्यारी हेत कोहि चल को
 कमदतेँ बारि । तजति है मन खेददायक गोच पित सञ्चारि ॥ सुरंग बसम जगारि कत
 धरि सेत सारी बेग । देव पूजन बिना बैठिऊ धरि अनुचित भेग ॥ भूर भूषण रतनके
 कत धरे दूरि जगारि । सुखद सिनरे सौज हठि कत दिहैऊ ठिगसों टारि ॥ नाम दिन
 लहि आधरण सुम हज्र विनु मृगनेमि। बदन संसिनिविभात अति सतिमानहै पिकनैनि ॥
 पूर्ववत खलि सरस कन नहि देतिहै मोहि मोद । भूलिसो कत गर्हो तिथ आजु
 सकल विनोद ॥ जानि किंकर आपनो मोहि करऊ सूधे नैनामजु मन मनमचन मनमच
 बालखे जयजैन ॥ कृष्णके कथ बचन सुनि कथतनी करि कथमान । कती नै कतकथ
 करि कतकथको अनुमान ॥ कोप कचिम मोचि कपिणी नेहकी कथनीय । कृपाकी
 करि क्रिया बोली करवि मन कमनीय ॥ नेह निजकी नियुतासों नाच धारो नेह ।
 रही जानत आजुलों निजनेह सहज अवेह ॥ देखि सुनि परतसो बह परो अब
 पहिचानि । बचन कहियो सधुरसों तुव चातुरीकी बानि ॥ *~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मेपै करऊ सनेह जो है ताको अनुभाव। दक्ष पुरुषको कितब जो ताको विशद बनाव ॥
 सुह हृदय मन ओरसों गहे नेहकी नीति । हमसों भावमहो गहे सहज लोककी रीति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सहज नेहहो मेपै जोज । अब तुम औरहि अरपेऊ सोज ॥ नाच हमें नहि सुखकी ईहा ।
 तप करि है नहि निर्जन ठोहा ॥ निमु पाए पतिआज्ञा नैको । उचित न तिथको तपव्रत एकौ ॥
 पति आज्ञा विनु हठि तिथकोई । करै क्रिया सो निहकल होई ॥ तति मोहि देऊ अनुभासन ।
 करै सुचित नै ब्रत उपवासन ॥ इमि कहि नैन बारि भरि प्यारी । तजन खनी नै महत दुखारी ॥
 पतिको पीत बसन नहि भानिनि । ईचि दोऊ करपै धरि कामिनि ॥ बदन सनैन मूदि सुखदाइनि ॥

मङ्गु मनोहर भाव लखारनि ॥ सो खलि काखरानि मुखसागर । बोले सतिभाँनाखों नापर ॥ नानि
निनाम अणिनिके भारण । दहउ नात मन सो केहि कारण ॥ कहिनिच राउ प्रिय कोसनि ।
अभिमख बचन सुधासुमं आचिनि ॥ सुनि पतिवचन प्रियः सतिभाँना । पतिवचन अणिनि सति
अभिराना ॥ चह गर भरे हरेखलि बोली । मानदानको कारण खोखो ॥ मन सोखन सुनि सु
कोन्हे । मन सोमनिनिमै नुरु खीन्हे ॥ मन सोखन खलि सबै सिखाँहीं । सत्या सङ्ग प्रिय कोउ
नाहीं ॥ ते सब दया खलिसें सुनि सुनि । हसिहँ हनहि न्यून अब सुनि मुनि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पास्त्रिजातको कुसुम जो अनुपम अति सुखदाय । नारद मुनि तुम कह दए समुद लखे ख्याय ॥
सो छै तुम माको दए जो अति तुमहि पिआरि । भोपै रझौ पिआर सो हियने थ्यारे डाखि ॥

॥ * ॥ अथ करीहन्द ॥ * ॥

अब तुम दए सुखन समनामि । तब मुनि अधिक प्रिया तेहि जानि ॥ किए तासु अकुनि
बहुभाति । सो तुम सुने मोखसें दाति ॥ अकुति किए करै मुनिराय । तुमहँ सुने सुनौ
गहि पाय ॥ पर मन भास्यहीनिको नाम । कत खीन्हे तहँ मुनि तपधान ॥ गौरव तासु
न्यूनता मोहि । अरु कहे बहोरि बहोरि ॥ सो तुम सुनो बोप अधिकाय । चह सु
नेसो सुखसुख ॥ तमै सुनउ कहुँउ परिचाय । देहु निदेश करउ तब जाय ॥ जाति
बर्षने नै चलि हीन । दाहिजो ताते मरिबो पीन ॥ मानसहित नीकी संसार । कीन नए
मरिबो अत्रिआर ॥ सुनि सतिभाँनाके ए बैन । हंसि बोले प्रभु राजिवनेन ॥ सुनहु प्रिया
पर सुखन सखि । निअकर कीन्हे नारद ताहि । इतभोई मन दोष विशाल । मुनिहँ
बदलि दिए तेहिखाय ॥ तमअ प्रिया मन सो अपरदष । नानि लेउ बन विने करिधि ।
पुअप सुपारिजातको एक । ताके हेत मही तुम टेक ॥ तजउ नाम देहौ सुखदानि । पारि
जातके तब मोहि जानि ॥ तासु कुसुम खैसै मनसात । अिहरउ कामिनि अथा विधाना ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रियपतिके ए वचन सुनि सतिभाँना सुखपाय । कहतभर इनि चाबनों छै कै सौम्य सुभाय ॥
पास्त्रिजातको प्रिय जो लखेसोनाते ख्याय । दँउ नाम नै अपुनयो साँचे नेह सखाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ते सुपारिजातके एक भाविनि । ताँउ कहुँ है विदित सोखनिनि ॥ तब तुमकोहिरीनि

निपुण्य । सुनि करि हैं सबलोक नडार्द ॥ कहे तथासु कृष्ण शुभकीनी । चक्र साष्ट्र चर सगपति
 गौरी ॥ भई सरस तब ज्ञान बिहार्द । सुनिभांसा यशिनुखी सोहाद ॥ सुनिभांसा सत्र आनद
 मारि । नाने कृष्ण समुदतठ आर्द ॥ करि निति कृत्य पाक म्दह चाय ॥ तब तह प्रभु मुनिवरहि
 बलाय ॥ करि सतकार यथोचित मानद । पूजे सुनि हि कृष्णप्रभु सानद ॥ हेनपाषणों प्रभु जल
 डारे । कविबासा मुनि पाय पखारे ॥ आसनस्थ फिरि मुनिकह करिके । भोजन करवाए मुद
 धरिके ॥ करि भोजन मुनि आश्रिष दीन्हे । सो सुनि दम्पति आंतद खीन्हे ॥ गारद सुनिकी
 आशा करिके । भोजन किए कृष्ण मुदगहिके ॥ प्रभु निदेश रहि प्रिया सोहाई । भोजन कीन्ही
 म्दहै आई ॥ करि भोजन है यथि सुखदारि । राजति भई नामडिन आर्द ॥ सदनमार प्रभुसों
 मुनि ज्ञानी । कइत भये एहि निधिकी बानी ॥ अब इन तात प्रक पुर जाहीं । उल्लस बडे प्रभ
 म्दह माहीं ॥ करि शिवको पूजन चित चायक । करिहै अति उत्तव सुरनायक ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजेदिवसने देरहैं सुमन हमें सुरराज । दिए निमंत्रण चाहिके उत खेके काज ॥
 उत्तराजके फूल यह बीछितको दातार । सखी पूज सहिनी तिखहि नित्य सोहाय बिहार ॥
 ॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

पति कश्यप कहैं अदिति अराधि । करि प्रसन्न पूरण प्रत साधि ॥ मांकेत मार सखी अनु
 जानि । देख भोहि सो मुनि सुखदानि ॥ इच्छित फल जो देह महीन । पूरख करै मोद मन
 जान ॥ सो सुनि करि मारोच विचार । मन्दर निरिको करषि सुचार ॥ पारिजात तहराज
 विख्यात । दिए अदितिकों सो अबदात ॥ पारिजात तहमें गुणखानि । अदिति पाति श्रमिके
 जुष पानि ॥ दर्द समधि भोहि विधि जानि । पुण्य सोहाय अर्थ अनुमानि ॥ दे बतिको निजब
 पक्षात । लई होडाय पतिहि सुमतात ॥ सो निनि कोन्ही सखी सुजाणि । करी रोषिखी
 सो विधिमानि ॥ सुरसरि पार भयो अभिराम । ताते पारिजात यह मान ॥ मन्दर तहको
 सार उदार । ताते नाम भयो मन्दार ॥ कौन दाह यह मूझी कोबम माने कोपिरारहि
 सोया । दिव्यवृत्त सैंत सौम्य सुभाव । घेतन चाह पनीत प्रभाव । एहि विधि पारिजातको खरी
 कहि प्रभुसों गारद मुनिदेव ॥ चहे चलन सुरपतिके गेह । तब इनि बोले कृष्ण सगेह ॥
 सुरपतिकी हम कहैं सुरेश । सो सुनि खोजे सुनि सुभेस ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रभुन कहेज सुरराजसो बलि उचित बेवहार । भीषणकहेज भजाय रहि गर सुभको निरधार ॥
 फिरि मन अरुष सुरेशको कहियो सुनि सुजाणासिद्ध होइजति अरु निनि कहियो सौविधानि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जानदेगि अनंतगुणमय पारिजात जहाम । पूजि तेहि जिनि अदिनि कोइ ॥ १ ॥
 सचोपति दान ॥ तासु दुष्य प्रभाव सुनि मन सत्यभाजो बान । बहति तिनि तेहि कोइ
 कोन्हो सोर विधि अभिराम ॥ दान पुष्य सुधर्म हेत विचारिके सुरराज । पारिजात
 विषय तव दान भेजि देखिं सुवाज ॥ पूजि दानविधान करि फिरि पारिजातहि नाम ।
 भेजि सुन देहिं सुनो उन रहतहैं वह यथा ॥ भारत कहि बलसो सुनि किहेऊ सो अतीत
 देखिं जाते शक सुरतव कछहिं दान सबसोण ॥ कृष्णको ए वचन सुनि हसि कहे सुनि
 शिरतज ॥ कहव हन बजभांति पर नहि देहिंने सुरराज ॥ शकसो एवसनें नामे पारिजात
 सवाज ॥ उताके प्रियहेत शंकर आपु सुरपुर जाय ॥ सचोके विद्यामको करि व्याज
 तव सुरराज ॥ दिएं नहिं सो बिनै करिके जोरिके युगहाथ ॥ शंभु तव करि कृपा नहि
 हठि लिए तववर तौनं । चार मंदरगैलथै तव रचे गिरजा रौन ॥ कोस युग परमानसो
 मकराजको बनबेस । सुबके किरणामिकी गति है न ककु तेहि देस ॥ उमा शिव
 सह जखन तेहि बन विहरि मित्य विभाताहमहिं तजि तँह औरकी नहि गतागत हे तात ॥
 बयो तहैं एक समै अंधक नाम असुर अमान । हप्तें दग्गण सबल तेहि हते शंभु
 सुजग ॥ दियो गेहि जो विचहि सो किमिं तुमहि देहे शक । उभय और विचारि मोहि
 प्रह अना कारक बक ॥ वचन ए सुनि कहे केशव सुनऊ नारद दह । कहे तुम जो बात
 समै भेद है मरतक ॥ शंभु उनसो बडे हैं नाहदिए तो न हि दोष । सचोको सुनि व्याज
 ककु सुनि किए शंकर तोष ॥ शकके लघु अनुज हैं हम लालनीय सप्रेम । बूझि सब विधि
 कोइ शिव तव दिए रँहे सेन ॥ कियो पत्र हन वामसो सो सुनऊ ज्ञाननिकेत । स्वर्गे
 सुरराज देहिं कृपाय पूजनहेत ॥ वचन सो नहि धरव न्हे है सत्य विश्वेश्वर । वचन मिथ्या
 भव होतसुधर्म सोप सुनीस ॥ सुरासुर गंधर्व पद्मन सब हैं न समर्थ । कियोहां पत्र उय ता
 को करे कसोसो अर्थ ॥ जो न देहें आपुसो हठि पारिजात सुरेस ॥ एक पत्र तो करौ औरौ
 सुनऊ सो शुभभेष ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिय प्रियके अनुलोपसो विन्हित जो उर तासु । मारि बहा तामधि सुनो लँहा सुरतव सोहु ॥ १ ॥
 यह सुनि नारद पुपरहे बोले ककु न वेनासादर शंभुसो न्हे विदा गए शकके सेन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहां साह ज्ञानदसो भये । नारद मुनिवर उत्प देसे ॥ सुरसमूह कथिनि चर वसुल ॥

आवत नाम सुपर्ण मुदितमन ॥ जस सिद्ध ग्रंथस्य सोपदेशः । अंतर तुम्बर किन्नर गारे ॥ अथरादि
सुरसौम्य विद्यारी । राजे तं ह निजवद चतुस्ररी ॥ वाय मृत्यु चर नाम सोपदेशः । अति उत्तमं
सुरपतिं शयो ॥ तं ह सुरमंडलको मयि पावन । सिंहासन अति उच्च सोपदेश ॥ तापै नौदीपति
आसीत् ॥ देवदेव परंभव अहोना ॥ मदिहि आदिक नए हनिवाहे । सेवै तं ह पञ्चदिशिरो
दावे ॥ सह अथचार यत्र मुदलोन्हे । सविधि-ग्रंथको पूजन कीन्हे ॥ ह्यै प्रसन्न ग्रंथर सहस्राना ।
शान्त-प्रसन्न-वलि ने निजघामा ॥ तव जे सब आएहें तेहां । ते अहै विरा मए निज नेहां ॥ सहित
सखास्य सुरपति सेवे । आवत तं ह नारदकहँ ओरो । उठि सहसाच सुमुनि कँह पूजे । आसुनस्य
करि-अशक्ति-कूजे ॥ तव सुरपतियों नारद ज्ञानी । कहत भए एहि विधिकी बानी ॥ सुमज्ज यत्र
यत्र यत्र सोपदेश । हमहिं कृष्ण करि दूत पठाए ॥ कहुकाज हित भुक्त साची । सो सुनिए
प्रेसवतगामी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नारद मुनिके सुनि बचन यत्र कहे हरपाय । कहुन कहे केशव कहा सो कहिए मुनिराय ॥
सुमज्ज नरेन्द्र मुनीन्द्र तव कहे इन्द्रसों चाहि । तव लघु अनुज उपेन्द्र प्रभु लखन नए हम ताहि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुरतको लैकूल गएहें । सो हम निज कहं तहां दएहें । अति अपूर्व लखि कुसुम सोपदेश ।
विलसित भद्र तिथा सब चावन ॥ पारिजातके गुण मनभाए । सह उत्पति विधि उन्हे
बताए ॥ अर पतिदान वेवस्था जैसी । सविधि सुनाए सो सब तैसी ॥ सो सुनि एक कृष्णकीबामा ।
आनिनि पतिप्यारो सतिभामां ॥ सो पति दान धर्म अभिलाषी । पतियों आंचन भद्र सुसाथी ॥
अति अभिलाष तिथाको जानो । हमसों कहे कृष्ण मुददानी ॥ नारद तम सुरपतियों जार्द । मम
प्रणाथ कहि कहेड बुजार्द ॥ वै मम गुरधाता सुरचाता । हम उनके सब अनुज विख्याता ॥
सुतसुम सदा दुखारन जोग । लज्जरो अनुज कहत सबलोग ॥ अनुज बध उनको सतिभामां ।
पारिजातको बण सुनि आंन्य ॥ तेहि लखि दान सुधर्म उच्छाङ्ग । करि चाइति सो अनुपम समङ्ग ॥
धर्म हेत अर बेरि हितार्द । वृष्णि देहि सुरतबहि पठार्द ॥ नारदसों यह प्रभुको बानी । सुनि बोले
सुरपति अनुमानो ॥ सकल प्रभु केशवसों कहि सुनि । फिरि मम बचन कहेड नारद मुनि ॥
सुरतह आदिक जितक पदारथ । मम सो उनको कहउ अथारथ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

असौ कार कारज सकल निचन सहित इत आय । आजी नारहि विनिमो सो नारहि नहि पाया ।
अधिक पदारथ स्वर्गको लख्य काजके हेत । तै जैवो नरलोकमें अनुचित ज्ञाननिकेत ॥

॥ * ॥ अथकरीहन्द ॥ * ॥

विरहे बेधा जो अहि लोकासकल पदारथ दुख सुख बोका। ताही लोक तासु अधिका।
उलटि सकी को सो बेबहार ॥ जो हम पारि जात उत तात । भेजि देखि तो सुनि कह्य
बात ॥ करता कोपि देखि मोहि थाप । करै सुमनस निदरि अथाप ॥ ताते तात कह्य
मन मानि । कहे बात सो अनुचित जानि। उतै पदारथ जिते अदोष। तिनसों भोगि करै
सतीस ॥ इतै पदारथ जे अथदात । भोगिहै तिन्है आद इत तात ॥ नारद दृष्ट भूमिये
आद । आनिबभोजन किए अघाद ॥ ताते न्है उनमत्त मोटाय । भए पाप रत पयो
खलाय ॥ गहे मामुषी बुद्धि सचाय । इली बसिभे ज्ञान भुलाय ॥ बडे बंधुको, बैसे बेन ।
कहि पंठए तजि लाज सचेन। पारिजाततह नहि पै पाय । नहिजन सबे मोद अधिकाय ॥
पाद स्वर्गको फल उत, बेस । तजै स्वर्गको रंहा लेस ॥ मख तप धर्म करै नहि कोय । तह
प्रभावते निरभे होय ॥ जरा मृत्यु आदिक जे इति । तिनकी लहे न कोज भीति ॥ ताते
पारिजात सुख दान । नहि देखै हम नहिपै जान ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मृत्युलोकके जोगहें जितने बलु बिभात । भूषन बसन विचित्रमणि सो हम देखै तात । देख
राजके वचन सुनि बोले मुनि परवीन । औसि कहव हम तुम कहे जे ए वचन अहीन ॥
तुम सो बूजैहीं विना हम उतही समुजाय । कहे शक दीन्हे न तरु संभुहि विनै सुनाय ॥
तब पै बोले शंभु हे गुर नहि कीन्हे रोष । हम सो तरु लीन्हे विना करिहै नहि सत्रोष ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

कियो पद हम बांसों सो सुनऊ ज्ञान निकेत । स्वर्गते तरुराज देखै ल्याय पूजन हेत ॥
वचन सो नहि व्यर्थ न्है है सत्य विश्वेबीस । वचन मिथ्या भए होत सुधर्म खोष सुनीस ॥
सुरासुर गन्धर्व पन्नग सर्व हीन समर्थ । कियो हों प्रण उद्य ताको करै बल सों व्यर्थ ॥ जो
नदेहें आपुसों हठि पारिजात सुरेश । एक मन तौ करौ औरौ सुनऊ सो शुभभेष ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनुलेपनसों सधीके चिन्हित जो भरतासु । मारि नदा तामधि सुनो लेहौं सुरतरु आसु ॥
सुरतरु लेहै औसि वै जिति देखौ सुरराज । ताते संव विचारि कै करो उचित जो काज ॥
सुरतबंदीजै कथाकह सधि उचित बेवहार । हिततुष्टार भेन संव यह परम संवको चार ॥

॥ * * * चोपाई ॥ * * *

नारद मुनिकी सुनि यह बाणी । रिसि करि कहे एक अभिनामी ॥ जेठो ब्रह्म सहेदर गौहीं ।
 यह विधि कहे हाथ जो कोही ॥ ती प्रभु मुनि बेषहार कर्षाई ॥ जैसे नीरस अन्न जहाई नान प्रथ
 कार बजत बैकीं गे ॥ बरबसों सो सब हन सति लीगे ॥ जब भृगुसुर अभिवाक्य भारी । आये मोसों
 सरस प्रवासी ॥ तब सहाय हित उगहि कोलाए ॥ बूजि कछू नहि तब वै चार ॥ देवासुरके मर्द
 सरस । तब वै संरेम सम हित आर ॥ कौतुक देखत है दिन ठाठे । बडे कहै स्यावरवाडे । उमसों
 भिरो आर नय जचहीं ॥ खरे निदान सुनो वै तवहीं ॥ अजुंनको संख ली मंदराए । सम प्रिय कांडिब
 बन भरवाए ॥ मन पूजन बषहार मिठोये जो प्रमसों गिरिबर पुत्रवश्ये ॥ बरिसे बर्धन मन्न आप्रनाग
 कीन्हे तौम तिजे पुर जाना ॥ चौर बजत अब कहै लणि काहिसे । सममें समुक्ति समुक्ति सुभरहिसे ॥
 हन बिबह मति कषजम राखी । नारद तुन सबदिनके सोखी ॥ अब मन उरवै नख प्रहारण ।
 कहे हाथ हठि तियके कारण ॥ राजस नामस मुखनिहि भार । तिसहित कोसी कत्यमुहार ॥

॥ * * * दोहा ॥ * * *

राजस नामस काम तिय कौधिक है तपधैम । जावस वै केशव कहे नुरबन्धुहि रमिधैम ॥
 कश्यपके अर दसको कुलकी जे है रीति । ताहि छोटिके सब गहे नारद सुनऊ अनीति ॥

॥ * * * चापाई ॥ * * *

कहे विचारि बचन यह बेधा । जो जगकरता सरस सुमेधा ॥ सहसब सुत तिथिगए जगिमाहीं ।
 एक सुबधुसरिस कोउनाहीं ॥ भाइ समान न हित कोउहोई । कश्यप चोदिति कहे बहै सोई ॥
 तिनमें सरस सहेदर भाई । करत सदां त्रिनुकपट हितार् ॥ अब यहि संजिपित्त कहे जाता ।
 है जलवास किए सम जाता ॥ ए केशवके बचन अघायक । है निजुंति नहि सुनावै लोचक ॥
 निज आनसों निज प्रभु तार् । बडे कहे नहि लाज चिहार् ॥ तदप्रि प्रयोजनवसि कहि आवै ।
 ताने कछू कही सति भावै ॥ एकसमै वै धनुष चटार् । खरे रहे ठोसनि सोरि ॥ आदि कश्यपरि
 निजिचर आर । औचक ज्या काटेसि दुसदर ॥ लगे तोर तब तुरित पंचारि । मरने मूरि पसो
 सिरन्यारे ॥ तब हन तहो हपाकरि आए । तनसों सोस लगाइ जिचाए ॥ बसी नकछु प्रभुना मेहि
 चरमै । बिषु कहारि मुदिनै जनसै ॥ जो मन भाग रझो बसुका मरि । जगै लखै प्रथमनाम ॥
 जब असुरवती भई सोरार । तब हन उगै जानि लखुभारि ॥ प्रथम सवार न लखे । लखै सोही
 खरे जरापिहे राजी ॥ * * * * *

॥ * * * दोहा ॥ * * *

लखु है वै मन नेहकी जपरकहि मेह । सोज हन कोहि सके जानि लखुनहि मेह ॥

पावजयी अरु मान्य पुढ अरु सरवन्न कज्ज ॥ आगत हे वचनों उन्हे अब पहिचाने अज्ञ ॥

॥ * ॥ अथकरीकन्द ॥ * ॥

अथ सादर नारद मुनिराय । कवी कृष्णसौ एहि त्रिभिजाय ॥ वज्र दिन सति मज्जा
अपराध । अब अहि अक्षय नेकुपल आध ॥ तारे भावे अब मनमाहि । तेन अदि चात्रे अह
अरुमाहि ॥ अदिसे नारि लेहि वै आय । अकलम वा गदाचलाय ॥ तापीके हम वाइर
सुस । जेहि प्रकाश वनि आरहि तव ॥ सरब जेष्ठ प्रीति सब नाखि । गुरता सधुता न्यादे
राखि ॥ विनु जीते अदि दे हों तात । पारिवातको आधो यात्र ॥ इतनो उनयो कहेड
धुभाय । नति तववर लेआहि घोराय ॥ सुनि महेइके वचन अमान । बोले नारद
सुमुनि अथाना । सुरपति तुज सब विधि नतिमाना सुनो कहे जो हम व्याख्यान ॥ विंधु विरोध
न नीको होय । अह करि लछोन आगद कोय ॥ सुबुधि अरुमै कारज सोय । जाको
अन्त सो हावस होया ॥ अदि कारजको अन्त मखोन । करि विचार देखे परवीन ॥ कारण
रूप जैन प्रभु एक । परे प्रकृतिसे किय विवेक ॥ अगुण अथक आहि कऊबेद । तासु
अक जो भय अखेद ॥ अयऊतपति कर जे सुनु जिणु । तासु आतना हो प्रभु बिसु ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जीव जातहे जहां लो तिन में चेतन रूप । पावन आत्मा आपुहें न्यामक विणु अनूप ॥
अरु प्रकृति अथक जो अथक रूपहे तासु । गिरिजा सीता हकमिनी नाम प्रगटहे जासु ॥
करि ताको संसर्ग नै सगुणी निगुणी जैन । करै चाहि कारज सुनो विविधि भाति के जैन ॥
नारायण अथक से करि सुव्यक्त निज अर्थ । हउ बिसु ब्रह्माहि रचे सगुण सरूप प्रसर्थ ॥
सुनो हउ अरु विणु सो गुणो न कहु विशेष । प्रभव प्रभावन एक हे नाम दोय नै भेष ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आपु जिणु तजि खेद जने भे तव लघु अनुज । सुनऊ अक सो भेद सावधान नै सूची सह ॥
अदितिरे विअनुमानि विणुहि सविधि अराधिके । वरमाग्ये सुखदानितुमहि सहप्रसुत हे लहे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

॥ * ॥ लेंकुनि कहे विणु पाव हावी । सेहि संसर्ग के इतिय सुयावी ॥ से निज अंस तोर सुत
सीधे सुख अथक नै आन हवे हो ॥ अदि विधि अरु विणु तव आरे । अरु न जननि कर्म वसि
आरुमे अरु दे गर्भ अदिजिने अरु । कस्यम तव अरु कडाए ॥ तुम हित विणु रूप वऊ भारे ।
प्रबल देतके हउ संहारे ॥ बलिहि अरु अंभु सुहित जानी । पर उपकार धर्म अनु रागी ॥ जग
उपकार हो अरु सानी । अरु कृष्ण ही भुगलानी ॥ अनुन अथय अरु अनन तहे । न्यामक

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

धरि कछु पाय चिन्ति सुरपतिसों । कहे दृहस्पति इनि रिसि अनिसों ॥ अहो सुरेश न तुम
भल कीन्हे । प्रथमहिं मोंहि बूझि नहि लीन्हे ॥ शक अरभेह काज अनोको । आसू अन्त
दुखदायक जीको ॥ कर्मज कछु भवितथ सुरेशा । प्रेरि कहेसि जो यह उपदेशा ॥ ब्रह्मलोक
गोहि गए विहारण । भयों इतो अनरथको कारण ॥ साहस करिकै बिना विचारो । कियो
काज दुखदानि उचारो ॥ यह सुनि कछो शक सुनि लीजै । भए काजको शोच न कीजै ॥ होइ
प्राप्त जब जो व्यवहारा । बुधोजन ताको करै विचारा ॥ तातें अब जो करिवेलायक । सो करि
कृपा कहौ सुखदायक ॥ दयसतासकी सुनि यह बानी । शोष नवारि चिन्ति गुरुज्ञानी ॥ अब
तौ हरिबेदको कारण । सहित जयन्त हरेऊ लखि आरज ॥ इनि कहि शकहि नेह पठाए । आपु
शीघ्र चीरधि नधि आए ॥ तँह हे कश्यप अदिति सोहाए । समाचार सब तिनहि सुनाए ॥ सो
सुनि कश्यप रिसिसो भोई । कहे कर्म फल निहचै होई ॥ गौतम घरणि अहिल्या नामी । सो जो
किए कुकर्म कुकामी ॥ ताको शान्त विधान विचारो । हां जलवास करौ द्रतधारी ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे दृहस्पति अब करौ गुनि कछु उय विधान । कर्मज फलके प्राप्तिको समै आइ नगिचान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तँह देवास्तुति शिवको कीन्हे । ह्यै प्रसन्न शिव दर्शन दीन्हे ॥ दर्शन दै करुणाके सागर । औ
ठर ठरण सुदानि उजागर ॥ भेले कश्यपसों जगस्वामी । देवदेव प्रभु अन्तरजामि ॥ मंजु तुम्हार
नबोरथ जानी । कहैं सुनो कश्यप गुरुज्ञानी ॥ जाइ इद्रके गृहमधि संप्रति । करऊ बास तुम
नपविधि दंपति ॥ तेहि प्रसाद तंव सुत सुख साजिहि । चिरंजीव ह्यो सुरपुर राजिहि ॥ बर लखि
कश्यप दम्पति भाए । शिवहि नौमि तुर सुरपुर आए ॥ प्रातहि कृष्ण नित्यकृति कैकै । संग प्रदुन्न
सात्विकिहि लैकै ॥ मृगया मिसि रथचढि धनुधारी । रैवत गिरिपैं गए विचारी ॥ तँह सात्विकि
सह सरस मुखारे । चढे गहडपैं आनद धारे ॥ दारुकिको यह दिए निदेशा । तुमरथ लै इत रहौ
शुभेशा ॥ नभग रथस्थ प्रदुन्न कुमारहि । संग साइ बरबीर उंदारहि ॥ चलि दिवदिशि आयुधसो
भेले । लनमें जाई शक बन देखे ॥ तहाँ देवजोधा भट भारे । नन्दन बनके हे रखवारे ॥ ते लखि
शक कछु नहि भाखे । पारिजात लखि प्रभु मुदराखे ॥ मूल सहित सुरतरहि उखारी । राखि
गहडपैं कृष्ण विचारी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मन्द मन्द बलि दन्दहर मन्दमन्द समेत। परदक्षिण लाने करके सुरपुरकी सभरेत प्रपन्न
तदनन्तर सुरदक्षकी रक्षक सत्वर थाय। समाचार यह कहत भे सुनाधीरसो आय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो सुधि सुनि सुरेश रिसि भरिके। धडि येरावतये धनुषधरिके ॥ सब रक्षस्य अयमाहि लोके।
बले कृष्णपै हियो अभयके ॥ पूरबद्वार कृष्णकहं देखी। कहे पुरन्दर अन्दर तेसो ॥ केशव कौल
कर्म यह कान्हे। अै अमरम मम मरम अचोन्हे ॥ सुनि हँसि प्रभु धीरकी जतिसो। कहे नौमि
एहि विधि सुरपतिसो ॥ दानधर्म सुनि भई उछाही। अनुज बधू तब यह तरबाही ॥ ताके हेत
सुनरू पविधारो। लए जात हम यह तरभारी। चकु बचन सुनि शकु रिसारि। कहे न इनि लै गए
बडारि। लरि मम उरमै गदा लगारि। तर लैजाव कहे तुम भारि। लरि मम उरमै गदा प्रहारि। तब
सुरतरु लै जाहू सुखारी। सुनि प्रभु एक सुबाण निकारे। येरावत गजधर कह नारे। तब सुरराज
एक इषु चोखो। गरुडहि नारे अनस्य अतोखो। केशव शर सुरपति कह नारे। शरसो कृष्णहि शक
प्रहारि ॥ विष्णु हि जिष्णु जिष्णु कह विष्णु। मारण लगे विष्णु कहँ जिष्णु। दोउ रणकर्कस धर्कस
धीरा। दोऊ वर कर्कस धकस वरवीरा। धनुषधरि निहित बाणवर प्रैरि। बौरमन्दसम रोधित डेरि।

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे शर नारे कृष्णते हेटे शक सुजान। जे इषु नारे इँड ते काटे कृष्ण अमान ॥

जिष्णु विष्णुके धनुषके टंकारणसो पूरि। रह्यो खर्गमोहित भए दिषबासी बसिभूरि ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

तँह मचो संगर घोर। सुत शकको सह जोर ॥ रथ हाँकि नीरे आय। तरु लियो चाह्यो
धाय ॥ प्रभुकी सुआज्ञां पाय। तँह बलि प्रदुख सचाय ॥ रथ हाँकि आडे आय। शर हनो ताके
काय ॥ तेहि लखि जयन्तो क्रोधि। शर तजे मंचन सोधि ॥ ते विशद वीर महान। बटुपटे धनुष
विधान ॥ तँह तजे बाण अमान। जलबूंद मेघ समान ॥ तँह सुमन जनगण सर्व। जरि लखै सुद
सुपर्व ॥ हो प्रवर नामक एक। भटबिकट पालक डेक ॥ सो पूर्व आँखिये जाति कसि उद्यतप सुद
राति ॥ वर पितामहसो पावे। वह ह्ये अबध्य सचाय ॥ तजि भूमि सुरपुरजाय। सो देखूत
सुकाय ॥ सुरराजको प्रिय मित्र। सो धनुषधारि विधि ॥ गुलि सुनाधीरहि देन। धरि केशव
सुरतरु लेन ॥ तिनि देखिके सब ताहि। इनि सायुकोसो चाहि ॥ तिकाहि रए अकबर ग्राह।
तुम करऊ वारण चासु ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

परं यह इतिमहाप्रथमा है, रोकोऊ रोष अनाम। निरदय होय मति मारियो याको तममें वान ॥
सात्युक्ति भट बरुहस्य तेंह प्रभु आजा हित जानि। डाटत भे परप्रवरको शीघ्र शारसमें तानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब भट प्रवरकोष हिय भारे। साटिबाण सात्युक्ति कैंह मारे॥सात्युक्ति शरसों ताधनु छेदे।
फिरि तासों इति कहे अछेदे।रे ब्राह्मण बलु दिजके पथपैमति हठि पांव राखु अनरथपै॥ब्राह्मण
जानि क्रोध में बारों। प्राण हरण शर तोहि न मारौं॥यह सुनि कहे प्रवर सुसुकार्द। क्षमा कौडि
बध करऊ सरार्द ॥ क्षमा युधमें कादर करहीं॥हियसों हारि व्याज विधि धरहीं॥ यामदधिसों
शर विधि शीखो। मैं धनुधरमें पहिले लीखो ॥ केशवके भय सुरगण कोई। सरैं न सुरपतिके
संभोई ॥ सखा शक्रको विदित कहाथे। निरभय हो तातें चडि आयो ॥ अब मति क्षमा व्याज
करि बरहू। खोभ जीवको तजिकै सरहू ॥ इति कहि धनुधरि धनुधर गयो। सात्युक्तिपै बर
वाण चलायो ॥ तब सात्युक्ति अनिरसिसो पागे। तेहि बाणमसो मारण लागे ॥ तेहि सात्युक्ति
सात्युतिकैंह सोई। मारण खने बाण रिसि भोई। मारहि कोटहि डाटहि मारौं। प्रबल प्रवीन प्रसंगि
प्रचारै ॥ नाति भातिके शरदोउ छाडैं। बीचहि तिनै शरनसों आडैं ॥ यहि विधि ते अति उग्र
सरार्द। कीन्है सो दृप बरणि न जाई ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बीर जयन्त प्रदुस्र तेंह करिकै युध अघात। पूरि दिए नभ बाणसों कहे कहाँलों तात ॥
इंद्र उपेन्द्र तनै दोऊ बरणे बीर अमान। निज निज जयईच्छक सुभट शीतक धनुष विधान ॥

॥ * ॥ महिलरीकन्द ॥ * ॥

तेंह जानि प्रबल प्रदुस्रको मधवानको सुत रिसिभरो। भो दिव्य अस्त्र अमोघ छाडत चपल
बातुर बलसरो ॥ लखि कृष्णकोसुत ताहि आवत दिपत तेजविशालसो। क्षण एकलो तेहि
मगहिरोके सुभट निज शरजालसो ॥ फिरि दिव्य उग्रप्रभाक शस्त्र प्रदुस्रके रथपै गिरो। जोर
बयो रथ पर मासु तेज प्रदुस्रके तन नहि भिरो॥नहि दहति अंगिनिति अपि अग्निहि भेद याको
धरुगुनो। ह्यै विरथ बीर प्रदुस्र भोले शचीसुतसों इति सुनो ॥ नहि जीति लहिहौ छाडि तुन
ह्यै भातिके शर सहस रहे। मधि ह्युवन पैहौ सुतरुको दल कोटि विधि करि बह सहे ॥ यह
सुनि अथंन रिसाथ मारे वादि शर मन्त्रित किए। ते प्राय चारिऊ दिशि प्रदुस्रहि घेरि तंभित रिलि
कए। तब पुद्गसिंह प्रदुस्र शरसों काटि उनको शरदए। शर काटि डाटि विशाल बाणनि विहसि
तेहि मारत भए ॥ तकि उन्हहि वैवे उन्हहि प्रति तकि बाण बर अनगिन तजे। सर मारि काटि
बचाय भारे सरस सुषमासो सजे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वीर जयन्त प्रदुस्रको उद युद्ध तह चाहि । साधु साधु कहि सुनननि प्रनुदित तिनि सरसहि ॥
महारथी सायुकि सुभट प्रवर वीरको बांछि शरसी ताको धनुषको इरि प्रत्यथा कांछि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तव भट प्रवर इतिय धनु कहिके । अब बचाउ सायुकिसे कहिके ॥ सायुकिको धनु कांछि
सुखरि । शीघ्रन बाण अमंगनि मारे ॥ सायुकि शीघ्र इतियधनु धारे । शरसी प्रवरहि बेध
प्रचारे ॥ गहि बर अष्टधार शर घोखो । इरिसखा भट प्रवर अमोखो ॥ सायुकि भटके इषुको
आसन । छेदि हमे तेहि तोनि शरासन ॥ फिरि सायुकिहि लेत धनु देखी । मारेसि गदा प्रवर
अति तेखी ॥ तव सातमुकी शरासन लोन्हे । खड्ग चर्मसै सममुख कोन्हे ॥ कांछि खड्ग तव प्रवर
प्रबोरा । तजन लगे शर प्रदप अधीरा ॥ तव प्रदुस्र बचलता लोन्हे । निज सुखड्ग सातमुकि कह
दोन्हे ॥ मारि भल्ल तव प्रवर अखेदे । सोज खड्ग मूठिठिग छेदे ॥ फिरि प्रवर सातमुकिहि प्रचारी ।
भरजो शक्ति हृदय मधि मारी ॥ तदनु सायुकि हि सुरक्षित देखी । सुरतह लेन बखी मुद भेखी ॥
खगेपति प्रवरहि आवत हरे । पक्षज मारत तापै प्रेरे ॥ ताते रघसह प्रवर उखेई । सुरक्षित परे
कोसयुग जाई ॥ तेहि अचंत तह जाइ जठाए । रथपै डारि समरभहि ख्याए ॥ मुदित प्रदुस्र
गहडपै आए । करि जमाय सायुकि हि चेताए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरतहके दक्षिण तरफरहे प्रदुस्र सुबोर । खसे सायुकि बांछिदिशि विशद वीर रथधीर ॥
सखापुत्र जानस्यको बांछे दहिने राखि । कहे शक मति लरहु मम युद्ध खलहु भयनाखि ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

इमि कहि तिनसो शक सनेह । मारे बाण गरुडको देह ॥ तव खगराज रोस विसतारी भिरे
गजाधिपसो मुद धारि ॥ रद कर मस्तकसो गज राजानैल नखन पत्तन खगराज ॥ मारण करिण लगे
अति कोपि । दोउ प्रबल प्रलै आरोपि ॥ किय मुहुतक युद्ध महान । तव अति कोपि सुपण अमान ॥
मल अकुश अति कठिन कराल । मारत भे गजपतिके भाल ॥ ताते ही व्याकुल बजराथ । महित
परे भूमिपै आया ॥ शरिजात शिरपै सह जिष्णु आए तितहो संगरुड विष्णु ॥ एराधत जत्र नरे सुचेत ।
तव सुरनाथक सत्व निकेत ॥ अतिसै प्रबल गरुडको लेखि । मारण लगे बज्रसो ताल ॥ जितने
बज्र हने सुरराज । तितने पक्ष तजे खगरोज ॥ बज्र बज्रप्रति एक एक पक्ष । जानि प्रभावहि तजे
सुपल ॥ लखि अमान खगपतिको भारासो गिरि दधिगे भूमि मकार ॥ बाहेर रही कहु जब शेष ।
तव गिरि आरत धरिके भेष ॥ कोन्हेसि विन द्रव्यासो चाहि । तव प्रभु करि आचारित ताहि ॥

सगपतिको यह दिष्ट निदेश । तन उरि शोभ रसो नभदेव ॥ प्रभुकी आशा पाकरिजात। अन्तरिच
रुद्रिअसुनिजात ॥ तन प्रदुसकडंपुरी पढाया। निजदबलीके हाथ बनाया ॥ रचकरिजात। नहि
य स्यात् । असे आयु कडे प्रभु जाय ॥ सात्युकि सौ प्रदुसवो भाषि । मोभित किए नवलीरुद्रि ॥ *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आयुजि अतए प्रदुसकड बलपति प्रभापूरि । रचके पीछे अक्षतभे दिष्ट अरे नुरअधिपति
सुर प्रभु ने जह रचे सुरपतिअहित गजेद्र । सहाअशोकनि पिरि सने करण नहीअ कथे ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अतिसे अमित गजेद्रहि देखी । कहे इद्रसों कथा गुनेसी ॥ अरि-सगपतिको किए प्रहारा ॥ हे
अतिअमित गजेद्र प्रहारा ॥ करि कहि सकै कडू पुरवारण । तात सुनऊ इन कहे जनाइन ॥
ताते पुढ नेवारण करिचै । संध्या भई हाथ अनुसरिचै ॥ जिमि गजपति अन्त खेदि विचार । केरि
भोर चदि करन खरार ॥ करि प्रसन्न चहमंभ दिडाइ । पुकरतट अतरे दोड भाई ॥ ब्रह्मा-कामय्य
अदिति सोझाय । सुर मुनिनण वसु सख तडं आय ॥ पारिजात गिरिपर विद्याना । कशिदीछे
प्रभु आयिब चांसा ॥ मोह सुचिरिते आभा नहिना । होइहि पारिजात तव नहिना ॥ किदि प्रभु
निशायेष अहि कीन्हे । आवाहन सुरसरिको कीन्हे ॥ आइ तहां सुर सरि मुचिधारा ॥ महिमा
जायु अगुप अपारा ॥ आयुजि करि अवनान भवाहन । किए अंभुको तह आवाहन ॥ प्रक भए
तह अिअयिक कुजन । मिथित तासु किए प्रभुयुजन ॥ अंगोदक दल विखल चठार । वेदाकुति वर
कहे ब्रह्मर ॥ वेदाकुति सुनि शिव सुखदार । ईवद दक्षिण हाथ उठार ॥ प्रभुहि दए अरदान
सोझाय ॥ वेसुनि प्रभु अति आज रपाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भूषणिके अगुप अति कहे प्रभु अगिरान । होइहि इत नम मूर्तिवर विलोदक यह नाम ॥
अरुअधिकी अरु विशद इत आने नम जेन । सुरसरि सरि इत रचिहि अहि नाम अविध्या तैज ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हे अविध्या सु अगुनि शीनि दिन इत आय । पूजिहें विलोदकहि अगुनास करि जत पाय ॥
पुन अरु अरु अरु अरु अरु ते जत पाय । विद्यानि है इति कहि कहे अरि सभु अति अरु ॥
भूषणिके तरे पारपर नाम पडै अरु । दोह हाथन वसत है अरुअरु कारक अरु ॥ अरु नि
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु । अरु अरु अरु ते अरु अरु अरु अरु अरु ॥
अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु । अरु अरु अरु अरु अरु अरु अरु ॥

शक्य इति क्वहि जात भे तव कृष्ण प्रभु अनुमानि । पारिजात सुमैसोः इति कहे चानुप्रवाणि ॥
 सुमैसोः पथतयेष्ट तव अथ वसत दुष्ट सुरारि । करकृतिनके नात्र जिनि हन कश्चि चन विचारि ॥
 शीर्षक बल दानवनि तुम देहु दलनखि दावि । बास मन तव उपरि रहै नित्यहे भेषादि ॥
 शिला से तव मूर्ति मन रचि पूजि हैं जे जानि पाद हैं चितरचित फल रचि मुचित ते सुखदाणि ॥
 पारिजात निरिद्रको इनि दे निदेशु सुकाम । सौरि सौरि सगौरिकों चडि सुररुपै अभिराम ॥
 अथि मुकारतीर शकहि भए डेरत बोर । डेर सुनि रच चडि भिरे बडि पाकशासन धोर ॥ रचि
 अरुणि सुखरुके मुजि पयो पूरण कुह । सुह अथके लुभ्य ते तहँ किए उहत युह ॥ सकिरि नसुख
 भई क्वचित दिग्नि जहँ लनि डोर । घोर धनुडारकों दमखोर भरिों सोर ॥ देखि बेधा कहे
 कृष्णप्रचक्षिसेः मुसुकाय । आय बर्धित युह बारहु सुतन कहँ समुभाय ॥ नानि रचचडि शीघ्र
 दग्नि जेजपुञ्ज उकाठ । आय इन्द्र उपेन्द्रके भे मध्यमहिमें ठाठ ॥ देखि नातहि पितहि रचत
 उग्ररि ते तजि गल । नौनि विधिवत गए चलि हैं खरे हैं तहँ यत्र ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गहि कर तिनके अदिति इनि कहत भई मुदपूरि। सोदरसौ कोउ खरतहे एहि विधि भरि रिसिभूरि ॥
 नानि बचन मन कोधतजि सङ्ग निरायुध आय । न्हाय आय इत करहु सुत जो हन कहँ नुजाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मातु बचनसुनि ते सुख पाए । जाइ समुद सुरसरिमें न्हाए ॥ करत यथोचित प्रातेंभार्द ।
 पितरपास आए दोउभार्द ॥ सो प्रियसंग प्रखान शुभेश । तव सो भयो सुनो मनुजेश ॥ तव सब
 सुर सुरपुरकाहँ उगारे । चडि चडि जानन सरस उजगारे ॥ कृष्णप चरिति शक्य सुखदायक ।
 यथाजगथै चडि मुददायक ॥ आय शकके सदन सुखारे । अदिति चित्र रजसीय निवादे ॥ ऐसि
 कधी अति बानद लोन्ही । सासु समुरको पूजन कोन्ही ॥ तेहि दिन तहँ निवास क्वहि नैके ।
 सादर सह परिवार विनोरे ॥ भोर भए कश्यप गुरजानि । कहे कृष्णसों इति अनुमानि ॥
 सुमैसु तात सुरतहँ खी जाइ । करकृ जाइ विधिवत उतसाइ ॥ क्विरि सुररुप इत शिरीष पठार्ये ।
 सदा सनेह रहेज दोउभार्द ॥ इमि कहि विदा कृष्णको कीन्हे । चलो कृष्ण अति आगुह कीन्हे ।
 चलतीनाइ सवो करि रोचित । देखी भूषण बसक यथोचित ॥ सो सुररुपिमें अति जो कृष्ण
 प्रभु देवत निरिबरपहँ आए ॥ रहि तहँ सुरतहँ रचित सुभेश । साकिक कहँ इनि दिसे तिदेमा ॥
 तुम अब शीघ्र खरि काजार्द । मोरुज यहँ पितरुत सुगार्द ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पारिजातको करव हन नगर प्रवेश न जाजु । ता चितु सब पूजन करहि शीघ्र उतसुद सुजु ॥

प्रभुनिहिप्रभुनि साधुकी द्वारापतिमें जाय । प्रह्लादिक सबकह दए सबविदानी सुनाय ॥

॥ * ॥ चौपारं ॥ * ॥

॥ सुनि चदुबंशी अति सुखपाए । पुरजन परम मोदतोः शाय ॥ घर घर नगस साज सुखलो ।
बज्रकार नमभाये बाजे ॥ सांवाहि आदि कुमार सुखारे । यदुबंशी पुरजन भुदधारे ॥ चडि प्रह्लि ।
नग रथ स्वयनि भाए ॥ सत्युकि को संग प्रभुपहँ आए ॥ यथाउचित सबसों मिलि खानी ।
सुरवर्षे अन्नरजानी ॥ पारिजातसह लगपति पाहीं । चडि प्रदुस मोदेनममाहीं ॥ एहि विधि
पुरप्रवेश प्रभुकीन्हें । सहिँ पुरजन अति आनद लीन्हें ॥ पारिजातकहँ खलि नमभाए । जेजम
जे चाहि सो पाए ॥ प्रभु निजअहमें आइ अनदे । पितु जननी नुरजन कँह बदे ॥ रामहि आदिक
आदक मिमसें । मिले उचित जिनि मिलवो जिनसो ॥ पारि प्रभु निज नेवाकहँ आई । सनि
भामांसह ने सुखदाई ॥ कामरूप तरवर कँह सानद । सनिभामाकहँ दीन्हें मानद ॥ पारिजात
तरवर खलि आंभा । भई परम मोदित सतिभामा ॥ तब प्रभुदास हेतुकी शाना । संपादित
किए कलामा ॥ दानग्रहण हित आनद लीन्हें । आवाहन नारदकर कीन्हें ॥ आनि हेतु नारद
तहँ आए । पूजि यथाउचित प्रभुवेठाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोजनादि बेवहारकरि दान पतिग्रह हेत । सुनिहि निमचब न दिएप्रभु बुधिस ज्ञान निकेत ॥
॥ भ्रमण करि प्रातही हेमकूठ मय रत्न । भूपन बसन सुधाव्यके बिरसे कूट सचन ॥

॥ * ॥ चौपारं ॥ * ॥

॥ पतिनिदेशखहि तब सतिभामा । खेविचित्र कुसुम की दाना ॥ पारिजातमें कण्डहि बांधी ॥
प्रनुदित मंजुमोदक सांकी ॥ सकल पदारथ सहस्र मुद लीन्ही । सविधि सखरि सुमुखि अहँ
दीन्ही ॥ सखि खेखि खे मुनिअभिप्राये । हास्यबचन बख विधिके भावे ॥ तिय अधीक पिय
सुनि कहि जाने ॥ अब यह बचन साच हम जाने ॥ बांधि गरे तब पुसपित नुणको । दीन्ही सन
जोति अपुमत्रो ॥ अब मुम केयव नम आधीना । बखल संग नम सुबज प्रवीना ॥ एहि विधि
कहि प्रभुसे सुनिआनि सतिभामासों कहे सुबानी ॥ सतिभामा अन निजपति खेइ । निजप्र
ह्लादकहि सो हेइ ॥ कपिलागज सबला चारु कल्यांजिन तिलपूर्ण सिंघारु ॥ सोदैं सतिभामा
मुददीना लीन्ही पतिहि प्रेम सोरानी ॥ प्रसन्न तब दानद मानद प्रभु बोले मुनिवरसों सबसा
नारद कीजउ घर नमभाए । सो अब तुमहि देहि हउ आसन ॥ सुनिभामे मुनि गहि सो कानि ।
अब सासोक गवनि गति पावनि ॥ जनक यजेनिज कहँउ नोसाई । होउ सुखासुख सबकी
नाई ॥ एहिनि तब कण्ड उचारे । सुनिभामा के परम सुखारे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

किरीटपको गए तिन्है सतिभासां गहि मोद । न्योनि बलाएहीं तिन्है निरखन छत जिमोद ॥

एक एक तिन कह दए सानद सुभद सुभेश । भूषण बसन विचित्र जे दए सुधीके बेस ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कृष्णचन्द्र तहँ रेवति बलाए । लखन हेत आनदसैं छाय ॥ पारिजातकी विषद शिखरी ।

अपूर्व अनूप अकूती ॥ सुभद सुभद्रा कुन्तारानी । सहित द्रोपदी पाण्डव शानो ॥ भीष्मक

आदि सहित जे राजा । तिन्है बोलाय छए सहसाजा ॥ यथाकास्य प्रभु तिन्है रमाइ । कोन्है

विन्दै प्रीति दरसाई ॥ पारिजात अनुपम सुरसाही । सन्वत्सर प्रमाण तहँ राखी ॥ नए रूखसैं

अपुन विधारी । कृष्णचन्द्र चातुर नथचारी ॥ बन्दि अदिति कश्यपके पावन । शकहि दए देव

सहपावन ॥ कश्यप अदिति सु आशिश दीन्है । सुनि केशव अतिआनद लीन्है ॥ कण्डन्न सह

किरीट छवि छाये । दए छणकहँ शक सोहाये ॥ कहे शकसैं प्रभु अनुमानो । देवराज सुनिथे मन

मानी ॥ पारिजात निरिह उनमादी । हेराक्षस सुरगणके बादी ॥ करण तासु इन बध धनु धै कै ।

तब तुम प्रवर जयन्ताहि लैकै ॥ तेहि निरिके जरथ मभवारी । रहियोखरे खरे धनुधारी ॥ इनि

कहि नाथव निज पुरआइ । बधे जाइ राक्षस समुदाइ ॥ फिरि पुरआइ मोदहिय गहिकै ।

किए विहार पूर्ववत रहिकै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वरने एहि अध्यायमें पारिजातके हेत । किए युद्ध जो कृष्ण अरु शक सुसव्यनिकेत ॥

पारिजात निरिराजपै जेहि विधि भयो मिथान । सो कहि कहे यथा करी अतिभासां प्रतिदान ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

पारिजातसैं जाय प्रभु दे आंए शक कहँ । सो कहि कहे सचाय तदनुभविया न पुर रमज ॥ कृष्ण

श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीमाकिरीकुल

नाथावजने गोपीनाथनकविना विरचिते हरिवंशदर्पणे पारिजातहरषोत्तमान दाविशोधाचम ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैसम्पायनसों कहे फिरि जनमेजय भूप । सुनिवर तुम सरवज्जहौ तपवर परस कनू ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

आसहि प्रिय शकभुत सुरशानी । सुदरायक कजा प्रियवारी ॥ सुधि तब बसत अनयह

कहइ । प्रम उत्पत्ति तज्ज अब कहइ ॥ सुनि भूपतिके कवन प्रमोदो । प्रेम पूरि सुनिहार इनिबोले ॥

व्रतविधि प्रथम उमा उपजाई । सविधि सुमङ्ग सो गृप मनलाई ॥ षडपुरस्य दनुजनकहँ नारी ।
 अब प्रभु भए हारिकाधारी ॥ तब नारद मुनिवर तहँ आए । पूजि यथोचित प्रभु बैठाए ॥ प्रभुके
 सममुख रकुमिनिरानो । व्रतविधि कूजी मुनिसों नानी ॥ रहीं तहां आठौ पटरानी । अरु षड
 दशहजार सवरानी ॥ रकुमिनि कही सुमङ्ग मुनिराई । व्रतउतपत्ति कहऊ समुजाई ॥ अरु
 विधिसमथ दानफल बेणू । संजम नियम सुदैव-प्रयोग ॥ मुनि बोले इनि सुमुनि विरागी । सुनु
 रकुमिनि पतिव्रतअनुरागी ॥ पूर्ख उमा पुण्यकवत कारकौ । व्रतके अन्न सुविधि अनुसरिकौ ॥
 न्योति बलावत भई भवानी । सकल देवपतिनो शुभदानी ॥ दक्षप्रजापतिकी सब तनया । सब
 ऋषिमुनिकी पतिनी सनया ॥ सबदिगपालनकी प्रियनारी । सिद्ध साध्यकी पतिनी प्यारी ॥
 साक्षा सावित्री शुभ चरिता । अरु गंगा आदिक सब सरिता ॥ ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ*ॐ

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिथा पितृपतिकी विशद अष्टवसुनकी नारि । ऋी श्री धृति अरु कीर्त्ति मति मेधा सुददातारि ॥
 सप्रति आवा प्रीति अरु बार सुव्रता ख्याति । आरु शिवाके ढिग भई एखब तहा विभाति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इनसकहँ तहँ पूजि भवानी । देतभई विधिवत विधिजानी ॥ परवत रचि तिल धान्य रतनके ।
 भूषण कर्म सु विविध पतनके ॥ हमऊँ एक शैल तँह पाए । हम लै दए द्विजनकँह भाए ॥ विरचि
 सभा तँहँ सकल सयानी । लगी कहन शुभकथा कहानी ॥ तब लखि सबको सम्मत सुछिता ।
 अरुअती शुचि शशिकी दुछिता ॥ पत्नी मुनिवशिष्ठकी ज्ञानी । कहत भई गिरिजासों बानी ॥
 पुन्यकविधि प्रभाव सुखदाता । कऊऊ उमा त्रिभूषणकी चाता ॥ कहत भई तब शैलकुमारी ।
 व्रतप्रभाव सुनु पतिव्रतचारी ॥ व्रतविधि कामद सुकृतीजनको । होत होत नहि कुटिल
 कुमनको ॥ औ पतिव्रता साधु प्रियवादिनि । शुचि सउम्य प्रियहिद्यअहलादिनि ॥ सुवुधि
 सुशील सुकारजकरता । मन बच काम पतिमन अनुसरता ॥ व्रत अरु धर्म सुफल है तिनको । नहि
 कृतसित सुभाष छै जिनको ॥ दुष्टा अप्रियवजन प्रलापिनि । हस सकुइ अशुचि सन्तापिनि ॥
 खानी दुखी दहत है जाके । व्रत संजम सब निरुफल ताके ॥ ते तिथ औसि नरक अधिकारी ।
 व्रत उत रहहि न कबऊ सुखारी ॥ औ ए चेति पतिव्रत धरहीं । तौ करि प्राश्चित औसि उधरहीं ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पतिव्रतक परपुरुषरत तिनकी नहि उदार । और नरकमें परि करै तनिधनह विहार ॥
 कृतसितजीनिमें नरभि औ प्राई नररूप । तौ वै छे।मनि छे बजरि परै नरकके कूप ॥

कूपी कपटी क्रूर प्रवृत्त कूपी मूढ मलीन । दीमदारदो दुष्ट अहंकारसहित रोगी लीन ॥
 शैवेज्ज पतिको तिया जानै देव समान । सो तिय पतिसह स्वर्ग सहि बिहरी कल्पप्रमानं ॥
 ॥ * ॥ चौपारं ॥ * ॥

जे पतिभगता तिया सुजानि । तिनकहं व्रत सज्जन सुखदानि ॥ तिनकोहित व्रतको सुविधान ।
 कहौं कहे जो शभसुजान ॥ सुबुधि तिया उठि प्रात अन्हाथ । लै पतिकी आज्ञा सुखदाय ॥ बन्दि
 मसुरको चरण सुजानि । सकुश ताचभाजन लै पानि ॥ दक्षिण शृङ्ग सुरभिकों चार । सींचि खेर
 तामें जलधार ॥ भरि पतिके आगे जल सोय । पतिसह करि मार्जन सुखभोय ॥ तीनिलोकके
 तीर्थ नद्यान । मनु कीन्ही तिनमे अज्ञान ॥ एहि मार्जनको चार प्रयोग । मारी पूरुष सबके जोग ॥
 अमल असीए आसन डारि । महियें शयन करै व्रतधारि ॥ अशुपात रिसि कलह चषाच । कीन्हे रह
 न व्रतको भाव ॥ धारण करै बख सुचि सेत । शौच्य शिगार न करै सकेत ॥ दन्तकाष्ठ नहि करै
 सहाय । मलै न बार मसाला लाय ॥ श्रुतिकोसो सब करै विचारि । कुवे म कवळ तेस व्रतधारि ॥
 गोबाहन करि बलै न मेक । नमे न्हाद न जानि विवेक ॥ रुचिसौं न्हाय सरितमे जायको अन्हाय
 जरणाजल पाय ॥ कौ तडाग कौ बापोवेस । कमसो ए असनान शुभेस ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ए अलभ्य जो होइ तौ नूतनघट भरवाय । ज्ञान करै तिय शोससो व्रतविधि धारि सहाय ॥
 सम्वत्सर परत्यन्त कौ कौ षटमास सनेम । मास एक कौ तिय करै एहि विधि सुव्रत धरि ॥

॥ * ॥ चौपारं ॥ * ॥

शुक्लपक्षकी नवमी सहिकौ । व्रत आरम्भ आनद रहिकौ ॥ शुक्लपक्षकी नवमी पाई । व्रत
 उद्यापन करै सोहार्द ॥ तिय सावित्री शुभन । एकादस । विधिवत तिनकहं पूजि अमालस ॥
 सविधि समर्थ अचार्य हि दैकै । दै निष्कय फिरि तिनकहं लैकै ॥ दाम नामसो तोषि सुजानी ।
 विदा करै तिनकहं विधि जानी ॥ करि उपवास ताहि दिन घामिनि । उतसव दाम करै बर
 कामिनि ॥ चौरकर्म पतिसह करवावै । जहि जत्र उचित बूजि तेहि भावै ॥ ज्ञान सिंगार
 यथोचित नादिन । करै प्रविष्टि प्रिया प्रियवादिन ॥ ज्ञानहेत सुचि कुसुम भराई । पदौं प्रवृत्त यह
 तिय सुखपारं ॥ आपोदेशः ऋषीणां हि विश्वधात्र्या दिव्यामदंत्यो यशहरा धर्माभ्याश्च हिरण्य
 वर्षाः पावकाः शिवतमेव रसेन श्रेयसे मां जुषंतु ॥ इतिमंत्रः ॥ यह पौराणिक मंत्र सुहावन । अहि
 अज्ञान करै तिय घावन ॥ ज्ञान करत वाङ्मिह फल माने । सो सोइ तिय अमरको पाणे ॥
 भूमि भासुं मम जल शशि सूरहि । साक्षी करै अधि नुल पूरहि ॥ दिशि देहिनि जल साक्षी
 करिकै । धार बसन शुचि आनद भरिकै ॥ निजकर तित विरचित यज्ञसुचिसौं । देइ पतिहि

तव समुद्र सरविता । मातर अन्य सुवसन मंगार ॥ निजकामो एक सूत निखार । देद पतिहि ।
तदंनंर मारी ॥ पूजि दिज वरहि पतिवतधारी ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोजन ताहि करारके धउतबस दे दोय । गज देद फिरि देद तेहि यथाशक्ति सुखबोष ॥
पय दधि घृत मधु लवण गुडपै प्रतिमा रचि मारि।देद द्विजनकह मोदसों पूरित प्रीति अबोरि।
रजत हेम अंर ताम्रकी प्रतिमा विप्रहि देद । देद चार तिलपात्र अर गज सबसा देद ॥
देद तिलनसों पूर्ण करि द्रव्यमृगाको चर्म । भूषण बसन सुआदरस देद पूरि वरधर्म ॥
मांति भांतिके सुफल अर सुमन द्विजनकह देद।जीवघात नहि करइ यह शील सुखद शिखिलेद।
भाग्यवती शुचि सुतवती अर धमवती सुजानि।यह व्रत करि तिय होतिहै लहि बांछित सुखदानि॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

वर बांछित फलपाय भोगि भूमिपै भावती । फिरि लहि लर्ग सचाय पतिसह विलसति कलय मिति॥
सुनि शशिसुता मुझनि प्रथमहि यह व्रत हमकरो । तामें यह सुखदानि भयो उभाव्रत नामवर॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

अब व्रत कऊउ दुतिय सुखदानि । सुनह अरुन्धति सरस सुजानि ॥ जेहिबिधि मोसा कहे द्रशान।
मैं तुमसा-सो कहैं विधान॥जेठ अषाढ मासमें नानि । एक एक कै दूगो जानि ॥ करि आचरण
कहे जिनि पूर्व । कामिनि यह व्रत करै अपूर्व ॥ जल पय दधि घृत मधु गुड चार । तिल सषपमे
करक उदार॥पूरि पूरि व्रतके अवसान। देद द्विजनकह सहित विधान॥काञ्चन रजत सबसा माय।
भूषण बसन धान्य सुखदाय ॥ यथाशक्ति द्विजवरकह देद । मोदित करइ चरण शुचि सेद ॥
भोजन करवाबर मनमान । देद दक्षिणा करि सनमान ॥ खाय सुअन्न प्रथम दिन जौन । व्रत
पर्यन्त खाय तिय तौम ॥ पहिले दोस दोस भै खाय । भोजन करै दोस तौ पाय ॥ भोजन करै
प्रथम-जौ शक्ति । तौ व्रत भरि निशिमै मुदराति ॥ दिनमें भोजन करि व्रतधारि । कञ्चनको रवि
देद सुमारि ॥ मिथिके नम चन्द्रयहे देद । सुनऊ अरुन्धति व्रत यह सेद ॥ लहै सुपुत्र सरुचि
सो काख । भाग्यवान धनवान विशाल ॥ कन्या रूहै जौ तिय सेद । कन्या लहै न मिथ्या होद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सम्बतसर पर्यन्तजौ करै तिया व्रत एऊ । सञ्जमसों रहि नियमयुत पूरित परम सनेऊ ॥
लहि आझा पतिको मुभद देद द्विजनकह दान।जेहिबिधि कहि आए सुफल करकादिक सुखदान॥
मास मास प्रतिदान वर करै सशक्ति सकून । देद कार्त्तिकी पूर्णिमा मैं कञ्चनके सूत ॥
लौचा मंडा अजिब न हि भोजन करै सुजानि । कञ्चनकी लौकी विरचि देद द्विजन सनमानि॥

यह व्रतकरि युवती सह औसि सुपुत्र सुमान । सावित्री रहि सर्वसुख भोगि लहे दिवम्यान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अति उत्तम वपु चाहद जोई । अब जो कहँउ करै शिखि सोई ॥ दीरघ कुटिल श्याम कच
चारू । कोमल जेहि मिहै भरतारू ॥ चाहै तिय सो असितो नीकी । पाद अटिनी सुखदा जीकी ॥
वसन सेत धरि सरस अचारू । कन्दमूल फल करद अहारू ॥ प्रान्न शङ्खाएहि भोजन दैकै ।
भोजन करै आपु मुद लैकै ॥ एहि विधि सम्वत्सर भरि नारी । करै विशद व्रत विहित विचारो ॥
सम्बत्सर पूरे सुषमां वर । देद दिजहि सित चारू सुषामर ॥ चमरीगौको असित सुकेश । देद
दक्षिणा सहित शुभेशा ॥ होहँ अपूर्व केश तौ ताके । अति दीरघ शुचि श्याम प्रभाके ॥ शीघ्र निरोग
चाळ जो कोई । गोमयसो कच नीजै सोई ॥ अचरा बेल गरीसो पीछे । नीजे चिकुर अरुज मिर
इछे ॥ जलसा धेद करै अस्नाना । निति गोमुख करै शुचिपाना ॥ छत्ता चारू चौदमी पाई । यह
विधि करै तरुणी सुखदाइ ॥ भाग्यवती निरुजा सो कामिनि । होई परम पतिकी मव कामिनि ॥
अति सुन्दर ललाट जो चाहै । सो अब कहौ बचन सो पाहै ॥ प्रति प्रतिपदकँह द्विद व्रतधारी ।
अलवण भोजन करै विचारी ॥ एकवार पय घृत सो खार्द । सुखद सुअन्न मोदसोंखार्द ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सम्बत्सर पर्यन्त इनि व्रत करि सहित विधान । पत्र रजतको भाल बिति देद विप्रकाँह दान ॥
अतिसुन्दर धू जो चहै सुनो तासु उपचार । प्रति इतियाको व्रत करै करि फल मूल अहार ॥
सम्बत्सर पर्यन्त करि एहिबिधि सु व्रतविधान । माष खवण घृत दक्षिणा देद दिजंनकहँ दान ॥
अति अतिसुन्दरि चाहि तिय अन्न नक्षत्रहि पाय । सम्बत्सर पर्यन्त रहि सह शुचि अबकों खाय ॥
सम्बत्सरके अन्तनै अति सुषरणको दोष । देद विप्रकाँह डारिके घृतमै खानदभोय ॥
सुन्दरि नासा सो चहै जो सुन्दरि सुखपाय । तिलको गुलुन अलोपि कै शीघ्र करै सचाय ॥
प्रथमदिवस व्रत करद चाहि शीघ्रन खायक जानि । दूजेदिन शीघ्रन करै चाही कानसों गानि ॥
अब वह फूलै फूल तब बाके 'घृतमै डारि' । सहित दक्षिणा दिजंनकहँ देद परम सुदधारि ॥
कबहँ ताकी नासिका मै महोद खाय । अति सुन्दर चल जे चहै अब सुनु तासु उपाय ॥
सम्बत्सर पर्यन्त सो कामिनि अलवण खाद्य । सम्बत्सरको अन्त चाहि उत्पन्नपत्र मंगाय ॥
सीरे पय मय डारि तेहि देखि तरुनि सुखदानि । सहित दक्षिणा दिजंनकहँ देद दान वनमनि ॥
अनमोहन सुदर अथरचाहै यो शुभगारि । सोमृतिकाके प्राचमै पित्रै हरिसभरि वारि ॥
शुचि छैकै शुचि नेहमै नोमीको दिन प्राय । बैठि रहै तहँ आपुसों देद कोऊ सो खाय ॥
एहि विधि सम्बत्सर बितै करै सुविद्रुम दान । होहँ अथर तेहि तरुणिके कुंदंरूप समान ॥

चार दसन चाड तरुणि एक बारतौ छाया। शुक्लपद्मकी अष्टमी मैं भरि बरिस सचाय ॥

संवतसरके अन्तसों दसन रजतके देर । डारि दूधमें दसन मित द्विजपदपद्मज सेर ॥

शुक्ल अतिसुन्दर चाहिं तिय प्रतिपूने लहि जानि । घट्टोदय लखि न्हादकै विप्रनकैह सुनमानि ॥

अष्टमी जाउरि चार शुचि सञ्चिता ससिता ताहि । प्रियभोजन करवाएकै देर दक्षिणा चाहि ॥

संवतसर परजान इति व्रत करि तिय अभिलांछि । देर भूसुरहि रजतकों चंद कमलपें राखि ॥

शुक्ल श्रीकलधन चारु चाहि तिय प्रति दशमी पाय । रहै मौन न्हे बैठि जब देर कोऊ तब छाया ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

द्वै कंचनके बेल संवतसरके अंतमें । करि सुधूर्णसों बेल देर भूमिसुर कहं तरुणि ॥

चाहिं छसोदरनारि एक अन्न भोजन करद । बरिस दिवस व्रतधारि पुण्यसील रहि शुचि सदां ॥

अन्त तोय संगलाय सबधि पञ्चमीके दिवस । मांस बारहो पाय सहित मान द्विजवरणकैह ॥

चारु बवेली बेलि पुष्यंत देर सदक्षिणा । सो तिय करता केलि होइ कमलकी बेलिसी ॥

तिय अति सुन्दरपाहि चाहिं हाष्टमी केदिवस । करि कल भोजन जानि बरिसएक वर व्रत करद ॥

द्वादशमास विताय कमल देय सुधि कमलके । विप्रहि देर सचाय होहिं तासुकर कमलसे ॥

वर्तुल उन्नत पीने धौहि मितम्ब मितम्बिनी । प्रतिबयोदशि प्रवीन मरुवाइ भोजन करै ॥

पूरे बरिस उदाक कमलासन रचि लवणके । अरु कचनके चार देर सबस महीसुरनि ॥

मधुरबचन अभिजाधि बरिसएक वा मांसभरि । लवण छोडि मुदराखि दानदेर फिरि लवणको ॥

मांसिल चार सुनेष चाहिं शुक्ल कामिनि सुनऊ । प्रतिषष्ठी शुभभेष खाइ उदक चौदन मरुचि ॥

बहिं विप्र अष्टमाथ कुबेन कबहूँ चरणसों । जो धोखे कुदजाय तौ सशोच ब्रदै तिनै ॥

चरक अरु रसों ब्रेक भेष कबहूँ भूखिनिहि । देर द्विजहि सविवेक दोष कुर्मरधि कमलको ॥

दोष कमलके पूजा उखाडि राखि तेहि पूजिकै । कामद आनदमूल देर सहेम द्विजातिकह ॥

अतिसुन्दर सबदेह कामिनि चाहिं वसन्तमें । तीन दिवस युतनेह करै सुव्रत अतिभोदसों ॥

मङ्गल मास अषाढ आश्विन कार्तिक जेठकी । सोहि पूने गुणबाड विधिवत व्रत कामिनि करै ॥

करि शुचिसुन्दरनेह विचितकरै सुधूर्णसों । मधुर बचन सहनेह दासिनहूँ सों कहइ प्रिय ॥

मिथ्या कबहूँ गहिकहै सदा सउन्ध दयाल । देवाराधन निमितकरै रहै सदां सुखिहाल ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आज्ञाय भोजन प्रवस करवावै सुखदाणि । होइ परम सुन्दर तरुणि पियथ्यारी सुखदानि ॥

॥ * ॥ चौपाइ ॥ * ॥

व्रत सुवन्धु इतै तिय जोइ । प्रति सतिमीनै व्रतकरि सोइ ॥ चौपिसइ सप्तमी सहि भागिनि
 अरपै वृच हेनको कानिनि ॥ दक्षिना देइ द्विजनकंइ भूरी । तै सतवन्धु सहै मतिपूरी ॥ रिपत
 दीप कचनके बारी । देइ दीप घरमें धरि मारी ॥ दीपै दीपवत तै सब तियमें । रमेनिरन्तर पियके
 हिसमें ॥ जे शुचि सदाचार रत भागिनि । सौम्य सुशील सु व्रतपथ भागिनि ॥ पवित्रत रत पतिकी
 अल्हादिनि । प्रियकर प्रकति सदा प्रियवादिनि ॥ सासु ससुरकी सेवा करहीं । ते बिनु व्रतहि
 मोदसौं भरहीं ॥ देव योग जे तिय पतिवरता । विधवा होंहि सुपथ अनु सरता ॥ ते मृगमथ वा
 कागद पांहीं । पूजहिं रचि पतिरूप सदाहीं ॥ सासों अज्ञां मांगि सुभावे । व्रतकरि मृत्युलोक त
 पावे ॥ व्रतविधि गिरिजासौं सुनि सुनिकै । बन्दि सतिहि करिवे नुहि नुहिकै ॥ नौ ह्ये विदा
 उचित कहि कहिकै । गर्द सकल आनद गहि गहिकै ॥ सो व्रत अदिति प्रेमसौं कोन्ही । जेहिबिधि
 गिरिजासौं सुनि लीन्ही ॥ पारिजातसह पतिको दाना । कोन्ही अधिक नबीम विधाना ॥ तबसौं
 भयो अदित व्रत नामा । सो व्रत कोन्ही अब सतिभांमा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सावित्रीसों सुव्रत करि कोन्ही अधिक इतेक । संध्या सहि देवारचन दुगुणित जब सभिवेक ॥
 इन्द्राणीसो उमाव्रत करी इतक अधिकाय । चौथे चौथे दिन देइ कुम्भसहस्र भराय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सोईव्रत फिरि सुरसार कीन्ही इतक विधान अधिक करि दीन्ही ॥ जवाकाल अग्हान सेहा
 वन । करै सप्रेम सदां चितचावन ॥ कुम्भ सहस्र पूर्ण करि देई । नंगा तठमें आनद लेइ ॥ अहं सब
 व्रत सनेम जो करइमुद मंगलसौं इत उत भरई ॥ सातसात पूर्वनकहं तारै । रूपति संगेलेहि मुदित
 विहारै ॥ कोन्ही बर व्रत यमकी पतिनी । षट्पु हिमन्तम पतिव्रतव्रतिनी ॥ नाम जामरथ व्रत सुखदारै ।
 यह करि कोउ जमलोक न जाइ ॥ देय अनाहादित मै रहिकै । प्रात ग्हाइ हिय आनद गहिकै ॥
 पतिहि बन्दि बांछित फल मांगै । सोलहि कामिनि आनद पावै ॥ विप्रनकह भोजन करवावै ।
 देइ दक्षिणा बांछित पावै ॥ ए व्रत शिव गिरिजासौं भाखे । ते हन गिरिजासौं सुनिराखे ॥ ते
 पौराणिक व्रत मनभाय । तुम सबकहं हन सविधि सुनाए ॥ मन वरतपके उय प्रभावण । व्रतपाल
 तुमसब खण्ड सुभावन ॥ सुनऊ भूप नारद प्रियकरिक । सो सुनि हरणी रुकुमिनि आदिका ।
 रुकुमिनि प्रथम उमाव्रत धारी । कीन्ही वृषभदान अधिकारी ॥ फिरि करि जीववती सुखदारै ।
 रतनवृद्ध कीन्ही अधिकारै ॥ सतिभासां करि व्रतअधिकारी ॥ कीन्ही पीतवसन पियधारी ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सर्वकामप्रद उमाव्रत जे करिहैं सुखदानि । सर्व सम्पदा सर्वफल ते लहिह सुखदानि ॥
वरने एहि अध्यायमें नारदको समाद । रुकुमिनिसौं सुचि उमाव्रत को विधिवर अहंकार ॥
सखि श्रीकाशीराजमहाराजाधिराज श्रीउदितनारायणस्वाज्ञाभिगामिना श्रीवन्द्योजनकाशी
वासिष्ठीकृष्णनाम्नात्मजेन गोपीनाथेनकविना विरचिते हरिचंद्रदर्पणे त्रियोध्यायः ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैसम्पायन सुमुनिसा बूजे नृपसिरताज । पारिजातके हरणमे कहे आप मुनिराज ॥
षट्पुरके दानवनको कौन्हे कृष्ण निपाता । काहे वै किमि बधे सो कहे सबिस्तार तात ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अमनेजय भूपतिकी बानी । सुनि सुमोद बोले मुनि ज्ञानी ॥ त्रिपुरहि हते ग्रंभु रिसि रांचे ।
साठिहजार दरत तब बांचे ॥ जम्बू मार्गबिषे ते जाई । लगे करण तप मंत्र टढाई ॥ जंबूतर बैठें
तहें केते । कितने बूझरिगद मुदहेते ॥ बट कपित्यतर किते सुखारी । बैठि लगे तप करण बिचारी ॥
अरु शृगाल बाटीतर कितने । बैठे निज निज कारज हितने ॥ विधिहि जपैं धरिधीर अपारा ।
रहि रबिमुख करि बाधु अहारा ॥ शिवहि जीतिबेकी करि ईचा । लगे करण तप महिपैं ढीहा ॥
बटतर जे बैठे अनुमानी । ब्रह्माचिन्त ब ते गुरज्ञानी ॥ आइ तथा ब्रह्मा मुदराखे । जम्बूतर वारेनसो
भाखे । मांजु बंद ते नहि अभिलाषे ॥ ग्रंभुहि जीतनकह हिद्यमांषे ॥ तब बटतर वारेनसो
बेधा । बर बूहि बोले बरमेधा ॥ शिवमहिमाके जाननिहारे । ते अकामता सरुचि उचारे ॥
फिरि जंबूतर बेधा आई । तिनसौं कहत भए समुभाई ॥ उतपति प्रलय नाशके करता । शिव
अनादि ईश्वर जग भरता ॥ तिनसौं बैर न कबहूँ पैहो । अमकरि व्यर्थ परे इतरैहो ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तात शिवसौं जीतिकी बांछा तजि अनुमानि । चहो और बरदान सो मागिलेऊ हितजानि ॥
तब ते करतासों कहे अबध्यख मोहिं देऊ । सर्व सुमनसों सर्वसों स्वामी सहित सनेऊ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

षट्पुर देऊ भूमितर स्वामी । तहंबसि हम सब रहैं मुदामी ॥ एवमखुकहि विधि मुसु
काई । तासु सरणादन दए बताई ॥ जब तुम बैर विप्रसों करिहो । तब नारायणसौं निज
गरिहो ॥ त्रिभि जिदेष छहि तब ते जाई । वसे भूमितर कपुर बनाई ॥ जे हैं बटतर आनद लीन्हे ।
तिन्है आपु हर दरशन दीन्हे ॥ श्वेत वृषभपै चढे सोहावन । आइ कहे तिनसों अम भावन ॥ बैर
दम अरु ईषा कोहा । तजि तुम मोहि भजेऊ तजि मोहा ॥ तातें हम अस्मितव दिग आए ।

देन तुम्हें बरदान सोहाए ॥ जे इत तप करिहैं महराते । वासप्रस्थ विधान सोहाते ॥ मास बरि
स वा विधित रहैं । सहस बरिसको फल ते पैहैं ॥ नाम अतपाहन मम जोई । अपिहिं सोहिहिं
वाहित कल सोई ॥ जंबूनाग जाइ हम बसिहैं । यह इच्छिहैं ते नम डिंग ससिहैं ॥ इनि कहि
तिनके बुधनि सुखारे । जे कपित्य गुल्लरितरवारै ॥ अरु शृगाक्ष बाटितरवारै । तिनहिं सहित
निज लोक सिधारे ॥ जंबूतरवारै जे सिधारे । षट्पूरबसे जाइ मति विधारे ॥ समै जाइ ते गर्बसही मो
भय काषावस बुद्धि मसीने ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताहि समै तिनके निकट रहत रहो तपधाम । याज्ञवल्क्यको शिष्य बर ब्रह्मदत्त यह नाम ॥
रह्यो कराय विप्रसौ अश्वमेध बर यज्ञ । श्रीवसुदेव सुजानके परम प्रवीण-कृतज्ञ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब सौं ताहि सखा करि भाषे । श्रीवसुदेव प्रेम अभि छाषे ॥ सायबलिक यज्ञ आरोपन ।
करतभयो सो द्विजवर चोपन ॥ तँह-वसुदेवहिं नेवति बसाए । ते दम्पति सँ खानदहाए ॥ हे
मुनिथास हमहिं सह मेहा । याज्ञवल्क्य जैमिनि सहनेहा ॥ जावालि देवल आदि मुनीया । रहे
बल्लत तँह सुनऊ महोया ॥ ताहो समै तहाँ बल्लपुरे । षट्पूरको ते राक्षस बरे ॥ आदि निकुम्भ
आइ अवसाने । ब्रह्मदत्तसौं कहे अयाने ॥ देऊ सुरनकहँ जिनि गँह नैह । यज्ञ भाय तिमि
हमकहँ देह ॥ हे अनेक जे सुता तुम्हारा । देऊ हमहिं ते सुखना भारी ॥ रतन अनौलिक
जितने जारे । हो सो देऊ विनामनमारे ॥ यह सुनि ब्रह्मदत्त मुनिजानी । कहतभरँ तिनसौं
बरवानो ॥ उचित न यज्ञ भाग दइतनको । बूजि लेऊ तपवर मुनिमणको ॥ हैं सबसुता समर्पित
कीन्ही । सुति पारण विप्रनकहँ दीन्ही ॥ रतन मागिहो विने समेता । तो देहँ हम कृपानिकेता ॥
बल्लसो पाछो तौ नहिं देहँ । बली कृष्णके बल्ल हम हे हँ ॥ यह सुनि ते सब अतिरिसि करिके ।
सैने तासु सुता सब हरिके ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब वसुदेव गोविन्दकहँ कहि पठए सन्देस । सुनि श्रीकृष्ण प्रदुसकहँ दीन्ही उचित निदेश ॥
रसा मुनिमनयनकी शीघ्र करऊ तुम जाय । जबलौं जाइ ससैनहम उत कहुँ करे उपाय ॥

॥ * ॥ जयकरीहन्द ॥ * ॥

सो सुनि जाइ प्रदुस उतास । रचि माया बल बुद्धि विशाल ॥ मायाबरे सुता तँह राखि ।
स्थाए सब तमया अभिलाषि ॥ ते सब नहिं जाने यह भेद । तिनसौं बिलसन जग अखेद ॥
सो करण यज्ञ तब विप्र । मोदित मुनिमण सहित अचिप्र ॥ इतनेन आय सबभूष । पूर्ब निर्मजित

सबल अनुरूप ॥ जरासन्ध शिशुपाल महोष । दुरजोधन पाण्डव कुन्तदीप ॥ दन्तवक्र अह हकुम
मरेण आदिक और क्षितिप शुभेश ॥ ते मुनिके पुरके ढिग आया भए निवास करत इसघाय ॥
तब मारद मुनि कलहविलास । गए तुरित दनुजनके पास ॥ पूजित तिनसौ बैठि सनेह । कह
निकुम्भदरतसौ एह ॥ सुनो कहैं हम तुमसौ सांब । जुवती धारु चपल शतपांच ॥ ब्रह्मदत्त है राखे
स्थाय । हित प्रसन्नके आनदहाय ॥ ब्राह्मणकी तनया शत दाय । शत क्षत्रिकी आनद भोष ॥
शत बद्रथकी तनया बेस । शत सूदनकी सुता शुभेश ॥ ब्रह्मदत्तकी आशां पाय । ते सब दुरवासा
पहं जाय ॥ सेवाकरत भई मुदआनि । आशिष दए सुकर्षि हित मानि ॥ सरस सोहाग भाग्यसा
पूरि । बिलसऊ पतिसह लहि मुदभूरि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुवन सुता एकैक सँग प्रबिसम्बत्तर पाय । भए करैं सबकह दए यह आशिष मुनिराय ॥
आशिषकी विरतांत मुनि ब्रह्मदत्त सुखपाय । जाय स्थाय सब कन्यका देन कहे गहिचाय ॥
शुभक पृथक कहि जादवन कह सुन्दरि शतचारि । अहैं अमनसी कबिलसौ तिननै ते शतनारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

जाय तिहे निज हित हरि खार्द । है अशोच तक आनद पार्द ॥ तिनकेहेत कृष्ण धनुधारी । लरिहै
तुमसौ आसि विचारो ॥ यदुबंश अमरषसौं राते । आवत चढे वीररसमाते ॥ तात हम जो
कहैं उपाई । करऊ बूजि सो सादर जाई ॥ जरासन्ध आदिक मनुजेशा । हैं आए तब निकट
शुभेशा ॥ दान मान अह बिने भलाई । करि तिनकह अब करऊ सहार्द ॥ वीर निकुम्भ बचन
यह मुनिकै । मंत्रिन सहित गयो तहँ गुनिकै ॥ जरासन्ध आदिक नरपतिसौं । मिलि भो देत रतन
बहुँ जविसौं ॥ दान मान लहि मोदित ह्यैकै । तासौं कहे भूप मुद ज्वैकै ॥ केहि कारण आएऊ
दनुजेशा । कहऊ शोभ सौ वीर शुभेशा ॥ तब तेंद्र कहा कहे यह तुमसौं । बडे विरोध कृष्णसौं
हमसौं ॥ उन्हहिं हँमहि अब होइहि लार्द । तुम सबकोउ मन होऊ सहाइ ॥ मुनि कहि एवमस्तु
अहिरक्षी । सिकरे भए तासु प्रनपणी ॥ तासु बचन नहि पाण्डव माने । कृष्णहि आत्म परमहित
जाने ॥ राखि आऊ कहि निज पुररक्षक । सब यदुबंशसह प्रभु दत्तक ॥ आइ सु ब्रह्मदत्तके
धोर । किए निवास शयन बरजारे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आवर्तक शुभ सरितसौं उठि प्रभु प्रात अम्हाय । त्रिप्योदक शिवके घरण बन्दि परम सुखपाय ॥
सात्यकि अह अक्षिराम सह चढेगहडमें धोर । मखरलणहित पाण्डवन कह निदेश है वीर ॥

भानुमतीके हरणसमै नै । इति तेहि कोन्हो सुरण अभै नै ॥ सेवें दितिकह एक सुखारी । हो
 यह एक खीर बलभारी ॥ वार्ते किए कृष्ण इति जोखौ । गयो निकुम्भ गुहामधि तौखौ ॥ तब प्रभु
 शीघ्र गुहामधि जाई । खाने तासौ करण खरार्द्र ॥ प्रभुके पाके तहँ सबकोई । ये पांडव यादव सुख
 भोई ॥ मरै न शरसौ सो रणधीरा । कहे शंभु तब रुहि अशरीरा ॥ अब केशव शरधनु धरि दीजे ।
 याको नाश चकसैर कीजे ॥ सुनि धरि धनुष चक्र प्रभु लोन्है । मारि तासु गिर छेदन कीन्है ॥ तब
 प्रदुस्र विराधिप अगरे । स्थाए मोचि रहे जे पकरै ॥ रहे आपु नृपजनकह बांधे । छोडि तिन्है
 जयकारज साथे ॥ ते सब लज्जित शीस न बार्द्र । खरे भए तहँ जोडि बचार्द्र ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

असुरमकी बरकन्यका यदुन दये यदुनाथ । हय गज धन रथ देतभे हे जितने तहँ साथ ॥
 षटसहस्र रथ पाण्डवम कंह दीन्है यदुभूप । देतभए सब नृपनकहुँ गज रथ रतन अनूप ॥
 ब्रह्मदत्त यदुराजकह दै षटपुर रमणीय । नृपगण अरु पांडवमकहँ किए बिदा कमनीय ॥
 विलोएक शिवके निकट करि उत्सव अभिराम । यज्ञपूर्ण लखि कृष्ण प्रभु आए सदस्य स्वधाम ॥
 बरने एहि अध्यायमें षटपुरको सङ्ग । ब्रह्मदत्त यदुराजको सिद्ध यज्ञ वेवहार ॥
 स्वस्ति श्रीकाशीराजाधिराजश्रीउद्धितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दोजनकाशीवासिगोकुल
 नाथात्मजेन गोपीनाथेन कविना विरचिते महाभरतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे षटपुरवधो नाम
 चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैसग्यायमसौ कहे फिरि जनमेजय नृप । भानुमतीको हरण अब कहियै सुमुनि अनूप ॥
 पारिजातके हरणमें नारदभुनि विख्यात । अश्वकको बध शिव किए कहे कहऊ हो तात ॥

॥ * ॥ चौपार्द्र ॥ * ॥

सुनि बोले मुनिबर विज्ञानी । जनमेजय नृपकी यह बानी ॥ जब देवासुर सङ्गर मांही । असुरम
 हते विष्णु नभ पाहीं ॥ तब दिति अतिसै शोचिंत, ह्यौकै । तपि कश्यपहि मोदसौं खिकै ॥ यह बर
 मांगत भई सनेह । सुरगणसौं अबध्य सुत देह ॥ एवमस्तु तब कश्यप भाखे । अंभुरि तासु
 उदरपर राखे । कहुँजप करि इति कहे सुखारे । होईहि सुत मनमान तुम्हारे ॥ सब सुरप
 प्रभाव मन भारी । बरजि सु आदिदेव विपुरारी ॥ सर्वहि बिना सर्व सुरगणसो । होईहि
 सो अबध्य भरि पनसों ॥ इति कहि गए तपनजप मुनिवर । लखत भई दिति सुत अनुपम धर ॥
 शिर भुज सहस्र दुगुन पननेना । अति दीरघ बसखी सधैना ॥ बलके मद तेहि अबध निरेखी ।
 अध नाम सब कहे विसेखी ॥ अतिसै सो उनमादि सुखारी । खनो अनीति करण बलभारी ॥

तिय धन रतन बाजि रथ गंज गन । हरण लगे सुरगणके गहि पन ॥ तीनि लोका जीतनको पंन
करि । चाहेसि लरण इन्द्रसें धनुधरि ॥ तब कश्यप पै सुरपति जाई । कहत भए बज्रभांति जुजाई ॥
ताहि अबध किए तुम तातैं । बांचव अब हम केहि बिधि यातैं ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि धीरज देँ इन्द्र कहं कश्यप दिति सह जाय विरत भे अन्धक बलिहि बज्रत भांति समुभाय ॥

तज जाय सुरलोकमें करै उपद्रव नित्याबाधे ऋषि मुनिके करम अभरम पितुवर चिंत्य ॥

ताकी दृष्टा सें चलै रवि शशि ग्रहण पौन । चढि बिमान सुर सिध्यगण सके गौण करि कौन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

एहि बिधि तासु कर्म लखि पोचे । ऋ एकत्र सब करि मुनि शोचे ॥ कहे तहां सुरगुर ऋषि
गणसैं । बध दुष्ट यह मदन कदनसैं ॥ तात बलि सब नारद मुनिसैं । कहज दशा समुजाई सु
धुनिसा ॥ शिववर छपाकरैं उनपाहीं । वै चाहैं तब शिवपहं जांहीं ॥ वै शिव सें सब दशा सुनैह ।
तासें तासु नाश करवैहैं ॥ यह सुनि सब मुनिगण मुदराखे । जाइ ब्याधा नारदसैं भाखे ॥ सो सुनि
नारद मुनिवर दोषी । शिव पहं गए मुनिकहं तोषी ॥ पारिजात कर विपिन सोहावन । तहां
शंभुप जाइ सचावन ॥ एक राति तहँ वसि सुख पाए । बिधिवत सब विरतांत सुनाए ॥ सुनि
शिवको निदेश मुद गहिकै । पारिजात की माला लहिकै ॥ डारिगरे अन्धकपहं जाई । बैठे पूजित
ऋ सुखदाई ॥ पारिजातको गन्ध सोहायो । करिकै घ्राण अन्ध मदहायो ॥ बूझत भयो दुःश्रमहि
भारद । पारिजात यह कितको नारद ॥ जाको जैसे सुमन अनूपा । सरस सौरभित अनुपम रूपा ॥
बज्रदिन खले शक बनमाहीं । जैसे कुसुम उतैहं नाहीं ॥ तातैं कहज भौंच मनभाए । यह माला
तुम कहं सो स्थाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि मुनि दक्षिण पाणिसैं सो अग चारु उठाय । हंसि अन्धक मति अन्धसैं कहत भए सुख पाय ॥

मन्दर गिरिपै शूलधर पारिजातको बेश । हैं विरचे बन विशद अति सुनु सुवीर असुरेश ॥

॥ * ॥ मधुभारच्छन्द ॥ * ॥

तेहि विपिनि कुसुम उदार । बज्रभांति यासें चारु ॥ धन रतनके दातार । मनमान देत
बिहार ॥ शुचि गन्ध ईक्षित देत । अरू तरुणि मोद निकेत ॥ तेहि विपिनिम निशि एक । जो बसै
सुनऊ सटेक ॥ सो लहै कबज न भोति । कोउ सकै ताहि न जोति ॥ पर कठिन उतको जाव ।
उत प्रबल शिवको दाव ॥ गण धीर वीर सुभेश । सो रक्षय निति सो देश ॥ तहँ सदा शंभु उदार ॥

सह शिवा करत विहार ॥ नहि आन पुरूष सचाय । उत सकत कौसेऊ जाय ॥ सुनि सुमुनिके
ए बैन । करि अंध अरुण सुनैन ॥ वरवीर सेना साजि चढि चलो सिवप नाजि ॥ चलि शोध शठ
बदफैल । भो लखत मन्दर शैल ॥ गिरि अष्ट तव गहि काय । भेखरे ता ढिग आय ॥ गिरिराजको
लखि दैत । इमि कहत भो अमनैत ॥ जौ चहो निज कुशलात । तौ मानि मेरो बात ॥ तरराजको
वन यत्र । मोहि चलउ लै तुम तत्र ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मातरु हम मर्दव तुन्है कौन उबारणहार । हो अबध्र पितु कृपाते जानत सब संसार ॥
अंधक के ए बचन सुनि भे अदृश्य गिरिराज । तब अन्धक बोलत भयो गरवित गिरा दराज ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

है अदृश्य मन्दरकँह जैहो । मोहि तजि शरण कौन को लैहो ॥ अब तुव सानु चूण हम
करहं । इतसो डारि अनत लै धरहं ॥ इमि कहि दीरघ सानु उपारी । लग्यो देन शृङ्गनप डारो
सुभटन सह तंह शृङ्ग उपारण । लग्यो लग्यो शृङ्गन पँह डारण ॥ इमि बज्रशृङ्ग चूर्ण करि दोन्हे ।
तव शिव कृपा शैलपँह कीन्हे ॥ भए पूर्ववत सिगरे सानू । लखि बिसमित भो दैत अमानू ॥ शृङ्ग
उपारि असुर परि हरहीं । तिनसा दधि दैअत गण मरहीं ॥ यह निपरीत दशा लखि कोही । कहत
भयो अन्धक सुरद्रोही । गिरि तुमसो हंसो नहि कारजहि कित शम्भु वने जे आदज ॥ हम बल
सा उनपै चढि आए । जीतन चहँ उन्हे मुद छाए ॥ सोवै अब कित रहे लुकार्द । सनमुख है किन
करहि लरार्द ॥ इतनेमै शृङ्गर अति कोहे । वृषभारूठ शूलगहि सोहे ॥ तेहि क्षण अन्धक को दल
मांहीं । असगुन भए कुशल जेहि नाहीं ॥ आइ तासु सनमुख ईबिछाए । शम्भु अमोघ चिशूल
चलाए ॥ लखि त्रिशूल अन्धक का तनमै कीन्हे ताहि भसम तेहि क्षणमै ॥ लखि सुर मुनि गण आनद
पागे । अस्तुति करण शम्भुकी लागे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

देव बजाए दुन्दुभी हरषे बरषे फूल । गान किए गन्धर्वगण अप्सर नृत्य अनूल ॥
अन्धक के बधते भयो निहकण्ठक सबलोका आनद पूरो महत सुर मुनि नर गणके ओका ॥

॥ * ॥ तोटकहन्द ॥ * ॥

सुनि अन्धकको बध आनदसो । जनमेजय भूपति मानदसो ॥ फिरि बूझत भे मुनि राजकहो ।
अब जो हम बूझत चिन्तवहो ॥ प्रभु सारथ पारथ सो जुकहे । युधि दैत निकुम्हहि के छमहे ॥ यह
होव धुमीति मरो बलसो ॥ तेहिमै यह एक मढो छलसो ॥ दिति कौनिति सेवत एक कुनो ॥ हम एकहि
पूव बधे सो सुनो ॥ एहि भांति धनञ्जयसो कहियो । प्रभुकी मुद पारथ को गहियो ॥ तुम भाषेऊ जो

अब सो मुनि जू बिसतार समेत कहेो गुणि जू। बरबीर निकुम्हहि की अरुजी। गिरिसी गुर जो वह
 देऊ दुजी ॥ तोह विष्णु, बधे जेहि कारणसा। जेहि भांति जित पन धारणसा।। सुनिकै जनमेजय की
 सुगिरा। मुनि श्रेष्ठायन जू रूचिरा ॥ इति बोलत भे नृपसों सरितै । पहिले सुनिचै प्रभुके
 चरितै ॥ फिरि बूभेऊ सो वह जचरिहैं। सब संशय आपुनको हरिहैं ॥ प्रभु एक हमै तियको
 गए लै। जलमें जलकोडनको पन लै। बसुदेवहि औ नृप बृह समै। पुरद्वारवती महुँ राखि अभै ॥
 संग यादव लै सिंगरे सुखसों। करि मोदित आनदं मैं रख सों ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निज युवतिनको छन्द लै आपु चले सुख पाय । गणिका सब यादवनके दीन्हे संग लगाय ॥
 संग रेवतीका लए चले राम बलवान । पिंडारक बर तीर्थमें कीबेकौ असनान ॥

॥ * ॥ चौपाइ ॥ * ॥

गए समुदतट तहँ बलभारे । दइत बसत हँ तिन्हे सधारे ॥ फिरि युवतिन सह आनद पागे ।
 पैठे सिंधुम कोडन लागे ॥ रहीं जिती युवती रंगराती । पटरानी रानी बिखाती ॥ कामरूप छे
 तितने खानी । बिहरे सबसों अन्तरजामी ॥ निज निज ढिग निज निज बश जानी । क्रीडत भई
 सकल सुखदानी ॥ भाव अनेक भांतिके करि करि । बिहरण लगीं तरुणि मुद भरि भरि ॥ प्रेम
 काकसों हकी प्रेक्षाही । जे जेहि बिधिसों बिहरण चाही। तिन्हे बिहारे तोहि बिधि नागर । सागर
 गत प्रभु कौतुक सागर ॥ नख रदकतसों चिन्हित न्हे न्हे । मेदित भई आदरश जै जै ॥ युवतिनके
 शुचि अनु लेपनसों। अरु चिकुरनको गथित सुमनसों ॥ कै यक योजनसों सरितेश । भयो सौरभित
 सुखद सुभेश ॥ प्रभु प्रभावतें भो अति निरमलापय सुखाद लवणनिधिको जल ॥ जानु लङ्ग कुचला
 बर सीके । रह्यो उदधिजल तहँ सबहीके ॥ कादम्बरी पानकरि मात्रे । राम रेवतीके रस राते ॥
 बऊ बिधि रमे खड्ग चारी । न्हे जल गिरिवर बिपिनि बिहारी ॥ यादवगण गणिकनसंग मोदे ।
 सागरमें बऊभांति विनोदे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हरिणाक्षिण के हियो हरि जलमें हरि जलजाइ। रमित तृप्तिता लहे तकि तीक्ष्ण तरल कटाक्ष ॥
 निज प्रभावसों कृष्ण तहँ दिव्या शरण बलाय । संग यादवन के रमऊ आशा दए सचाय ॥

॥ * ॥ चौपाइ ॥ * ॥

प्रभु निदेश सुनि ते मरुपानी । यदुबैगिन संग बिहरण लागीं ॥ सजलं मेघ गहं संग जिनि दामिनि।
 तिमि तिमम बिलसी ते कामिनि ॥ काय गान अरु मृत्य सोहाए । यलसम करै बारिष भाए ॥
 भाव क्लेशय अनेक जतनके । हरत भई मन जादव नलके ॥ मन्दिर बंस प्रमत्त बल पूरे । इति

सागर यादवगण रूरे ॥ तिन्है सहित जरथ बलि जाई वाऊकंध धै तिन्है हि रमाई ॥ फिरि सागर
 बन गिरि मह ल्यावै । रमि रमाय फिरि उतै रमावै ॥ तियन सहित तिनके संग लागे । इत उत रमे
 कृष्ण मुदपागे ॥ मोद अलभ्य अपूर्व अनूपा । यादव इमि लहि अदभुत रूपा ॥ कृष्ण प्रभाव
 चिन्ति सुखसाने । सो प्रकार नहि अचरज माने ॥ भोज्य लेद अरु-बोष्य घेय शुचि । भोजन भावन
 भूरि यथा रूचि ॥ प्रभुप्रभावतें अति अनुपम तहँ । भयो प्राप्ति नरंनारि सबन कहँ ॥ प्रभुकी
 ईहातें बिसु करमा । आइ तहां अति पूरित परमा ॥ विविधि भांति की नांव सोहार्ई । बिरचत
 भए सरस छबिछार्ई ॥ तह राजी निरमे तिन पाहीं । नन्दन सदृश चारू चितचाहीं ॥ फूले फरे
 पल्लवित चारू । जरत फरत फल फूल उदारू ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुन्दर सुचि अति सुखद रव कूञ्जत बिहँग अनेक । बिलसत ते तिन तरुण पद बहरंग सहित विवेक ॥
 साध दलान सुकोठरो सुख दायक रमणीय । रचत भए नौकानपै बडबिधिके कमनोष ॥
 पृथक पृथक तियगण सहित सबके रमिने योग । रचत भए नौका विशद तहँ बिलसे सब लोग ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

अति बिसतरित अमन्द रतन मई रमणीय अति बिरचे नाव स्वच्छन्द सब तिय सह प्रभु जेहि रमे ॥
 ॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बलिराम आनद कन्द । करि पान मय अमन्द ॥ अति अरुण नयन विभात । क्वै घूर्णमान
 सुगात ॥ भरि रेवती को अरु । ह रमत मुदित निशङ्क ॥ तह जाय प्रभु यदुनाथ । लै अश्वरन कह
 साथ ॥ लखि नृत्य गान सुभेष । को भए देत निदेश ॥ तव अश्वरा अभिराम । करि बलि सति
 यहि प्रणाम ॥ शुभ नृत्य गन समोद । सह विशद भाष विनोद ॥ ते करण लागीं भूरि । स्वर
 सुखद उत्तम पूरि ॥ बलि कृष्ण कीन्है जौन । कति बालपन ते तौन ॥ तह भई नावत जानि ।
 अश्वरा सुरस सुजानि ॥ सुनि अति मुदित क्वै राम । उठि सहित सुखदा बाम ॥ तह लगे नाचन
 चाहि । तव कृष्ण लखि तिमि ताहि ॥ सह सत्यभांसा मोदि । उठि लगे रचन विनोदि ॥ गद
 सात्यकौ अकर । भरि परमा परम पूरि ॥ उठि लगे नाचन देखि । हिय महत आनद भेखि ॥ हे
 जिने यदु परधान । सत्र गचे तव सुजान ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सहित सुभद्रा आरजुन तह घावाके सेत । धाए ह तेऊ लगे नाचत सति असुचेत ॥
 कृष्ण प्रदुन्न सुशांभ अह चारु दोष्य शुभचार । नाचन लागे तहँ रक्षि मूरित अम अपार ॥
 निसठोलमुक सुत रामके अतिसै आनद पाय । नाचन तहँ लागे सुनो जगमेजय गहि प्राय ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

मढो राशि मंडल एहि विधिको । आलय भो सुषनामथ सिधिको ॥ इतनेम सुषनासों हाए ।
 प्रेमपूरि नारद तह आए ॥ बने बेस आनद सो पागे । जाय मध्यमें नाचन लागे ॥ गान नृत्य अति
 उत्सव करिकै । सबको द्विय आनदसों भरिकै ॥ कौतुक लीला विधि अभिलाषे । हास्य बचन
 बऊ विधिके भाषे ॥ हास्य कारण चेंष्टा बऊ कीन्हो । लखि लखि तियन मोद अति लीन्हो ॥
 प्रभुहि सहित सब नर नारी गन । अतिसै हास्य किए प्रमुदित मन ॥ प्रभुको भाव जानि नर नारी ।
 सुनिकह दए दान मुद धारी ॥ प्रभु प्रभावसों नौका ताहन । बढि इतेक सुनु रञ्जन जनमन ॥
 जापैं सबकोउ सुखसों राचे । बिलसि विहारि फौलि पिरि गाचे ॥ रास निवारि कृष्ण मुद लहिकै ।
 नारद मुनिको शुचि कर गहिकै ॥ सतिभामां अरजुन सह मोदे । कूदि सिन्धु में सरुचि बिनोदे ॥ तब
 अकूरहि दिए निदशा । आधे यादव सुखद शुभेशा ॥ हैं हिं रामको दिशि मुदराते । होहि अध
 सो दिशि मदमति ॥ मो दिशि होहि रामके बारे । बलको दिशि मम सुषन सुखारे ॥ एहि विधि
 रचि द्वै गोल सु लीजै । तियन सहित जल कोडा कीजै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अथ समूर्ति सांजलि खरो सिन्धुहि दए निद्रेष । सागर तुम सादर करऊ जनु हीन यह देष ॥
 होऊ सगन्ध सुखाद जल अति निरमल रमणीय । जातैं इतसों लखि परै शरवर तन कमनीय ॥
 मय कुम्भ अरु कनकके पानपात्र इत ल्याय । राखेऊ सो जो तबचहैं तब तेहि दिहेऊ सचाय ॥

॥ * ॥ शेरठा ॥ * ॥

सखपद बारिज चारु मयो करऊ निज बारि शुचि बाँहित विहित विहारु देऊ सर्वजनकहं मुदित ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

इनि कहि सागर सों अनुरागे अरजुनसों प्रभु कीडन लागे ॥ पियको नैन श्रैन लखि कामिनि
 चातुरि सतिभामां गज कामिनि ॥ बारिजात से बारि सोहावन । मेलैं बारि बारिके भावन ॥ लगी
 सु मुनिके मुखपर डारन । भए मुदित मुनि लखि प्रभु कारण ॥ तदनु राम मदके मद हाए । सहित
 रेवती सनमुख आए ॥ कहे रहे प्रभु जेहि विधि तैसे । दुऊँ दिशि बन्धो गोल लखि सैसे ॥ बारिज
 लै लै बर भावन । दुऊँ दिशिसों जल लागे चलावन ॥ कितने बारि बारिसों बारैं । कितने बारि बारि
 जपैं धार ॥ एहि विधि तरुण तरुणि दुऊँ दिशिसों । बिरचे चारि युद्ध बिनु ऋषिसों ॥ प्रभु अस्तर
 आजा अनुसारी । कर बाध तह उचित विहारी ॥ ददुर बाध करैं मुदं राती । अरु जल नाथ
 गान अवदाती ॥ बारिध कामिनि बारिज विध मथ । भो तेहि चण बारिध सुषना लय ॥ एहि

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नभं पचपें अति वेगसों चलि ते बीर विभात । इत निकुम्भाहि लखत भे बज्र नगर कहं जात ॥
प्रभु प्रदुन्न पारथहि लखि मायावी सो दैत । तौनि मूर्त आपुञ्ज भयो अति अमान अमनैत ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बज्र कण्ठक लै गदा विशाला । लनि लरन रचि जो बिकराला ॥ लीन्हे सुता वान कर बरम ।
लरे गदा लै दक्षिण करमै ॥ कृष्ण प्रदुन्न पार्थ धनुधारी । मारहिं शरसों ताहि विचारी ॥ कम्पाहि
लगे न शर बर जाते । शङ्ख अशीघ्र तजै शरताते ॥ तज धनुर्धरको विधि लीन्हे । मारि दैतकहं
व्याकुल कीन्हे ॥ तब सह तनया सो मायावी । भो अदृश्य सकपट मेधावी ॥ अधम आइ अघ
करि विधि अज्ञी । भागत भो बनि हारित पत्नी ॥ माया बिनके रिपु प्रभुज्ञानी । लगे तासु पीछे
अनुमानी ॥ बारहि बार बाण बज्र मारै । मुदित तासु संग लगे विहारै ॥ सातौ दोष फिरे सो
भागो । धारि न सको कितहं भय पागो ॥ थकि गोकर्ण शैल ढिग जाई । सुरसरि कूल गिरो भय
पाई ॥ तब प्रदुन्न अति जब गति कीन्हे । तासों अचि कन्यकाहि लीन्हे ॥ प्रभुके बाणनि अहै सो
पीडित । असो भागि दक्षिण दिशि जोडित ॥ गुहा द्वारिमें प्रविशि सशक्ति । जो षटपुर शरक्षत
सों अक्षित ॥ गुहाद्वारि कहं रोकि मुखारे । तेहि निशि पारथ कृष्ण विचारे ॥ लाहि प्रदुन्न प्रभु
शासन भाए । कन्या भानुहि दै तहं आए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोर भीम बल दैतसों बीर निकुम्भ अमान । कढे जुद्धको चाव गहि गर्जत मेघ समान ॥
कढत देखि सादृण लगे पारथ बाणनि ताहि । तडपि हनेसि तब तेंद गदा शिरसि पार्थकेचाहि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

रक्त वमत अहै घूर्णित पारथ । मूर्छित गिरे भूलि शर बारथ ॥ फिरि हनि गदा प्रदुन्नहिं
जोड । करत भयो मूर्छित तहं सोई ॥ तब प्रभु कृष्ण गदा लै आपै । सत्वर चले कोपकरि तापै ॥
चलि निकुम्भ अतिसै रिसि पागो । प्रभुसों लडन गदा लै लागो ॥ घृनि चक्र सम निज जय ईछे ।
गदा घुटतै बज्रबाण सीछे ॥ औरावत चढि सुरपति ठाढे । सुरसह लखै युद्ध मुदवाढे ॥ नढे आठ
घण्टासो घोरा । सो गुरगदा निकुम्भ कढेरा ॥ प्रभुके शीस हनेसि मत वारे । हने ताहि प्रभु सज्जन वि
चरि ॥ मोह कछु चिग कौतुक चाही । हने चक्रसं कोभव ताही ॥ बक्राहि आवत लखि सोइ मारै ।
तजि निज तम कड अन्नबहि जाई ॥ आयो धरि अतिदीर्घ शरीस । बनि दश सहस्र निकुम्भ
प्रवीर ॥ इत सुत सखा सहित धनुधारी । प्रभु ददत्य को कपट विचारी ॥ सो तन लण्ड लण्ड करि
तौखै । राखे बह फिदि आगो जैखै ॥ अघुत बिकुम्भ बीर बनि आयो । तिन्है पेलि प्रभु अति सुख

पाथो ॥ पारथ अरु प्रदुन्न रिसि पागे । तिन्है शरतसौं मारण लागे ॥ तव ते कटक सहस्र दश
दिशित । ऊपटि एकसंग भरि अति रिसितें ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पाणि पाद कटि शोसं धनु प्रति अंगनि लपटाय । गहि बर जोरी अरजुनहि लै गे ऊर्ध उठाय ॥
सह प्रदुन्न तहं जाइ भ्रमु करि निज मूर्ति अनेक । द्वै द्वै खण्ड करै लगे शरसों तिन्है सटेक ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

करे जेहि द्वै खण्ड ते न्है दोय दीरघ काया लरे प्रबल प्रकर्ष भट भौर रोष चञ्चदिशि धाय ॥
बूझि यह विरतान्त प्रभु धरि ध्यान चितमै चाहि । रह्यो सद्य निकुम्भ लोन्हे अरजुनहि जो ताहि ॥
मारि शरसों दाय कोन्हे गिरे सो तजि प्राण । भय माया मय असुर सब वारि बुद बुद मान ॥ गगन
मे अरजुनहि महिपैं गिरत कृष्ण निहारि । दए शासन गुतहि ते चलि लए रथपैं धारि ॥ मारि
इविधि निकुम्भ कहं सह सखा सुत प्रभु जाया । दारिका नैं ओक ओकनि दए आनद छाया ॥ आइ
तह तेहि समै नारद भानुसों एहि भांति । कहे कन्या हरणको मति करऊ शोच सुकान्ति ॥ एक
दिन तब सुता रैवत शैलपैं अभिराम । रही खेलत ताहि निजदिग टेहि हारि सकाम ॥ दए
दुरवासा सरिसि न्है शप अनु चित मानि । कौन को तू सुना परिहे खल असुरके खानि ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव हौं मुनिन समेत तेहि बज्र विधि कहैं वृजाय । सुनि दुरवासा कहत भे शोस नवाय लजाय ॥
अथ नहोइहि मम गिरा असुरहाथ यह जायाकुटि तासों । किरि सुपति लहि बिकसिहि अतिमुहपाय ॥

॥ * ॥ छन्द ॥ * ॥

सुनु भानु । सुनि मानु ॥ यह भेद । तजि खेद ॥ दुहितारि । चितचाहि ॥ सहदेव । शुभभेद ॥
तेहि देह । सहनेह ॥ मुनिबैन । सुनिचैन ॥ लहिभानु । बरझानु ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि समेत श्रीकृष्णसों सह देवहि तहं आनि भानुमती निज कन्यकहि कहि दिए समपि नहिपानि ॥

माझीसुत पाण्डव शुभग पतिनी सह सहदेव । भानु कृष्णसों न्है बिदा ने निज म्दह शुभ भेव ॥

अथक वध कहि कहि कहे प्रभुको वारि बिहार । भानुमती को हरण अथ वध निकुम्भ को प्यार ॥

भानुमती को शप हो दुरवासा को जौन ॥ कहे ब्याह सहदेवसों भानुमती को तौन ॥

सक्तिश्रीकाशीराजमहारामधिराज श्रीवृद्धिनारायणस्याज्ञानिगामिना श्रीवन्दीजमकाशी
वासिभोकुलनाथात्मनेन गोपीनाथेन कविना विरचिते भारतांतर्गतेहरिवंशदर्पणे षष्ठपुरवधे

नामपञ्चविंशोऽध्याः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैसम्पायनसौ कहे जनमेजय चित्तिपाल । सुनि निकुञ्जकोबध लक्ष्यो मनमै मोद बिसाल ॥
भानुमतीको हरण मैं ब्रह्मनाभके घात । प्रभानतोको हरण तुम कृडे कहऊ सो तात ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वैसम्पायनकी यह बानी । सुनि बोलो मुनिवर विज्ञानी ॥ जाइ मेरु गिरिपै बल भारी । दितिसुत
ब्रह्मनाभ ब्रतधारी ॥ त्रिधिहि अराधि उद्यतप करिकै । बर ब्रूहि सुनि आनद धरिकै ॥ इन्द्रहि
जीतनके पन पाग्यो । अवध्यत्व सुरगणसौ माग्यो ॥ और ब्रह्मपुर माग्यो बिसतर । ब्रह्मयो बिरचो
अति दुसतर ॥ विमतासुत ईछा तह आई । सकै न बापु महत भय पाई ॥ तेहि पुर ज्ञातिन सह बसे
सोई । बिहरण लागे निरभय होई ॥ विधिबरके प्रभाव मुद पागे । करण उपद्रव जगमैं लागे ॥
जाइ इन्द्र सौ कहेसि रिसारो । विधिबर बल मदसों मतवारो ॥ तीनिलोक पतिता हम चाहैं ।
सो मोहि देख देखि मन बाह ॥ बऊदिन तीनिलोक पति खैकै । बिलसे तुम आनदसों खैकै ॥
देऊ हमैं अब राखि बडारै । कौ समुख चाँड करऊ लरारै ॥ कश्यपके सुत हम तुम भारै । कत तुम
भोगऊ हमैं बिहारै ॥ ब्रह्मनाभ को बाणी सुनिकै कहे शक्र निज गुरसौ गणिकै ॥ कश्यप यज्ञकरतहे
आई । तौसौ तू धीरज धर भारै ॥ भए यज्ञ सब पितहि सुनाइव । जो कहिहैं सो करि सुख पाइव ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रह्मनाभ यह बचन सुनि कश्यप मुनि यह जाय । कहत भयो बिरतांत सो सुनि कश्यप सुखदाय ॥
ब्रह्मनाभसौ कहत भे अबहि ब्रह्मपुर जाऊ । यज्ञ भए पै कहव हम सो कोन्हेऊ लखि लाऊ ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ब्रह्मनाभ पितु बचन सोहायो । सुनि सत्वर चलि निजपुर आयो ॥ सादर शक्र द्वारिका आए ।
केशप्रसौ सब कथा सुनाए ॥ कहे शक्रसौ कृष्ण सुखारे । यज्ञ करतहैं पिता हमारे ॥ बाजपेय मख
पूरण खैकै । करिहैं तासु नाश मुद खैकै ॥ वासु नाशकी विधिकी करिकै । संमत शक्र गए मुद
भरिकै ॥ यज्ञोत्सव मह तँह नट आयो । निज विद्यामैं अति पटु भायो ॥ सुविधि नाट्यविधि
करि मुदखीन्हे । मोहित सब ऋषिगण कहैं कीन्हे ॥ खै प्रसन्न मुनिगण अभिलाषे । बर मागऊ
नटवरसौ भाषे ॥ ब्रह्मनाभ नट सुखसौ खैकै । प्रभु ईहासौ प्रेरित खैकै ॥ यह बरसागत भो सो
सबसौ । सबका भोग्य होऊँ मैं अबसौ ॥ सात दीपम सब घरसाहो । मन गति होइ कहे तुमपांही ॥
सबसौ होउ अबध्य सुवारो । होउ ईशित भेष सुधारी ॥ मृतक अमृतक भविष्यऊ के तन । प्रति सब
शक्ति सुखई प्रमुदित मन ॥ सुनि ऋषिगण आनदसौ भारे । एवमस्तु बर बचन उचारै ॥ उतै स्वर्गपै

शक विचारी कह सहसों ए विधि दुखारी॥ मन सुबन्धु कश्यप कुल जाय न्हे तुम हंस सुभव तनमाय

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुर बाहन सुर सदृश तुम हंस परम प्रिय मोहि। कछु निदेश चाहैं कियो बुद्धिमान लखि तोहि ॥
बञ्जनाभके मगरमें आनद गहि तुम जाऊ । तहँ बनबापिनमें बिहरि मन हित कहे कषाळ ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

बञ्जनाभकी सुता सुजानि । प्रभामती हैं सरस स्यानि ॥ तासों करि सम्भाषण जानि । चातुरताको
निज बय जानि ॥ कहि प्रदुन्नको कुलगण नाम । सुषमा बय सुभाव अभिराम ॥ पुर सारथ आदिक
सद्वत्तकहि ताको मन करि सउमंगलै मिलापको शुभद निदेशाकहेऊ आइ प्रिय सुपद संदेश ॥
तव हंस केशव करि अनुमान । करव उपाय सुनऊ बुद्धिमान ॥ सुनि बासवके बचन संकामा मोदित
जाय हंस मणि धाम ॥ बिहरण लगे बञ्जपुर बोच । बनबापिनमधि निकट स भीष ॥ बोलि
मनोहर बाणी वेस । इत उत लागे रमण सुभेस ॥ बञ्जनाभ तहँ तिन्है निरेखि । कहत भयो करि
कृपा विद्ये खि ॥ तुम दम्पति मोहि प्रिय निति अच । रमौ ख दृष्टा सों सरबच ॥ तव ते न्हे अति
सुधित सचाय । रमण लगे अन्तहपुर जाय ॥ मरभाषा तहँ बोलि सुबोल । लागे कहन कथा अन
मोला ॥ सो सुनि सुनि तियगण गहि वावा लगीं करन अति आदर भाव ॥ आनद में तहँ करत विखासा
गे घलि प्रभा नदीके पास ॥ तिन्है लेखि सौ लखि अति मोद । लगीं करन बळभांति विनोद ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जानि तिन्है मतिमान अति प्रभामती गुणखानि । हंसिनि शुचि शुचिमुखीतेहि कीन्हीसुखीसुनानि ॥
प्रभामतीके सरु बिहरि कछु दिन तहँ सुखदानि । समै पाप हंसिनि सुबुधि कहत भई अनुमानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभामती हैं कहँउ विवारी । नहि तोहि सम तिऊपुर महँ नारी ॥ सुन्दरि सुबुधि सुशील
उजागरि । विधि तोहि रचे अतुलि गुण आगरि ॥ तातें बूझि कहँउ तुम पाहों । कछु प्रदार्थ तोहि
दुर्लभ नाहीं ॥ रति सुख विनु निहफल से सिगरे । व्यर्थ जान सुखके दिन निकरे ॥ घोरवन गयो बऊरि
नहि आरहि । कडि प्रवाह के जलसन जाइहि ॥ बञ्जनाभ बऊ भूष बलाए । तुम सुखसुख
इत मन भाए ॥ तेनर असुर शरव गुण भारे । रचे न तुन्है सवै हिय हारे ॥ तातें तुम्हरे योग उदार ।
घर अनुमान कियो हों चार ॥ सुवन कषाको परम उजागर । घोर धुरीव घोर शरव नार ।
एषसह पुकेली को नेता । अमर असुर सुरनरको जेता ॥ निज प्रभासों तमभन मन्मथन फिय
पुष प्रभुबुकि सुखरविहि । नाम प्रदुन्न पुकेलि के मण्डन । मजुनमोहर घोर बिहउर विमलपने में
को यनु पाद । इत्यो सन्वरहि जाल घोरौ ॥ परऊ तिन्है जे निज पद अमली सुमेल सर्व तुमकु

सौ खानी ॥ निज अनुरूप अनूपम जो है । कहन रत्न सहस्र मिलि सोहै ॥ बचन शुचिमुखीके ए
सुनिकै प्रभावती निज हियमें गुणिकै ॥ बोलत भई यथोचित बानी ॥ पुनकि पसीजि मोदसों खानी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आपु विष्णु प्रभु दृष्टि भे दैत बिनाशन हेत । सो सब हैं विधिवत कहे नारद ज्ञान निकेत ॥
सकल चिं प्रदुक्तके हैं हम सुने समेद । परं एहि कारज सिद्धिमें हैं व्यापित नुर खेद ॥
केशवसों मन पितासों है स्वाभाविक बैर ॥ शुचिमुखि कहि विधि सधिहि यह कारण पुरित बैर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

परम पंडिता शुचिमुखि आरज । जो तू सिद्ध करै यह त्कारज ॥ तौ हों तोहि स्वामिनि सम
मानो ॥ आपुहि तुव दासी सम जानो ॥ यह सुनि शुचिमुखि प्रमुदित न्हेकै । कहत भई संशय सब
गैकै ॥ सुन्दरि हम नुर निरहि अराधवा करि बज्ज जतन काज तुव साधव ॥ निज पितु पास बहोरि
बहोरी । बज्ज विधि करज बडार्द मोरी ॥ प्रभावती सुनि आनद गहि कौ ॥ अन्तहपुरमें भूपति लहि
कै ॥ कथा कहनकी विसद बडार्द । कहत भई शुचिमुख की भार्द ॥ सो सुनि दनुजाधिपति सुरखि
सों । ब्रह्मत भयो सबचि शुचिमुख सों ॥ तुम जो कथा कहज्ज अति नीकी । सो अब मोसों कहज्ज
खुसीको ॥ शुचिमुखि लहि ताको अनु शासन । लागो करन कथा सम्भाषन ॥ सुनु दनुजेश शंङ्किली
नामा । परमतर्पस्त्रिनि अति अभिरामा ॥ निकट मेरुके बर तप चारत । तेहि निरखि हम तहाँ
बिहारत ॥ तारी गहि अति दूर सोहावन । भद्रनाभ नटवर मन भावन ॥ रहै तासु गुण अनूपम
देखो ॥ तुवसों कहइ सुनज्ज गुन भेखी ॥ ऋषिगणसों बांझित बर पाए । है जग निज महिमासों
हाए ॥ देव गच्छान सम सो गावै । करि मन मोहन अनूपम भावै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कान रूप नटगाहसों सात दीपमें जात । सोमन्तनकहं मोहि तह न्हे सु प्रशंसित भात ॥
ब्रह्मनाभ इमि कहत भो सुनि सुप्रसंसां तासुजाइ मासु दिन शुचिमुखी लै आवज्ज तेहि आस ॥
तव दनुजाधिसों विदा न्हे ते सादर जाय । सामद इन्द्र उषेन्द्रको दान्हा कथा सुनाय ॥
सो सुनि दृष्टि प्रदुक्तकेदिए निदेश सचाया ॥ अति असुरहि ताकी सुता ल्यावज्ज तुम उत प्राय ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

देवी भाषा वैष रधि नटवर पनि साम्न सह । सह पादव शुभ भेष संग लेज्ज सामान सुजि ॥
सुनि प्रदुक्तकेदिए निदेश साम्न सनि । अदर अन्य सुकाय भैर समाजी सुदित मन ॥
पादवभूषण सुप्रनिधि अजीकुरि मोदसों । नटवर भद्र उदाह ताह सुभार संग ले ॥
अति विमान में मोहि साम्ना पुर पर ब्रह्मको । राघो सु पुर विज मोदि सह समाज तह जात भे ॥

॥ * ॥ रोसाहन्द ॥ * ॥

आमन नटनाहको सुनि दैतपति हरषाय । सुपुर पुरमें रहत हँ जे दैत मुख सचाय ॥ दिथो
ताहि निदेश उनको करऊ तुम बेवहार । पाय आज्ञा आर कोन्हे ते उचित सतकार ॥ नाट्य
निपुण विधान भे फिरि लखत निकट बसाय । नाट्य विधि ते किए उन्नत राग उत्तम नाय ॥
कथा रामायण विग्रह को नाट्य विधिमें ठामि । तिनहै दरशाए सकलहित आपनो अनुमानि ॥
रही शान्ता सुता दशरथ भूपकी तेहि आय । सोमपाद महीप मांगे पुत्रहीन अचाय ॥ दए दय
रथ सुता तेहि लौ भूप निज पुरजाय । बारबधुन पठाय निजदह सु षष्ठिगृणिहि ल्याय ॥
दए शान्तहि ब्याहि सो यह सहस्र वेष बनाय । गाय रामायण दए परतत्त सकल ललाय ॥
रहे हँ तेहि समै मैं जे इह दानव भूरि।देखि ते तब समुजि सो अति रहे आनद पूरि ॥ देखि मोदत
हे दहतवण दए तिन्हहि सचै । बसन भूषण रतन अगिनित बोलि प्यारे बैन ॥ तोषि तिनकँह
असुर ते सब असुरपतिपहँ जाय । कहे क्रौतुक सर्व सुनि सो तुरित तिन्हहि बसाय ॥ परम उत्तम
गेह तामैं वासु तासु करायाकरि सबिधि सतकार तिनको परम प्रेन बढ़ाय ॥ पाय पर्वणि विहसि
बैठो सभा विरचि विशाला जाल बेष्टित सुरथमें बैठाय सिगरी बाल ॥ बोलि लो मठवेव विरच
यादवनकहँ तबाकरि उचित सनमान बोल्थो नाम करिथे अच ॥ पाय शासन मुदित हँ ते विरचि
वेष बनाव । प्रथम कोन्हे बाय अनुपमं बाय विधिके भाव ॥ गान करि गान्धर्व तिनकँह मोहि
फिरि परबोन । नाट्य विधि भे करत ते तहँ कौतुकी अन हीन ॥ जाति मलकूबर सचिपै रही
रम्भा बाम । आइ तासो रन्धो बलसो लक्ष्मपति बलधाम ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मलकूबर सुत धनदके यह इतान्त लखि कोपि । मलकूबर पौलस्तिकँह दिए शप अतिबोपि ॥
यह रामायणकी कथा नाट्य भेषम भेलि । दरशाये असुराधिपहि निज कारज अवरलि ॥
मलकूबर प्रद्युम्न भे शूर भए लक्ष्म । मनोवतो गणिका भई रम्भा विरचि सुभेय ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

मायामे कैलाश रचि मठवर मतिमान तहँ । दरशाए समिंसास सो शुभकथा अभेद करि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बच्चनाभ लखि अति हरषाई । दैत भयो वज्रबाजि मंगरई ॥ भूषण बसन रतन बज्र विधिके । दैत
भयो तहँ मही सद्यधिके ॥ भूषण बसन रतन बज्र तियलम । दैत भई अति कदि प्रसुदित मन ॥
सो सबसै नै विदा सुखारी । गए वासवर मठ पनधारी ॥ प्रभावतीसो उत बह हंसिनि । कहत
भई इनि परम प्रसंसिनि ॥ नीर हारिकामै हँ जाइ । नीर प्रद्युम्नहि ग्यारे पाई ॥ भक्ति तुम्हारि

प्रेम उतसाज । अर अभिलाष सुभाव सचाज ॥ दर सुनाद सविधि सो सुनिकै । आवन आजु कहे
बैनुषिकै ॥ ततें आजु अवसि वै अह । मिलि तुमहो आमद सरसैहें ॥ यह सुनि विहंसि प्रभावति
तासो । कहत भई अति पुरि प्रभासो ॥ सखि सुचिमुखि तुम मो द्विग आजू । रहि निशिनै साधज
यह काजू ॥ लालच लाज भोगि मोहि घेरे । बनि न परिहि कहु उनकह घेरे ॥ हंसि तपासु कहि
हसिनि ता संग । नई सौंधर्यै गहि अनुपम मग ॥ तह प्रदुस्रके योग सोहाए । परस पावडे पंख
सजाए ॥ परदे अरु कृतपोस सोहावन । लग्वाए नणिनै मनभावन ॥ अतर गुलाब अर
आमन्दन । धरवाये तहँ चौरस चन्दन ॥ ❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀*❀

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अति अन्तित-उत आजु कह रहे प्रदुस्र उदार । ताही क्षण तितं नै चली तहँ मालिनि लै द्वार ॥
प्रभावती पै जाति है सखि प्रदुस्र करि गौर । भौरनके संग भौर बनि गे तहँ करत सुभौर ॥
उत चौर धरि फिरि गई मालिनि अपने धाम । सांज भए उठि भौर गे रहे अकेले काम ॥

॥ * ॥ चम्पाचन्द ॥ * ॥

प्रभावती विरहा कुलि नै तब तात । कहति भई सुचिमुखिसों हियकी बात ॥ सखि पूरण अग्नि
आहत दाहत आजु । तजि निज बानि करत कहा अनुचित काजु ॥ त्रिविधि वायु सुखदायक से
यहि काज । मोहि खूंक सम परसत करत बिहाल ॥ चन्दन चौर अर सु अतर गुलाब । बेनि
दाह सखि नातह तमतजि आव ॥ अर सम लगत परसत सरसिज सैन । विकल होत तब ब दत ब
कहत सुबैन ॥ कर्मित उर रोसाश्चित दूदत गात । मुल सूखत रुज नूतन प्रगटत जात ॥ जौ
सखि प्रथमहि जोरत प्रेम-विधाधि । तौ न विकल इमि होइति यह व्रत साधि ॥ जाहि लागि हो
व्याकुलि ताहि न लागि । लागि तोहि धिक विधवति एकहि लागि ॥ प्रभावतीके सुनि ए वचन
सप्रेम । भे प्रदुस्र तहँ प्रगटित पालक नेम ॥ सखि प्रदुस्र कहँ प्रमुदित हिए सकाम । लज्जित
असखि अथ करि रही सुवाम ॥ तब गहि दक्षिण करसों तासु सु द्वार । कहत भए एहि विभ्रस्र
पुलकित नार ॥ प्रिया मोहि सखि सुपुहँ शीस नवाय । रहिऊ शोभि कत मुद नै देज बताय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

एहि विधि कहि पडजाति मोहि करि समसुख गहि मोदा करि गन्धर्व बिहाह तहँ कोन्हें विग्रदविग्रद
सौंध द्वारिपै हंसिनिहि द्वारपालिका सखि । बिहरि रहे कहु निशि गए निशि सखि आइत भाखि ॥

॥ * ॥ सर्वगानिचन्द ॥ * ॥

पानातिहो रानिनी यौर लै भे सप्त भूरि धानीनि पै जाय ताही । निगंर परजहपै अइम साय

आसिन्के चाहि जो चित्त चाही ॥ कै कोककी रीठिकी नीतिके धामहै दे सु आनन्द आनन्द
माही । प्रदुन्न मी कमलके पचसे बालने तब भे भौरकी वृत्ति नाही ॥ ❖*❖*❖*❖*❖*❖

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भोर जाय मठ गेहमें बिलसैं दह उदार । प्रभावतीपै जाय निशि बिरसैं कामविहार ॥
कपड्क दिनहुँवै रतै इतहुँ उत अभिराम । रति सन धाय सकाम सहि कौमर्य चीकाम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

इति बिरसे बड्कदिन मुदपाने । निज कारजके घातन जाने ॥ बज्रनाभके बचकी बेरा । निरसत
कोन्हे तस्य बसेरा ॥ दैत दैतपति भेद नजाने।नाट्य देखि अति आनद साने ॥ वासव वासुदेव रीह
जाई । सरहि संखान हंस सुखदार्द ॥ उनको सब बिरतान्त सुनार्द ॥ जाहि बड्करि उन आनदखार्द ॥
बज्रनाभको सोदर धाता । रह्यो सुनाभ असुर मत गाता ॥ रहीतासु है सुता सधानी । चन्द्रवती
मुसवती सुमानी ॥ एक सनै ते आनद राती । प्रभावती पै गर्द सोहाती ॥ प्रभावतिहि रति
चिन्हित देखी । ते निज हिय बिसमयसों भेखी ॥ बूजसु भई भेद मन भावन । प्रभावती तब बोली
चावना । पूर्व मोहि दोन्हे दुरवासा । विद्या दायक बिभ्रद बिलासा ॥ सो पडि जो कामिनि गहि
चावै । रति हित पति चाहै तेहि पावै ॥ सो विधि साधि आधि सो भावनाभरउ सुनाय जाय सहि
पावना ॥ तुमहुँ चाहऊ तौ सिखि खेह ॥ अर्द्धित पति हित सहित समेह ॥ अपि सुंमन ईहिल पति पार्दो
बिहरो विधिवत शेष बिहार्द ॥ सुनि तबालु कहि ते मुदपाने । सिखि खे भंज जवन तह खाने ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहतभद प्रदुन्नसों प्रभावती सुखनोद । इन्है योम है रावरे बन्धुवर्गमें कोद ॥

कहे प्रदुन्न सुबन्धु मन शान्न अनूपन बीर । अरू नदहै पितृव्य मन अति प्रथिइ रखधीर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रभावती सुनि बोली पतिसों । स्थावळ तिनहै इतै भरि रतिसों ॥ तब ते मठ मन्दिरने जाई । श्राव
नदहि बिरतात सुनार्द ॥ भेष बनाइ रूपार सवार । जाइ तहां तिनकहैं दरगार्द ॥ चन्द्रवती
कहैं बरसों जाई । श्राव गुणवतिहि आहि उछार्द ॥ करि गन्धर्व व्याह नठ नायक । विहसत भय
तहां ते लायक ॥ बरसों याइ देखि घन लमसे । गदहि घेरि बड्कदिशिसौ धुमडे ॥ अनदा बड्करनि
को सहि श्रावनि । सुपद बकनकी पांति सुहावनि ॥ तदगणकी सुपना अस कूरिता । तदि इतल
नृपसों गहि मूस्ति ॥ बरसि रुडे को नाइत भीतल । परसे नात मृपितकर होतल ॥ सुनि सुख
दायक स्व मशिणके । सुनि प्रदुन्न शिर मणि दशिणके ॥ प्रियहि जगार्द अहं कर कसिहै । बरसज
परमा अनुको कोन्हे ॥ कश्यपको मखपूरण सुनिके । बज्रनाभ निज प्रियने गुणिके ॥ समद

कश्यपके डिग्जाद । कहत भयो निज अरथ बुजाद ॥ कश्यप सुनि ते बचन अध्याए । वचनान्त कहं
वञ्ज समुजाए ॥ सुत तुम जो यह मंत्र विचारो सो विजनाय हेत पन धारो ॥ हैं वासवके विष्णु सहारो ।
तासो खरे न तुम्है भलाई ॥ तुम निज जीवन जानऊ तबसो । करऊ न रारि मकसो जवसो ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तार्ते निजपुर जाइ सुत करऊ अकष्टकरोआजनि सुहित निज मम बचन जिन धिंतऊ यह काज ॥
कश्यपके ए बचन नहि इमि मानेसि मादान । करै न औषध पान जिनि काल विवस स्यमान ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

अदि कश्यपहि वीर विशाल । आय बज्रपुर करि बख लाल ॥ सेना पतिकहँ दियो निदेश । सेना
साजन कहँ उदेश ॥ सुनासीरके जोतन हेताभुजबल के मद भयो अचेता ॥ उत एकथ क्यै बैठि सुतथा
वासव वासुदेव करि मंत्र ॥ भेजे प्रदुम्नहि सदेश । वधो असुर कहँ तजि अदेश ॥ सुनि मद आदिक
थाइव सर्व । क्यै एकत्र करि मंत्र अखर्व ॥ इसहि पठए प्रभुके पास । कहि सदेश इमि आनद
रास ॥ गर्भवती हैं इत तिय तीनि । एहे प्रसवदिन प्रभां अहीनि ॥ होनहार अरु करिषो तीन ।
छोद श्रेष्ठ कहि भेजऊ तीन ॥ सो सुनि इन्द्र उपद्र विचारि । कहि पठए इमि आनद धारि ॥ तिनके
क्यै हैं सुत छनि जैन । शस्त्रशास्त्रविद अरिदल जैन ॥ प्रकटतही ते सब बल धान । क्यै हैं युवा पुरुष
अभिराम ॥ तिन्है सहित तरुणिन कहँ रसि । कीजो नाश दैत दल लसि ॥ ककु दिनमें तिनके सु
कुमार । कानसो प्रकटत भए कुमार ॥ जगमतही ते सब गुण पूरि । भए युवा दोरघ बल भूरि ॥
प्रभु प्रभाव निधिको यह सोत । नतर भूप कँऊ जैसे होत ॥ * * * * * * * * * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिन वारण कहँ अटनि पै विहरत इत उत देखि । नभन चार दनुजेशसा कहत भए अवरेखि ॥
पुरुष सिंह बध प्रबल बर अति सुन्दर सुकुमार । अन्तह पुरके अटनिपै सानद करै विहार ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि क्यै जोषित दनु जेश । शुभठनकहँ यह दिए निदेशा ॥ मन म्दह धर्षक जे अणि
आरि । जाइ तिन्है नहि स्यावऊ आरि ॥ सुनि सदेश दैअत गण धार । लै लै बल रोषसो शार ॥
घेरि हृत्थ अङ्गदिशि भय भारण । मारु बांधु धरु लगे पुकारण ॥ प्रभावतीसो सुनि हे भारत ।
लानी सदन करण क्यै आरत ॥ तव प्रदुम्न साहस दै तासो । कहत भए भरि भूरि प्रभासो ॥ नति
मानिनि हिष मै भय लोह । मम सुप्रण सुनि जतरु देह ॥ पितक पित्रश्र वन्धु सब आरोए जो तुम
कहँ होहि विचारि ॥ ता कामनि तव प्रियाहित लागी । तजि जय ईहा आयुध ल्यापी ॥ इनके शस्त्र
देह पर लैके । अरे इहां हम मन निरमै कै ॥ नीतर तुम सब सम्मत करिके । शासन देऊ मोहि

तमं धरि अनेक ॥ भट भागि तीनि । हनि कक्षा सीनि ॥ पर सिरी दीन । करि दर्द सीन ॥ जग
जीति सीन । निज कोर्नि पोम ॥ तामें अहीनि । करि सुबुधि सीनि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हरिषो देखि जयन्तको सुमन सुसह पुरुहता किए प्रशंसा भांति बज्र लखि व्यवसाय
शोर कृष्ण चडि गुरुद्वै आद शकके पास । राजि बजाए शंख बर पञ्चजन्य सबिलास ॥
सुनि प्रदुस्र धुनि शंखकी प्रभु आगमन विचारि । जाद बन्दि पगडिन खरे भए जेरि युग बारि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

निज मन्दमहि निहारि मन्दि वृष्णिजन्दन निपुण । नामरिन बख विचारि दीन्हे नाथ निदेश इति
॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चडि तुम लग्यै जाद विहारौ । सादर बज्रनाभकहं मारौ ॥ सुनि लगपतिप चडि सुख पाई ।
गहि प्रभुपद पदुज सुखदाई ॥ हो अहं बज्रनाभ तहं ज़ाई । खाने तासौं करण खराई ॥ दोऊ भुज
बलके मद माने । घोरयुद्ध कीन्हे रिसिराते ॥ गहि गुर गदा प्रदुस्र सुखारे । रक्त वनन करि घूमि
घरीखान । गिरि अचेत लखि असुर अजीलौ ॥ बज्रि घेति गहि गदा प्रचारौ । हनेसि प्रदुस्रहि भट
बलभारी ॥ तामे खने मूछि गुरुदोपर । गिरे प्रदुस्र निरखि हरषोपर ॥ कृष्ण प्रदुस्रहि मूर्च्छित देखी ।
शंख बजावत भे अवरेशी ॥ सुनि सुखदा शंखधमि तंजण । भे चद्रतन्य प्रदुस्र सुखक्षण ॥ तब प्रभु
मगन चक्र तेहि बरमै । आवत भे प्रदुस्र के करमै ॥ इन्द्र उपेन्द्रहि नौमि उखाहे । चक्र प्रदुस्र शंखपै
बहि ॥ बज्रनाभकोवर सिरकंदो । प्रभुपै गयो चक्र अरि भेदो ॥ गद सुनाभ हित दनुज निपाते ।
अन्य भटनकहं शम्भ सोहाते ॥ बज्रनाभको बध लखि भागो । मूटपुर गो निकुञ्ज भय पागो ॥
बरषे सुमन सुमन सुख लखिकौ । जैति कृष्ण कोशव कहि कहिकौ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुमन पुरन्दर सहित तब कृष्ण बज्रपुर जाय । शासित कीन्हे प्रजन कहं नीति सहित सुखदाय ॥
धारि भाग तहि राज्य कहं कीन्हे तहं करिसंघ । सुत जयन्तको विजय तेहि दोन्हो एक खतव ॥
हे प्रदुस्र गद शम्भके तहं जे शुभग कुमार । तीनिभाष तिन कहंदए क्रमसौं कृष्ण उदार ॥
धारि कोटि हें ग्राम बर शाखा ग्राम अनेक । तुल्य भागसौं दै तिनै कीन्हे प्रभु अविषेक ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

शक्र कृष्ण करि क्षेत्रे ने निज निज पुर मोद लखि । तहं घटनास सप्रेम रहि बह शम्भ प्रदुस्र ने ॥
अबसौं राज्य सचैन ते धारौ तहं करत ह । सुजुअ भूप मुदयेन उभर दिशा सुनेरके ॥

॥ * ॥ प्रभाकरचन्द्र ॥ * ॥

परमारव भारत को लखि अन्त । गद शान्त प्रदुन्न प्रभाव अमन्त ॥ चलि जाय तहां कहुँ सोस
विबोदि । फिरि जान भए दिव मज्जुल मोदि ॥ बरणे एहि अध्यायमें कारण सहित सप्रेम ।
बज्रनाभ को बध किए जिनि प्रदुन्न गहि नेम ॥ खन्ति श्रीकाशोराजमहाराजाधिराजश्रीउद्दिमनारा
यलसाग्नाभिनामिना श्रीवन्दीजनकाशीवासिनेकुलनाथास्त्रजेन गोपीर्मावेन कविना विरचिति
भाषायां भारतान्तगतते हरिवंशदर्पणे षड्विंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कमलनयन कमनीय अति कइसा सिन्धु कपालाकला कुशल प्रभु कौतुकी कौशलकुलको काह ॥

॥ * ॥ दिगदेशोचन्द्र ॥ * ॥

तासु ईहा जानि । शक निजहित मानि ॥ विश्वकर्माह टेरि । कहे श्वानद घेरि ॥ इरिकानपुर
जाय । रचौ फेरि सघाय ॥ महत आमद पाय । विश्वकर्मा आय ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुरकी रचना फिरि किए अति सुन्दर रमणीयसुनऊ भूप को करि सकै सो सुवना कमनीया ॥
प्रभुके रहिवे को सदन योयन अर्ध प्रम्यन । अति उन्नत सुरपति भवनसम बिरबे अतिमान ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

चढि गरुडोपर नभमें धार्द । रहि निजपुर लखि प्रभु सुखदाद ॥ शंख बजावन निजघर आर
मिलि यादव गणसों कविहाए ॥ करि प्रियवचन चारु सो अर्चन । किए गरुडको तहां विसर्जन ॥
सह यादवगण सुख सरसाई । बैठे सभा सदनमें जाई ॥ यथा उचित सबको अदर करि । दोन्हे
मणि धन बसन मोदभरि ॥ आदि रोहिणी सिगरी माता । अरु यमुदा सुभुभूतल जाता ॥ सुनि
आगमन मोदसों छाई । प्रभुहि लखन हित तह बलि आई ॥ तिनहैं लखि प्रभु सुखसों सरसै । बलि
सबभु सबके पग परसे ॥ बार बार सब हिए खगार्द । मोदित भई जनन फल पाई ॥ कहि कहि
उचित वचन चित प्रावन । अति सुखदए कृष्ण प्रभु भावन ॥ आवति भई तहां तोह लणै ॥
विधनिवासिनि मोदित मनमें ॥ लखि भगिनिहि शानद मन कोन्हे । राम कृष्ण आगे बलि खोन्हे ॥
अति सप्रेम नै मिलि दोष भाई । करि सतकार प्यार अधिकार ॥ बातुन सह करि विदा
सुखारोविमल सभा म्दहमध्य विहारे ॥ सङ्ग अननिर्गण के जग जननीगई मेहनधि दैयत दखनी ॥
कृष्णचन्द्र यदुगण सह मोदन । मोति रीतिसों सगो विमोदना ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रतने में सुरराजके अनुशासन तें तब । आए नारदमनि मुदित रहे कृष्ण प्रभु यत्र ॥

पूजित विधायक कृष्ण सा बैठि यथोचित ठौर । कहत भए सब यदुन सा मुनिगणके सिरनौर ॥
 साक्षात् अरु ताहि दिम सा जितने मुनिकर्मा किये परम बलवाने असुर संधारणय धर ॥
 प्रथक प्रथक यदुरायके सब गखे गण गाय । मुनिकेशवसों नै विदा गए रुम सुखपाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यदुगण आनद पूरि साहि अनेत धन कृष्णसो । दे दे दक्षिणा भूरि रचित यज्ञ ज्ञाने करय ॥

॥ * ॥ चौपारद ॥ * ॥

अथ फिरि जनमेजय भूभरता । मुनिसें बूझे अरिदंखदरता ॥ जे प्रधान माधव की रानी । तिनके
 वंश कहौ मुनि ज्ञानी ॥ मुनि मुनिबर हिय आनद राखे । एहि प्रकार नरपति से भान्से ॥ रकुमिनि
 जाम्बवती सतिभामा । नायजिती सैथा अभिरामा ॥ तरुनि सुदता यमुना प्यारी । और सद्धमणा
 ये ब्रह्मधारी ॥ चारु निचविन्दा गजगामिनी । सरुचि सुभोमा भरतहि भामिनी ॥ आठ दोय प्रभुकी
 तिय नामी । ए सुनु जनमेजय महिस्वामी ॥ हे प्रदुन्न रकुमिनिके गुर सुत । सम्बरके नायक वर
 बल सुत ॥ चारुदेष्ण ताके लघुधाता । चारुभद्र फिरि विदित सुदाता ॥ चारुगर्भ संहृष्ट बडरि
 हे । हुन सुषेष् ए दोऊ फिरि हे ॥ चारु गुप्तरण जय यश लेता । चारु विन्द सुहितन सुखदेता ॥
 ए दश सुत रकुमिनिके जाए । कन्या चारुनद्यो सह भाए ॥ सुवन एकादश भानुहि आदिक ।
 सतिभामाके हैं प्रिय बादिक ॥ कन्या चारि चारु अलि गुणिये । अब सुत जाम्बवती के सुनिचै ॥
 शांभ आदि सुत पांच बखानोतनया एक सहित सुख माने ॥ हे सुत नायजोति के नापर । ह वरणे
 भट परम उजागर ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुता एक है सुवर्णहि लहे सुन्दरता नारिसैथा के सुत ए कहौ अरि जेता धनु धारि ॥
 सात सुभोमाके सुवन करता कीर्त्ति अछोनातीनि सद्धमणाके सुवन कन्या एक प्रवीना ।
 अश्वत् नाम सुत प्रगट भो यमुनासे । जयजैनाताहि दए सुतसेन कह कह केशव करुणा जैना ॥
 शौरह सहस तियाग निशि सास सुवन रणधीर । भए कृष्णके प्रबल अति विदित बखाने बीर ॥
 भे अनिरुह प्रदुन्नके सुवन परम बलवान । जेटो सुत अनिरुहको बखनाभ नतियान ॥
 भे प्रतिरथ सुत बडके ताके सु वन सुचार । सुत कनिष्ठ अनिरुहके हैं अनमिच उदार ॥
 विनि सुत भे अनमिचके सत्यवाक सुत तास । सत्य वाकके सूर सुत सुत द्युधान सु जास ॥

॥ * ॥ सोरठाना * ॥

तासु असङ्ग कुमार नूनितासु सुत प्रगट भे । तासु युगम्बर वार वंश प्रशंसित कृष्णके ॥
 इतने कहे प्रधान शाखा वंश असंख्य हैं । पुत्र पांच प्रमाण अरु प्रपौत्र विधानसों ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

वैसम्पायन के ए वैन । सुनि बोखे भूपति लहि दिन ॥ जिनि प्रदुस्र सम्बरको नाथ । किए कहे
सो ज्ञान प्रगाथ ॥ वैसम्पायनि कहे सुनु भूप । भो प्रदुस्रको जन्म अनूप ॥ यादिन ताकी सतर रैनि
लहि निशीब बोखी भवमैनि ॥ आद सम्बरासुर गुर काय । निदुर सूतिका म्दहनधि जाय ॥ लै
प्रदुस्रकह मो निज भौन । काह जाग्यो भेद न तौन ॥ केशव जानि भविष्य विचारि । रहे भौन न्हे
धीरज थारि ॥ हीं सम्बर को प्यारी तीय । मायावती परम शुचि हीय ॥ दिहोसि प्रदुस्रहि तेहि
कहि मोदि । सुतवत पाखळ याहि विनोदि ॥ हरिषि प्रदुस्रहि लै से अरु । लागी निरलत बदन
मयङ्क ॥ निरलत भो ताके हिय मान । हँ एं नम पति काम अमान ॥ यह हठ जानि सु करि
अनुमान । दियो न तेहि निज अक्षनपान ॥ धार्दके अक्षनको चोर । पान करावत भई स्तरी ॥
पालन पोषण विधि निज हाथ । करत भई जाने निज नाथ ॥ कामसों कछू दिवससँ चार ।
वरधि अबस्था खहे कुमार ॥ तब रति ईहि असुरकी बाब । लागी करण विनोद ललात ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जानत ताहि प्रदुस्रहँ निज जननी नहिँ आन । तकि भिफार चेष्टा कहे शोषितनै नतिमान ॥
जननी न्हे कत करतिहो इमि चेष्टा अनुमानि । भूलि पुत्रको भाव हठि रति मति पतिसम जानि ॥
मै तुव सुत हँ कौ नहीं कहऊ शीघ्र यह भेद । दूर होइ जेहि जो भयो तुव सुभाव खलि खेद ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

वचन सुनि प्रदुस्रके मायावती मुसुकाय । कहत खैवे भईं सिपरो भेद आनद हाय ॥ लै
न तू मस सुवन हो तुम कत मम हविवन्त । है न सम्बर पिता तूय तब पिता कृष्ण अमन्त ॥ मंज
महिषी कृष्णकी सकमिनी हँ हविभौन । तासु गर्भोज भये तुम फिर भयो सुत्रियै तौन ॥ जन्मते निशि
सातर उत सम्बरासुर जाय । हरि तुनै लै आद मोकह देतभो गहि चय ॥ प्याय पय तिय थौर
को मै तुनै सेयो मोदिाकरऊ अब मम आस पूरण कोछि कलन विनोदि ॥ तजऊ मोसँ अनिको
हो धांति कीन्हे जौब । तुमहिँ देखे विनु जर्मन तुव परम दुखित सरीन ॥ सुनि प्रदुस्र सरोषनै
यह भरे करत विचार । कोपि सम्बर बरै मोसँ करउ सो उपचार ॥ ग्रह विचारि चढाय धनुशर
लाय अतिहो ठानि । काठिदोन्हे रत्यमै ध्वज परम प्रिय पहिचानि ॥ ध्वजको विध्वंस सुनिके
ध्वजाधीश रिसाय । रहे सतसुत निहँे प्रासन दयो मिकठ बलाय ॥ जाइ तुम सभ सुभट शीघ्रहि
बाण शोषण मारिकेतु ईहँ दुष्टके हृदि देख महिपँ थारि ॥ नानि प्रासन विज अनको शखले लै
सर्व । ने समेष महिपँ प्रदुस्रहि टेरि वचन सर्ग ॥ शख महित सुरधपँ चठि भट प्रदुस्र महान ।
जाइ तिनसँ भिरो खलि गजग्रूथ सिंहसमान ॥ किए उद्वत युद्ध कृदि सबुद्धि सिधरे वोर । गिमत भो

दण्डन तिन्हि सुत दण्डको रणधीर ॥ सहित सुरगंधर्बगण तह आरको सुरराज । लखनखाने
सुभटजनके बोरताके काज ॥ देखि अद्भुत यद्, तह गम्भय अद्भुत नाम । कहतभो सुरराजसां
करजोरिके तेहि जान ॥ एक सुभट प्रद्युम्न वै शतबीर दोरघकाय । पादहैं प्रद्युम्न गिनसा बीजे
किमि सहि चाय ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुमाशीर नभर्बको सुनि यह वचन सुदन्द । प्रबल प्रकर्ष प्रद्युम्नको कहे प्रभाव अचन्द ॥
ए प्रद्युम्न हृत्पिथामहैं पूर्वप्रसंसित काम । भस्माकिए शिव तब इन्है लखि कहु दोष सकाम ॥
रतिके अस्तुतिके किए कहैं कृपाकरि ईश । मानुष अहैं किशुप्रभुजनहित विलेवीश ॥
तस्तु तनय अहैं प्रमट तुव पति नाम अन्न । हरि लै जाइ हि निज सदन तेहि सम्वर सुउन्न ॥
ताते प्रथम हि जाइ तुम मायावती कहाय । सम्वरकी तिय छौरहौ मोहि ताहि यहिचाय ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सापिहि तुन्है सचेन तुमपतिकहं हरि ल्याइ बह । पालेऊ ताहि सप्रेम वरधि बधिहि सो सम्वरहि ॥
बऊरि द्वारिका आय तुमहिं सहितबिहरिहिसरुचिद्विभ कहि शिवसुखदाय गए कलित कै लायपै ॥
एहि विधिको वरदान लहे काम सुतदण्डके । ए यमजैन अमान धम न करऊ कहु चिन्तने ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि सुरमण संग्रय त्यागे । लखन खाने संगर सुदपागे ॥ सम्वरके शतसुत भरि रिसिमो ।
खाने शस्त्र मारण चऊ दिगिसो ॥ तिन शस्त्रणकहं काठि सुखारे । धोरप्रद्युम्न वीररस भारे ॥ बाण
अनोच अन्नगिने मारे । कर्मते असुर शतक बधिडारे ॥ तासणखशे सुरबर्षे जैसे । हतिगज सिंह
गिखरपै जैसे ॥ सुनबध सुनि सम्वर रिसि शायो । चतुरंगिनि सेना सजवायो ॥ सानुमान सम्वर
अतिभारी । बख्यो ताहिहैं बहि धनुधारो ॥ मचीचतुर चारि रणधारी । बखे संग परप्राणप्रहारी ॥
दुर्धर और प्रमदैन बीरा । हतिय कीतुंमाली रणधीरा ॥ चौब शत्रुहन्ता शरवाहक । बलो प्रहारत
संगर वाहक ॥ बोरगजस्थ सहसदश नरयो । दैशल रथो रुधिर महि भरयो ॥ आवशहस हयस्थ
सजातो । बरणे बरभट अयुत पदातो ॥ बखो संगलै सम्वर राजा । बजवा बत बज्ज जंगी बाजा ॥
असगुण बञ्जत भयो तेहि सणमैं । नहि मानेसि सो गर्बित मनमैं ॥ रणमहि मध्य प्रद्युम्नहि देखी ।
सबसु सम्वरासुर अति तेही ॥ शीघ्रगवाण शहस्र प्रहारे । तिन्है प्रद्युम्न काठि नहिडारे ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बयोयद् अतिघोरतहं आयुध बखे अनेक । हयो अनगिने असुरकहं तनय दण्डको एक ॥

ह्यै प्रदुस्रके शरमत व्याकुल दैवत भागि । सम्बरक पीडैभए खरेजाय भयपाणि ॥
 तब सम्बर चारिबचिव को यह दए निदेश । खरि नम अप्रियकार कहि दतऊ शीघ्र मुभभेय ॥
 ॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

निजलामोको सुनि अनुशासन । ते चारौभट युद्ध बिलासन ॥ कीन्हे घोरपुह बलभारे ।
 कामसौ तिन्है प्रदुस्र सघारे ॥ ता बरतें छेणितकी तरणो । बहति भई बेरतिसी धरषी ॥ तिनको
 नाम देखि कै सम्बर । लाग्यो आपु करण नुरसंगर ॥ हने प्रदुस्र लाच धनु गुरमैं एक बाण संबरके
 उरमैं ॥ ताको खने मूर्छि असुरेशा ॥ छेतिहने शर सात मुभेशा ॥ तिन्है प्रदुस्र बीचहीं काटे । फिरिहनि
 सन्तरिशर तेहि डांटे ॥ फिरि अग्रंथशर तजि रणधारी ॥ छार दिशनि करिदिह प्रध्यांरो ॥ अन्धकार
 लखि सम्बर भंशधर ॥ वैष्णवअस्र तजतथो बुधिवर ॥ अन्धकार खोपनकरि यवर्षे । बरषीशर
 प्रदुस्रके रथपै ॥ करि प्रदुस्रकर लाचव नितिमैं । डारै काटि सबशर सितिमैं ॥ तब तखवरष्यो सो
 मायावो । तजे अप्रिशर ए मेधावो ॥ शिलाटाट कीन्हेसि वै जवहीं । माहतशर छाडे ए तवहीं ॥
 सो गजजूय रवे अति कोये । ए रचिसिंह मुरित तेहि खोये ॥ सम्बर कीन्ही माया जितनी । किए
 प्रदुस्र अर्थ बह तितनी ॥ तब सम्बरकरि चष रथराते । प्रखटित किए सिंह मद्दाते ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब प्रदुस्र कीन्हे प्रगट शलभ अष्टपद भूरि । सिंहजूयको नाम ते करत भए बलपूरि ॥
 तब सम्बर शोचत भयो मैपाख्यौ निमंकाल । बालपने एहि नहिबध्यों बूझि चातुरी बंसल ॥
 एहिबिधि शोची धारकलों फिरि हिय साहस आनि । दर्द शम्भुकी पन्नगी सायाकरते सद्धानि ॥
 ॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

बमतज्वाल पन्नगण धाय । चँऊदिशिसौ अति रिशिसौं छाय ॥ तब प्रदुस्र तार्क्षकी माया ।
 करि लोपित कीन्ही सो माया ॥ यह लखि शोचित संगर सम्बर । हिय विचारत भो नरगहर ॥
 जो गिरिजाको दोन्ही मुद्गर । भीम अमोघजयद जाहिर बर ॥ है नम पास आसको पाहक । पाचक
 सम अरिबनको दाहक ॥ तेहि बल्लाद एहि शीघ्र निपातौ । जयलहि परम मोदसौ रातौ ॥ यह
 विचार जो सम्बर कीन्हे । मुरित सुरेश जानि सो लीन्हे ॥ सो नारदसौं कहि सुरसामी । कहत भए
 हनि अन्तरजामी ॥ कवच सुशस्त्रव दक्षव चारू । अमल अभैद अमोघ उदारू ॥ यहलै सादर
 सहित सनेह । जाइ प्रदुस्रहि गृह कहि देह ॥ सुनि लै कवच शस्त्र सुनि नारद । ते प्रदुस्रपै
 परम विभारद ॥ अन्तरिख रहि नमपै मानद । कहे कृष्णके सुतसौं मानद ॥ ते नारदसौं सुनु
 रिपुघातक । पठए कीन्हि सखि सुरपालक ॥ पूर्वभाव निज सुनिरेऊ चांकि । मुभैही कामदेव

प्रतिपादन ॥ शिवके कोधानलसों जरिके । भएऊ कृष्णके सुत तनधरिके ॥ बालापनमें लखि
हरि शयो । हरि तुमकहं इत सम्बर स्थायो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो सम्बरकी वरनिहै मायावती प्रवीनि । सो तब तिय रति रतिप्रिया है रतिभरी अहीनि ॥
तुव पावनके काजहैं मोहि सम्बरहि अब । मारि सम्बरहि ताहिहै जाऊ कृष्णप्रभु यत्न ॥

॥ * ॥ अयकरोहन्द ॥ * ॥

कवच सुभक्त वरसव चारु । अमल अभेद्य अनोच उदारु ॥ सुभागीर यह तुमकहं दीन ।
अथ यह धारण कोऊ प्रवीन ॥ अरु मनदै सुनिअै मन बैन । यह जो सम्बर दैत सचैन ॥ दियो
पावतीको करि टेक । है यासों गुरमुद्गर एक ॥ सो अनोच अति उच प्रभाव । तेहि बंध शडनचहै
सधाव ॥ सत्वर ताके वारणहैति गिरिजहि ध्यावऊ सविनय चेति ॥ गे सुरपतिडिग मुनि कहि नेम ।
एथैं उतारि प्रदुन्न सप्रेम ॥ धरिदिय शैलसुताको ध्यान । अस्तुति करत भए मतिमान ॥ सुनि
असोच कृपाकरि सौरि । कहतभई निज महिमा सौरि ॥ नै प्रसन्नहैं लखि तब कर्म । भागि
खेऊ बांझित वरपर्म ॥ जगदम्बाके वचन उदार । सुनि अतिभेदि प्रदुन्न कुमार ॥ करि प्रणाम
बोले करजोरि । अम्ब सुमऊ यह विवती मोरि ॥ जो मोपर तब कृपा सचैन । तौबरदेऊ सर्व
अरिजन ॥ अरु आपुनको दोन्हो जौन । है सम्बरसों मुद्गर तौन ॥ पद्ममाल सम लागि मन घोव ।
बधि सोहैं गुर सुषमा सोव ॥ यह सुनि एवमस्तुकहि हरि । भई अदृश्य अम्ब मुदवर्षि ॥ * * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब प्रदुन्न चढि रथपै बैठे गहि धनुवान । लखि सम्बर मारतभयो मुद्गर वञ्च समान ॥
सो मुद्गर कमलीयछौ चार कञ्चकी माल । लागि प्रदुन्नके श्रीवने शोभितभयो विशाल ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

तब प्रदुन्न गहि बाणशरासन । जो मुनिदोन्हो करि सम्भाषन ॥ कहत भए इमि जो महि
माता । कोश्व रकुमिनि मन पितु माता ॥ तौ एहि शरसों यह लख नरई । सुर नर मुनिकर
संशय डरई ॥ कहि धनु अतिलौ इंचि सुखारे । बाण अनोच तासु उर मारे ॥ भेदि ताहि शर
महिबै प्रबिसो । पर्वतफोरि घोरगुर पबिसो ॥ दुस्सहमेज वदण्णव शरको । लहि भो भक्त
असुर वरधरको ॥ सुर गन्धर्वनके गण हरषे । साधु साधु कहि सुमन सुवरषे ॥ असुरहि बधि
प्रदुन्न धनुधारी । जाइ रिचवतपुरी सुखारी ॥ लौतिय मायावतिहि स्वरथपै । गए द्वारिका चढि
नभपर्वत ॥ सत्वर प्रभुके डह्यैं जाई । उतरत भए परम सुख पारै ॥ रथैं उतारि सतिथ सुखदाता
बले । जतैहों रकुमिनि माता । देखि तिन्है सब तियगण रूरी ॥ विषय हर्ष भीतसों पूरी । सुतहि ।

नक्षत्रादिक सप सिंगरे पातु । पातु अनृत गज सुवरण दूष दधि मिति पातु ॥ पातु कधि
पतिनी सकल अधिकव्यका सब पातु । पातु सिंगरे प्रजापति सुत प्रजापतिके पातु ॥ कियो
श्रीवल्लिरामको यह चार रक्षा मंत्र । पढ़ें जे अर सुनै जे जन राखि चित्त स्वतंत्र ॥ सहहि कबळ
नक्षत्र ते जन सहै कबळ न भीति । सहहि बांछिय फल अपूरव सहहि रणलै जीति ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरणे एहि अध्यायमै बंश कृष्णक जौन । हरि प्रदुन्नको लै गयो सम्बर दैयत तौन ॥
बधि सम्बरहि प्रदुन्न लै मायावती स्वतीयाफिरि आए पुर द्वारिका सो बरणे कमनीय ॥
फिरि बरणे बलिराम जे कीन्हे रक्षामंत्रा जाहि पढे जन रहि अभै बिहरै स्वरधि स्वतंत्र ॥

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्री उदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
गोकुलनाथकबीश्वरात्मजेन गापीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे संवर
बधे नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैसम्पायन उवाच ॥ हरि प्रदुन्नकह लै गयो सम्बर जाहो मास । जाम्बवतीके शास्त्र भे सुनो भूपतेहि मास ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

करि बलिराम होइ अति ताप । अस्त्र शस्त्र विधि शिखर आपै ॥ सिंगरे यादव लखि मुद भर
हों । अतिसैं होइ साम्ब पर करहों ॥ सहित सबय यदु द्वारावतिजै । बिहरै मन दोन्हे सुत मतिजै ॥
प्रभु प्रभाव तेहि बर पट्टनमै । पूरित निधि रिधि सब हि गृह नमै ॥ लखि विभूति सिंगरे यदुगणको ।
सहो हारि श्री सब नृपजनकी ॥ एकसमै दुख्यो धन राजा । किए यज्ञ बर सरस समाजा ॥ तहँ
सिगरे चञ्चुदिके महिपति । न्योते गए रहे द्विष्य गहि रति ॥ तहँ ते सब गुणि सरस उक्ताहे ।
पुरी द्वारिका देखन चाहे ॥ सिंगरे नृपसह पाण्डव कौरव । गए द्वारिका गहि गुर गौरव ॥ सुने
कृष्ण सिंगरे नृप आए । रैवत गिरिढिग वास कराए ॥ सेना अष्टादश अत्तौहिनि । सिंगरे नृपगणको
मन मोहनि ॥ योयन योयनमै निज निज दक्ष । लै लै परे भूप सब बर बल ॥ यदुबंशिन सह
कृष्ण सुखारे । गए तहां सुपमासों भारे ॥ मिले जयोचित सब नृपगणसों । सबनृप लहे मोद अति
मनसों ॥ चार सिंहासन रचित रतनसों । मंथिमै ताहि धराय यतनसों ॥ तापैं सहस्रि प्रभुहि
बैठाए । नीके निरखि नेत्रफूल पाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यथा उचित आसननिर्गै यदुन सहित सबभूप । चञ्चुदिके बैठत भे बजरि सुधमा पाद अनूप ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि प्रभु मुसुकाय कौ कहुक सुबीबहलाय । तुम समर्थ हो रसिहो कहे सच्यद्र सचाय ॥
इनि कहि लज्जित देखि मोहि कहे फेरि सुखदाय । रक्षण द्विजके तनयके करऊ सैन सह आय ॥
इनि कहि राम प्रदुन्न कहँ राखि आपने साथ । सिंगरे यादव कहँ दए मम संग करि धनुनाथ ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

सह यादव समुदाय तब हम प्रभुसो षै बिदा । चलि अति जबसा आय उतरे द्विजके येह दिन ॥
॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

उते यादवबीर बरणे जे परमरणधीर । रहे म्हके चञ्चदिमि ते सहित सेना भीर ॥ आय
म्हमे रहे हम गहि धनुष शर अभिराम । विविधि विधिके भयद असमुण होत भे तोहि याम ॥
गए आधी राती सो द्विज आदकौ मम पास । प्रसवको यह समय है मम हियो पूरत पास ॥ होऊ
रक्षण करण मै चद्रतन्य अब बलवान । भाषि इमि फिरि गयो म्हने गहे शोच महान ॥ जातह्यो
उत लगे रोवन विप्र तियन समेत । लए पुत्रहि जात कहि उर ताडि शोक निकेत ॥ लख्यो कितनो
पस्यो नहि लखि बाल हरता जौन । आइ नभते परी शिशुके रुदनको धुनि जौन ॥ सुगत हीं नभ
हाय शरसो दयो मै करि रोक । रुक्यो नहि सो गयो लौ सुत विप्रको गिजशोक ॥ विप्र सो तब
करत रोदन आर्त मो टिग आय । बचन धंग कठोर लागो कहन अति रिसियाय ॥ कहे प्रभुसो
टेरि तुम हम राखिहँ द्विजपुत्र । सके इत नहि राखिसो बह गयो शौर्य कुच ॥ रहे जो बोहि
जोग नहि तुम कहे कत बोहि यौर । कहे है न महान ताहै किं करज गौर ॥ विप्रके सुनि बचन
मै नहि कह्यो कहु भय पूरि । सहित यादव कृष्णके दिगंनए लज्जित भूरि ॥ मोहि लज्जित
देखि प्रभु रिसिभरो विप्रहि हेरि । कहे शोच न करऊ लौ हो बालकनि मै फेरि ॥ बोधि प्रभु तब
दाएकहि इमि भए देत निदेश । सुरव साजऊ शीघ्र सानंद सुभद सुध सुवेश ॥ वैद्य अह सुयीन
बाजो मेघ पुष्प बिचित्र । अरु बलाहक चारि हय ए नाधिकरता चित्र ॥ सजो रथ लखि सहित
आदर द्विजहि कृष्ण चढाय । आपु चढि मोहि सारथी करि शीघ्र रथ हकवाय ॥ विपिनि गिरि
शर सरित तरि करि दिशा उत्तर गौन । गए सागर कूललौं चलि मुदित रुकुमिनि रौन ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

आइ सिन्धु तहँ कृष्णको करि पजन लहि सैन । जोरि पाणि सुन कहत भो कहा कहे यहै सैन ॥
तब प्रभु सागरसँ कहे सुपथ मोहि तुम देख । यह सुनि अलनिधिदीन ह्यो कहत भयो फिरि एऊ ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

हो मै तब यापित हे स्वामी । तब प्रसाद ते अनुपम नामी ॥ पथ लौ प्रभु जैहो तुम जैसे । जैहँ

मृत्त भूप सब तैसैं ॥ होइनाह नाथ दिनार्द मोरी ॥ ललक विचारि कहउँ कर जोरी ॥ बिनय सिन्धुकी
 सुनि धनुनाथक । नेले कृपासिन्धु चित चायकं ॥ द्विजके अरथ मानि मम बानी । देऊ मार्ग
 अमुधि बर जानो ॥ तुमहिँ न नांवि सकिहि कोउ मानुषाबीर प्रमत्त गने जे धानुषा ॥ यह सुनि सिन्धु
 कह्यो गुणनिधि सैं । रथमति जल मै सोषउ विधि सैं ॥ तेहि पथ जाइ करो प्रिय हीको । कहे
 कृष्ण नहि चंह मत नोको ॥ तुम्है दए हौँ हौँ आशिष बर । रहौ अगाध अदृश्य रतन बर ॥ ते
 बर व्यर्थ करऊ मति सागर । करऊ वारि यमन नुण आगर ॥ सुनि वारिधि जल यमन कोन्हे ॥ तेहि
 पथ पार जाइ सुद लोन्हे ॥ उत्तर कुरु तरि आनंद पागे । गए गन्धमादन के आगे ॥ तहां रूप धरि
 आनंद छाए पर्वत सात सामुहे आए ॥ मेरु जयन्त रजत गिरि भारी । वैजयन्त अरु नील सुखारी ॥
 इन्द्रकूट कैलाश सोहाए । पूजि प्रभुहि बोले मन भाए ॥ नाथ आपु अनुशासन दीजै । सो हम
 सिंगरे सागर कोजै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कहे कृष्ण भूधरन सा विवर मार्ग रचि देऊ । यह निदेश सुनि शैलवर कहे तथास्तु सनेऊ ॥
 भे अदृश्य सब शैल तब गिरिनधि विवर लखाय । तामधि रथ प्रविशाय प्रभु चलत मए हरषाय
 यथा घने घनको पटल भेदि हौँहि रवि पार । तथा शैल मधि चलि सरथ गे उत कृष्ण उदार ॥
 अन्धकार अति घोर तहँ मिल्यो सुनऊ नरनाह । जानि परै जो चलतमै कदम सम तन भाह ॥
 नीठि नीठि रथ ईचि ह्य रहै खरे न्है हारि । तब प्रभु दोन्हे चक्रों सब तम तुइ विदारि ॥

॥ * ॥ जैकरीकन्द ॥ * ॥

तब कुण्डित मुनि सुनऊ नृपाल । दरशे तेज समूह विशाल ॥ तीनि लोकमै किए पसार । ज्वाल
 जासु प्रज्वलित अपार ॥ तासु निकट रथ ठाठ कराय । कृष्ण तेजमै गए समाय ॥ द्विज सह रहि
 ह्वम रथपै तत्र । निरखत हेमनाकि एकत्र ॥ बीते दोय घरी तेहि बाराकडे घेति सैं कृष्ण उदार ॥
 सए संग बर बालक चारि । आइ दए विप्रहि सुद धारि ॥ पुत्रन लखि द्विज लहि सुद पर्न । लगे
 प्रशंसन प्रभुको धर्म ॥ फिरि बाही मग सुरथ चलाय । सण मै पऊँचे प्रभु पुर आय ॥ करि आवा
 लहि प्राप्त खलाम । आए दिवस गए है जाम ॥ समुत द्विजहि भोजन करषाय । देइ दक्षिणा प्रीति
 बढाय ॥ कोन्हे विदा कृष्ण अभिराम । गयो सुतन लै द्विज निज धाम ॥ द्विज अनेक फिरि कृष्ण
 बंलाय । भोजन करषाय सुख पाय ॥ सहित यादवन लै मोहिँ साथ । भोजन कोन्हे प्रभु धनुनाथ ॥
 तदनु सभागठह मै गहि मोद । बैठ करत भेकधा बिनाद ॥ विस्मित हम तहँ कर युग जोरि ।
 कहत भए गहि प्रीति अथोरि ॥ मग मै तब चरित्र प्रभु देखि । हौँ मै अति विस्मित अवरेखि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि बंभन जे उदधि जल किए कृष्ण तुम जौन । तदन सात गिरिवरगमै किए विवर प्रभु जै ॥
किए नाथ जो चक्रसों तमको तुङ्ग अलेख । ज्वाल जाल मै जो किए रुचि सों आपु प्रवेय ॥
दिज पुचन कहं को हरे रक्षो कहा अनुमानि । सो सब भेद बताइयै चिरंजीव मोहि जानि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

मुनि यह बचन कृष्ण सुसुताई । कहत भए एहि भांति बुजार्द ॥ मम दरशनं हित द्विजके
बालकाहरे गए हैं सुनु खलघालक ॥ ब्रह्मतेज तेहि तेजहि गुणियै । मै हौं ब्रह्मतेज तम सुनिजै ॥
सो मम परम प्रकृति है जानौ । व्यक्ति अव्यक्ति सनांतनि मानौ ॥ जल समुद्र गिरिवर तम मै हौं ।
मै जगकारण काज समै हौं ॥ मै शशिसूर सरित सर सिंगरे । मै हौं वेद वर्ण जे निगरे ॥ कारण
कार्य रूप मोहि जानौ । करौ दूर बिस्मय सब ज्ञानौ ॥ नादिन ते हस भयो सयाने । कृष्णहि
परब्रह्म दृढ जाने ॥ मुनि अर्जुन के बचन सोहाते । धर्मराज आमद सौं राते ॥ बैसम्पायन की
यह बानी । मुनि बोले जनमेजय ज्ञानौ ॥ मुनिवर चरित कृष्णके मुनि कै । नहि सन्तोष गहे मन
गुणिकै ॥ तातैं और चरित कहु कहियै । कृपापात्र लखि दया गहियै ॥ बोले मुनि गुण नृप
मन नाही । प्रभुके गुणकी इयता नाही ॥ तदपि कहउ कहु तब हित लागी । मुनु नृप जनमेजय
हर भागी ॥ यदुर्वाशन के हित प्रभु मानद । हते विचक्र दानबहि सामद ॥ लोहित दहमै बरुणहि
जीवे । किए हराइ गर्वसौं रीते ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दनावक्र कारुष नृपति सौभ शाल्व शिशुपाल । हयग्रीब आदिकं हते जीति किने हितिपाल ॥
अष्टराज्यपाण्डवन कौं दिए राज्य करिपत्त । रक्षण तब पितुको किए गर्भहि मै प्रभु दत्त ॥
वानर द्विविद मयन्द कहं जीते भुज के जोर । जाम्बवान सौं जय लहे मत्त युद्ध करि घोर ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

बलिको सुत बलवान बीर सहसभुज को बली । दुर्मद परम अमान जीते तेहि प्रभु सत्वविधि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वरणे एहि अध्याय मै भीष्मार्जुन सम्वाद । विप्र सुवन के हरणकी कथा देनि आल्हाद ॥
सखि श्रीकाशीराजमहाराजाधिरांजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीवासिं
गोकलनाथात्मजेमगोपीनाथकविना विरचितेहरिवंशदर्पणेकृष्णचरित्रवर्णनोनामकृष्णत्रिंशोऽध्यायः ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बैसंपायनसौं कहे जनमेजय इमि वैन । अब बालासुर की कथा कहि मुनि तप अैन ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बोले मुनि मुनि रूपति ज्ञानी । बलिको गुरसुत बाणं सुमानो ॥ शिव ठिग जाइ पेशि सेनानिहि ।
 भई महत ईहा अभिमानिहि ॥ बर व्रत साधि उग्र तप करइ । शिवहि तोषि सुतवै मुद धरइ ॥
 यह विचारि दुस्तर व्रत चरिकै । शिवहि प्रशन्न कियो तप करिकै ॥ वै प्रशन्न शिव आनदहारै ।
 बरबूहि यह बचन उचारे ॥ यह बर माग्यो बाण सुखारी । मोहि करै सुत शैलकुमारी ॥
 एव मल्लु कहि तब कैलाशी । कहे शिवासों इमिं अबिनाशी ॥ एहि पुत्रत्व मानि वै माता ।
 जानऊ निज सुतको लख भद्रता ॥ जित सेनानि सीखि सौं प्रगटे । तेजपुञ्ज बर प्रभा अरगटे ॥
 सो शोणितपुर रहित सनेइ । बाणहि बसिबे कहं तुम देइ ॥ लहि निदेश तब बाण उमाही ।
 बस्यो जाइ शोणितपुर माही ॥ बाणहि शम्भु परम प्रिय जानौ । ध्वज अरु शिखि बाहन सेनानी ॥
 सगण शम्भु सेनानी खानद । रक्षाकरै बाणको मानद ॥ सह परिवार सदल बल भारो । बिलशत
 भो तहँ बाण सुखारी ॥ सुरबन्धु आदि दिव बासी । सेवहिं तेहि लहि हारि उदासी ॥ शिव
 प्रशान्त के मद मतबारो । जीतेसि तीनि लोक बल भारो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लखे बिना वैलोकने निज लरिबे के जोग । गो शिवपै निज प्रतिम भट लरिबेके उतजोग ॥
 बन्दि अरण तहँ शम्भुसों कहत भयो इमि बान । जोतौ मैं तैलोक तव बर बलसा बलवान ॥
 यह सन्मुख सुर असुर कोउ लरिन सक्यो पल आधाहारि मानि रहि निकट मम सेवन करै अबाधा ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

बिनालरे मम सहस भुजा ए । फरकते रहत महत छवि छाए ॥ युद्ध किए विनु सकल विभूती ।
 मोहि न भावति जितो अकूती ॥ प्रभुसों आजु कहौ सतिभावै । लरे बिना नहि जीवन भावै ॥ तातें
 कहइ मोहि चित चायक । बीर मिलिहि कोउ लरिबे लायक ॥ यह सुनिकै शङ्कर मुसुकाई ।
 कहे बाणसों इमि समुजाई ॥ सेनानी को दोन्हो ध्वज जब । पतन होइ यह जानेउ निजु तब ॥
 अब कोउ सुभट बीर रस रातो लरिहि आइ बीर बीथ्य बिभातो ॥ यह सुनि बाण परम सुखपाई ।
 आनद बारि चयनमें छाई ॥ पग गहि कहत भयो हेसामो । अबमैं धन्य भएउ अरु नामो ॥ इमि
 कहि सहस पाण्डिपै लैके । कुसुमपञ्च शत अञ्जलि दैके ॥ विदा शम्भुसों वै धनुधारी । निजपुर
 आयो परम सुखारी ॥ जाइ अजायुह मैं तब बैठो । सगरब बीर अँठसों अँठो ॥ तहँ कुआइ सञ्चिव
 सों भाष्यो । दयो मोहि शिव बर अभिलाष्यो ॥ बाणहि अति मोदित सो खेखी । वृजत भो एहि
 विधि अवरखी ॥ कहौ कहावर पाएऊ साई । जातैं अति मोदित एहिदाई ॥ बिष्णुहि जीतन
 को बर लोन्हे । कै निज पितहि पूर्ववत कीन्हे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अक्रपाणिके भीतिसो ददत समुदम जाय । दुरे रहत तिनकहं कछा अभै किए वर पाय ॥
इन्द्रहि गहि पाता लमै राखनको बरदान । लहे कहा तुम अपुनको होबेको मजवान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सो यह दोजै शीघ्र बतार्द । मोसैं गहर सहे नहि जाई ॥ एह सुनि बाणगाइ नहिं राखेनि ।
सागेसि जो पाएसि सो भाषेसि ॥ सो सुनि सचिव कहतभो असो । नाथ लहेऊ वर दुखद अनैसो ॥
इतनेही नैं बिना प्रयासै । गिरतभयो वह ध्वजा अन्यासै ॥ लखि ध्वजपत्तन बाण हरखाना ।
निकट युद्धको उल्लव जाना ॥ भे तब तहां दशै दिशि चारी । असगुन बिबिधि भांतिके भारी ॥
तिन्हैन बाण बिनतमैं आने । गे अन्तह पुरम हरषाने ॥ मंत्री फल असगुणके जानी । भयो व्यथित
अनरथ अनुमानी ॥ ककु दिन गए मोदि गिरजा हर । जाय नदी के तट भवभयहर ॥ गणनि
सहित आनद सैं पांगे । बारि बिहार करन तह लागे ॥ बाणासुर को चारु कुमारी । जषा नामा
परम दुलारी ॥ सो गिरिजा को लहि अनुशासन । गर्दरहो तह बारि बिलाशन ॥ नृत्य गान अरु
बाद्य सो हाए । अमर कृत तह सुख सरसाए ॥ पारिजातको गन्ध सोहावन । बगसो चञ्चुदिशि
मन उमगावन ॥ बन्दीजन सम अमर केती । शिवहि प्रशंसहि सुबधि सुचेबो ॥ नाम चित्रलेखा
सुखरानी । रही अमरा सो अनुमांती ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तह गिरिजाको भेष करि शिवके सन्मुख जाय । नृत्यगान श्लागी करन भाव अनैक बताय ॥
सो लखि शङ्कर गौरिसैं कोन्हे हास्य सचाय । कही शिव तब गणनिसैं शम्भु मनऊ सुखपाय ॥

॥ * ॥ महिखरीकन्द ॥ * ॥

तह अमरा सब गौरि अरु सब सुगणगण शङ्कर बने । इमि लगे क्रीडा करन मिलि लखि लहे
शिव आनद घने ॥ यह देखि क्रीडा कुदरि जषा चाबसैं सरसत भई । ते धन्यतिय पतिसङ्ग जे
इमि रम यह मन सतभई ॥ यह तासु आश्रय समुजि गिरिजा चारु कर जुग परसिकौ इमि कहति
तासैं भई तेहि अति प्रेमसैं ढिग करषिकै ॥ सुनु धीरधरु ककु दिवस मनमैं प्रिये जषे सकुचिहे ।
अब गनेदिनम पाइ प्रियपति मोदिहौ इमि संरुचि हे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो साधवकी दादंभी निशि सपेनामैं आय । पुरुष रमिहि तसैं तहिं सो तेहि पति सुखदाय ॥
सुनि जषा सुख लखिरहो सकुचित शीस नवाय । करतभई तब हास्य तह अमरगणहरषाय ॥
संधा लखि तब गौरि शिव आवत भे निज धाम । जषा आई निजभवन गई सबै निजग्राम ॥

॥ * ॥ जयकरिहन्द ॥ * ॥

धारवतीको वचन विसूरि । जषा ऋविरहाकुलि भूरि ॥ चौसर चन्दन सुरंग दुकूल । तजत भद्र
जिमि दुखको मूल ॥ दिनभोजन निशिनिसा त्यागि । सुखि भई अति दुखनै पागि ॥ अनुक्षण
लै लै अभि उभास । करत भई मनु अवा अवास ॥ परी रहै निति मूदे नैन । सुरहित भई न बोले
बैन ॥ दासी सखी दशा बह देखि । ऋविसमितं द्विय भयसौं पेलि ॥ हारी करि कितनो उपचार ।
तब सब करि कै भंग विचार ॥ जषा की जननीपै जाय । देति भई सब दशा सुनाय ॥ सुनि सो
शोष सुतापै अर्य । भई देखावत बैद बोलाय ॥ कहत भए इमि बैद विचारि । जलक्रीडा कीन्ही
सुकुमारि ॥ करि अम कीन्ही बारि विहार ॥ शीत गरमको भयो विकार ॥ सुनि बोलि जषाकी माय ।
सखी देहि उर चन्दन लाय ॥ चुरण लनै सो जिमि लहि आगि ॥ यह काम कहा कहा हित लागि ॥
कहे भिषज तब सुनु हेरांनि । अतिसुन्दरि तब सुता सुजानि ॥ तातें भयो डोठिको जोग । मंत्र
जंत्रको करौ प्रयोग ॥ यह केहि भिषज भए निजधाम । जानि हिए एहि नियमत काम ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दासो सखी सुजानि सब लखति भई यह भेद । काम नरीन्द्र अमान यहि करत सुबसदे खेद ॥
एहि विधि रहि कहु दिवसमै लहि बर माधवमास । शुक्लपक्षकी द्वादशी पुरणके ता आस ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

निशिमै सखिन समेत सोई जषा हर्षायै । सुषमा संत्वनिकेत पुरुष रम्यो तहं स्वपनमे ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रथम समागम की भई चेष्टा सकल अनूप । सोणितादि बेवहार सौं भयो सुरतिको रूप ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भन्द मन्द रोषत बैठो उठि । भरो अदसो गाल शिथिल सुठि ॥ ललि सखिजन समुभावन
लागी । जानि कुवरि कहु भयसौं पागी ॥ उषा कही नमै डरपानी । सखिन जाति कहि हानि
गलानी ॥ पुरुष एक सपनेमै आरि । मम कुमारिपन गयो नशारि ॥ किमि माताके ढिग मैं जैहैं ।
बूझे दशा उत्तर का देहैं ॥ जागतसी मैं रहिउ हहा करि । यह बससौं करि गयो चहा धरि ॥
कुलनै लगी कालि हे सजंगी । अह भो धर्मखोप एहि रजनी ॥ इमि कहि नैननिं जलधारा ।
मोचन लागे शमोच चंपारा ॥ इतने मैं एक सखी सयानी । कहत भई सुनु जषा बानी ॥ मन
विकार करि कारज कीन्हे । धर्म नशाथ शास कहि दीन्हे ॥ रूपन दशाग परबस जैसी । भए
भयो यहि धर्म जैसो ॥ तब कुशाग्रसद्विकी तनया । कहति भई इमि चातुरि सनया ॥

सुमुखि सुजानि बचन सुनु मोसो । सुधिकरु शिवा कही जो तो सा ॥ सोई भयो शोच गति
कामिनि । जानु अपूर्व सुखद यह जामिनि ॥ मिलो पुरुष सपने न तोही । होइहि सो तर्कपति
शक्ति होही ॥ सुर गन्धर्व असुर गण जोऊ । निशि पुर प्रविशि शकै नहि जोऊ ॥ औसी पास
बाहको भारी । घर घर डरपहि सब धनुधारी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताके अन्तह भौनमै आइ निशङ्क प्रवीर । ताको तनयासो बिहरो नौ निजवर रणवीर ॥
सो यह महि प्राकृतपुरुष यह कोउ पुरुष महान । है जेता त्रैलोक्यको श्रीर उदण्ड बमान ॥
धनि धरणीपै धन्य तू धनी अपूरव पाय । शोच त्यागि पतिके मिलनको अब करौ उपाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रिया सखीकी बाणी सुनिकै । कहत भई इमि जषा गुणिकै ॥ निजपै परेभोरि जन मोहै ।
करि न सकै कछु कस्वो जौहै ॥ जिमि रुजयसित बद्रय विचारौ । ताते तुम यह काज सुधारौ ॥
यह सुनि बेली सुता सचिबकी । सुन जषा प्यारी तुव जोत्रकी ॥ सखीचित्रलेखा जो अपसर । तेहि
त्रैलोक्य विदित है सबयर ॥ ताहि बलार्द कहे हे आरज । शोच करिहि सो सिधि यह कारज ॥
तव जषा तेहि तहां बोलार्द । कहति भई कर जोरि बुजार्द ॥ हे सखि जौ नम जीवन चाहे ॥ तौ नैं
कहौ बचन सो पाहौ ॥ जो सपनेमें सम दिग आयो । पुरुषसिंह सुधमासो छायो ॥ तेहि इत ल्याइ
मिलावऊ मोसो । यह हठि कहे बिनै करि तोसो ॥ यह सुनि सो अपसरा सयानी । कहतभई
जषासो बानी ॥ सुनु बिनु नाम ग्राम कुल जाने । अरु बिनु तासु मूर्ति पहिजाते ॥ कोहि विधि तेहि
आनउहे कामिनि । करि विचार कह तू गजगामिनि ॥ करि हौ एक उपाय उजागर । है जितने
चयपुरमें नागर । तिनके चित्र लेखि लै अहो ॥ पृथक पृथक सो तुहै देखैहो ॥ तेहि लखि कोहि
लिहऊ तव रसकर । धन कुंमारिपनको जो तसकर ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

असुर अमर गन्धर्वमैं जितने पुरुष विभात । तिनके चित्र विचित्र लिखि ल्याइ लहि दिनसात ॥
जषहिने सिमरै दई पृथक पृथक दरशाय । लखि सुचिच अनिरुद्धकी जबै लई उठाय ॥
कही प्रेमसो ल्याइ उर पुलकि प्रसी जो सचाय । सखि यह जाको चित्रहै सो नम पति सुखदाय ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

ते काके है सुवत्र सखीने । कोहि कुल प्रगटे नम पति होने ॥ कही अपसरा सुत नमनी ॥
पुरो हरिका निधिकी खीनी ॥ विष्णु कृष्ण है तहें सुमुजये । है यदुकुल नैरिजासो भये ॥ तासु
सुवन प्रदुल न्याय । कामरूप है काम सोजाय ॥ है अनिरुद्ध तासु सुखवीर । सुयमा सोव

सुरस रणधीरा ॥ हे यह तासु चिब मनभावन । तो उर रमणि सुरस सरसायन ॥ यह सुनिके
 कषा प्रेमातुरि । कहत भई सुन हे सखि चातुरि ॥ समै परे जो होई सहार्द । सोर सखा पिता सुम
 भार्द ॥ करि दूतत्व साधु मन कारज । स्यार्द मिलाउ शीघ्र पति आरज ॥ सुनु सखि होत दूते पठु
 जैवो सिध्द होत है कारज तैसो ॥ ताते तू सब भांति सयानो । अरु अति नम हितरत सुहृदानी ॥
 हे सखि हे तू नभपथ चारिनि । जोगिनी चारु रचित वपु धारिनि ॥ यहं कारज सिधि करवे
 सायक । हे तू हीं मन हितू सहायक ॥ कही अपसरा सुनऊ कुमारी । धरऊ धीर मति मानऊ
 हारी ॥ अब चूम शीघ्र द्वारिका जाइव । करि उपाय अनिरुद्ध हि ल्याइव ॥ ह्यै से बिदा संकुद
 रमि कहिके । सत्वर वली गगनपथ गहि कै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनै चलि द्वारावती लखत भई सो जाय । नभते अमल अटान लखि होत भई सहचाय ॥
 तव नभ तजि तरि भूमिपै । नगरद्वारपै आय । सरिताके तट ह्यै खरी मनसन लगी उपाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तहं चऊ भोर निहारि देखि सरिततट नारद हि । कारज सिद्ध निहारि जाति भई ठिग सुनिके ॥

॥ * ॥ रोलाकन्द ॥ * ॥

जाई मुनिपै चिबलेखा दूरहीसों नौमि । पाइ आश्रिष भई टाढी शीघ्र नत करि सोमि ॥
 सु मुनि तासों भए बूझत आइबेको छेत । दई सो कहिं व्यादिसों सब भेद मोदनिकेत ॥ जानि
 मुनि आनिरुद्धको लै जाइवो अतसाध्य । दए तांमस मंत्र कारज सिद्धकरण अराध्य ॥ मंत्र लै
 अनिरुद्धके मूढ जाइ सो गहि मोद । अलख रहि तहं लगी लेखन तासु सर्व विमोद ॥ युवति गण
 मधि लसत तारणमध्य जिमि निशिनाह । नृत्य गान वरांगना तह करति रजि मनमांह ॥ गान
 नृत्यन युवतिगणनै रमत ताको चित्त । देखि लीन्हें चित्रलेखा जनि कारण विचि ॥ स्वप्नै ए
 रमै हें मिलि बाणजासों जौनाउतै तेहि चित लगे इनको हें नहें एहि भौन ॥ बूझि यह निज काज
 सिद्ध विचारि मोहन मंत्र । दयो मुनिको ताहि सो तहं भई पढत स्वतंत्र ॥ तयन सह अनिरुद्ध तब
 जहं रहे सोय सुनेहि । चिब लेखा मोदि तब चख्योरि इत उत जाहि ॥ चाबरी अनिरुद्धको गहि
 हर्म्य पै लै जाय । तह ताहि जगाइ जैसे भई कहत सचाय ॥ सपनसै दुरदशा जाकी किए तुन
 चितचोर । लहे विमु सो तुन्हें व्याकुल लखति है चहबोर ॥ रुदति जृम्भति अशति पसिजति
 कम्पति मुरधि अशैनि । लिखो सी तव चित्र लेखि बितैति है दिन रेनि ॥ देई जषहि तुम्हहि पति
 गिरिसता दे वरदान । बलौ तापै बेनि नातो तजैवो वह प्राण ॥ सुवन बलिको बाण ताकी सुता
 कषा चार । तासु शीघ्रतनगरसै चलि होऊ तुम भरतार ॥ चित्रलेखाके बचन सुनि कहत भे

अनिरुद्ध । रह्यो उनके बिधे बडि मम प्रेम पूरण सुद्ध ॥ सपनके रतिरंगम उन करी जान समझ ॥
 कम्पि सुसुकि ऊरुण बांधि नितम चालि स लक्ष ॥ दहा करि मस करणिका बहि अमसरिनि
 म्पि । सजल लज्जित चखन चितई लई आषा जवि ॥ भई सो जो दर ए दर्द कहति तह बरु बार ॥
 कलि मे कुटि कनिनि लैं ॥ जो सरस सुथरे बार ॥ लाइ हरि लयो हो जो भयो पीरो गात्रा यरस कष
 न राम समभा भरो भूरि विभात ॥ तजै पै उठि जतनसों जो लगी सुसुकन वैठि । मप्रत है मम
 हियो ए सब चरित चितमें पैठि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्राणप्रिया मम बल्लभा की तूँ सखी सथानि । शोध सत्य कह सप्र यंह कहौ जरि धुगपानि ॥
 यह सुनि अति आनन्द लहि लै अनिरुद्ध हि तौनि । अन्तरिच पथ गहि गई ही जित उषा रौनि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अनिरुद्धहि लखि बाणकुमारी । ह्यै प्रमुदित भरि नैननि वारी ॥ पुलकि पसी जि दुरै परिता
 पहि । मानत भई धन्यतन आपहि ॥ अर्घ पाय दे पूजन करि कै । कुशल प्रश्न बूजो मुदभरिकै ॥
 बऊरि सखीसो मिलि गजगामिनि । अस्तुति करत मई प्रियकामिनि ॥ भाषि सखीसों पितुके
 मरमैं । गई पतिहि लै गोपित यरमैं ॥ करि गन्धर्वव्याह मुद गहिकै । बिहरण लगे गोपित रहिकै ॥
 विधिवस तिनकह तहां विहारत । लो सुतभयो चारुदिशि चारत ॥ सो लखि कहैवि बाणसों जाइ ।
 युनापुरुष तुव म्दहमैं आई ॥ विहरै जशके संग सोई । वनमैं मत्तसिधकी मारि ॥ सुने बाण क्रोधा
 गिनिसों जरि । कियो घोरधुनि तन चञ्चल करि ॥ भेजत भयो तुरित दलभारी । कहि निडरहि
 गहि डारऊ मारी ॥ चले बोर बल कत भय भारत । मारु मारु धरु मारु पुकारत ॥ जषा लेखि
 सुभट भय भोवनपतिबध भोती लगी तह रोवन ॥ लखि अनिरुद्ध युद्धके घावन ॥ तियसा कहे वचन
 मनभावन ॥ मति करु रुदन तिया भयभेखो ॥ सुख लज्ज मेरि बौरता देखी ॥ बिनु भट आजु बाणका
 करि हैं । शोनितपुर शोणितसा भरि हैं ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

रतने मैं तह जाइ कै नारद सुमुनि सचै । कहत भए अनिरुद्धसों अन्तरिच रहि चै ॥
 हौ आये अनिरुद्ध तव युद्ध लखन हित अच ॥ तपसि मरु लखि युद्धसों जेई कल्प यच ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि नारदके वचन सोहाने । श्री अनिरुद्ध बोरसरते ॥ केहरि सम कडि तोहरि वनसैं ।
 भिरे दिरद रजनीचर नंसैं ॥ मख मक्ति मोनर परिचातिक । तजतभए सब असुर प्रगादिक ॥
 परिष कपाठक अतिभारी । लै अनिरुद्ध वीर पनभारी ॥ अति सरोव करि तासु प्रहार ॥

असुर वृन्दकहलगे संहारण ॥ सणन वीर असंख्य संहारे । किते वीर भागे अधमारे ॥ रुधिर
 वंशत अति भयसौ भारे । गए बाणके पास पिरारे ॥ कादर जानि तिनहे निजि ज्वे कै । धंसन
 किहेसि बाण रिसिन्धै कै ॥ अयुत सुभट फिरि और पठाए । बलकत गरब भरेते आए ॥ तोमर
 भिन्दिपाल शर चावन । देखतहीं ते रुगे चलावन ॥ अति जंबसा तिनके मधि जाई । कीन्हे कुबर
 परिष की घाई ॥ अणु तणु विणुत उद'धाता । अरु आविह्म अंत विद्यांता ॥ इन्हहि आदि बतिस
 अस्थाननि । किए प्रहार अनेक विधाननि ॥ करि चापलता अति मनमाने । ने अनिरुह सहस्र
 सम जाने ॥ पल्ल नै कदक सहस्र भट मारे । बचे रहते भगे दुखारे ॥ गिरत एक पै एक भभर
 सौ । नभपथ गहे बाणके डरसौ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शुनि गणणें सुनि कहे धम्य धम्य अनिरुह । सो सुनि अह निज सैन लखि भयो बाण अतिक्रुह ॥
 रथ सजाय कुम्भाणसों चढि बरणे बलवान । चलो बाण अनिरुह पै गरजत भेघ समान ॥

॥ * ॥ गुरुतोमरहृन्द ॥ * ॥

सो सहस्र पाणि अखेदसौ । बरभूषि आयुध ते दसौ ॥ अनिरुह वीरहि देखिके । अघ समुजि
 अतिसे देखिके ॥ धनुषानको ठकार कै । भो कहत दोहक पुकारकै ॥ अब भागुमति भय पागि कै ।
 नहि बजैगो तुम भागिकै ॥ अनिरुह ताको पेलिकै । निजबधौ सम अबरेलिकै ॥ कर खड्गधर्म
 महान लै । हँ लडे वीर विधान लै ॥ तब बाण बाण अनेगिने । तकि तजे जौन बनेगिने ॥ अनिरुहते
 शर चर्मसौ । कऊ दए टारि अभर्म सौ ॥ फिरि बाण सहसनि बाणसौ । भो हनत बाणविधानसौ ॥
 अनिरुह निर्भय प्राणके । तब चले सम्मुख बाणके ॥ सु महोच ताकि किसानकौ । जिमि चलै
 तौरि किसानकौ ॥ शर भिन्दिपालहि आदिकै । तेइ तजे कितने नादिकै ॥ सहि सबै रथदिग
 आदिकै । अनिरुह रथपै जादिकै ॥ सब बाजि बाणको मारिकै । रथ जुवादण्ड विदारिकै ॥ फिरि
 फिरे सत्वर बाणपै भुजसहस्र वीर अमानपै ॥ इनि बाण ताहि निहारिकौ । भो गुप्त अनर विचारिकौ ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उतसौ शर बरषण लगे । तब रथतजि अनिरुह । महिपै ठाढे न्हे लगे इत उत लखन सकुह ॥
 तब बाणसुर कै प्रगट धीर शक्ति अतिघोर । तजत भयो अनिरुह पै क्रुधि भुजनके जोर ॥
 कूटि वीर अनिरुह सौ शक्ति सए निजपानि । ताही सौ बाणहि हने कोपि व्यामभरि तानि ॥

॥ * ॥ जयकरीहृन्द ॥ * ॥

सगे शक्ति भो मूर्च्छित बाण । कर ते छूटि परे धनुबाण ॥ घरीदिक सौ मूदि सु नैन । रथो

ध्याना मे खाति अचैन ॥ गहेसि धनुष पिरि होर सचेत । तव बोलात भो सचिव सचेत ॥ बासा
 करि प्रसन्न सगीत । भूपति तुम नहि लहिहो जीति ॥ ताते मायाविधि अचमहि । करि भूपति
 नहि जीतऊ याहि ॥ बचन तासु यह सुनिके बाए । भो रवध्वजसंह अक्षरध्यान ॥ हाडि सप
 हर मंच अराधि । दोहेसि श्रीअनिन्दहहि वीधि ॥ सूर्यमूर्ति बंधिके अनिरह । कीर्तित अहिसे
 भए सकुह ॥ तत्र न्हे प्रमठ रक्तपुर रौत । कस्यो सचिव हो एहि विधि तौत ॥ हरी शीघ्र इति
 याको प्रान । सो सुनि बोली सचित्र सुजात ॥ भूपति बूझि लेऊ यह कौत । तव किरि करऊ
 उचित हे जौत ॥ प्रह हे कोऊ मुख अमूय । वरबंश्र जगजेता रूप ॥ याविधि बांधो तऊ विभाता
 तुमै लेखि नहि नेकु सक्रान ॥ जया सो गान्धर्व पिवाह । करि यह रमो पिताकी चाह ॥ निरुत ब
 अस कीर्ति उतजोग । ताते यह नहि बधिबे जोग ॥ यह सुनि कहेसि बाए तेहि याहि । एहि
 राखऊ काराट्टह माहि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कारा रचण कहें सउँपि अनिरहहि वसुमान । गयो सभाके सदने सुगरव बाए अमान ॥
 नारदयह बिरतांत छलि भए कृष्णके पास । मुनिहि ज्ञान अनिरह छलि वरेहुडनकी पास ॥
 काराट्टह मैं आदके श्रीअनिरह प्रबोन । अस्तुति गिरिजाकी किए कहि कहि पय नवीन ॥
 सुनि दुर्गा तहँ प्रमठ न्हे नागबंधकह मीचि । यह असिपंजर तोरिके कहन भई इति शेषि ॥
 जौलो केमल आदि लै जाहिँ न गरुड घटाय । तौलो बन्धन दन दते रहियो मुक्त सचाय ॥
 यह सुनि फिरि अस्तुति किए श्रीअनिरह सक्रान । हे आशिस गिरिजा गई प्राकर आने धाम ॥
 वरणे एहि अध्याय मे कारण यह विस तारि । जया यह अनिरहको निरुत वनोद निरुति ॥
 बासासुर अनिरहको कहे युद्ध फिरि बर्षि । वन्धन केहि अनिरहको बंध जोगे फिरि कर्षि ॥
 लक्ष्मीकाशोरजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्यार्याभिराजिना श्रीबन्दीजनकाश्रीवासि
 गोकुलनाथकबीशरात्मजेनगोपोनाथकविनाविरचतेहरिवंशदर्पणेशनिन्दोपासनात्मोनामधिसोऽध्यायः

॥ * ॥ चोपार्द ॥ * ॥

हरिअनिरहहि लै जेहि सखन । कई अचरा कोदित मनमें ॥ ता पीछे दारावति वरुँ । श्रीअनिरह
 कपूरके करमें ॥ सोबनि रही मोहि जे नारी । ते सब चेति जगो पतिपारी ॥ विलु अनिरहहि लखे
 दुखारो । इतन करन लागीं भय भारी ॥ सो सुनि कृष्णादिक सब जाने । सुनि वृतात मोह लो
 पाये ॥ सुनि रोदन यादुव भय हाएन । निज निज प्ररुँ छति उदि भाए ॥ सभासख हैं अण्हि
 देखे । जनि उपास लोत अति तेखे ॥ नैतन भये तत्रां यादुवगण । शिषित रुदि रूप भरि भय
 सों मन ॥ तत्र विपुस केवच लो पाखे । इतक मोच कन मनसैं रही ॥ इत भय वलते निरभय

सुरपति । रह भए हनं सब निरभय अति ॥ सो प्रभु तुम कत चिन्तानहइ । सादर उचित होइ
 सों कहइ ॥ सुनि प्रभु कहे शेष परिहरि के । लै गो कोउ अनिरुद्धि हरिके ॥ यह विरतान्त
 नृपति सब सुनिके । हरिहैं हीनपराक्रम गुणिके ॥ तब प्रभुसों एहि विधिकी बानी । कहत भए
 सात्युकि गुरझानी ॥ प्रभु चारण बसु दिशा पठावउ । को लै गो यह सबारि मँगावउ ॥ विरि
 तान्त करव जो भाइहि । लै अनिरुद्धि कह सो आइहि ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनि चारण अनभिने के प्रव तहां बलायाविदा किए प्रति दिग्गमि कँह विधि विरतान्त मुभाथा ।
 वन गिरिवर तर गहन प्रतिसगर नगर प्रति ग्रामालखि फिरिआए चार नहि निखो कुवर अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब गुणि बोखत भो अभिमानो । अनाधृष्टि बरबल सेनानो ॥ नहि कोउ नहिवासी यह कारज ।
 जीति सकिहि करि सुनिसे चारज ॥ शकहि जीति पराभव दैके । प्रभु तुम मोदे सुरतरहि लोक ॥
 ताहिब पर सुरपति इत चार्द । अनिरुद्धि लै गए चोर्दार्द ॥ मन अनुमान परै लखि सेवो ।
 आपु विचारि कहै हो जैवो ॥ प्रभु बोले गर्है इनि मन धरिहैं । शक कवउ नहि सेवो करि हैं ॥
 सुत्रहसी अ पराक्रम हीने । करै धीरवत दना मल्लीने ॥ विपदा परे प्राण परिहरहों । उन्नत
 पुरुष न लघु गति धरहों ॥ तब बोले अक्रूर सयाने । तब कल्याण शक हित जाने ॥ तासु काज तुम
 निज सम जाने । तब कारज बै निज अनुमाने ॥ तब प्रभु कहत भए अनुमानी । सब कोउ सुनउ
 सत्य मन बानी ॥ सुर गन्धर्व असुर किन्नर नर । नहि लैगे अनिरुद्धि बस बर ॥ कोउ पुंछसी
 असुरकी भांतिनि । रमएहेत होइ गर्ह सो कानिनि ॥ इतने में तह नारद आए । पूजि कृष्ण सादर
 बैठाए ॥ लखि बोखत भे सुनिवर जानो । कत शोचित हो तुम सब मानो ॥ कहे कृष्ण निशि मैं पत्र
 धरिके । लै गो कोउ अनिरुद्धि हरिके ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विनु जाने यह भेद हैं हमसब पूरित छेद । सुनि तुम जानल होऊ तौ शीघ्र कहऊ यह भेद ॥
 तब नारद सुनि कहत भे जांच टांच वेवहारा । खरनि भिरनि नहिपरनि सब विधिवत सह विचार ॥
 यह बचनते कुवर हे कष्टित होऊ विचारि । तार्ते पलिये शीघ्र उत हियते ससे ठारि ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब उत जैवो नद सीन्हे । प्रभु सुभटन कहै शासन दोन्हे ॥ तब इनि कहत भए सुनि नारद ।
 सुनऊ बचन मन कृष्णहि सादर ॥ सहस इनारद योजन सो घर । नधि बन नदी अनभिने गिरि
 नर ॥ तार्ते बरुहि होऊ बलीर्द । तार्ते पडि पलिये दोउ भार ॥ यह सुनि कृष्ण नरु कहै

श्याए । श्रीघ्न गरुड तहँ सानद आए ॥ आरु गरुड प्रभुके पन बन्दे । बन्दि कहत इमि भए अचानन्दे ॥
 नाथ कृपा करि करिए प्रासन । सो न करउ सुमऊ अरि नाशन ॥ सुनि प्रभु अति आनद हिय
 छीए । समाचार लखपतिहि सुनाए ॥ तदनु गरुडकी अकृति करिके । कहत भए आनद बिल
 रिके ॥ मोहि श्रीघ्न शोणित पुर लै चलि । जोतऊ बाणहि असुरहि दलि मलि ॥ यह सुनि
 कहे गरुड हरधाने । धनि हँ जेहि प्रभु आपुषधाने ॥ माँ मै जितो संत्वकी गुरता । सो तुव अनु
 कृपा की पुरता ॥ नाथ तुम्हार भक्त जो हेरई । धन्य धन्य तिऊ पुर मै सोरई ॥ कारण कार्य आपु
 सब जनके । दर्शक दर्शावक सब मगके ॥ लहि तव कृपा होइ सब आरज । करै सिद्ध अतिदुष्कर
 कारज ॥ लै अतु सखा बन्धुनए गोहन । करऊँ श्रीघ्न मोपर आरोहन ॥ *~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव गरुडहि आलिंग्य प्रभु सह प्रदुष बलिराम । चलत भए चढि मोदसो गहि आयुध अभिराम ॥
 कछू दूर बलि कृष्ण प्रभु भए असृमुजरूप । सहस शीरषा पुरुष न्यौभो गिरि सहस अनूप ॥
 लङ्ग चक्र शर वर गदा दक्षिण करन बिहार । लसे गङ्ग धनु पवि चरमवान करनि म धार ॥
 सहस शीरषा राम भे गिरिवत गुरु बलवान । आन कारतिक को गहे रूप प्रदुष महान ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

एहि विधि चलि बलधाम शोणितपुर के निकटभे । तहाँ कहत भे राम विशद बचन श्रीकृष्णसो ॥

॥ * ॥ रोलाकन्द ॥ * ॥

इत हम सुत सहित तुम व्रै निज प्रभा सो छीन । भए काञ्चन वरण कारण कहा यह परवीन ॥
 कहे यह सुनि कृष्ण शोणितनगरमे चऊ औरादिपति ज्वाला अगिनि को प्रज्वलित अतिसे घोर ॥
 परे ताकी प्रभा हम तुम भए जैसे रूप । कृष्ण सो सुनि कहे पिरि बलिराम बचन अनूप ॥
 आवतै डिग तासु हम तुम भए जे वै बर्ण । कहा आगे करहि मे पुर सार्थ तै गहि पर्थ ॥ बचन
 सुनि प्रभु बिहंग पतिको दए तत्र निदेश । गरुड सुनि अति वेग सो उडिआत भे नभ देश ॥
 सहसमुख करि सुर सरितको बारि भरिलै अच । बरधि धारनि देत भे सब ज्वालाजाल विनाय ॥
 अग्नि वर हवनोय की लखि शान्ति शिवगण बन्दि आरु सन्मुख खरन सागे कृष्णसो तेहि अन्दि ॥
 नेसु तिनके युद्धको अग बाण बीर उदार । तहाँ भजे अपि रहि जे अगिनिको सरदार ॥ सहस शो
 षण कुसुम अर कल्पाय तपन सुखाल । पाँच साक्षा कार विषये प्रगठ अपि विशाल ॥ चिठर
 पतग अगाध अर्थ सुभाज पावक पाँच । खधा काना अर्थ ए दम अपि हीरघ आँच ॥ विभाज
 ज्योतिष्ठा भए है अपि अति अभिराम । बषटकारा अर्थ तिम सह सरिस सहस साखाम ॥
 वेग सामँ आरुके सो अमिरा बलवान । वैठि रव आप्रेयस तकि तजन साखो वान ॥ कहे प्रभु

तत्र अंगिरासो हरो रज्जु धरि धीर । शीघ्र मेरे अस्त्रसो तुव जरत दीवशरीर ॥ वचन यह सुनि
अंगिरा मो हयो मूलउदण्ड । काठि भरसो वीच ही तेहि किए प्रभु द्वैखण्ड ॥ स्थूलकर्ण विशाल
भर फिरि हने प्रभु उर तासु । ह्यौ बिदोरण हियो अंगिर भियो नहिप्ये आसु ॥ सर्व अधि उठार
छै तव अंगिर हि भरिचासु । गए शोणित भये शोणितनगरपतिके पासं ॥ * * * * *

॥ * ॥ देखा ॥ * ॥

तव शोणितपुरं प्रतिचले अति जवसो विहगेश । खलि प्रभूसो मारद कहे यह शोणितपुर गेश ॥
इत सुमनस गिरिजा संहित रहत रज्जु सबयाम । बाणवीर असुरेशके रक्षलहित अभिराम ॥
सुनि प्रभु बोले प्रभु जौ न्हे दैयतकी वोर । खरि है उनहंसो करौ तो संगर अति घोर ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

थैसो कहत नगरठिन आए । तव तह केशव शङ्क बजाए ॥ सुनि धुनि दैयतगण समुदाई ।
निकसत भए निसाग बजाई ॥ कोठिन छिकर मदसो छाए । खरनहेत बलि आने आए ॥ कहे
राम प्रभूसो सुनि खीजे । इनको शीघ्र नेवारण कीजे ॥ सुनि प्रभु अधिवाण तव खीन्हे । खलने
तिन्हे भयन करि दीन्हे ॥ तव जूबन सह सहसन जूषप । आए सनमुख परदल जूषप ॥ गिरि सन
वपुके तबसन आयुष । गहे वीर बरणे करुता जुध ॥ ते सब प्रभुहि प्रचारण खाने । शस्त्र समूहनि
मारण खाने ॥ तव बल खगे भटनसा जूठना हलसो खींचि सुसलसो कूठना ॥ शङ्क बजाय बजाय
सुखारी । बाण मदा खर बज्र प्रहारी ॥ कृष्णचन्द्र मिथि युद्ध निहारे । यूधन युधपतिन रुंहारे ॥
घन प्रदुल्लभनसम भर बरसे । तृण सम प्राण अपरके सरसे ॥ पसन नखन जोषसो खपपति ।
हने अर्नमिने मठ बरवस अति ॥ भए परनि कल्पपांत समयके । चारि काख सम दायक भयके ॥
करि संगर अति व्याकुल ह्यौ कै । बचे असुर भाने-भय झेकै ॥ तव प्रभु अतिआनदसो छाए ।
सुखद दुखद मुभीष्ट बजाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव सहाय असुरनके आवत भो तई तौन । खर अज्वलित जहानको जैन जाहिरो जैन ॥
तीनिखर छौ तीनिधर बटभुज खर नव जैन । भयमायुध सुरीद्र अति करुणासिन्धु सचैन ॥
निद्रित सो अमुंवात खर अरुण भयद बल बकनाम्बसत खरो सनमुख भयो घनसम गरजत तव ॥

॥ * ॥ महिखरोछन्द ॥ * ॥

घनसम गरभि-प्रखिरानको खलि रोष अतिवै महत भो । भरि भयन तीनि मूढि खीन्हे जाय
दिनदनि कहत भो ॥ अति भागु खर रज्जु खरो इनि कहि भयन डारत चहन भो । बल सके सो न
बचाय भय हि बाहि दुह फिर रहत भो ॥ तव दाहसो ह्यौ राम व्याकुल मुखिषे गिरि परत भो ॥ अति

जबि उससत जृभि केशव कृष्ण यह जव धरत भे ॥ सुनि कृष्ण उरने साथ रामहि ब्यथा सिगरो
हरत भे । लखि ज्वरहि निपट निग्रह मो डिग आंउ यह धुनि करत भे ॥ सुनि भंषम तीनिउ मूटि
सो ज्वर कृष्णके तनमधि हने । हरि कृष्णक मुरखित घेति फिरि प्रभु भिरे ज्वरसो सुखसने ॥ लखि
घरिक गहि तेहि कृष्ण पंठके छूटि करसो ज्वर सुनो । तंह प्राबशि प्रभुके देहमधि भा करत
पीडित नुर सुनो ॥ तव कृष्ण बैष्णव ज्वर प्रबल जिअदेहेते प्रगंटित किए । सो ल्याइ गहि तेहि
ज्वरहि ताक्षण कृष्णके करमह दिए ॥ फिरि ताहि महि पै पठकि प्रभु जतलण्ड करिवो गुणत भे ।
तेह नाहि नाहि पुकार बडधा कियो सो नहि सुमत भे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ताक्षण नभवाणी भई यह मति हतउ कृपाल । सो सुनि कृष्ण न तेहि बधे सुनि सै हे चितिपाल ॥
तव रौद्र ज्वर कृष्णके बन्दि चरण अभिरामाकछो दुतिय ज्वरको समन करउ कृष्ण अभिराम ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

एवमस्तु तव प्रभु कहि दोन्हे । निजज्वर मिलै आपु मैं लीन्हे ॥ निजज्वर लोपि रौद्र सु
ज्वरसा । कहत भए केशव आदरसो ॥ अब ह्यै तीनि भाग अति अंग मैं ॥ बिलस उ ज्वर तुम सिग
रै जगने ॥ द्विपद चतुष्यद आवरण मैं । बिहर उ क्रमसो मोदित मन मैं ॥ एकाहिक द्वाहिक
अरु त्राहिक । बिचरो मानुष मैं ए द्वाहिकां ॥ त्रारिजने हिन कारि जलम । उखर रूप रसौ महिचल
मैं ॥ गेरु रूप रसौ गिरिवर मैं । सुनो कहौ जेहि विधिसो तह मैं ॥ शकुचिनी और पाखुता दल मैं ।
कीट काठ मै कृमिता फल मैं ॥ परको जरिभो पक्षी जन मैं । खुरक अंपसर धौपद नख मैं ॥ मानुष
देव भेष तुव सहि हैं । और न आन सु धीरज रहि हैं ॥ यह सुनि एवमस्तु कहि ज्वर बर । कहत
भयो इमि प्रभुसो तेहि घर ॥ चिपुर दैतके संगर बरने । सुनउ नाच मोहि गहर भिरने ॥ सहि
तव कृपा आजु रहि डार । भएउ धन्य मैं सुनउ गोशार ॥ अब कहु मोसो कहियै सार । सो मै
कारउ दासकी नार ॥ यह सुनि कृष्ण कहत भे जैसे । मज तुव बुद्ध जोन यह जैसे ॥ मोहि प्रनम्य
पडे नर जोर । सो न ज्वरनसो पीडित होर ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

स्वामी होइ हि औसि यह कहि ज्वर प्रभुपद बन्दि । जातमथोरसभूमि ते बर सहि परने अमन्दि ॥

मौलौ साजि असंख्य दल आयो बाण प्रवीर । सुनगण सह शिव तासु रंग रसक दायक धीर ॥

गिरिसन वपुके बीर जे बरखे धीर अमान । भिरे कृष्णसो आइ में सासत बीर महान ॥

परजि मरजि कारण खने शक अमोघ अपार । काठि तिन्है प्रभु बीचही करण खने संहार ॥

जिन दावानलसा जरे घूना गहन काशीन । तथा कृष्णके अक्षसो जरे अक्षुर माशीन ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

श्रीश्रीकृष्ण शुभेश राम प्रदुस्र लग्न लारि । कीन्हे संखित शेष दैचत सैन असंख्यको ॥
रहे शेष जे वीर ते सब बसि भागत भए । धरे न काङ्ग धोर फिरे फेरे न बाणको ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

रविधि बाणको निरजय देखी । शङ्कर मनमै अतिसे तेखी ॥ रथ चलाइ बडि प्रभुके सममुख ।
आए भए वीररस सौ बख ॥ सहस्रन भेख अति भयानक गण गण । बल कत सङ्ग परम प्रमुदित मन ॥
शिव हि देखि प्रभु आनद छाए । लरन हेत चलि आगे आए ॥ अत शर हरि हि लखत हर मारे ।
तब पार्जन्य अस्त्र प्रभु डोरे ॥ ज्वलत जाइ सो शिवके नेरे । ह्यै अत सहस्र बाण रथ घेरे ॥ शिव आ
अथे अस्त्र तब छांडे । सो चलि जाइ दृष्ट प चांडे ॥ ज्वाल ज्वालनै तासों यदुपति । छादित भए
दशोदिसिधों अति ॥ भए अहश्य सुनौ तेहि लक्ष्मीतव करि कस कोप अति मनमै ॥ तजिव ह्यास
मोद अति लीन्हे । अस्त्र शम्भुको लोपित कीन्हे ॥ तजत भए तब यदुकुल नाथक । सावहि चारि
अस्त्र भयदायक ॥ बासव अर बाणव्य बलानो मोहन अर सावित्र महाने ॥ आठो अस्त्र एकता धरि
कै । समित होत भे बीर्वाह बरि कै ॥ फेरि बैष्णव अस्त्र सोहाए । छाडत भए कृष्ण रिषिछाए ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

उद्य बैष्णव अस्त्रको करत हि उद्य प्रयोग । अन्धकार जडि भो दिग्गनि विकल भए सब लोग ॥
अन्धकारभो ह्यै अह्न करि अति कोप । तजन चहे सौ अस्त्र जेहि किए चिपुरको लोप ॥

॥ * ॥ तोटकहन्द ॥ * ॥

शिवके मनकी बह जागि लिये । प्रभुजृम्भन अस्त्र प्रयोग किए ॥ धनुसो शिव खावत हे सरसों ।
रघुसौ लनि जाइ लंगो बरसों ॥ जिनि जृम्भन अस्त्र लगे तन नै अति व्याकुल ह्यै शिवा तासलनै ॥
शर आपहि सौति निसाइ रहे । अर बारहि बारज भाइ रहे ॥ * * * * *

॥ * ॥ मोदकहन्द ॥ * ॥

शम्भु दियो लखि कै प्रभु मानद । शङ्क बजावत भे तहँ सानद ॥ दैचतके गणदीहल हे भय ।
कौश्यके कुलको मुनि कै लय ॥ महरके गणके अतिसे लिसि । घेरि लिये तहँ जाय दशोदिसि ॥
कोशर कै सुतपै भयछावत । भे सब अस्त्र अनेक चलावत ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जायावी प्रदुस्र तब मोहन अस्त्र चलाय । करि निद्रित सब गणनिको दीन्हे गुरित सोबाय ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

हरि हरसा इनि लख माये । अर ब्रह्माण्ड भोतिखा राचा ॥ कश्यपको अस्त्र शेष दहलाने ।

यह कहि हरिहर को किए अस्तुति मुनि सुखदाय । महाराज क्षितिपाल मणि सो मुनियै मनलाय ।

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

दृष्ट्य हृद उदार हरिहरं विष्णु शिवहि प्रणाम । द्वै नेत्र अरु त्रैनेत्र प्रभुका परम प्रणत प्रणाम ॥ चारु वारिज नेत्र पिङ्गक नेत्रकों सु प्रणाम । धोर धरणी धरण गंगाधरहि प्रणत प्रणाम ॥ मण्डमाला धरहि औ बनमालधरहि प्रणाम । चक्रपाणि त्रिशूलपाणिहि परम प्रणत प्रणाम ॥ पीत अंशुकधरहि अरु चरुर्मा म्वरीहि प्रणाम । रमापति अरु उमापति कौ परम प्रणत प्रणाम ॥ अङ्ग रागिहि भस्मरागिहि प्रेम पूरि प्रणाम । गरुड बाहन वृषभ बाहन प्रभुहि प्रणत प्रणाम ॥ दैतवलि को दत्त क मल ध्वंशनहि सु प्रणाम । देव रिपु हन त्रिपुरहन कौ परम प्रणत प्रणाम ॥ सहस शीर्षा पुरुष अरु बज्र शीरषहि परणाम । सहस बाऊ असंख्य बाऊ सु प्रभुहि प्रणत प्रणाम ॥ ययुर्केदी सामवेदो ख्यात प्रभुहि प्रणाम । सौम्य रौद्र सुभाव न्यामक प्रभुहि प्रणत प्रणाम ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दृष्टिकृत यह अक्षोत्रवर हरिहरात्मक बेश । बांझित को दातार है गुणियै सत्य नरेश ॥ युद्धकरण को त्याग जब कीन्हे शम्भु सुजान । रथ चढाय लै गुहहि गो तम कुम्भाडि अमान ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

कान्तिकेय बलवान् हने तीस शर दृष्ट्यै । तीस तीस बरबाण राम प्रदुस्र अमान को ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब बादर्य अस्त्र प्रभु डारे । शर आग्नेय राम तकि मारे ॥ शर पार्जन्य प्रदुस्र चलाए । विकट अस्त्र ए गुहप्रति धाए ॥ तब गुह बारूण शैल सु हेरे । अरु सावित्र अस्त्र त्रय प्रेरे ॥ बीचहि अस्त्र अस्त्रसा बारि । हने अनगिने बाण प्रचारि । तत्र प्रभु सजि शर माया शर से । बीचहि शर कुमार के जर से ॥ लखि कुमार अतिसै रिसि कीन्हे । अस्त्र ब्रह्मशिर कर मै लीन्हे ॥ उग्र प्रभाव अस्त्रसौं झंडत । हाहा कार मढोभय मांडत ॥ चले चक्र के भो सो निहफल । जिमि रत्रि चले घनो घन को दल ॥ अर्थ ब्रह्मशिर अस्त्रहि देखी । षटमुख मनमै अतिसै तेखी ॥ लए अमोघ शक्ति अति भारी । जो युगान्त पावकसम घारी ॥ तजे शक्ति सो गुह करि दपटै । वली पूरि महि नभ लौ लपटै ॥ सहस सुमनगण शक्र सकाने । जरे दृष्ट्य यह ध्रुव अनुमाने ॥ ताहि निकट लखि प्रभु अनखाए । हँ कहि महिपै ताहि गिराए ॥ साधु साधु श्रीदृष्ट्य महाशय । कहे सुमन लखि प्रभु की आशय ॥ फिरि प्रभु चक्र पाणि मै लीन्हे । गुहके नाशन को पन कीन्हे ॥ हय लखिके गिरिजा बररूपा । सुतके रक्षण हेत अनूया ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अस्य एक हीं बाण्यै याहि पूर्व अनुराणि । हों छिरण्यकश्यपु लहे विधिसें तपि वर मांनि ॥
ताहि चलावत भे प्रबलप्रलथ अधिसन जौन । ज्वाल जालनों छार दिशि चलो कश्यप-तौन ॥
पारजन्य वर अल्ल तव तजे कृष्ण करि कोप । ज्वाल जालनें अल्लको करत भयो सो खोप ॥

॥ * ॥ तोमरहन्द ॥ * ॥

मिज अल्लको लखि खोप । करि बाण अतिसै कोप ॥ भो तजत शल्ल अनेक । अर अल्ल
विविध सटेक ॥ ते सबै मंगनें काटि । प्रभु हने बाणहि डांठि ॥ तजि सार्ङ्गधनुसों वाम । प्रभु दए
काटि महान ॥ रवध्वज धनुष हय तासु । अर मुकुट कवचहि आसु ॥ फिरि बाणके हिय बीच ।
शर हने एक तभीच ॥ शर लगे ते भट वान । तहं परो मुर्छि अघान ॥ तेहि दिए हे गुण जौन ।
सु सथूर बाहन तौन ॥ तव गहडसों सो धाय । भो भिरत दीरघ काय ॥ मल्ल तुष्ट पक्ष चलाय । ते
लरत भे रिसिधाय ॥ छरि शिखिहि लगपति मारि । किकि दए मरिपै डारि ॥ यह बाण को गति
देखि । मुनि कलहप्रिय अवरैखि ॥ न्हे मुदित कुच्छ बजाय । हसि लगे नचन सचाय ॥ तव चेति
बाण सकानि । भो करत महत नखानि ॥ सह शक समुदा सोच । इनि लखे मोकहषाय ॥ इनि
बूझि मनसै खेदि । तिमि रहत भो निरवेदि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चिन्ति बाणके चिन्तकी चिन्ता श्री चिपुरारि । नन्दीअरसों कहंत भे कहरासिन्धु विचारि ॥
मम रथ सौ अब आर तुम बाणहि शोभ चढाय । युह करावऊ कृष्णसो न्हे सारथि सुखदाय ॥
सुनि निदेश निरिनाय को रथ लै नन्दी जाय । प्रभुको सन्मुख करत भे बाणहि तुरित घढाय ॥

॥ * ॥ चौपाद ॥ * ॥

शिवकी कृपा पाद मुदपागे । बाण पूर्ववत बलकन लागे ॥ परम रौद्र उग्र अति जोई । अल्ल
ब्रह्माशिर काडेसि सोई ॥ केशव ताहि चक्रसों वारी । कहे बाणसों आयुध धारी ॥ पूर्व सहस्रभुज
अर्जुन को गति । कीन्ही परशुराम जो बरमति ॥ सो गति करऊ शोभ नै तोरी । धिर रहि देखु
बौरता मोरी ॥ यह कहि चक्र पाणिमें लीन्हे बाणहि नाशन को पन कीन्हे ॥ कहे शिवासों गहर
चाहो ॥ सादर आर बचावऊ याहो ॥ सुनि कोठबी शंभु की बानी । लम्बा सहित सरस सुखदानो ॥
सादर दिखसना सुखदार । ठाढी भई मध्यमै आई ॥ लखि प्रभु बोलेनै नवार्द । कहे कहे
काहो अब आई ॥ बोली तव कोठबी भवानी । बाण मोहि प्रिय जिमि सेनानी ॥ इतनो कहे
मानि मम खेह । अमै दान बाणहि अब देह ॥ सुनि प्रभु बोले सुनऊ भवानी । बधव न याहि
मानि मुख बानी ॥ सब भुज काटि दोय भुज राखव । गर्व बाणके तमते माखव ॥ भावि कोठबी सैं

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

बसन्तीवार सघाय कहत भयो कुम्भाण्ड इनि । नाथ बाणकी नाथ है असंख्य धर बरहके ॥
 खनै अघृत शुचिदीरते सिंगरी सुखदा सुरधि । चाह ऊँतौ रणधीर तिनै सेत जैसै सुदब ॥
 कहितयालु औरंग चलतु भए आनदअयन । चले सुदित ह्यै संग सुरपति सुर नखर्व सह ॥

॥ * ॥ चौआरद ॥ * ॥

सहित स्वपुत्र सुपुत्र सु भार्द । चले गरुड पै प्रभु सुखदारद ॥ पूरव ठिग जपाको बाहन । चाह मयूर
 हिराखि सुचाहन ॥ नभपथ चले बारुणीदिशिपति । सुरगन्धर्व सहित सह सुरपति ॥ पश्चिम
 समुद्र निरखि यदुनायक । कहे गरुडसौ बचनं सभायक ॥ स्वपति अहो बाणको बोधन । चक्षी
 तहां करि कै मम सोधन ॥ यह सुनि गरुड आरि पर भारि छिनारि वारि तहँ तउरव वारिहि ॥
 लखे बरह प्रति मुदसौं भेले । चलि जबसौं बरहास्य देखे ॥ निजदिशि आवत तिनै निहारे ।
 सुभठ बरहपुरके रखवारे ॥ को तुम कत आवत भय त्यागे । कहि शस्त्रनसौं मारण लागे ॥
 करि ते कटिन युद्ध रिसिराते । स्वपतिसौं तहँ नए निपात ॥ यह सुधि पाय बरह रिसिहाए ।
 हाकटि गत मठरथो पठाए ॥ ते करि घोरयुद्ध भरि बलसौं । जरे कृष्णके बाणगलसौं ॥ यह
 सुनि बरह सैन सजि भारी । आए खरन आपु धनु भारि ॥ जलपति जलजल अब जाइ सुखारे ।
 बाण अनेक छव्यकहँ सारि ॥ ग्रह वजाय कृष्ण प्रभु हरषे । बाण अमान बरह पै बरषे ॥ * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बरहणहि प्रभु प्रभुकहँ बरह नारे चख ग्रंथ अनेक । तमुख युद्ध कीन्हे प्रबल गहे युद्ध की ठेक ॥
 मजे कृष्ण तव बरह पै बैष्णव अथ प्रचण्ड । चक्ष्यो चण्डकर सहस्र सो ज्वालपुञ्ज उदण्ड ॥
 बारुणास तत्र-मजत बै बारण बरह निचारि । भिरो बैखव अक्षसा सो बरषत बर वारि ॥
 बारुणासको वारि सब वारि बैखव अथ । प्रलयाग्नि सम बरहपै रलत भयो शुभशख ॥

॥ * ॥ अयकरीकन्द ॥ * ॥

अखहि आप्त खलि मन मोरि । प्रभुसौं कहे बरह कर ओरि ॥ सरण करऊ निज ब्रह्मनि
 उदार । जेहि सुबीजको तव संवार ॥ तेहि समदँ जौ मम संहार । उचित होइ तौ करौ न बार ॥
 इनि कहि अक्षति किए बनाए । तव इनि बोले श्रीमदुराए ॥ दीजे शीघ्र बाणकी नाथ जौ
 तुम कुग्रह चहौ जिज्ञे काय ॥ प्रहृष्ट कहे सुनि सै सुण नेऊ । ही नै किए प्रतिज्ञा एऊ ॥ गोपन
 तुम दोहे सो बाण । आनहि हेव न आहत प्राण ॥ हो सुधर्म मालक तुम ईश । करौ उचित
 खलि विश्वे बीया ॥ जौ चहौ गोपनको साऊ । तौ प्रभु मोहि नारि लौ जाऊ ॥ यह सुनि कहे

स्त्रिंशत्श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिनामिना श्रीवन्दीजनकाश्री-
वासिनोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां हरिवंशदर्पणे बाणयुद्धोपनिषत्तु
शोऽर्थायः ॥ ३९ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सैतिकसौ यह सुनि कथा लहि सैनिक आमन्द हफिरि बूजे मुनिराजसौ पावणि कथा अमन्द ॥
जनमेजय नरनाहको सुनि अब कहि औ बंश । सुनि पौराणिक कहत भे सुनि औ कपिअवतंश ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

काशीराजकी सुता सुवरणी । ही जनमेजयनृपकी घरणी ॥ तासौ भए दोय सुत ज्ञानी ।
जेठे चन्द्रापीड-सुदानी ॥ सूर्यापीड दुतीय कुमारा । चन्द्रापीड गहे महि भारा ॥ ताके शत सुत भे
अमिरामी । सकल जानमेजय यह नामी ॥ जेठो सात्वकर्ण अरिदरता । सो भो परम भूमिको
भरता ॥ तासुत अंतकर्ण भे राजा । ते तजि राज्य समूह समाजा ॥ गए बसन बन ह्यै सु विरामी ।
पतिनी एक गई संगलानी ॥ चारु मालिनी नामा मारी । रही गुर्विणी पतिव्रतधारी ॥ उत्तरदिशि
अति निर्जन बन मै । भयो पुत्र तेहि ताही क्षण मै ॥ ताहीधर तजि नृप अरु रानी । गए महन
पथ गहे सुजानी ॥ सो सुत परो रह्यो तहँ रोहत । इतनो मै आए बन जोवत ॥ सुवन अविष्टाके
गुण आर । पैपल अरु कौशिक करुणाकर ॥ ते लै सुतहि बासिभै धार । सूखो रुधिर छूटो
नहि जोए ॥ घसि पाथर पै ताहि छुडाए । ब्रह्म भो रुधिरं कठो दुखपाए ॥ बेमक नाम रह्यो काउ
ताके । ते दोहो सो सुतवर भाके ॥ बेमक कीर्ति असुत सम जानी । बहिर त ताहि करी सुखदानी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पाथरपै रगरे तहां भयो अजासम श्याम । ताते तेहि सु कुतारको भो अजपार्श्व सुनाम ॥
तिनक पत्र पाचसौ बढो बंश अति भूरि । ते बिलसै बोहि देशमै बर विभूतिसो पूरि ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

यह सुनि शौनक षडपि विज्ञानो । बूझे पिरि सैतिकसौ बोली । वैसम्पायन मुनिसौ सुनिकी ।
भारत जनमेजय नृप गुणिके ॥ महत सर्पमख पूरण करि कै । किए कहा कहि औ मुद धरिके ॥
सैतिक कहे सर्पमख कोन्हे । तब जनमेजय आनद लीन्हे ॥ अश्वमेध मख करिवो चाहे । सुनि
सु महँतिनि परम उछाहे ॥ रिजु मन्त्रि हि दिए निदेसा । सजो समान अश्व शुभ भेसा ॥ यह अनु
मानि आस तहँ आए । पुत्रि यथोचित नृप बैठाए ॥ कुशल प्रश्न कहि वृद्धि सुखारे । कहे भूमिपति
आनद धारे ॥ मुनि जो किए आपु मनभावम । भारत अति ररुशीय सोहावन ॥ तासु कथा
सुनि कै मन मेरो । होइ न तृप्ति चाहसो घेरो ॥ मुनि हन भारत सुनि अनुमाने । सो तुमसौ

बुभुक्षु-भय माने ॥ राजसूय अनरथको कारण । कीन्हे धर्मराज भय भरण ॥ प्रथमहि राजसूय
अनरथको । कीन्हे सोम सरस व्रतधारो ॥ तार्के अन्त युद्ध जनवासन । भयो तारकामय जन मांशन
किए वरण सो भल अभिरामा । भो तव देवासुर संगामा ॥ नृप हरिचन्द्र किए फिरि आवे । भो
आडोव युद्धता पावे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राजसूय मख जो भयो तव भो प्रलै अघात । ज्ञाता भूत भविष्यको तुम सब विधिसों तात ॥
तुव अनुशासनको न हो लज्जन करता कोइ । प्रभु तुम कत दीन्हे करण राजसूय कतु जोइ ॥

॥ * ॥ जयकरीछन्द ॥ * ॥

यह सुनि कै बोले हरि व्यास । सत्य कहे तुम ज्ञान प्रवास ॥ वैत मोहि बूजे यह बात । विनु
भूमे हम कहेउ तात ॥ तदपि न याते कहे विचारि । छाननार कोउ सकै न टारि ॥ कासरूप
प्रभु निरमे जोन । कीन्हे यतन बरै नहि तौन ॥ करि हो कहा भयको शोचि । अब जो कही
करऊ सो रोचि ॥ वाजिमेध मख चाहौ कीन । हो नहि होइहिहि विघ्न प्रवीन ॥ होइहि विघ्न
कलक महान । ताते मति कीजे मतिमान ॥ पै यह विधि गले विधि लेखि । करि हो शोचि सुखद
अवरोखि ॥ अश्वमेध नै विघ्न अमान । लेखि करि बंजविधि अघवान ॥ सौरी भूपति अकौ संभारि ।
अश्वमेध तौ करौ सुधारि । कहे भूपं सुनिअ सुनिरास । दीजे भात्री विघ्न वतास ॥ भाषे व्यास
विप्रपै कोष । भूप करिहि मखको अवरोध ॥ अश्व आगे सुनु नृपगिरौर । करिहि न वाजिमेध
कोउ शौर ॥ कहे भूप यह गुर परिताप । सब बिनामक दिजको शोष ॥ इनते अश्वमेधको रोष ।
होइहि इहो अयम एहि शोक ॥ पन बन्धित बर खनकी भांति । अग्रणी लखै न सब सुकंति ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह विचारि अतिसै भद्र खज्या भय परधान । ताते फिरि ब्रह्मी ककु सी कहिषी मतिमान ॥
अश्वमेध वरयज्ञके आभृतिको सञ्चार। अब होइहि कै नहि कही फिरि करि सु मुनि विचार ॥
सुनु मुनि कहे नरेश सुनु भूपति शौरिज नाम । होइहि क्रांश्यपगोच दिज कसि युवतें अभिराम ॥
अश्वमेध मख करि हि सो फिरि ग्राहीको वंशराजसूय मख करिहि कोउ सुनिअै नृप अवतण ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

कहे व्याससौ भूप अब भविष्य कहिषी सु मुनि । जो आचरण अनूप गहि हैं कसिके नरे सरख ॥
सुनि मुनि कहे विचारि सुनिषी जग्गेअय नृपति । जोव आचरण भादि नहि हैं कसि पारो नरख ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

हो ह नीति विनुख महिसामी । दुखद प्रजंनके असुप्रयामी ॥ दिज निज धरन करन सो

होने । शीघ्र है इतनेअ मखीने ॥ विप्राचरण शूद्रमुख नहि हैं । शूद्राक्षित ही द्विजजन रहि है ॥
 छोटा जन जी सम्पति पारहि । सोई महत पुरुषकई भारहि ॥ इन्ही जन ही सु बस निष्ठाभिनि ।
 कच मुडाइ होइहैं सन्यासिनि ॥ सिद्ध अच जन विक्रय करि हैं । द्विजगण बेद बेचि मुद भरि हैं ॥
 तियगण योनि बेचि धन सख न । करिहै करि निज पतिको बचन ॥ तिय ठगि पतिहि और सों
 रनि हैं । पति ठगि तिथंहि और सों गनि हैं ॥ केच्छमध्य में द्विजगण इत उत । बसिहैं कलि युग
 में खानद युत ॥ निज निज धर्म कर्म कछ खोई । सब कोउ बलि कर्म रत होई ॥ बुधि बल प्रभा
 होम नर छै हैं । इत्य अज्ञत्य दिवेक न उचै हैं ॥ युवती अधिकी पुरुष थोरे । छै हैं कलि युग में
 मति भोरे ॥ दानी एक न शतसह पाचक । छै हैं यम अखाय कै पाचक ॥ कलि में बृष्ट विषम
 सम होई । स्वल्प शस्य की उत्तपति जोई ॥ मन सों सुखी जीव सब छै हैं । सुख परार्थ सपने नहि
 उचै हैं ॥ जन मोधन को संग्रह त्यागी । अजा पालि हैं पय हित लागी ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दुराचार रत आपु ते सब सैं कहिहैं दोष । सतपथगामी आपुको निज सुख कहि हैं सोष ॥
 करि हैं कुक्षित कर्म अरु कवि है ब्रह्मबिलास । कहिहैं आपुहि परम पटु खानहि मूढ सहास ॥
 इन्ही बस छै हैं पुरुष मातहि पितहि दुरायातिनि दुग्भीला तरणि सब छै हैं कलियुग पाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तहँ प्रतप्त अनुमान को प्रमाण करिह सवधि । बेद उक्तपै कान नहि देहैं नर मन्दमति ॥
 मत माखीक विधान को प्रमाण होइहि अधिका । सुद्र वृत्तिको ठाम करि हैं कलि में नर सकला ॥

॥ * ॥ अथकरीण्ड ॥ * ॥

छै अभय भक्त सब लोग । सदां अद्रन्दीजित इत भोग ॥ याचन वृत्ति विप्र की जीनि करि
 हैं सचिहि आदिक मौनि ॥ परधन पर तियहारक सर्व । छै हैं कलि के मानव सर्व ॥ होइहि
 तकर कै अधिकार । आता करिहि कपठ बेवहार ॥ छै हैं बज्रत शस्य के चोर । चोरी करिहि
 चोरके चोर ॥ पुत्र पिता पै करिहि निंदेय । बहिं सुशाल को रहि है लेय ॥ आपुहि पालक
 आपुहि चोर । इच्छन छै हैं भिक्षुक चोर ॥ भ्रोति रीति को करि अनु रोध । बडिहि परस्पर चरन
 विरोध ॥ एहि विधि लहि कलियुग को अन्त । बडिहि पापको पुत्र अयन्त ॥ ललि बज्र कुक्षित
 कारज छिद्र । आइहि जन सैं पूरि दरिद्र ॥ उत्तपति छै हैं मानव चोर । बडिहि भूमि पै बल चर
 ओर ॥ अज्ञ वसुम तो खानद घोडि । बसि हैं आद बगनि सैं ब्रीडि ॥ खग वृष मान अन्ध फल
 लाय । जीहैं बल्लल धारि अचाय ॥ जे परि रेहैं ग्रामन माह । तिमै कष्ट देहैं नरनाह ॥ राजा

प्रजा अभिनि अधर्म । करि है निशि दिन कुलित कर्म ॥ वै है अति नर नारि हरस । सख बुधि बल
बीरस सरबल ॥ तीस बरिस निति आयुर्दाय । करि है भोग रोम सों छाष ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सब कहु दिन मै जाइ मो कलियुग करि निज भोग । आइहि सतयुग पुण्य मय सुख सहिह सबलोग ॥

थासदेव को बचन ए सुनि जनमेजय भूप । वै विहित कर जोरि इनि बोले बचन अनूप ॥

अैसे पापी जीव इनि परे पाप के धाम । किमि सतयुग सहि ते लहै मोद परम अभिराम ॥

कहे थास सुनिचै नृपति वै नर सबनिधि हीन । आधि आदि बज्रभाति को सहि पोडा वै दीन ॥

वै आरत तब विषय तैं विमुख होत हैं चेति । चाहि चाहि भगवान इनि रठ लावत हित हेति ॥

पापपुञ्ज मिटि जात हैं वै ते सिधरे शुद्ध । पुण्यपुरुष वै जात है रहत न नेक बिबद्ध ॥

तत्र एहि विधि सबयुग प्रवृत्ति होत सुनऊ नृप तौन । अिमि क्रम सों बढि होत हैं पूरख राकारौन ॥

तिथि अरु बार नक्षत्र संम धमत रहत युग वारि । तथा खेऊ नृप जीवको गमना गमन विचारि ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

लहत जीव यह भूप सुख दुख आयु पुण्य धर्म । निजकृत के अनुरूप युग अरु समय प्रमाण ते ॥
सूत पुराणिक पर्भ इमि कहि फिरि ऋषि सों कहे । यह भविष्य कलि धर्म कहि मुनिवास सपद गये ॥
ऋषि आत्मीकहि आदि सब ऋषि निज निज पदनि मे । जनमेजय आह्वारि आए हस्तिन नगरनिधि ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

कहु दिन मै वर फल हित चोपे । अश्वमेध मख नृप आरोपे ॥ तह अर्धर्षु वेद निधि लीन्हे ।

हय हिय प्राण मंत्र पढि दीन्हे ॥ तेहि वपुछमा नृप की रानी । पूजन बर मोद सों रानी ॥ तासु

प्रभा लखि इन्द्र लोभार्द । प्रविश्रि श्रुतकहय अधि हरभार्द ॥ करि वपुछमा रानिहि निज बस ।

कीन्हे सत्वर मैषुन बर्बस ॥ यह सुनि जनमेजय रिसिभार्द । कहे अर्धर्षुहि बिकट बसार्द ॥ मुन

बध किए नाजि को कैसो । जाते भयो उपद्रव अिसो ॥ सुनि बोखो अर्धर्षु विचारी । यह दृषकिषो

शक अपकारी ॥ कहे भूप सुनु दिज मन सार्द । यह तप तप की दुर्बलतार्द ॥ तजि मन देय जाऊ

नति विनरो सुनि तजि देय गये ते सिंगरे ॥ दिए आप तब इन्द्रहि राज्या । सम्यक शक किए यह काजा ॥

अवते नाजि मेध मख कोर्द । करिहि न भाग खोप तुष छोर्द ॥ फिरि नृप अन्तर्द पूरवें आर्द । कहत

भए अति रोष बढार्द ॥ असती वपुछमहि गहि जबसों । मैषुन कीन्हे वासव तबसों ॥ तासु त्याग मै

कीन्हे । अैसे विषद मर्दिनु अत्र को जैसो । नेगि कटे मस मूह तैं सोर्द । तासु हेत कहु कहे न कोर्द ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यह सुनिकै गन्धर्व पति विश्वासु परवीन । कहत भए चिबिपाल सों अिसो बचन अहीन ॥

गृप वपुष्टमा तरुणि हे रमा को अवतारारने शक्र के नहि भयो कहु अघ को संचार ॥
 किए मोनिगत यज्ञ तुम ताते सुरपाति तेखि । किए विप्र एहि भांति एहि सुने बरमै देखि ॥
 दोष रिनिजन को न कहु अरु वपुष्टमा को न । भाबी भाषे व्यास सो भयो दोष कहु तो न ॥
 करऊ त्याग मति रिनिजन को न तरुणि को भूप । क्रोडि भांति सों होति है होनी जानि अनूप ॥
 यह सुनि जनमेजय गुपति ग्रहण किए तजि कोपा तिय अरु विप्रण पूर्ववत करि सुधर्म सों पोष ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह शुभ कथा रसाल सुने सुखै अरु पढहिं जे । ते फल चारि विशाल लहैं लहैं बांछित सकल ॥
 ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वर्षे एहि अध्याय मैं कहे व्यासमुनि जैन । जनमेजय क्षितिपाल सों कलि भविष्य सब तान ॥
 अरु जनमेजय गृप किए अश्वमेध बर यज्ञ । सो वर्णन बिसार सों सुनिए सकल कतज्ञ ॥

शक्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाशीबासि
 गोकुलनाथकवीश्वरात्म जेनगोपीनाथेनविरचिते हरिबन्धदर्पणे भविष्यवर्णनेनाम द्वात्रिंशोऽध्यायः

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

वैसम्प्रायन सों कहे जनमेजय क्षितिपाल । मो मन होत न तृप्त सुनि प्रभुकी कीर्ति विशाल ॥
 नारायण कितने दिवस करैं उदधि मधि सैन । करैं हेत कहि सैन प्रभु करुणासिन्धु सचैन ॥

किमि प्रबुद्धि विरच जनत सो कहिअै समुजाय । जो सुनि होउ सनाथ म सब संगै मिटि जाय ॥
 सुनि वैसम्प्रायन कहे धन्य धन्य तुम भूप ॥ जासु सुमति अैसी भई निज अन्वय अनुरूप ॥

आदि पुराणनि बांछि अरु व्यासदेव सो कर्णि गुणि राख्यो जेहि भांति तिमि सुनौ कहत हा वर्णि ॥
 सो सम्पूर्ण कहि सकै को विधि आदिक सर्थ । निज निज मति सङ्ग सब कहत नारायण गुणपर्व ॥

वैदिक ज्ञानो शक्तुविधि सुर ऋषि मणको नित्य। जो गुण विविध विधान सों लाय चारु चित चिंत्य ॥
 सो भिक्षुणो सो सगुण सो करता कारण कार्यो सो मन बुधि क्षेत्रज्ञ प्रभु न्यामक समै समार्थ ॥

सो सुदेव अधिदेवसों सो सुभूत अधिभूत । सो बक्ता बक्तव्य सो सो नर सुर पुरुहूत ॥
 ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

श्रीक्षितिपाल उदार युग प्रमाण सुनिअै प्रथम । अरु युग को व्यवहार धर्म अधर्म सुकर्म को ॥
 बर सुर बरिस हजार चारि सत्ययुग भोगव्रत । दयो सन्धि शुभचारि चारि चारिगत बरिस के ॥

चारि सहस्र गत आठ बरिस सत्ययुग मैं विशद। पूरण धर्म सुआठ चारु चारि शुचि चरण सा ॥
 तप व्रत अतिरत विप्र राजशक्ति रज क्षात्र सब । कृषी वदश्य अक्षिप्र सबहि शूद्र सेवत सदां ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वरिस हजार तीनि परमाना । जेता युग को भोग विधाना ॥ तीनि तीनि शत सन्धि विचारे । तीनि सहस्र षट् शत अधिकारे ॥ तीनि चरण सौ धर्म विराजै ॥ ऋ द्वै षट् अर्धर्म विधिसाजै ॥ द्वापर दोय हजार बरीशा । भोग भोगवत सुनु अवनीशा ॥ द्वै द्वै शत द्वै सन्धि समेता । दोय हजार चारिशत एता ॥ तद्दां धर्म द्वै पद सौ सोहै । ऋ द्वै पद अर्धर्म जग मोहै ॥ कलियुग सहस्र वर्ष लौ दिखसै । शत शत वर्ष सन्धि द्वै सरसै ॥ एक हजार दोयशत माने । धर्म एक पद ता मधि जाने ॥ ऋ अर्धर्म चौपद बलवाना । चारि बरणमै रमै सुजाना ॥ एहि विधि सहस्र बाद युग चारौ । बीते विधिको दिवस विचारौ ॥ एहि प्रकार विधिको दिन बीते । तब प्रभु नाश जगत को धीते । तब श्रीनारायण प्रभु योगी ॥ ऋ प्रचण्ड रविसरस प्रयोगो ॥ करि आतपित शरीरिण जगको । जीव कर्म बाधु ऋ सबको ॥ ऋ कृशान जारै सब तनको । मही विपिनि सिंगरे गिरि गण को ॥ सिन्धु सरिन सर साध जेते । भस्माशेष हेहि सब तेते ॥ सबते आत्मघ्न परिहरही । सानद लीन आपु नै करही ॥ **

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुरपति लौ अरु कीठ ला इहै व्यवस्था भूप । करि प्रभु ऋ सहस्राक्षघन बरिसै बारि अनूप ॥ जसमय करि ब्रह्माण्ड वर अमल अनूप अनाथ । सैन करै तामधि सुचित प्रभु अद्वैत अबाध ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनऊ नृप हज सुने तवकी कथा एक विचित्र । चिरञ्जीवि मार्कण्डेयमुनि सर्वज्ञ परम पवित्र ॥ तीर्थार्हत प्रभुके उदर मधि भ्रमत भ्रमत उदाराबदन मग सौ आरं बाहेर कंडल भे एकवार ॥ जाद होम अगाध तँह जल पूर पसरो देखि मोहि समिचकि गुणत भे निज हियो धर्मसौ भेला ॥ लोकहैं यह कौन जँह नहि सूर शशि शिरि ग्राम । पूर बारि अपार घऊं दिशि रह्यो अति अभिराम ॥ शोचि इमि शयनीय पुरुषहि ललित भे तेहि काल । सजल जलद समान प्रयाम सु शैल सहस्र विशाल ॥ चले ढिग बिरतान्त बूजुन तहां देवहि हेरि । खास मारुत मे विवस ऋ गए उरमें केरि ॥ लखे दह सौ तहां मुनि गुणि स्वप्न विधि अनुमानि । पूर्ववत फिरि रमण लाग तीर्थ प्रति सुखदानि ॥ बरिस सहस्रन परिजटन करि लखे तँह सब लोकानदी गिरि वन उदधि सातोदीप पुर घऊं ओक ॥ नाग नर सुर अपुर सिंगरे इंद्र विधि शिरमौरि । देखि मुनि फिरि कडे बाहेर पाय शुचि मुसपौरि ॥ लखे तँह जल रासि मधि दर बंच वरवर पत्र । पत्रे करि शैल कोडत बाल अद्भुत तत्र ॥ ताहि लखि मुनि चले पैरत तामु ढिग भयपूरि । मुनिहि लखि सौ बाल बोलो मेधुश्चन बल भूरि ॥ भ्रमत कित हे पुत्र सादर आउ मम ढिग अत्र । बचन यह मुनि क्रोध करि मुनि रहे गुणि छे यत्र ॥ दीर्घ जीविहि मोहि विधि इमि सकौ कबळुं न भाषि कहन तिमि यह कौन बालक हिए आनद राषि ॥

समुद्रि आसैँ सुमुनिको प्रभु कहे फिरि एहिभाँति सुनः सुनि तव जनक है हंम हृषीकेश सुकाँति ॥
अंगिरा तव पिता मागे पुत्र मोहि आराधि । दए तव हम तुन्है करि दीर्घायु अति विधि साधि ॥
परम आत्मा मेरे तुम मोहि परंम प्रिय तपधाम । नतरु को इत मोहि लेखनहार इमि एहि आम ॥
नारायणके बचन सुनि सार्कण्डे तपशैल । सिर धरि पाणि प्रणाम करि सानद बोले बैन ॥

प्रभु मै जान्यो चहत हँ तुअ मायाकी भेदा । कते तुम बट दल्पेँ करौ शिशु है शैल अखेद ॥

सुनि प्रभु बोले ब्रह्म हो नारायण अभिराम । है मै जग उत्पति करे न कारण कारज काम ॥
शशिरवि मारुत अग्नि महि नभ दिशि अह गिरि सर्वासिन्धु सरित सर युग कल्प हँ अतु दिन सब पर्वा ॥
हँ तप ब्रत मल मंत्र सब हँ विधि हरि हर पेश । सो सब हँ जो कह्यु सुनो देखौ सुमुनि शुभेश ॥
सुनि मुनि लहि मुद फेरि ह्यै स्वाग वायु बस जाय । प्रभुके उर मधि पूर्ववत बिहरन लगे सचाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सहस चौकडी चारि युग मिति निशि इमि तहँ बितैँ ईक्षित किए उदारु जग रचना प्रभु चावसो ॥

॥ * ॥ चौपार ॥ * ॥

तव प्रभु हरए दए हलार्द । बारि बिचारि कह्यु सुखदार्द ॥ उरमी भई बारिके हालत । भयो
शब्द तेहि नभे गुण पालत ॥ मारुत भयो प्रगट फिरि तातेँ । मन्यत भयो उदधि वह जातेँ ॥
प्रगटो तहँ मारुतसँ पावक । जारण लग्यो बारिसँ भावक ॥ जरे बारिके सुनु हे आरज । महत
अकाश खुलो इतकारज ॥ खुले गगन प्रभु आनद लीन्हे । बारिज प्रगट नाभिने कीन्हे ॥ सहस
षत्र रविसम भोभार । योचन कइक जासु विसतार ॥ तव जाके मधि परम प्रवीना । रुचिसो
किए विधिहि आसीना ॥ तेहि क्रमल हि भूदेवी जानो । केसरकन रुब परवत मानो ॥
सुमन सगण निरि बिहरैँ जिनमें । ते गुर शैल व्यक्र है तिनमें ॥ मध्यदेश बारिजको जो शुचि ।
सो वर जम्बूद्वीप सरस रुचि ॥ सबे सुरसँ तीरथ सब हँ । जो बिस्थात पूतकर अब हँ ॥ अधपण
नके अन्तर जितने । है पताल आदिक सब तिनमें ॥ हो बारिजके चह्रदिशि बारि । चारि समुद्र
ते चह्रदिशि चारि ॥ सबके अध पत्रावलि जै हँ । जाहि तामसी जित तेते हँ ॥ एहि विधि
मानस सृष्टि सोहावन । बिरछे प्रभु परमानधि पावन ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव प्रभु कह्यु अनुमान करि तामस राजस रूप । मधुकैटभ है असुर वर कीन्हे प्रगट अनूप ॥
तेजहम गिरिसे महत प्रबल सरोष रउद्र । पाणि पाद्यके चलनसँ मन्यन किए समुद्र ॥
फिरि ते उत्पल मै बिहरि प्रभु चतुरास हि देखि । मुद्र करणको उदित ह्यै इमि बूझत भेतेखि ॥

को तुम कासों हो प्रगटं कत बिलसत हो अत्र । गणत न मोकों मोहवस वनि संजुल चौबकु ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मोहमथे ए वैन मुनि मधुकैठम असुरके । सखित राजिवनैन कमलासन इमि कहत भे ॥

॥ * ॥ रोलाकृन्द ॥ * ॥

योग इति विख्यात जगमें परम पुरुष महान १० तासु संभव हो सरुचि इत करत योग विधान ॥
कहत भे तव असुर मोसों परम नहि कोउ अन । लोक मोहित करत हम हो प्रगई युगन महान ॥
कहे विधि जो योग युक्तन तें परे अभिराम । रघत गुणमय सृष्टिस्रष्टा ज्ञान आमदधान ॥ हृषी
केश उदार उत्पलनाभ प्रभु कमनीय । असुर सुर करि समर करि है तुमहिते समनीय ॥ वचन
मुनि मुनि असुर ते भगवानके ढिन जाय । कहं करि अस्तुति हम हि बर दीजिए बरदाय ॥ मरै
जहँ तहँ मरै याको हमै नहि ककु शोच । होऊ आपुनके सुवन बर बौर्यवान अपोच ॥ कहे प्रभु
तुम होऊ गे मम पुत्र बरं बलवान । हिरण्य कशिपोत्पत्तिसमय प्रवृत्ति मैं मतिमान ॥ भांति एहि
बरदान दै फिरि रोस अति बिसतारि । नाशं तिनको किए प्रभु उरुणप धरि मारि ॥ तदनु ब्रह्मा
ब्रह्मविद तेहि कमल पै गहि चाय । किए दुस्तर घोरतप बर बाऊ ऊर्ध उठाय ॥ फिरि स्वयम्भु
अचिन्त्यआत्मा आत्म आत्मा ताहि । दिधा करि युगरूप औरौ गहे चितसों चाहि ॥ मुनि पत
अलि कपिल मुनि ज्वलनार्क सदृश शुभंशं । किए ते भगवान विधिकी सविधि अस्तुति बेश ॥ वचन
तिनके समुद मुनि विधि जपे व्याहृती तीन । तीनिलोक समान जे कृतवान विघह ईन ॥ प्रमटि
कामसों कहे ते चतुरास्यसों यह बात । देऊ शुभद निदेश जो हर्म करहि सो अबदान ॥ कहे
विधि इन ब्रह्मविदसों बूजि करऊं सचैन । कहे व्याहृत मुनिमसों जिनि कहे विधिसों धैन ॥
कहे विधि तुम ब्रह्मको अखरण करऊ सप्रेम । लहे ते ब्रह्मत्व ब्रह्महि सुनिरि सखय सनेम ॥
फेरि विधि निज अर्धतनसो प्रमट कार बर बाल । बिहरि जाए प्रजापतिन प्रभाव अनघ विशाल ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

त्रिपदा जननी वेदकी मायची श्मखानि । कौं सिरजे सिरजे बऊरि बण अकारहि जानि ॥

मायची सम्भव बऊरि सिरजे चारो वेद । फेरि धर्म विश्वेशकौं जाए समुद अखेद ॥

दक्ष मरीची अथि मुनि पुलह पुलक्ति वशिष्ठ । क्रतु गौतम भृगु अक्रिरस प्रजा करण बरदष्ट ॥

निज द्वादश दुहितानका दक्ष योग्यता चाहि । सुत मरीचिके कश्यप हि दीन्हे विधिवत व्याहि ॥
अदिनि दिति दनु मुनि कंधी काला तथा सुजानि । सुरसा क्रोधा मिहिका अरु अनायु सुखदानि ॥

विनता अरु कडू प्रभृति ए द्वादश तपनिष्ठि । कश्यप इनमें करत भे विविधि भांतिकी कृष्टि ॥

फेरि सताइस निज सुता दोन्हे दक्ष सुजान । सुवन अत्रिके चन्द्रमहि करि सुयोग्य अनुमान ॥

निरुमि दए विधि धर्मकहं लक्ष्मी कोर्नि विचारि । साध्या और मरुत्वती विश्वा पांच सुनारि ॥
 निज तनयाधे सौं रचे हे विधिपतिनी जौनी । गजरूप धारत भई कार्यसाधनी तौनी ॥
 विधि ताके अमुरूप ह्यै रमि कोन्हे उतपत्ति । प्रथम एकादश रत्न जे कामदानि अभिषत्ति ॥
 अजैकपात मृगव्याधि अरु अपराजित भगवान् । दहम पिनाकी ईश्वर सेनागो सुखदाम ॥
 अहिर्ब्रह्म कामद सुप्रभु और कपाली जानि । निरिति सर्पज्ञा रष्ट परम रत्न लेऊ अनुमानि ॥
 गज वृषभ औरै सकल अज अमृत अक्षय । एकवंश महिषादि बड प्रगटित भए कनिष्ठ ॥
 प्रभव अवन महिष बलधुव अरु तनूज ईशान । विश्वावसु सु विभूति अरु विज्ञात्मन परधान ॥
 सुरभी अरु विधिसौं भए इतने सह विसतार । अब कहियतु ह्यै धर्मसौं प्रगटे जिते कुमार ॥
 लक्ष्मीसौं अरु धर्मसौं प्रगटे काम अमान । साध्य शैल वृष नाग भे साध्यासौं मतिमान ॥
 धर ध्रुव विश्वावसु निहति क्षम अरु योग जुषाम । सोम वायु ए धर्म शत सुरसासौं सुखदान ॥
 भे विश्वा अरु धर्मसौं विश्वेदेवा सर्व । और धर्मके सुतनके सुनि ए नाम अखर्व ॥
 अभिचक्षु हविजोति अरु विरज सुक सावित्र । विश्वावसु सावृष्टि अरु पन्नग असृत मित्र ॥
 निजुधि जपोन विभावसु आदुनी और चारित्र । परतापन अक्षन्न अरु अरु चिररक्षि पवित्र ॥
 बृहद्भूत अरु बृहन्नत वर इते मरुत गण वेश । धर्म मरुत्वतिसौं प्रगटि सो है सरुचि सुभेश ॥
 दक्ष सुधर्मा सङ्घा और वपुष्मा देव । विश्वावसु अरु विश्वसु अरु सुर्षवान शुभ भेव ॥
 और अनुत्तम हारिम हि अरु हरू तेजस शक्त । विश्वदेव विश्वेशकों विश्व तननि किय व्यक्त ॥
 भे कश्यप अरु अदितिसौं ए द्वादश आदित्य । विष्णु इन्द्र त्वष्टा बरुण भग रवि पूषा नित्य ॥
 मित्र वरद अरु अर्यमा अरु मनु अरु परजन्य । एद्वादश दस आदित्य है सुखर परम अनन्य ॥
 प्रगट भए आदित्यसौं सरस्वती म आम । रूपश्रेष्ठ वपुश्रेष्ठ ए दोज पुत्र अभिराम ॥
 भे दद्रत्य दितिके सुवन दनुके दानव वीर । कालकेय राक्षस असुर कालाके सुत धीर ॥
 आध व्याध ए प्रगट भे अनायुषासौं वार । भए सिंहिकासो प्रगट ग्रह गरिमाके गार ॥
 भई अंपसरा प्रधासो मुनिसौं भे गम्भीर । अरुण मरुड विनताहि सौं कद्रु गिरि अहि सर्व ॥
 गुरुक यक्ष पिशाच गण भे क्रोधासौं भूषाअरु चौपद सिगरे सुनो वरजि गरू शुभ रूपा ॥

॥ * ॥ शोरठा ॥ * ॥

अहि विधि प्रादुरभाव ह्यै वरधित भो लोक सब । तिनि बरणे गहि चाव जिनि द्वैपायगसो सुने ॥
 सुनि वरके ए वैन सुनि जन्मजय नृप कहे । पुनि कहिए तप अैन गुविनि अक्षिक पावनि कथा ॥
 बैसम्पानि सुजान अर्ह सुनि आनद गहत भे । मर्न बस करि मतिमान सुनऊ भूपसो कहत भे ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

ब्रह्मके सम्बन्धसों सम्बन्ध जो इतिहास । सुनऊ सो सद्गद्द है नृप राखि मन मन पास ॥
 ब्रह्म प्रभु अव्यक्त सत है आत्म योनिज रूप । व्यक्त असत अव्यक्त सत है लसत परम अनूप ॥
 दिव्य अवपुष दिव्य वपुवरं भूतपति बिभु ईछि । प्रभुव युग जग कल्पके करि सकल कल्पित शीछि ॥
 अचर परचर अचर चर चित अचर खचर अभिराम । दारुगत सत दहन समकृत कर्म धारण
 काम ॥ सुनऊ भूपति प्रथमसों यह कथा अति रमणीय । जब हि पुरुष पुराण रंघि निधिचीर
 निधि शयनोय ॥ रचे जगमें किए यह अनुमान है गुणवान । भए गुणसों तब हि प्रगटित पञ्चभूत
 महान ॥ आत्म योनिज तदनु है कमलस्थ करि अनुमान । रचे जग पूर्ववत गुणि लखि वेदको करि
 ध्यान ॥ बारिमधि महि घुलन लागी तब हि आरत भाखि । कही प्रभु मोहि उई की जे हिए
 कृष्ण राखि ॥ भूमि को सुनि विनै प्रभु वाराहको वपु धारि । दात पै धरि महि हि कीन्हे ऊर्ध
 स्वयं विचारि ॥ भेदि मधिमैं सहिहि जरथ कठो तेज विशाल । चण्डरखि उदण्ड जिनि मार्त्तण्ड
 प्रचक्षु अवाल ॥ कढत भे तेहि तेज सण्डल मध्यमें शुषि नाम । सोम मण्डल रूप है विधिचौर कृत
 हविधाम ॥ सोमके मुख चाहतें भो कढत स्वाश अखेद । वायु अक्षर मयो जानऊ नृपति सोई वेद ॥
 योगमें वर ज्ञानतें सो भयो सृजत अमंद । लोक काय विराट मूर्ख दिव्यकई मुमहन्द ॥ भूत
 भौतिक भौतकी सब तासु स चद्रतन्य । भूत भव्य अविष्य दृश्य अदृश्य सतमंय गम्य ॥ जीववस
 इन्द्रियनके है मोहि ताहि भूलाय । बिषय प्रिय है कर्म करि करि अमत सुख दुख पाय ॥ ज्ञान
 बखतें बस्य करि इन्द्रियनकऊ कृत योग । चेति तेहि ब्रह्मत्व पावन साधि परम प्रयोग ॥ परमात्म
 हि जीवात्मा परमात्मा सविधान । करता है अज्ञान अरु योगज निरमल ज्ञान ॥ कठो तेज जेहि
 ब्रोध चिति तेहि सु विवरमधि भूप । ईश्वर राखे खरचिसों निर्भि सुनेर अनूप ॥ जेहि सुवरणमें
 मेरु प खसे आपसय जोति । जासु जोति बैलोकमें निजरुचि अमल अमोति ॥ प्रगट किए
 निज आस्यसो प्रभु चतुरास्य हि तत्र । प्राण वायु द्विज इन्द्रकह अरु अधि हि कृत सत्र ॥ ब्रह्म
 लोक सो अंग भो गिरि सुरगणको भौन । एकसाँच अरु एकगत योग्यन ऊचो तौन ॥
 इतनेई ब्रह्मदिशि गुणित है विशतरित विशाल । अरु असंख्य तेहि कहत हैं जे ब्रह्मज्ञ रसाल ॥
 शत शत योजन उच्च हू चण्डिदिशि नै वर शैल । ब्रह्म विचारी कहत हैं गुणि असंख्य मुखे कैल ॥
 सुर सुरपति आदित्य असु सनु मुनि मारुत आम । सहित विषु प्राज्ञत जगत करुणानिधि अभि
 राम ॥ जौन ब्रह्ममे तेज है व्यापित सबमें तहि । ब्रह्म कहत है ब्रह्मविद ज्ञानसिन्धु अवगाहि ॥
 तीनिजाकम प्रगट है प्राण प्रतिष्ठित ब्रह्म । ब्रह्माके दिनको भयो है जवतैं आरम्भ ॥ वेदउक्ति
 ब्रह्मादि अे कर्म सकल सुखदानि । ते हैं गुणि क्रियमान निति परम आत्महित जानि ॥ ब्रह्म

भूत ज्ञात्मानिको विशद बज्रस्य निरेखि । अह सुभाव जन जनन को बज्रविधि को अघरेखि ॥ इन्द्र-
मरुत बरुणादि को शब्दन कर्म अनेक । कहे सर्व पै सर्वमै हैं सर्व ई प्रभु एक ॥ स्थूल सूक्ष्म देहीन
को बुद्धि रूप गुण लेऊ । समरूप दर्शन सदृश ज्ञानी कहैं सनेऊ ॥ सोई विधि भगवान तेहि देवी
सहित विनोदि । विरचि भोगबज्र चरत हैं अनुगण सहित सुनोदि ॥ गङ्गा तासां प्रपठ ऋ करि शिव
को अभिषेक । तौनिसप्त बंज धार ऋ त्रिपुरनि धसी सटेक ॥ नाद किए ते नदी अह गङ्गा बिहरी
स्वर्ग । ऋ बिल्या दे दाना विशद पृसनाको अपवर्ग ॥ प्रभुके मुखतें प्रगट जे चारि बदन सम चारि ।
वेद तदक्षर सिद्धिमें हैं दाना फल चारि ॥ चारि चरण हैं यज्ञ के पूरित तप ऐश्वर्या अविज अह
उद्गाह अह होता अह अश्वर्या ॥ चारि चरण हैं धर्म के ब्रह्मचर्य गृहवास । दुस्तर बाणप्रस्थ अह ऋ
मनस्य संन्यास ॥ वेद बाँचि कोन्हे मनन उपजे ज्ञान अमन्द । निवृत होत हैं कर्म सब पूरत परम
अनन्द ॥ अब त्रप कहियै योगविधि जौन ज्ञानमय यज्ञ । अमल अहिंसा मोक्षपद करहिं जाहि
सर्वज्ञ ॥ उत्तम शक्ति सु पदस्थ करि सिध्यासन सु प्रयोग । उन्नत उरनत शीव रहि दशननि अह्नत
संयोग । वाम पाणितल पै सुधरि शुभ करपुष्ट सु दक्षा । राखि नाभिठिष रहि अचल मूदि ओठ इन
पक्ष ॥ मनहि अबस करि यतन सौ जीव ब्रह्म लै जाय । राखि मूर्ध्नि पै ज्ञानचष सौ निरहैं सुखपाया ॥
प्रणवात्मक पुरुषहि जयै लहि मूमध्य निकेत । सो सु बिम्बतें बिम्ब निव बिम्बु अचिंत्य सचेत ॥
विशद वेद मय यज्ञ यह योग ज्ञान मै रूपा । मोक्षद अबल अनन्य कृत अप्रतिम परम अनूप ॥ भए
ब्रह्म के नेत्रतें पृथ अह यजुर सुवेद । सांम अथर्वण जीभि अरू सिरते भए अखेदा ॥ शोस अथर्वण
वेद हैं शीवनाञ्ज ऋगवेद । इदर्य पार्श्व हैं साम अह यजु कटि चरण सभेद ॥ वैसम्पानि मुनीश
सा मुनिके योग विधान । ब्रूजत भए विचारि इनि जनमेजय मतिमान ॥ मनसौ जासु अलभ्य
विधि औसो दुस्तर योग । मुनिवर ताके लहन को कहियै प्रगट प्रयोग ॥ मुनि मुनि कहे मछोप
सुनु कर मुख बल धन भृत्य । निवन तें नहि बाध सौ सिद्ध होत यह कृत्य ॥ अन्तर्गत मानस अमल
शारीरिक कृतकर्मापूर्व अह को ज्ञान मय सो कारण है परमा । विदित तत्व अह ब्रह्मविद ब्राह्मण
विदुष विनीत । ब्रह्मकर्मांतर नियत व्रत इडमति इंद्रोजीत ॥ अपुनर्भव भावज्ञ तजि और भाव के
कर्म । साधे कर्ततें योग सो जानि युक्तिको मर्म ॥ छुटि इंद्रिणके बन्ध सौ लहे परम पद तौन ।
इंद्रादिक सुरगणनि कौ है दुर्लभ पद जौन ॥ तेज मूर्ध्नि पै राखि अब करत योगविद योग । उन्नत
धूम तह बज्रवरण कहत अतिज्ञ सु लोणा ॥ तहां धूमतें मेघ ऋ वर्षत बारि उदार । प्रवस होत तब
मूर्ध्नि पै मानस अग्नि निहार ॥ परसत हैं सब अगमें सुहसन तासु फुलंग । प्रवस होत तब वायु लहि
अग्नि बारि को संग । अग्नि वायु जल भूमि ए सर्व धातु सम्पन्ना सम सुभाव तें होत हैं वर वीजोत्त

प्रा. ॥ तव भूमधि जो ब्रह्म प्रभु हृष्य विराट् सूरूपाने तहँ विरचत हैं बज्रत हृष्य प्रमूनि नृप॥
 ते सब प्रेरित ब्रह्म सों सुख दुख को ज्ञानारावसि योगी के मूर्ध्नि मधि नृप सुनु करत विचार॥ अथ वेष्टा
 श्वारव्यने मूर्त्ति हृष्य क्षितिपाला तासु स्थूलतन ते निकसि दशदिशि जात अवाञ्छ ॥ ते बज्र भूतहि
 लहत्तह लय लहि कै तचैव । कर्म बन्ध तें छुटत हैं जिमि जाय यचैव ॥ यज्ञादिक शुभ कर्म करि
 पिष्टमार्ग न्हे जाय । पुख भोगकरि पतन न्हे जन्म लेत इमि आय ॥ पदतें गिरि नभ वायु चर तेज
 धूम घन वारि । महिमें मिशि फलहोत हैं कर्मों सोऊ विचारि ॥ फिरि जीर्ण को उदर लहि
 होत सक्रम रस रेत । गर्भवास लहि प्रगटि गुर होत जु लहिकै घेत ॥ न्हे अथक्क सो व्यक्त इमि
 ब्रह्म समातव आप । विद्याविद्या सहित नृप विहरत नित्य अताप ॥ ब्रह्म समातन ईश इमि करि
 युग कटक विहार । लीन आपु मै लेत करि करि सबको संहार ॥ * * * * *

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मुनिवर बैसम्पानि फिरि नृपसों इमि कहत भे । प्रष्टोत्तर अनुमानि परम प्रसंशा योग की ॥
 ब्रह्म यज्ञवर योग करण लगत जब ब्रह्मविद । कहत वेदविद लोग होत विघ्न तव अमग्निने ॥
 सहि सब विघ्न महान जब योगी थिर रहत हैं । तव ऐश्वर्य महान प्राप्त होत ईशे बिना ॥
 प्रथम गगन ऐश्वर्य विशद वायु ऐश्वर्य फिरि । बज्रि तेज ऐश्वर्य अरु रसमै ऐश्वर्य वर ॥
 अरु पार्थिव ऐश्वर्य क्रमते ताकहँ करंत हैं । जगज्जय नृप वर्य सुनऊ प्रथमिने के अगुण ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

परमं नम ऐश्वर्य लहि अरु वायुमें अनुरक्त । स्थूल तन तें निकसि रवि सो नभसि रसहिं अथक्क ॥
 तेजमै ऐश्वर्य लहि रवि अग्नि सदृश विभात । होत रसमै ते बहण पर्यन्त अग्नि सुम तात ॥ पारथिव
 ऐश्वर्य लहि निति लहत दिव्यसुगन्धादिव्य बार्ता सुमत लहि जन दिव्य को सतगन्ध ॥ सिध करिकै
 योग नृप नरहोत ब्रह्म समान । तुह गण ऐश्वर्य सब हट भ्रिन्ति ब्रह्म महान ॥ अन्य धारण धारि
 जगदाधार ब्रह्मा ब्रह्म । परम योगी करत मामस ब्रह्म कर्म अरम्भ ॥ चतुते अमरनि जाए
 नासिका तें सर्व । अक्ष तुम्बर किन्नरादिक गानुबद गर्भवे ॥ ब्रह्म योग विधान सों योग्य योगी
 जानि । रचेन्नग्यथु साममें आवेदवाणी मानि ॥ भाव योग सुभाव सों विधि रचे करि अनुमान ।
 भूत आत्माजिते भवमधि अमतहँ भूत प्राण ॥ रचे पदतें सिंह गज-हृग वृक्ष त्वण सब ज्ञानि । गउहि
 हियतें बाहू तें पक्षीन आमद राति ॥ रचे भूतें अन्निरस अरु भृगुमुनिहि अभिराम । भासतें मुनि
 मारदहि विधि रचे अजद धाम ॥ मूर्ध्नि विधि रचे सनतकुमार तपधर ताडि । सोम को अभिषेक
 करि दिजराज कोन्हे चाहि ॥ लोक अरु अस्थान अरु तवस्थ भांति अनेक । रचे ब्रह्मा सराचि सों
 बज्र रूप सहित विवेक ॥ तव सांख्यसु योग यज्ञ सुभाव वर विज्ञान । लेव अरु लेवज्ञ समभव

निष्कल काल प्रमान ॥ सर्वमै सो रथो सर्वहि सविधि विधि सुखदान । सुनऊ जनमेजय नहीपति
शास्त्रविद गुरज्ञान ॥ योग विधि यह कहे जो करि मुक्त पद जन लेत। कहत अब कृतकर्म कम सों
जान यह यह देत ॥ यज्ञ अरु व्रत दान तप अति उग्र करि मुदओक। स्थूल तन तजि सूक्ष्म तन में
जाय विधिके लोक ॥ कल्पभरि बसि लीन विधिम होत लहि कल्पपांत । कल्प प्रगटित भए पै
फिरि होतहैं ते दांत ॥ दक्ष अवि मरीचि नारद आदि आमद अैन । दक्ष को इतिहास कहियतु
सुनऊ नृपति सत्रै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दक्ष प्रजापति करत भे उतपति प्रजा सधर्म । ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र चारि ए वर्ण ॥
शुद्ध सत्व मै बिप्र अरु सत्वर जो मै काव । सुधर जो मै वैश्य अरु शूद्र तमो मै पाव ॥
पृथग्धर्म ए सर्व भे एक रूप अभिराम । हैं अधिकारी वेद के तीनि वर्ण तपधाम ॥
वेद क्रिया संस्कार के योग्य न शूद्र मलीन । यज्ञकर्म कृतअग्नि जिमि नही धूम दुति होन ॥
भए और सुत दक्ष के बुद्धिमान बलवान । तिन सों बूझे दक्ष इमि सुनऊ सकल मतिमान ॥
जग जननी माया महा देवी ताको भेद । तुम सब जानतहोऊ तौ मोसों कहऊ अखेद ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

ते ज्ञानी करि और दक्ष प्रजापति सों कहे । को मयां के छि ठौर रहै न हम जानै कहु ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

वैसम्पायन सों यह सुनि कै । बोले जनमेजय नृप गुणि कै ॥ सतयुग को यह धर्म सोहावन ।
मुनि मुनि भरो हियो मन आवन ॥ शुभ आचरण कहऊ अब सोई । समीचीन चेता से जोई ॥
यह सुनि कै मुनिवर मुद राखे । प्रष्णोत्तर एहि विधि सों भाखे ॥ योगी दक्ष अर्ध निज तन सों ।
नारो प्रगट किए गुणि मन सों ॥ तासो बिहरि परम मुद लीन्हे । सुता पचास सु उतपति कीन्हे ॥
मदनु दक्ष तेहि तियहि विचारी । तनहुँ मिलै लए व्रतधारी ॥ तब दग्ग तनया दीन्हे धर्महि ।
दए सताइस सोम सुकर्महि ॥ तेरह लहि कश्यप सुत जाए । जेहि प्रकार पीछू कहिआए ॥
विधिवत दक्ष कन्यकन दै कौ ब्रह्म खेव मै वर व्रत लै कै ॥ किए तपश्या संग मुनिगण के । ब्रह्म अज्ञ
कृत जे शुचि मन को ॥ ब्रह्मखेव तोरथपति जानो । अरु ब्रह्माण्ड दुतिय विधि मानो ॥ मुनि गण प्रथ
वायु अमुनीनो । ब्रह्म विचार यज्ञविधि ठानो ॥ क्रिया तीन नाडिन को जे हो यजन तीमि भेदक
ते हे ॥ मंत्र यज्ञ परं व्रत रहत मै रत । जे ते पक्ष सुस्वर धृत पक्ष सत ॥ भवि अर्षिहि शुभ अग्नि
निकाशी । तीनि करै तेहि यज्ञ बिसाशी ॥ द्वै करि और पांच शिखि गाबै ठाव भेद ते नाम बतावै ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिय अर्हिहि मधि वायु सौ सुनिए भूप सुजान । करि ऊर्धित जठराग्नि कहैं थोभी सहित विधाना ॥
 पञ्चवायु अस्थान गत करि तेहि पांच प्रकार । योग यज्ञ साधन करैं दक्ष सहित उपचार ॥
 सोमकलश अरु समिध अरु पांच सबसा गाय । जलभाजन हवि आज्य द्विज तहां मानसिक श्याय ॥
 मंत्र वेद उच्चार तें ब्रह्मलोक सम पभं । योग यज्ञ घर होत भो भूपति सुनें सुधर्म ॥
 योग यज्ञ करि लहत हैं विष्णु ब्रह्म पद बेग ॥ यज्ञ योग तें होत है सुमनस सिद्ध सुरेश ॥
 व्रत यज्ञादिक बासनिक करि कै कर्म सचाय । ब्रह्मरैं सुरपुर पै सातव परमदिव्य तन पाय ॥
 नहिं छूटति तज्जं नृपति यह अहं अविद्या बुद्धि । निज पुर गुरु लघु कर्म को रहति भावना शुद्धि ॥
 बाक्य तत्वमसि आदि सुनि गुणे न जो सौं भूप । तौ लो छुटि रागादि सौ रहै न लहि ध्रुव रूप ॥
 शुचिब्रिद्या बुधि कृत्यविनु लहै उच्च पद जौन । भोगि अविद्या कृत्य फल फेरि पतन तजि तौन ॥
 ब्राह्मणादि त्रय वर्णता लहि फिरिकम सो बधि । अतपद रथ चै सुनत इनि सत गुरु सों असपधि ॥
 इन्द्रिण बसकरि मन सहित आत्मनिष्ठ लहि ज्ञान । योग सिद्ध करि लहत हैं अव्यय पद मतिमान ॥
 यह विधि दुस्तर जानि तेत्तल रदि भौन विचारि । आबिमुक्ति मै बसत भे शुचि आश्रम व्रतधारि ॥
 गृहस्थ सु बाणप्रस्थ अरु ब्रह्मचर्य सन्यास । वेद उक्त विधि ग्रहण करि विधिबत करत प्रयास ॥
 वेद पढे विनु सुनि गुणै गुरु गृहस्थ पद त्यागि । साधन आश्रम तीनि को करै न निश्चित सागि ॥
 वेद पढै नहि बिप्र जो सो भूइवत अधर्म । कर बाधै तासों समग्र नृपति भूइ के कर्म ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इनि कहि बैसन्पानि ज्ञान गेह अरु ब्रह्म विद । स्वाभाविक विधि ठानि इनि जगुमेजय सौं कहे ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

अब सुनिये जगमेजय मन दे । जो सुनि साधन को मन अनदे ॥ शुभ अरु अशुभ भाव इन्द्रिय के ।
 सुर दइत्य बल जाहिर जिनको । सम दम काम क्रोध सुख दार्द । भट दुजदिधि के सखा सहार्द ॥
 लरे उमगि निज निज जय धुनिके । रुको न रोको मति बुधि मुनि के ॥ भई विकल सहि वपु कै
 मर्दित । भए द्रढत्व शैलगण अर्दित ॥ भई मथित सब नाडी सरिता । योग युक्ति तरली की
 चरिता ॥ तामस मधु दइत्यपति जम्बर । रजस दनुजपति सह छटि गम्बर ॥ गिरिवपु के अन्तह
 गम्बरनै । बिशे मोह बन्धन सौं फर नै ॥ आत्मा इन्द्रहि बाधि स्वबस की । बिहरण चहो तेजकर
 चष के ॥ प्रार्थित स्वगुरु बचन वर विधि सौं । सगुण विष्णु स्वरत भे विधि सौं ॥ नव साधन आयुध
 अति छोखे । लने अज्ञावन चितमै रोखे ॥ नाम बाणके अपन यतन सौं । मारी आज्य हरो लहि
 पन सौं ॥ ज्ञान गड कइं चपलित करिके । लाने मर्दन पर बल धरि के ॥ तत्व विचार परज

न्यमरुतसों । दिए उडाय तिन्है बल्युत सों ॥ मून परपञ्चो परदिशि चारी । तेहि गहि निजबस-
किंए बिचारी ॥ पर चारण इन्द्रिण कहँ गहिकै । सञ्जम असि शहर सों लहिकै ॥ शुचि व्रत
काराम्ह मै डारे । सुमति सुबुधि मुनि जयति पुकारे ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ *॥ दोहा ॥ * ॥

प्रभुतामै प्रभुसत्यगुण का सहाय इमि पाय । जीव इन्द्र सबकाय लहि भो चैतन्य सचाय ॥
सतसङ्गत शुभसिद्ध सों सुनत भए बरबैन । बेदतत्व विधि बिहित जो प्रभु कीर्तन गुण अैन ॥
तेज भूत बरब्रह्म अरु देहेन्द्रियसों युक्त । जीव कर्मबश होत नहि इत उत गतिसों मुक्त ॥
प्रले काल मै होतहँ ध्रुवकारण मै लीन । गहत फेरि आरम्भ मै बज्ज बपु लघु अरु पीन ॥
कामद कारण रूप प्रभु सर्व देह मै आप । काय रूप छै करत हँ बज्ज कारयं करि थाप ॥
कल्प शेष बराह छै जिमि महि धारण काजकरत करत तिमि सर्वमै सर्व कार्य सह साज ॥
वसत बेद छै द्विजनमै छत्रिणमे छै युद्ध । दानकर्म विधि वैश्य मै शूद्रनि सेवा शुद्ध ॥
सात अन्न प्रभु रचत भे सुनऊ तासु बेवहार । एक अन्न जो करत हँ भोजन सब संसार ॥
दोय अन्न सुर शक्ति को अर्पण करियतु जौन । चौथो अन्न पितृण के पिण्ड दान को तौन ॥
चारि अन्न ए एक गण हँ पोषक सुख दानि । प्राण वाक मन तीनि ए अन्न सप्त इमि जानि ॥
सूर्यात्मक हँ तीनिजे चन्द्रात्मक हँ चारि । ते प्रकाश अप्रकाश छत क्रम सों लेऊ विचारि ॥
तीनि अन्न कहँसेइ करि कर्मज फलको भोग । अर्चि रादि पथ जाइ फिरि लहत न तन को योग ॥
चारि अन्न सेवन करै धूमादिक पथ जाय । भोगि कर्म फल करत हँ देह बास फिरि आय ॥
अग्निबायु अरु यज्ञ तुम तुम प्रचण्ड रविरूप । निज किरणानि युगान्त मै दाहत जगत अनूप ॥
कर्म लोप जेहि होइ नहि यह बिचारं अनुमानि । यज्ञादिक सब कर्म तुम करत परम हित जानि ॥
नूतन रस के इहि हित बनस्यतिन मै आय । बसत अभावस लहि शशी सो तुम जग सुखदाय ॥
लोलाकर अप्रमेय तुम पुरुष पुराण बिराठ । भूलि रहे हो आपु को निज करतव को ठाठ ॥
यह मुनिकै चैतन्य छै समुजि आपनो रूप । जीव इन्द्र जय लहत भो कहँ कहांलो भूप ॥
योग सिद्ध करि सबिधि फिरि ब्रह्माहि चिन्ति अखेदा अहं ब्रह्म शुभं वचन यह उचरण लगे अभेद ॥
सो न गर्ब तें भूप मणि भए अद्वैत सु ज्ञान । अति क्षति बेद पुराण को इठ अनुमानि प्रमाण ॥
अन्तर गत घृण टाणिका सम मनया व्यवधान । ज्ञान चक्षु सों तेहि परलि ब्रह्माहि लहे सुजान ॥
अहंहीर शास्त्र अचल गुण हँ ताके प्राण । इतर तासु गुर के वचन सुखदायक सुखदान ॥
तेहि मग तेहि गिरि मै प्रविशि तासु पुरातन प्राण । त्रिगुणं अबिद्यात्मकहि हठि देइ निकारि अमान ॥

आगत स्वप्न सुषुप्त नै यथा जीव को भासतेहि विधि प्रभु चित अचित चै करत वपुन नै बापु ॥
 नव बुधि इन्द्रिहि राखि वस त्यागै सकल विभूति । उदासीन बैराग्य मत पावत विद्या पूति ॥
 अभिमानो जे देह के ते नहि जानै नेक । निष्णुभक्त निष्कामं ते पेहैं प्रभुहि सटेक ॥
 शनि यम धर्म पथस्थ नर आराधन सोपान । पै चढि काम सौ साहज हैं प्रभु को पर अस्थान ॥
 विद्या को सांभ्यास करि प्रादुर्भाव सु भङ्ग । इत हँ उतहँ सहज ह प्ररण आनद अङ्ग ॥
 दोन सुधित अर्थी द्विजन देत सबिधि जे दान । सर्वत्रहि शुभ सर्व सुख पावत ते मति मान ॥
 यज्ञादिक शुभ कर्म जे करत बेद श्रुति उक्त । सहजि सुगौरी सिद्धि ते विद्योद्भव कृत मुक्त ॥
 बह कहि बैस्यानि फिरि कहत भए समुभाय । पूर्व किए हे योग जे जिनि दिन जिते सचाय ॥
 शुचि मुर्धास्त्रांस्त्र चै दिन मित बरिस हजार । योग किए प्रभु विष्णु गुणि शोचण सुबिधि उदार ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

नव हजार सुरवर्ष कियेयोग बर चन्द्रमा । जाते लहे सहर्ष ब्राह्मी सिद्धि अनूप अति ॥

॥ * ॥ महिखरीचन्द ॥ * ॥

एकव्रत नव सहस्र बरिस सु योग ब्रह्म प्रभु करे । बर वृषभ रूप विशाल योगो योग युगतन
 अनु करे ॥ तेहि रूप को शुभ चरण को शुचि नाम व्याख्या नृप सुगे । दिशि वाम के जे चरण
 पावत अङ्ग नै तिनकई गुणे ॥ ते चरण हिंसात्मक सकाम अकाम क्रम सौ जानिए । पद चारु
 दक्षिणचोर के ते योग नै शुचि मानिए ॥ ते युग अहिंसात्मक सकाम अकाम अमिलो ताहि हे ।
 हे करे जागे धर्म नै अनुमानि अति मुद सौ न हे ॥ तई योग भावज सखिल पावक बार्ध हिलि
 निखिल फेन चै । भे भिरत मुख तें गोंदसम नहि इवित दृढ तन को न चै ॥ ते पृथक पृथक सजीव
 माधेर बारि सौ फिरि भरत भे । तव अन्य माहत बसि गगन मधि अथि यम चै चरत भे ॥ फिरि
 योग साधे बापु बाघ्याय रूप बहि अति मोद सों । आत्म दर्शी करक बरिस हजार अङ्ग विनोद
 सों ॥ फिरि अग्नि कोन्दे उय तप बज्र जटो चै व्रत धादिक । रहि नौन आत्महि दर्शि बरि
 स हजार बारि विचारि कै ॥ बर बरधि पाको तेज द्वेषी भूत अथ अरु भवसे । दिन भूमि भूषित
 किए शुभलाय कार्य कृत अनुपम असे । फिरि पुष्यमिथि सु जान दस महान व्रत धरि मपत भे ।
 रहि करक बरिस हजार आत्मा निष्ठ ब्रह्माहि अपत भे ॥ धरि जानु सहि पै रनिहि विधि निधि
 निय नियमित तक्त भोजेहि रहि नै प्रतिबिम्बवत बज्र नेत्र चै अङ्ग अङ्ग भे ॥ तप कथ कला सहि
 लक्ष्योर्दशात धनद कुबेर हौं महदमध्य जाके रतन मख के अमल्लो बज्र डेर हैं ॥ बज्रशीर्ष बासु कि
 शीतव्रत गहि उय तप बज्रदिन किए । फिरि शेष तद नहि अधोमुख रहि उय तानस व्रत लिए ।
 नव धरो मुषे भूमि विष काणकूट महा मुने । ते प्रपठ ताते जीव विवेधर अह अहर जितने

सुखदाय ॥ भांति एहि बज्जवार क्रम सों उच्च उच्चस्थान । भोगि तेहि संस्कारते फिरि लहत उत्तम
ज्ञान ॥ योग यज्ञ महान को फिरि कहत साधन चेति । यज्ञ योग विधान को फिरि करन बर जन
हेति ॥ सिद्धि जय बर लछे लरितम दैत सो सहसैन । कहे जेहि विधि पूर्व तेहि विधि जानि योगुण जैन ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि नृप मुनिवर सों कहे मुनि सुबचन मुनि ज्ञान । यज्ञ योग रत जे न ते होत भांति कोहि मुक्त ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह मुनि बैसग्यानि पांडवकुलपतिसों कहे । जनमेजय सुखदानि प्रक्षोत्तर मुनि ए सरुचि ॥
होत जीवतें मुक्त विष्णु भक्त जे धर्म रत । हैं श्रुतिस्मृति नै उक्त नहि एहि बिनु सो योग करि ॥

॥ * ॥ जयकरीकन्द ॥ * ॥

धर्मासोन नीति रत भूप । सीतल प्रजन उचित अनुरूप ॥ तब नहि धर्म शील जे अहि ।
होत धर्म रत तेजशुद्धि ॥ बेणु नृपति कहं शीलत भूम । रहो अधर्म चहँदिशि घूम ॥ अधिन
सहित तब विधि सबिवेक । पृथुकहं किए राज्य अभिषेक ॥ तासों कै शोचित गहि धर्म । करण
लगे सब प्रजा सुकर्म ॥ जेतामै पृथुकहं पति पाय । बिलसत भए प्रजा गहि चाय ॥ लागे करण
सरुचि सों योग । ब्रह्म चिन्तवन नै कृत भोग ॥ पाय कछू दिन नै गति वृद्धि । सुधापिपासा बर्जनि
सिद्धि ॥ इतनेही नै गर्बि समोद । हटके ते भटके चहँ कोद ॥ जे इह करि यह रहे विचार । यह
दिन प्राप्त बसन्त उदार ॥ योग वृत्त बर ब्राह्मण फूल । को इहि गुण परिमल अनुकूल ॥ प्रापति
भयो इतो उत्कर्षि । सिद्धि सुफल लहि कितनो हर्षि ॥ होइहि इमि मति मत अनु सामि । किए
विचार योग गुरजानि ॥ अन्तःकरण बारि निधिताहि । मधिविवेक मन्दर सों चाहि ॥ काठि सोमरस
अमृत सनेमाकोजै निसुदिन पान सप्रेम ॥ यह गुण कै तेइह व्रत धारिसो विधि लागे करण विचारि

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्राणायामादिक करणि सो करि यके उपाय । नहि विवेक मन्दर उठो भे विक्षित अम पाय ॥
ध्यान धारि तब दीन कै कहे ईश्वरहि बन्दि । करो कार्य यह सिद्ध प्रभु कल्याणामर नन्दि ॥

॥ * ॥ रोलाकन्द ॥ * ॥

मानिसो कल्याणतन दै ताहि निर्मल ज्ञान । गिरा व्याहृति सों कराये तासु हिय इनि
भान ॥ सुमनजें इन्दीणके लै तिमै सऊ सहाय । कार्य करिये सिद्ध रहि चैतन्य इदरा शाय ॥ तम
इदय रज दनुज भे तब सऊ लगत अहोभ । करो कार्य सिद्ध गौरव गहि अमृत को शोभ ॥ सुद
सुद ए तौन मन्दर मन समुदमै डारि । किए मर्षन दण्ड दमहि विचार अहि गुण धारि ॥ मये
बज्ज नहि लह तव कै समित करि अनुमान । सत्य बिबुहि पार्थि लहि बैराग्य बल सुखदान ॥ मये

फिश्तव कठे शरोग्यत्व वैद महान । योग विधिके स्थान मधुमति आदि मध्य विधान ॥ वेद
विद्यामूर्ति श्रीभाषि प्रभा शशि अहलादादूर दरशन श्रवण गुण ऐश्वर्य्य ह्य तेहि वाद। दिव्यतौरम
घ्राण पार्थिव भूतसो पार्जात । विशद बाकनि सिद्धि भल अनु पर्म शङ्ख विभात ॥ सर्व ईक्षित कर
पण शक्ति सु धेनु सुनिए भूप । तदनु प्रगटित भयो शुचि कैवल्य अमृत अनूप। तार्दि लहि कै जीव
सुरपति भए मोदित पर्म । कहत हैं इमि बेदविद सब सुनऊ पालक धर्म ॥ योग विधिकी सिद्ध
सुनि फिरी कहत भे चित्तपाल । तमसरजमै यज्ञ कर गति लहत कौन बिशाल ॥ कहे मुनि
ते राज्य भोगत शुचि सुकुलमै जाय । कैसु दिज ह्यै योग करि कहि होत मुक्त सचाय ॥ * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तम रज चोष्ठतभिज अननिकरि रजतमसो मुक्त । तारण गणि प्रभु करत है जिमि बलिकी विधि उक्त ॥
रज तम बोष्ठत दक्षकह दैके सांभव दंड । जिमि कोन्हे प्रभु सत्य मै तिमि हे नृपति उदंड ॥
निज तनकों करि दिधा शिव आधेतनसें चारु । भे नन्दीश्वर उय बपु बरंद विशाल उदार ॥

॥ * ॥ शेरठा ॥ * ॥

नन्दिहि आदिक सर्वगण सै संग बऊभाति को । जब कोन्हे प्रभु सर्वमखबिध्वंसन दक्ष को ॥
तेहिचरण हाहाकार यज्ञ भूमिमै मचत भा । सबको हिय विकरार भूरि भीतिसो रचत भो ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

पात्र सुवां अरु जूपसो हारा । मंडप तारण जिते बनारा ॥ तिन्है तोरि गण दूर बहाए ।
डारि बारि अय अग्नि बुलाए ॥ मोदित हंबष द्रव्य सै खाए । आज्य पान करि इत उत धार ॥
पिये सोम पशुबध करि दोषे । प्रलैकार बऊभाति आरोपे ॥ विभिदित मुमुचि लुलुपि ते
देखी । सकल साज तहँ मख अतितेखी ॥ रूपवान है घनसम गरजे । मखबिध्वंसकारकन तरजे ॥
तव शिव जानु भूमि पै लार्द । ह्यै शरोष कोदंड चढार्द ॥ मारे बाण तासु तनमाहो । तव मख
भागि गयो विधि पंही ॥ मृगारूप अति सो छायो । पांदि पाहि इमि बचन सुनायो ॥ परमारत
बाणो यह सुनि कै । धोरज ताहि दिए विधि गुणि कै ॥ तजऊ शोच अब नहि भय तुमकों ।
सुनऊ यज्ञ तुम अतिप्रिय हमकों ॥ इमि मगरूप धरे अब बिलसै ॥ ह्यै मृगशिर नक्षत्र दुति सरसौ ॥
तारण सहित सोमके सङ्ग सै । धरऊ सदा दिवमधि शतमगमै ॥ विधि पै जात मृगाके चतत ।
शोभित धार गिरो इत उत तें ॥ सीई इन्द्र धनुष है जानो । कामरूप बऊ रङ्ग अगुमानो ॥ मरिने
प्रगटि गण मधि जार्द । लीन होइ निजतन दरगार्द ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ज्ञानाधिष्ठित देव शिव हनत भए जब देखि । धर्म प्रभव शुभ कर्म मख कह इमि अतिगै तेखि ॥

धर्माधिपति विष्णु तब लै करमै धनु वान । युद्ध करणके भे खरे सुनो भूप मतिमान ॥
 लखि शिव नारे विष्णुकहँ बाण महान अमान । विष्णु दहत भे शम्भुकहँ शर सोषक अरिप्रान ॥
 तब शङ्करके कण्ठमे भूपटि लपटि गे विष्णु । नीलकण्ठ तातें भए रुद्र सुनऊ नरजिसु ॥
 तब ते सुने गणबचनं सिद्ध गणनंसें युक्ति । नमो सनातन जाहि भजि होत जीव सब मुक्ति ॥
 लपटो शिवके कण्ठ मै विष्णु हि लखि करि कोपा धनु उठाय मारणं चहे हेहे पौरव गोपा ॥
 इसि लखि नन्दि हि विष्णु तब कीन्हे लभीभूत । रहे मिलित गुरशृंग सम ऊर्ध्वं वाहँ पून ॥
 ज्ञान धर्मके देव फिरि हिलि मिलि भए सप्रेम । यज्ञ भाग वर शम्भुकहँ दीन्हे विष्णु सनेम ॥

॥ * ॥ सोरठां ॥ * ॥

लहे यज्ञ फल दत्त लहि सहाय प्रभु विष्णुको । का न लहे को दत्त सुनि गुणि कीर्ति सहिष्णु ॥
 योग यज्ञमै तब पुष्कर प्रादुरभाव शुच । सुनि गुणि लहि गुर तब लहि है उत्तम पद सरजि ॥
 पुष्कर प्रादुभावं शुभ हवि सुअध्याय वर । सुनि गुणि याको भाष जे बूझै ते धन्य नर ॥
 स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिनाश्रीवन्दीजनकाशीवासि
 गोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषयां भारतान्तर्गते हरिबंसदरपणे पुष्कर प्रादुभाव
 वर्णनो नाम च यस्मिंशोऽध्यायः ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ जनमेजय उवाच ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब मुनि जु बराहको प्रादुभाव महान । कीर्ति कियाकर की करौ कीर्तन सहित विधान ॥
 सुनि बंसम्पायन कहँ सुनिअे नृपति सुजान । पावनकरिणि बराहक्री भावन कथा विधान ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सहस्र चौकडी दिनेके बोते । विधिको दिन प्रमाण सो रीते ॥ तब प्रभु अग्नि वायु रवि ह्यै कै ।
 सर्व लोक कौतुक सम म्बेकै ॥ सान्द्र लीन आपुमै करिकै । वर ब्रह्माण्ड बारिसों भरिकै ॥ निद्रारूप
 रम हि निज तनमै । मेरि शुचत शोबै प्रभु बनमै ॥ अंधि सुर तासु अन्त नहि पावै । तातें तेहि अनन्त
 कहि गावै ॥ निर्गुण परब्रह्म कहि कूजै । प्रादुभाव रूप लखि पूजै ॥ कोटिन युवा सूर्यसम धामी ।
 सहस्र चौकडी युग मिलिस्वामी ॥ श्रांथ जागि करि कौतुक भावना प्रगटित करै अंड वर पावन ॥ तातें
 रचै लोक बज्रविधिके । विधिवत पृथक पृथक बज्र विधिके ॥ अण्ड हिरण्य भेदित कीन्हे । दशधा
 दिशा व्यक्त करि दोन्हे ॥ जिते अंडके सकल सुहावन । ते भे मेघ बारि बरिसावन ॥ ऊर्ध्व भाग
 अंडकौ तातें । कन जल चुत भो भरो प्रभातें ॥ सो भो कनक मयो गिरि अद्भुत । अति उन्नत
 विसतलरि प्रभायुत ॥ अधकन जल भे प्रगठित जेतो ठौर ठौर सब गिरि भे तेते ॥ तिनको भूरि भार सम
 तरणी ॥ भई अमक्त धरण कह धरणी ॥ दुःसह भारते जवन लागी । जल प्रवाह मधि डूबन लागी ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तव प्रभुको अलुति करी ह्यै आरत कर जोरि । सुनि लखि प्रभु करुणाउदधि करिकै कृपा अघोरि ॥
कहे भूमि मति शंकु मौ स्वस्थ, करतहैं तोहि । सो सुनि महि साहस लई कृपा ईशकी जोहि ॥

॥ * ॥ सौरदा ॥ * ॥

इमि कहि ईश विचारि भूंसों कृत भूभृत भू भरण । बपु बराहको धरि शोभित भे जनदुखहारण ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

शत योजन उन्नत अति अतुपम । दश योजन विसंतरित शुभद सम ॥ वेद चरण कृतु दशन सो
हाए । जूप ढाड जरथ हवि छाए ॥ रसना अग्नि रोम कुश जाने । निशि दिन नेत्र अनूप ममाने ॥
श्रुति वेदाङ्ग अभूषण गाये । आज्य नाक सुवतुण्डकहाय ॥ पशु उरुण सबरा उदगाता । होम
लिंग फल बीज सु ज्ञाता ॥ पग अन्तर मन्तर अनुमाने । शोनित सोम गन्ध हवि जाने ॥ वेदी कन्ध
कहे श्रुतिज्ञाता । हृदय दक्षिणा आनददाता ॥ रदकद उपाकर्म्म मनभावन । कुण्ड नाभि
आवर्तक पावन ॥ शुभगति नाना छन्द विख्याता । आसन गुह्यप निषद सो हाता ॥ सद छाया
पतिनी सहचारी । मल्ल बाराह विशद व्रतधारी ॥ न्हे अधमहि सुदात पै धरिकै । धरणि हि फिरि
जरथ गति करिकै ॥ जलपर गुर नौका सम राखे । तव महि भाग करण अभि लाखे ॥ शैल नदी
चऊँदशिमै निरमै । सुर नर मृग पक्षी जेहि । विरमै ॥ चऊँदशि समुद अन्त धरणीके । किए
अगाध अगम अति नोके ॥ मधिमै मेरु खर्नमै कल्पित । कीन्हे अनुपम प्रभा अन्त पित ॥ शैल
कन्धवर चऊँदशि ताके । निरमित कीन्हे पूर प्रभाके ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥ * ॥

उदया चल बर रचत भो तंदनु पूर्वदिशि जाय । शत योजन विसतरित अरु तासु त्रिगुण गुरकाय ॥
शैल सोमनस दुतिय तहँ फिरि बिरचे कमनीय । ऊँचो योजन साठिको मणिमय अतिरमणीय ॥

सावनको संध्या सहस्र सहस्र सृङ्गत तौन । विश्वसृज तापै किये रुचिसो अपनो भौन ॥

शिशिर शैल तहँ फिरि रचे समतुषारके धौल । शिशिर प्रभावा नदी तहँ रचे प्रभाव अतौल ॥
फिरि दक्षिण दिशि जाय प्रभु बपुष्पत गिरि तौन । रचे सरस सिंकांति है एक एक दिशि तौन ॥
भानुमन्त गिरि फिरि रचे अति उन्नत वर फैल । कुञ्जर निभ फिरि रचत भे उन्नत कुञ्जर शैल ॥
अथम शैल फिरि तहँ रचे कादर कन्दर चार । अरु महेन्द्र शैलेन्द्र तहँ बिरचे उच्च उदार ॥
मलय शैल मैनाक अरु पर्वत विन्ध्य महान । सरिता चारु पयोधरा बिरचे सहित विधान ॥
फिरि पश्चिम दिशि जाय प्रभु गिरिवर साठिहजार । कृष्णन मणि गणसों रचित बिरचे प्रभाङ्गपार ॥
कीन्हे तिनमै अष्ट प्रभु गिरि सहस्र जलधार । उच्चो अरु विसतरित यो योजन साठिहजार ॥

इतनोई मिति तह रचे निज रूपोपम बेश । गिरि बराह मणिमै बिसद पावन करण सुभेश ॥
 चक्रवन्त गिरि तह रचे चक्रवन्त अभिराम । शङ्खवन्त गिरि फिरि रचे शङ्ख सदश द्विविधाम ॥
 घृतधारा शुभदा नदा रचि तित पावन रूप । उत्तर दिशि फिरि ज्ञात भे प्रभु बाराह अनूप ॥
 सौम्य नाम गिरि तह रचे सूर्य्य प्रभ एहि भांति । सूर्य्यज्ज बिनु उद्योतति हि जासु कांतिकी पंति ॥
 सु गिरि गन्धमादन रचे अरु मन्दर सहनेह । जम्बु जाम्बुनद मई तह बिचे कृष्णिगेह ॥
 विशिखर गिरि पुष्कर शैल शुभ्र शुभद कैलाश । अरु हिमवान नगेश ए उत्तरदिशि क्षपिरास ॥
 सिंगरे शैल रूपह ए निरमित करि मनमान । मधुधारा सरिता रचे उत्तर दिशि शुभदान ॥
 ॥ * ॥ सेरठा ॥ * ॥

सरित शैल एहि भांति निरमित करि बाराह प्रभु । करत भए मयकान्ति परजोत्पत्तिकी भावना ।

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

भावना को करंत प्रभुके बदनते तेहि जाम । प्रगट भे भू भरण ब्रह्मा परम आनदधान ॥
 प्रगट ह्यै सो पुरुष प्रभु बाराह सो सहनेज्ज । कहे भो मै करज्ज प्रभु तुम जौन आज्ञा देज्ज ॥ विभज
 आत्मा भाधि इमि प्रभु भए अन्तरध्यान । कहे इनसो करीं किमि इमिबिधि अनुमाना भए चिन्तित
 कहे विधिके बदनते ओंकार । भूमि नभ सभ दिशनि पूरो जासु परम पदार ॥ अभ्यन्त तेहि
 बढो हियते बषटकार महान । फेरि प्रगटित भए व्याहत सुनो नृप मतिमाना ॥ चतुर्दिशात्तरा
 जननीवेदकी अभिराम । भई गार्डची प्रगट फिरि सरस दायक काम ॥ भए मनते प्रगट विधि
 पुनि सनक सनकु उदार । अरु सनातन अरु सनन्दन कपिल सनतकुमार ॥ फेरि विधि सुत कि
 ए सु प्रगट मरीचि आदिक आठ । अचि पुलह पुलस्त क्रतु भुगु अङ्गिरस मनु पाठ । भए इनत
 प्रजा प्रगटित परम शुचिहात वंश । वेदविद तपुञ्ज ब्रतभृत धर्मधरण प्रसंग ॥ फेरि विधिके
 चरण दर्शनको अंगुष्ठ ललाम भए ताते दक्ष अरु तिमि बामते ता बांस ॥ भई तिनकी कन्य
 कनसो प्रगट बज्रविधि सृष्टि । कहे सो बज्र बार तेसै जानियो शुचि दृष्टि ॥ कल्प कल्पनि होहि
 प्रगटित पुरुष तेई आय । भेद नाम अस्थानको बस कर्म कृकु ककु पाय ॥ किए फिरि विधि बर्ष
 वर्गनि अधिप करि अभिषेक । कहे सोजिमि आदि मै तिमि जानियो सबिके ॥ सविधि लहि
 अभिषेक विधिसो अरु यथाविधि लोक शोक । सकल विहरण लने नगण सुधारि निज निज
 ओका ॥ एकदिवस पक्षपर्वत दिशाप्राची आय । दैतराज हिरण्यअक्षहिसे कहे समुभाय ॥ इन्द्र
 अदितज भोगवत कत तीनलोक विशाल । एक पुर लहि तेहि कत तुम रहे हित अं कराया ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिरण्याक्ष यह बचन सुनि करि अति दीरघ कोप । तीनलोक बसि लेनको गहत भयो गर घोष ॥
 साजि सैन चतुरङ्गिनी दैअत मई कराल । गरजि इन्द्र पै चलत भो जेरि निसान विशाल ॥

सति बोला ॥ शुचि दाया दिदि दये अभिराम । नव साधन साधन हत धाम ॥ निज पतिगो
व्रत धृत जेसूर । आश्रमधर्मशौल गुण पुर ॥ पुरुष आहंसक जे हट नेम । इनकह दीजो स्वर्ग संप्रेता ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जे नास्तीक अधर्मस्त कामी धूर्त-मल्लीन । तिनहै कीजियो नर्कगत सुनि मस ग्रीख प्रबोम ॥
इम कहिकै बाराह प्रभु भे तह अन्तरध्यान । निज निज पद दिगपात्र बे सुरपुर, सुर मद्दवान ॥
तब सुरपति सर्वांगरिनकहँ करि करि अथा प्रदेश । पल काटि कान्हे अचल सुविण नृपति शुभेग्रह ॥
सम्मतसा सुरगणानिके सत्वर सिन्धु समाय । अति चातुर मैत्राक बिरि रघ्यो सपस सचाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

प्रादुरभाव अमन्द यह ओप्रभु नाराहको । पठि नर परम अमन्द बांछित सहि इतऊ छत ॥
खलि श्रीकाशीराजनहार । आधिरांजयो उदितनारायणस्याज्ञाभिमानिना श्रीवन्दीजनकाशी
सांसिगेकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथेनकविना बिरचिते हरिबंगदर्पणवारहप्रादुर्भाववर्णने
नाम चतुर्त्रिंशोऽध्यायः ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रादुरभाव नृसिंहको अब सुनिअै चितिपाल । पावनकर अभिराम जो दैत्य कुलको काल ॥

॥ * ॥ तोमरछन्द ॥ * ॥

शुभसत्य युगमै आम जु हिरण्य कश्यप नाम । खल दैत्य बर बलभान तप कियो अति अभिराम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बहस इग्यारहँ पांचशत बरिस निरम्बुधि विधान । तपत देखि विधि आद तहँ कह्यो जानु बरदान ॥

॥ * ॥ चौपारहँ ॥ * ॥

है मोदित तेह बर नामा । सब सब जीतनके पन प्राणा ॥ देव असुर अर्थ कहराए । किन्नर
यस पिशाच बरनाए ॥ अरु मनुष्य अषि तप बल भारे । करता जितने रूप सँभारे ॥ जैन सरौ
प्रभु इनके मारे । नहि निशि नहि दिन शब्द प्रहारे ॥ अन्न भेद अरु पर्वत भारी । तिमसा सकै न
मोहि कोउ मारी ॥ सूखे बोरे आयुध जेते । नौपे अर्थ होहि सब तेते ॥ इतने इतर निरायुध
थावे । करै पराक्रम जो बोहि भावै ॥ हो सुनि एवमस्तु कहि जेभा । सुर सेवित ने, स्वर्ग सुनेषा ॥
बर प्रभाव अति छय त्रिरेखी । सुरन कह्यो विधियाँ भयभेली ॥ प्रभु तुम बर दीन्हे जिबि ताको ॥
निर्मित मृत्यु करऊ तिमि ताको ॥ सुनि प्रभु कहा सुने सब कोरै । तप प्रभाव वहि निष्या होरै ॥
तपफल भोगिगर्ब द्वियगारे । सरिहि निम्बु सँ उदर बिहारे ॥ सुनि सुरगण किज निज यह जारै
बसे धीर धरि शोच नवारै ॥ ह्यै हिरण्य कश्यप बल भारी । तोनिलोक जीनेसि पनभारी ॥ सुर

दोन्हे ॥ प्रभु निज वर्षस सों तन नासे । कै रविमन सब दिशा प्रकासे ॥ माया व्यर्थ भए दरनेशा ।
 करत भयो आति कोप कु भेसा ॥ कीन्हे कोप दैतपति जबहीं । मारत सप्त सुभित भे तब हीं ॥ आवह
 निहव प्रवह अर सखह । और परावह परिवह उदसवह ॥ असगुण सकल भए तेहि क्षण ।
 सो खलि शोचि असुरपति सन मैं ॥ निज गुरसों बूजे तेहि ठाँई । कहिअँ सकुन-प्रभाव गोसाँई ॥
 कहे मुक जहँ जैसो होई । नरै तहां को अधिपति-सोई ॥ इनि कहि मुक बिदा कै तासैं । निज
 निकेत गे भरे प्रभासैं ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हिरण्यकशिपु गुणि चरिकलों कोपि गदा लै पांनि । चलन भयो नरसिंह पै गर्व छिए मैं आनि ॥
 बलो गदा लै दपटि जब दैताधिपति सनर्ष । कम्पित भँ तब गिरि मही सरिता सागर सर्व ॥
 बाध्य विश्व आदित्य बंसु सुमन मरुत तँह आय । अन्तरिक्ष रहि कहत भे प्रभु सों आनदहाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

थाको मारणहार महितुम ते कोउ आन प्रभु । करियै अब संहार शीघ्र दुष्ट खल असुर को ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि नृसिंह प्रभु कोपि तरपि कै । काल मेघसन नरजि भरपि कै ॥ नव अमोघ आयुध कि
 फारो । उर हिरण्य कश्यप को फारो । बच्च प्रहारित भिन्न अन्नल सो । परो भूमि पै असुर प्रबल सो ॥
 कढत भई श्रेणित को सरिता । मुद मुद यादवती नणि-चरिता ॥ भगे असुर गण सुरगण हरषे ।
 जैजे डेरि सुमन शुचि बरषे ॥ क्रांर करि अक्षुति सुरबण बोले । सानद पूरिन प्रेम अतोले ॥ प्रभु तुम
 यह नृसिंह बपु धारी । सुरमुनिगण कहँ किए सुखारी ॥ प्रति युग यह अपूर्व बपु ध्यारै । सब मुद
 कहि हैं बाँझित प्यारै ॥ तदनु विरंचिं मोद अति लीन्हे । प्रभु नृसिंह की अक्षुति कीन्हे ॥ सांख्य योग
 तत्वज्ञ सुज्ञानी । वेदोद्भवविद्यायुत ध्यानी ॥ मोदैं तब महिमा कछु जानी । कहि न पार पावैं अनु-
 नामी ॥ तेजस विश्व प्राज्ञ तुरिया शुचि । धर्ममूर्ति तुम ईश यथारूचि ॥ परम देव परसिद्धि प्रसि-
 धि हो । परम मंत्र मन पर पर रिधि हो ॥ परम रहस्य परम बर बानो । तुमहिँ परम गति भव
 पहि ज्ञानो ॥ परम धरन तुम कहँ सुनि गौनि । परम धर्म तत्वज्ञ बतावै ॥ परम तेज तुम तुम जग
 करता । तुम कारण कारण मुद भरता ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तुम पुरुषोत्तम परम प्रभु तुम पर सों परज्ञान । तुम पर सों परतत्व है निरगुणपुरुष पुरान ॥
 इनि अक्षुति करि विधि तय कहि आनद निज लोका । करि प्रणाज मोदित गए सुरगण निजनिजयोका ॥
 उमर तट सीराब्धिके तब नृसिंह प्रभु जाय । तहँ नृसिंह बपु राखि गे निजपद आनद हाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यह अत्युत्तम अपूर्व प्रादुर्भाव वृद्धि को । पढिह जे गुण मूर्धने लहि हैं बांझित परम ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अब नृप वासन को सुनो पावन प्रादुर्भाव । प्रभुता प्रभव प्रभाव अरु कारण कार्य सुभाव ॥
सुत नरोचि को कश्यप तासु तिथा सुखदान । सुता दस की अदिति दिति प्रतिग्रमरत गुहखान ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

मे हादय शुभ सुवन अदितिके । धाता मित्र अथमा मित्तिके ॥ बरह लक्ष्मण भन इन्द्र बलामे । विव
खान पूषा जग जाने ॥ अरु प्रजव्य लषा ए ग्यारहं । और विष्णु भूपति ए बारह ॥ दितिसुत है
हिरण्य कश्यप बरं । हिरण्यसू दूर्जा गुर धनु भर ॥ हैं सुत पांच हिरण्य कश्यपु की । प्रह्लादहि
अदिक सुर रिपु के ॥ प्रह्लादादि के सुवन विरोचन । तासु सुवन बलि निज यय रोचन ॥
राजनीति गुरगुण को आकर । धीर धनुर्धर वीर प्रभा बर ॥ बरबल वीर्य मान अभिमानो ।
मत्स्यनाक गुहगाहक दानी ॥ असो बलिहि विचारि असुरबण । मंचि कहे बलिसो प्रमुदित
मन ॥ करि उपाधि सुरगण मुद छाए । नुव प्रपितामह कहे मरवाए ॥ निरभै तीनि खोक बलि
सरसैं । हम सभसैं देखनकहें मरसैं ॥ ताते लहि अभिवेक विराजै । अतुरङ्गिनि सेनावरसाजै ॥
बडि सुरपति सैं करजु लराई । जोति त्रसौ फिरि तिऊपर भार्द ॥ बन्धु असंख्य बोर हम जेते ।
सुरण जितिबे लायक तेते ॥ तजि संकल्प विकल्पहि मानौ । सादर सरि इन्द्र सैं ठगौ ॥ इमि
कहि असुरवृन्द मुद खीन्हें । बलिहि सविधि अभिवेकित कीन्हें ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बर असुररधिपतित्व को लहि अभिवेक सुभेज । सुरपति हैं इलं सजि चलन को जलि दए निदेश ॥
सुनि निदेश सजि सजि चले जूयप दैत अमान । महा प्रदानी कुम्भ अरु कुम्भकर्ष बलदान ॥
काशनाथ कपिकन्ध अरु चित्तिकंपन जैनाक । उईवक सितकोम अरु विष्णु सुबाळ निष्ठांक ॥
सहसुबाळ व्याघ्राच अरु बज्रनाभ एकाक्ष । मयस्कन्ध मजसोर्ष अरु आसजिन्ह कपिलाक्ष ॥
कलभ सलभ कत नासप धेनुकं बालि अखंड । इन्हें आदि सहसन कखे जूयप वीर सुगर्व ॥
बलिको सुवन सहस्रभुज बलो बाण रणधीर । रथीअति रथी तासु सैन बलो कोटि बर वीर ॥
रथसाह मगहसको खै तापैं आसीन । सर्व मख गहि चकत भो बाहुक मख प्रवीन ॥
रक्षक ताके सुरय के रहे पांच तर वीर । मेवनाद आदिक गणे मखकुमख रणधीर ॥
कश्यपकी तिय पतिव्रता अनापुषा छैं तासु । सुवन बली बल बलत भो सासु रथी सज्ज आसु ॥
सहस्र दिशत सुरम हैं बडि मुनि आयुध सर्व । उमडि बलो ममयोत्तरसमे सरजत भेन सुगर्व ॥

दृष्टसव्याघ्र युत सुरथ प चडि कै नमुष दद्रव्य । साठि हजार रथीन सह चलो गुणे जय नित्य ॥
 चतुर्विंश सहस तहँ सुनुर सहरिच युत नौम । रथ ताप चडि चलत भो मय दद्रव्य हो जोग ॥
 रथी लालदश तासु सँग चले गहे उतकर्ष । मण्णिम जडित कखन घटित सिगरे सुरथ अथर्ष ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

दैत पुलोना वीर सहसं जँट युत सुरथ पै । चडि भो चलत सुधीर साठि हजार रथीन सह ॥
 हयमुख दहत हजार युत रथ पै चडि चलत भो । हयशीर्ष अरिमार सानद सहस रथीन सह ॥
 शतक्रतु कित प्रहलाद सहस दैतसरदार सह । चले गहे अहलाद चडि मणि मै वर सुरथ पै ॥

॥ * ॥ चौफार्द ॥ * ॥

सहस बाजि युत रथ अति भारी । चडि तापै शम्बर धनुधारी ॥ रथी लालवय सह पन करि
 कै । चलो वीररस हा मनु भार कै ॥ बाजि व्याघ्रमुख दश शत तिन सौ । युत रथ जडित सु मणि
 अमग्नि सौ ॥ अनुलाद तापै चडि उगरे । हिरण्यकशिपु को सुत मुण्णगरे ॥ कौटिरथी ताके सँभै
 रुरे । चले अक्षविद्या सौ पूरे ॥ बाजि सहस कौतुकहत पथ पै । तिन सौ जुत मणि न वर रथपै ॥
 चडि बलि को पितु चलो विरोचन । श्रीमन्तम सह आयत जोधन ॥ दैत विरोचन को लघु
 धामा । वीर कुजम्भ वीर्यमदमाता ॥ असुर सहसनि आवृत सोई । रथचडि चलो सगर्वित होई ॥
 रथ चडि चलो वीर असिलोना । सहस रथिन सह सरसु सजोना ॥ एकचक्र दैवत अभिमात्री
 चडि रथपै कहि सगरव बागी ॥ असी हजार रथिन सह चावन । चलो शत्रु दल इन्द मचावन ॥
 सुवन शिष्टिका को अति घेरा । राज शैलसन दोर्घ कठारा ॥ चले सपर्व सुरथ पै चडि कै ।
 मणिमय कवचन सौ तम मडिकै ॥ विप्रचित्त दानव अरिदरता । विदित धनुर्धर शम्बर करता ॥
 रथ बैलोका विजैवरनामा । चडि ताप रविसम अभिरामा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पुष घोष सु बभ्रुकण भृत्य असंख्यम वीर । रथी अतिरथी सह चलो विदित विशद रणधीर ॥
 स सहस महिष रथस्य न्हे चलो रथी ली लाल । शतचल भुज दानव प्रबल केशी अरिमदमाल ॥
 मणि मै रथ पै चडि चलो विशपर्वा बलवान । प्रबल मन्दराण्डल सट्टम दीरघ कठिन अमान ॥
 सुत अनापुषा को प्रबल विचनान अरिजैम । सहस बाजि युत सुरथ प चडि के चलो सचैम ॥
 कनक विन्दु दैवत मवल रथचडि चलो सगर्वा मन्थन परदल जलाधि को मन्दर सट्टम अलर्ष ॥
 नाम हेममासी असुर जूष करता कौल । सुवन सु बलि को बाण भो ताकहँ करत हरील ॥
 रथ चौ सविशतहाथ रुद्र कनकरचित अभिरामारतन अमौलिक सो जडित । विरचि आलषत दामा
 गजमुख असुर सहसं सा बाहित अदभुत रूप । ताप चडि कै चलत भो बलि दहमेन्द्र अनूप ॥

पैदर सुभट असंख्य सौ आहत प्रभा अनन्द । हरीदार इतमान कार बोहत अनित सुहृन्द ॥
 विप्र पुरोहित मंत्रविद पठि खलयन सनेत । आसिर्बचन कहैं तिनहै सुभरण मणिगण देत ॥
 मलिनै बालव्यजन सो बोज्य मान रमणोय । दोलि तासु मेरुस्थ मनु असुमान कमनीय ॥
 शिवि अघसिर अघअश्वतिर कुपथ सताक्ष मतङ्ग । विकट निकुम्भ कलाप ए जूषप दश सउमङ्ग ॥
 रक्त दशदिशि सुरचको गिरिवर सँगमगुर काय । दशदिवाज दिनपाल सन अघपल चपल सचाय ॥
 गज हय ऊँठ रथानि पै बाघ दुन्दुभिहि आदि । बजे असेव्य घनखने जूयनि जूयं प्रमादि ॥
 मणि कञ्चन असि रजत मै सभ रथ प्रभा अनन्त । शस्त्रनि पूरित सर्व सब घण्टा किङ्किणवन्त ॥
 वर रथ जे जूयपनि के ध्वजावन्त ते सर्व । अखल कुशल सिगरे असुर सिगरे सूर सगर्व ॥
 कवच चारु भूषण विविध मणि कञ्चन मै पर्न । सो भूषित सिगरे सुभट करत दुत्तरकर्म ॥
 यहि विधि साजि प्रचण्ड दल गहि घमण्ड दइनेय । नारतण्ड सौ चण्ड न्है चलो रन्ध्र के देख ॥
 ॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

श्राविट मै घनघोर उमडि खेतजिनि हायनभातिनि दल प्रवल अघोर हाय लिए सब दिशिनिदिशि
 जात भूमि पै पूरि बेला तरि जखरासि जिनि । तिमि सेना भटभूरि पूरि गए नभ पै घने ॥
 ॥ * ॥ चौपई ॥ * ॥

यह सुनि शक क्रोधमों राते । चले सङ्गले सुमन विधाने ॥ विद्याधर नयन जघ नन । उमर तुमर
 किन्नर वर पना । बसु आदित्य मरुतगण जेति । सहित समाज चलत भे तेने ॥ बह कुञ्जर बरुण यम
 अगरे । सगण सबर्ग साजिदल डगरे ॥ सिद्ध पितर रात्रि महाने । चले सबर्ग वीररस साने ॥
 चले अश्वनी के सुत दोज । सोम विष्णुत चले सजि सोज ॥ दिग्गज मरुन्द युद्ध के चावन । चले
 चले अहिगण हविष्ठावन ॥ किते बाजि पै चडि छवि छाए । कितने नजारूठ मनभाए ॥ कितने
 चले अहिन पै चडि चडि । कितने चले मृगनि चडि चडि वडि ॥ दृषभारूठ चले सुर कितने । चले
 रचन चडि सुमन अनगिने ॥ निज निज यूथ ध्वजन सौ भूषे । चमूखोज असुरन की दूषे ॥ सिगरे
 तन मै कवच बिहारे । विविधि भांति के आयुध धारे ॥ तैतिसकोटि सुमन अथ भारद । चले स
 कुद्ध सु युद्ध विशारद ॥ मणिमै मंहत सुरच अति नीकी । विसुक्यांको रथो सुभीको ॥ अति
 उन्नत श्रुचि ध्वज सौ शोभित । हेंहि जाहि लखि दैअत शोभित ॥ हरिताम्रन सह शोभित जैसे ।
 हरित पल रजताचल जैसे ॥ अख भेद अनित सौ भारो । मालि के कर सवधि सवारो ॥ *
 ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तिहि रथ चडि सुरसैजं नधि शोभित भए सुरेश । यथा निशा लखि सारदी उदुबलनधि राकोश ॥
 यधि शूद्रसति यमदग्नि नारद मुनि तप धाम । अरु वशिष्टमुनि पढत तह शूभ खखपन लक्ष्मण ॥

विद्युत्तास्र असिवांकी। गये बाण के ठिग रथ हांकी ॥ निरखि बाण कटु बचन उचारे ॥ मंत्रित बाण
अन दिने मारे ॥ तब सावित्र विकल ष्ठै भागे । बैलि ठिग गये बाण मुदपागे ॥ भट बल असुरगदा
गुह गहि कै । ध्वनिध्रुव सुहि थिरहि थिर कहि कै ॥ तब सिंगरे बसु अमगिन बाणम । भवलिहि
हनत भे धनुष बिधानन ॥ तब बलि गदा पाणिमे लै कै । तजि रथ चमल चित्त निरभै कै ॥ मत्त
मतङ्ग सदृश विरंजाने । गदा प्रहारि प्रलै दिन ठाने ॥ सब बसु लरि लरि ध्याकुल ष्ठै कै । भागत
भये भीतसा स्रै कै ॥ थिरि ध्रुव बसु अस्त्रनसैं लरि कै । फिरि भिरि बाजयुद्ध अति करि कै ॥
थिरि न सके तुलबलसैं हारे । भागि शक्रको पास पधारे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

भृगु सुतसा कृतः जयक्रिया बढि सर्गर्ष प्रह्लाद । यमके सनमुख जात भे करत सहस्र प्रवाद ॥
खुड वैर निज पूर्व को बध करि यमको आजु । मोदित बिलसैं असुर गण तजि हिर्यको दुख लाजु ॥
॥ * ॥ रोजाहन्द ॥ * ॥

प्रबल सत्तरि सहस्र शुभट गजस्थ तितक हयस्थ ॥ सहित राज्यौ प्रलयदिनके मेघ सदृश
मरस्थ ॥ शुभट साठिहजार सुरथो चन्द्रदिशि बलवान । लाख भटसह पास मधिम कालनेमि
अमान ॥ बांधि ब्यूह अभेद्य यहि बिधि जेरि बिबिध निसान । लगे यमके सैन प्रति तकि तजत
अनगिन बान ॥ रथो साठिहजार हे प्रह्लादके सुत बीर । अक्षयशैल संपत्तसे ते लरत भे रण
धीर ॥ रक्तलोचन क्रोधि अन्तक गहे दंरिष दण्ड । व्याधि व्याधि उपाधि गणकी सजे सैन प्रचण्ड ॥
लोह दण्ड प्रहारि भटन संहारि ब्यूह बिदारि । भिरत भे प्रह्लादसैं पिलि तासु नाश बिचारि ॥
दण्ड मुद्गर शक्ति पट्टिस जष्टिस मूशल बान । लगड तोमर भिन्दिपाल हि आदि अस्त्र अमान ॥
व्याधिबणपैं असुर झांडे असुर गणपैं व्याधि । किए सङ्गर घोर ते तहैं यौगकी गति बाधि ॥ कटे
अनगित शुभट करि करि इन्द्र युद्ध अपार । वही सरिता रधिरकी अतिशयमं अर अकरार ॥
अरे शुभ समूह तामै परे इत उत जात । भारतमधि मेरु गिरि सम लहरि बससे भात ॥ घोर
सङ्गर होत भो तहैं भूरि भयको दानि । कटे कटिसैं भूमि पटि भई नाडकी घानि ॥ खरे रण
ब्रह्म निधिउ मै प्रह्लाद अर यमराज । मत्त है गजराज सम भिरि क्रीर्त्ति करणी आज ॥ उभि घनसे
उभै बरसे उभैप्र कृत दून्द । कवच छणयुत देहं महिपैं बाण बन बर बून्द ॥ गोरवर प्रह्लादसैं
खरी जावि दसतर जीति । इन्द्रपैं यमराज भे बर भूमिसैं तजि भीति ॥ दीह दुन्दुभि जीतिको
ब्रजावय तब प्रह्लाद । लगे मरदन अव्य बढि सुर सैन लहि अह्लाद ॥ किते भट गिर कटे
कितेने पिले जपटे जात । शृङ्ग भिन्न संपत्त बैरि क शैल सदृश सखात ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनुल्हाद प्रह्लादको अनुज धनुधर वीर । कोठि रथि सह भिरत भे धनपतिसौं सहि तीर ॥
अक्ष सुभट अनगिनित सह धनपति धृत धनुवान । अनुल्हादसो भिरत भे गिरिसौं मेघ समान ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातच्छन्द ॥ * ॥

गिरे वीर वीराणसें रोस बाढे । मृगै गिरिन्दै न से जेउ काढे ॥ तजे शूल ओ तोमरे शक्ति
वानै गदा मृगै निन्दिपालै अमाने ॥ घने चक्र बक्रा युधे बज्र जैसे हने दाकि कै किहांके अनेसे ॥
कठे सूरसाखै इतैह उतैके । गणे वीर बांके तितैह तितैके ॥ बही धारता शोनिताचा नदीकी ।
अधारा कधारा अपारा हदीकी ॥ सुसै बाल अथा बलोग्राह रुडे । पगै पाणि मोनै महाकूर्म
मुंडे ॥ अजा चाप अन्यायुधो वृक्ष शाखै गिरे कूल छै मत्तमांतग साखै ॥ रथै नाथ ओ भौर जे चक्र
टूटे ॥ लसै फेबसै जे बहे वाशछूटे । पदातोह लोम जनी मुत्र ईछे । सबै शस्त्र शास्त्रनि में साधु सीछे ॥
भरै खपरै कुम्भ निर्भीति जीकी । बनी बारि हारी अनी योगिनीकी ॥ खवीसै सुजांबो अजाची
बिहारै । जलासो पक्षि गोध कागै बिहारै ॥ गिरे घाटलै ते खुलै फेरि डूबै । यके परि आलटे प्राण
ऊबै ॥ गिरै वीर मांतगपैतें असूदैं । बडे कूल पैतें अथा धीर कूदैं ॥ कठे मुण्ड कोते बली बार सैरैं ।
मनो भारतीपै घने केतु पैरैं ॥ बही मेद जूदा निकी धारतै में । लसै भारती में धसैं बगजै से ॥ कठी
बांदिनी सै ते बांदिनी जो । कहे नाहि जौ भूप तौ जानि लीजो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

धनपति गुण अदभूत अनघ शस्त्र शस्त्रकी सृष्टि । अनुल्हादके सैनपै करे वाणकी वृष्टि ॥
निज दलब्याकुल निरखि के अनुल्हाल अति तेखा अति उन्नत विसतरित तर लिये अँचि डिग देखि ॥
तासो मारि कुबेरके रथके प्रबल तुरङ्ग । छै मोदित सैनिकन सह कसौ कठिन रणरङ्ग ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

माना विधिके आयुध मो ले । कठिन कराल शैलभिद चोखे । गहि गहि गरजि गरजि बढि बढिकै
बिह बिह कहि सब समु पढि पढि कै ॥ असुरन हने सुमन रिभि रातो असुरण हने सुनि दैयत मद
जाते ॥ दैयत छै अत्तनसो अरदित । किए सुरणयो अरि दल मरदित ॥ शिला धरे काठे भुज
दीखे । अबु युव अहि अरिषण सोखे ॥ लखि सुरपतिसा निज दल रोधित । लै मर शिला दैय
पति जोधित ॥ धनाधीशक रथ पै मारे । तिहि लखि धनपति अनत बिहारे ॥ भेरथ रथो बाधि
धज चूरम । लखि मोदे दैयत सम्पूरन ॥ फिदि लै अन्य शिला अति भारी । अनुल्हाद दैयत
रणचारी ॥ अहि धनदपै करण प्रहारा । गरजत बलो जोधसो भारा ॥ लखि कुबेर हिय अति
रिस भारे । तरपि तांहुं हिय नंदा प्रहारे ॥ सहि सो गदा कौपि दैतेशा । कीन्हैसि शिला प्रहार

कु भेषा ॥ तातें धनपति मोहित व्हे कै । महि प गिरे धावचित ज्यैकै ॥ तहँ धनेश कहँ मुरखित
देली । सिगरे यत्त धीर अति तेखी ॥ दैतन मारिं दूरि करि दीन्है । धनाधीशकर रक्षण कीन्है ॥
एक मुहूर्त मुरखित रहि कै । चेति धनेश उठे मुद लहि कै ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

गदा पाणि अति क्रोध करि गरजि दैतदल और । चले तरपि जनाधिपति तेज पुञ्जमै धोर ॥
अनुल्हादके करनिं दुसतर शिला प्रहार । अर्थ निरेखि अबध्य गुणि भगे दैत विकरार ॥

॥ * ॥ गुरुतोमरछन्द ॥ * ॥

तव भजत निज दल देखि कै । दैतेश अतिसै तेखि कै ॥ बर बचन संगर बटेरिकै । करि अभैय
तिन कहँ फोरि कै ॥ बज्र जूथ जूथपसैं भिरो । बढि आइ सुरदल सा भिरो ॥ बर अत्त बज्र
बज्र भातिकै । असि हेममै मै कान्ति के ॥ तहँ चलत भो दुज्र औरसैं । नभ पूरि गौ रव घोरसा ॥
भट कटे बज्र दुज्रोरके । दउ प्रवण बीर अथोरके ॥ तकि दैतपति धनुबाण सैं । भो भिरत धनद
अमान सा ॥ तहँ युद्ध कठिन कराल भो । ब्रह्माण्ड सिगरे लाल भो ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनुल्हादके बाण सा व्हे व्याकुल अलकेश । गदापाणि मै लै गरजि सनमुख चले शुभेश ॥
गदापाणि आवत निरिख धनु तजि शिला उठाय । चलो गरजि वैश्रवण पै अनुल्हाद गुरकाय ॥

॥ * ॥ सौरठां ॥ * ॥

धनाधीश भय भूरि शिलापाणि असुरहि निरखि सहित यत्त भट भूरि भे सुरपति पै समरं तजि ॥
॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गुणि प्रचेत दानव बल भारो । गुर मृगेन्द्र सम रण वन चारो ॥ उलका सहस सहस सम भारा ।
कालंदण्ड सम परिघ अपारा ॥ लीन्है प्रवर प्रवल जगजेना । भिरो बरुणसैं बढि सह सेना ॥
तासु प्रभाव सुजान निहारे । भे सिगरे सुर सु मुनि उरारे ॥ घन सम दनुज घोर धुमि करिकै । भूरि
भीत सुरदल मै भरिकै ॥ परिघ अमोघ बरुणके दलप । हने इन्द्र पवि यथा अचल पै ॥ मरे लाख
भट तासु प्रहारे । फिरि सैं परिघ बरुण पै मारे ॥ लागि परिघ आपवके तनमै । चूरचूर व्हे
उठो गणमै ॥ दश दिशि उडे चूर बज्र जेवै । लसे अमित उलका सम तेवै ॥ धीर बरुण तव अति
रिषि कीन्है । निज शुभठन कह शासन दीन्है ॥ बढि दानव दल मरदंड भार्द । सहज जीति यश
विसद बडार्द ॥ सुनि सांभय बीर रस पागे । दीह दनुज दल मर्दण लागे ॥ मज्ज भूर्निमत सिगरे
सागर । सिगरे माग युद्धविद नागर ॥ और प्रवल बज्र सुभट घनेरे । लागे कारण युद्ध घज्र फेरे ॥
विप्रचित्ति अरु बरुण अभय के । अतुंग बीर बर अरथी अयके ॥ लागे बज्र विधि अल दलावन ।
मार मारु धरु धरु कहि धावन ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्र चिन्ति अरु बरुण भिरि कीन्हे युद्ध प्रकर्ष । दोऊ धीर धुरी न भट धनुधर गिने अधर्ष ॥
लरि नागन त भे बिकल सिंगरे दनुज अमान । किते चले भजि समर तजि किते गिरे तजि प्रान ॥

॥ * ॥ तोटकहन्द ॥ * ॥

साखि दानव राज सरोष भयो । गरुडाक्ष तजे शुभ-मंत्र सद्यो ॥ तिन बाणन ते भय आकुल है । अहि
जूथ दुरे अति आकुल है ॥ तजि आय प्रज्वाल मये बिसिलै । बरषि रखि उदंडनि सौ ससिलै ॥
दनुजाधिप को दख भीतित कै । मुमुदे सहशासन रीतितकै ॥ भट आयव के तजि बाण घने ।
वनुजाधिप के बज बोरे हने ॥ दनुजेय महा रिसिसौ सरस्यो । अरु आपव के तन पै बरस्यो ॥ बज
बारनि बाणन काटि दिए । जितने धनु आपव खानि लिए ॥ बज बार जलाधिप चाथ गहे । पर
मारण को नहि दाव लंहे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब आकुल है बरुण ते सदल इन्द्रके पास । अरे दुन्दुभी जीति के दानवहन्द महास ॥
देखि पराजय सुान को अग्रि जोष सौ पूरि । उग्र प्रभाव किए प्रगट दुस्सह बर्षस भूरि ॥

॥ * ॥ अयकरोहन्द ॥ * ॥

वायुचक्र लोछित ह्य घुक्त । धूमकेतु रथ परम प्रयुक्त ॥ अडितापै है कठिन कराल । पूरे दैअत
दलनै ज्वाला ॥ भए कोटिभट सामा सेष । कोटिन भए अधजरे भेष ॥ सुहित सखा को सतगुण
पास । माहत प्रबल चलो तेहि काल ॥ प्रलै परो दैअतदल मध्य । भरो दइत जे प्रबल अवध्य ॥
प्रह्लादादिक जे बर बोरे । धिर न रहे कोऊ धरि धीरे ॥ तब मय अरु सम्वर मतिमान । माया
बो दैअत बलधान ॥ बारुण अरु पांजैव्य महान । माया प्रगटित किए अमान ॥ दशदिशि पूरि
बारि को धार । कीन्हे समित ज्वाला विलार ॥ है निशङ्क फिरि दइत सकुइ । लागे करन
सुरण सो युद्ध ॥ फिरि दैतन कहँ प्रमुदित देखि । सुर गुरु निज मन नै अवरैखि ॥ किए अग्नि को
अस्तुतिबेस । भए प्रबल फिरि अग्नि सुभेस ॥ फिरि अधिहि बर्षत साखि दैतातजि साहस सिंगरे
अमनैत ॥ बलिके पास जाइ भट भूरि । चाहि चाहि ठेरे भयपूरि ॥ तब बलि सौ प्रह्लाद सुजान ।
कहत भए इमि करि अगुमान ॥ सुम बिधि सौ लंहे बर मनमान । है त्रैलोक्य अयन गुणमान ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ज्वाल ज्वालत डरि असुर लीन्हे तुष अमलमवाशोघ इन्द्रसौ लेऊ जय अब मति करऊ बिलम्ब ॥
सुनि सुबचन प्रह्लाद के बलि दइतन्द्र सकुइ । चलो इन्द्र प गुणि करन दुस्सह दुस्तर युद्ध ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सर्व प्रजापति सर्व ऋषि सर्व नाग तर्ह आय । करि प्रणाम अलुति करे भरे मोद सा क्षाय ॥
कहे पितामह आइतहें कश्यप सा लहि मोद । भए पुत्र तव त्रिष्णु प्रभु दायक परमविनोद ॥

॥ * ॥ सोरदा ॥ * ॥

दरशि नौमि सुख पाय भए पितामह निज अयन । सुरगण सों सह प्राय सानु कूलुं नै प्रभु कहे ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

सुनो सुरगण सहित सुरपति कहऊ जो निज अर्थ । करैं सो हम शीघ्र करि तव सुवन को बख
व्यर्थ ॥ कहे सो सुनि सुमन सुरपति सुनऊ प्रभु मम वैना ॥ पाय विधि सों विग्रह बर बलि दैतपति
बल अैन ॥ जीनि भोगत नीति जत चैलौक्य नै निर भीत । देह सों फिरि हमहि करि तेहि सत्वकी
सों रीत ॥ वाजिमेध महानमल सों करत हैं एकिकाल । भए बिनु तेहि सिद्ध मम हित सिद्ध
करि अै हाल ॥ इन्द्र के ए वचन सुनि प्रभु विष्णु वावन रूप । कहे संक्षिप्त करि अविस्मित वचन
सुखद अनूप ॥ मोहि ताके यज्ञमह लौं चलै संगै लै जीव । जाइ तहें हम करव जो करतव्य श्रेष्ठ
अतीव ॥ वचन यह सुनि प्रभु हि लै तहें भए जीव सुजान । करत हों जहें यज्ञ बैठो दइतपति
मतिमान ॥ मंजु मंजी धरे अरु उपवीत अति रमणीय । अए दक्षिण पाणि में शुचि लकट बर
कबनीय ॥ वाम करमें तत्र पूर्ण नक्षत्रपतिहि उदाह । रक्षि अहि मनु लए बारिज बाल
रवि पैं चारू ॥ रूप अनुपम विग्रह वामन ब्रह्मचर्य्य शुभेश । जाय निरखत भए दक्षिण बलि
हि सुनऊ नरेय ॥ शुक्र आदिक ऋषि सभासद गणनि सह उपविष्ट । करत उत्तम यज्ञ मङ्गल
करन हरन अनिष्ट ॥ जाय तहें प्रभु यज्ञ बरखन व्याज बलिहि प्रसंगि पाडे नूतन यज्ञ विधि बेदोक्त
पर विधि दशि ॥ शुक्र आदिक ऋषि बिलक्षण यदु विषक्षण पर्य । मौन नै तकि रहे सुनि सो सत्य
अद्भुत कर्म ॥ उपाध्यायन ललि निरुत्तर कहत भो इइतेय । आपुके सुत कौनको हो प्रण्ट भे
कोहि देय ॥ इइ सदृश अवृद्ध वय सु प्रवृद्ध बुद्धि अनन्य । तुम्हहि सुतलहि भयो को सुर पिब अहि
ऋषि धन्य ॥ तुमहि देखि अपूर्व गुणि मैं भयो परम प्रसन्न कहो तुम सो देउ जाहित भए अक्षप्रसन्न ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अह सुनि वामन प्रभु कहे सुनु हे बलि सरबज्ञ । मांथो साढे तीनि पन अहि मम गुरु छत यज्ञ ॥
सो मानन हा पास तव आर्यो सहित समेऊ । देन कहे तुम आपु तो सो सागत हौं देऊ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

अह सुनि बलि दैवेश कहे विप्र चूकत कहा । जैहो कितनो देय निजपन सांढे तीनि सों ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

राज्य हेम मणि हय गज मागौ । जेह लै लीहि बिभूति अनुरागौ ॥ सुनि बोले वामन सुनु
राजा । त्विहि चाहत सकल समाजा ॥ हम द्विज निति तप ब्रत अभिलाषीं । राज समाज
मुच्छ गुणि नापै ॥ इतनो-नौ' गुरु के हित मागै । अधिक-मागि नहि भृतव्रत त्यागै ॥ है जिनके
संतोष-पदारथा, ते नहि स्वाहत हैं अन्वारथ ॥ यहं सुनि गुणि बलि सहित सनेह ॥ साढे तीनि पग
सहि देखे ॥ तब तथास्तु कहि बलि बैठाए । रहि सुदर्भ भृङ्गार उठाए ॥ कहे शुक्र सुनु हे बलि
ज्ञानी-महि मति देखे कहे मम मानी ॥ इन्है देखि तुम आनद लोन्हे । पर विचार करि इन्है न
खोन्हे ॥ मायाह्व कौतुकौ हरि है । बँचि बिभूति सर्व तव हरि है ॥ प्रभु भगवान इन्द्र हित कारण
आए करि वामन वपु धारण ॥ बलि ए वचन शुक्र सौ सुनि कै । चुप रहि घरोशक लौ गुणि कै ॥
ऐसो पात्र मिलिहि को दूजा । देव दान करि जाकर पूजा ॥ कहि विचारि फिरि देन विचारे ।
खलि तब फिरि इमि शुक्र पुकारे ॥ बलि यह महि मति दे मति देतू । मम-सुबचन निज हित
गुणि लेतू ॥ सुनि बलि कहे कहे मति ऐसो । धर्म रहे हित मए अनैसो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

बोले तब प्रह्लाद मति देखे भूमि देतेश । तेई वामन रूप धरि आए फेरि सुभेश ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

है नृसिंह चलि आय बधि हिरन्यकश्यपहि जोकिए सुचित सुखदाय्य सहित सकल सुर सुरपतिहि ॥

॥ * ॥ ते-मरहन्द ॥ * ॥

सुनि कहे बलि यह बैन । इमि कहन लायक है न ॥ असपात्र परम अनन्य । नहि लह्यो कोज
अन्य ॥ तेहि आपु दोबो भाषिबहि देखि किमि ब्रत नाषि ॥ कहि वचन पासन कर्मा है परम उत्तम
धर्म ॥ कहि वचन मकरत जैम । है उग्र पातक तैम ॥ गुर पाप लोबो दान । यह कहत सब मति
दान ॥ जे दान रोकत देत । ते पाप पुञ्ज निकेत ॥ बर पात्र भाग्यन पाय । महिदेव औसि सचाय ॥
सहि पात्र उत्तम देव । है कौचुदै मणि लेव ॥ इमि भाषि दैत उदार । लै कमक नै भृङ्गार ॥ जह
हारि करि संकल्प । महि दए अल्प अल्प ॥ कर विजय कर ए पसार । प्रभु लए जल कुश
धारि ॥ भे मुदित बलि दै ताहि ॥ जिमि दिपत अग्निहि चाहि ॥ शुभ दीप-बारि देखाय । जम
होत है युत पाया ॥ तब भए वरधित सिंघु । प्रभु विश्व सृजन सहिसु ॥ बठि नाषि लै सब लोक ॥ भे क
रत सुरण अशोक ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

प्रह्लादादिक सुभट बज रोके पद तेहि ठौर । हति कोठिन भठलए प्रभु नाषि लोक करि गौर ॥

जीति दए प्रभु इन्द्रकहँ तीनि लोक अभिराम । सुतल नाम पाताल मधि बलि का दीन्हे धाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

नागफौससौ बाधि बलि सो बोलै बिष्णु प्रभु । शक्रहि सदां चराधि सुख लहि है बसि सुतल मधि ।

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तब बलि कहँ जोरि युगपाणी । मोहि असन कंकु दीजै ज्ञानी ॥ सुनि प्रभु कहे सुनो बलि भोज ।
करिहि आइ बिनु श्रीची कोज ॥ बिनु रिबिज के आऊति जेते । अन्त दक्षिणा बिनु मख तते ॥
दान बिना अज्ञा को जोई । तामु पुण्यफल तुब हित होई ॥ यह सुनि कै अभुसौ बलि राजा । गए
सुतल मधि सहित समाजा ॥ प्रभु सुरगण कहँ शासन दीन्हे । यथा प्रदेश बसौ मुद जीन्हे ॥ लहि
शासन सुर शुभदिन बर मै । बसे पूर्ववत निज निज घर मै ॥ बसे पाकशासन निज पद पै । भयो
जगत रत निज निज हृद पै ॥ सिगरे लोक मोद सौराते । गे हीरधि मधि बिष्णु सोहाते ॥ कंबला अंतर
आदिक ब्याला । सकल सप्तशिर कठिन कराला ॥ पीडित भे बलि तिन सौ बरधे । तब आगत न्हे
प्रभुहि अराधे ॥ ताही लण तहँ नारद जाई । बलि सौ कहत भए समुजाई ॥ बन्धन मोक्ष उपाय
उंदारा । कहँ करौ सो करि सु बिचारा ॥ अस्तव श्रीपति को मन भावन । पढै ताहि गुण शोक
नसावन ॥ बन्धन मोक्ष नाम भव हरता । मन बांछित सुख सम्पात भरता ॥ इमि कहि मुनि
अस्तोत्र पढाए । ताहि पाठ करि बलि सुख पाए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जासु नाम लै होत जन भव बन्धन सौ मुक्त । पठि ताको अस्तोत्र बलि किमि न होहिँ मुदयुक्त ॥
संज्ञः आ नरोत्तमन्तपतये अक्षयाय महात्मने जलेशयाय देवाय पद्मनाभाय विष्णवे ॥ सप्तसूर्यबपुः
कृत्वा त्रीन् लोकाक्रान्तवानसि । भगवान् कालकालस्वन्तेन सत्येन मोक्षय ॥ नष्टचन्द्रार्कनभसौं क्षीण
यज्ञतपःक्रिये । पुनश्चिन्तयसे लोकांस्तेन सत्येन मोक्षय ॥ ब्रह्मरुद्रेन्द्रवस्त्राग्निं सरिद्भुजगर्भताः
त्वस्थ्यादृष्टाद्विजेन्द्रेण तेन सत्येन मोक्षय ॥ मार्कण्डेयः पुराकल्पे प्रविश्य जठरन्तव । चराचरगतन्दृष्ट
नोन सत्येन मोक्षय ॥ एकोविदारसहायस्त्वं योगी योगमुपागतः । पुनश्चैलोक्यमुत्सृज्य तेन सत्येन
मोक्षय ॥ जलप्रथ्यामुपासीनो योगनिद्रामुपागतः । लोकांश्चिन्तयसे भूयस्तेन सत्येन मोक्षय ॥
बाराहं रूपमाश्रित्य वेदयज्ञपुरस्कर्त ॥ धराजलोद्धृता येन तेन सत्येन मोक्षय । उद्धृत्य दंष्ट्रया यज्ञां
स्त्रीन् पिण्डान्कृतवानसि । त्वम्पितृणांमपि हरेत्तेन सत्येन मोक्षय ॥ प्रदुद्रुवः सुरास्त्रवे हिरण्याक्षभया
दिता परित्राता त्वया देव तेन सत्येन मोक्षय ॥ दीर्घवक्त्रेण रूपेण हिरण्याक्षस्य संयुगे । शिरोजहार
चक्रेण तेन सत्येन मोक्षय ॥ भयमूर्ध्नि स्थि मत्सिष्को हिरण्यकशिपुः पुरा । ऊँकारेण हतोदैत्यस्तेन
सत्येन मोक्षय ॥ दानवाभ्यां हता वेदाब्रह्मणः पश्यतः पुरा । परित्राता त्वया देव तेन सत्येन मोक्षय ॥

गोदान बन्दि द्विजगण के । चारु चरण शुभ दायक जन के ॥ जाद सभाभट्ट शोभन घर पै ॥ बैठे
सुखद सिंहासन भर पै ॥ तहँ यादवमण कहँ बलै बाए । उग्रसेन आदिक सब आए ॥ तिमै सों
बोले बचन सो हाते । सुबजु सब यादव मुद राते ॥ हम गुणि कछु कौरज मन माहीं । आजु प्रभु
पै सादर जाहों ॥ ताते तुम सों कहँ विचारो । सो करियो तुम सब धनुषारो ॥ * * * * *

॥ * ॥ देहां ॥ * ॥

जरासन्ध को युद्ध लखि लखि रुकुमिनि को ब्याह । सिंगरे नृपगण हैं तजे युद्धजीति को चाह ॥
है मरकासुर को सखा पौड्रभूप बलवान । समय परेखत रहत सो अमरव भंदे अकन ॥
हमैं बिना लखि नगर सो अहैं औसि निग्रह १ जीति जाद है तौ हमैं न्ये हे बडो कलक ॥
घाते रहियो सजग सब निसुदिन रहि संग्रह । राखेऊ पुर प्राकार के तीनि द्वार निनि बह ॥
एक दिशा को द्वारते सदांगतामत होय । धसनन पावै नगरमै विनु जानो जन कोय ॥
आवै सो निज भेद कहि लहै मुद्रिका अह ॥ तब प्रविश्यन पावै कठम ताहीं भाति निग्रह ॥
द्वार पाल जूथप रहै द्वारनि धोर अघोर । चातुर चार चलांक ते रहैं कैलि बसु खोर ॥
पुर गजि कोई बननि मै मति मृगया को जया ॥ सब दिन सब छिन सब रहै गढे शूल समुदाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

इमि कहि करुण औन सायुकि सों फिरि इमि कहे सायुकि गुणिमम वेन पुर दत्तण तुम कीजियो ॥
मिथ्ये इण को बोर है पड्ड वर अखल त्रिद । पुर पाहेऊ रण धोर तजि निद्रा चैतन्य रहि ॥
राम आदि बलवान यादवगण सों भागि इमि । लखि मंत्रीमतिमानजधे सों इमि प्रभु कहे ॥

॥ * ॥ जयकरीइन्द ॥ * ॥

अधे तुमै मधि मतिमान । निनि पुर पाहेऊ सहित विधान ॥ जातैं होद न हसी इमारि ।
तिमिपुर पाहेऊ नीति निहारि ॥ सुनि बोले अधे सुख पाय । तुम सर्वद सर्वज्ञ सुभाय ॥ साम दाम
अह दण्ड बिभेद अरि सों ए करतथ अखेद ॥ न्यून देखि कै कीजे दण्डादीजे दाम जानिअहपण्ड ॥
समसों करि कै साम उपाय । अचित कीजियै समया पाय ॥ जहां न खाने इममै एक । तहां कीजि
अभेद विवेक ॥ करै नीति युत कार्य विचारि । हो सा सहे न कबहूँ हारि ॥ प्रभु की कृपा सर्व
विधि होत । इन करिवे मै करब न ओत ॥ जाऊ त्वांगि सन्देह अरिग्न । इहां न होईहि नेको
बिग्न ॥ आपर राउरि या विधि प्रीति । कबऊन आइहि ता ठिबै दैति ॥ ब्रह सुनि ताहीरण
अदुराय ॥ करि कै बिदा यदुन ग्रह पाय ॥ सुमिरण किए नरड को तब । आए नरड कण्ठ
हेषण ॥ गहरो पर प्रभुहो आसोन । अलि उन्तर दिशि पुरुष प्रवीन ॥ सुरगणसो उचरित सु
इन्द ॥ सुगत निजसुति आनन्दकन्द ॥ गए बदरिकाश्रम मै सिप्र । जहँ राजितवर तप कृतविप्रा ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जहां पूर्व प्रभु बिस्तु करि निजतन द्विधा अनूप । अयुत वर्ष तप किये प्रभु नरनारायण रूप ॥
गङ्गा जाके मध्य ऋषि परम रमणीय । जहां तपस्या करि सुमन हैंहि सुमन कमनीय ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

बिन्मसुर कहँ नारि ब्रह्माज्या के शान्ति हित । जहां सुरेन्द्र बिचारि अयुत वर्ष कीन्हे सु तप ॥

॥ * ॥ चोपार्द ॥ * ॥

संध्या समै तहां प्रभु जार्द । उत्तरे सहित सुमन समुदाई ॥ मुनिगण सब प्रभु आगम जानी ।
सायंकृत्य पूर्ण करि ज्ञानी ॥ याज्ञवल्क्य कश्यप प्रियवादि । गौतम अत्रि बशिष्ठहि आदि ॥
ऋषिगण जाइ प्रभुहि तहँ पूजे । अति आनन्द लहि अस्मृति कूजो बूझि कुशल घुचि आसन लहि
कै । बैठे सुर ऋषि सह मुद गहि कै ॥ जो सुख ऋषिन लहे ता लण मैं । सो कहि सकै कौन गुण
मन मैं ॥ करि आतिथ्य कन्द फल दीन्हे । सुरण सहित प्रभु भोजन कीन्हे ॥ भे प्रभु शासन पाथ
अहीना । सब निज निज आसन आसीना ॥ गए तहां तब कृष्ण बिचारी । हैं जहँ पूर्व विशदब्रत
चारी ॥ उत्तर तट सुरसरि के पावन । परम बखिर बल अति मज भावन ॥ तहँ प्रभु ध्यानावस्थित
ऋषे कै । बिलसन लागे योतिनि जै कै ॥ भयो इते मै हरगिरि ओरा । मृगया शील शब्द अति
घोरा ॥ छोडऊ छोडऊ खानसभन को । मारऊ धरऊ खाऊ ऋगण को ॥ मिलै शीघ्र कऊँ लग
पति गामी । तौ मैं होऊँ धन्य प्रभु नामी ॥ मोक्षद जासु नाम मुनि गावैं । ब्रह्मादिक जेहि निसु
दिन ध्याव ॥ मै अभाग्य बसु ताहि न ध्यायौ । तातैं महा अधम तन पायौ ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निसुदिन जासु सुभाव सौ हिंसा आदिक पाप । जानि जानि करि लहत हौं निति नूतन परिताप ॥
हिंसारत निर्बेद युत सुनि जैसे आम्हान । चित न लगे अनजान सम श्रीमाधव तजि ध्यान ॥
को यह जैसे कहत है मम सुभक्ति सौ पूरि । गुण इमि लेखन लगे तिमि परे लेखि बल भूरि ॥
सांसु खात पोषत रुधिर भयद प्रियाच अनेक । तिन मै दोष प्रमत्त अति सब के अधिप सटेक ॥
सांसु खात पोषत रुधिर अन्नाबलि कीं भाल । पहिरे माधव कृष्ण हरि रटत परम खुसिहाल ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

निर्बेदज युत सानि बचन बकत निन्दत निजहि । प्रभु के गुण सुखदानि कहत बारहँ भाँति बक ॥

॥ * ॥ चोपार्द ॥ * ॥

ते पिशाचपति प्रभु पै जार्द । को तुम कहे कहौं समुदाई ॥ तुम नामुष इत कित सौं आए ।

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

ब्रह्मा सह ब्रह्माण्ड बर अगिनित अमित प्रभाव। ईहि बिरचि एई सदा ईहित शीघ्रत भाव॥
एई प्रभु अव्यक्त गहिं वपुं वै व्यक्त अव्यक्त। कौतुक करत अनेक विधि वै कौतुक अनुत्तर॥
इमि गुणि निर गुणस गुण करि अगिनित गुणगणान। पुनिपुनिसुधुनिस्वच्छन्द सौं मुनिजमसममतिमान॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

खलत ध्यामंधरिजौन प्रभु अव्यक्तहि धन्य सो। मो सम धन्य न तौन लख्याव्यक्तहि व्यक्त इमि॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

प्रमुदित बार बार इमि कहि कै। मृतक विप्र को शुचि तन रहि क॥ करि डैटूक पात्र पै धरि
कौजल लै विधिवत अर्पण करि कौ। वन्दि चरण मन्दि कर जोरो। कहत भयो गहि प्रीति अयोरो।।
प्रभु यह मांसु विप्र को पावन। नूतन निर्मल सय सो हावन॥ अरप्या यज्ञ आपु के जानी। यहूण
करऊ करि कृपा महानी ॥ भक्षण करै आपु जो जोई। देव पितर कहँ अरपै सोई ॥ यह अति
ऊक्त सु नचन विचारी। यहूण करऊ मम दोष विसारी॥ प्रेम मर यह आरत बानी। सुनि बोखे
प्रभु आमद दानी ॥ ब्राह्मण सदा पूज्य निरधरो। नहि बध भक्षण योग विचारो ॥ मृतक न कु
वन योग शुचि जन को। अब न कहऊ एहि असन बचन को ॥ इस प्रसन्न तुव भक्ति निहारी।
होऊ अशोच शरू वजि भारी ॥ इमि कहि तासु गात प्रभु परसे। कृपा कटाक्ष सुधा सम बरसे ॥
परसत भयो दिव्य तन सोई। पारस परसि खोह जिमि होई ॥ परसत भयो तौन भरि भाँसो।
तव प्रभु कहत भये ईमि याँसो ॥ अमज सहित तुम सुरपुर जाहू। विहरऊ लहि अपूब मुद लाहू ॥
कर मास सुरपति तहँ जौसो। करौ बिहार तहां तुम तौसो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तदमन्तर साकुप्य मम लहि हो सुमो सुमान। यह कहि ताहि किए विदा कृपासिन्धु भषवान ॥
बिहरत भयो पिशाच सो इन्द्रलोक मैं जाय। इत प्रभु दिजहि जिआइ कै अस्तुति सुने सचाय ॥
अस्तुति सुनि गेहि करि विदा मुनि मण्डल मैं आय। कहे सकल बिरतांत प्रभु कृष्ण चन्द्र सुखदाय ॥
करि अस्तुति मुनि जन कहे इतो आचरज कौमु। विअमज भगवान प्रभु चहौ करौ तुम तौन ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि सुबचन अग्रदास प्रभु इमि मुनिजन सौं कहे। हम हर गिरि पै जात आरऊ तुम सब समय लहि ॥

॥ * ॥ अथ करीछन्द ॥ * ॥

कहि खगपति पै वै आसीन। दंरये गिरि जो प्रभा अहोन ॥ जहाँ अराधहि शिवहि धनेश। करै
तपस्या सिद्ध सुभेश ॥ नगनादिक सरिता अभिरामं। प्रगट भई जहसौं गुणयाम ॥ जहँ बेधा को
पक्षम शीशा काटे असत करत लाल ईश ॥ पूर्व जहाँ हरि करि सह प्रेम। सहस कमल अर्पण का

बम ॥ घटे एकदिन बारिज एक । कमलनयन पाहक धृत टेक ॥ काटि अरपि निज घष सुखदाना
 लहे शम्भुसौ चक्र महान ॥ अति सुन्दर मानससर यत्र । गए कृष्ण प्रभु सादर तत्र ॥ सरवरं को
 उत्तर तट जाय । बैठि लगे तप तपन सचाय । द्वादश वार्षिक करि संस्कृत्य । किए तपस्या परम
 अनल्प ॥ गरुड तहां ईषन हैं देत । पुष्य देत ह चञ्चल चेत ॥ दर्भ देत हैं खड्ग सुभेश । रस्त रडे
 सह सो देश ॥ गदा धनुष शुभ सत्व निकेत । परिचर्या हैं करन समेत ॥ प्रथम दिवस करि शाक
 अहार । दूजे दिन रहि बिना अधार ॥ शाक बज्ररि तीजे दिन लाय । फिरि खाए दिन तीन
 विताय ॥ खाए फेरि गए दिन चारि । फेरि पांचादिन बिते विचारि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

शाक खाय कौ एकदिन एहि विधि के क्रमचाल । अन्तर दै दै बिनस बज्र पत्त मास अरु साल ॥
 दुस्तर व्रत अप हवन अरु वेद पाठ सबिधान । मास जन द्वादश बरिस कीन्हे कृष्ण महान ॥
 आए तब विष्णुहि लाखम सुरगण सहित सुरेश । पितर धर्म रिपिगण बरुण किन्नर बरुत सुभेश ॥
 अक्षर अरु मन्धर्वगण सब सत्वर तहँ आय । तपत उग्र तप प्रभुहि लखि निरखि रहे टक लाय ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

व्रतसमाप्त नै सर्व उमा सहित आए तहाँ । धनद सखायण सर्व साथ भरे अति मोद ता ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

दर्भदीपिका डिण्डिम शूला । धारि चारिभुज सौ अनकूला ॥ भसम गरल शशि सुरस्रि धारै । कर
 कपाल को माल बिहारे । अहिगण के भूषण सौ शोभित । करे कोटि कन्दर्पहि शोभित ॥ भूत
 बन्द बज्र रूप बिभाते । सङ्ग अनगिने आनद राते ॥ वृत्ति शिवा स्तुति कूजत मोदत । बज्र
 पिशाच के जूथ बिनोदत ॥ पढत वेद मुनिगण बज्र पावन । खाए सङ्ग शम्भु के पावन ॥ तिनके
 मध्य हृषभ चढि भाए । प्रभु के निकट शम्भु प्रभु आए ॥ लखि हरि हरहि निकट मुद लोन्हे ।
 जैति जैति सुर ऋषिगण कीन्हे ॥ जगन्नाथ जै जै प्रभु सङ्गर । चक्र शूल धर जै अभयहर ॥ जै
 कौस्तुभधर जै अहिभूषण । जै अघ शोध तमस के पूषण ॥ जै श्रीलण्ड भस्मधर स्वामी । उमा
 रमापति लग पसु मामी ॥ जै भृगु चरुण अरु विषधारी । जै सीरधि कौलास बिहारी ॥ जैति श्याम
 सित रूप सलोने । जै जन प्रभव अनारि अजोने ॥ एहि विधि कहि कहि सकल अनन्दे । श्रीप्रभु
 हरि हर के पग बन्दे ॥ तब उठि केशव शम्भुहि पूजे । करि प्रणाम शुभ अस्तुति कूजे ॥ सुनि अस्तुति
 शिव हिय मुद सौ भरि । कहे विष्णु के कर कर सौ धरि ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तुम अनन्त तुम विश्वसृज बज्र ब्रह्माण्ड निकेत । पुत्र हेत इत तप करे को जानै यह हेत ॥

निरमे ह हम पूर्वहीं तुवहित पुत्र अनूप । सुनौ तौन इतिहांस अब निज बांझित अनुरूप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

छतयुग में तप परम । अयुतान्दिक हम हैं करत । तहँ परिचर्या कर्म उमा सर्वदा हीं करत ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तहँ सुरपति को शासन लहि कै । आद्यो काम बान्धुन गहि कै ॥ सगँ सहाइ लै गइ रितुराजहि । हने सि कुसुमशर तजि डर लाजहि ॥ सो विचारि हैं कोधित कै । ज्वालजाल में चप सौं ज्वै कै ॥ भस्माशोष कियो तेहि क्षण मैं । पोछू इन्द्रकृत्य गुणि मन मैं ॥ सुनि विधि बचन कृपा तब कीन्हे । तुव सुत हूबे को बर दीन्हे ॥ रुकुमिनि मैं नुमँसौं सुत होई । नाम प्रदुन्न काम बह सोई ॥ इमि कहि शम्भु जोरि युग बारी । अस्तुति किए तत्व अनुसारो ॥ अस्तुति करि शिव फिरि अभिलाषे । सुरमुनि जन सौं एहि विधि भाषे ॥ एई विष्णुरुद्र विधि जानो । इन्द्र कुबेर वरुण रवि मानो ॥ इनहीं सौं सब जग उतपति हैं । लीन होत इनही मै सति हैं ॥ एई ईश्वर न्यामक श्रवणी को । ए चित कारण चारु शुचि होके ॥ ए निरगुण जग रचना ईकृत । तब हँ सगुण बिरचि जग सीतत ॥ आपु अव्यक्त रहत सबही मैं । जैसे माखन दूध दही मै । मथे ज्ञान मन्थन सौं दरथैं । जेहि प्रकार योगी जन हरथैं ॥ ए सब मैं बभव लक्षण सौं । प्रगट निरेखि परत अक्षण सौं ॥ देखे सुने परत सब जेहै । ते सब एते मे इन तेहै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सुनि शङ्कर के बचन ए भए मोदयुत सर्व । सुर सुरपति दिगपाल ऋषि यक्षाक्षर गन्धर्वा । श्रीनारायण विष्णु ते अन्यदेव नहि कोइ । विष्णुहि जपत सप्रेम निति धन्य धन्य जन सोइ । विष्णु सदा अप्तव्य हैं हैं पठितथं त्रिमूर्ति । इन मैं कछू न भेद है जौ निरखै करि स्मृति ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

यक्षाक्षर गन्धर्व सुर सुरपति दिगपाल ऋषि । भए मोदयुत सर्व सुनि शङ्कर के बचन ए ॥

॥ * ॥ महिखरोछन्द ॥ * ॥

एहि भांति प्रभुहि प्रशंसि हर फिरि किए अस्तुत्रि चाव सा । जौं वेद कच्छन कथित ग्रथित अनूप अनघ प्रभाव सौं ॥ श्रीनाथ केशव नमस्तुभ्यं नमः शशिसूर्यात्मने । जै नमो वेदात्मने तुभ्यन्नमः श्री ब्रह्मात्मने ॥ जै नमो सर्वात्मने तुभ्यन्नमः श्रीमरुतात्मने । विधि विष्णुरुद्रात्मने तुभ्यन्नमः श्रीविष्वात्मने ॥ जै नमस्तुभ्यं रूपरसगन्धस्पर्श शब्दात्मने । जै सद्दसशीर्षापुरुष तुभ्यन्नमः श्रीचिगुणात्मने ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

करि अस्तुति एहि भांति शिव भे तँह अन्तरध्याना शिवा रुहित सबगणनि सह पूरित मोद भक्षान॥
बन्दि बन्दि प्रभु के चरण लोकाप दिगप अशोक । लहि लहि मोद अमोघ ने धीक थोक निज ओक॥

शङ्गी चक्री प्रभु गदी खड़ी धर्नी जिण्ण । आए गरुडारूढ व्हे बदरीवन मै विण्ण ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

मुनिजन सों विधिपूर्व पूजित व्हे बैठे जहां । पाए मोद अपूर्व प्रभुहि लेलि ते मुनि लकल ॥

स्वस्तिश्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगमिना श्रीबन्दीजनकाशी
वासिगेकुलनाथात्मजेन गोपीनाथ कविना विरचिते भाषायां भारतान्तर्गते हरिवंशदर्पणेशोलाश
घात्रावर्णने नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

उतैसु पौत्र भूप धनुधारी । कृष्णचन्द्र सों रारि विचारो ॥ पास चोलि सबदिशि को राजा ।
कहत भयो गुण जय जय काजा ॥ हसहिँ दण्ड सब भूपति देहां । सुगत निदेश शोश धरि लेहं ॥
गहिँ मानै यदुवंशी हम कों । सुनि मम तेज न लहैं भरम कों ॥ दण्ड न दोहैं रहै निति काल सों ।
भए निशङ्क कृष्ण के बल सों ॥ सुनिचै कृष्ण गोप की करणो । वासुदेव मम नाम सु बरणी ॥ सो
कज्ज बोच मोद सों रातैं । और सुनो यह अनहद वार्तैं ॥ मम धनु गदा खड्ग को जो है । नाम
विख्यात अमोघ गुनो है ॥ निज धनु गदा खड्गको सों सो । राखि नाम चाहत भो भोसो ॥ अब
ओहि वासुदेव जो कहिँ हँ । सो अति दुसह जोध मम सहि ह ॥ निज पन दौवन को पन लेतैं ।
शत शत भार हेम मणि देहै ॥ नरकासुर मम सखा प्रबल को । है यह गोप दवन बर दल को ॥
भारि याहि निज दुसह गदा सों । लेँ बैर मित्रको यासों ॥ यह सुनि किते भूप मुसुकाई ।
समुक्ति रहे चुप शोस नवाई ॥ कितने मिलज मूढ हरखाने । मूढ कालबस व्हे उमदाने । इतने
मै तहँ नारद आए । हरगिरि त गुणि आनद द्याए ॥ * * * * * ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पूजि मुनिहि बैठाच सो कहत भयो विरतान्त । ज्जिमि नृपगण सों सो कहे गरजित वचन अशान्त ॥
सुनि मुनि नारद कहत भे सुनु पउंड्र क्षितिपाल । कृष्णहिँ जैसे सो कहत चढत जासु शिरकाल ॥

साङ्गी खड़ी गदी औ वासुदेव प्रभु परम । सो कष्टादबो तुम चहत सो यह दुस्तर कर्म ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

सुनि पउंड्र यह बैन व्हे संरोष फिरि रोकि रिसि । तुम अबध्य तप जैन चहो कही सो इमि कह्यो ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

श्रीपुत्र उल्लूक कर्जु आज्ञा मोसाई । अब फिर मति आएऊ एहि ठाई ॥ मुनि उठि तुरित
 कृष्ण पै आए । विधिवत यह बिरतान्त सुनाए ॥ मुनि प्रभु कहे गर्ब बल तासू । मुनि हम करष
 भमन अब वासू ॥ इतै पउंड्र सेन सजि भारी । चढो द्वारिका पै धनुषधारी ॥ एकलव्य आदिक
 बज्र राजा । वली सङ्ग सजि सहित समाजा ॥ रथ गज हयारूढ पद चारी । सुभट असंख्य बीर
 अरिदारी ॥ सह बज्रवार्द भेरि करणालै । दिपित कराइ असंख्य मसालै ॥ सत्वर जाइ भरो
 अति रिसि सो। घेरि द्वारिका पुर सब दिशि सौं ॥ सुभटन दयो निदेश लरनको। यदु बंशिन के मान
 हरणको ॥ तिनहै देखि पुर के रखवारे । शस्त्र समूह क्रोधकरि मारे ॥ लागे लरन भूप भट तिन
 सौं। मारि मारि आयुध आगनित सौं ॥ यह सुनिके सिंगरे यदु बंशी । उग्रसेन आदिक सुप्रशंसी ॥
 गहि आयुध बाहन पै चढि चढि । लागे लरन नगर तें कढि कढि ॥ भिरे गजस्थ गजस्थ भटन सौं ।
 रथी रथी जै शब्द रटन सौं ॥ भिरे हयस्थन सौं हय सादी । पैदर पैदर सौं उनमादी ॥ लागे होन
 युद्ध अति घोरा । लगे चलन बज्र शस्त्र कटोरा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तहँ निषाद प्रति प्रबल भट शिष्य द्रोण को बीर । बाणवृष्टि अति करत भो एकलव्य रणधीर ॥
 सात्यकि हार्दिक राम गद जे भट ऊधो आदि। करत भयो व्याकुल तिनहै मारि बीरधुनि नादि ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

वै अर्दित तजि युद्ध प्रविशत भे सब नगर मैं । तब लखि जीति सकुद्ध पैंड्र कहत भो भटन सौं ॥
 परशु कुंजर कुंशरि सौं बिदारि प्रकार बरा । पुरमें प्रविशि प्रचारि लूटि लेऊ मणि धन युवति ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि सकल सुभट मुद पागे । पूरुवदिशि लमि खोदन लागे ॥ हाहाकार मचो पुर
 मारहीं । कृष्ण विना कोउ रक्षक नाहों ॥ राम आदि सब भट यह सुनि कै । पलटे बचन कृष्ण को।
 गुणि कै ॥ सत्वर आए तहां प्रचारत । जहँ हँ भट प्रकार बिदारत ॥ तिनहै देखि सात्यकि धनु
 धारी । तजे अस्त्र बाइव्य बिचारो ॥ व्है तासौं प्रेरित मति बिगरो गए पूर्व थल पै ते सिंगरे ॥ ने निशि
 तहां हांकि रथ हेरत । कहां पउंड्र बार बज्रटोत । आजु तामुशिरकाटि गिरावैं । रण देबिहि
 बलिदान चढावैं । जो सठ निलज मोह सौं छायो । निशि मैं इत तस्तर रुम आयो । सुनि सात्य
 कि के बचन अनैसे । बोलत भो पउंड्र नृप जैसे ॥ हँ कर्जु कृष्ण गोप बन चारी । इस्ली पशु हन्ता
 अघकारी ॥ जो मम नाम आपनो कोन्हे । जहँ तहँ बिहरत आनद लोन्हे ॥ बाहि बलाउ लारा मै
 ओसौं । तू नहि लरन योग है मो सौं ॥ औ तू बीर आपु को जानै । तौ लरि करि ले निज उरमानै

॥ जब तुव मरण खबरि सो पाइहि । तव व्याकुल है आपुहि आइहि ॥ यह सुनि सात्यकि
अति रिसि करि कै । तासैं कहे बाणधनु धरि कै ॥ रे सठ तोहि काल जो घेरे । नृत्यत चढो शीस पै
तेरे ॥ सो जब उतरि जीभि पै आवत । तव एहि विधि को बचन बकावत ॥ रुचै जौन सो बकि
ले तौलौ । गिरै न शीस भूमि पै जौलौ ॥ घरी चारि मैं रसना तेरो । खै हँ गिहू बात सति मेरी ॥
इमि कहि धनुष कान लौं ठाने । बाण तासुं रुहनि हरधाने ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लगे बाण अति क्रोधकरि भोर रुधिर सौं गात । पैउ भूप मारत भयो सात्यकि को शरसात ॥
सात्यकि तेहि सो सात्यकिहि मारे बाण अनन्त । मारेसि एक प्रचण्ड शर सिन कहँ सो चितिकन्त ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

सात्यकि भट बलवान ताके लगे घरीक लौं । मूर्छित रहे अजान लागि ध्वजा के दण्ड सा ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

तौलौ दश शर सिनि तेहि मारो । हनि पचीस शर हयन बिदारी ॥ गरजत भयो पउंउ अमाना ।
सुनि सचेत भे सिनि बलवाना ॥ सूत गजन कहँ अरदिन देखी । दुस्रह बाण हने अति तेखी ॥ लगे
बाण मूर्छित भे सोखी । रथ पै गिरो मूदि चष दोख ॥ तव लौं सात्यकि शर बिधि ठाटे । सिगरे
एह सुरष के आटे ॥ सिगरे गात हयन के भेदे । धर सौं शीस सूत को छेदे ॥ तव सो चेति गदा लै
धायो । बडि सात्यकि के रथडिक आयो ॥ सात्यकि नदा पाखि लै तासैं । कीन्हे गदायुह
भरि भा सैं ॥ बडि बिधि गदायुह ते कीन्हे । लखि इत उत सब विषय लीन्हे ॥ गदा तासु भू पै
त्रिनि मारे । मूर्छित करि तेहि सहिपैं डारे ॥ चेति शीघ्र उठि सेरण चारो । मारेसि सिनिहि
गदा अति भारी ॥ तव सात्यकि अति भुजबल बर सैं । तोरैं तासु नदा लै कर सैं ॥ तव सोचा
बक बोर न भूका । मारे सात्यकि के उर मूका ॥ सात्यकि डारि गदा बुधि नम मै । भूका हने तासु
बुरतन मै । तेहि सात्यकि सात्यकि कहँ सोई । मुष्टिक हनत भए रिसि भोई ॥ बल कल करि
घातन सैं भारे । बाणयुहविद नेकु न धारे ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जो इमि सात्यकि पाँपसैं संहर परम प्रचंड । एकलथ बलिरान सैं भो तिनि युह उदंड ॥
एकलथ कहँ राम अब रामहि धोर निषाद । मारत भए अनेक शर बोर बन्द करि नाद ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

एकलथ को चाप दए काठि बलवान सैं । तव सो करि परिताप सड कोकि भारत भयो ॥

॥ * ॥ गुरुतोवरहृन्द ॥ * ॥

तेहि देखि आवत ठानसों । बल काटि दीन्हें बाणसों ॥ असि हन्यो दूजो हेरि सों । बल काटि दीन्हें फेरि सों ॥ फिरि शक्ति घण्टा माल मैं । अथ हेम मय मणि जाल मैं ॥ लै एकलथ बली हना । बलवार पै गरवी गने ॥ चल कूदि तेहि निज पाणि कै । तेहि हमी तासो जानि कै ॥ उर शक्ति लागे भूमि कै । सो गिरो रथ पै घूमि कै ॥ तब ताहि मुरखित देखि कै । सब तासु सैमिक तेखि कै ॥ एकवार भुँकि चञ्जवारसों । बज्र शस्त्र धर बर जोरसों ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

सहस्र अठासी धीरते बोर निषाद सटेक । मारत भे वलिराम पै आयुध अगम अनेक ॥ हल मूगल लै राम तब हने तिन्है गहि मोद । तिन मैं करत भए तहाँ शिवा पिशाच बिनोद ॥ गिरिकन्दर मे दुरत भे तिनमैं कितने भागि । एकलथ हय लखत भो उठि मुरखासों जागि ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

लै गुर गदा शक्रुद्ध जाइ राम पै बेग सों । गदायुद्ध अति उद्ध करत भयो दारुण सुभट ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

चारि पुरुषवर भिरि तेहि निशि मैं । युद्ध करत भे भरि अति रिसि मैं ॥ एकलथ अति राम प्रवीरा ॥ अरु पौण्ड्र सात्यकि रणधीरा ॥ अति प्रचंड सङ्गर नहँ माचो । घोर शब्द दश दिशमै राचो ॥ इतने मैं शशिकी दुति मैली । भई सुराच दिनमणिकी फौज्जी ॥ लखि प्रभात प्रभु बदरीवनन । चले बिद्रा न्है सबमुनिगणतें ॥ खमासो न भतें धुनि सुनि कै । आय पौण्ड्र सरत यह गुणि कै ॥ पाङ्कजन्य शुभ शङ्ख बजाए । सुनि यदुवंशी अतिसुख पाए ॥ आए पर में प्रभु मुद लीन्हें । बन्दीजन जुरि अस्तुति कीन्हें ॥ उरतरि खगपति हि रूपुर पठाए । दारुकिसों निज रथ मर्गवाए ॥ चदि रथ पै आए रणभूमैं । जहँ अगनित भट घायल घूमैं ॥ भूप पौण्ड्र कृष्णकूहँ देखो । तजि सात्यकिसों युद्ध अदेखी ॥ प्रभु पै चले क्रोधसों हठि कै । तब सिनि रोको आमे बढिकै ॥ रे शठ भूपमोहि बिभु जीतो । ज्ञात आन पै सङ्गर चीते ॥ यह नहि क्षत्रिणको सुधरम है । यह कादरजनको कुकरम है ॥ हमाँह जीति कै जब कऊँ अनतै । जैवेकी शुचि रक्षि गुणु मनतै ॥ इतनेहँ पै पर्लटिनवाजा । चला कृष्ण पै गरबित राजा ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब सुप्रसंगित कृष्णसों सात्यकि करि कै गौर । तासु पीठमै छनि गदा परे रहे तेहि डौर ॥

सहाराज दुन पौण्ड्र तत्र प्रभुके सनमुख जाय । गरबित अरबित भो कहत गरबितबचन अवाय ॥

गो युवती ह्य वृद्धके बधकरता हे गोप । नरकासुर मिजसखाके बैर करौ तो लोप ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तो बध करि गहि टेक चक्री शार्ङ्गी अरु गदी । वासुदेव अब एक मु कहिये हो जगतने ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

पौण्ड्रको ए बचन सुनि प्रभु कहत भे मुसुकाय।सत्य जो तुम कहे इनमै एक है न थवाया गों कहत
महि दिव दिग् निहम तासु पालमहार । खलनको बर बीर्ज बुधिके गोपको करतार ॥ वृषभ तिष
ह्य वृद्ध मारत कियो सम न विचार । बध्य तुम्हकहँ पाय बधत न नेकु हमहि अवार ॥ चक्र
धनु तो गदा तो हैं नाम रूप समान । पै न हें मरु गंदा धनु अरु चक्र सम गुणवान ॥ शोच हमको
इहे तुम तौ जाऊ मै तजि देहा । बूजि है को तुम्है बिनु गुण अगुणता गहि नेह ॥ सुमुञ्ज जो तुव अस्त्र
अरु मम अस्त्र है सह नाम । लणक मै मम अस्त्र ते तें करहिँ गे तो काम ॥ करऊ अब मति बेर रथ
घटि लरऊ गहि निज अब । जाऊ तो प्रिय सखा नरकासुर गयो हे जत्र ॥ बचन यह सुनि
क्रोधि रथघटि पौण्ड्र भट बलवाण । लगे गरजन हने तौ लौ कृष्णः प्रभु बरवाण ॥ कृष्णको दग्ध
बाण दर अरु सात्युकि हि दग्ध पांच । हनत भो सब हयनकहँ सो बीर दग्ध नाराच ॥ कृष्ण तौ लौ
तासु ध्वज अरु सूतको गिर काटि । मारि चारौ बाजि मारे तर्पिह शरवर डांठि ॥ कूदो रथतें पौण्ड्र
मारत भयो लज्ज चलाय । नीच हीं तेहि काटि दीन्हे बाणसा यदुराय ॥ तज्यो सो तब घोर चक्र
अमोघ करण अनर्थ । कूदि अन तें अरुके सब दए तेहि करि व्यर्थ ॥ घरिकसौ इमि शीछि
ताको चक्रसौ जगदीश । डार उरबी पै दए तहँ कर्मट ताको शीश ॥ मरो ताको देखि ताके
सुभटके समुदाय । भगे ताडत हियो रोवत करत हाहा हाय ॥ रामसौ लरि हारि भागे एक
लय निषाद । लए करमै गदा भागे गहे दाह विसाद ॥ कौय बसगे तासु पोछे दूरिलो बलि
राम । दुरो हो तव पलटि आए कृष्ण पै बलधाम ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

यदुर्विमल सह कृष्ण तव सभामदन मै जाय । हरगिरिजात्राको कहे सब बिरतान्त सदाय ॥
सो कहि मोदित करि यदुन अन्तुति कर्णि बिसाजिअइमियन अनदित करे कहि बिरतान्त अचर्जिा

स्वस्ति श्रीकाशीराजमहाराजाधिराजश्रीउहितनारायणस्थान्नाभिगामिना श्रीवन्दीजनकाशी
वासिगोकुलनाथात्मजेन गोपीनाथकविना बिरचिते भाषायां भाद्रतान्तर्गते हरिवंशदर्पणे कैलाश
यात्रापै, षड्रधवर्णनानाम अष्टत्रिंशदध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मनिवर सुनि प्रभुको कथा सो मन लग्न न होत । को अस जेहि प्रभु गुण सुनत गुणत होत है वोत ॥

जाते कछि अै जो किए हंस डिभकके सङ्ग । चारु कुतूहल चावसा श्रीकेशव श्रीरङ्ग ॥

॥ * ॥ चौपार्द ॥ * ॥

सुनि मुनि कहे सुतुङ्ग नृपवरणी । प्रथम तासु उत्पत्ति अरु करणी ॥ हो शुभ शास्त्रदेशकी
स्वामी । ब्रह्मदत्त भूपति त्रयगामी ॥ रही तासु ह्यै तिथ बरलाजा १ । तिनसों रमे बज्जतदिन
राजा ॥ लहे नःसुत तबं शुचिद्वत साथे । शम्भु हि दिगमित वरिष आराधे ॥ तब शिव त्तिप्र दरश
तेहि दीन्हा । सुतहित बर दे मोदित कीन्हा । नाम मित्रसह ब्राह्मण ज्ञानी । रहो भूपको सुखा
सुमानो ॥ बज्जदिन पुत्रहीन रहि सोऊ । चिन्तित भे पतिनीपति दोऊ ॥ तेउ पांच वरिष हरि
पूजन । करि कीन्हे शुभ अस्तुति कूजनं ॥ दोन्हे विष्णु ताहि वर पावन । पुत्रोत्पत्तिकर शोक नशा
वन ॥ ब्रह्मदत्तके द्वै सुत जाए । हंस डिभक शुभ नाम सोहाए ॥ भो सुत एकं विप्रके आरज ।
नाम जनार्दन अंत शुभ कारज ॥ नृपके अरु द्विजके सुत साथ हि । बरधि पढे विद्या गुण गाथ हि ॥
सर्वशास्त्र धनुवेद पुराणा । सुनि गुणि करि अभ्यास विधाना ॥ हंस डिभक हिमगिरि ढिग जार्द
शिवहि आराधे हि दृढलय लार्द ॥ पांच वरिष जल वायु आहारा । करि तप कीन्हे सहित
विचारा ॥ तब तहँ आदि शम्भु मुदराखे । बर ब्रूहि नृप सुत सों भाखे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

मागे शम्भु हि ब्रन्दि ते प्रभु हम हौहि अभेय । अमर, असुर गन्धर्वगण नरसो सदा अजेय ॥
दिद्य अस्त्र निज सर्व प्रभु पूर्ण दया करि देऊ । कवच अभेय अर्धेय धनु देऊ निरखि मम नेऊ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

द्वै द्वै गण बलवान रहै सहार्द्र सङ्ग मम । सुनि ए वचन ईशान एवमस्तु कछि गुप्त भे ॥

॥ * ॥ जयकारीवन्द ॥ * ॥

ते नृप सुत लहि कौ बरदान । आए निज पुर मधि मतिमान ॥ शम्भु आराधन रत रहि नित्य ।
चित चिंतन करि भए आचंत्य । द्विज सुत रहो जनार्दन जौन । विष्णुहि पूजि लह्यो बर तौन ॥
कामते भे सदार ते सर्वाभूप पुत्र द्विज सुनऊ अखर्ब ॥ एकदिवस ते नृपके बाराद्विज सुत सह युत
सैन अपार ॥ शृगयाशौल त्रिपिनमे जायं विधिवत किए विहार सचाय ॥ गर्यो बोति जबदिन यु
थांस । तत्र तज्जि मृगया करण अराम ॥ गे तडागतट सहित समाज । जहँ धारिज बनवुधिवन्त ।
लसत सधाज ॥ बैठे तहँ जल प्रशि समोद । करण लगे सबसखा बिनोद ॥ तहां वेद धुनि सुनि
लहे मित्र सह मोद बनन्त ॥ ते त्रय पुरुष गए तब तत्र । मुनिजन करत रहे धुनि यत्र ॥ बान्द मुनि
नकहँ ते हे भूप । आशिष अर्घ लहे अनुरूप ॥ विधिवत तिन्है पूजि ते विप्र । सादर बैठा त भे
त्तिप्र ॥ बन्धु विप्र सह बैठि सुप्रेम । कहे मुनिनसों हंस सनेम ॥ उत्तमं राज सूय शुभ यज्ञ ।

कियो चहत सम फितु सरवज्ञ ॥ विधिवत तेहि साधनके कार्य ॥ आए ऊ तह तुम गिणरे आर्ज्य ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

संबधु सदार ससुता आए ऊ तुम तह हाल ॥ मुनि मुनिजन नृपसों कहे आइब हम तेहि काल ॥

तब मुनिगणसों छै बिदा हंस डिभक अरु बिप्र ॥ दक्षिण दिशिसों जात भै शरके उत्तर क्षिप्र ॥

॥ * ॥ सेरठा ॥ * ॥

दुरबासा तपधाम पांच हजार चधोन सह ॥ तपत रहे अभिराम जहँ धरि सन्यासन ब्रत ॥

॥ * ॥ रोलाछन्द ॥ * ॥

श्रेष्ठ शुचि सन्यास आश्रम तपत मुनि तपरास ॥ अश्लिषं अतिथ अबांस दण्डी धृत कमण्डलु

पास ॥ बन्द्यविसके श्रे शुचि कौपीन सुषमाकन्द ॥ ब्रह्म चिन्तत ध्यान ततपर लहत परमानन्द ॥

देखि तिनकहँ गुने मनमै हंस डिभक अमान ॥ तजि गृहाश्रम लसत है ए औन परम अयान ॥ गृही

पटु धर्मज्ञ धर्माचाररत शुचि रूप ॥ गृही सर्वाश्रमिनकों प्रतिपाल करण अनूप ॥ ताहि त्यागि कुभेष

कीन्है गहे सुद्राचार ॥ इन्है दै कै दण्ड करिवो गृही उचित विचार ॥ गुणत इमि डिग जाइ कीन्है

अहणचल अति क्रुद्धि ॥ कहे दुर्बासा सुमुनिसों दुष्टमति दुर्बुद्धि ॥ धूर्तताके बचन कहि कै मोहि द्विज

समुदाय ॥ धर्म कर्म बिहीन कोन्है लाज डर बिसराया ॥ शीघ्र तजि एहि आश्रम हि हो गृही जीवन

ईछि ॥ नतरु क्षणभो करौ सबको नाश शरसों सीछि ॥ हंसकों यह बचन सुनि जो बिप्र ताको

मित्र ॥ भयो वरजत ताहि सो कहि बचन परम पवित्र ॥ क्रोधि दुर्बासा कहे तब हंससों हेमूठ ॥ गच्छि

इतसों शीघ्र जो जहँ पिता तेरो बूढ ॥ गहे हँ सन्यास ब्रत नहि तजो रिषि करि धर्म ॥ नतरु अबलौ

बन्धु सह तुम जानते मम मर्म ॥ सर्वज्ञवी वृन्दकों मैं भक्ष करण समर्थ ॥ गहे उत्तम ब्रतन ताते

करत वृजि अनर्थ ॥ कछू दिनमै कृष्ण करि है ध्वंस तेरो दम्भा आजु भो तोनाशके ध्रुव हेतुको आरम्भ ॥

भाषि इमि उठि अनत जैवो चहे मुनि अनुमानि ॥ गह्यो त्योहीं हंस मुनिको चारु कोमल पानि ॥

तेरि अनुपम दण्ड फारत भयो शुचि कोपिना ॥ फोरि विमल कमण्डलु हि भो कहत बचन मलीना ॥

देखि मुनिको हाल यह सब जती गण डरपाय ॥ शीघ्र लैलै पात्र दण्डिदुरे वनम जाय ॥ * * *

• ॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

विप्र जनार्दन धृष्टि तेहि दीन्हो तब बिलगाय ॥ विप्रहि दए आशीष मुनि जानि सुबुधि सुखपाय ॥

तब देखो नृपपुत्रसो बहि ताहीधर मगवाय ॥ सखन सहित भोजन करत भयो मांस वनवाय ॥

तदनु सैन सह जात भो निज पुर भरो उमङ्ग ॥ तासु नाश ध्रुवगुणत भो मित्र विप्रता उरु ॥

॥ * ॥ सेरठा ॥ * ॥

तब मुनि यतिन बलाम्य बैठि एक ते मंत्र करि ॥ गए जहां यदुराय भिन्न कमण्डलु दण्डली ॥

॥ हरिकृष्णदर्पणः ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

भुवि हि पूजि प्रभु, आसन दीन्हे । कुशल प्रश्न बुझे मुद लीन्हे ॥ विशद भीर मुनिजनकी ज्येकं ।
बूजत भे विसमित से क्वै कौम मुनि तपभौम मौन मति गहि अै । इमि आषन को कारण कहि अै ॥
यह सुनि सुमुनि शोच परिहरि कै । बोली कोध नयो सो करि कै ॥ जानि अजान मोहि तुम जाने ।
जाते वूभत सन ऊँ अज्ञाने ॥ जानत भेद जौन जन जाको । उचित न तासा गोपन ताको ॥ भली
भांति हम तुम कहँ जानै । जाने जानत आपु न जानै ॥ तुम सरबज्ञ सर्वप्रद स्वामी । सबके न्यामक
सबधरु गामो ॥ जासु नाभिभव कमल सदन तें । प्रगटित क्वै विधि चारिबदन तें ॥ गाय जासु
गुण अन्त न पाए । सो तुम जगत योनि इत आए ॥ पांचतत्वमयतन सब मानत । सो सब तुम
कत भेद न जानत ॥ प्राण बाक मनमै तुम सोई । बूजत किमि दुस्तरकी नार्द ॥ इमि बड विधि
कहि मुनि अथिलाषे । करणी हंस डिभक की भाषे ॥ दण्ड कौपीन कमण्डलु भाए । टूटो फाटो
फुटो देखाए ॥ मम यह दशा जानि तुम चांषन । बूभत कुशल हास समु भाषन ॥ दीन वन्धु मम
यह गति देखो । हौ निहचिन्त कहा अवरैखो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

पाणि जोरि मुनि सौं कहे मयादा प्रतिपाल । क्षमऊ सुमुनि अपराध मम लेव बैर मै हाल ॥
बरुण इन्द्र विधि रुद्र के पास दुरै जौ धावातितरुँ मारौं तिन्हहि हठि बचे न कितरुँ जाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तोषि मुनिहि एहि भांति दे सुनि मंत्र न कृष्ण प्रभु । सहं द्विजगण की पांति भोजन करवाये चरुचि ॥

॥ * ॥ महिलरीकन्द ॥ * ॥

मुनि योग सुन्दर सुधर मै फिरि बस मुनि कहँ देत भोलाहि वास प्रभु को निकट को मुनि परम
आनद लेत भे ॥ उत हंसडिभक नरेश सुत नृप सृष्ट को अनुमान कै । द्विज वरजनार्दन मित्र हौ
इमि कहत भे पन ठान कै ॥ निज पिता सौं हम धन करवायो चहत जाग जोतिकै । सुनि बिप्र
गुणि मुनि सो विधि की सिद्धि बोलों भांति कै ॥ नृप सूनु सुनू तू गुणे सो यह परम दुस्तर मंत्र हैं ।
यह अल्प जोबी जननि कौं जमराज को कित मंत्र हैं ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

जरासन्ध बाल्हीक अरु द्यादव सब अधर्ष । अरु भीषम जिन सृग पति हि जीति लहे जय हर्ष ॥
रामकृष्ण त्रैलोक्य का क्षण मै जीतन सक । तिन्है समुजि एहि मंत्र मै मनकी जै अनुरक्त ॥

१६५

॥ हरिवंशरूपणः ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

जां इन सा मिलि मेल शान दान सैं लोऊ करि । तौरचि कैरण खेलजोति बिअ मख सिद्धि करै ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

यह सुनि ते हर बर बल वारे । बचन सगर्व सरोष उचारे ॥ भीषन् बहू कहा बल ताको । उग्र
प्रभाव कहत है जाको ॥ एकलव्य कहैं भट मै जोरे । तुम्है म कहव' उचित मम धोरे । जरासन्ध
मम बन्धु प्रशंसी ॥ खै है कबळ न मम हित ध्वंसी ॥ यदुबंशी कहि लेखे भाहीं । तिन को हमै
भटक कहु नाहीं ॥ ताते प्रथम कृष्ण पै जाई । मम निदेश तुम कहऊ बुजाई ॥ यज्ञ हुंत कर
देहैं पढाई । आइ स्वर्ग करै सेवकाई ॥ भोजन समै खाद उपचारा ॥ खै हैं लए लवण बज्र भारा ॥
मोरि सपथ तुम कहैं वज्र बेरी । जाऊ शीघ्र अब करऊ न देरी ॥ यह मम कार्य सिद्ध अभिलाषी ॥
अब मति दीर्घ शूत्रता भाषी ॥ यह सुनि विप्र जनार्दन ज्ञानी । होनी श्योसि श्येति अनुमानी ॥
फिरि न कहु नृप सुत सा भाषी । प्रभु दरशन हित अति अभिलाषी ॥ शीघ्र विदा खै यात्रा कीन्हे ।
बले अश्व चडि आनद लीन्हे ॥ पावनकर प्रभु के गुण गावत । आपुहि धन्य जानि सुख छावत ॥
सुमिरत चारु रूप मन भावन । परमानन्द सुरस सरसावन ॥ घनसमु श्याम पीतपट धारी ।
मणि मै भूषण धृत हिय हारो ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

अनूपम अमल अपूर्व अति धरे किरौटं अनूप । बारिजास सुषमा सदन कंदन मदन को रूप ॥
कौस्तुभ मणि की रचिर सैं रचित सु बंत्त विशालाभृगुपति के पग चिन्ह पै बिहरत बर वंमाल ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

मणि मै परम विचित्र सिंहासन विस्तारित पै । बैठे करत चरित्र विश्वथोनि कहैं कब लखव ॥

॥ * ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

गहे शर कोदण्ड खण्डन समर मख ध्वज जूप । सभासदन समेत भूषे सभासदन अनूप ॥ प्रभु
हि पेलि कृतार्थ खै हैं धन्य सो क्षण स्वत्त । होहि ने अब धन्य मेरे अमल आयत अक्ष ॥ ध्यान धरि
धरि हेरि जेहि सनकादि पावत मोद । ताहि मै परतत्त लखि हैं करत लोक विनोद ॥ इमो दुख
मोहि दुसह प्रभु सैं कहन परि है दाय । चलो कलरु हंस पै यह करि कुबुद्धि कुभाय ॥ गुणत
उत्सुक दरशको इमि हांकि बाजि हि क्षिप्र ॥ गयो प्रभु के द्वार पै अति भयो प्रमुदित विप्र । द्वार
पाल प्रवीण प्रभु सैं अरज करि कै तासु गए ताहि हजूर मै लै जाय सो तई आसु ॥ प्रेम अलसों
भरे बल भो करत प्रभुहि प्रणाम । हंस नृप को दूत हैं कहि कहत भो निज नाम ॥ कहे प्रभु
इत आय सुख सा बैठि है हिज आर्य । कहे द्वै जो कहे तुमसों कहन करिबो कार्य ॥ बचन यह

सुनि मोदि ब्राह्मण वैठि तहँ करजोरि । कह्यो प्रभु तुम जानि स्व भोहि कहन कहत बहोरि ॥ पाद
 प्रहसन चापु को सो कहत ह्यो मनमोरि । कपसिन्धु सुजान सो सुनि गुणव मोरि नखोरि ॥ भाषि इमि
 सो कह्यो द्विज करि साजतेगत वैन । हंस होजा कहे प्रभु सो कहन कुखित वैन ॥ हंस को सन्देश
 सुनि यह कहे कृष्ण सहस्र । दए बिनु कर करव कौसेतासु पुर मै बांस ॥ बचन यह सुनि राम
 सात्युकि आदि यादव हर्षि । पाणि तल दै लै सु हँसिहँसि कहे बचन अमर्षि ॥ कहे प्रभु फिरि विप्र
 सा न्है भूप कों सुत ठीठ । मागि हम सों कर चहंत हँ भयो जगमै ईठ ॥ मुक्त निज कर धनुष सों
 शर प्राण हर कर पम । देव तेहि हम औसि ताको निरखि कै थल मर्म ॥ जाय तिन सों कहे
 निर्मित करे जो शुभ देख । आरु तहँ हम देहि कर जो करन कठिन कलेश ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ देहा ॥ * ॥

तुम नहि कहि सकि हो इतौ नृपसुत सों भयपाय । सात्युकिजैहँ साथ तो कहिहँ सब समुभाय ॥
 लखितो भयति प्रवीणता तोपर मम अति प्रीति । जपि मम नाम सप्रेम निति लहिहो कवचनभीति ॥
 सुनि यह बचन कृतार्थ न्है बन्दिचरण सुखदाय । चलो बिदा न्है विप्रमो हियमै मूर्ति बसाय ॥
 तब प्रभु सात्युकि सों कहे तुम द्विज के सङ्ग जाय । बासो कहि सुनि वारता आओ शोध सचोय ॥
 सुनि सात्युकि चिठि अश्व पै एकाकी द्विज साथ । गए हंस के निकट जिमि मृग के ठिग मृगनाथ ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तहँ विप्र मतिमानं कहत भयो इमि हंस सों । सात्युकि बीर अमान बासुदेव के दून ए ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि तुव प्रसन्न कृष्ण रिसि छाए । इनकहँ ऊत्तर देन पठाए ॥ ए प्रिय सला कृष्णके आरज ।
 ईच्छि-न भुजसम कृत शुभ कारज ॥ कह्यो हंस हम इनकी करणी । सुनत रहे सब विधि सो बरणी ॥
 धीर बीर शास्त्रज्ञ बखाने । हँ ए आजु देखि सति माने ॥ इमि कहि कै सों कपटो मन को । बुझौ
 कुशल कृष्ण यदुगणको ॥ यह सुनि सात्युकि बोलि अरुचि सों कहे सर्व कुशलोमति शुचि सों ॥
 सो सुनि हंस प्रशंसि अनुज सों । बूझत भयो जनार्दन द्विज सों ॥ विप्र जाय तुम कृष्णहि देखी ।
 कहे सुने सो कहे बिशेखी ॥ कह्यो विप्र सुनु मृग सहभाई । हम जिमि लखे कृष्णकहँ जाई ॥ इन्द्री
 बरदल सहस्र सोहावन । चारु गात रूचि अति मन भावन ॥ अति रमणीय पीतपट धारे ।
 गुरु उर पै बनेमाल बिहारे ॥ मणिमै भूषण सो तन भूषे । कौटि मदन को सुषमा दूषे ॥ चारु
 किरोटगोस पै सोभित । करत हर को छवि कौ शोभित ॥ चामर ह्वन विचित्र विभाते । राजसिरी
 की रुचि सों राते ॥ पर धनु गदा शङ्ख अस्ति पावन । धरे पार्श्व अरिबृन्द नसावन ॥ पुरुषसिंह
 सिंहासन पांहीं । बैठे लसत सभा मृद माहीं ॥ *~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

नामआदि यदुगण सहित राजत धीर धुरीन । शस्त्र शास्त्र की बारता कहत सुनत परबोध ॥
बन्दीजम अस्तुत करत करत अक्षरा नृत्य । कान्ति भरे करि पांति हैं खरे करीधृत भृत्य ॥
दुर्वासा नारद सुमुनि बैठे जतिन समेत । प्रभुहि लेखि आनद भरे कृत/तप को फल खेत ॥

॥ * ॥ सोरदा ॥ * ॥

एहिविधि प्रभुहि निरेखि कै कृतार्थ अति धन्य मै । कहत भयो अवरेखि तब संदेश अन्देश तजि
सो सुनि कै अति तेखि भेजे तो ढिग सात्यु किहि । सुनि उत्तर अवरेखि करौ ज्ञान कोन्हें बने ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

सुनि बोलो नृप सहसा करमो । रे दिज अधम निलज्ज अधरमो ॥ मों सँग खाय मों टाय
अभामे । अब पर को गुण जलपन लागे ॥ रे खल कुटिल कुकरमी खोटे । शीघ्र गच्छ मो चष को
खोटे ॥ इमि कहि फिरि सात्यु कि सों बोलो । भरो रीष गहिगर्व अतो लो ॥ रे यादव कज्ज भो
भय राखो । नन्दनन्द जो भाषण भाखो ॥ तासु बचन सुनि सिनि मुसुकाने । बोलो बचन बाररस
सार्ज ॥ दुर्वासा सों तो अघ सुनि कै । सत्यसन्ध तो बध ध्रुव गुणि कै ॥ हेरतु हैं भिसि इतने ही मै
तुव संदेश सुनि सके न ही मै ॥ तातें तुम्है पात्र गुणि खामो देन चहे कर प्रभु नयगामो ॥ चक्र अमोघ
पाणि मै लै हैं । सो तुवनाश करण कर दै हैं ॥ जोथर कहौ आइ तेहि धरमै । देहिं चक्र कर कर
तुव कर मै । फसो पङ्क मै जिमि नर कोर्द । निकसन ब्याहत कर गहि सोर्द ॥ तिमि तो प्राण फसो
एहि तन मै । मागत कर प्रभु सों गुणि अम भै ॥ ता कहैं कृपासिन्धु मुद द्वारे । करिहैं तन कर्दम
सों न्यारे ॥ यह सुनि हंस क्रोध सा भरि को । बोलो नैन खाल सम करि कै ॥ यादव तू तन बचन
उमाहैं । मोहिं कलङ्क दयो निजु चाहैं ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दूत कर्मा मै आइ छूँ आपुहि जानि अबध्य । बचन कहत एहि भांति को मम सुभटन को मध्य ॥
दूत जानि नहिं बध करौ सहि तो बचन अन्याय । करिहौ ताको नाश जो पढयो तोहि सिखाय ॥

॥ * ॥ अथकरोकन्द ॥ * ॥

अरि को बधव न दूतहि जोग । कहैं शास्त्रविद सिगि लाग ॥ तातें आजु खोडि तो प्राण । जाल
दृश्य प धृत धनुवान ॥ करिहो कहां युद्ध तुम आय । शीघ्र ठौर सेरेऊ बताय ॥ कह्यो हंस पुष्पार
पै तू । लेख यदुन सह सम्पति लूटि ॥ सात्युकि ताहि कालबग जानि । नहिं उत्तर दी न्हे अनु
मानि ॥ रथ चडि शीघ्र दृश्य पै जाय । दोन्हे सब विरतान्त सुनाय ॥ सुनि प्रभु साजि सेन चक्र
गे पुकर पै भरे उमङ्ग ॥ दृश्य अतोहिणि सेना साजि । आए हंस डिम्बक तहैं भाजि ॥ शिव को द्वैगण

भीममहाम । आए तासु सङ्ग बलवान् ॥ अह विचक्र दानवपति वीर।सखा हसको अतिरथधीर।
 दंदासुर सङ्ग नै जौन । इन्द्र हि जोति बुद्धि बलभौम ॥ खरो विष्णुसौ वर बायैत । आये सदस
 तौन अमनैत ॥ राक्षस बली हिडम्ब अमान । सो विचक्रको सखा संधान ॥ सहस अठासी
 राक्षस भीर । सह सहाय आयो रणधीर ॥ जरासन्ध नहि कियो सहाय । प्रभु प्रभावविद
 जानि अन्धाप । जरापुष्करमै दोऊ सैन । किय निबास आय तेहि रैन ॥ प्रातकथ करि करि लखि
 प्रात । करण जगे भिरि ब्रह्म प्रयात ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

कुंदि कुंदि भिरि उडभट खगे खरख ह्यै शुद्ध । धीर भनुद्धर शर निमन हँदि हँदि जयकुद्ध ॥
 भिरे गजस्य गजस्यसौ भिरे रथस्य रथस्य । भिरे हयस्य हयस्यसौ पैर पैर सस्य ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

चंड चंड शरकंडि वीर अचंड प्रचंड भिरि । खंड खंड तन खंडि करे उदंड उदंड मुनि ॥

॥ * ॥ भुजङ्गप्रयातइन्द्र ॥ * ॥

जुठ वीर बावे छुटै केरि अटै । नदागुहरो बाहि इन्दी व कूटै ॥ खरे खेखवारे सुलै खड्ड टूटै ।
 खरे हाकि खाड हने ते नड्डै ॥ अनै अर्बसादी गहे बर्ब ते लै । रथीजे यथी सर्व शस्त्राणि जेस ॥
 तजै तोसुरै भिन्दिपालै सुबाणै । हने शक्ति भासै विभासै अनानै ॥ दटै हाकि कोते कटै हाकि
 कोते । अहै हाकि जेते अहै हाकि तेते ॥ बडे वीर कोते कठे शीष घूमै । भिरे भल्लम भूरि सावन्य
 भूम ॥ गिरै बाजितै ते किते वीर जूजे । परे पापसौ पापरै मो अरभे ॥ नरै स्वामि बाजी नअ मोत
 पागे । इतैते उतैते फिरै भूरि भागे ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

दानव वीर विचक्रसौ भिरे कण्ठ यमकाज । भिरे हंससौ राम प्रभु सासुकि डिअक सुधाज ॥
 उग्रसेन बसुदेव ए भिरि हिडम्बसौ क्रोधि । करतभए तहँ युद्ध वर शर समूह सौ रोधि ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

राक्षस दानव सर्व अह बादव भिरि खरेत भे । सिगरे वीर सग इन्द्र युध विरि करत मे ॥
 भूत पिशाच खबीष जूय योगिनीके जुरे । शोषित विषै हदीय उकरि उकरि खैल सुखी ॥

॥ * ॥ दोहाइन्द्र ॥ * ॥

जुजि कितने सुभट रणन दिव्य शुचि तन पाय । अपसरन सह अडि विमाननि खलुनि ह
 निजकाय ॥ दुर्ज दिशिके सुभट कितने खरत उतहँ रोधि । अपसरन हित नहे मत्सर करि सु

युद्ध अतोषि ॥ हने कृष्ण विचक्रके उर वर तिहन्निरि बान । कृष्णको तन हनत भो वज्र बाण त्रैलोक्य
अमान ॥ तीक्ष्ण बाण क्षुरप्रसौ रथ क्वध्वज धनु तासु । काटि भादे कृष्ण वाके सूत अरु हय
आसु ॥ कूदि रथसा हनत भो सो गदा गहि कै त्यागि । काटि दीन्हे बाणसौ तेहि कृष्ण आनद
पाणि ॥ शिला मारत भयो सो तब दह प्रभु तेहि काटि । फेरि तेंद्र तर हन्धो तेहि प्रभु काटि दीन्हे
काटि ॥ कोपि परिघ अमोघ लै कर तब विचक्र प्रवीर । कहत भो इमि कृष्णसौ अब खरो रज
सहि पीर ॥ असुर सुरके युद्धमै मम लखे बल हि भुलाय ॥ फेरि आयो लरन ताको लहत शीघ्र
सजाय ॥ भाखि इमि भो हनत सो तेहि काटि बीचहि विष्णु । काटि शरसौ शीघ्र ताको किए
महिगत जिष्णु ॥ बचे हे जो वीर ताके भगे ते भय पाय । जयति केशव सुमन बोले इन्द्र सह हर
षाय ॥ हंससौ अरु रामसौ तिमि भयो सङ्गर घोर । हने हसहि राम रामहि हंस बाण कठोर ॥
रामको ध्वज धनुष पथ वर काटि शरसौ तानाहते चारौ बाजि सूत हि बाणसौ बलभौन ॥ गदासौ
तब चूर्ण कान्हे तासु ध्वज रथ राम । मारि अथन हते सूतहि बार बर बलराम ॥ गदाविधिविद
गदा सौ ते लरे तत्र सक्रुद्ध अमर नर सब भए विरामित लखि अद्भुत युद्ध ॥ डिम्बक सात्यकि किए
तिमि भिरि युद्ध परसुप्रच्छण्ड । तजि परस्पर बाण अग्नित गहे वरकोदर्ड ॥ एकशै दश धनुष
काटि डिम्बकके सिनि धीर । खड्ग गहि तब डिम्बक धायो कहत वचन गंभीर ॥ * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

लखि सात्यकि भट खड्ग गहि रथतें उतरि सचाय । स्थान भेदते भे खरे ताके सनमुख जाय ॥
खड्ग युद्धके भेद जे बन्तिस विधिके पर्म । ते करि करि ते भे लरन करता दुसतर कर्म ॥
उग्रसेन वसुदेव ए बृद्ध बली रणधीर । हने हिडम्ब हि बाण वज्र करता दुसह पीर ॥

॥ * ॥ सौरठा ॥ * ॥

बली हिडम्ब अमान सहि बिनको बरबाण सब । मर्दन भये महान चतुरङ्गीदल यादबो ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

गजन उठाइ गजन कहै मारत । भयो रथनसौ रथन विदारत ॥ हयके घूथ हयनसौ मर
दित । करिभो करत सर्व दल अरदित ॥ अति अयबसौ बलि चलि दिगहि लहि । भक्त भयो
मानुषनि गहि गहि ॥ मुखम प्रविशि नासिकाको मुङ्ग । कठै किते नर मारुतके सङ्ग ॥ फेरि वायु
बस ह्यै ते प्रविशै । कठै फेरि तिमि फिरि तिमि प्रविशै ॥ खाइ असंख्य भटन इमि पापी । कुभ्रकरण
सम दुसतर दापी ॥ उग्रसेन वसुदेव हि भक्षण । बली पसारि बदन बर तक्षण ॥ ते लखि वज्र शर
मुखे अधि मारे । रुको न सो कल बल करि हारे ॥ तब प्रभुके दिशि धले पराइ । घोइ बली
हिडम्ब अदारै ॥ यह लखि कोपि राम मुखदारै । तुरित हंससौ कौडि लरारै ॥ जाइ हिडम्ब हि

झिक भारे । भिरे हंससौ कल सुखारे ॥ सो राम हि तेहि राम प्रहारे । मूका बय सहस्र बल
भारे ॥ एहि विधि घरी द्वैकलौ लरि कै । मारे बलकर तलबल भरि कै ॥ गिरो भूमिपै मुरहित
ह्यै कै । तब गहि तेहि बल फेके ज्वै कै ॥ जाय कोस युग पै परि चेतो । फेरि न युद्ध करणसो हेतो ॥
भागि जाय भागर तट बन मै । दुरो हिडम्ब भए भय मन मै ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

इतने मै संध्या भेई लई अस्तगति सूर । युद्ध करणसौ भे नृवृत्ति सिगरे भट बलपूर ॥
हंस कहत भो कृष्णसो करव युद्ध फिरि भोर । गोवर्धन गिरिके निकट सूरसुता की वोर ॥
महाराज तेहि दोसमै पुष्कर शरके तीर ॥ सहस सतासी गज कटे लाखरथी रणधीर ॥
दनुज मनजुराक्षस प्रबल अरु बाजी सह ईशतीसकोटि जूझे तहां ह्यै विनु कर पग श्रीश ॥
तेहि निशि पुष्कर पै किए प्रभु सह सैन निवाससैन सहित नृप हंस गो गोवर्धनके पास ॥

॥ * ॥ सारठा ॥ * ॥

प्रातकाल्य करि भोर सहित सैन तँह कृष्ण गे । गिरिके उत्तरवोर भिरत भए फिरि भट बली ॥
॥ * ॥ महिलरीखन्द ॥ * ॥

तह उग्रसेन प्रदुम्न सात्यकि साम्ब सारण बर बली । बसुदेव विप्रथु कइ जधो अनाधृष्ट सुबाहु
कली ॥ ए वीर दश भिरि हंस डिम्बकहि तकि शरण मारत भए ॥ ते बाण इनके काटि दश दश
सबके बाण तन दए ॥ तब लगे ताके बाण धादव सर्व ए व्याकुल भए ॥ तजि समर सत्वर हांकि
रथ श्रीकृष्ण प्रभुके ढिग गए ॥ यह देखि केशव हंस भट बर सौ सरस रिसि भरि भिरे । बलिराम
डिम्बक प्रमत्त भट सौ युद्ध विधि सिधि मधि थिरो ॥ सुर सिद्ध षट्प गन्धर्व सर्व विमान चढि चढि मुद
भरे । सो युद्ध देवसुर समर सम लखत हे नभ मधि खरे ॥ जे भूत शिवके दीय तासु सहाय हित
शङ्कर हतहे । ते शूल गहि गहि प्रगटि प्रभुसौ बचन कटु भे कहव हे ॥ प्रभु यकरि तिन्हहि घुमाइ
बलसौं दिशि उदीची प्रतित जे । ते भ्रमत नभपथ जाय शिवके निकट गिरि अति लचि लजे ॥ यह
देखि हंस प्रवीर प्रभुके भाल मधि बर शर हने । तब कोपि मनसे कृष्ण ताकहँ हिए हनिबो शर घने ॥

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

तब सात्यकि कँहँ सारथी करि केशव अनुमति । तजे अस्त्र आग्नेय बर धनुष कानलौ टामि ॥
बारुणास्त्र तजि हंस तब दयो अस्त्रसौ बारि । दिव्य अस्त्र बायथ फिरि मारे कृष्ण विचारि ॥
महेंद्रास्त्र तजि हंस फिरि व्यर्थ करत भो ताहि । तब माहेस्त्र अस्त्र प्रभु तजे ताहि प चाहि ॥
दौद्र अस्त्रसौं हंस फिरि किए अस्त्र सो व्यर्थ । चारि अस्त्र तब साथ हीं मारे कृष्ण समर्थ ॥
राक्षस अरु पैशाच अरु गन्धर्वास्त्र ब्रह्मास्त्र । चारि अस्त्र तब तजत भो शीघ्र हंस विद शस्त्र ॥

आसुर अह ब्रह्मास्त्र अह धांय अस्त्र कौबेर । आडे प्रभु क अस्त्रकहा भार ए अस्त्र अजरभा
अस्त्र ब्रह्म शिरनाम तब मारे कृष्ण रिसाय । रोको ताको हंस फिरि सो अस्त्र चलाय ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

तब श्रीकृष्ण त्रिचारि गहे बैष्णव अस्त्र बर । जाते असुरए मारि राज्य किए हैं इन्द्रकई ॥

॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

खलि सो अस्त्र हंस भय पागो । रथ तजि यमुनाकी दिशि भागो ॥ रथ तजि चले कृष्ण जय ईके ।
यथा केशरी गजके पीछे ॥ जाय हंस भयभंरसो दूदो । काहर काज्जीदह मधि कूदो ॥ ताप
तुरत कूदि रिसि भारे । लात तासु शिरभै प्रभु मारे ॥ सो मरि गडो पद्ममधि आई । अबलौं
फिरिन भयो लंछाई । प्रभु कठि आइ सुरथ पै राजें सैनिक तासु समर तजि भाजो । बन्धु बन्धु करि
डिम्भक दुखारो । धसो कालन्दीमधि धनु डारो ॥ बळ विधि खोजि बाहिरे आयो । रोवत नयो
कृष्ण पै धायो ॥ कहत भयो व्याकुल बिलखाई । ररे गोप कहा मम भारी ॥ कहे कृष्ण यमुनासा
आई । बूजो देहें जाहि बताई ॥ यमुनातीर जाय फिरि रोवत । मो धसि इत उत बारि बिलो
कत ॥ हांसा हंस हंस कहि जलसौं । कहि उर शिर ताडत करतलसौं ॥ निज करसौं निज ज्जीभि
छलारी । तन तजि भयो निरय अधिकारी ॥ तिनके मरे कृष्ण मुद लीन्हे । वास गोवर्धन गिरिप
कीन्हे ॥ सुनि तहें नन्द ज्योमति आय । गोपन सहित मोदसा छाय ॥ दधि घृत माखन दूध
सोहाय । अह शुचि भोज्य पदारथ ल्याए ॥ * * * * *

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

निन्है देखि प्रभु उठि तुरित मिलि सप्रेम हरषाय । बार बार बूभे कुशल निज समीप प्रैठाय ॥
गोधन गोपी गोप जे घुबा हइ अह बाल । पृथक पृथक सबको कुशल बूभे त्रिभुवन पाल ॥
पुर म्दह बन तर कुञ्जके पृथक पृथक लै नाम । बूभे जशुदा नन्दसौं कृष्ण कृपाके धाम ॥

॥ * ॥ सोरठा ॥ * ॥

सुनि प्रभुके ए बैन नन्द ज्योमति दोन छै । भरै बारिसों नैन कह बचन करणामये ॥

॥ * ॥ तोमर इन्द्र ॥ * ॥

इत कुशल हैं सब डौर । तब हंपातैं शिरमौर ॥ दुख दु सह इतनो भूरि । तुम बसे जो अति दूरि ॥
मम सर्व सुखहै धर्य । बिनु लखे तुमहिं समर्थ ॥ यह सुनि निन्है समुजाय । प्रभु बिदा करि गहि
लाय ॥ खलि गय पुहकरतीर । अँड लसत बळ पटपि भीर ॥ जे लसत अति तपतोम । जिनि
उदित दिनकर सोम ॥ बल अतुल दुरवल बेश । बढि लसत शुचि नखें केश ॥ गहि बन्धु बल
कल बाम । रवि परणको सुअवास ॥ बसि ध्याय प्रभुहि खइन्द । जे लहे परमानन्द ॥ तहें उभरि

खलि ते पूजि। बैठाय अस्त्रुति कूजि॥ करि करि उचित सतकार। सुख लहे अपर अपार ॥ तब विशा
ह्यै सह सैन। गे स्वपर आसद औन ॥ तह जाय सह परिवार। भे करत विशद विहार ॥ प्रभु विश्व
योनि सनेह। गहि आय मातृष देह ॥ इमि करें कौतुक रङ्ग। दित जननिके सउमङ्ग ॥ एहि पढे
ते नर धन्य। नहि तिहि समंकोउ अन्य ॥ * * * * *

॥ ॥ दोहा ॥ ॥

इत पांव ते परमोत्तम उत पद परम प्रकर्ष। सुने गुणे जे प्रभु चरित ध्यावै प्रभु हि सहर्ष ॥

खोलीश्रीकाशीराजसुहाराजाधिराजश्रीउदितनारायणस्याज्ञाभिगामिना श्रीबन्दीजनकाश्री
वासिगोकुलनाथकवीश्वरात्मजेन गोपीनाथकविना विरचिते भाषायां भारतान्तरगते हरिवंशदर्पणे
हंसडिम्भकोपाख्यानो नाम जलचनारिसोध्यायः ॥ * * * * *

॥ * ॥. दोहा ॥ * ॥

जनमेजय भूपति कहे अब कहि औ मुनि परम। विधि भारतके सुमनकी अरु स्वाभाविक धर्म ॥

॥ * ॥ विसम्पाद्यनउवाच ॥ रोलाहन्द ॥ * ॥

विश्वसृज भगवानको है जितो परम प्रथम। भारते रचि मुनि कियो तितनो एकने शुचि सख ॥
भारते पढि मुनि गुणि सबिधि नर होहि सुमन समर्थ। कहे यह मुनि व्यासको यह होइ कवळ म
व्यर्थ ॥ परम पटु धर्मज्ञ धर्मी सतपथी सरबहु। सत्यवादी शुचि अक्रोधी भागवत शास्त्रज्ञ ॥ धीर
सुबुधिः सुसील द्विजसो सुनै सनियम भार्य। सुनै जो सो गुणै मन मै जानि सकल यथार्थ ॥ धेनु
सुवरण अन्न पट घट पर्व पर्वण दान। व्यास आदिक द्विज बरनकहँ देइ करि सनमान ॥ पर्व पर्वणि
धारु पुस्तक पर्व पर्व लिखाग्र। देइ व्यास हि मुदित कस्सिह और इत्य सचाय ॥ पर्व पर्वणि
विप्र भोजन जथा शक्ति कराय। रहि संसज्जम अर्थ सागर भारते सब सुनि जाय ॥ पार लहि
हरिवंशको नर भाग्यवान प्रबोन। करै उत्सव परम करि कै प्रेम पूरण पीन ॥ पूजि पुस्तक करै
अर्पण हेम मणि पट आदि। वस्तु उत्तम शक्ति मितियुत भक्ति अति अहलादि ॥ पूजि व्यासहि
सुमनके सम देइ जितने देय। अधिक दीन्हे अधिक उत्तम अधिक फल अप्रमेय ॥ मीष द्रोणादि
कनको करि स्याह आनद पूरि। सहस विप्रन देइ भोजन देइ दक्षिणा भूरि ॥ एकलौ दशवारलौ
सुनि भारते सुनऊ नरेश। विष्णुको सालोक्य कमसो ल है तैम सुभंश ॥ विविधि विधिके मणिन मै
शुचिमान पै आसीन। सुमन सम संग सुमन मणके रमै सुषमा पीन ॥ भूप भारत श्रवणको है पुत्र
अकथ अनन्त। धन्य जे नर सुनत है अति धन्य जे नर सन्त ॥ धन्य सो घर होत है जहँ भारते कथन

अनूप । धन्य से घर रहत है जहँ भाँति पुस्तक रूप ॥ धन्य तुम जो किए हमसों प्रभु यह सुष्ट
दानि । धन्य तुम हम भए कवि एहि भाँति आनन्द आनि ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

फिरि भूपति मुनिसे कहे अब कहि कै सबिलास । कामादिक दैशनन को ज्ञान शसुसों नास ॥
॥ * ॥ चौपाई ॥ * ॥

कहे सुमुनि सुन भूपति ज्ञानी । त्रिपुर अबस्था अथ अभिज्ञानी ॥ विश्वर तैजस प्राज्ञ बखाने
माया धातुमए हबिसाने ॥ बने कारण कास विशद पै । घन सम अति विधिव ता हृदयै ॥ पिण्ड
अन्नमय बर प्राकारा । युत गन्धर्व नगर बेवहारा ॥ प्रथम करो रथ सण्ड अनेगा । अति उन्नत अरु
अकथ असेगा ॥ काम क्रोध मत्सर मंद लोभा । मोह सर्व दैत अलोभा ॥ इन्दी है सुख दुख परवारे ।
तासु अथक बाहन बल भारे ॥ आलम्बन उ दीपन-जेतेविषय तासु आयुधं सब तेते ॥ कुमत कठोर
कवच सब धारे ॥ व्यसन गर्व मदसों मतवारे ॥ योग कर्म सुर अरु पित्रनके । भाग गयल रोके बर
पर्वके ॥ तब ह्यै जीव इन्द्र अति व्याकुल । सुर समादि सह भयसों आकुल ॥ गुरु विरञ्चिके दिग गे
धारे । न्यै आरत निज दशा सुनाए ॥ ते करि कथा कहे शमुभार्द । ज्ञानशसुसु कहे ध्यावऊ जाई ॥
तिनसों बध्र दैत ए सिगरोभए प्रचण्ड जिते मति विगरे ॥ सुनि सुरपति सुरगण सह मोदे । आश्रम
सहि पै आइ विनोदे ॥ किए तपस्या बर-व्रत धरि कै । लक्षणा तियहि विद्योनिबि करि कै ॥ *~*~*~*~*~*~*~*~*~*

॥ * ॥ दोहा ॥ * ॥

हृदाकाश कैलाससँ विहरि ईश्वर हि ध्याय । शरर ज्ञान अमन्दको लै कै सक्र सहजय ॥
जभ उपासना मार्ग पर लरत भए सम आय । असुर इन्द्र कामादिसे सुमन समादि सचाय ॥

॥ * ॥ रोलाइन्द ॥ * ॥

प्रणव धनु शर तत्व चिन्तन सो सु शरर ज्ञान । कामादिक असुरगण कहँ किए वृत्तक
समान ॥ लिङ्ग देह सुभूमि मधि रहि वासनामय सब । काम आदिक दैतगण तजि दर्य गुरता
पर्व ॥ पाय अथ अश्वर्थ अदभुत जीव इन्द्र विनोदि । गर्बिसालस भए सोई सपा सहि कै
मोदि ॥ प्रबल ह्यै तेहि सणहि आलस रजनिचर ते दैत । लगे मारण विषय आदिक शरण बर
बाखैत ॥ दशा यह सहि मए फिरि ते ज्ञान शिवके सुर्ष ॥ किए शिव तब तेज क्रोध हि भिरि प्रकर्ष
सुवर्ण ॥ अथण मननहि सुनि ए ध्यासन बर त्रिशूल उदण्ड । बाहि असुरण-किए सुरहित सुरन
परम प्रचण्ड । भूति अथ सहि जीव सुरपति स्थूल तत्र दन ठौर । त्यागि सूक्ष्म देह रथ अहि चलो
ऊर्ध सगौर ॥ तहां अश्वरसिद्ध अरु गन्धर्व ताकहँ देखि । कए अज्ञानि बासु सो-सुनि भे सगर्व वि
सेखि ॥ प्रबल ह्यै ज्याँ असुर गण ते युद्ध करि फिरि तत्र । घेरि ल्याए फेरि ताकहँ पूर्व हे जग्मि

